"અહો શ્રુતજ્ઞાનમ્" ગ્રંથ જીર્ણોધ્ધાર ૧૩૮

જૈન સાહિત્ય સંશોધક

વર્ષ-૦૧ – અંક-૩, ૪

: દ્રવ્ય સહાયક :

અધ્યાત્મયોગી પૂજ્ય આચાર્ય ભગવંત
શ્રી વિજય કલાપૂર્ણસૂરીશ્વરજી મ.સા.ના શિષ્યરત્ન
પૂ. ગણિવર્ય શ્રી તીર્થભદ્રવિજયજી મ.સા.ની પ્રેરણાથી
શ્રી વ્રજહેમ યશ દીક્ષા મહોત્સવ સમિતિ, રાજકોટ
(મુનિ તીર્થહંસવિજયજી મ.સા.ની દીક્ષા નિમિત્તે)
જ્ઞાનખાતાની ઉપજમાંથી

: સંયોજક :

શાહ બાબુલાલ સરેમલ બેડાવાળા
શ્રી આશાપૂરણ પાર્શ્વનાથ જૈન જ્ઞાનભંડાર
શા. વીમળાબેન સરેમલ જવેરચંદજી બેડાવાળા ભવન
હીરાજૈન સોસાયટી, સાબરમતી, અમદાવાદ-380005
(મો.) 9426585904 (ઓ.) 22132543

સંવત ૨૦૬૮ ઈ.સ. ૨૦૧૨

શ્રી આશાપૂરણ પાર્શ્વનાથ જૈન જ્ઞાનભંડાર

સંયોજક – શાહ બાબુલાલ સરેમલ

શાહ વીમળાબેન સરેમલ જવેરચંદજી બેડાવાળા ભવન

હીરાજૈન સોસાયટી, રામનગર, સાબરમતી, અમદાવાદ-૦૫.

(મો.) ૯૪૨૬૫૮૫૯૦૪ (ઓ) ૨૨૧૩૨૫૪૩ (ઇ-મેલ) ahoshrut.bs@gmail.com

અહો શ્રુતજ્ઞાનમ્ ગ્રંથ જીર્ણોદ્ધાર – સંવત ૨૦૬૫ (ઈ. ૨૦૦૯) – સેટ નં-૧

પ્રાયઃ જીર્ણ અપ્રાપ્ય પુસ્તકોને સ્કેન કરાવીને ડી.વી.ડી. બનાવી તેની યાદી.

આ પુસ્તકો www.jainelibrary.org વેબસાઇટ પરથી પણ ડાઉનલોડ કરી શકાશે.

ક્રમાંક	પુસ્તકનું નામ	કર્તા-ટીકાકાર-સંપાદક	પૃષ્ઠ
001	श्री नंदीसूत्र अवचूरी	पू. विक्रमसूरिजी म.सा.	238
002	श्री उत्तराध्ययन सूत्र चूर्णी	पू. जिनदासगणि चूर्णीकार	286
003	श्री अर्हद्गीता-भगवद्गीता	पू. मेघविजयजी गणि म.सा.	84
004	श्री अर्हच्चूडामणि सारसटीकः	पू. भद्रबाहुस्वामी म.सा.	18
005	श्री यूक्ति प्रकाशसूत्रं	पू. पद्मसागरजी गणि म.सा.	48
006	श्री मानतुङ्गशास्त्रम्	पू. मानतुंगविजयजी म.सा.	54
007	अपराजितपृच्छा	श्री बी. भट्टाचार्य	810
008	शिल्प स्मृति वास्तु विद्यायाम्	श्री नंदलाल चुनिलाल सोमपुरा	850
009	शिल्परत्नम् भाग-१	श्रीकुमार के. सभात्सव शास्त्री	322
010	शिल्परत्नम् भाग-२	श्रीकुमार के. सभात्सव शास्त्री	280
011	प्रासादतिलक	श्री प्रभाशंकर ओघडभाई	162
012	काश्यशिल्पम्	श्री विनायक गणेश आपटे	302
013	प्रासादमञ्जरी	श्री प्रभाशंकर ओघडभाई	156
014	राजवल्लभ याने शिल्पशास्त्र	श्री नारायण भारती गोंसाई	352
015	शिल्पदीपक	श्री गंगाधरजी प्रणीत	120
016	वास्तुसार	श्री प्रभाशंकर ओघडभाई	88
017	दीपार्णव उत्तरार्ध	श्री प्रभाशंकर ओघडभाई	110
018	જિનપ્રાસાદ માર્તણ્ડ	શ્રી નંદલાલ ચુનીલાલ સોમપુરા	498
019	जैन ग्रंथावली	श्री जैन श्वेताम्बर कोन्फ्रन्स	502
020	હીરકલશ જૈન જ્યોતિષ	શ્રી હિમ્મતરામ મહાશંકર જાની	454
021	न्यायप्रवेशः भाग-१	श्री आनंदशंकर बी. ध्रुव	226
022	दीपार्णव पूर्वार्ध	श्री प्रभाशंकर ओघडभाई	640
023	अनेकान्त जयपताकाख्यं भाग-१	पू. मुनिचंद्रसूरिजी म.सा.	452
024	अनेकान्त जयपताकाख्यं भाग-२	श्री एच. आर. कापडीआ	500
025	प्राकृत व्याकरण भाषांतर सह	श्री बेचरदास जीवराज दोशी	454

026	**तत्त्पोपप्लवसिंहः**	**श्री जयराशी भट्ट, बी. भट्टाचार्य**	**188**
027	**शक्तिवादादर्शः**	**श्री सुदर्शनाचार्य शास्त्री**	**214**
028	**क्षीरार्णव**	**श्री प्रभाशंकर ओघडभाई**	**414**
029	**वेधवास्तु प्रभाकर**	**श्री प्रभाशंकर ओघडभाई**	**192**
030	**शिल्परत्नाकर**	**श्री नर्मदाशंकर शास्त्री**	**824**
031	**प्रासाद मंडन**	**पं. भगवानदास जैन**	**288**
032	**श्री सिद्धहेम बृहद्वृत्ति बृहन्न्यास अध्याय-१**	**पू. लावण्यसूरिजी म.सा.**	**520**
033	**श्री सिद्धहेम बृहद्वृत्ति बृहन्न्यास अध्याय-२**	**पू. लावण्यसूरिजी म.सा.**	**578**
034	**श्री सिद्धहेम बृहद्वृत्ति बृहन्न्यास अध्याय-३ (१)**	**पू. लावण्यसूरिजी म.सा.**	**278**
035	**श्री सिद्धहेम बृहद्वृत्ति बृहन्न्यास अध्याय-3 (२) (३)**	**पू. लावण्यसूरिजी म.सा.**	**252**
036	**श्री सिद्धहेम बृहद्वृत्ति बृहन्न्यास अध्याय-५**	**पू. लावण्यसूरिजी म.सा.**	**324**
037	વાસ્તુનિઘંટુ	પ્રભાશંકર ઓઘડભાઈ સોમપુરા	302
038	તિલકમઞ્જરી ભાગ-૧	પૂ. લાવણ્યસૂરિજી	196
039	તિલકમઞ્જરી ભાગ-૨	પૂ. લાવણ્યસૂરિજી	190
040	તિલકમઞ્જરી ભાગ-૩	પૂ. લાવણ્યસૂરિજી	202
041	સપ્તસન્ધાન મહાકાવ્યમ્	પૂ. વિજયઅમૃતસૂરિશ્વરજી	480
042	સપ્તભઙ્ગીમિમાંસા	પૂ. પં. શિવાનન્દવિજયજી	228
043	ન્યાયાવતાર	સતિષચંદ્ર વિદ્યાભૂષણ	60
044	વ્યુત્પત્તિવાદ ગુઢાર્થતત્ત્વાલોક	શ્રી ધર્મદત્તસૂરિ (બચ્છા ઝા)	218
045	સામાન્યનિર્યુક્તિ ગુઢાર્થતત્ત્વાલોક	શ્રી ધર્મદત્તસૂરિ (બચ્છા ઝા)	190
046	સપ્તભઙ્ગીનયપ્રદીપ બાલબોધિનીવિવૃત્તિઃ	પૂ. લાવણ્યસૂરિજી	138
047	વ્યુત્પત્તિવાદ શાસ્ત્રાર્થકલા ટીકા	શ્રીવેણીમાધવ શાસ્ત્રી	296
048	નયોપદેશ ભાગ-૧ તરઙ્ગિણીતરણી	પૂ. લાવણ્યસૂરિજી	210
049	નયોપદેશ ભાગ-૨ તરઙ્ગિણીતરણી	પૂ. લાવણ્યસૂરિજી	274
050	ન્યાયસમુચ્ચય	પૂ. લાવણ્યસૂરિજી	286
051	સ્યાદ્યાર્થપ્રકાશઃ	પૂ. લાવણ્યસૂરિજી	216
052	દિન શુદ્ધિ પ્રકરણ	પૂ. દર્શનવિજયજી	532
053	બૃહદ્ ધારણા યંત્ર	પૂ. દર્શનવિજયજી	113
054	જ્યોતિર્મહોદય	સં. પૂ. અક્ષયવિજયજી	112

શ્રી આશાપૂરણ પાર્શ્વનાથ જૈન જ્ઞાનભંડાર

સંયોજક – શાહ બાબુલાલ સરેમલ

શાહ વીમળાબેન સરેમલ જવેરચંદજી બેડાવાળા ભવન

હીરાજૈન સોસાયટી, રામનગર, સાબરમતી, અમદાવાદ-૦૫.

(મો.) ૯૪૨૬૫૮૫૯૦૪ (ઓ) ૨૨૧૩૨૫૪૩ (ઇ-મેલ) ahoshrut.bs@gmail.com

અહો શ્રુતજ્ઞાનમ્ ગ્રંથ જીર્ણોદ્ધાર – સંવત ૨૦૬૬ (ઈ. ૨૦૧૦) – સેટ નં-૨

પ્રાયઃ જીર્ણ અપ્રાપ્ય પુસ્તકોને સ્કેન કરાવીને ડી.વી.ડી. બનાવી તેની યાદી.

આ પુસ્તકો www.jainelibrary.org વેબસાઇટ પરથી પણ ડાઉનલોડ કરી શકાશે.

ક્રમ	પુસ્તકનું નામ	ભાષા	કર્તા-ટીકાકાર-સંપાદક	પૃષ્ઠ
055	श्री सिद्धहेम बृहद्वृत्ति बृहद्न्यास अध्याय-६	सं	पू. लावण्यसूरिजी म.सा.	296
056	विविध तीर्थ कल्प	सं	पू. जिनविजयजी म.सा.	160
057	ભારતીય જૈન શ્રમણ સંસ્કૃતિ અને લેખનકળા	ગુજ.	पू. पुण्यविजयजी म.सा.	164
058	सिद्धान्तलक्षणगूढार्थ तत्त्वलोकः	सं	श्री धर्मदत्तसूरि	202
059	व्याप्ति पञ्चक विवृत्ति टीका	सं	श्री धर्मदत्तसूरि	48
060	જૈન સંગીત રાગમાળા	ગુ.	श्री मांगरोळ जैन संगीत मंडळी	306
061	चतुर्विंशतीप्रबन्ध (प्रबंध कोश)	सं	श्री रसिकलाल एच. कापडीआ	322
062	व्युत्पत्तिवाद आदर्श व्याख्यया संपूर्ण ६ अध्याय	सं	श्री सुदर्शनाचार्य	668
063	चन्द्रप्रभा हेमकौमुदी	सं	पू. मेघविजयजी गणि	516
064	विवेक विलास	सं/ગુ.	श्री दामोदर गोविंदाचार्य	268
065	पञ्चशती प्रबोध प्रबंध	सं	पू. मृगेन्द्रविजयजी म.सा.	456
066	सन्मतितत्त्वसोपानम्	सं	पू. लब्धिसूरिजी म.सा.	420
067	ઉપદેશમાલા દોઘટ્ટી ટીકા ગુર્જરાનુવાદ	ગુજ.	पू. हेमसागरसूरिजी म.सा.	638
068	मोहराजापराजयम्	सं	पू. चतुरविजयजी म.सा.	192
069	क्रियाकोश	सं/हिं	श्री मोहनलाल बांठिया	428
070	कालिकाचार्यकथासंग्रह	सं/ગુ.	श्री अंबालाल प्रेमचंद	406
071	सामान्यनिरुक्ति चंद्रकला कलाविलास टीका	सं.	श्री वामाचरण भट्टाचार्य	308
072	जन्मसमुद्रजातक	सं/हिं	श्री भगवानदास जैन	128
073	मेघमहोदय वर्षप्रबोध	सं/हिं	श्री भगवानदास जैन	532
074	જૈન સામુદ્રિકનાં પાંચ ગ્રંથો	ગુજ.	श्री हिम्मतराम महाशंकर जानी	376

075	જૈન ચિત્ર કલ્પદ્રૂમ ભાગ-૧	ગુજ.	**श्री साराभाई नवाब**	**374**
076	જૈન ચિત્ર કલ્પદ્રૂમ ભાગ-૨	ગુજ.	**श्री साराभाई नवाब**	**238**
077	સંગીત નાટ્ય રૂપાવલી	ગુજ.	**श्री विद्या साराभाई नवाब**	**194**
078	ભારતનાં જૈન તીર્થો અને તેનું શિલ્પસ્થાપત્ય	ગુજ.	**श्री साराभाई नवाब**	**192**
079	શિલ્પ ચિન્તામણિ ભાગ-૧	ગુજ.	**श्री मनसुखलाल भुदरमल**	**254**
080	બૃહદ્ શિલ્પ શાસ્ત્ર ભાગ-૧	ગુજ.	**श्री जगन्नाथ अंबाराम**	**260**
081	બૃહદ્ શિલ્પ શાસ્ત્ર ભાગ-૨	ગુજ.	**श्री जगन्नाथ अंबाराम**	**238**
082	બૃહદ્ શિલ્પ શાસ્ત્ર ભાગ-3	ગુજ.	**श्री जगन्नाथ अंबाराम**	**260**
083	આયુર્વેદના અનુભૂત પ્રયોગો ભાગ-૧	ગુજ.	**पू. कान्तिसागरजी**	**114**
084	કલ્યાણ કારક	ગુજ.	**श्री वर्धमान पार्श्वनाथ शास्त्री**	**910**
085	**विश्वलोचन कोश**	**सं./हिं**	**श्री नंदलाल शर्मा**	**436**
086	કથા રત્ન કોશ ભાગ-1	ગુજ.	**श्री बेचरदास जीवराज दोशी**	**336**
087	કથા રત્ન કોશ ભાગ-2	ગુજ.	**श्री बेचरदास जीवराज दोशी**	**230**
088	હસ્તસઞ્જીવનમ્	સં.	**पू. मेघविजयजीगणि**	**322**
089	એન્દ્રચતુર્વિંશતિકા	સં.	**पू.यशोविजयजी, पू. पुण्यविजयजी**	**114**
090	સમ્મતિ તર્ક મહાર્ણવાવતારિકા	સં.	**आचार्य श्री विजयदर्शनसूरिजी**	**560**

श्री आशापूरण पार्श्वनाथ जैन ज्ञानभंडार

संयोजक – शाह बाबुलाल सरेमल - (मो.) 9426585904 (ओ.) 22132543 - ahoshrut.bs@gmail.com

शाह वीमळाबेन सरेमल जवेरचंदजी बेडावाळा भवन

हीराजैन सोसायटी, रामनगर, साबरमती, अमदावाद-05.

अहो श्रुतज्ञानम् ग्रंथ जीर्णोद्धार – संवत २०६७ (ई. 2011) सेट नं.-३

प्रायः अप्राप्य प्राचीन पुस्तकों की स्केन डीवीडी बनाई उसकी सूची। *यह पुस्तके www.jainelibrary.org वेबसाइट से भी डाउनलोड कर सकते हैं।*

क्रम	पुस्तक नाम	कर्त्ता / टीकाकार	भाषा	संपादक / प्रकाशक	पृष्ठ
91	स्याद्वाद रत्नाकर भाग-१	वादिदेवसूरिजी	सं.	मोतीलाल लाघाजी पुना	272
92	स्याद्वाद रत्नाकर भाग-२	वादिदेवसूरिजी	सं.	मोतीलाल लाघाजी पुना	240
93	स्याद्वाद रत्नाकर भाग-३	वादिदेवसूरिजी	सं.	मोतीलाल लाघाजी पुना	254
94	स्याद्वाद रत्नाकर भाग-४	वादिदेवसूरिजी	सं.	मोतीलाल लाघाजी पुना	282
95	स्याद्वाद रत्नाकर भाग-५	वादिदेवसूरिजी	सं.	मोतीलाल लाघाजी पुना	118
96	पवित्र कल्पसूत्र	पुण्यविजयजी	सं./अं	साराभाई नवाब	466
97	समराङ्गण सूत्रधार भाग-१	भोजदेव	सं.	टी. गणपति शास्त्री	342
98	समराङ्गण सूत्रधार भाग-२	भोजदेव	सं.	टी. गणपति शास्त्री	362
99	भुवनदीपक	पद्मप्रभसूरिजी	सं.	वेंकटेश प्रेस	134
100	गाथासहस्त्री	समयसुंदरजी	सं.	सुखलालजी	70
101	भारतीय प्राचीन लिपीमाला	गौरीशंकर ओझा	हिन्दी	मुन्शीराम मनोहरराम	316
102	शब्दरत्नाकर	साधुसुन्दरजी	सं.	हरगोविन्ददास बेचरदास	224
103	सुबोधवाणी प्रकाश	न्यायविजयजी	सं./गु	हेमचंद्राचार्य जैन सभा	612
104	लघु प्रबंध संग्रह	जयंत पी. ठाकर	सं.	ओरीएन्ट इन्स्टीट्युट बरोडा	307
105	जैन स्तोत्र संचय-१-२-३	माणिक्यसागरसूरिजी	सं,	आगमोद्धारक सभा	250
106	सन्मति तर्क प्रकरण भाग-१,२,३	सिद्धसेन दिवाकर	सं.	सुखलाल संघवी	514
107	सन्मति तर्क प्रकरण भाग-४,५	सिद्धसेन दिवाकर	सं.	सुखलाल संघवी	454
108	न्यायसार – न्यायतात्पर्यदीपिका	सतिषचंद्र विद्याभूषण	सं.	एसियाटीक सोसायटी	354
109	जैन लेख संग्रह भाग-१	पुरणचंद्र नाहर	सं./हि	पुरणचंद्र नाहर	337
110	जैन लेख संग्रह भाग-२	पुरणचंद्र नाहर	सं./हि	पुरणचंद्र नाहर	354
111	जैन लेख संग्रह भाग-३	पुरणचंद्र नाहर	सं./हि	पुरणचंद्र नाहर	372
112	जैन धातु प्रतिमा लेख भाग-१	कांतिविजयजी	सं./हि	जिनदत्तसूरि ज्ञानभंडार	142
113	जैन प्रतिमा लेख संग्रह	दौलतसिंह लोढा	सं./हि	अरविन्द धामणिया	336
114	राधनपुर प्रतिमा लेख संदोह	विशालविजयजी	सं./गु	यशोविजयजी ग्रंथमाळा	364
115	प्राचिन लेख संग्रह-१	विजयधर्मसूरिजी	सं./गु	यशोविजयजी ग्रंथमाळा	218
116	बीकानेर जैन लेख संग्रह	अगरचंद नाहटा	सं./हि	नाहटा ब्रधर्स	656
117	प्राचीन जैन लेख संग्रह भाग-१	जिनविजयजी	सं./हि	जैन आत्मानंद सभा	122
118	प्राचिन जैन लेख संग्रह भाग-२	जिनविजयजी	सं./हि	जैन आत्मानंद सभा	764
119	गुजरातना ऐतिहासिक लेखो-१	गिरजाशंकर शास्त्री	सं./गु	फार्बस गुजराती सभा	404
120	गुजरातना ऐतिहासिक लेखो-२	गिरजाशंकर शास्त्री	सं./गु	फार्बस गुजराती सभा	404
121	गुजरातना ऐतिहासिक लेखो-३	गिरजाशंकर शास्त्री	सं./गु	फार्बस गुजराती सभा	540
122	ऑपरेशन इन सर्च ऑफ संस्कृत मेन्यु. इन मुंबई सर्कल-१	पी. पीटरसन	अं.	रॉयल एशियाटीक जर्नल	274
123	ऑपरेशन इन सर्च ऑफ संस्कृत मेन्यु. इन मुंबई सर्कल-४	पी. पीटरसन	अं.	रॉयल एशियाटीक जर्नल	414
124	ऑपरेशन इन सर्च ऑफ संस्कृत मेन्यु. इन मुंबई सर्कल-५	पी. पीटरसन	अं.	रॉयल एशियाटीक जर्नल	400
125	कलेक्शन ऑफ प्राकृत एन्ड संस्कृत इन्स्क्रीप्शन्स	पी. पीटरसन	अं.	भावनगर आर्चीऑलॉजीकल डिपा.	320
126	विजयदेव माहात्म्यम्	जिनविजयजी	सं.	जैन सत्य संशोधक	148

श्री आशापूरण पार्श्वनाथ जैन ज्ञानभंडार

संयोजक – शाह बाबुलाल सरेमल - (मो.) 9426585904 (ओ.) 22132543 - ahoshrut.bs@gmail.com

शाह वीमळाबेन सरेमल जवेरचंदजी बेडावाळा भवन

हीराजैन सोसायटी, रामनगर, साबरमती, अमदावाद-05.

अहो श्रुतज्ञानम् ग्रंथ जीर्णोद्धार – संवत २०६८ (ई. 2012) सेट नं.-४

प्रायः अप्राप्य प्राचीन पुस्तकों की स्केन डीवीडी बनाई उसकी सूची। *यह पुस्तके www.jainelibrary.org वेबसाइट से भी डाउनलोड कर सकते हैं।*

क्रम	पुस्तक नाम	कर्त्ता / संपादक	भाषा	प्रकाशक	पृष्ठ
127	महाप्रभाविक नवस्मरण	साराभाई नवाब	गुज.	साराभाई नवाब	754
128	जैन चित्र कल्पलता	साराभाई नवाब	गुज.	साराभाई नवाब	84
129	जैन धर्मनो प्राचीन इतिहास भाग-२	हीरालाल हंसराज	गुज.	हीरालाल हंसराज	194
130	ओपरेशन इन सर्च ओफ सं. मेन्यु. भाग-६	पी. पीटरसन	अंग्रेजी	एशियाटीक सोसायटी	171
131	जैन गणित विचार	कुंवरजी आणंदजी	गुज.	जैन धर्म प्रसारक सभा	90
132	दैवज्ञ कामधेनु (प्राचिन ज्योतिष ग्रंथ)	शील खंड	सं.	ब्रज. बी. दास बनारस	310
133	करण प्रकाश	ब्रह्मदेव	सं./अं.	सुधाकर द्विवेदि	276
134	न्यायविशारद महो. यशोविजयजी स्वहस्तलिखित कृति संग्रह	यशोदेवसूरिजी	गुज.	यशोभारती प्रकाशन	69
135	भौगोलिक कोश-१	डाह्याभाई पीतांबरदास	गुज.	गुजरात वर्नाक्युलर सोसायटी	100
136	भौगोलिक कोश-२	डाह्याभाई पीतांबरदास	गुज.	गुजरात वर्नाक्युलर सोसायटी	136
137	जैन साहित्य संशोधक वर्ष-१ अंक-१, २	जिनविजयजी	हिन्दी	जैन साहित्य संशोधक पुना	266
138	जैन साहित्य संशोधक वर्ष-१ अंक-३, ४	जिनविजयजी	हिन्दी	जैन साहित्य संशोधक पुना	244
139	जैन साहित्य संशोधक वर्ष-२ अंक-१, २	जिनविजयजी	हिन्दी	जैन साहित्य संशोधक पुना	274
140	जैन साहित्य संशोधक वर्ष-२ अंक-३, ४	जिनविजयजी	हिन्दी	जैन साहित्य संशोधक पुना	168
141	जैन साहित्य संशोधक वर्ष-३ अंक-१, २	जिनविजयजी	हिन्दी	जैन साहित्य संशोधक पुना	282
142	जैन साहित्य संशोधक वर्ष-३ अंक-३, ४	जिनविजयजी	हिन्दी	जैन साहित्य संशोधक पुना	182
143	नवपदोनी आनुपूर्वी भाग-१	सोमविजयजी	गुज.	शाह बाबुलाल सवचंद	384
144	नवपदोनी आनुपूर्वी भाग-२	सोमविजयजी	गुज.	शाह बाबुलाल सवचंद	376
145	नवपदोनी आनुपूर्वी भाग-३	सोमविजयजी	गुज.	शाह बाबुलाल सवचंद	387
146	भास्वति	शतानंद मारछता	सं./हि	एच.बी. गुप्ता एन्ड सन्स बनारस	174
147	जैन सिद्धांत कौमुदी (अर्धमागधी व्याकरण)	रत्नचंद्र स्वामी	प्रा./सं.	भैरोदान सेठीया	320
148	मंत्रराज गुणकल्प महोदधि	जयदयाल शर्मा	हिन्दी	जयदयाल शर्मा	286
149	फक्कीका रत्नमंजूषा-१, २	कनकलाल ठाकूर	सं.	हरिकृष्ण निबंध	272
150	अनुभूत सिद्ध विशायंत्र (छ कल्प संग्रह)	मेघविजयजी	सं./गुज	महावीर ग्रंथमाळा	142
151	सारावलि	कल्याण वर्धन	सं.	पांडुरंग जीवाजी	260
152	ज्योतिष सिद्धांत संग्रह	विश्वेश्वरप्रसाद द्विवेदी	सं.	ब्रीजभूषणदास बनारस	232
153	ज्ञान प्रदीपिका तथा सामुद्रिक शास्त्रम्	रामव्यास पान्डेय	सं.	जैन सिद्धांत भवन	160
	नूतन संकलन				
१	आ. चंद्रसागरसूरिजी ज्ञानभंडार – उज्जैन	हस्तप्रत सूचीपत्र	हिन्दी	श्री आशापुरण पार्श्वनाथ जैन ज्ञानभंडार	
२	श्री गुजराती श्वे.मू. जैन संघ-हस्तप्रत भंडार – कलकत्ता	हस्तप्रत सूचीपत्र	हिन्दी	श्री आशापुरण पार्श्वनाथ जैन ज्ञानभंडार	

संरक्षक—श्रीयुत हरगोविंददास रामजी शाह—मुंबई

॥ अर्हम् ॥

॥ णमो त्थु णं समणस्स भगवओ महावीरस्स ॥

खंड १] [अंक ३

जैन साहित्य संशोधक

जैन इतिहास, साहित्य, तत्त्वज्ञान आदि विषयक 'सचित्र त्रैमासिक पत्र ।

संपादक
मुनिराज श्रीजिनविजयजी ।

प्रकाशक—

जैन साहित्य संशोधक समाज ।

ठि० भारत जैन विद्यालय, फर्ग्युसन कालेज रोड; पूना सिटी ।

वार्षिक मूल्य ५॥ रु०] * [प्रस्तुत अंक मूल्य २॥ रु०

Aho ! Shrutgyanam

इसे अवश्य पढिए

जैन साहित्य संशोधक का दूसरा अंक कार्तिक महिनेमें प्रकट हुआ था और यह तीसरा अंक ६ महिने बाद ज्येष्ठमें प्रकाशित होता है। जै. सा. सं. त्रैमासिक है इस लिए प्रति तीन महिनेमें प्रकाशित होना आवश्यक है और यदि समयपर न निकले तो ग्राहकोंका उस बारेमें तकाजा करना भी व्याजिब है। परंतु जिन कई प्रकारकी अडचनोंके कारण हम अभी तक इसको समयपर नहीं निकाल सके उनका खयाल यदि हमारे विज्ञ पाठकोंको हो तो वे हमें अवश्य इस बारेमें क्षमा प्रदान करेंगे।

*　　*　　*

पत्रके संपादक मुनिजीका आजकल अधिक रहना अमदाबाद होता है। उनके शिरपर, गुजरातके राष्ट्रीय विद्यापीठ की एक नहीं पर दो दो संस्थाओंका कार्यभार रहा हुआ है—वे 'गुजरात पुरातत्त्व मंदिर' और 'आर्यविद्या मंदिर' नामक महत्त्वकी संस्थाओंके 'आचार्य' बनाये गये हैं; इस लिए वहांके कामको संभालना उनका प्रथम कर्तव्य है। जब वहांके कामसे कुछ फुर्सद मिलती है तब वे यहां (पूने) आ कर इस पत्रका काम शुरू करते हैं। यह पत्र इतना बडा है कि इससे छपनेमें कमसे कम दो-ढाई महिने लगते हैं; सो भी प्रेसवालोंकी कृपा होती है तो-नहीं तो इससे भी ज्यादह समय लग जाता है। इस लिए यथासमय पत्र नहीं निकल सके तो उसमें हमारा कोई इलाज नहीं; ऐसा समझना चाहिए।

*　　*　　*

दूसरी बात यह है कि इस प्रकारके पत्र सभी इसी तरह विलंबसे निकला करते हैं। हमारे पत्रकी तो बात जाने दीजिए; खुद गवर्मेंटकी ओरसे प्रकाशित होनेवाले 'इन्डियन एंटीक्वेरी' और 'एपिग्राफिया इन्डिका' जैसे जगप्रसिद्ध जर्नलस् भी कभी कभी १२ महिने जितने 'लेईट' छपते हैं।

*　　*　　*

यह पत्र कोई कमाईके लिये नहीं निकाला जाता; केवल साहित्यके प्रकाशनार्थ ही निकाला जाता है। इसका खर्च कोई ग्राहकोंकी फीससे पूरा नहीं होता। ग्राहकोंकी जितनी फी आती है उससे तो तिगुनासे भी अधिक खर्च इस संस्थाको गांठका जोडना पडता है। यदि सारा खर्च ग्राहकों ही की जिम्मेवारी पर रखकर इसको प्रकाशित करना हो तब तो इसका मूल्य ५ रूपयेकी बनिस्बत 'इन्डियन एंटिक्वेरी' आदि जर्नलोंकी तरह २० रूपये वार्षिक रखना पडे। परंतु जैन समाजमें ऐसे विषयोंके जिज्ञासुओंकी उत्कंठाका जब खयाल किया जाय तो शायद एक भी जिज्ञासु वैसा नहीं निकलेगा जो २० रूपये वार्षिक दे कर इसका ग्राहक बने। इससे पाठक समझ सकेंगे कि जैन साहित्य संशोधककी क्या परिस्थिति है।

*　　*　　*

यद्यपि परिस्थिति विकट है, तो भी हम अब इसे समयपर प्रकाशित करनेकी कोशीशमें अवश्य लगे हुए हैं ही। उम्मीद है कि ४ था अंक पाठकोंके हाथमें जल्दी ही पहुंच जायगा-क्यों कि इस अंककी छपाई पूरी होते ही अगले की छपाई शुरू करदी गई है।

*　　*　　*

इस अंकमें स्थानाभावसे हिन्दी लेख बिलकुल नहीं आ सके इस लिए अगले अंकमें वे ही लेख अधिक दिये जायंगे।

*　　*　　*

इस अंकमें जो एक पुरानी पट्टावलि दी गई है वह बहुत महत्त्वकी और अपूर्व है। उसको बडे परिश्रमके साथ छपानी पडी है। पाठक उसे खूब ध्यान दे कर पढें। पहले दफह पढनेमें अवश्य जरा कुछ कठिनता पडेगी; क्यों कि उसकी भाषा जो है सो पुरानी गुजराती है और कुछ विलक्षण भी है। परंतु मननपूर्वक पढनेसे उसका मतलब सब ठीक समझमें आ जायगा।

निवेदक—
व्यवस्थापक-जै. सा. सं.

Aho ! Shrutgyanam

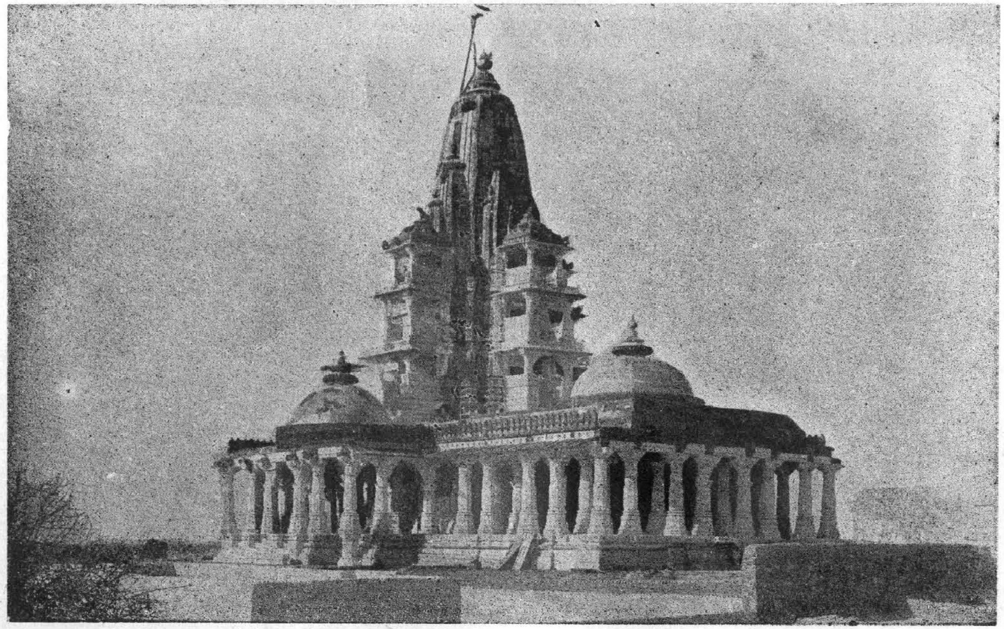

चतुर्मुख जैन मंदिर, कापरडा, जोधपुर (मारवाड)

Aho ! Shrutgyanam

Aho ! Shrutgyanam

|| अर्हम् ||

|| नमोऽस्तु श्रमणाय भगवते महावीराय ||

जैन साहित्य संशोधक

' पुरिसा ! सच्चमेव समभिजाणाहि । सच्चस्साणाए उवट्ठिए मेहावी मारं तरइ । '
' जे एगं जाणइ से सव्वं जाणइ; जे सव्वं जाणइ से एगं जाणइ । '
' दिट्ठं, सुयं, मयं, विण्णायं जं एत्थ परिकहिज्जइ । '

—निर्ग्रन्थप्रवचन—आचारांगसूत्र ।

खंड १] गुजराती लेख विभाग [अंक ३

क्षेत्रादेश पट्टक.

आ शीर्षक नीचे आजे केटलाक क्षेत्रादेश पट्टको आपवामां आवे छे. घणा वांचको आ मथाळुं वांची विचारमां पडशे के ' क्षेत्रादेश पट्टक ' ए वळी शुं छे. अमे अहिं संक्षेपमां तेनी समजण आपीए छीए. जैन यतियोमांथी[1] जे जे यतियोना आचार-विचारो अने विधि-विधानो एकज सरखां होय तथा

---

१ अहिं अमे जे यतिशब्द वापर्यो छे ते, वर्तमानमां जे रूढी अनुसार संकुचित अर्थमां ए शब्द वपराय छे ते अर्थमां नथी वापर्यो, परंतु एना वाच्यार्थवाळा व्यापक अर्थमां वापर्यो छे. अहिं आपेला यति शब्दथी आजे कहेवाता यतियो अने मनाता साधु बन्ने प्रकारना वेशधारी त्यागियो समजवाना छे. कारण के यति अने साधु शब्दथी संबोधाता वर्गमां आजे जे खास अमुक प्रकारनी आचार-पालननी भिन्नता जोवामां आवे छे, ते फक्त लगभग छेल्ला २५० वर्षथीज हयातीमां आवी छे. तेनी पहेलां ए भिन्नता न हती. विक्रमना १८ मा सैकाना प्रारम्भमां ए भिन्नतानो प्रादुर्भाव थयो छे. ए समय पहेलां जैन (श्वेताम्बर साम्प्रदाय) नो त्यागीवर्ग एक मात्र ' यति ' नामथीज ओळखातो हतो. जैन शास्त्रोप्रमाणे यति, भिक्षु, साधु, श्रमण ए बधा शब्दो एकज प्रकारना भावार्थवाळा होई एकज प्रकारना वर्गने आ शब्दोथी संबोधवामां आवे छे. वर्तमानमां जे प्रकारनी वर्गभिन्नता दृष्टिगोचर थाय छे तेना प्रादुर्भावनो इतिहास बहु जाणवा जेवो छे; परंतु आ स्थळे तेनो प्रसंग न होवाथी, बीजा कोई प्रसंगे ते लखवा इच्छा छे.

Aho ! Shrutgyanam

जेओ एकज व्यक्तिनी आज्ञानुसार पोतानी जीवनचर्या पाळता होय तेवा बधा यतियोना एक समुदायने जैनसाहित्यमां ' गच्छ ' ना नामथी संबोधाय छे. ए ' गच्छ ' नो जे नायक होय-जे व्यक्तिनी आज्ञामां ए बधो यति समुदाय वर्तता होय तेने आचार्य कहेवामां आवे छे. आलङ्कारिक भाषामां कहीए तो गच्छ-नो नायक ए एक प्रकारे राजा गणाय. जेम राजानी आज्ञानुसार तेनो बधो अधिकारी-वर्ग अने प्रजा-वर्ग पोतानी जीवनचर्या चलावे छे तेम आचार्यनी आज्ञानुसार तेनो बधो यतिसमूह अने अनुयायीगण पोतानी धर्मचर्या चलावे छे. आ आलङ्कारिक कल्पना मध्यकालमां तो लगभग यथार्थरूप पण धारण करवा जेटली प्रयत्नवती थई गई हती. ए समयमां आचार्य मूर्तिमन्त राजा जेवाज रूपमां देखावाना मोहमां सपडाई गया हता. राजानी माफक आचार्य पण छडीदार, चोपदार, पालखी, नगारो, निशान, चमर आदि राज्यचिन्हो धारण करवा लाग्या हता. अस्तु. जेम राजा पोताना अधिकारीयोमांथी अ-मुक वर्षे अमुक अधिकारीने अमुक स्थाननो अधिकार चलाववा मोकले, तेम ए आचार्य पण पोताना आज्ञानुवर्ती यतियोने दर वर्षे जुदा जुदा स्थळोमां चातुर्मास करवा माटे मोकलता. आ माटे तेओ ' आ वर्षे अमुक यतिए अमुक स्थानमां चातुर्मास रहेवुं ' एवो आदेश (हुकम) दरेक वर्षे काढता अने जेम आजे गवर्मेंटना प्राईवेट सरक्युलरो दरेक अधिकारीने मोकली देवामां आवे छे तेम ते आदेशोनी अनेक नकलो करावी समुदायना दरेक यतिपासे पहोंचाडवामां आवती. आ प्रकारना लखाणवाळा आदेश-पत्रने 'क्षेत्रादेश पट्टक' कहेवामां आवे छे. क्षेत्र एटले चातुर्मास रहेवा माटेनुं स्थान, अने ते सम्बन्धी आचार्यना आदेश एटले हुकम नो जे पट्टो ते 'क्षेत्रादेश पट्टक' आवा पट्टको अर्थात् पट्टाओ दरेक गच्छ अने समुदायना आचार्यो काढता. ए पट्टकोनी लखवानी रीतमां साधारणरीते प्रारम्भमां स्वर्गस्थ आचार्यने नमस्कार करेलुं होय छे. पछी जे वर्ष माटे ए पट्टक काढवामां आव्यो होय तेनो उल्लेख करवामां आवे छे. तदनन्तर वर्तमान आचार्य के जेना तरफथी ए पट्टक कढाय छे—तेनुं नाम होय छे अने ते पछी जे देशना क्षेत्रो माटे ए आदेश होय छे तेनुं नाम नोंधाय छे प्रारंभमां आटलुं मथाळुं कर्या पछी नीचे क्रमवार एकेक पंक्तिमां, जे यतिने जे गामे रहेवानुं होय तेनी सूचि आपवामां आवे छे. तेनी नीचे जो कोई यतिने कोई गुन्हाबद्दल समुदायमांथी बहिष्कृत करवामां आव्यो होय छे तो तेनी पण सूचना आप-वामां आवे छे अने छेवटे बे-चार पंक्तिओमां आचार्य तरफथी बधा यतियोने सामान्य शिखामण अपा-एली होय छे. तेमां लखेलुं होय छे के आ पट्टा प्रमाणे दरेक यतिए पोतपोताना निर्दिष्ट स्थाने वेळासर जई रहेवुं. समुदायनी मर्यादानुं जे विधानपत्र करेलुं होय ते प्रमाणे वर्तवुं. जे कोई अविचारितरीते वर्तशे तेने सखत उपालम्भ आपवामां आवशे. जे स्थाने रहेवुं होय त्यां श्रावको साथे लडझघड करवी नहीं. लोक व्यवहारनुं यथायोग्य पालन करवुं. चातुर्मासमां क्यांए जवुं आववुं नहीं. दरेकरीते सावधान रहेवुं. इत्यादि. आ पट्टकोना शिरोभागे राजमुद्रा (मोहोर = शिक्का) नी माफक आचार्य पोताना हाथे " सही " अथवा " सही छइ " एवा शब्दो सीक्स-लाईन के एईट लाईन पाईका करतांए वधारे मोटा कदवाळा अक्षरोमां लखे छे—के जे प्रकार उदयपुर (मेवाड) ना महाराणाओ तरफथी निकळता जूना फरमानोमां पण जोवामां आवे छे.

आ प्रकारना १० पट्टको अमने प्र० श्री कान्तिविजयजी महाराजना शास्त्रसंग्रहमांथी मळी आव्या छे जे क्रमथी अहिं प्रकट करवामां आवे छे. आ दसे पट्टको तपागच्छनी मुख्य शाखाना छे. आ पट्टको उपरथी केटलीए उपयोगी बाबतोनी माहिती मळी आवे छे. आजथी मात्र १०० वर्ष पहेलांज जैन यति-योनुं सामुदायिक बन्धारण केवुं व्यवस्थित हतुं, जैनसमाजनी केटली बहोळी संख्या हती, त्यागियो पण केटली मोटी संख्यामां विद्यमान हता, तेमना उपर आचार्यनी केवी सारी सत्ता हती, समाजमां यति-यो कोई पण प्रकारनो विखवाद उभो न करी शके ते माटे आचार्यो केवी काळजी राखता, इत्यादि अनेक सामाजिक बाबतो उपर आ पट्टकोथी जाणवा जेवो प्रकाश पडे छे. आ पट्टको प्रमाणे सो दोढ

सो वर्ष उपर जेटलां गामो जैन यतियोने चातुर्मास रहेवा योग्य सारी श्रावकसंख्यावाळा हता, तेनाथी अर्धां गामो पण आजे यति के साधुमाटे एक रात रहेवा पुरती श्रावकनी वस्तीवाळा रह्या नथी. ए एकज बाबत ऊपरथी जोई शकाय छे के जैन समाजनी संख्या केटली बधी झडपथी घटी गई छे तथा घटती जाय छे. तेज प्रमाणे यतियोनी संख्यानी पण जबरदस्त घटती थई छे कर्नल टॉडे पोताना राजस्थान नामक प्रसिद्ध इतिहासमां एकला राजपूतानामां ज मात्र खरतर गच्छना ११०० यति लख्या छे. तेना बदले आजे १११ पण विद्यमान नथी. हीरविजयसूरिनो यतिसमुदाय लगभग २००० जेटली संख्यावाळो हतो तेना ठेकाणे आजे २०० नो पण नथी एज रीते जे अनेक ठेकाणे सेंकडो घरो श्रावकोन हता त्यां आजे ५-१० पण रह्या नथी. अस्तु.

पट्टक १.

—-*—

अहिं आपवामां आवता पट्टकोमां, आ पट्टक सौथी जुनो छे ए विक्रमसंवत् १७७४ नी सालनो छे. ते वखते तपागच्छनी मुख्य गादी उपर आचार्य विजयक्षमासूरि हता. आ पट्टक जाडा देशी कागळ उपर लखेलो छे. तेनी लंबाई ३¾ फीट अने पहोळाई ३¼ इंच छे एकंदर १४६ पंक्तिओ लखेली छे. अक्षर सुंदर देवनागरी जैन शैलीना छे. मूळ नकल नीचे प्रमाणे छेः—

सही छइ.

ॐ नत्वा भ[1]। श्रीविजयरत्नसूरीश्वरगुरुभ्यो नमः। संवत् १७७४ वर्षे भ। श्रीविजयक्षमासूरिभिर्जेष्ठस्थित्यां[2]-देशपट्टको लिख्यते। श्रीगुर्जरदेशे॥

पं[3]। न्यायविजयस्सपरिकरा मेवाडदेशे तथा मेवातदेशे तथा गुर्जरदेशे।

उं[4]। श्रीविमलविजय ग[5]। सूरति १

पं। जिनविजय ग। वृद्धश्रीजीसत्क समी १

पं। प्रेमविजय ग। वृद्धश्रीजीस[6]। पाटण १

पं। ऋद्धिविजय ग। वृद्धश्रीजी सत्क राधनपुर १ ठाणुं ३ पाटणमध्ये

पं। लब्धिविजय ग। वृद्धश्रीजीसत्क वडोदरुं १

पं। वृद्धिविजय ग। पं। ज्ञानस। अस्मत्पार्श्वे[7]

पं। रूपानन्द ग। रायपुर १ ठा. ७ राजनगरमध्ये

पं। धनविजय ग। उ। श्रीविनीतस। इलमपुर १

पं। नित्यविजय ग। श्रीजीसत्क लघुमरुदेशे

पं। गंगविजय ग। श्रीजीसत्क मेवाडदेशे

पं। गंगविजय ग। पं। हेमसत्क रानेर १

पं। मानविजय ग। श्रीजीसत्क अस्मत्पार्श्वे

पं। सीहविजय ग। श्रीजीसत्क इदलपुर १ ठा. २ राजनगरमध्ये

पं। जीवविजय ग। पं। ज्ञानसत्क अस्मत्पार्श्वे

पं। विनयविजय ग। वृद्धश्रीजीसत्क व्यारा १ व्यालोल २

पं। प्रेमविजय ग। लघुवृद्धश्रीजीसत्क धणोज १ पांचोट २

पं। भीमविजय ग। पं। सुखविजय स। सोरठदेशे दीव १

पं। खिमाविजय ग। }
पं। सुमतिविजय ग। } उ। श्रीरत्न स। राजनगर १

पं। कर्पूरविजय ग। पं। सत्य स। वीसलपुर १ ठा. ४ पाटणमध्ये रसूलपुर २ हेब्वदपुर ३

पं। दीपविजय ग। पं। कनक स। उसमापुर १ वाडेज २

पं। जिनविजय ग। पं। कीर्ति स। नडीयाद १ धंडोल २

पं। गुणविजय ग। उ। श्रीजीसत्क सरखेज १

पं। दानविमल ग। पं। चन्द्रसत्क कच्छदेशे भजनगर १

पं। रूपाविमल ग। पं। कान्तिविमल स। सोरठदेशे नवुंनगर १

पं। देवविजय ग। पं। नेमिविजय स। श्रीजीसत्क महिसाणो १ पालोद्र २

पं। गौतमसोम ग। अहम्मदपुर १

पं। वीरचंद्र ग। पं। विशेषसत्क वणोद १ धनेरां २

---

१ 'भ।' एटले भट्टारक २ 'ज्येष्ठस्थिति' चातुर्मास. ३ 'पं।' पंडित अथवा पंन्यास. ४ 'उं' उपाध्याय. ५ 'ग।' गणि. ६ 'स। =' सत्क = तेना शिष्य. ७ आचार्यनी पासे.

Aho ! Shrutgyanam

पं । लक्ष्मीविजय ग । पं । हर्षसत्क सोरठदेशे घोघाबंदिर१
पं । न्यानविजय ग । उ । श्रीदेवसत्क । बाबीपुर १ सकंदरपुर २
पं । मयाचन्द्र ग । पं । कपूर स । थिराद्र १
पं । भक्तिचन्द्र ग । उ । श्रीधर्मसत्क मावड १ गोठडा२
पं । मेरुविजय ग । उ । श्रीमेघसत्क मेवातदेशे
पं । पुण्यविजय ग । वृद्धसीजीसत्क वजीरपुर १
पं । नयविजय ग । उ । श्रीउदयसत्क वांकानेर १ चूडारांणपुर २
पं । चतुरविजय ग । पं । ऋद्धिसत्क दशाडो १ कलाडो २ लोलाडो ३
पं । मेघविजय ग । पं । अमरसत्क । इडर १
पं । देवचन्द्र ग । पं । तेज स । फुरमांनवाडो १
पं । मोहनविजय ग । पं । रूपसत्क वडनगर १
पं । रत्नविजय ग । पं । दयासत्क वीरमगांम १ भोजुआ २
पं । प्रतापविजय ग । पं । प्रेमसत्क तेरवाडुं१ भलगांव २
पं । चंद्रविजय ग । पं । मान स । चंदूर १
पं । कमलविजय ग । पं । केसर स । घोरज १
पं । प्रमोदचन्द्र ग । प्रांतेज १
पं । दोलतिसागर ग । पं । लाभसत्क स्याणी१ भोईकुं२
पं । प्रीतिविजय ग । पं । अनंतसत्क वडालवी १ठा. २ थानवासू पाटणमध्ये.
पं । कल्याणवर्धन ग । पं । धीरसत्क पाटडी १ बजाणुं२
पं । केसरविजय ग । पं । जय स । विपन्नचेलानैं कुणगर १
पं । महिमाविजय ग । पं । रवि स । हरसोर १
पं । विवेकविजय ग । पं । रंग स । सैंभर १
पं । भक्तिसुंदर ग । पं । पुण्यसत्क पाटणमध्ये थानवासू
पं । नरविजय ग । उ । श्रीविनयसत्क राजपुर १
पं । कुंअरविमल ग । कडी १ करण २
पं । केसरविमल ग । पं । दीप स । पंचासर १
पं । देवविजय ग । पं । नित्यसत्क सिद्धपुर १
पं । केसरकुशल पं । न्यायकुशल ग । शांतलपुर १
पं । रत्नविजय ग । पं । लब्धिसत्क भरूअच्छ १

पं । गुलालविजय ग । पं । गुणसत्क गंधार १ जंबूसर२
पं । लालचंद्र ग । पं । जिन स । सावली १
पं । जीवणचंद्र ग । पं । दानचंद्र ग । } पं । तेज स । पाटणमध्ये
पं । केसरविजय ग । पं । लक्ष्मी स ।लाडोल१ वीजापुर २
पं । पुण्यविजय ग । पं । रंगसत्क डीसा १ झेरडो २
पं । हर्षविजय ग । पं । गुणसत्क नवु पुरु १
पं । तत्त्वविजय ग । उ । श्रीउदयसत्क वाराही १ कोरडा २
पं । अमरविजय ग । पं । गजविजय ग । } पं । सुमति स । पाल्हणपुर १ वगदा २
पं । हस्तिविजय ग । उ । श्रीलक्ष्मीसत्क वडाली १ षेड २
पं । कृष्णविजय ग । पं । रूपसत्क माल्हण१ मगरवाडो२
पं । मेघविजय ग । पं । रूपसत्क चाणसमो १
पं । खिमाविजय ग । उ । श्रीविमल स । आसाउल १
पं । मेघविजय ग । पं । प्रेमसत्क पाटणमध्ये
पं । जीवविजय ग । पं । नित्य स । दहीयोद्र १ वुसणोल २
पं । भाग्यचंद्र ग । पं । सभासत्क उगरेज १
पं । कल्याणसुंदर ग । पं । महिमा स । खंभायत १
पं । अमृतविजय ग । पं । उत्तम स । वेंड १ राफु २
पं । न्यानविजय ग । पं । धीरसत्क । राजनगरमध्ये
पं । सुमतिविजय ग । पं । रूपसत्क । साचोर १
पं । रंगविजय ग । पं । ज्ञान स । ईलोड १
पं । नित्यविमल ग । पं । विनीत स । वलासणो १
पं । तीर्थसुंदर ग । वावड १
पं । जिनविजय ग । पं । ज्ञान स । मोडासो १
पं । नेमिविजय ग । पं । तिलक सत्क । कंबोई १
पं । उदयविजय ग । पं । रत्नविजय ग } उ । श्रीनय स । वासा १
पं । देवविजय ग । पं । अमराविजय ग । } पं । नित्य स । मांडल १
पं । दानविजय ग । पं । लालविजय ग । } पं । लब्धिस । राजनगर मध्ये

Aho ! Shrutgyanam

पं । सहिविजय ग । पं । नित्य सत्क । सेषपुर १
पं । लाभविजय ग । पं । कुंअर सत्क । थिरा १ रांणकपुर २
पं । भाणविजय ग । पं । मेवसत्क सोहीगांम १
पं । न्यानसागर ग । पं । वृद्धिसत्क । आगलोड १
पं । चतुरसागर ग । पं । उत्तम स । गोला १
पं । सुंदरचंद्र ग । पं । उत्तम स । देत्रोज १
पं । लालविजय ग । पं । कुंअर स । बैंणप १ सुनेन २
पं । चन्द्रविजय ग । पं । भाक्ति स । गोधावी
पं । रूपविजय ग । पं । माणिक्य सत्क । समुं१ रानेर २
पं । सुंदरविजय ग । पं । कृष्णसत्क । नंदासण १
पं । प्रतापविमल ग । पं । दान स । कच्छदेशे भजनगरमध्ये
पं । रंगविजय ग । पं । केसर स । बारेजो १
पं । न्यायसागर ग । पं । उत्तम स । प्रेमापुर १
पं । राजविजय ग । पं । प्रेम स । काजीपुरो १
पं । रूपविजय ग । पं । वृद्धि स । डभोई १
पं । देवविजय ग । पं । दीप स । सीहपुर १
पं । सुखविजय ग । वृद्धश्रीजी स । थानवासू पाटणमध्ये
पं । मानविजय ग । पं । चंद्रसत्क कंबोई सोलंकीनी १
पं । जयविजय ग । ऋ । विनय स । नायकुं १ दूधका २
पं । जिनविजय ग । पं । उत्तम स । ऊंमता १
पं । खिमाविजय ग । पं । नित्य स । मुंडेटु १ फोरणा २ बातिम ३
पं । धनसागर ग । पं । ललित स । बसुं १
पं । आणंदविजय ग । श्रीजी स । राजनगरमध्ये थांनवासू
पं । दर्शनविजय ग । पं । केसर स । निजांमपुर १
पं । रूपविजय ग । ऋ । हस्तिसत्क धोलकुं १
पं । उत्तमविजय ग । ऋ । विनय स । हारेज १
पं । सुजाणविजय ग । पं । रूप स । आंत्रोली १
पं । रत्नविमल ग । पं । वर्धमान स । अहमदनगर १
पं । सुखविजय ग । पं । महिमा स । सेरीसुं १
पं । प्रीतिविजय ग । पं वृद्धि स । फेदरा १
पं । कृष्णविजय ग । पं । ऋद्धि स । पीर भडीयाद १
प । पुण्यविजय ग । पं । थिर सत्क । लींछ १
पं । जीवसागर ग । पं । गंग स । वावि १ ढांमुं २
पं । गजविजय ग । ऋ । जीव स । छठीयाडुं १
पं । ऋद्धिविजय ग । पं । प्रेम स । रणोद १
पं । प्रेमविजय ग । पं । प्रेम स । मणोद १
पं । जीवणचंद्र ग । श्रीचंद्र स । ठा. २ पाटणमध्ये
पं । मानविजय ग । पं । तेज स । मातर १
पं । केसरविजय ग । पं हेम सत्क । दांता १
पं । भक्तिचंद्र ग । पं । मयाचंद्र स । बैंरालु १
पं । धनविजय ग । हस्तिसत्क । कबीरपुर १
पं । कृष्णविजय ग । पं । प्रीति स । चीलोडुं १
ऋ । गौतमविजय श्रीजीसत्क गोढवाडदेशे
ऋ । वेलो । पं । पुण्यसत्क । थांनवासू पाटणमध्ये
ऋ । कृष्णविजय पं । चंद्रसत्क अंबासण १
ऋ । लब्धिविजय । पं । दीप सत्क । बिछलापुर १
ऋ । हस्तिविजय । उ । श्रीनयसत्क । राजनगरमध्ये ठा. १
ऋ । हंसविजय । पं । वृद्धि स । ओदरा १
ऋ । धनविजय । ऋ । चांपा स । घाघल १
ऋ । भाग्यविजय । पं । जिन स । वसही १
सां । गोकलश्री ठा. १ शेषपुरमध्ये ठा. १
सा । जीवी राजनगरमध्ये

॥ अत्रोद्धरित क्षेत्रादि सत्यापना अस्माभिरेव विधेयेति ॥

॥ समस्त साधु समुदाय योग्यं । अपरं । पट्टाप्रमाणैं सहू पोता पोतानैं आदेशें पुंहचयो । मर्यादा पट्टक मुंक्यो छै ते प्रमाणैं प्रवर्तयो । ये अणाविचारयुं चालस्यैं ते उपालंभ पांमस्यैं । बीजुं गृहस्थ संघातें चढी बोलवुं नही । गृहस्थोनो मन ठाम राखवुं । लोकिक व्यवहार विशेषैं राखवुं । चोमासा माहे किहांई जावुं आववुं नही ते समझी सावधानपणै प्रवर्तवुं ॥

'सा' एटले साध्वी—गुरुणी.

पट्टक २

आ पट्टक संवत् १८२२ नी सालमां लखाएलो छे ते वखते आचार्य विजयधर्मसूरी गादी उपर हता. ए पट्टकनी लंबाई ३ फीट २ इंच अने पहोळाई ६¼ इंच छे. एकंदर १२३ पंक्तिओ छे.

सही

ॐ नत्वा भ । श्रीविजयदयासूरीश्वरगुरुभ्यो नमः ।

संवत् १८२२ वर्षे भ । श्री श्रीविजयधर्मसूरिभिर्ज्येष्ठस्थित्यादेशपट्टको लिख्यते । श्रीगुर्जरदेशे ।

पं । हेमविजय ग । श्रीजीसपरिकराः वृद्धमरुदेशे ।

पं । शान्तिविजय ग । पं । लब्धि स । पादरो १ मुंजपुर २ मानपुर ३

पं । हितविजय ग । उ । श्रीशुभ स । वीसलनगर १ सिद्धपुर २ कडा ३ जासका ४ देणप ५

पं । राजविजय ग । पं । हर्ष स ।
पं । इन्द्रविजय ग । पं । राज स } कच्छदेशे

पं । नेमविजय ग । पं । खिमा स ।
पं । न्यायविजग ग । पं । नेम स } पाटण १ कुणगिर २

पं । विनीतविजय ग । पं । प्रेम स । माळण १ गोला २ वासणा ३

पं । रंगविजय ग । पं । उदय स । ईलोल १ वषतापुर२

पं । हर्षविजय ग । पं । विवेक स । मेसाणा १ सामेतरा२

पं । मोहनविजय ग । पं । सुमति स । वावि १ माढकुं२

पं । सामलचंद्र ग । पं । लाल स । बसु१ चांगा२मयादर३

पं । मोहनविजय ग । पं । प्रताप स। उंमता १

पं । लब्धिविजय ग । पं । लाभ स । कोलीनी कंबोई१

पं । दर्शनविजय ग । पं । देव स ।
पं । कान्तिविजय ग । पं । दर्शन स } ईडर १ पाल २

पं । रत्नविजय ग । उ । श्रीशुभ स । मगरवाडो १ वडगाम २

पं । भाणविजय ग । पं । प्रेम स । दक्षणदेशे

पं । भक्तिविजय ग । पं । नय स । राधनपुर १ कमालपुर २

पं । विवेकविजय ग । पं । कृष्ण स । असावुल नवोवास१

पं । कुशलविजय ग । पं । मान स । बीजापुर १ अहम्मदनगर २ कडली ३

पं । अमृतविजय ग । पं । भाण स । मोहनपुर १ रणासण २ पीपलदल ३ करवटिओ ४

पं । मोहनविजय ग । पं । हंस स । सोरठदेशे भावनगर१

पं । शान्तिविजय ग । पं । कृष्ण स ।
पं । जसविजय ग । पं । विवेक स
पं । कान्तिविजय ग । पं । लाल स } राजनगर १ गोधावी २ रायपुर ३

पं । गणेशरुचि ग । पं । हीरस । अस्मत्पार्श्वे

पं । दीपविजय ग । पं । राज स ।

पं । जयविजय ग । पं । दीप स । दसाडो १ बजाणो२

पं । गजविजय ग । पं । गंग स ।
पं । हंसविजय ग । पं । गज स । } वढवाण १ सीहाणी२ चूडा ३

पं । सुजाणविजय ग । पं । शान्ति स । वडोदरो १

पं । कृष्णविजय ग ।
पं । जसविजय ग । } पं । रंग स । शांतलपुर१वहुआर२

पं । देवविजय ग । पं । विनीत स । मीयागाम १ ईषर २ वलण ३

पं । शुभविजय ग । पं । मान स ।
पं । कनकविजय ग । पं । शुभ स। } पिटलाद १ आंतरोली २

पं । शांन्तिविजय ग । पं । उदय स । आगलोड १

पं । जयविजय ग । पं । सुंदर स । द्रापरो १

पं । भक्तिविजय ग । पं । कांति स ।
पं । कुशलविजय ग । पं । राज स } पाल्हणपुर १ वगदा २

पं । मोहनविजय ग । पं । उत्तम स । वलासणो १

पं । जीतवर्धन ग ।
पं । सकलवर्धन ग } पं । कल्याण स । वीरमगाम १ मांडल २

पं । केसरसोम ग । पं । धन स । विहारा १ वालोल २

पं । उत्तमविजय ग । पं । जिन स ।
पं । सुजाणविजय ग । पं । प्रेम स ।
पं । भाणविजय ग । पं । सुमति स। } सूरति १

पं । उदयसागर ग । पं । न्याय स ।
पं । रत्नकुशल ग । पं । विनीत स ।
पं । न्यायकुशल ग । पं । रत्न स । } लींमडी १ अंचेवालिउं २

पं । नायकविजय ग । पं । गुण स । कोठ १ गांगड २

Aho ! Shrutgyanam

पं । जीवविजय ग । पं । सुख स । देकावाडो १ सेदातपुरो २ छणियार ३

पं । मोहनविजय ग । पं । गुलाल स । सोवनगढ १ बुहारी २ धुंटाडिओ ३ पारणे हजूर आववुं*

पं । प्रेमविजय ग । पं । शुभ स । वडनगर १ गुंजा २ उंझा ३

पं । प्रमाणविजय ग । पं । पुण्य स । नेसडा २ आंगणवाडो ३

पं । मानविजय ग । } पं । जिन स । मेवाडदेशे
पं । षुस्यालविजय ग । } उदयपुरमध्ये

पं । भाणविजय ग । पं । राम स । लांवणोज १ षोषला २

पं । सुबुद्धिविजय ग । पं । रूप स । हेब्बदपुर १

पं । षुस्यालचन्द्र ग । पं । भाग्य स । } कूअर १
पं । षुस्याल विजय ग । श्रीजी स } राफू २

पं । चतुरविजय ग । पं । मेघ स । खंभायत १ वटादरो २ नानोदरो ३

पं । रत्नविजय ग । पं । पुण्य स । बेणप १ उचोसण २ थिराद ३

पं । विनीतविजय ग । पं । नेम स । } समी १
पं । माणिक्यविजय ग । पं । विनीत स } चंदूर २ दूधषा ३

पं । इन्द्रसोम ग । पं । गौतम स । कुकुआव १

पं । मानविजय ग । उ । श्रीरूप स । डमोई १ कारवण २

पं । षुस्याल विजय ग । पं । नेम स । } चाणसमो १
पं । उमेद विजय ग । पं । वृद्धि स । } रामपुरो २

पं । हस्तिविजय ग । पं । रंग स । धाषा १ धनेरा २

पं । प्रतापविजय ग । पं । लक्ष्मी स । } थिरा १
पं । अमृतविजय ग । पं । प्रताप स । } काकर २

पं । रत्नचंद्र ग । पं । सुगाल स । चिलोरा १

पं । न्यानविजय ग । पं । प्रमोद स । कडी १ डांगरवुं २ बडसमुं ३

पं । कपूरविजय ग । पं । अमर स । द्रांगधरो १

* चोमासुं पूरुं थया बाद आचार्यपासे आववुं.

पं । अमीविजय ग । पं । माणिक्य स । छठियाडो १ धीणोज २ लूणवा ३

पं । अमरविजय ग । पं । सुख स । दक्षणदेशे

पं । उदयचंद्र ग । पं । भक्ति स । डीसा १ झेरडा २ राजपुर ३

पं । नयविजय ग पं । राम स । धोता १ सकलाणा २ मेता ३

पं । विवेकविजय ग । पं । ऋद्धि स । मुंडेठा १

पं । ज्ञानविजय ग । पं । लक्ष्मी स । साचोर १

पं । प्रतापचन्द्र ग । पं । दान स । } साबली १
पं । भावचंद्र ग । पं । दोलत स } जामला २

पं । उत्तमविजय ग । } पं । सुमति स । दक्षणदेशे
पं । भानविजय ग । }

पं । कुंअरविजय ग । पं । गज स । ईटोलो १ अनस्तू

पं । धनविजय ग । पं । माणिक्य स । } वाराही १ कोरडा २ षोलकडुं ३
पं । क्षमारुचि ग । पं । गणेश स । }

पं । जीवणविजय ग । पं । लाल स । मातर १

पं । सोमागविजय ग । } पं । चंद्र स । पाटडी १
पं । अमृतविजय ग । }

पं । जयसागर ग । पं । न्याय स । राजपुर १

पं । डुंगरविजय ग । पं । मेघ स । वरण १

पं । अमृतविजय ग । पं । भाण स । वेडि १

पं । जिनविजय ग । पं । कल्याण स । पेढामली १

पं । माणिक्यविजय ग । पं । जिन स । हणादरु १ देलवाडो २

पं । हर्षविजय ग । पं । कृष्ण स । वोहरा कठोर १ कांवलेज २

पं । धीरसागर ग । पं । न्याय स । नवसारी १

पं । विवेकविजय ग । पं । रत्न स । भरुअच्च १

पं । षिमाविजय ग । पं । षुस्याल स । लींच १ नंदासण २

पं । भीमविजय ग । पं । रंग स । रानेर कोलीनी १

पं । विवेकविजय ग । पं । न्यान स । गांभू १

पं । बुद्धिविजय ग । पं । मोहन स । वडावली १

Aho ! Shrutgyanam

पं । केसरविजय ग । पं । विनीत स । लूणपूर १ षीमाण २

पं । कस्तूरविजय ग । पं । न्यान स । आमोद १

पं । विनयचंद्र ग । पं । भक्ति स । मावड १ गोठडा २

पं । गुलालचंद्र ग । पं । सामल स । खेरालु १

पं । राजविजय ग । पं सुंदर स । झिणोर १ सांसरोद २

पं । माणिक्यविजय ग । पं । वृद्धि स । सोईगाम १ भाभर २ तेरवाडो ३

पं । जसविजय ग । पं । प्रताप स । रणोंद मणोद २

पं । प्रेमविजय ग । पं । रूप स । फेदरा १ पींपली २

पं । हर्षचंद्र ग । पं । प्रमोद स । वडाली १ हापा २

पं । महिमा विजय ग । पं । हित स । राणकपूर १ भलगाम २

पं । राघवविजय ग । पं । लाल स । सांपरा १ सांकरा २

पं । दोलतविजय ग । पं । प्रेम स । षाषल १

पं । मतिविजय ग । पं । गज स । वातिम १ फोरणा २

पं । भाणविजय ग । पं । मेव स । उंबरी १

पं । गुणविजय ग । पं । षुस्याल स । जामपुर १

पं । माणिक्य विजय ग । पं । दीप स । धोलको १ कटोसण २

पं । जिनविजय ग । पं दर्शन स । गणाद् बहिः *

पं । वृद्धिविजय ग । पं । विनय स । पानसणा १ राणपूर २

पं । मोहनचंद्र ग । पं । उदय स । सीहपूर १

पं । लालविजय ग । पं । साधु स । गोलको १ अणवरपुरो २

पं । अनोपचंद्र ग । पं । अमी स । चांगा १

पं । केसरविजय ग । पं लाल स । दांता १ वसही २

पं । कांतिविजय ग । पं । जीवण स । षेमंत १ बुराल २ डाभला ३

पं । नायकविजय ग । पं । दीप स । सोनेथ १ झझाम २

पं । विनीतविजय ग । पं । हित स । दक्षणदेशे जेसिंघपूर १

पं । कृष्णविजय ग । पं । षुस्याल स । पीलूचो १ चांदणसर २ डभाड ३

पं । षुस्यालविजय ग । पं । गज स । महवा १ सादडा २

पं । सुजाणविजय ग । पं । राम स । रानेर १ वसराई २

पं । रूपविजय ग । पं । गौतम स । समउ १

पं । जसविजय ग । पं । कांति स । वणोद १ पाडला २

पं । धर्मविजय ग । पं । थान स । पोसीणा १

पं । सहजरुचि ग । पं । वल्लभ स । सूरातिमध्ये

पं । रत्नविजय ग । ऋ । देव स । वासा १

अत्रोद्धरितक्षेत्रादिसत्यापना अस्माभिर्विधेयेति ॥

समस्त साधु समुदाय योग्यं । अपरं । सहु पट्टा प्रमाणइं पोतापोतानइं क्षेत्रादेशइं पुंहचयो । जे कोई पारका क्षेत्रमांहिं रहस्यइं तथा क्षेत्र आलटपालट करस्यइं तथा कोई क्षेत्र क्रयविक्रय करस्यइं तथा चोमासामांहिं कोइ किहांइ फिरस्यइं हिरस्यइं तथा कोइ गृहस्थोसुं चढी बोलस्यइं तो तेहनइं आकरो उपालंभ आवस्यइं । सर्वथा गुदरास्यइं नहीं । गुदरवा ज श्रीजीनी आण छइं । एहवुं जाणी मर्यादामांहिं प्रवर्तवुं इति श्रेयःश्रेणयः ।

पट्टक ३

आ पट्टक २ फुट ११ लांबो अने ५¾ इंच पहोळो छे. लीटीओ एकंदर १२३ लखेली छे.

सही

ॐ नत्वा भ । श्रीविजयदयासूरीश्वरगुरुभ्यो नमः ।

संवत् १८२३ वर्षे भ । श्री श्रीविजयधर्मसूरिभिर्ज्येष्ठस्थित्यादेशपट्टको लिख्यते । श्रीगूर्जरदेशे ।

पं । हेमविजय ग । । श्रीजी सपरिकराः श्रीमरुदेशे

उ । श्रीराजविजय ग । पं । हर्ष स । } शांतलपुर १

पं । इंद्रविजय ग । उ । श्रीराजस । } वहुआ २

पं । शान्तिविजय ग । पं । लब्धि स । पादरो १ मुंजपुर २

---

* समुदाय (गच्छ) बहार.

Aho ! Shrutgyanam

पं । नेमविजय ग । पं । षिमा स । } पाटण १
पं । न्यानविजय ग । पं । नेम स । } कूणगिर २

पं । विनीतविजय ग । पं । प्रेम स । ईलोल १

पं । रंगविजय ग । पं । उदय स । ईडर १ जामला २

पं । हर्षविजय ग । पं विवेक स । बीजापुर १ लाडोल २

पं । मोहनविजय ग । पं । सुमति स । } वावि १
पं । बुद्धिविजय ग । पं मोहन स । } माढकुं २

~~पं । सामलचंद्र ग~~ । पं । लाल स । गोला १ चांगा २ खेरालु ३

पं । मोहनविजय ग । पं । प्रताप स । उंमता १

पं । लब्धिविजय ग । पं । लाभ स । सोईगाम १

पं । दर्शनविजय ग । पं । देव स । } साबली १
पं । कांतिविजय ग । पं । दर्शन स । } वषतापुर २

पं । रत्नविजय ग । उ । श्रीशुभ स । पीलूचो १ चांदणसर २ डभाड ३

पं । भाणविजय ग । पं । प्रेम स । दक्षणदेशे

पं । प्रसिद्धविजय ग । पं । हित स । } पाल्हणपुर १
पं । पद्मविजय ग । पं । माणिक्य स } बसु २
बगदा ३

पं । भक्तिविजय ग । पं । नय स । थिरा १ चांगा २

पं । विवेकविजय ग । पं । कृष्ण स । असाउल नवो वास

पं । कुशलविजय ग । पं । मान स । आगलोड १ कडोली २

पं । अमृतविजय ग । पं । भाण स । वडाली १ अहम्मदनगर २ पेढामली ३

पं । मोहनविजय ग । पं । हंस स । सोरठदेशे

पं । शान्तिविजय ग पं । कृष्ण स । } वीरमगाम १
पं । जसविजय ग । पं । विवेक स । } मांडल २
पं । कांतिविजय ग । पं । लाल स }

पं । गणेश रुचि ग । पं । हरि स । अस्मत्पार्श्वे

पं । दीपविजय ग । पं । राज स । } लींबडी १
पं । जयविजय ग । पं । दीप स । } अंबैयालिउं २

पं । देवविजय ग । पं । विनीत स । मीयागाम १ ईंधर २ वलण ३

पं । गजविजय ग । पं । गंग स । } ध्रांगध्रो १
पं । हंसविजय ग पं । गज स } चूडा २

पं । सुजाणविजय । पं । शान्ति स । वडोदरो १

पं । शुभविजय ग । पं । मान स । } राजनगर १
पं । कनकविजय ग । पं । शुभ स । } रायपुर २

पं । शांतिविजय ग । पं । उदय स । खेडि ब्रह्मानि १

पं । जीतवर्धन ग । } पं । कल्याण स । दसाडो १
पं । सकलवर्धन ग । }

पं । जयविजय ग । पं । सुंदर स । रानेर १ कांबलेज २ कुंदियाणो ३

पं । कृष्णविजय ग । } पं । रंग स । कच्छदेशे
पं । जसविजय ग । }

पं । जीवविजय । पं । सुख स । कोठ १ गांगड २ नानोदरो ३

पं । भक्तिविजय ग । पं । कांति स । } राधनपुर १
पं । कुशलविजय ग । पं । राज स । } कमालपुर २
अणवरपुरो ३

पं । केसरसोम ग । पं । धन स । सोवनगढ १

पं । रत्नकुशल ग । पं । विनीत स । } वढवाण १
पं । न्यानकुशल ग । पं । रत्न स } सीहाणी २

पं । मोहनविजय ग । पं । उत्तम स । पींपलदल १ करबटिओ २

पं । उत्तमविजय ग । पं । जिन स । }
पं । सुजाणविजय ग । पं । राम स । } सूरति १
पं । हर्षविजय ग । पं । कृष्ण स । }

पं । सुबुद्धिविजय ग । पं । सुजाण स । लालना मांडवा १

पं । नायकविजय ग । पं । गुण स । } नडियाद १
पं । भाणविजय ग । पं । सुजाण स । } वसुपेयज २

पं । मोहनविजय ग । पं । गुलाल स । विहारा १ मानपुर २

पं । मानविजय ग । पं । जिन स । } डभोई १
पं । सुजाणविजय ग । पं । प्रेम स । } कारवण २

पं । प्रमाणविजय ग । पं । पुण्य स । राणकपुर १ आंगणवाडो २

Aho ! Shrutgyanam

पं । षुस्यालविजय ग। पं । जिन स । } आज्ञाप्रमाणें
पं । कस्तूरविजय ग। पं । षुस्याल स }

पं । प्रेमविजय ग । पं । शुभ स । वडनगर १ थावड २ गुंझा ३ उंझा ४

पं । भाणविजय ग । पं। राम स। धीणोज १ लूणवा २

पं । षुस्यालचंद्र ग । पं । भाग्य स । } वाराही १
पं । षुस्यालविजय ग । श्रीजी स } सोनेथ २ झझाम ३

पं । सुबुद्धिविजय ग। पं । रूप स । हेब्बदपुर १

पं । चतुर विजय ग । पं । मेघ स । धोलको १ चि-लोरा २ वटादर ३

पं । विनीतविजय ग । पं । नेम स । } चाणसमो १
पं । माणिक्यविजय ग । पं । विनीत स } कटोसण २ रामपुरो ३

पं । रत्नविजय ग । पं । पुण्य स । गोत्रको १ राफू २

पं । षुस्यालविजय ग । पं। नेम स। } समी १ चंदूर २
पं । उमेदविजय ग। पं ।वृद्धि स } दूधषा ३

पं । मानविजय ग। उ । श्री रूप स । वोहरा कठोर १ वसराई २

पं । प्रतापविजय ग। पं। लक्ष्मी स । } भाभर १ वेणप
पं । अमृतविजय ग पं । प्रताप स } २ उञ्चोसण ३

पं । हस्तिविजय ग । पं । रंग स । लूणपूर १

पं । इंद्रसोम ग। पं । गौतम स । } द्रापरो १ मह-
पं । षुस्यालविजय ग। पं । गज स। } वासादडा २

पं । रत्नचंद्र ग । पं । सुगाल स । गोधावी

पं । न्यानविजय ग । पं । प्रमोद स । कडी १ सेदात-पुरो २ लाघणोज ३

पं । कपूरविजय ग । पं । अमर स । फेदरा १ पींपली २

पं । अमीविजय ग । पं । माणिक्य स । सिद्धपूर १ सीहपुर २

पं । अमरविजय ग । पं । सुख स } दक्षणदेशे
पं । देवविजय ग । पं । अमर स }

पं । उदयचंद्र ग । पं । भक्ति स । डीसा १ झेरडा २ वरण ३

पं । धनविजय ग । पं । राम स । मावड १ गोठडा २

पं । नयविजय ग । पं । माणिक्य स । } पाटडी १
पं । क्षमारुचि ग । पं । गणेश स । }

पं । विवेकविजय ग । पं । रत्न स । भरुअच्च १

पं । उत्तमविजय ग । } पं । सुमति स । दक्षणदेशे
पं । भावविजय ग । }

पं । ज्ञानविजय ग । पं । लक्ष्मी स । साचोर १ थिराद २

पं । प्रतापचंद्र ग । पं । दान स । } वीसलनगर १
पं । भावचंद्र ग। पं । दोलत स । } कडा २ जासका ३ देणपूर ४

पं । जयसागर ग । पं । न्याय स । राजपुर १

पं । कुंअरविजय ग । पं । गज स । झिणोर १ सासरोद २

पं । शोभागविजय ग । पं । चंद्र स । बारेजो १

पं । जीवणविजय ग । पं । लाल स । देकावाडो १

पं । अमृतविजय ग । पं । चंद्र स । वणोद १ पाडला २

पं । डुंगरविजय ग । पं । मेघ स । जामपूर १ सांकरा २

पं । अमृतविजय ग । पं । भाण स । कोरडा १ धोलकडुं २

पं । जीवणविजय ग । पं । कल्याण स । हापा १

पं । धीरसागर ग । पं । न्याय स । नवसारी १

पं । उदयसागर ग । पं । न्याय स । बारेजो १

पं । विवेकविजय ग पं । ऋद्धि स । समउ १

पं । षिमाविजय ग पं । षुस्याल स । डांगरवुं १ वडसमुं २

पं । रामसागर ग। पं । दोलत स । आंतरोली १

पं । भीमाविजय ग । पं । रंग स । कोलीनी कंबोई १

पं । विवेकविजय ग । पं ।न्यान स । गांभू १

पं । केशरविजय ग । पं । विनीत स । सांपरा १ वातिम २ फोरना ३

पं । कस्तुरविजय ग । पं । न्याय स । मातर १

पं । विनयचंद्र ग । पं । भक्ति स । मगरवाडो १ वड-गाम २ डाभला ३

पं । राजविजय ग । पं । सुंदर स । ईटोलो १ अनस्तू २

पं । माणिक्यविजय ग । पं । वृद्धि स । भेसाणा १ छठियाडो २ सामेतरा ३

पं । जसविजय ग । पं । प्रताप स । वडावली १

पं । प्रेमविजय ग । पं । रूप स । खंभायत १

Aho ! Shrutgyanam

पं । हर्षचंद्र ग । पं । प्रमोद स । वलसाणो १ पोशीणा २

पं । महिमाविजय ग । पं । हित स । रानेरकोलीनी १ षीमाणा २

पं । राघवविजय ग । पं । लाल स । रणोद १ मणोद २

पं । दोलतविजय ग । पं । प्रेम स ।
पं । गुणविजय ग । पं । षुस्याल स । } मुंडेठा १

पं । मतिविजय ग । पं । गज स । काकर १

पं । वृद्धिविजय ग । पं । कांति स । मालण १ नासणा २

पं । भाणविजय ग । पं । मेळ स । वासा १ पाषल २

पं । माणिक्यविजय ग । पं । दीप स । पेटलाद १

पं । जिनविजय ग । पं । दर्शन स । गणाद् बहिः

पं । वृद्धिविजय ग । पं । विनय स । राणपुर १ पानसणा २

पं । मोहनचंद्र ग । पं । उदय स । धोता १ सकलाणा २ मेता ३ मयादर ४

पं । लालविजय ग । पं । साधु स । कूअर १

पं । भाणविजय स । पं । सुमति स । बुहारी १ घुंटाडिओ २

पं । अनोपचंद्र ग । पं । अमी स । नेसडाबे २

पं । केसरविजय ग । पं । लाल स । दांता १ वसही २

पं । कांतिविजय ग । पं । जीवण स । धाषा १ धनेरा २

पं । नायकविजय ग । पं । दीप स ।
पं । भवानविजय ग । पं । नायक स । } लींच १ नंदासणा २

पं । विनीतविजय ग । पं । हित स । दक्षणदेशे

पं । कृष्णविजय ग । पं । षुस्याल स । वेडि १

पं । रूपविजय ग । पं । गौतम स । उंबरी १ अरणीवाडो २

पं । जसविजय ग । पं । कांति स । कुकुआवि १ छणियार २

पं । धर्मविजय ग । पं । थान स । हणाद १ देलवाडो २

पं । सहजरुचि ग । पं । वल्लभ स । सूरातिमध्ये

पं । रत्नविजय ग । ऋ । देव स । भलगाम १

अत्रोद्धारितक्षेत्रादिसत्यापना अस्माभिर्विधेयेति मं० ॥

।। समस्त साधु समुदाय योग्यं । अपरं । सह पट्टा प्रमाणइं पोतापोता नइं क्षेत्रादेशइं पुंहचयोजे कोई पारका क्षेत्रमाहि रहस्यइं तथा क्षेत्र आलट पालट करस्यइं तथा कोई क्षेत्र क्रय विक्रय करस्यइ तथा चोमासामांहिं कोइ किहांइ फिरस्यइं हिरस्यइं तथा कोई गृहस्थो सुं चढी बोलस्यइं तो तेहनइं आकरो उपालंभ आवस्यइं । सर्वथा गुदरास्यइं नहीं गुदरवाज श्रीजीनी आण छे । एहवुं जाणी मर्यादामें प्रवर्तवुं ।

पट्टक ४

आ पट्टक ३ फुट २ इंच लांबो अने ६¾ पहोळो छे. पंक्ति संख्या १२६.

सर्ही

।। ॐ नत्वा भ श्रीविजयदयासूरीश्वर गुरुभ्यो नमः ।। सं १८२४ वर्षे भ । श्री श्री विजयधर्म्मसूरिभिर्ल्येष्ट-स्यित्यादेशपट्टको लि ।। श्री गुर्जरदेशे ।।

पं । हेमविजय ग । श्रीजीसपरिकराः श्रीमरुदेशे ।

उ । श्रीराजविजय ग । हर्ष स ।
पं । इंद्रविजय ग । उ । श्रीराज स । } कच्छदेशे ।

पं । नेमविजय ग । पं । षिमा स ।
पं । ग्यानविजय ग । पं । नेम स ।
पं । विनीतविजय ग । पं । प्रेम स । } पाटण १ कूणगिर २ आगलोड १

पं । रंगविजय ग । पं । उदय स । वीसलनगर १ कडा २ जासका ३ देणप ४

पं । हर्षविजय ग । पं । विवेक स । साबली १ पीपलदल करबटिओ २

पं । मोहनविजय ग । पं । सुमति स ।
पं । बुद्धिविजय ग । पं । मोहन स । } वावि १ माढकुं २

पं । सुजाणविजय ग । पं । शांति स । वडोदरो १

Aho ! Shrutgyanam

द्रापरो २ मुंजपुर ३

पं । लब्धिविजय ग । पं । लाभ स । उच्चोसण १

पं । सामलचंद्र ग । पं । ळाल स । मालण १ गोला २

पं । रत्नविजय ग । उ । श्री शुभ स । मगरवाडो १ वडगाम २

पं । भाणविजय ग । पं । प्रेम स । दक्षणदेशे

। प्रसिद्धविजय ग । पं हित स ।
। पदमविजय ग । पं । माणिक्य स। } राधनपुर १ राफू२ कमालपू ३

पं । विवेकविजय ग । पं । कृष्ण स । असाउल नवोवास १

पं । भक्तिविजय ग । पं । नय स । पाल्हणपुर १ वगदा २ मेता ३ मयादर ४

पं । कुशलविजय ग । पं । मान स । वीजापुर १ थावड २

पं । अमृतविजय ग । पं । भाण स । ईडर १

पं । मोहनविजय ग । पं । हंस स ।
पं । शुभ विजय ग । पं । मान स ।
पं । कनकविजय ग । पं । शुभ स । } राजनगर १ रायपुर २ गोधावी ३

पं । गणेशरुचि ग । पं । हरि स । अस्मत्पार्श्वे

पं । शांतिविजय ग । पं । कृष्ण स ।
पं । जसविजय ग । पं । विवेक स ।
पं । कांतिविजय ग । पं । लाल स । } पाटडी १ बज्जाणूं २

पं । देवाविजय ग । पं । विनीत स । डभोई १ कारवण २

पं । दीपविजय ग । पं । राज स ।
पं । जयविजय ग । पं । दीप स । } वीरमगाम १ भोज्जुआ २

पं । शांतिविजय ग । पं । उदय स । वडावली १ गांभू २

पं । गजविजय ग । पं । गंग स ।
पं । हंसविजय ग । पं । गज स । } वढवाण १ सीहाणी २

पं । जयविजय ग । पं । सुंदर स । रानेर १ कांवलेज २ कुंदियाणो ३

पं । जीतवर्धन ग । पं । कल्याण स । कुकुआव १

पं । सकलवर्धन ग । पं । कल्याण स । मांडल १

पं । कृष्णविजय ग । पं । जसविजय ग । पं । रंग स । कच्छदेशे १

पं । जीवविजय ग । पं । सुख स । कोठ १ गांगड २ नानोदरो ३

पं । भक्तिविजय ग । पं । कांति स ।
पं । कुशलविजय ग । पं । राज स । } वाराही १ कोरडा २ घोलकडुं ३

पं । केसरसोम ग । पं । धन स । विहारा १ कानपुरो २

पं । रत्नकुशल ग । पं । विनीत स ।
पं । ग्यानकुशल ग । पं । रत्न स । } लींबडी १ अंचेवालिउं २

पं । मोहनविजय ग । पं । उत्तम स । जामला १

पं । सुबुद्धिविजय ग । पं । सुजाण स । आंतरोली १ लालना मांडवा २

पं । उत्तमविजय ग । पं । खुस्यालविजय ग ।
पं । जिन स ।
पं । सुजाणविजय ग । पं । प्रेम स ।
पं । सुजाणविजय ग । पं । राम स । } सूरति १ हरिपुरो २

पं । भाणविजय ग । पं । गुण स ।
पं । नायकविजय ग । } नडियाद १

पं । मोहनविजय ग । पं । गुलाल स । गणाद् बहिः

पं । मानविजय ग । पं । जिन स ।
पं । राजविजय ग । पं । सुंदर स । } पादरो १ ग्वासद २

पं । प्रमाणविजय ग । पं । पुण्य स । समउ १

पं । प्रेमविजय ग । पं । शुभ स । वडाली १ पेढामली २

पं । भाणविजय ग । पं । राम स । रणोद १ मणोद २

पं । खुस्यालचंद्र ग । भक्ति स ।
पं । खुस्यालविजय ग । श्री जी स । } चाणसमो १ रामपुरो २

पं । सुबुद्धिविजय ग । पं । रूप स । हेब्बदपूर १

पं । चतुरविजय ग । पं । मेघ स । खंभायत १ वटादरो २

पं । विनितविजय ग । पं । नेम स ।
पं । माणिक्यविजय ग । पं । विनीत स । } समी १ चदूर २ दूधषा ३

पं । रत्नविजय ग । पं । पुण्य स । वेडी १ अणवरपुरो २

Aho ! Shrutgyanam

पं । खुश्यालविजय ग । पं । नेम स । } मेसाणो १
पं । उमेदविजय ग । पं । वृद्धि स } छटियाडो २ सामेतरा ३
पं । हस्तिविजय ग । पं । रंग स । नेसडावे १
पं । मानविजय ग । उ । श्रीरूप स । बुहारी १ भसराई २ घुंटाडिओ ३
पं । प्रतापविजय ग । पं । लक्ष्मी स । } सोईगाम १
पं । अमृतविजय ग । पं । प्रताप स । } बेणप २
पं । रत्नचंद्र ग । पं सुगाल स । मातर १ बारेजो २
पं । इंद्रसोम ग । पं । गौतम स । } मीयागाम १
पं । खुस्यालविजय ग । पं । गज स । } ईषर २ वलण ३
पं । कपुरविजय ग । पं । अमर स । चूडा १ राणपुर २
पं । ग्यानविजय ग । पं । प्रमोद स । कडी १ छणीयार २ कटोसण ३ लांवणोज ४
पं । अमीविजय ग । पं । माणिक्य स । वडनगर १ धोता सकलाणा २
पं । अमरविजय ग । पं । सुख स । } दक्षणदेशे
पं । देवेंद्रविजय ग । पं । अमर स । }
पं । उदयचंद्र ग । पं । भक्ति स । डीसा १ झेरडा २ राजपुर ३
पं । नयविजय ग । पं । राम स । सीहपुर १
पं । धनविजय ग । पं । माणिक्य स । द्रांगधरो १
पं । क्षमारुचि ग । पं । गणेश स । कूअर १
पं । विवेकविजय ग । पं । ऋद्धि स । रानेर कोलीनी १ वातिम २ फोरणा ३
पं । उत्तमविजय ग । } पं । सुमति स ।
पं । भावविजय ग । } दक्षणदेशे ।
पं । मोहनविजय ग । पं । प्रताप स । उंमता १
पं । ज्ञानविजय ग । पं । लक्ष्मी स । साचोर १ थिराद २
पं । प्रतापचंद्र ग । पं । दान स । } सिद्धपुर १
पं । भावचंद्र ग । पं । दोलत स । } लालपूर २
पं । जयसागर ग । पं । न्याय स । राजपुर १
पं । कुंअरविजय ग । पं । गज स । ईटोलो १ महेवासादडा २ अनस्तू ३

पं । अमृतविजय ग । पं । भाण स । सांपरा १ सांकरा २
पं । हर्षविजय ग । पं । कृष्ण स । वोहरा कठोर १
पं । सोभागविजय ग पं । चंद्र स । नंदासण १
पं । जीवणविजय ग । पं । लाल स । सेदालपुरो १
पं । डुंगरविजय ग । पं । मेघ स । उंबरी १ अरणीवाढो २
पं । अमृतविजय ग । पं चंद्र स । देकावाडो १
पं । धीरसागर ग । पं । न्याय स । धोलको १
पं । विवेकविजय ग । पं । रत्न स । भरुअच्च १
पं । गुलालचंद्र ग । पं । सामल स । खेरालु १
पं । कांतिविजय ग । पं । दर्शन स । ईलोल १ हापा २
पं । जीवणविजय ग । पं । कल्याण स । अहमदनगर १
पं । खिमाविजय ग । पं । खुस्याल स । लींच १
पं । रामसागर ग । पं । दोलत स । दसाडो १
पं । भीमविजय ग । पं । रंग स । थिरा १
पं । विवेकविजय ग । पं । ग्यान स । धीणोज १ लूणवा २
पं । केसरविजय ग । पं । विनीत स । वरण १
पं । ~~कस्तुरविजय ग । पं । ग्यान स । चिलोरा १~~
पं । विनयचंद्र ग । पं । भक्ति स । पीलचो १ चांदणसर २ डभाड ३
पं । माणिक्यविजय ग । पं । वृद्धि स । भाभर १ जामपुर २ तेरवाडो ३
पं । जसविजय ग । पं । प्रताप स । सोनेथ १ झझाम २
पं । प्रेमविजय ग । पं । रूप स । पेटलाद १
पं । हर्षचंद्र ग । पं । प्रमोद स । वखतापुर १
पं । महिमाविजय ग । पं । हित स । मुंडेठा १
पं । राघवविजय ग । पं । लाल स । राणकपुर १
पं । दोलतविजय ग । पं । प्रेम स । } काकर १
पं । खुस्यालविजय ग । पं । गुण स । } धीमाणा २
पं । मतिविजय ग । पं । गज स । वासा १ घाघल २
पं । वृद्धिविजय ग । पं । कांति स । बसउ १ चांगा २
पं । मोहनचंद्र ग । पं । उदय स । मावड १ गोठडा २
पं । भाणविजय ग । पं । मेघ स । लूणपुर १
पं । माणिक्यविजय ग । पं । दीप स । वसुपेयज १

Aho ! Shrutgyanam

पं । जिनविजय ग । पं । दर्शन स । गणाद् बहिः
पं । वृद्धिविजय ग । पं । विनय स । फेदरा १ पीपली २
पं । लालविजय ग । पं । साधु स । गोत्रको १
पं । भाणविजय ग । पं । सुमति स । झिणोर १ सांसरोद २
पं । कस्तुरविजय ग । पं । खुस्याल स । नवसारी १
पं । पुण्यसोम ग । पं । केसर स । सोवनगढ १
पं । मुक्तिविजय ग । पं । हस्ति स । दक्षणदेशे १
पं । अनोपचंद्र ग । पं । अमी स । भलगाम १
पं । कांतिविजय ग । पं । जीवण स । थाषा १ धनेरा २
पं । नायकविजय ग । पं । दीप स । } वणोद १
पं । भवाणविजय ग । पं । नायक स । } पाडला २
पं । विनीतविजय ग । पं । हित स । दक्षणदेशे १
पं । कृष्णविजय ग । पं । खुस्याल स । दांता १ वसही २
पं । रूपविजय ग । पं । गौतम स । कोलीनी कंबोई १
पं । जसविजय ग । पं । कांति स । डांगरवुं १ बडसमुं २
पं । धर्मविजय ग । पं । भान स । हणाद १ पोसीणा २
पं । सहजरुचि ग । पं । वल्लभ स । सूरतिमध्ये १
पं । रत्नविजय ग । ऋ । देव स । चांगा १
पं । रंगचंद्र ग । पं । भक्ति स । वलासणो १

॥ अत्रोद्धरित क्षेत्रादि सत्यापना अस्माभिर्विधेयेति मंगलं ॥

॥ समस्त साधु समुदाय योग्यं । अपरं सहु पट्टा प्रमाणइं पोता पोतानइं क्षेत्रादेशइं पुंहचयो । जे कोई पारका क्षेत्रमांहि रहस्यइं तथा क्षेत्र आलट पालट करस्यइं तथा कोई क्षेत्र क्रयविक्रय करस्यइं तथा चोमासा मांहइं कोई किहां फिरस्यइं हिरस्यइं तथा कोई गृहस्थोसुं । चढी बोलसइं तो तेहनइं आकरो उपालंभ आवस्यइं । सर्वथा गुदारास्यइं नहीं । गुदरवाज अम्हनइं श्री श्री जी नी आणाछइं । एहवुं जाणी मर्यादामांहि प्रवर्तवुं ॥

पट्टक ५.

आ पट्टक ३ फुट १ इंच लांबो अने ६¾ पहोळो छे. पंक्तिओ १३७.

सही

॥ ॐ नत्वा भ । श्रीविजयदयासूरीश्वरगुरुभ्यो नमः ॥

संवत् १८३७ वर्षे भ । श्री श्रीविजयधर्मसूरिभिर्ज्ये-ष्ठस्थित्यादेशपट्टको लिख्यते । श्रीगुर्जरदेशे ।

पं । देवविजय ग । पं । श्रीजी सपरीकरा राद्धनपुर १ वाराइ २ मीलोट ३ कमालपुर ४
पं । रामविजय ग । पं । रंग स । } चाणसमुं १
पं । लक्ष्मीविजय ग । पं । राम स । } वडावली २ कंबोई सोलंकीनी ३
पं । नेमविजय ग । पं । हंस स । राजनगरमध्ये
पं । शान्तिविजय ग । पं । उदय स । वेड १ राफू २
पं । रंगविजय ग । पं । ज्ञान स । } मेसाणा १
पं । शान्तिविजय ग । पं । रंग स । } धिणोज २
पं । हंसविजय ग । पं । सुजाण स । पाधरूं १ अनस्तु २ ईषर ३
पं । शान्तिविजय ग । पं । कृष्ण स । } राजनगर १
पं । हेमविजय ग । पं । कपूर स । } रायपूर २ आसावल नवो वास ३
पं । न्यानविजय ग । पं । नेम स । वीसलनगर १ वड-नगर २ गोठुआ ३
पं । जयविजय ग । पं । दीप स । वीरमगांम १ भोजुया २ गोरीआ ३ केसरडी ४
पं । भक्तिविजय ग । पं । कांति स । }
पं । कुशलविजय ग । पं । कृष्णविजय ग । पं । राज स । } पाल्हणपुर १ पीलुंचुं २ गावज ३ गोठडा ४ वगदा ५
पं । कल्याणविजय ग । पं । प्रसिद्ध स । } पाटण १
पं । सिवसुंदर ग । पं । उत्तम स । } कुंणगर २
पं । जिनविजय ग । पं । पदम स । } चिलोडुं ३
पं । देवविजय ग । पं । अमी स । } ठाणुं ४ अस्मत्पार्श्वे
पं । मोहनविजय ग । पं । नय स । }
पं । वृद्धिविजय ग । पं । देव स । } दशाडुं १
पं । पुण्यविजय ग । पं । भक्ति स । } कल्याडुं २
पं । उत्तमविजय ग । पं । सुमति स । सूरति १ नवसारी २

Aho ! Shrutgyanam

ं । मोहनविजय ग । पं । उत्तम स । आगलोड १

ं । सकलवर्धन ग । पं । कल्याण स । } वढवांण १
ं । विवेकवर्धन ग । पं । मेव स । } चुडा २ राणपुर ३

ं । मनरूपसागर ग । पं । अनन्त स । सावली १ वलासणुं २

ं । जिनविजय ग । पं । कपूर स । दक्षणदेशे । गांधली १

ं । रत्नकुशल ग । पं । विनीत स । } पाटडी १
ं । न्यानकुशल ग । पं । रत्न स । } वणोद २ पाडला ३

ं । सुबुद्धिविजय ग । पं । सुजाण स । नडीयाद १

ं । कनकविजय ग । पं । सुभ स । मीयां १ वलण २

ं । मानविजय ग । पं । जिन स । राजनगरमध्ये

पं । षूस्यालविजय ग । पं । जिन स । आमोद १

पं । पदमविजय ग । पं । उत्तम स । पाटणमध्ये

पं । भाणविजय ग । पं । रांम स । छठिआइं १ लुंणवा २ सामेतरा ३ सदातपुरुं ४ वडसमुं ५ कडी ६ छणीयार ७

पं । लालविजय ग । पं । रत्न स । लींबडी १ अंचेवा-लींउ २ पांनसणा ३ उतेलीउ ४

पं । कुशलविजय ग । पं । देव स । वसवावी १ ।

पं । हस्तिविजय ग । पं । कुशल स । गणाद् बहिः ।

पं । सुबुद्धिविजय ग । पं । रुप स । हेबदपुर १

पं । षूस्यालविजय ग । पं । श्रीजी स । } वाराही १
पं । कल्याणचन्द्र ग । पं । षूस्याल स । } धोलकडुं २

पं । विनीतविजय ग । पं । नेम स । } समी १ दूधषा २
पं । माणिक्यविजय ग । पं । विनीत स । } षाषल ३ धधाणा ४

पं । चतुरविजय ग । पं । मेघ स । पेटलाद १ वटादरूं २ वसु ३ पेयज ४

पं । मोहनविजय ग । पं । गुलाल स । गणाद्बहि १

पं । अमीविजय ग । पं । सुख स । थराद १ गेला २

पं । हंसविजय ग । पं । गज स । सिवपुर १ सीपुर २

पं । जिनविजय ग । पं । जय स । सोवनगढ १ दमण २ आगासी ३

पं । उमेदविजय ग । पं । वृद्धि स । बीजापुर १ लाडोल २

पं । पदमविजय ग । पं । उमेद स । मोहनपुर १ रणासण २

पं । हस्तिविजय ग । पं । रंग स । जांमपुर १ कसरा २

पं । हर्षविजय ग । पं । मोहन स । जासका १ उंमता २ देंणप ३

पं । मुक्तिविजय ग । पं । श्रीजी स । } डभोई १
पं । डुंगरविजय ग । पं । मुक्ति स । } कारवण २

पं । प्रतापविजय ग । पं । लक्ष्मी स । } बेंणप १
पं । अमृतविजय ग । पं । प्रताप स । } कोरडा २
पं । गोविन्दविजय ग । पं । हेम स । }

पं । अमीविजय ग । पं । रत्न स । } गोत्रकूं १
पं । भाणविजय ग । पं । हंस स । } झझांम २

पं । सुबुद्धिविजय ग । पं । जीव स । द्रांगदरुं १ सायला २ शिष्य मेघविजय गाणाद्बहि

पं । षूस्यालविजय ग । पं । ऋद्धि स । टीकर १ थांटीलुं २

~~पं । मांनविजय ग । पं । हीर स । कच्छदेशे~~

पं । वृद्धिविजय ग । पं । सुजाण स । द्रापरो १ पाध-रीओ २

पं । कपूरविजय ग । पं । अमर स । कोठ १

पं । नयविजय ग । पं । राम स । मेता १ मयादर २ वसु ३

पं । कस्तुरविजय ग । पं । मांन स । वोरा कठोर १ कुंदीआणुं २

पं । धनविजय ग । पं माणिक्य स । सोईगांम १ भरडुउं २

पं । रत्नविजय ग । पं । न्यान स । लींच १

पं । दर्शनविजय ग । पं । न्यान स । गणाद्बहि

पं । माणिक्यविजय ग । पं । मोहन स । पाटणमध्ये

पं । बुद्धिविजय ग । पं । मोहन स । } वावि १
पं । मेघविजय ग । पं । अस्मत्स । } माडकुं २

पं । विवेकविजय ग । पं । ऋद्धि स । मुंडेंठु १ लुणपुर २ छत्राला ३

पं । ज्ञानविजय ग । पं । लक्ष्मी स । साचोर १

Aho ! Shrutgyanam

पं । प्रतापचन्द्र ग । पं । दांन स ।
पं । भावचंद्र ग । पं । दोलत स । } गणाद्बहि

पं । जसविजय ग । पं । कान्ति स । कटोसण १ वातिम २ फोरणा ३

पं । कुंअरविजय ग । पं । गज स । ग्वासद १

पं । हीराचंद्र ग । पं । गुलाल स । } ईडर १
पं । धीरजचंद्र ग । पं । हीरा स । } षेरालु २.

पं । अमृतविजय ग । पं । भाण स । चंदूर १

पं । डुंगरबिजय ग ।
पं । भाणविजय ग । } पं । मेघ स । उंबरी १ काकर २

पं । नायकविजय ग । पं । विनय स । वषतापुर १ जामला २

पं । इन्द्रविजय ग । पं । अमृत स । वडाली १

पं । चन्द्रबिजय ग । पं । उत्तम स । राजनगरमध्ये

पं । हर्षविजय ग । पं । जस स । धोलकुं १

पं । सोभाग्यविजय ग । पं । चंद्र स । डांगरवुं १

पं । प्रेमविजय ग । पं । भाण स । नानोद्रुं १

पं । अमृतविजय ग । पं । चंद्र स । नंदासण १ लांघणोज २

पं । माणिक्यविजय ग । पं । सुबुद्धि स । आंतरोली १

पं । जीवणविजय ग । पं । लाल स । फेदरा १ पींपलींउं २

पं । प्रेमविजय ग । पं । दर्शन स । वागडदेशे

पं । कान्तिविजय ग । पं । दर्शन स । वागडदेशे

पं । अमृतविजय ग । पं । विवेक स । भरूअच्य १

पं । षिमाविजय ग । पं । घूस्याल । कुकुआवि १ देकावाडु २

पं । रूपसागर ग । पं । राम स । लालना मांडवा १ कटोदरू २

पं । विनयचंद्र ग । पं भक्ति स । वरण १ झीवाल २ आषा ३ घनेरा ४

पं । नायकविजय ग । पं । गुलाल स । द्यावड १

पं । वसंतविजय ग । पं । भाग्य स । मातर १

पं । माणिक्यविजय ग । पं । वृद्धि स । मोरवाडुं १ उन्चोसण २ सोनेथ ३

पं । प्रतापविजय ग । पं । वृद्धि स । पंचार १

पं । रत्नविजय ग । पं । प्रेम स । षंभायत १

पं । महिमाबिजय ग । पं । हित स । रानेर १ नेसडा २

पं । राजविजय ग । पं । सुंदर स । वडोदरूं १ ईटोलुं २

पं । जीवणविजव ग । पं । नायक स । अम्मदनगर १

पं । घूस्यालबिजय ग । पं । प्रेम स । ईलोल १ कानडा २

पं । यसविजय ग । पं । प्रताप स । अणस्तु १

पं । सोभाग्यविजय ग । पं । क्षिमा स । मोभासादडा १

पं । रविविजय ग । पं । विनति स । समउं १ षीमाणा २

पं । दोलतविजय ग । पं । प्रेम स । } थिरा १
पं । गुणविजय ग । पं । घूस्याल स । } गोलीवाडुं २

पं । ज्योर्तिविजय ग । पं । रत्न स । दक्षिणदेशे

पं । भाणविजय ग । पं । केसर स । कुअर १

पं । वृद्धिविजय ग । पं । कान्ति स । मालण १ गोला २ वडगांम ३

पं । यसविजय ग । पं । कनक स । सोझिंतरा १

पं । रूपविजय ग । पं । घूस्याल स । मुंजपुर १

पं । हंसविजय ग । पं । जीवण स । षेडव्रहमानी १

पं । पुन्यसोम ग । पं केसर स । व्यारा १ कानपुरो २

पं । देविंद्रविजय ग । पं । हर्ष स । बुहारी १ घुंटाडीओ २

पं । मतिर्विजय ग । पं । गज स । गणाद् बहि

पं । मोहनचंद्र ग । पं । उदय स । मगरवाडुं १

पं । पानाचंद्र ग । पं । उदय स । डीसा १ झेरडा २ राजपुर ३

पं । माणिक्यविजय ग । पं । दीप स । गांगड १ देवाडभो २

पं । जिर्नविजय ग । पं । दर्शन स । हरसोर १

पं । लालविजय ग । पं । माणिक्य स गांभु १

पं । वृद्धिविजय ग । पं । विनय स । गोधावी १

पं । भाणविजय ग । पं । सुमति स । झींणोर १

पं । भवानविजय ग । पं न्यायक स । मणोद १

पं । रामविजय ग । पं । बिनीत स । रानेर १ वाळोल २

पं । गुणविजय ग । पं । प्रेम स । सांपरा १

Aho ! Shrutgyanam

पं । कृष्णविजय ग । पं । खूस्याल स । धोतासकलाणा १

पं । रूपविजय ग । पं । गौतम स । कंबोई कोलीनी १

पं । रविविजय ग । } पं । केशर स

पं । प्रेमविजय ग । } माभेर १

पं । वसंतविजय ग । पं । देव स । सांकरा १

पं । मानविजय ग । पं । रत्न स । पींपलदल १ करबटीउं २

पं । रत्नविजय ग । ऋ । देव स । तेरवाडुं १

पं । मोहनसोभाग्य ग । पं भाग्य स । आंगणवाडुं १

पं । क्षिमारुचि ग । पं । गणेश स । मांडल १

पं । भाग्यविजय ग । पं । यस स । बजाणुं १

पं । मणिविजय ग । पं । मान स । रणोज १

पं । सहजरुचि ग । पं । वल्लभ स । सूरतमध्यें

पं । रामविजय ग । पं । तेज स । सीहाणी १

पं । ज्ञानसागर ग । पं । उदय स । भालक १

पं । हेमविजय ग । पं । भीम स । टांकणपुर १ भलगांम २ चांगा ३

अत्रोद्धरितक्षेत्रादिसत्यापना अस्माभिर्विधेयति मङ्गलम् ।

॥ समस्त साधु समुदाय योग्यं अपरं सहु पट्टा प्रमाणें पोता पोतानें क्षेत्रादेशे जई पोहचज्यो। जे कोई पारका क्षेत्र माहें रहस्यें तथा क्षेत्र आलटपालट करस्यें तथा कोई चोमासामांहिं फरस्यें हरस्यें तथा कोई गृहस्थोस्युं चढी बोलस्यें तथा गच्छनें कामें एकठा नहि थाई तो आकरो उपालंभ आवस्यें । गुदरास्यें नही । सर्वथा ज गुदरवाज श्री श्रीजीनी आंण छे । एहवुं जाणि सर्व मर्यादामांहिं प्रवर्तवुंज ॥

पट्टक ६.

आनी लंबाई ३ फुट अने पहोळाई ७½ छे. पंक्तिओ एकंदर १३९.

सही

ॐ नमः ॥ भ श्री श्रीविजय धर्म्मसूरीश्वर गुरुभ्यो नमः । सं । १८६६ वर्षे ।

भ । श्री श्रीविजय जिनेंद्र सूरीभिर्येष्टास्थित्यादेशपट्टकः लि । श्री गुर्ज्जरदेशे ॥

पं । दानविजय ग । श्रीजी सपरिकराः । भावनगर १ वरतेज २ दाठा ३

पं । खुशालविजय ग । वृद्धश्रीजी स । पं । नायक विजय ग

उ । श्री खुस्यालस । धिरा १ झालमोल २ कुशलपरो ३ तेरवाडो ३ चांगा ५

पं । मोहनविजय ग । पं । नय स । पं । रूपविजय ग । पं । राज स । राधनपुर १ कमालपुर २ भीलोट षाषल मांडवी ३

पं । उत्तमविजय ग । पं । सुमति स । पं । लाधाचंद्र ग । पं । रंग स । मुंमर १ अगासी २ बाहिरको ३

पं । कृष्णविजय ग । पं । राज स । पं । धनविजय ग । पं । भक्ति स । समी १ चंदूर २ दूधा धंधाणा ३

पं । वल्लभविजय ग । पं । हित स । पं । भावविजय ग । पं । हंस स । मइयां १ वडोदरो २ इंटोले ३

पं । हेमविजय ग । श्री जी स । वडाली १ वषतापुर २

पं । राजवर्धन ग । पं । सकल स । पं । वीरवर्धन ग । पं । जीत स । पं । खुस्यालवर्धन ग । पं । धर्म्म स । वढवाण १ चूडा २ राणपुर ३ साहेला ४

पं । ललितविजय ग । पं । चतुर्विजय ग । पं । मोतीविजय ग । पं । ग्यान स । विसलनगर १ कडा २ जासका ३ सीवाला ४ गोठवा ५ भालक ६ गुंजा ७ देंणप ८ षरोडामगरोडा ९

पं । माणिक्यविजय ग । पं । विनीत स । पं । ज्ञानविजय ग । पं । माणिक्य स। वेड १ राफु २

पं । डुंगरविजय ग । पं । मुक्ति स । पं । विवेकविजय ग । पं । डुंगर स । सुरति १ नवसारी २

पं । रूपविजय ग । पं । पदम स । सोरठदेशे नवोनगर १

पं । रंगविजय ग । पं । अमृत स । भरुअछ १ देजबारो २

पं । तत्त्वविजय ग । पं । जय स । पादरो १ गवासद २ ओडपाड ३

पं । प्रतापविजय ग । पं । उत्तम स । दमण १ वालोल २

Aho ! Shrutgyanam

पं । देवविजय ग । पं । अमी स । पं । कनकविजय ग । पं । कपूर स । मेसांणो १ उंढाइ २ लांघणोज ३ छठीयाडो ४ नंदासण ५ डांगरुओ ६ बिलोदरो ७

पं । देवविजय ग । पं । दीप स । पं । मानविजय ग । पं । हित स । राजनगर १ हैबदपुर २ असावल ३ नवोवास ४ फेदरा ५ रायपुर ६ परोहतीयो ७ हर्षजीना मुआडा ८

पं । विनयविजय ग । पं । कल्याण स । पं । ऋषभ विजय ग । पं । जिन स । पाटण १ कुणगर २ वायड ३ अडीया४

पं । माणिक्यविजय ग । पं । मोहन स । आगलोड १

पं । उत्तमचंद्र ग । पं । उदय स । पालणपुर १बगदा २ दांतावसी ३ सेरगढ ३

पं । कांतिविजय ग । पं । न्यान स । पं । देवविजय ग । पं । कांति स । विजापुर १ लाडोल २ हापु ३ मांडु ४

पं । न्यानविजय ग । पं । गंग स । वाराही १ धोलकडो २ अगीचांणो ३

पं । हस्तिविजय ग । कुशल स । पं । माणिक्यविजय ग । पं । हस्ति स । गणाद्बहिः

पं । हेमविजय ग । पं। कपुर स । पं । चतुर्विजय ग । पं। शांति स। गोत्रको १ नवोपरो २

पं । कल्याणविजय ग । पं । जय स। दसाडो १ कलाडो २ संखेश्वर ३

पं । नायकविजय ग । पं । केशरविजय ग । पं । जय स । विरमगाम १ गोरीया २ भोजूवा ३

पं । भाग्यविजय ग । श्री जी स । बजांणो १

पं । गुमानविजय ग । पं । नायक स । लींबडी १ अंचेवालीयो २

पं । खुस्यालविजय ग । पं । राज स । लछि १

पं । हीरविजय ग । पं । भांण स । गढ १ मंडाणा २

पं । गोकलविजय ग । पं । वृद्धि स । मगरवाडो १

पं । दीपविजय ग । पं । प्रेम स । पं । उमेदविजय ग । दीप स । पींपलदल १ करपटीयो २

पं । रविविजय ग । पं । मेरु स । पं । केशरविजय ग । पं । रवि स । मांडल १ छणीयार २

पं । भाणविजय ग । पं । केशर स । पं । मोहनविजय ग । पं । भाण स । वणोद १ कुंआरद २ संषलपुर ३

पं । रुपविजय ग । पं । केशर स । गणाद्बहिः

पं । रविविजय ग । पं । विनीत स । चाणसमो १ कंबोई २ वडावली ३ कंथरावी ४ वसी ५ संडेर ६ लुंणावा ७ मुंडेरा ८ षांभिलणा ९

पं । शांतिविजय ग । पं बुद्धि स । वाव १ माढको २

पं । विनयविजय ग । पं । राघव स । डीशा १ डोआ २ समओर वीयांणो ३

पं । अमृतविजय ग । पं । प्रताप स । सोइगाम १ असारो २

पं । केशरविजय ग । प । मेघ स । अस्मत् पार्श्वे

पं । प्रतापविजय ग । पं । विवेक स । राणकपुर १ भलगांम २

पं । हेमविजय ग । पं । भीम स । जामपुर १ आमलुणा २

पं । वल्लभविजय ग । पं । गुणविजय ग । पं । विमल स । कुंअर १ अणोरपुरो २ लोभाडो ३

पं । मुक्तिविजय ग । पं । हंस स । इडर १ लींबोदरो २

पं । राजेंद्रविजय ग । अस्मत् स । व्रापरो १

पं । कांतिविजय ग । अस्मत् स । सरीयद १

पं । रत्नविजय ग । पं । हेम स । प्रांतिज १

पं । सुज्ञानविजय ग । उ । श्री सोभाग्य स । मणोद १

पं । शांतिकुशल ग । पं । विवेक स । हरीपुरो १ छापरीया।ओल २ वोराकटोर ३

पं । नवलविजय ग । पं । जिन स । वेतु १

पं । भक्तिविजय ग । पं । देव स । गणाद् बहिः ॥

पं । हेमविजय ग । पं । गोतम स । पाटडी १ केशरडी २ नानोदरो ३

Aho ! Shrutgyanam

पं । ज्ञानविजय ग । पं । राजेंद्र स । जंबूसर १
पं । राजविजय ग । पं । रूप स । सांबली १ बलासणो २
पं । रुपविजय ग । पं । मोहन स । मावड गोठडा १ उंबरी २
पं । भीमविजय ग । पं लाल स । रानेर १
पं । धनविजय ग । पं । फत्ते स । मातर १
पं । जीतविजय ग । पं । माणिक्यविजय ग । पं । लाल स । डभोइ १ कारवण २ लीलोड ३
पं । लालविजय ग । पं । उमेद स । जामला १
पं । मुक्तिचंद्र ग । पं । भाव स । सीपूर १
पं । हेमचंद्र ग । पं । विनय स । मालण १
पं । प्रेमचंद्र ग । पं । जीवण स । झेरडा १ वरण २
पं । हर्षविजय ग । पं । रत्न स । गोधावी १
पं । हर्षविजय ग । पं । धर्म्म स । मोभासादडा १ मुंजपुर २
पं । कांतिविजय ग । पं । नायक स । बारेजो १
पं । धर्म्मविजय ग । पं । पुन्य स । धोतासकलांणा १
पं । प्रतापविजय ग । पं । फत्ते स । मेता १
पं । विवेकविजय ग । पं । गोविंद स । अनस्तु १
पं । वसंतविजय ग । पं । भाग्य स । सरषेज १
पं । उत्तमविजय ग । पं । मेघ स । अस्मत् पार्श्वे
पं । तेजविजय ग । पं । माणिक्य स । कोठ १ गांगड २
पं । हंसविजय ग । पं । रवि स । कोरडो १ सोनेथ २
पं । जयविजय ग । पं । रवि स । उंबरी १
पं । लक्ष्मीविजय ग । पं । महिमा स । } धानेरा १
पं । विनयविजय ग । पं । दोलति स । } लुंणपुर २
पं । भक्तिविजय ग । पं । रूप स । कंबोइ १ देयोदर २
पं । कांतिविजय ग । पं । दोलति स । पं । सुमति विजय ग । पं । गुण स । कइरा १ काकर २
पं । खुस्यालविजय ग । पं । प्रेम स । इलोल १
पं । भवानविमल ग । पं । रुद्धि स । पाडला १

पं । लक्ष्मीविजय ग । पं । तेज स । वडनगर १ उंमता २
पं । भवानविजय ग । पं । प्रमोद स । झीणोर १
पं । रूपविजय ग । उ । सौभाग्य स । सोरठदेशे
पं । तेजविजय ग । पं । रत्न स । सांकरा १
पं । नायक विजय ग । पं । इंद्र स । धोणोज १ बांसा २ दोनावाडो ३
पं । हर्ष विजय ग । पं खुस्याल स । कडी १ देकावाडो २
पं । हर्षविजय ग । पं । पदम स । खेड १ ब्रमानो २
पं । मानविजय ग । पं । विनय स । राजपुर १
पं । सरुपचंद्र ग । पं। हीर स । खेरालु १ अहमदनगर २
पं । धीरविजय ग । पं । हर्ष स । थिराद १
पं । मुक्तिविजय ग । पं । मेघ स । मुंडेठो १ रामपुरो २
पं । दीपविजय ग । पं । हस्ति स । पीपली १
पं । भाग्यविजय ग । पं । अमृत स । पीलुचो १
पं । रंगविजय ग । पं । प्रेम स । नडीयाद १
पं । ज्ञानविजय ग । पं । जीत स । आंतरोली १
पं । शांतिविजय ग । पं । रुप स । गणाद्बहिः
पं । विद्याविजय ग । पं । रुप स । द्यावड १
पं । लालविजय ग । पं । किस्तुर स । पेटलाद १
पं । वसंतविजय ग । पं । देव स । रणोद १
पं । रुपविजय ग । पं । भाव स । वडावल १
पं । सुजाणविजय ग । पं । विनीत स । चिलोडो १ बदरको २
पं । रूपविजय ग । पं भाण स । विहारा १
पं । हितविजय ग । पं । जिन स । मांडवी १
पं । हेमविजय ग । पं । देवेंद्र स । बुहारी १
पं । हितविजय ग । पं । मान स । नडीयाद १
पं । प्रेमविजय ग । पं । भीम स । वसरावी १
पं । हितविजय ग । पं । मेघ स । पंचासर १
पं । हेमविजय ग । पं । मोहन स । वडा १ बेमांणा २
पं । भीमविजय ग । पं । प्रेम स । मोरवाडो १
पं । नेमविजय ग । पं । राम स । गांभू १
पं । रामविजय ग । पं । तेज स । सोयाणो १
पं । वृद्धिविजय ग । पं । भीम स । भामर १ कुआला २

Aho ! Shrutgyanam

पं । प्रेमविजय ग । पं । शीव स । धोलको १ मोरीयो २
पं । दयासोम ग । पं । जीत स । इषर १ बलण २
पं । फतेविजय ग । पं भाण स । बैणप १
पं । न्यानविजय ग । पं । सोभाग्य स । पांचडा १
पं । तत्त्वसोम ग । पं । राज स । सोवनगढ १
पं । कपुरविजय ग । पं । विनय स । साचोरकारोला १
पं । प्रेमविजय ग । पं । अमृत स । रानेर १
पं । लक्ष्मीविजय ग । पं । खुस्याल स । उंचोसण १
पं । राजविजय ग । पं । दर्शन स । कडी १
पं । विवेकविजय ग । पं । हर्ष स । बोरसद १ वटादरो २

अत्रोद्धरीत क्षेत्रादि सत्यापना अस्माभिर्विधेयेति मंगलं ।। गच्छ बार वालाथी आहार विवहार करसे ते उपालंभ पामशे ।।

समस्त साधु समुदाय योग्यं । अपरं सहु पट्टा प्रमाणे पोतानें क्षेत्रादेसें जइ पोहचज्यो । त० कोइ पारकाक्षेत्रमांहि रहस्यै । त० क्षेत्र आलटपालट करस्यै । त० कोइ चोमासामांहि फरस्यै हरस्यै । त० कोइ गृहस्थोसुं चढी बोलस्यै तो आकरो उपालंभ आवस्यै । सर्वथा गुदरास्यै नहीं । गुदरवाज श्री श्रीजीनी आणछइं । एहवुं जाणी मर्यादामांहि प्रवर्त्तवुं ।। इति श्रेयं ।।

पट्टक ७

आ पट्टक २ फुट १० इंच लांबो अने ७½ पहोळो छे. पंक्ति संख्या ८४.

सही

श्री

।।श्रीअर्हं नमः।।

।। श्रीगौतमाय नमो नमः ।।

।। श्रीशंखेश्वरपार्श्वनाथाय नमः ।।

।।ॐ नत्वा भ । श्रीविजयमहेन्द्रसूरीश्वरपरम गुरुभ्यो नमः ।।

संवत् १८७३ वर्षे भ । श्री श्रीविजयसूरींद्रसूरिभिर्ज्येष्ठस्थित्यादेशपट्टको लिख्यते । श्रीगुर्जरदेशे ।

पं । न्यांनविजय ग । पं । जीत स । सेनापुर । कोरलवारा । मेथी । समनी । राजपीपला । जंबुगांम । धवलगांम । ठाणु २ आंमोद मध्ये

पं । गौतमविजय ग । पं । जीत स । साणंद । मोरीयुं । मोडासर । कुंआरज । कौठ । भेगडा । वारद (?) पीपली । बलदांणो । गोरज । धोलेरा । बावलो । नांनोदरुं । सांकोड । मांकोड । धोलेराबिंदर ।

पं । दयालविजय ग । पं । विद्या स । नीकोरुं ।

पं । भक्तिविजय ग । पं । पदम स । जंबुसर । कारोल । मासर । गजेरा । हणशी ।

पं । नरोत्तमविजय ग । पं । चारीत्र स । छांणी । दसरथ । खंभाली । गोठुवा ।

पं । अभयविजय ग । वृद्धश्रीजी स । राजनगर । सरषेज । धोलका । पलीयठ । ओगणज । सोझा । षोरज ।

पं । प्रेमविजय ग । पं । अमर स । भृगूपुर । त्रांसला । सुडी । समनी । कलमाड । कलादरुं । भेडसम । मोसम । मंगलेसर । झाडेसर । अंगारेसर ।

पं । गुलाबचंद्र ग । पं । दोलतचंद्र स । } केरवाडु । बुआ । कोलवणु ।
पं । कनकचंद्र ग । पं । पानाचंद्र सत्क । }

पं । विनयविजय ग । पं । जीत स । सुरत । छीपवाड । आंभलीरायण । निंबडीकुई । नानु हरीपरुं । नवूं परुं । नानपरुं । वोरा कटोर । पुंणा । कतारगाम । ओडपाड । वरीयाव । बोघा । भावनगर ।

पं । जयविजय ग । पं । मांन स । विजापर । गवाडू । लोदरुं । पेढांमली । कडोली । सोझा । रंगपुर । सरदारपर । लाडोल । दावडा । पीथापर । सुंदरपर । मालुंसण । रीद्रोड । अमृतपुर ।

पं । रत्नविजय ग । पं । अमृत स । अकलेसर । दीवा । दीवी ।

Aho ! Shrutgyanam

पं । हर्षविजय ग । पं । तत्त्व स । } षंभायत
पं । षुसालविजय ग । पं । प्रीती स । } बिंदर

पं । चतुरविजय ग । पं । हीत स । अकब्बरपुर

पं । नायकविजय ग । उ । लक्ष्मी स । रांनेर । सरस । कुदियांणुं । भगवा डांडो ।

पं । नायकविजय ग । पं । सौभाग्य स । हरीपरुं । छापरीयाओल ।

पं । रत्नविजय ग पं । अमृत स । गेरीतुं । वडसमुं । कोदरांम । मेगाल ।

पं । नयविजय ग । वृद्ध श्रीजी स । चांदणसल । खेराल ।

पं । धर्मविजय ग । वृद्ध श्रीजी स ।
पं । रामविजय ग पं । प्रेम सत्क
{ बारजु । महियज । लाली । चोसर । असलाली । जेतलपर । गीरमता । टीबा । नवोगांम । महिजडुं । द्रोडा । कांनेरा । वोवलज । जलालपुर । नाज । नाहज । नायकू । बारेजडी । पीरांणुं । वसहि । बीडजा-ठाणुं १ आंमोदमध्ये । ठांणुं २ भरुअच्चमध्यें }

पं । रत्नविजय ग । पं । मुक्ति स । गोधरा ।

पं । प्रेमविजय ग । पं । माणीक्य स । पुणांनयरे, दक्षणदेशे ।

पं । मोहनविजय ग । पं । भुपति स । बापगांम ।

पं । सभाचंद्र ग । पं । सोमचंद्र स । पाज ।

पं । भगवानविजय ग । पं । हित स । कावली ।

पं । कपूरविजय ग । पं । केसर स । गणदेवी । बीलीमोरुं । आलोद । बारडोली ।

पं । मोहनविजय ग । पं । विनीत स । मालपुर । रणीयालूं ।

पं । शांतिविजय ग । पं । विनीत स । नंदरबार । इसरबाडी । पीपलनार । मांगीयातुंगीया ।

पं । पद्मविजय ग । पं । रुप स । बुहारी ।

पं । दयाविजय ग । पं । देव स । पादरो । ठांणु १ वडोदरामध्यें

पं । रामविजय ग । पं । कस्तुर स ।

पं । वल्लभाविजय ग । } पं । श्रीधर स । वडोदरु । आंति । सांति ।
पं । लक्ष्मीविजय }

पं । उत्तमविजय ग । पं । तीर्थ स । काकरीयुं । षेरगांम ।

पं । रंगविजय ग । पं । जस स । कडी राजपुर । रांमपूर । भक्रोडुं ।

पं । वीवेकविजय ग । पं । चारित्र स । व्यारा । कांनपुरा ।

पं । दयाविजय ग । पं । दीप स । कपडवांणोज ।

पं । नीत्याविजय ग । पं । प्रमोद स । मेसांणा । झोठांणा ।

पं । रंगविजय ग । पं । गुलाल स । कुकरवाडु । ओयषल । देवडुं ।

पं । भक्तिविजय ग । वृद्ध श्रीजी स । कोलवणुं ।

पं । षुसालविजय ग । पं । देवेंद्र स । चांपानयर । वेजलपर ।

पं । कपुरविमल ग । पं । सुमति स । केसरडी ।

पं । दीपविजय ग । पं । रत्न स । गणाद् बाहिर ।

पं । हस्तिविजय ग । पं । मुनेंद्र स । दक्षणदेशे तळेगांम ।

पं । हंसविजय ग । पं । हर्ष स । जुनेर ।

पं । भोजचंद्र ग । पं । भक्तिचंद्र स । आतरसमुं ।

पं । हर्षविजय ग । पं । श्रीधर स । बाला । पालडी ।

पं । प्रेमविजय ग । पं । धरणेन्द्र स । मालवदेशे ।

पं । चतुरविजय ग । पं । लक्ष्मी स । ठांणु १ व्यारामध्यें ।

पं । सौभाग्यरत्न ग । पं । भवांनीरत्न स । आंमोद । सरभांण । मीयागांम ।

पं । रत्नविजय ग । पं । मांन स । बोढांण ।

मु । रंगविजय ग । पं । प्रताप स । भृगुपुरमध्ये

पं । सीवचंद्र ग । पामोल ।

Aho ! Shrutgyanam

पं । नेमविजय ग । पं । माणीक्य स । पूर्वदेशे

पं । नेमविजय ग । पं । प्रेम स । चिणापुरपट्टण । अस्मत्स ठांणु ४ श्री सुरतमध्ये ॥

॥ इत्यादि क्षैत्र सत्यापना ॥ ॥ अस्माभिर्विधि ज्ञेयाः ॥

तथा समस्त साधु समुदाय योग्य । पोतपोतना लभ्या क्षेत्रादेश प्रमांणे साचववा । तथा जे कोई नही साचवे तथा जे कोई अदला बदली करस्येः, तथा जे क्रय विक्रय करसें । तथा जे कोइ ग्रस्थादि संघातें विरुधपणें प्रवर्तसें । तेहनें आवतें पट्टें आकरो उपालंब देवासें । गुदरासें नहिः ॥ माटे एवुं जांणी गच्छमृजादा गुरु परंपराइं प्रवर्तवुंः ॥ सहि ॥ एवंच, पालणपुर । मालण । मगरवांडु । वडगांम । रुपाल । मेगाल । विसलनगर । वडनगर । करनुपर । महुपर । गुंजा । गोठुंवा । कडा । धिणोज । झोटांणा । कटोसण । मांणीकपुर । हापा । ताजपर । मांगसा । पींणापर । वासणा । विराडाली । बोदरुं । उनाउआ । बालुआ । गोधावी । सेला । धुमा। वसहि । बरानपुर । नोरंगाबाद । ठिंगोडुं । गांदली । पीपलनार । नलधरुं । महुआ । सरभांण । वणेश । सठवेण । वलसाड । टिंबा परगणुं । बसरावी । मांडवी । कालीयावाडि । महमाई बिंदर । वसहि बिंदर । इसनपुर । मगोडी । वढवांण । निबडी । पाणेठा । गुंदि । उत्तेलीयुं (?) सोझंतरा । वसो । मातर । फतेपर । देवांण । बारीयुं । चारोली । सोनगढ । वालोल । नीझराल । झोटांणा । दुझांणा । हेदराबाद । पलीयड । षेरज ।

॥ इत्यादि क्षैत्र श्री शरकार षालसें छेः ॥ सहिः ॥

पट्टक ८

श्री

आनी लंबाई ३ फुट १ इंच, पहोळाई ७ इंच. पंक्ति संख्या १२८.

॥ ॐ नत्वा । भ । श्री श्रीविजय धर्मसूरीश्वरपरमगुरुभ्यो नमः सं १८८० वर्षे । भ । श्री श्रीविजयजिनेन्द्रसूरिभिर्यैष्ट्रस्थित्यादेश पट्टक लि। श्री गुर्जरदेशे ।

पं । माणिक्यविजय ग । श्रीजीसपरिकरा । पालणपुर १ वगदा २ दांता ३ लुंणपुर ४ पांचडा ५ धनाली ६ मोरियो ७ चंडेस ८ गोरीयल ९

पं । षुस्यालविजय ग । पं । देव स । पं । मानविजय ग । पं । हित स । राजनगर १ सरखेज २ हेबदपुर ३ आसावद । ४ मोरीयो ५ रायपुर ६ नवो वास ७

पं । विवेकविजय ग । पं । प्रेमविजय ग । पं । डुंगर स । दमण १ पालडी २ बोराकठोर ३

पं । नायकविजय ग । पं । पद्मविजय ग । उं । श्री षुस्याल स । पं । धर्मचन्द्र ग । पं । कल्याण स । सुरत १ हरीपुरो २ नवसारी ३ छापरीया ओल ४

पं । सुबुद्धिविजय ग । पं । वल्लभ स । पं । लक्ष्मीविजय ग । पं । सुबुद्धि स । वडोदरो १ द्रापरो २ राहुपुरो ३

पं । पुन्यविजय ग । पं । दीपविजय ग । पं । कृष्ण स । पाट्टण १ कुंणगर २ कंबोई कोलिनी ३ भलगांव ४

पं । विनयविजय ग । पं । कल्याण स । पं । ऋषभविजय ग । पं । जिन स । मीयां १ अनस्तू २ लीलोड २ फतेपुर ३ वलण ४

पं । गुलाबविजय ग । पं । जयविजय ग । पं । विवेक स । वीजापुर १ लाडोल २ हरसोर ३ समौ ४

पं । रुपविजय ग । पं । पद्म स । गणाद् बहि

पं । वीरविजय ग । पं । शुभ स । राजनगरमध्ये ।

पं । नायकविजय ग । पं । केशरविजय ग । पं । जय स । वीरमगांव १ गोरीया २

पं । मुक्तिविजय ग । पं हंस स ।
पं । कनकविजय ग । पं । कपूर स ।
पं । लक्ष्मीविजय प । ग । मुक्ति स । } आगलोड १ वरतापुर २

पं । शिवचन्द्र ग । पं । उतम स । मुंबई १ वसी २ अगाशी ३

पं । रूपविजय ग । पं । राज स । पं । वल्लभविजय ग ।

Aho ! Shrutgyanam

पं । मोहन स । चांणसमो १ वडावलि २ कंबोई सोलंकीनी ३ कंथरावी ४ लुणवा ५

पं । केशरविजय ग । पं । उत्तमविजय ग । पं । मेघ स । भावनगर १ वालुकर २ वरतेज ३ भंडारीयो ४

पं । मुक्तिविजय ग । पं । मेघ स । पं । मोहनविजय ग । पं । मुक्ति स । मेसांणा १ लांगणोज २

पं । रामविजय ग । पं । रूप स । ईडर १ वडावलि २ खेडब्रह्मांणी ३ रणासण ४

पं । जेतविजय ग । पं । शान्ति स । थरा १ वाव २ कुंदरा ३ धधांण । ४ वडा ५

पं । मानविजय ग । पं । दर्शन स । राधनपुर १ वाराही २ भीलोट ३ कमलापुर ४ सुनेत ५ जांम ६ वेठ ३ कुंअर ९

पं । दीपविजय ग । पं । भाव स । जंबूसर

पं । सुबुद्धिविजय ग । पं । रंग स । भरुअच १ देजवाडो २

पं । शुभविवज ग । पं । कल्याण स । वणोद १

पं । प्रतापविजग ग । पं । ऊतम स । दक्षणदेशे ।

पं । भक्तिविजय ग । पं। कीस्तुर स । वीहारा १

पं । कीर्तिविजय ग । पं । गुमांन स । राणकपुर १

पं । रूपविजय ग । पं । मोहन स । मावड १ गोठडा २ ऊमरी ३ सथलांणो ४ मेता ५

पं । चतुर्विजय ग । पं । न्यान स । मणाद १ गांभु २

पं । लक्ष्मीकुशल ग । पं ऋद्धि स । सोरठदेशे ।

। तेजविजय ग । पं । हेम स । समी १ दुदका २ कुंआरद ३

पं । राजेन्द्रविजय ग । अस्मत्स । डभोई १ कारवण २

पं । देवविजय ग । पं । कांति स। पं। शुभविजय ग । पं। ललित स । सिद्धापुर १ कलाणो २

पं । माणिक्यविजय ग । पं । हस्ति स । ईलोल १ साबली २ वलासणा ३

पं । चतुर्विजय ग । शांति स । पं । राजविजय ग । पं । हेम स । पादडो १ देकावाडे २ छणियार ३

पं । वृस्यालवर्धन ग । पं । धर्म स । पं । गणेशवर्धन ग। पं । राज स । नीबडी १ पीपली २

पं । हेमविजय ग । पं । गोतम स । गणाद् बहि

पं । ज्ञानविजग ग । पं । माणिक्य स । अणबरपुरे

पं । विनयसागर ग । पं । उमेद स । गणाद् बहि

पं । प्रतापविजग ग । पं । विवेक स । खेमविजय ग । पं । प्रताप स । मयादर १

पं । जीतविजय ग । पं । जिन स । पं । कल्याणविजय ग । पं । जीत स । मांडवी १ ओडपाड २

पं । रामविजय ग । पं । नेम स । पं । रूपविजय ग । पं । उमेद स । वढवांण १ चुडा २ धोलेरा ३ पीर-भडीयाद ४ सायला ५

पं । माणिक्यविजय ग । पं । गलाल स । झीणोर १

पं । सुजानविजय ग । उ । श्री सोभाग्य स । सेरगढ १ चीत्रोडो २

पं । चतुरविजय ग । उ । भक्ति स । वसु १ नांदोतरो २

पं । प्रतापविजय ग । पं । भवांन स । पादरो

पं । विवेकविजय ग । पं । हंस स । जांमला १

पं । अमृतविजय ग । पं । वल्लभ स । मांडल १

पं । ज्ञानविजय ग । पं । राजेंद्र स । बुहारी १

पं । भीमविजय ग । पं । हेम स । आंतरोली १

पं । राजविजय ग । पं । भीम स । वलय १

पं । ज्ञानविजय ग । पं । रवी स । मालण १

पं । धनसागर ग । पं । फते स । मातर १ नांनोदरो२

पं । दीपविजय ग । पं । हस्ति स । देवाडभो १

पं । हर्षविजय म । पं । गलाल स । ऊमता १ देणफ२

पं । ऊतमविजय ग ।
पं । लब्धिविजय ग । } पं । वल्लभस । दसाडो १ कलाडो २

पं । मोतीविजय ग । पं । न्यान स । मुढेरा १

पं । हस्तिविजय ग । पं । माणिक्य स । पींपलदल १ करपडीयो २

पं । भाग्यविजय ग । पं । अमृत स । वीसलनगर १ कडा २ जासका ३ गोठवा ४ सिवाला ५ गूंजा ६ वसीडाभला ७ भालक ८

Aho ! Shrutgyanam

पं । धर्मविजय ग । पं । पून्य स । वडगांम १

पं । पद्मविजय ग । पं । भाग्य स । पेटलाद् १ वेजलको २ षांवली ३

पं । कांतिविजय ग । अस्मत्स । टेंबाचुडी १

पं । क्षमाविजय ग । अस्मत्स । मगरवाडो १

पं । रत्नविजय ग । अस्मत्स । चांगा १

पं । कांतिविजय ग । पं । दोलति स। सरीयद १ बायड २

पं । केशरचंद्र ग । पं । कल्याण स । चंदुर १

पं । तेजविजय ग । पं । रत्न स । षाषल १

पं । मुक्तिविजय ग । पं। प्रताप स । घोता१ सकलाणा २

पं । नेमविजय ग । पं । भाण स । खंभायत१ वटादरो२

पं । जीवणविजय ग । पं । कुअर स । अस्मत्पार्श्वे

पं । कुंअरविजय ग । पं । हेम स । वजाणो १

पं । चतुरविजय ग । पं । नवल स । वडनगर १ लुंणवा २ ओढाई ३

पं । हीरविजय ग । पं । लाल स । अमनगर १

पं । रत्नविजय ग । पं । षूस्याल स । रुपाल १ सडो २

पं । हर्षविजय ग । पं । सुजांण स । केशरडी १

पं । धनविजय ग । पं । षूस्याल स । गोभावी १

पं । नेमविजय ग । पं । रूप स । पीलुंचो १

पं । दीपविजय ग । पं । वीनय स । गढ १ वडावल २

पं । मानविजय ग । पं । वीनय स । धानेरा १ झेरडा २ वरणझभाल ३

पं । नायकविजय ग । पं । इंद्र स । वीणोज१ रणोज २

पं । लक्ष्मीविजय ग । पं। षूस्याल स । चीलोडो १ बदरको २ धवलको ३

पं । धनविजय ग । पं । भूषण स । मोरवाडो १

पं । हैतविजय ग । पं । मेव स । कोठ १ गांगड २

पं । जयविजय ग । पं । हर्ष स । पारकरनगर १

पं । नेमविजय ग । पं । राम स । छठीयारडो १

पं । कपूरविजय ग । पं । वीनय स । डीसा १ राजपुर२ आहेडा ३

पं । जीतकुशल ग । पं । दीप स । पं । ऋद्धिकुशल ग । पं । कीस्तुर स । रानेर १

पं । फत्तेविजय ग । पं । भाण स । सांकरा १ बांसा २ रानेर ३

पं । गोविंदविजय ग । पं । भवान स । ईषर १

पं । रंगविजय ग । पं । प्रेम स । नडीयाद १

पं । कीस्तुरविजय ग । पं । गोकल स । मडाणा १

पं । देवीचंद्र ग । पं । दुलि स । डुंगरपुर १ वांसवालो २ मोहणपुर ३

पं । विद्याविजय ग । पं । रूप स । पं । उतमविजय ग । पं विद्या स । षेरालुं १ चांदणसोल २

पं । ऊत्तमविजय ग । पं । वीनीत स । गोलको१गाजदीपूरो २

पं । ऋद्धिविजय ग । पं । ज्ञान स । मुंजेपर १

पं । रुपविजय ग । पं । भाण स । सोवनगढ १

पं । हितविजय ग । पं । जिन स । वालोल १

पं । गूमांनविजय ग । पं । रुप स । लिंछ १ अंबासण २

पं । सुखविजय ग । पं । प्रमांण स । नंदासण १

पं । नीत्यविजय ग । पं । हर्ष स । कडी १ कुकुआव २

पं । दयासोम ग । पं । जीत स । इंटोलुं १

पं । प्रेमविजय ग । पं । अमर स । जांमपर १ कसरा २

पं । विवेकविजय ग । पं । हर्ष स । बोरसद १

पं । हितविजय ग । पं । हंस स । संषेसर १

पं । सुंदरचंद्र ग । पं । दुलि स । सीपर १

पं । हेमविजय ग । पं । सुख स । गणादूवाहि

पं । ऊतमविजय ग । पं । राजेंद्र स । मोभासादडा १

पं । मोतीविजय ग । पं । मुक्ति स । सिरदारपुर १

पं । ऋद्धिविजय ग । पं । लक्ष्मी स । पंचासर १ पाडला २ सोईगांम ३

अत्रोद्धरीतक्षेत्रादी सत्यापना अस्माभिर्विधेयाइति मंगलम्।

समस्त साधु समुदाय योग्यं । अपरं सहु पट्टाप्रमाणें पोता पोतानें क्षेत्रादेशें जई पोहचज्यो । जे कोई पारका क्षेत्रमांहिं रहस्यें । त । क्षेत्र आलटपालट करस्यें । तथा क्रयविक्रय करस्ये । त । कोई चोमासमांहि फिरस्यें हिरस्यें । तथा ग्रहस्थ थकी चढी बोलस्यें । तो तेहनें आकरो उपालंभ आवस्यें । सर्वथा गुदरास्यें नही । गुरु-

रवाज श्री श्रीजीनी आंण छई । एहवुं जांणी मर्यादामांहिं प्रवर्तवुं । इति श्री ॥

पट्टक ९

३ फूट ३ इंच लांबो. ६$\frac{3}{4}$ इंच पहोळो. १२३ पंक्ति.

सही ॥

॥ ॐ नत्वा भ । श्री श्री विजयधर्म्मसूरीश्वर परमगुरूभ्यो नमः ।

सं । १८८२ वर्षे भ श्री श्री विजयजिनेंद्रसूरिभिर्येष्ट-स्थित्यादेशपट्टकलिख्यतेः ॥ गुर्जर देशे ॥

पं । माणिक्य विजय ग । श्री जी सपरिकरा । उदेपुर मेवाड देशे । गुजर देशे ।

पं । खुस्यालविजय ग । पं । देव स । पं मानविजयग । पं । हित स । राजनगगर १ सरखेद २ आवल ३ हेवदपुर ४ रायपुर ५ मोरीयो ६

पं । विवेकविजय ग । पं । प्रेमविजय ग । पं । डुंगर स । सूरत १ नवसारी २ हरीपुरो ३ छापरीया ओल ४

पं । नायकविजय ग । पं । मोहनविजय ग । उं । श्री खुस्याल स । पं । धर्म्मचंद्र ग । पं । कल्याण स । पाटण १ कुणगर २ कंबोइ कोलीनी ३

पं । पदमविजय ग । उं । श्री खूस्याल स । मणोद १

पं । सुबुद्धि विजय ग । पं । वल्लभ स । लक्ष्मीविजय ग । सुबुद्धि स । डभोइ १ वडोदरो २ राहुपुरो ३ कारवण ४ लीलोड ५

पं । पुन्याविजय ग । पं । दीपविजय ग । पं कृष्ण स । राधनपुर १ भीलोड २ कमालपुर ३ वाराही ४ ऊंण ५ वेड ६ ।

पं । विनयविजय ग । पं । कल्याण स । पं । रुषभविजय ग । पं । जिन स । खंभायत १ जंबूसर २ बोरसद ३

पं । गूलाबविजय ग । पं । जयविजय ग । पं । विवेक स । विजापुर १ पीपलदरकरपटीयो २ लाडोल ३

पं । रूपविजय ग । पं पदम स । राजनगरमध्ये १

पं । वीरविजय ग । पं । शुभ स । राजनगरमध्ये १

पं । नायकविजय ग । पं । जय स । पं । शुभविजय ग । पं । कल्याण स । वरिमगांम १ मांडल २ गोरीया ३

पं । मुक्तिविजय ग । पं । हंस स । पं । लक्ष्मीविजय ग । पं । मुक्ति स । ईलोल १ सरदारपुर २

पं । तेजविजय ग । पं । हेम स । धानेरा १ आहेडा २ झेरडा ३

पं । कनकविजय ग । पं । कपुर स । साबली १

पं । शिवचंद्र ग । पं । उत्तम स । ममोई १ वसी २ नागोथा गो ३

पं । दीपविजय ग । पं । भाव स । पं । भक्तिविजय ग । पं । विवेक स । झीणोर १

पं । रुपविजय ग । पं । राज स । पं । वलभविजय ग । पं । मोहन स । वीसलनगर १ कडा २ जासका ३ गोठवा ४ भालक ५ सेवाला ६

पं । केसरविजय ग । पं । उत्तमविजय ग । पं । मेव स । भावनगर १ वालुकर २ वरतेज ३ भंडारीयो ४

पं । मुक्तिविजय ग । पं । मेव स । पं । मोहनविजय ग । पं । मुक्ति स । सिद्धपुर १ मेंता २ लुणवा ३ कलांणो ४ नांदोतरो ५

पं । राजविजय ग । पं । रूप स । पं । मनरूपविजय ग । पं मया स । आगलोल १ समउ २ हरसोर ३ रणासण ४ वलासणो ५

पं । जैतविजय ग । पं । शांति स । पं । हीरविजय ग । पं । जैत स । समी १ चंदूर २ दुदषा ३

पं । मानविजय ग । पं । दर्शन स । चाणसमो १ वडावली २ कंबोई सोलंकीनी ३ कंथरावी ४

पं । सुबुद्धिविजय ग । पं । रंग स । भरूअच १ देजवारो २

पं । भक्तिविजय ग । पं । कीस्तुर स । सोवनगढ १

पं । कीर्त्तिविजय ग । पं । गूमान स । चुडा १

पं । रूपविजय ग । पं । मोहन स । पालणपुर १ वगदा २ दांता ३ लुणापुर ४ पांचडा ५ धनाडी ६ मोरीयो ७ चंडेसर ८ जसलोडी ९

Aho ! Shrutgyanam

पं । चतुरविजय ग । पं ग्यान स । भीणोज १

पं । लक्ष्मीकुशल ग । पं । रुद्धि स । दमण १ पालडी २

पं । जयविजय ग । पं । हर्ष स । थरा १ जामपुर२

पं । क्षमाविजय ग । पं । मणि म । सोईगांम १मोरवाडो २ भामर ३

पं । राजेंद्रविजय ग । अस्मत्स । पादरो १

पं । देवविजय ग । पं । कांति स । पं । शुभविजय ग । पं । ललित स । वडनगर १ डाभला २ उंढाई ३

पं । मणिक्यविजय ग । पं । हांति स । ईडर १ वखतापुर २

पं । चतुरविजय ग । पं । शांति स । पं । राजविजय ग । पं । हेम स । दसाडो १ कलाडो २

पं । षुस्यालावर्धन ग । पं । धर्म्म स । पं । गणेशवर्द्धन ग । पं । राज स । वढवाण १ धोलेरा २ राणकपुर ३ साहेला ४ पीरभडीयाद ५

पं । हेमविजय ग । पं । गौत्तम स । गणादुवही ।

पं । ज्ञानविजय ग । पं । माणिक्य स । संखेश्वर

पं । विनयसार ग । पं । उमेद स । गणादुवही

पं । प्रतापविजय ग । पं । विवेक स ।
पं । खेमविजय ग । पं । प्रताप स । } मजादर १

पं । जितविजय ग । पं । जिन स । } बुहारी १
पं । कल्याणविजय ग । पं । जीत स । } वालोल २

पं । रामविजय ग । पं । नेम स । } पाटडी १ पंचासर २ कुअर ३
पं । रूपविजय ग । पं । उमेद स ।

पं । माणिक्यविजय ग । पं । गुलाल स । मीयां १ ईटोले २

पं । सुग्यानविजय ग । उं । श्री सोभाग्य स । बोडीयाल १

पं । चतुर्विजय ग । उं । भक्ति स । पीलुचो १ टींबाचुडी २

पं । प्रतापविजय ग । पं । भवान स । भुजपुर १

पं । विवेकविजय ग । पं । हंस स । षेरालु १

पं । गौतमविजय ग । पं । ज्ञान स । मांडवी १

पं । भीमविजय ग । पं । हेम स । आंतरोली १

पं । माणिक्यविजय ग । पं । राज स । वलय १

पं । ग्यानविजय ग । पं । रुपी स । चांगा १

पं । धनसागर ग । पं । फते स । पेटलाद १

पं । दीपविजय ग । पं । हस्ती स । नडीयाद १

पं । हर्खविजय ग । पं । गलाल स । सीपुर १ चांणसोल२

पं । उत्तमविजय ग । } नीवडी १ सिंहाणी २ अंचेवालीयो ३
पं । लब्धिविजय ग । पं । वलभ स ।

पं । मोतीविजय ग । पं । ग्यान स । मुढेरा १

पं । हस्तिविजय ग । पं । माणिक्य स । वडाली १

पं । भाग्यविजय ग । पं । अमृत स । लींच १ नंदासण २ लांघणोज ३ कडी ४ अंबासण ५

पं । धर्म्मविजय ग । पं । पुन्य स । वडगांम १

पं । पद्मविजय ग । पं । भाग्य स । मातर १

पं । कांतिविजय ग । अस्मत्स । रणोद १

पं । क्षमाविजय ग । अस्मत्स । अस्मत्पार्श्वे

पं । रत्नविजय ग । अस्मत्स । अस्मत्पार्श्वे

पं । कांतिविजय ग । पं । दोलत स । सरीयद १ कहरा२

पं । केसरचंद्र ग । पं । कल्याण स । कुंआरप १

पं । तेजविजय ग । पं । रतन स । वासा १

पं । गुमानविजय ग । पं । रूप स । चीलोडो १ बदरको२

पं । लक्ष्मीविजय ग । पं । भाण स । वाव १ थराद २ उचोसण ३ देणप ४

पं । मुक्तिविजय ग । पं । प्रताप स । मालण १

पं । नेमविजय ग । पं । भांण स । रानेर १ वोरा कठोर२

पं । कुंअरविजय ग । पं । हेम स । नानोदरा १

पं । चतुर्विजय ग । पं । नवल स । मेसांणो १

पं । हरिविजय ग । पं । लाल स । अमदनगर १

पं । रत्नविजय ग । पं । खुस्याल स । रुपाल १ समो२

पं । हर्षविजय ग । पं । सुजाण स । केसरडी १

पं । धनविजय ग । पं । भुखण स । अणवरपुरो १

पं । हेतविजय ग । पं । मेघ स । काठगांगड १ वटादरो२

पं । नेमविजय ग । पं । राम स । गांभु १

पं । धनविजय ग । पं । खुशाल स । छणीयार १ देकावाडो २ कुंकुडाव ३

पं । नेमविजय ग । पं रूप स । गोला १

Aho ! Shrutgyanam

पं । दीपविजय ग । पं । विनय स । गढमंडाणा १

पं । मानविजय ग । पं । विनय स । वसु १

पं । नायकविजय ग । पं । इंद्र स । छठीयारडो १

पं । लक्ष्मीविजय ग । पं । खुस्याल स । गोधावी १

पं । कपुरविजय ग । पं । विनय स । डीसा १ वडावल २ बरणझनाल ३

पं । जितकुशल ग । पं । दीप स । } व्याहारा १
पं । रूद्धिकुशल ग । पं । कीस्तुर स । }

पं । फतेविजय ग । पं । भाण स । उंदरा १ रानेर २ वायड ३

पं । गोविंदविजय ग । पं । भवान स । ईषर १

पं । रंगविजय ग । पं । प्रेम स । षांधली १

पं । कीस्तुरविजय ग । पं । गोकल स । मगरवाडो १

पं । देवचंद्र ग । पं दुलि स । मोहणपुर १

पं । विद्याविजय ग । पं । रूप स । } मावडगोठडा १ उंबरी २ सथलांणा ३
पं । उत्तमविजय ग । पं । विद्या स । }

पं । उत्तमविजय ग । पं । विनीत स । गोत्रको १ गाजर्दीपूरो २

पं । मानविजय ग । पं । विवेक स । अगासी १

पं । रुद्धिविजय ग । पं । ज्ञान स । मोभासादडा १

पं । जशविजय ग । पं । नेम स । आपरा १

पं । रुपविजय ग । पं । मांण स । ओडपाड १

पं । सुखविजय ग । पं । प्रमाण स । धधाणा १

पं । नित्यविजय ग । पं । हर्ष स । पीपली १

पं । दयासोम ग । पं । जित स । ईटोलो १

पं । प्रेमविजय ग । पं । अमर स । सांकरा १ षाषल २

पं । विवेकविजय ग । पं । हर्ष स । वसरावी १

पं । हेतविजय ग । पं । हंस स । बजाणो १

पं । सुंदरचंद्र ग । पं । दुलि स । ऊंमता १ देणप २

पं । उत्तमविजय ग । पं । राजेंद्र स । देवाडभो १

पं । मोतीविजय ग । पं । मुक्ति स । आंमला १

पं । रुद्धिविजय ग । पं । लहरी स । पं । मुक्तिविजय ग । पं । भिम स । वणोद १ पामला २

पं । मोतीविजय ग । पं । तेज स । रायपुर १

अत्रोद्धरीत क्षेत्रादी सत्यापना अस्माभिर्विधेयाति मंगलम्॥

समस्त साधु समुदाय योग्यं । अपरं सहु पट्टाप्रमाणे क्षेत्रादेश पोता२ने जइ पोहचज्यो । तथा जे कोई पारका क्षेत्रमाहिं रहस्यै तथा क्षेत्र आलटपालट करस्यै तथा जे कोई चोमासामांहि फिरस्यै तथा जे कोई गृहस्थासु चढी बोलस्यै तो आकरो ऊपालंभ आवस्यै । सर्वथा गूदरास्यै नही । गूदरवा तो श्री श्रीजीनी आण छइं । एहवुं जाणी मर्यादा प्रमाणे प्रवर्तवूं ।

पट्टक १०

आ पट्टकनी लंबाई २ फुट ५ इंच. पहोळाई ७ इंच. पंक्ति संख्या ११६.

सही ।

ॐ नत्वा ॥ भ । श्री श्री विजयजिनेंद्र सूरीश्वरपरम गुरुभ्यो नमः ॥

सं । १९०३ वर्षे विजयदेवेंद्र सूरीभिर्येष्टस्थित्यादेश पट्टक लिख्यते ॥ श्रीगुर्जरदेशे॥

*पं । ...विजय ग । श्री जी सपरिकराः । श्रीलघुमरुदेशे । भनीमाल १ राजपर २

पं । ...धर्मविजय ग । पं । डुंगर स । पं । नरोत्तमविजय ग । उ । श्रीविवेक स । पं । अमरविजय ग । पं । प्रेम स । रानेर १ ओडपाड २

पं । पद्मविजय ग । पं । मोहनविजय ग । उ । श्रीविवेक स । धीणोज १

पं । धर्मचंद्र ग । पं । कल्याण स । पं । रुपचंद्र ग । पं । धर्म स । मुंबै १ बाहिरकोट २ वसी ३ आगासी ४ नागुथाणो ५ माम ६

पं । क्षमाविजय ग । श्रीजी स । मालण १

पं । गुमानविजय ग । उ । श्रीमाणिक्य स । अस्मत् पार्श्वे ।

---

* आ पट्टकनी जमनी बाजुनो प्रारंभनो केटलोक भाग खराब थई गएलो छे तेथी केटलांक नामो जता रह्यां छे.

Aho ! Shrutgyanam

पं । मानविजय ग । पं । दर्शन स । पाटण १ डीसा २ वडावल ३ अहिडा ४ कंबोईकोलीनी ५ मावड-गोठडा ३ उंबरी ७ सथलासणो ८ भालुसणो ९ वाव १०

पं । वीरविजय ग । पं । शुभ स । राजनगरमध्ये १

पं । माणेकविजय ग । पं । जय स । वीरमगांम १ गो-रीयो २

पं । गुलाबविजय ग । पं । जयविजय ग । पं । विवेक स । वीजापूर १ पिंपलदलकरपटीयो २

पं । माणिक्यविजय ग । पं । खेम स । मांडवी १

पं । ...चंद्र ग । पं । शिव स । पं । प्रथवीचंद्र ग । पं । अमी स । सोरठदेशे गोधा १

पं ।........ल ग। पं । रुचिर स । पं ! विनयकुशल ग।

पं । कुअर स । पं । चतुर कुशल ग । पं । दोलतकुशल ग । पं । लक्ष्मी स । सुरत १ हरीपुरो २ कठोर ३ छापरीयाओल ४

पं । रंगविजय ग । पं । केशर स । बुहारी १ पालडी २ बगवाडो ३

पं । शांतिविजय ग । पं । केशर स । पं । राजविजय ग । पं । उत्तम स । दमण १

पं । खुश्यालविजय ग । पं । देव स । राजनगरमध्ये १

पं । मोहनसागर ग । पं । शिव स । पालणपुर १ बगदा२ घोडीयाल ३ चित्रोडी ४ सलिमकोट ५ पांचडा ६ धनाली ७ मोरीओ ८

पं । रूपविजय ग । पं । पद्म स । राजनगरमध्ये १

पं । राजविजय ग । पं । रूप स । पं । जीतविजय ग । पं । उमेद स । इल्लोल १

पं । देवविजय ग । पं । कांति स । पं । जीतविजय ग । पं । शुभ स । आगलोड १ सिरदारपुर २

पं । मनरूपविजय ग । पं । मया स । साबली १ खेड-ब्रह्मानी २

पं । उत्तमविजय ग । पं । वल्लभ स । पं । सुखविजय ग । पं । अमृत स । राधनपुर १ अणवरपुरो २ गाज-दीपुरो ३

पं । विनयविजय ग । पं । कल्याण स । पं । रुषभविजय ग । पं । जिन स ! मीयां १ अनस्तु २

पं । पुन्यविजय ग । पं । दीपविजय ग । पं । कृष्ण स । वीसलनगर १ डाभला २ कडा ३ गुंजा ४

पं । मोतीविजय ग । पं । मुक्ति स । बखतापुर १ जांमला२

पं । नीतीविजय ग । पं । तेज स । थिरा १ जामपर २ कसदा ३ उंदरा ४

पं । कनकविजय ग । पं । कपुर स । हाफु १ हरसोर २

पं । लालचंद्र ग । पं । प्रेम स । सोरठदेशे वलय १

पं । लक्ष्मीविजय ग । पं । सुबुद्धि स । वडोदरा १ डभोई २

पं । रुपविजय ग । पं । राज स । सिद्धपुर १ पाषल २ धंधांणा ३ भीलोट ४ कमालपुर ५ राफु ६

पं । दीपविजय ग । पं । भाव स । पं । भक्तिविजय ग । पं । विवेक स । झीणोर १ भ्रापरा २ :

पं । फतेविजय ग । पं । जेत स । वाव १ कुआला २ थिराद ३

पं। शुभविजय ग । पं । कल्याण स । संखेसर १ पंचा-सर २

पं । सुबुद्धिविजय ग । पं । रंग स । भरुअच १ देज-वारो २

पं । भक्तिविजय ग । पं । किस्तुर स दक्षणदेशे ।

पं । रूपविजय ग । पं । मोहन स । चानसमो १ वडावलि २ गाभु ३

पं । चतुरविजय ग । पं । न्याय स । गढ १ मेथा २ मंडाणा ३

पं । जयविजय ग । पं । हर्ष स । भावनगर १ वरतेज२

पं । किस्तुरविजय ग । पं । मोहन स । भोलरो १ पिंपली २

पं । नायकविजय ग । पं । मुक्तिविजय ग । पं । भीम स । वणोद १ पाटडी २ मांडल ३

पं । खेमविजय ग । पं । मणि स । भाभर १ मोरवाडो २

पं । नायकविजय ग । पं । दीप स । पं । लब्धिविजय ग ।

Aho ! Shrutgyanam

पं । लावण्य स । समी १ सातलपुर २ दुधषा ३ वेड ४

पं । माणिक्यविजय ग । पं । हस्ति स । रणासण १

पं । मोहनविजय ग । पं । चतुर स । पं । कूंअरविजय ग । पं । हेम स । दिकावाडो १ कुंआरद २

पं । खुस्यालवर्धन ग । पं । धर्म्म स । वढवाण १ भ्रांगधरो २

पं । रामविजय ग । पं नेम स । लिंबडी १ राणपुर २ सीआणी ३

पं । हीरसागर ग । पं । चतुर स । चुडा १

पं । मुक्तिविजय ग । पं । गुलाल स । पं । अमीविजय ग । पं । मुक्ति स । वसु १ सासम २

पं । पद्मविजय ग । पं । रवि स । दशाडो १ कूअर २ कलाडो ३

पं । तत्त्वविजय ग । पं । क्रिर्ति स । वडगांम १

पं । विद्याविजय ग । उ । श्री सौभाग्य स । मुतेडी १ चांगा २

पं । प्रेमविजय ग । पं । चतुर स । मेसाणो १ कडी २ छठीयारडो ३ मणोद ४

पं । प्रतापविजय ग । पं । भवान स । वटादरो १ जंबुसर २

पं । विवेकविजय ग । पं । हंस स । ईडर १

पं । गोत्तमविजय ग । पं । ग्यान स । विहारा १ सोवनगढ २

पं । भीमविजय ग । पं । हेम स । लांघणोज १ नंदासण २

पं । ग्यानविजय ग । पं । रवि स । धोता १ सकलाणा २

पं । धनसागर ग । पं । फते स । गोधावी १

पं । जयविजय ग । पं । दीप स । मातर १

पं । हर्षविजय ग । पं । गुलाल स । } वडगांम १
पं । भाणविजय ग । पं । हर्ष स । } भालक २

पं । रविविजयै ग । पं । दया लविजय ग । पं । रुप स । गोत्रको १ वाराही २

पं । सुबुद्धिविजय ग । पं । गुलाब स । चंदुर १

पं । भाग्य विजय ग । पं । अमृत स । वडाली १ वडनगर २ लींछ ३

पं । भीमविजग ग । पं । सुमति स । अंबासण १ कुकुआव २ पाडला ३ केशरडी ४

पं । धर्म्मविजय ग । पं । पुन्य स । चांणसोल १

पं । पद्मविजय ग । पं । भाग्य स । आंतरोली १

पं । कांतिविजय ग । पं । दोलत स । सरीयद १

पं । गुमानविजय ग । पं । रुप स । चिलोडा १ बदरको ३

पं । मुक्तिविजय ग । पं । प्रताप स । गोला १

पं । कुंअरविजय ग । पं । लक्ष्मी स । सोइगांम १ बेणप २ उचोसण ३

पं । महिमाविजय ग । पं । नेम स । खंभात १ धांधली २

पं । जसविजय ग । पं । उत्तम स । बजाणो १

पं । चतुरविजय ग । पं । नवल स । खेरालु १ ऊंमता २

पं । क्षेमाविजय ग । पं । प्रताप स । मजादर १

पं । हीरविजय ग । पं । लाल स । अमनगर १

पं । रत्नविजय ग । पं । खुस्याल स । रुपाल १

पं । हर्षविजय ग । पं । सुजाण स । नांनोदरो १

पं । हीतविजय ग । पं । मेव स । गणाद्बहिः

पं । दीपविजय ग । पं । विनय स । पीलुचो १ नांदोतरो २

पं । मानविजय ग । पं । विनय स । धानेरी १ डुआ २ सेरडा ३

पं । लक्ष्मीविजय ग । पं । खुशाल स । कोठ १ गांगड २

पं । फते कुशल ग । पं जीत स । दक्षणदेशे

पं । फत्तेविजय ग । पं । भाण स । सांकरा १ रानेर २ वायड ३ वांसा ४

पं । अमृतविजय ग । पं । रंग स । नडीयाद १

पं । किस्तुरविजय ग । पं । गोकल स । मगरवाडा १

पं । देवचंद्र ग । पं । दुलि स । मोहनपुर १

पं । विद्याविजय ग पं । रुप स । पं । जयविजय ग । पं । विद्या स । दक्षणदेशे एवला १

पं । हितविजय ग । पं । हंस स । दक्षणदेशे ब्रांनपुर १

पं । रुधिविजय ग । पं । ग्यान स । मुंजपुर १

Aho ! Shrutgyanam

पं । यशविजय ग । पं । नेम स । पादरा १ भोंभासादडा२ नवसारी ३

पं । मुक्तिविजय ग । पं । नेम स । बोरसद १

पं । सुखविजय ग । पं । प्रमाण स । पालीताणामध्यें१

पं । नित्यविजय ग । पं । हर्ष स । पेटलाद१

पं । दयासोम ग । पं । जीत स । ईटोलो१

पं । सुंदरचंद्र ग । पं । दुलि स । डायलाणो १

पं । उत्तमविजय ग । पं । राजेंद्रस । देवाडभो १

पं । मोतीविजय ग । पं । धन स । सीपर १

पं । यशविजय ग । पं । हेम स । भगवा १

पं । लाल विजय ग । पं । किस्तुर स । वालोल १

अत्रोद्धारितक्षेत्रादिसत्यापना अस्माभिर्विधेयेति मंगलं ।। समस्तसाधु समुदाय योगं । अपरं सहु पट्टाप्रमाणे पोता २ नें क्षेत्रादेश जई पोहचज्यो । जे कोई पारका क्षेत्र मांहि रेहस्यें तथा क्षेत्र आलटपालट करस्यें । त । क्षेत्र क्रय विक्रय करस्यें । त । चोमासा मांहि कोई फिरस्यें हिरस्यें । त । कोई ग्रहस्थो थकी चढी बोलस्यें तो तेहने आकरो उपालंब आवस्यैं । सर्वथा गुदरास्यई नहीं गुदरवाज श्री श्रीजीनी आणछइं । एहवुं जाणि मयार्दा मांहि प्रवर्त्तवुं ।। ।। श्री ।। श्री ।।

Aho ! Shrutgyanam

सदयवत्स सावलिंगानी जैन कथा.

(सद्गत श्रीयुत **चिमनलाल** डा. दलाल. एम्. ए.)

[सद्गत विद्वान् श्रावक श्रीयुत चिमनलाल डाह्याभाई दलाल एम्. ए. जैन साहित्यने लगता जे छुटा छवाया बे चार लेखो लख्या हता ते बधा एकज संग्रहमां मळवाई रहे तेवा उद्देशथी तेमना ए लेखोने जैन साहित्य-संशोधकमां क्रमथी प्रगट करवानो विचार राख्यो छे अने तेमांनो आ प्रथम लेख छे. आ लेख तेमणे 'वसन्त' पत्रना संवत् १९७२ ना चैत्रना अंकमां प्रकट कराव्यो हतो.——मुनिजिनविजय]

*सदेवंत सावलिंगानी कथा गुजरातमां आबालवृद्ध जाणीती छे. तेना आठ भवना नेह तथा विजोगनी वार्त्ता स्त्रीओ पण प्रेमथी वांचे छे. आ कथा हमणांज नहीं पण जूना वखतमां पण हिंदुस्तानना जुदी जुदी भाषाओमां लोकप्रिय हती. अने तेथी करीने कविओए पोतानी कवित्वशक्ति सूदानां पराक्रमो तथा सूदा–सावलिंगानो अद्भुत प्रेम वर्णववामां बतावेली छे आ कथा जेटली लोकप्रिय छे तेटलीज जूदा जूदा रूपमां मळी आवे छे. [१] संस्कृतमां रत्नशेखरना शिष्य हर्षवर्धननी सदयवत्सकथा (गद्यमां): आ कथा सं. १५१०—३० ना अरसामां रचायेली लागे छे. [२] प्राचीन गूजरातीमां भीम कविनो सदयवत्स वीरप्रबंध उर्फे सदयवत्सवीरचरित्र. [३] कर्ताना नाम वगरनी (घणूं करीने जैन) सदयवछ सावलिंगी चउपइ. [४] संवत् १५९७ मां रचायेली कीर्तिवर्धननी सदयवत्स सावलिंगा चउपई. [५] मारवाडी भाषामां सं. १ ९७ मां लखायेली सदेवछ सावलिंगानी वात दूहा साथे.

[६] आ उपरांत गूजरातीमां नित्यलाभ नामना जैन साधुए सदयवत्स सावलिंगा चउपई तथा हिंदीमां सदेवंत सावलयाका दूहा पण जणायला छे.

लोककथाना सागर रूप कथासरित्सागरमां सदयवत्सनी कथा जणाती नथी; परंतु उज्जयिनी, हरसिद्धिमाता, प्रतिष्ठान तथा शालिवाहन, बावन, वीर खापरीओ चोर,

*संस्कृतमां सदयवत्स, प्राकृतमां सुदयवच्छ, सुद्दवच्छ तथा सुद्द; गूजरातीमां सूदो, सदयवछ अने सदेवत; मारवाडीमां तथा हिंदीमां सूदो तथा सदेवछ एवां नामो छे. सावलिंगाने केटलाक टेकाणे सावलिंगी पण कहो छे.

२ श्रीरत्नशेखरगुरुप्रवरप्रसादात्
हर्षादिवर्धनगणी सुरसैकपात्रम् ।
चक्रे कथां सदयवत्सकुमारसक्तां
सत्पात्रदानविमलाभयदानरम्याम् ॥

३ श्रीखरतरगच्छगगनदिणंद प्रतपै श्रीजिनहरखसूरींद ।
शिष्य त स बहुविदू विचार दीपति दयारत्न दिणकार ४९
मुनि कीरतिवरधन शिष्य तास बंधवजनराषण रंगरास ।
गुरुअनुमति निजमनि उलास ए कहीयो मै प्रथम अभ्यास
पामै नर पदमणि सुविलास पदमाणि पामैं सुखवरवास ।
भणतां लाभै वंछितभोग सुणतां प्रीतमतणो संयोग ॥५१॥
वालंभ प्रीयुतणी पदमणी जेहना वली परदेसैं धणी ।
रातिवांछित जे सुणसी सदा ते पामै पग पग संपदा ॥५२॥
संवत मुनि निधि रस ससी विजयदसमी रविवार ।
चतुरचाहि रची चौपई मुनिकेशव हितकार ॥ ५३ ॥
वेधक जे वांचै सुणैं वंछित पूजे (रे) हाम !
जिम सावलिंगा सुख लह्यो सुदयवत्स सुखठाम ॥५४॥
मैं रचना आहीज रची कविजन परमकृपाल ।
सुणि कै जि न हांसी करो करिजयो दया दयाल ॥५५॥

Aho ! Shrutgyanam

तथा सदयवत्सना अद्भुत पराक्रमो उपरथी धारी शकाय छे के आ कथानी उत्पत्ति पण विक्रमनी कथाओ जेवी ज छे अने तेटली ज जूनी छे.

में तपासेली पांच जूदी जूदी कथाओमां आपेली वार्ताओ त्रण विभागमां वहेंची शकाय छे.

उज्जयिनीना राजा प्रभुवत्सने महालक्ष्मी राणीथी सदयवत्स नामनो पुत्र हतो. ते द्यूतने विषे घणो आसक्त हतो. प्रतिष्ठानना राजा शालिवाहननी पुत्री सावलिंगाना स्वयंवरमां सदयवत्सने आमंत्रण आव्युं. राजाए मंत्रिनी साथे सदयवत्सने मोकल्यो. मंत्री कृपण होवाथी कुमारने जोइता पैसा आपे नहीं. स्वयंवरमां कुमार सावलिंगाने पोताना गुणोथी आकर्षीने परण्यो. उज्जयिनीमां महादेव नामने एक दरिद्री ज्योतिषी रहेतो हतो. पोतानी स्त्रीनी प्रेरणाथी राजसभामां प्रभुवत्स राजा पासे आव्यो. राजाए तेने पूछयुं के तुं कीया शास्त्रमां प्रवीण छुं. तेणे कीधुं के नष्टलाभ, भूत, भाविष्य, वर्तमान, वगेरे सर्व हुं जाणुं छुं. राजा आ दर्पवाळा वाक्यथी कोप्यो अने पासे रहेला जयमंगळ हस्तिनुं आयुष्य पुछयुं. महादेवे कीधुं के काले बे पहोरे ते मरशे. राजा आथी गुस्से थयो, अने तेने बंदीखानामां नाख्यो. तेनी रक्षार्थ मूकेला जनो हसवा लाग्या के जूओ आणे हस्तिनुं मृत्यु जाण्युं पण पोतानुं कारागृहपतन न जाण्युं.

गगने गणयति गणकश्चंद्रेण समागमं विशाखायाः ।
अन्यासक्तां गृहिणीं कथमपि मूढो न जानाति ॥

राजाए बोलावेला वैद्योए कीधुं के हाथीने कंई पण रोग नथी माटे तेने खानपानथी संतोषवो. राजाए हाथीने चारे तरफथी बंधाव्यो अने रक्षार्थे पुरुषो मुक्या. बीजे दिवसे बपोरे हाथी मदोन्मत्त थईने आलानस्तंभ तोडीने नाठो. चौटामां सौगंधिक, दोसी, नेस्तिक, घीआ, तेली, तंबोली, वगेरेनो माल ढोळी फोडीने आगळ दोड्यो. ब्राह्मणनी स्त्रीनी अधरणीना उत्सवनो वरघोडो तेना पीयरथी सासरे जतो हतो त्यां हस्ति आव्यो. लोको नाठा परंतु ब्राह्मणी आभूषण तथा गर्भना भारथी नाशी शकी नहीं. हस्तिए तेणीने पकडी, तेणीना पतिए बूम पाडी अने तेणीने बचावे तेने हार वगेरे इनाम आपवानुं कह्युं. सदयवत्से हस्तिने मारीने ब्राह्मणीने छोडावी. राजा खुशी थयो अने कुमारने युवराजपद आप्युं. मंत्रीने चिंता थई के हवे कुमार में तेने लग्न समये पैसा आप्या न हता तेथी मारा उपर वैर राखशे अने मने नक्की खराब करशे. कारण के हवे मारा दिवस रुठ्या छे.

दीहा रुटा तं करइ जं वइरी न करंति ।
दीह पालट्टइ रावणह पत्थर नीर तरंति ॥

आथी तेणे कुमारने कढाववानो उपाय चिंतव्यो अडदपूरित लोह स्थाल उपर कृष्ण दुकूल आच्छादीने राजाने भेट मोकल्यो.

राजाए कारण पूछयुं. मंत्रीए कीधुं के एक स्त्रीना कारणथी जेणे सकलमंगलनो कारण जयमंगल हाथी हण्यो तेने तमो यौवराज्य आपो छो. राजा काचा काननो होवाथी पुत्रने राज्यमांथी जता रहेवानो हुकम कर्यो.

दुब्बलकन्ना वंकमुहा अंधग्गला सरोस ।
जेता गुण तुरंगमह तेता माणसदोस ॥

कुमारे देश छोडवानो निश्चय कर्यो, कारण के जे देशमां मान तथा प्रतिष्ठा न होय ते देशमां सज्जन पुरुषे रहेवुं उचित नथी.

माण पणट्ठइ जथ्थावणु ता देसडउ चइज्ज ।
मा दुज्जणकरपल्लवे दंसिज्जं न भमिज्ज ॥

माताए वार्यो पण रह्यो नही. सावलिंगा पण साथे नीकळी. मार्गमां मोटुं रण आव्युं सावलिंगा तृषातुर थई. तेणी समस्यामां बोली.

सामि कुरंगा रणथले जलविणु किमु जीवंत ।
सदये कहयुं—हियउ सरोवर प्रेमजल नयणई नीर पीयंत ॥

सदयवत्स समज्यो के तेणी तृषातुर थई छे. तेथी पाणी शोधवा चाल्यो. एक प्रपापालिका देखाई. तेणीए कीधुं के आ हरसिद्धि मातानी प्रपा छे अने जेटलुं पाणी तेटलुं रुधिर आपो तो तेमांथी पाणी अपाय. तेणे कबुल कीधुं कारण के प्रेममां कंई अशक्य नथी.

Aho ! Shrutgyanam

कीरइ समुद्दतरणं पइसिज्जइ हुयवहंमि जालाए ।
एवं लंङ्घिज्जइ मरणं किं दुलहं अइसिणेहस्स ॥

वृद्धा तेनी साथे गई अने सावलिंगाने पाणी पायुं अने रुधिर माग्युं. कुमार शिरच्छेद करवाने उद्युक्त थयो, हरसिद्धि माता प्रत्यक्ष थई अने कह्युं के में तारी परीक्षाने माटे आ अरण्य वगेरे विकुर्वेलुं छे. तारा अचल साहसथी हुं प्रसन्न थई छुं. हुं अवंती अने प्रतिष्ठान नगरोनी अधिष्ठात्री देवी छुं माटे वर माग. कुमारे द्यूत तथा संग्राममां जय माग्यो. देवीए सार्यादि द्यूतने वास्ते बे पासा, कपर्दक द्यूतने वास्ते कपर्दिल तथा संग्राममां जयने वास्ते लोहक्षुरिका आपी. आगळ चालतां एक कुमारिकाने स्त्रीओना समूहनी वच्चे ध्यान धरती दीठी. सावलिंगा अंदर गई अने तेणीनो वृत्तांत पूछ्यो. कुमारिकाए कह्युं अहींथी पांच गाउ उपर आवेली द्वारावतीना राजा धरवीरनी स्त्री धारिणीनी कुक्षिथी उत्पन्न थयेली हुं लीलावती नामनी राजकन्या छूं. बंदिजनना मुखथी सदयवत्सना गुण सांभळवाथी आ कामितप्रद तीर्थमां तेने मेळववाना हेतुथी छ महीनाथी हुं ध्यान धरुं छुं. काले हवे काष्ठ भक्षण करवानी छुं. सावलिंगाए सदयवत्स संबंधी हकीकत कही. सर्वे नगरमां आव्या. सदयवत्स जोडे लीलावतीनुं लग्न कर्युं. ए अरसामां त्यां धर्मघोष नामना आचार्य आव्या. तेमणे थोडो पण धर्म मनुष्ये करवो ते उपर मृगांकनी कथा कही. सदयवत्स श्रावक धर्म पाम्यो. लीलावतीने पितृगृहेज राखीने सदयवत्स सावलिंगा साथे आगळ चाल्यो. रस्तामां पर्वतसौध उपर शिलाथी आच्छादित एक कंदरा दीठी. बन्ने अंदर पेठा. कंदरामां पांच चौर हता. तेमणे विचार्युं के आ पुरुषने मारीने तेनी सुरुपवती स्त्री लई लइए. चौरोए द्यूत रमवाने आव्हान कर्युं. जे हारे ते पोतानुं शिर मूके एवी शरत करवामां आवी. सदयवत्स जीत्यो पण चौरोनो शिरच्छेद कर्यो नहीं. चौरो प्रसन्न थया अने कह्युं के अमारी पासे अदृष्टांजन, संजीवनी, रससिद्धि, वगेरे विद्याओ छे ते तमने आपीए. सदयवत्से ना पाडी. एक चोर छानमाने तेना उत्तरीय पश्चिनी पत्र वेष्टित लक्ष मूल्यनो कंचुक बांध्यो. चौरोए कीधुं के संकटमां अमारुं स्मरण करतां तमारी मदद अमे आवीशुं. कुमार आगळ चालतां एक निर्जन नगरमां आव्यो. राजभवनमां आवतां पासे एक स्त्रीनुं रुदन सांभळीने तेणीनी पासे गयो. तेणीए कीधुं के हुं नंदराजानी लक्ष्मी छुं. निर्नाथ होवाथी हुं रुदन करुं छुं माटे तुं मारो पति था. नगरनी निर्जनता विषे पूछतां लक्ष्मीए कीधुं के आ वीरपुर नगरमां एक तापस आव्यो हतो ते स्त्रीथी केवल विरक्त छे एम बतावववाने कोई स्त्रीनो स्पर्श थाय तो वणोज गुस्से थतो. एकदा नगरनी वेश्या तेने अडकी राजा पासे फरीयाद जतां वेश्याए कीधुं के ए केवल ढोंगी छे. राजाए परीक्षा करवा माटे तेने पोताना आवासमां आण्यो अने राणी साथे सहवासमां आवे एवी गोठवण करी: राणीने जोईने तापस कामातुर थयो अने भोगनी प्रार्थना करी. राणीए बूम पाडवाथी राजा आव्यो अने तापसने तेणे हण्यो. ते तापस मरीने राक्षस थयो अने पूर्वभवना वैरथी नगरनी आवी स्थिति करी. प्रातःकाले लक्ष्मीए धनना ढगला बताव्या. सदयवत्से सावलिंगाने कह्युं के आ सर्व आपणे आगळ उपर बलिविधान करीने ग्रहण करीशुं. त्यांथी चालतां अनुक्रमे तेओ प्रतिष्ठान नजीक आवी पहोंच्या. पासेना गाममां भट्टने घेर स्थिति करी. सावलिंगाने कह्युं के हुं तारा वास्ते प्रतिष्ठानमांथी तारा पिताना नगरमां प्रवेश वास्ते उचित रथ आभूषण वगेरे लई आवुं. सावलिंगाए कह्युं के पांच दिवसमां नही आवो तो हुं काष्ठभक्षण करीश. सदयने प्रतिष्ठानमां प्रवेश करतां एक टूंटक मल्यो. अपशकुन मानी सदय पाछो फर्यो. टूंटकने खोटुं लागवाथी फरीथी पुष्प खाद्य वगेरे मांगालिक वस्तुओ स्थालमां भरीने लाव्यो. टूंटके कीधुं के हुं सिंहलना राजानो सुरसुंदर नामनो पुत्र छुं. कौतुकथी हुं ५०० हाथी तथा क्रोड सोनैया साथे आ नगर जोवा आव्यो हतो. परंतु ते सघळुं हुं द्यूतमां हारी गयो अने छेवटे द्यूतकारोए मारा हस्तनाकादिक पण कापी लीधां. ज्यारे दैव रुठे छे त्यारे ते द्यूत रमाडे छे.

दैवह रुटइ कांइ करई कीसुं चपेटा देइ ।
केइ वेसाघर पाठवइ केइ रमाडइ जुअ ॥

बन्ने जणा नगरमां पेठा. रस्तामां सूर्यप्रासादमां विवादनो कलह सांभल्यो. राजानी मानीती कामसेना नामनी वेश्याए दंताकना पुत्र सोमदत्त श्रेष्ठिए तेणीने घेर आवीने तेणी साथे संभोग कर्यो एवुं स्वप्नुं दीठुं. आथी तेणीए सोमदत्त पासे ते संभोगना नपक्षुद्रमां लेवा पोतानी अक्काने मोकली. अक्काए लांघणो करी पण सोमदत्ते पाई पण आपी नही. आनो विवाद सूर्यप्रासादमां चालतो हतो. तेनो आज त्रीजो दिवस हतो. कुमारने तेनो निर्णयकर्ता नीम्यो. कुमारे श्रेष्ठिने कीधुं के राजमान्यनो विरोध करवाथी दंतिलमंत्रीनी माफक दुःख पामे छे माटे तेणीने पैसा आप. श्रेष्ठि पासे कुमारे धन मंगाव्युं अने वेश्याने कीधुं के अर्ध धन ले. तेणीए ना पाडी. छेवटे कुमारे एक आदर्श मंगावीने तेनी सामे सघळुं धन मूक्युं. वेश्याने कीधुं के आमानुं प्रतिबिंबित धन ले, प्रत्यक्ष छे ते नही. कारण के स्वप्न अने प्रतिबिम्ब ए सरखी अवस्था छे, वेश्या विलक्षण थईने घेर गई. कामसेना आ वृत्तांत सांभळीने नृत्य करवाना मिषे सूर्यप्रासादमां आवी. कुमारने देखीने तेणी कामज्वरपीडित थई. कुमारने पोताने घेर तेडाव्यो टूंटके निषेध कर्यो. तेणे कुमारने समजाव्यो के वेश्याओ धूर्त होय छे. कारण के

आंखइ रमइ मनइ हसइ जन जाणइ एसी ।
पिण ते मारइ पुरिसनइ जं कट्ठं करवत्त ॥

कुमार वार्यो छतां वेश्याने घेर गयो. आग्रहथी पांच दिवस त्यां रह्यो, नगरमां द्यूत रमवा जतां घणुं स्वर्ण मेळव्यूं. थोडोक भाग टूंटकने सावलिंगा वास्ते आभूषणादिक खरीदवा आप्यो. बीजो बधो वेश्याने बक्षीस आप्यो. पांचमे दिवसे कुमारे रजा मांगतां वेश्याए रहेवानो घणो आग्रह करतां तेनुं उत्तरीय खेंच्युं. तेमांथी एक वेष्टन भोंय उपर पडयुं. वेश्याए ते छोडी जोतां रत्नमय कंचुक दीठो अने ते कुमार पासे माग्यो. कुमारे कंचुक आप्यो अने ते पहेरीने राजसभामां जतां मार्गमां एक श्रेष्ठिए तेणीने नीहाळीने पोतानो चोरायला कंचुक वेश्याए पहेर्यो छे ते खात्री करी लिधी. महाजन लोक आ संबंधी राजा पासे फरीयाद लईने गयूं. राजाए पूछयुं के तमारूं शुं चोरायुं छे. उत्तर मल्यो के चोरायली चीज वेश्याना उरःस्थलनुं मंडन छे. राजाए वेश्याने पूछयूं. वेश्याए कीधुं के अमारे त्यां अनेक नटविटचौरादिक आवे छे अने जो अमे आम नाम दईए तो अमारो रोजगार तूटी जाय. राजाए विचार्युं के गमे तेटलुं बहु मान करो तो पण वेश्या पोतानी थती नथी. कारण के

पासा वेसा अग्गि जल ठग ठक्कुर सोनार ।
ए दस होइ न अप्पणा मंकड बडुअ बिडाल ॥

राजाए वेश्याने शूळि उपर आरोपवानो हुकम कर्यो. कुमारने खबर थतां ते शूळिस्थाने गयो अने तलारक्षकने कीधुं के हुं चोर छुं माटे वेश्याने छोड. तलारक्षके ना मानतां कुमारे बळात्कारे वेश्याने छोडावी. तलारक्षक सामो थयो. कुमारे तेनी नासिका छेदी. राजाए सेना मोकली तेने पण कुमारे हरावी. पांचमो दिवस होवाथी एक दिवसने माटे सोमदत्तने प्रतिभू तरीके मूकीने कुमारे काष्ठभक्षण करवा तत्पर थयेली सावलिंगाने बचावी. प्रतिज्ञा प्रमाणे कुमार त्यांथी पाछो शूळिस्थाने आव्यो. राजाए बावन वीर मोकल्या तेवामां युद्ध जोवाने अनेक विद्यासिद्ध युद्धकौतुकी अभिनवनारद एक पुरुष आव्यो. तेणे कुमारनी अवस्था आगळना पांच चोरोने जईने कही. चोरो तरत मददे आव्या. बावनवीर पण हार्या. राजाए कुमारनुं नाम पूछयूं. कुमारे उत्तर आप्यो नही तेथी वेश्याने पूछयुं. वेश्याए कुमारनुं खडग रजू कर्युं. कुमारे कीधुं के ए खडग में सदयवत्स पासेथी द्यूतमां जीतीने मेळवेलुं छे. राजाए कुमारने अंतरवाने गजघटा बोलावी परंतु कुमारे सिंहनादथी नसाडी मूकी. राजा पगे लागतो सामे आव्यो. कुमार विनयथी भेटयो अने तेणे सघळो वृत्तांत कह्यो. राजाए कीधुं दैवनी गति विचित्र छे. कारण के—

उयणं भुवणक्कमणं अत्थमणं तह य एगदिवसंमि ।
सुरस्स वि तिन्नि दसा का गणणा इयरलोगस्स ॥

Aho ! Shrutgyanam

राजाए पोताना पुत्र शक्तिसिंहने मोकलीने सावलिंगा-ने तेडावी लीधी. बन्नेए केटलोक काळ प्रतिष्ठानमां रहीने आनंदमां गाळ्यो. सदयवत्से वणिक्, क्षत्रिय तथा ब्राह्मण एम त्रण मित्रो कर्या. एवामां एक वैदेशिक आव्यो कुमारे तेने पूछ्युं के तमे कांई कौतुक दीठुं ? तेणे कह्युं के तुंबवन नगरमां धनपति श्रेष्ठिनो मृत पिता घणी वखत बाळयां छतां राते सजीवन थईने घेर आवे छे. कुमार आ सांभळीने मित्रोसाथे ते नगर तरफ चाल्यो. तुंबवन नगरमां प्रवेश करतां एक ब्राह्मणनी पुत्रीने सीकोतरी वळगी हती तेने छोडावीने ब्राह्मण मित्रने ते कन्या परणावी. व्यवहारीने घेर जईने तेना पितानुं शब श्मशानमां लीधुं. सवारे बाळवूं एम नक्की करीने वाराफरती सर्वे एकेक पहोर जागता रह्या. प्रथम वणिकनी चोकीमां एक स्त्रीनो रुदनस्वर संभळायो. वणिक शबने पोतानी पीठे बांधीने स्त्रीपासे गयो. स्त्रीए कीधुं के आ मारा पतिने शूल उपर आरोप्यो छे तेने खावानेवास्ते थाल लावी छुं. पण शूलि उंची होवाथी माराथी पहोंचातुं नथी. वणिककुमारे तेणीने उंची करी. ते स्त्री उंची चढीने शूलारोपित पुरुषनुं मांसभक्षण करवा लागी. मांसनो खंड पडवाथी वणिककुमारे ते स्त्रीने पछाडी. नासतां नासतां ते स्त्रीनो कंकणवाळो हाथ वणिके कापी लीधो अने रेतमां दाटी दीधो. बीजा पहोरे ब्राह्मणकुमारे एक राक्षसने राजकुमारीने लईने आवतो दीठो. राजकुमारी साथे भोगप्रार्थना करता ते राक्षसने ब्राह्मणे पाछळ रहीने मार्यो. त्रीजे पहोरे क्षत्रियनो वारो आव्यो. ते शबने बाळवाने देवता लेवा आगळ गयो. त्यां भूतोने खीचडी पकावता दीठा. तेमनी आगळ सात पुरुषो खीचडीमां शाक तरीके खावा बांधेला हता. क्षत्रि-यकुमारे भूतोने बीवडावीने नसाड्या अने पाषाणथी खीचडीनुं भाजन भागी नाख्युं. बांधेला सात पुरुषो राजकुमारो हता. चोथे पहोरे सदयवत्स उठ्यो. आ समये शब बोल्युं के मारी साथे द्यूत रम. शबमां रहेला वेताले पोतानो बाहु प्रसारीने राजमहेलमांथी सोगटा बाजी आणी. जे हारे ते पोतानुं मस्तक मूके तेवुं पण थयुं. वेताल हारतां कुमारे तेनुं मस्तक छेद्युं अने शबने बाळी नाख्युं. प्रभाते श्रेष्ठी पासे गया अने कबुलेलुं धन तथा कन्या मागी. श्रेष्ठीए कीधुं के हुं काले बराबर खात्री करीने आपीश. कुमार राजा पासे फरीयाद लईने गयो. राजाने रात्रिनो सर्व व्यतिकर कह्यो. राजाए पुरावो माग्यो, कापेलो हस्त बतावतां ते राणीनो नीकल्यो. राजानी स्त्री सीकोतरी साबीत थई. राजकुमारो तथा राजकुमारीने पण रजु कर्या. मंत्रिए स्त्रीचरित्र उपर एक दृष्टांत कह्युं. जे व्यंतरो होय छे ते मरता नथी ते तो फक्त " ले गुण सिरि गांठडी " ना दृष्टांतमां जेम कौतक प्रियज होय छे. परंतु जे मनुष्यो राक्षसी विद्यानी उपा-सना करीने मांसलोलुपो राक्षसनी माफक आचरे छे तेओनुंज मृत्यु थाय छे. श्रेष्ठिए तोपण बीजे दिवसेज खात्री करीने धन आप्युं. वणिकपुत्रने ते श्रेष्ठीनी कुमारी परणावी अने क्षत्रियने राजकन्या परणावी. सद-यवत्स त्यांथी प्रथम कहेला निर्जनपुरमां आव्यो. त्यां राक्षसने आराधीने वीरकोट नामनुं नगर वसाव्युं. सद-यवत्सने लीलावती तथा सावलिंगाथी वनवीर तथा वीर-भानु नामना बे पुत्रो थया. सदयवत्से कालिकाचार्य चतु-र्थीनी संवत्सरी करनार पासे पोते वसावेला नगरमां वीर-जिनेश्वरनां मंदिरमां प्रतिष्ठा करावी. एवामां उज्जयिनीथी आवेला एक भाटना मुखथी सांभल्युं के उज्जयिनीने सी-माडाना राजाओए छ मासथी घेरो घालेलो छे. शत्रुने हराववाने सदयवत्सना पुत्रो गया. पाछळथी सदयवत्स पण गयो. शत्रुओने हराव्या, प्रभुवत्से सदयवत्सने राज्य-आप्युं. वीरकोटनुं राज्य कुमारोने आप्युं. कोईक समये अवंतीमां कालिकाचार्य पधार्या तेमणे सदयवत्सनो पूर्व-भव कह्यो. विंध्याचलनी पल्लीमां गोत्राक नामना नगरमां व्याघ्र राजाने धारलदेवीनी कुक्षिथी गुणसुंदर नामनो भ-द्रकपरिणामी पुत्र हतो. श्यामार्य गुरु पासे जीवदया तथा अभयदाननो उपदेश पाम्यो अने सम्यक्त्वमूल बार व्रत अंगीकार कर्या. गुणसुंदर अन्नपानथी मुनिओने प्रति-लाभतो तथा जीवदया तथा अभयदान आपवामां तत्पर रहेतो. उद्यानमां क्रीडा करतां चार पुरुषो तेने मळ्या,

Aho ! Shrutgyanam

तेओए कह्युं के अमने वेतालपुर नगरमां देवीना बलिदान माटे पकड्या हता त्यांथी अमे नासी आवेला छीए. ते नगरना लोको हिंसालु छे अने शोणितप्रिया नामनी तेमनी देवी थोडा काळनी सिद्धिने माटे महिषनो अने वधारे भारे माटे सिद्धि मनुष्यनो बलि मागे छे. गुणसुंदर त्यां गयो अने बलि आपता लोकोने नसाडीने माणसने बचाव्यो. कुमार पछी देवी समक्ष पोताना कंठे खडग धर्युं. देवीए तेनो हाथ पकड्यो. देवीने प्रतिबोधीने जीवहिंसा बंद करावी. अंते आराधनाथी मृत्यु पाम्यो. कालिकाचार्ये कह्यं के तुं जीवदया तथा अभयदानथी आ जन्ममां पराक्रम, तथा मुनिने दान आपवाथी भोग पाम्यो छुं. सदयवत्सने जातिस्मरण थयुं. सदयवत्स श्रावक धर्म आराधीने स्वर्गे गयो. आवती उत्सर्पिणीमां मोक्षे जशे. आ कथा रत्नशेषरना शिष्य हर्षवर्धनगणिये रचेली छे. रच्या संवत् आपेली नथी पण सं० १५१०–३० ना अरसामां रचायेली होवी जोइए.

डॉ० हर्मन जेकोबीनी जैन सूत्रोनी प्रस्तावना.

(प्रथम भाग- चालु.)

अनुवादक—श्रीयुत अंबालाल चतुरभाई शाहा, बी. ए.

[प्रथम भाग (अंक २) ना पृष्ठ ९७ उपर अपूर्ण रहेली प्रस्तावनानो आ अवशेष भाग छे. एकरीते आ ते प्रस्तावनानुं परिशिष्टज छे. कारण के एना मूळ लेखके एने तेज रूपे लख्युं छे. आमां आचारांग अने कल्पसूत्र एम बे जैन सूत्रोनी रचनाशैली विगेरेनुं वर्णन करवामां आव्युं छे.—संपादक.]

हवे आ पुस्तकमां जे बे सूत्रोनुं भाषांतर करवामां आवेलुं छे तेना विषयमां बे शब्दो लखवा जेटलुं मारुं कर्तव्य बाकी रह्युं छे.

प्रथम सूत्रनुं नाम आचारांग सूत्र छे जे केटलीक वखते सामायिकना नामे ओळखाय छे. ए सूत्र ११ अंगो पैकीनुं प्रथम अंग छे. जे चार अनुयोगो अर्थात् विषयोमां सर्व सिद्धान्तो विभक्त थएला छे तेमांना चोथा अनुयोगना विषयभूत गणाता आचारनुं आ सूत्रमां वर्णन करेलुं छे. चार अनुयोगोनां नाम आ प्रमाणे:—धर्मकथानुयोग, गणितानुयोग, द्रव्यानुयोग अने चरणकरणानुयोग. आ सूत्रना बे श्रुतस्कन्धो छे जे परस्पर भाषाशैली तथा वर्णनपद्धतिमां एक बीजाथी घणाज भिन्न पडे छे. बीजा श्रुतस्कन्धना पेटा–विभागोने चूलाओ अर्थात परिशिष्टो कहेला छे. आ उपरथी प्रथम श्रुतस्कन्ध ज वास्तविक प्राचीन सूत्र होय तेम जणाय छे. आवोज मत प्राचीन समयमां पण प्रचलित हतो, तेनो पुरावो आ सूत्रनी विद्यमान एवी सौथी प्राचीन टीकामां करेली सूचना उपरथी स्पष्ट मळी आवे छे. सामान्य रीवाज प्रमाणे दरेक ग्रंथमां आदि, मध्य अने अंत एम त्रण प्रकारनां मंगल–कथनो मानवामां आवे छे, ते अनुसारे शीलांकाचार्ये पोतानी टीकामां आ सूत्रना पण त्रण मंगलनो उल्लेख करेलो छे. तेमां आदि मंगल तरीके तो प्रथम श्रुतस्कन्धना प्रथम अध्ययनना पहेला उद्देशकना प्रारंभिक वाक्यने, मध्य मंगल तरीके पांचमां अध्ययनना पांचमां उद्देशकना प्रथम वाक्यने अने अंत मंगल सोळमी

१ आ टीका कांई पहेलीज टीका छे एम नथी. कारण के शीलांगाचार्ये पण पोतानी टीकामां गंधहस्तिनी टीकानो उल्लेख करेलो छे

Aho ! Shrutgyanam

गाथाना उत्तरार्द्धने टाक्युं छे. आ उपरथी एम स्पष्ट समजाय छे के टीकाकार आचारांग सूत्रनी समाप्ति प्रथम श्रुतस्कन्धना आठमा अध्ययनना चोथा उद्देशकनी सोळमी गाथा—के जे ए श्रुतस्कन्धनी उपान्त्य गाथा छे—साथे थएली माने छे. आथी ए सिद्ध थाय छे के आचारांग सूत्रनो सौथी प्राचीन भाग ते तेनो प्रथम श्रुतस्कन्ध छे. बाकीनो भाग पाछळथी उमेरवामां आव्यो छे. आ (प्रथम) श्रुतस्कन्ध पोताना विषयमां परिपूर्ण छे. तेमां श्रद्धाशील आत्माओमाटे मोक्षपर्यंतना मार्गनुं गूढ भाषामां वर्णन करेलुं छे. एनुं अंतिम अध्ययन के जे तीर्थंकरे सहेला कीर्तिकर परीषहोनुं लोकार्षक वर्णन आपतुं एक विजयगीत जेवुं छे, ते प्रायः पाछळना समयमां उमेरवामां आवेलुं छे; तो पण जे स्वरूपमां ते अत्यारे उपलब्ध थाय छे ते रूप एक साचा योगीजीवननुं उच्च आदर्श दर्शक होई घणुं महत्त्वनुं छे. आ सूत्रनो मोटो भाग एक अत्यंत भ्रांत एवा गद्यरुपमां लखाएलो छे. तेमां घणा ठेकाणे वाक्यांशो नजरे पडे छे तथा केटलांक स्थळोए तो एवां पण वाक्यो मळी आवे छे जेनो कोई अर्थ बेशी शकतो नथी. आ शैली जोई आपणने ब्राह्मणोना सूत्र—ग्रंथोनुं स्मरण थई आवे छे खरूं; परंतु ए बेमां वच्चे एक मोटो भेद ए छे के ब्राह्मण ग्रंथोमां एकाकी जणातां सूत्रो, ते विचारोनी तार्किक श्रृंखलाना आवश्यक अंकोडा— अवयवो रूप छे; पण आ सूत्रमां नजरे पडता असंबद्ध वाक्यो या वाक्यांशो कोई एक मुख्य विचारना स्पष्टीकरण करवा अर्थे एक बीजा साथे संबंध धरावता होय तेम जणातुं नथी. तेने वांची जवाथी आपणने ते कोई तर्क संयुक्त चर्चानो बोध करावनार कोई संगत शास्त्र होय एम नथी जणातुं; परंतु ते वखतमां विद्यमान केटलाक पवित्र ग्रंथोमांना अवतरणोनो बनेलो एक उपदेशक वचनसंग्रह होय तेम जणाय छे. मारा आ अनुमाननी सत्यता, ए सूत्रना गद्य भागमां अहीं तहीं वेराएली जे गाथाओ अथवा गाथांशो मळी आवे छे, तेनाथी सिद्ध थाय छे. कारण के आमाना अनेक गाथांशो ते सूत्रकृतांग, उत्तराध्ययन अने दशवैकालिक सूत्रोमां जडी आवती गाथाओ अथवा गाथाना पादोने घणा मळता आवे छे. आ उपरथी ए बधा पादो या पद्योने ते वखतमां प्रमाणभूत गणाता ग्रंथोना अवतरणो रूप मानवां जोईए. आज निर्णय केटलाक गद्य वाक्योने—अने तेमां खास करीने जे जे वाक्यो स्वयं अपर्याप्त छे तेमने, पण लागु पाडवो जोईए. आ अवतरणोनी पण वधारे समजुती आपवा माटे अगर तो तेमनी अर्थपूर्ति करवा माटे बीजा पण तेवां वाक्यो अगर पद्यो उमेरेलां छे, जेमांना केटलाक नमुना नीचे प्रमाणे छेः—१, ४, १, ३, मा आवेल 'अहो य राओ गतमाणे धीरे' आ त्रिष्टुभ छंदनो एक पादमात्र होई स्पष्टरीते अवतरण जणाय छे. एनी पछी आवेल 'सया आगयपन्नाणे' ए वाक्यांश, ए अवतरणनुं अर्थ बोधन करे छे; जेम के 'अहो य राओ=सया' अने 'गतमाणे धीरे=आगयपन्नाणे' आ पछीनो वाक्यांश 'पमत्ते बहिया पास' छे. जे संभवितरीते एक श्लोकनो पाद छे. आ पछीनुं वाक्य 'अप्पमत्ते सया परक्कमेज्जा' ए छे; अने ते उपरना वाक्यनुं नैतिक तारण छे. आ उपरथी आनो अनुवाद आपणे आ प्रमाणे करीएः—'रातने दिवस प्रयत्न करतो अने धीर' अर्थात् सदा तत्पर ज्ञानवाळा 'जो प्रामादिओ बहार उभा रहे छे' (तेटला माटे) अप्रमत्तरीते सदा प्रवृत्त थवुं जोईए.' टीकाकार अवतरण अने तेना टिप्पणने जुदा पाडता नथी परंतु ते तो आ बधा पदोने एक वाक्यना अवयवो समजे छे, अने तेनो अर्थ मारा अनुवादना मूळमां (पृ. ३७) जेम लखेलो छे तेज प्रमाणे ते आपे छे.

अनी माफक बीजां पण घणां ठेकाणे, शीलांके पोतानी टीकामां जेवो अर्थ कर्यो छे तेवो ज अर्थ में मारा अनुवादमां आपवो उचित धार्यो छे. कारणके केटलीक वखत अवतरण अने ते पछीना मूळ ग्रंथ—भागने अलग तारवी काढवानुं काम अत्यंत अशक्य होय तेम जणायुं छे. तेथी सिद्ध करी बतावी शकाय तेवा पद्यांशोने छोडी

Aho ! Shrutgyanam

बाकीनां अवतरणोने अलग पाडवानुं साहस में स्वीकार्युं नथी. आ कारणथी मारे उपरोल्लिखित एक श्लोकना पाद जेवा अन्य पादोने, तेमना तरफ लक्ष्य खेंच्या सिवाय जता करवा पडया छे. वात ए छे के प्रत्येक गद्यात्मक ग्रंथमां आवा श्लोक-पादो नजरे पडयां करे छे के जेमने पद्यरुपे गणावाना आशयथी नथी ज उध्दृत करवामां आव्या ! आ कारणथी आपणा आ ग्रंथमां पण तेमांना, घणा खरा शंकास्पद होवा छतां, क्वचितज श्लोकना पादो जेवा देखाय ए स्वाभाविक छे. आ करतां पण मोटामां मोटी मुस्केली तो गद्यात्मक अवतरणो शोधी–तारवी काढवामां पडे छे. आवी जातनां वास्तविक अवतरणो पण आ प्रमाणे मेळवेलां छेः–१, ३, १, १ मां आवेल ' सुत्ता अमुणी, मुणिणो सततं जागरंति ' आ वाक्योनी भाषा, अन्य गद्यात्मक भागथी स्पष्ट भिन्न पडे छे. छतां पण आ अवतरणो अने मूळ ग्रंथ–भाग वच्चे लीटी दोरी बतावववानुं काम अशक्य छे. उपर जे कांई कहेवामां आव्युं छे ते उपर थी ए स्पष्ट समजी शकाशे के प्राथमिक अनुवाद समये आचारांगना प्रथम श्रुतस्कंध जेवा ग्रंथने योग्य न्याय आपवानुं काम केटलुं मुस्केली भर्युं छे. तेथी घणांक स्थळोमां तो, मूळ सूत्रनो अर्थ,जेवो टीकाकारे आपेलो छे तेवोज में आपेलो छे. एटला माटे टीकाकारोना संप्रदायद्वारा संरक्षित अर्थावबोध करतां आगळ वधी मूळ सूत्रकारना असली आशयने अनुसरता अर्थनुं उद्घाटन करवानुं कार्य हुं भावि संशोधको उपर छोडी दउं छुं.

पूर्वकालमां प्रथम श्रुतस्कंधमां हालनां आठ अध्ययनो उपरांत एक महापरिण्णा नामनुं नवमुं अध्ययन हतुं, जे अत्यारे नष्ट थएलुं छे. समवायांग, नन्दी, आवश्यक–निर्युक्ति अने विधिप्रभामांना उल्लेखो अनुसार ते नवमुं हतुं; परंतु आचारांगसूत्रनी निर्युक्ति के जेमां आचारांगसूत्रना प्रत्येक अध्ययन तथा उद्देशकमां आवेला विषयोनी व्यवस्थित यादी आपेली छे, तेना, तथा शीलांकादि टीकाकारोना मतानुसार ते अध्ययन आंठमुं हतुं[२]. तेमां सात उद्देशको हता अने भिक्षु जीवनना संबंधमां केटलुंक विस्तृत वर्णन आपेलुं हतुं. कदाच, आंज विषयनी विस्तृत हकीकत पुनः बीजा श्रुतस्कंधमां आवती होवाथी ते महापरिन्ना वधारे पडतुं थवाने लीधे नष्ट थयुं होय तो ते संभवित छे.

बीजा श्रुतस्कंधमां चार चूलओ एटले परिशिष्ट रूप चार विभागो छे. असलमां तेनी पांच चूलाओ गणाती हती परंतु निसीहज्झयण नामनी पांचमी चूला हालमां एक जुदी स्वतंत्र सूत्र तरीके मनाय छे. पहेली अने बीजी चूलामां आचारविषयक नियमो आपेला छे. ते बेनी रचनाशैली प्रथम श्रुतस्कंधथी घणीज जुदी जातनी छे. ते तद्दन कंटाळा भरेली छे एटलुंज नही परंतु सूत्रने पण योग्य नथी. आ भागनो अनुवाद करवामां तेमां आवता अनेकानेक पारिभाषिक शब्दोने लीधे घणी मुस्केली पडी छे. आमांना केटलाक शब्दो तो एवा छे के जे टीकाकारे करेला स्पष्टीकरण छतां पण समजी शकाता नथी. बीजा केटलाक शब्दोनुं टीकाकार मात्र संस्कृत रूपज आपेलुं छे अने अर्वाचीन जैनोने ते समजवामां व्याख्यानी जरूर न होय तेवा देखाय छे. पण आवा शब्दोना संबंधमां अमारी स्थिति जुदी ज छे. कारण के आ शब्दोने ज्यारे कोई पण यति सहज समजावी शके छे त्यारे ते माटे अमारे खास कल्पनाथी काम लेवुं पडे छे. एटला माटे हुं आशा राखुं छुं के भारतवर्षीय विद्वानो जेओ यतियो पासेथी आवी बाबतोना सहेलाईथी खुलासाओ मेळवी शके छे; तेओ आ विषयमां पोतानुं लक्ष्य आपशे अने जे केटलाक पारिभाषिक शब्दोना अर्थो युरोपीय विद्वान् जैन ग्रंथोनी सहायताथी करी शकतो नथी तेना तेओ यथार्थ अने प्रमाणभूत खुलासा मेळवशे.

त्रीजी अने चोथी चूला, ते परिशिष्ट पर्वना नवमा सर्गमां जणाव्या प्रमाणे, पूर्व विदेहनामना एक पौराणिक भूखंडमां वसता एवा सीमंधर स्वामिए स्थूलिभद्रनी मोटी बहेनने कही हती. आ परंपरागत कथन घणुंज विलक्षण मालम पडे छे, के जे आचारांग सूत्रना छेल्ला बे प्रकरणोने, जेनी रचनाशैलीना समयना विषयमां आपणा शब्दोमां

२ जुओ कलकत्ता आवृत्ति. १, पृ. ४३५.

कहिए तो, तेवाज विषयना वर्णन करवावाळा कल्पसूत्रना रचना समयना समकालीन ठरावी दे छ.

त्रीजी चूला ते खरेखर घणीज महत्त्वनी छे. अने आनुं कारण ते तेमां महावीरना जीवन चरित्र माटे मळी आवती हकिकतो छे के—जे हकिकतो ने आधारे कल्पसूत्रमांनुं महावीर चरित्र लखायुं छे. आचारांग सूत्रना घणा गद्य भागो बहुज थोडा फेरफार साथे कल्पसूत्रमां नजरे पडे छे. तेमां, ए उपरांत ऐतिहासिक दृष्टिए महत्त्व धरावती एवी कोई बाबतनो भाग्येज कोई उमेरो थयेलो जोवामां आवे छे. जे मात्र उमेरवामां आव्युं छे ते एक साधारण बनेलुं, तेमज नवी परिस्थितिने अनुरूप थएला जैन ग्रंथोमां पण अनेक स्थळे जोवामां आवतुं, तेवुं वर्णन मात्र छे. आ गद्य भागो उपरांत आचारांग सूत्रमां एवी केटलीक गाथाओ आवेली छे जेनो कल्पसूत्रमां अभाव छे. आ गाथाओने प्रथम श्रुतस्कंधना आठमां अध्ययनमां आवेली गाथाओ जोडे जो आपणे सरखावीए छीए तो आचारांग सूत्रना बे श्रुतस्कंधो वच्चे केटलो मोटो तफावत रहेलो छे ते आपणे सहेजे समजी शकीए छीए. आ बन्ने श्रुतस्कंधोना चर्चित विषयना अंगे काइज भेद नथी, तेमज वर्णन पण बन्नेमां आर्या गाथामां करवामां आवेलुं छे. परंतु भाषाशैली तथा वृत्तप्रयोगने अंगे दृष्टिगोचर थतो भेद एटलो मोटो जणाय छे के तेना कारण तरीके ते बन्ने श्रुतस्कंधोनी रचना वच्चे एक मोटुं कालान्तर मानवुं ज पडे छे

बीजी चूलाना उत्तरार्धमां पंच महाव्रत तथा तेना पच्चीश अवांतर भेदोनुंज वर्णन आपेलुं होवाथी तेना संबंधमां कांई विवेचन करवानी जरुर नथी. तेमज चोथी चूलानी बार गाथाओना संबंधमां पण एटलुंज कहेवा योग्य छे के ते संभवित रीते प्राचीन छे अने तेने आ स्थळे मुकवानुं कारण पण एटलुंज छे के तेने माटे आनाथी बीजुं अधिक सुंदर स्थान मळयुं नहीं होय.

आचारांग सूत्रनो मारो आ अनुवाद, में, पालिटेक्स्ट सोसायटीमां प्रकट थयेली मारी पोतानी आवृत्तिने आधारे करेलो छे. ते उपरांत में आचारांग सूत्रनी कलकत्तानी आवृत्तिमां प्रकाशित थएली टीकाओनो उपयोग करेलो छे. जेमनां नामो नीचे प्रमाणे छे:—

१ शीलांक के जेनुं बीजुं नाम तत्त्वादित्य छे; तेनी टीका: आ टीकानी रचना शक संवत् ७९८ अर्थात् ई० स० ८७६ मां वाहरी साधुनी सहायताथी समाप्त थई हती.

२ बृहत् खरतर गच्छना आचार्य नामे जिनहंस सूरिनी दीपिका आ दीपिका: ते शब्दे शब्द टीका उपरथी उपजावी काढेली छे. जो के एमां लख्युं छे के ते शीलांकनी टीकानो संक्षेप मात्र छे. परंतु आ संक्षेप एवा प्रकारनो थयो छे के तेमां निर्युक्तिनी गाथाओ उपरनी शीलांकनी टीप्पणी सर्वथा उडावी देवामां आवी छे—के जे गाथाओने शीलांक प्रत्येक अध्ययन तथा उद्देशकनी पहेलां पोताना उपोद्घात रुपे मूके छे.

३ पार्श्वचन्द्र कृत बालावबोध अथवा गुजराती भाष्य: बीजा श्रुतस्कंधना जे केटलाक भागो प्राचीन टीकाकारो द्वारा समजाववामां नथी आव्या, तेमना विषयमां में आज भाष्यनी मदद लीधेली छे. आ भाष्य सामान्य रीते तो प्राचीन टीकाकारोना खुलासानेज अनुसरे छे छतां पण तेनो वधारे संबंध दीपिका साथे होय तेम जणाय छे.

कल्प सूत्रना विषयमां में लंबाणथी, ते ग्रंथनी मारी आवृत्तिनी प्रस्तावनामां कहेलुंज छे. तेथी ते विषयनी विशेष माहीती मेळववा माटे वाचकने ते पुस्तक जोई लेवा सूचवुं छुं. तेना प्रकाशन समय पछी प्रो० वेबरे पोताना "जैनोना पवित्र पुस्तको" उपरना निबंधमां आ विषयनी चर्चा करेली छे अने तेमां तेमणे मारी केटलीक भूलो पण सुधारी छे. तेमणे एवो निश्चय प्रगट कर्यो छे के आखुं कल्पसूत्र, दशाश्रुतस्कंध जे चोथुं छेद सूत्र मनाय छे तेना आठमा अध्ययन तरीके लेवानुं छे. मारो आ अभिप्राय साथे प्रो० वेबर एकमत धरावे छे के "समाचारी" एटले यतिओना आचार—

नियमो ते भद्रबाहुनी कृति मानी शकाय * तथा स्थविरावली ते संभवित रीते सिद्धान्तना संपादक देवर्धिगणीनो ज करेलो उमेरो कही शकाय. आ उपरांत प्रो. वेबर जे सूचवे छे के महावीरनुं चरित्र पण देवर्धिगणिनुं ज रचेलुं छे ते वात मने मान्य थई शक्ती नथी. कारण के आ ग्रंथ जो आटला बधा प्रसिद्ध पुरुषनो रचेलो होय तो पछी संप्रदाय आ बाबतने बिलकूल विस्मृत थवा दे ते तद्दन अशक्य छे.

स्थवीरावलीना संबंधमां नोखी बाबत छे. कारण के तेने चार अगर पांच भिन्न भिन्न यादीओ उपरथी संकलित करीने ग्रन्थना संपादके जिनचरित्रोनी पाछळ मात्र मूकी दीधेली छे. जिनचरित्रोनी भाषाशैली उपरथी आपणे तर्क करी नथी शकता के तेनो कयो भाग समाचारीथी पछीनो हशे; कारण के विषयनी भिन्नताने लईने तेवी जातनो शैलीभेद तो आचारंग सूत्रनी पहेली बे चूला अने त्रीजी चूलामां पण नजरे पडे छे ज. तेमज जिनचरित्रोनी प्राचीनताना विरुद्धमां दलील रूपे आपणे वर्ण्य वस्तुना अल्पत्वने पण बतावी शकीए नहीं. कारण के आटली हकिकतो आपवानो हेतु एक जीवन चरित्र लखवानो न होई मात्र भक्ति-मार्ग पण होई शके. आम कहेवानुं कारण ए छे के देरासरोमां तीर्थंकरोनी मूर्तिनी पूजा करती वखते जे स्तुति अगर स्तवना बोलवामां आवे छे, तेवी एक[1] स्तवनामां (चैत्य वंदनमां) सर्वे कल्याणकोनुं वर्णन करेलुं छे. जिनचरित्रोनो मुख्य संबंध पण आ कल्याणकोनी साथेज होय एम स्पष्ट जणाय छे. अने आ बाबत एम साबीत करे छे के तीर्थंकरोनी भक्तिमां कल्याणकोनुं वर्णन करवानी प्रथा घणीज प्राचीन छे. आम जो न मानवामां आवे तो एनो निर्णय करवो अशक्य थई पडशे के कल्पसूत्रमां वर्णवेला आ शुष्क विषयनुं आटलुं लांबु वर्णन करवानुं लेखकने केम मन थयुं हशे.

कल्पसूत्रना भिन्न भिन्न भागो गमे ते समयमां रचाया होय परंतु एटलुं तो चोक्कस छे के आ ग्रंथ एक हजार करतां पण वधारे वर्षोथी जैनोमां अत्यंत सन्मान पात्र बनेलो छे. आटला माटे पूर्वना पवित्र पुस्तकोना अनुवाद-संग्रहमां आ ग्रंथने स्थान मळवु उचित छे. एना संबंधमां मारी इच्छा तो एटलीज होय के जे ग्रंथावलीमां ते प्रकाशित थवानो छे ते ग्रंथावलीने योग्य मारो अनुवाद पण सुंदर बने. परंतु आ कर्तव्यमां केटलेक अंशे जोहुं निष्फळ निवड्यो जणाउं तो वाचको आ बाबत ध्यानमां लेशे के गमे तेटला तेने खेडवाने प्रयत्नो थया छतां पण जे साहित्य हजी सुधी आपणे माटे एक अक्षत भूमि तुल्य ज छे तेवा (साहित्य) ना ग्रंथोने परकीय भाषामां अनुवाद करवानो मारो आ प्रयत्न छे, अने तेथी क्षमा मळशे एवी मने आशा छे.

समाप्त.

* "समाचारी" महावीर पछी छ पेढीओ वीत्यां बाद रचाई हशे ते बाबत ३-८ द्वारा स्पष्ट जणाय छे. पण ते आनाथी पण कदाच अर्वाचीन होय तो ते पण असंभवित नथी. कारण के ६ मां गणधरोना शिष्योनी तुरत पछी आवनार स्थवीरोने, 'आ समयना श्रमण निर्ग्रन्थोथी विरुद्ध अगर विलक्षणता वाळा जणावेला छे. छतां पण आ ग्रन्थ—भाग वधारे अर्वाचीन होय तेम तो नज मनाय. कारण के २८—३० मां जणाय छे के जेम पाछळना समयमां बनेलुं हतुं तेम जिनकल्पना व्यवहार त्यां सुधी लुप्त थयो न होतो.

१ 'चतुर्विंशति तीर्थंकराणां पूजा' नामनी एक डेक्कन कोलेजनी हस्तलिखित अर्वाचीन प्रतिमां पूजा विधिनुं वर्णन तेमज आवां केटलांक स्तोत्रो या चैत्य वंदनो पण आप्यां छे.

A

COMPARATIVE STUDY

OF

उत्तराध्ययनसूत्र

With

PALI CANONICAL BOOKS.

By Prof. P. V. BAPAT, M. A.; Fergusson College; Poona.

It is now admitted by all that Mahavir or Vardhaman who is commonly colled Nigantha Nataputta in Bhddhistic works was a contemporary of Gotama Buddha. In Pali Literature of the Buddhist we actually get references to six philosophical teachers who were contemporaries of Gotama, of whom Nigantha Nataputta is one. (see Digh 2, 29-30). It is no wonder then that they should be influenced by one anothers' philosophical conceptions, religious doctrines and ideals of conduct as well as by the manner and method of their expression. In this short essay we mean to trace out such similarities of thought and expression in Prakrit books of Jainas and Buddhist. As for the former we shall restrict ourselves to the first Mulsutra of the Jainas—the Uttaradhyayana.

We shall consider these parallelisms from two points of view--that of matter and manner.

I. As for the first we may say that there are striking similarities in the Jain and Buddhistic descriptions of a monk's behaviour, his attitude towards woman conception of a Brahmin importance of self-control, and their expression of several common thoughts We shall illustrate one by one.—

(i)A MONK'S GENERAL CONDUCT.

He should be patient and should return no evil words even when he is spoken in harsh words--

अक्कोसिज्ज परो भिक्खुं न तेसिं पडिसंजले ।
सरिसो होई बालाणं तम्हा भिक्खू न संजले ॥

(उत्तरा० II, 24)

सोचाणं फरुसा भासा दारुणा गामकंटया ।
तुसिणीओ उवेहेज्जा न ताओ मणसीकरे ॥

(ibid II, 25)

हओ न संजले भिक्खु मणं पि न पओसए ।
तितिक्खं परमं नच्चा भिक्खुधम्मं विचिंतए ॥
समणं संजयं दन्तं हणेज्जा को वि कत्थइ ।
नत्थि जीवस्स नासोत्ति एवं पेहिज्ज संजए ॥

(ibid II, 26-27)

We find a similar idea expressed in the following—

पठवीसमो नो विरुज्झति इन्दखीलूपमो तादि सुब्बतो ।
रहदोऽव अपेतकद्दमो संसारा न भवन्ति तादिनो ॥

(धम्मपद 95)

खन्ती परमं तपो तितिक्खा निब्बाणं परमं वदन्ति बुद्धा ।

Aho ! Shrutgyanam

न हि पव्वजितो परूपघाती समणो होति परं विहेठयन्तो॥

(ध० 184)

सुत्वा रुसितो बहुं वाचं समणानं पुथुवचनानं ।

फरुसेन ने न पटिवज्जा । न हि सन्तो पटिसेनिकरोति ॥

(सु० नि० 932)

न ब्राह्मणस्स पहरेय्य नास्स मुञ्चेथ ब्राह्मणो ।

धी ब्राह्मणस्स हन्तारं ततो धी यस्य मुञ्चति ॥

(ध० 389)

Here in this stanza the word ब्राह्मण is not used in the sense of one who is so simply by birth but one who is the best man and deserves honour and respect at the hands of all.

It is said that a monk should not wish for honour and respect.

णो सक्किअमिच्छई न पूअं (उत्तरा० XV, 5)

अच्चणं रयणं चेव वंदणं पूअणं तहा ।

इड्ढीसक्कारसम्माणं मणसा वि न पत्थए ॥

(उ० XXXV, 18)

असतं भावनमिच्छेय्य पुरक्खारं च भिक्खुसु ।

आवासेसु च इस्सरियं पूजा परकुलेसु च ॥

ममेव कतमञ्ञन्तु गिही पव्वजिता उभो ।

ममेव अतिवसा अस्सु किच्चाकिच्चेसु किस्मि च ॥

इति बालस्स संकप्पो इच्छा मानो च वड्ढति

(ध० 73-74)

We are told that a monk should not be hampered by any of his possessions that may be with him but he should be free to move like a bird.

पक्खी पत्तं समादाय निरविक्खो परिव्वए ।

(उ० VI 16)

सेय्यथा पि महाराज पक्खी सकुणो येन येनेव डेति सपत्तभारो व डेति, एवमेव खो महाराज भिक्खु सन्तुट्ठो होति कायपरिहारकेन चीवरेन कुच्छिपरिहारिकेन पिण्डपातेन, सो येन येनेव पक्कमति समादायेव पक्कमति ।

(Digh. II, 66)

A monk is not allowed to practise in medicine or maintain himself by interpreting the signs of body, sounds or the earth and in air, dreams, cries of birds and beasts or in any way enjoying himself in love arts.

तेगिच्छं नाभिणंदिज्जा (उत्तरा० II 33)

जे लक्खणं च सुविणं च अंगविज्जं च पउंजंति ।

न हु ते समणा वुच्चन्ति एवं आयरिएहिं अक्खायं ॥

(उ० VIII, 13)

छिन्नं सरं भोममन्तलिक्खं सुविणं लक्खणदण्डवत्

अंगविआरं सरस्स विजयं जो विज्जाहिं न जीवइ स

(उ० XV, 1

जो लक्खणं सुविण पउंजमाणे निमित्तकोऊहलसंपगाढे ।

कुहेडविज्जासवदारजीवी न गच्छई सरणं तम्मि काले ॥

(उ० XX, 45)

अथब्बणं सुपिनं लक्खणं । नो विदहे अथो पि नक्खत्तं।

विरुतं च गब्भकरणं । तिकिच्छं मामको न सेवेय्य ।

(सु० नि० 927)

यथा वा पनेके भोन्तो समणब्राह्मणा......तिरच्छानविज्जाय मिच्छाजीवेन जीविकं कप्पेन्ति सेय्यथीदं...एवं विपाको चन्दग्गाहो भविस्सति, एवं विपाको सुरियग्गाहो भविस्सति,......एवं विपाको उक्कापातो भविस्सति, एवं विपाको दिसादाहो भविस्सति, एवं विपाको भूमिचालो भविस्सति......सुभिक्खं भविस्सति, दुब्भिक्ख भविस्सति ।

or others such as—आवाहनं, विवाहनं,...सुभगकरणं, दुब्भगकरणं, विरुद्धगब्भकरणं, जिव्हानित्थद्धनं......आदासपञ्हं, कुमारीपञ्हं सन्तिकम्मं...वत्थुकम्मं.........। (Digh II, 59-62.)

A monk is to be content whether he gets or not his food—

लद्धे पिण्डे अलद्धे वा नाणुतप्पिज्ज संजए (उ० II, 30)

अलत्थं यदिदं साधु नालत्थं कुसलामिति ।

उभयेनेव सो तादि रुक्खंऽव उपनिवत्तति ॥

(सु० नि० 712)

He is not allowed to store food—

सन्निहिं च न कुव्विज्जा लेवमायाइ संजए (उ० VI, 16)

Aho ! Shrutgyanam

यथा वा पनेके भोन्तो समणब्राह्मणा...सन्निधिकारपरिभोगं अनुयुत्ता विहरन्ति—सेय्यथीदं अन्नसन्निधि पानसन्निधिं......आमिससन्निधिं इति वा, इति एवरूपा सन्निधिकारपरिभोगा पटिविरतो होति, इदं पिस्स होति सीलस्मिं ।

He should take recourse to the borders forests—

पंतं सयणासणं भइत्ता । (उ॰ XV, 4)

पन्तं च सयनासनं ... एतं बुद्धान सासनं ।

(ध॰ 185).

(ii) A MONK'S ATTITUDE TOWARDS WOMAN.

He is always to avord the company of women considering them to be dangerous—

संगो एस मणुस्साणं जाओ लोगंमि इत्थीओ ।

जस्स एआ परिण्णाया सुकडं तस्सं सामण्णं ।

(उ॰ II, 16)

एअमादाय मेहावी पंकभूआउ इत्थीओ ।

नो ताहि विणिहणेज्जा चरेज्जत्तगवेसए ॥

(उ॰ II, 17)

Ananda the favourite disciple of Gotama Buddha asked the Buddha while he was on his death-bed how all monks should be have towards women the answer was. "You should shun their gaze" If that is not possible "you must watch yourself."

"कथं मयं भन्ते मातुगामे पटिपज्जामाति । अदस्सनं आनन्दाति । दस्सने भगवा सति कथं पटिपज्जितब्बं । अनालापो आनंदाति । आलपन्तेन भन्ते कथं पटिपाज्जितब्बंति । सति आनन्द उपट्ठापेतब्बा ति ।

(Digh 16, 5·9)

Also we find the following—

नो निग्गंथे इत्थीणं कुड्डंतरंसि वा दूसंतरंसि वा भित्तिंतरंसि वा कुइअसद्दं वा, रुइअसद्दं वा, गीअसद्दं वा, हसिअसद्दं वा, थणिअसद्दं वा, कंदिअसद्दं वा, विलविअसद्दं वा सुणित्ता हवई से निग्गंथे । तं कहमिति चे ? आयरिआह—निग्गंथस्स खलु इत्थीणं कुड्डंतरंसि वा जाव विलविअसद्दं वा सुणमाणस्स बंभयारिस्स बंभचेरे संका वा कंखा वा...जाव...केवलिपण्णत्ताओ वा धम्माओ भंसिज्जा तम्हा खलु निग्गंथे नो इत्थीणं कुड्डंतरंसि...जाव सुणमाणो विहरेज्जा

(उ॰ XVI, 8)

अपि च खो मातुगामस्स सद्दं सुणाति, तिरोकुड्डा वा तिरोपाकारा वा हसन्तिया वा भणन्तिया वा गायन्तिया वा रोदन्तिया वा ... सो तदस्सादेति, तन्निकामेति तेन च वित्तिं आपज्जति, इदं पि खो ब्राह्मण ब्रह्मचरियस्स खण्डं पि छिद्दं पि वा सबलं पि कम्मासं पि; अयं वुच्चति ब्राह्मणो अपरिसुद्धं ब्रह्मचरियं चरति संयुत्तो मेथुनेन संयोगेन न परिमुच्चति जातिया जरामरणेन सोकेहि परिदेवेहि दुक्खेहि ... न परिमुच्चति दुक्खस्माति वदामि ।

(Ang. VII. 5th Vagga.)

(iii) That a Brahmin is made not by mere birth but by his actions—

कम्मुणा बंभणो होइ, कम्मुणा होइ खत्तिओ ।

कम्मुणा वइसो होइ सुद्दो हवइ कम्मुणा ॥

(उ॰ XXV, 32)

न जच्चा वसलो होति न जच्चा होति ब्राह्मणो ।

कम्मना वसलो होति कम्मना होति ब्राह्मणो ॥

(सु॰ नि॰ 136 cf. 650-651)

न चाहं ब्राह्मणं ब्रूमि योनिजं मत्तिसंभवं । (ध॰ 396)

If he has got mental defilements or if he is a man of bad conduct then he is no 'Brahmin' and will not be saved from perdition on account of his birth in a Brahmin family.

कोहो अ माणो अ वहो अ जेसिं

मोसं अदत्तं च परिग्गहो अ ।

ते माहणा जातिविज्जाविहिणा

ताइं तु खित्ताइं सुपावगाइं ॥ (उ॰ XII, 14)

Aho ! Shrutgyanam

तेच पापेसु कम्मेसु अभिण्हमुपदिस्सरे ।
दिट्ठेऽव धम्मे गारय्हा संपरायं च दुग्गतिं ।
न ते जाति निवारेति दुग्गच्चा गरहाय वा (सु० नि० 141)

If he is free from all lusts and passions then he is a Brahamin

जहा पउमंजले जायं नोवलिप्पइ वारिणा ।
एवं अलित्तं कामेहिं तं वयं ब्रूम माहणं ।।
(उ० XV, 25)

वारि पोक्खरपत्तेव आरग्गेरिव सासपो ।
यो न लिप्पति कामेसु तमहं ब्रूमि ब्राह्मणं ।।
(ध० 141)

(iv) IMPORTANCE OF SELF-CONTROL.

To subdue oneself is far better than conquering others ; one is the architect of one's own fortune Therefore, one should always make supreme efforts to discipline oneself as self-control is a very difficult thing.

जो सहस्सं सहस्सेण संगामे दुज्जए जिणे ।
एगं जिणिज्ज अप्पाणं एस मे परमो जओ ।।
(उ० IX, 34)

यो सहस्सं सहस्सेन संगामे मानुसे जिने ।
एकं च जेय्यमत्तानं स वे संगामजुत्तमो ।।
(ध० 103)

अप्पा चेव दमेअव्वो अप्पा हि खलु दुद्दमो ।
अप्पा दंतो सुही होइ अस्सिं लोए परम्हि च ।।
(उ० I, 15)

अप्पणा अणाहो सन्तो कहं मे नाहो भविस्ससि ।
(उ० XX, 12)

अत्तानं चे तथा कयिरा यथञ्ञमनुसासति ।
सुदन्तो वत दम्मेथ अत्ता हि किर दुद्दमो ।।
अत्ताहि अत्तनो नाथो कोहि नाथो परो सिया ।
अत्तनाऽव सुदन्तेन नाथं लभति दुल्लभं ।।
(ध० 159–160)

अप्पा कत्ता विकत्ता य दुहाण य सुहाण य ।
अप्पा मित्तममित्तं च दुपट्ठिअ सुपट्ठिओ ।।
(उ० XX, 37)

न तं अरी कंठछित्ता करोति जं से करे अप्पणिआ दुरप्पा।
(उ० XX, 48)

The same idea is expressed in the following—

दिसो दिसं यं तं कयिरा वेरी वा पन वेरिनं ।
मिच्छा पणिहितं चित्तं पापियोनं ततो करे ।।
न तं मातापिता कयिरा अञ्ञे वा पि च ञातका ।
सम्मा पणिहितं चित्तं सेय्यसो नं ततो करे ।।
(ध० 42–43)

अत्ता हि अत्तनो नाथो अत्ता हि अत्तनो गति ।
(ध० 380)

(v) MISCELLANEOUS.

Besides these, we find several other miscellaneous illustrations of parallel thoughts—

माणुस्सं खु सुदुल्लहं (उ० XX, 11)
किच्छो मनुस्स पटिलाभो (ध० 182)
अरइरइसहो पहीणसंथवे विरए आयहिए पहाणवं ।
परमट्ठपएहिं चिट्ठई छिन्नसोए अममे अकिंचणे ।।
(उ० XXI, 21)

नारती सहती धीरं नारति धीरसंहति ।
धीरो च अरतिं सहति धीरो हि अरतिं सहो ।।
(Ang. IV, 1·3.)

मासे मासे उजो बालो कुसग्गेणं तु भुंजए ।
न सो सुअक्खाअधम्मस्स कलं अग्घति सोळसिं ।।
(उ० IX, 44)

मासे मासे कुसग्गेन बालो भुञ्जेथ भोजनं ।
न सो संखतधम्मानं कलं अग्घति सोळसिं । (ध० 70)
फेणबुब्बुअसन्निभे [सरीरंमि] (उ० IX, 13)
फेणूपमं कायमिमं विदित्वा मरीचिधम्मं अभिसंबुधानो
(ध० 46)

लाभालाभे सुहे दुक्खे जीविए मरणे तहा ।

Aho ! Shrutgyanam

समो निंदापसंसासु समो माणावमाणओ ।
(उ० XIX, 90)

सेलो यथा एकघनो वातेन न समीरति ।
एवं निन्दापसंसासु न समिञ्जन्ति पण्डिता (ध०81)

सब्बत्थ वे सप्पुरिसा चजन्ति न कामकामा लपयन्ति सन्तो।
सुखेन फुट्ठा अथवा दुखेन उच्चावचं पण्डिता दस्सयन्ति ॥
(ध० 83)

Compassion for all animals—

जगनिस्सिएहिं भूएहिं तसनामेहिं थावरेहिं च।
नो तेसिमारभे दण्डं मणसा वयसा कायसा चेव॥
(उ० VIII, 10)

सब्बे तसन्ति दण्डस्स सब्बे भायन्ति मच्चुनो ।
अत्तानं उपमं कत्वा न हनेय्य न घातये। (ध०109)

cf मेत्ताय फसे तस थावरानि (सु० नि० 967)

सब्बेसु भूतेसु निधाय दण्डं (ध० 142)

II. Even when we come to the menner of expression, we do find some peculiarities common to both the litaratures—

(i) Even in Jain Sutras we find sometimes सुअं मे आउसं corresponding to Pali एवं मे सुतं coming at the beginning of almost every Buddhistic Sutta.

(ii) As in Pali, we find in Jain literature several technical points denoted by fixed numerals; as 8 मदा; 9 kinds of बंभगुत्ति, 25 Bhavnas, 22 परीसहा and so on like Buddhistic Eight-fold path, five Nevaras, four knots, six Ayatanas, 38 Bodhipakkhiya dhammas. This peculiarity comman to both these litratures was necessary in those condition to help the memory

(iii) We find the Anuswar is very often dropped as एआण for एआणं, as बुद्धान for बुद्धानं.

(iv) We find very often the same idea expressed in similar words, phrases or ward-clusters, similes and mataphors—

(a) words—अप्पकुक्कुए–अपकुक्कुच; उक्कुडुओ–उक्कुटिको; लूह–लूख; परीसहा–परिस्सया; मिलक्खुआ–मिलक्खुका; मायण्णे–मत्तञ्ञू; अइच्छति–अतिच्छति (cf अतिच्छथ भन्ते); अच्छहिं–अच्छन्ति; सहेह-सल्लेख;–तसेसु थावरेसु च.

(b) phrases and ward-clusters–धम्मणिसंतए-धम्मणिसंथत; जहाकरेणुपरिकिण्णे कुंजरे सट्ठिहायणे (उ० XI 18) सेय्यथाऽपि नाम कुंजरो सट्ठिहायनो गंभीरं पोक्खरणिं ओगाहेता (म० नि० 35.3)

घोरव्हसील (ध० 208) घोरव्वसीला (XIV 35)

नाइदूरमणासन्ने–नातिदूरं न अच्चासन्ने ।

(c) similes and mataphors.

भासच्छन्ना इवग्गिणो (उ० XXV 18)

भस्मच्छन्नो व पावको (ध० 71)

मेरुव्व वाएण अकंपमाणे (उ० XXI 19)

सेलोयथा एकघनो वातेन न समीरति (ध० 81)

वुच्छिन्द सिणेहमप्पणो कुमुदं सारदिअं व पाणिअं ।
(उ० X, 28)

उच्छिन्द सिनेहमत्तनो कुमुदं सारदिकं व पाणिना ।
(ध० 285)

(N. B.—It is worth testing what must have been the real original reading. The Buddhistic reading means 'You root out affection from your heart just as you easily pluck out a lotus growing in the Sarat Season;' while the Jain reading means " Just as a lotus growing in the Sarat Season leaves the water and cornes above the surface of the water, so you leave affection. ")

धुत्ते वा कलिणा जिए (उ० V, 16)

अत्तनो पन छादेति कलिं वा कितवा सठो (ध०252)

We here by no means pretiend to give an exhaustive list of all such parallelisms. But we may be confident that if we make a close and thorough study of Jain Prakrit works especially the Angas and Upangas, we shall find much food for reflection much that will

Aho ! Shrutgyanam

make us pause and consider the causes of close proximity of thought and: expression in Jain and Buddhistic literatures.

Here we may take the opportunity of thanking the authorities of the University of Bombay for having made it possible, according to a new regulation, to make a comparative study of Jain and Buddhistic Prakrit Literatures even at the stage of B. A. examination. We hope Jain students will not lose this opportunity and take up Pali and Ardha magadhi lamguages for their B. A. examination.

But some rich men must come to the help of poor Jain students who canenot pursue the study of their Sacred Literature for want of encouragement. Will it be too much to expect rich Jain merchants to come forward with hand some donations to educational institutions in places like Poona, Bombay, Ahmedabad and Surat for making provision of teaching the Jain Sacred Literature ?.

Aho ! Shrutgyanam

RATNAKARA PANCHAVIMSHATIKA.

Translated from Samskrit by

K. P. MODI, B. A. LL. B., AHMEDABAD.

1. May He ever be victorious who is blessed pleasure house of spiritual wealth before whose lotus feet prostrate even the lords of gods and men, who is omiscint, who is best because of his superhuman qualities and who is the store house of knowledge and art.

2. Oh, a support of the three worlds, Mercy incarnate, physician to remove the malady of worldly existence, not easy to be surmounted, free from all attachment, all knowing Lord! I with child like simplicity, beg to lay the following before you.

3. Does not a child, impelled by his child nature prattle something before his father without (any idea of what he has to say) previous thought? In the same way Oh Lord! I full of repentance truly put my ideas before you.

4. No charity is done by me, no good life has been led by me, no chastity has been observed by me, no austerity has been performed by me, no good thoughts have been thought by me in this life. Oh Lord! fruitless is my journey in this life.

5. I am burnt by fire of anger, stung by a wicked snake of avarice, swallowed by a cobra of pride, and bound by a snare of deceit. How can I worship Thee?

6. Oh Lord of the world! Oh best of Jains! no good deed has been performed by me in previous life, and I find no happiness in this life. Persons like me are born simply to add up the number of lives

7. Oh Lord of amiable conduct! I feel my heart to be harder than a stone because it was not moved with feelings of deep bliss, even though it had the good fortune to see your moon-like face.

8 Oh Lord! after wandering in many lives I obtained through you the three jewels, difficult to obtain even with great pains and even those jewels I lost through sleep of carelessness.

9. I liked asceticism simply to deceive others, I preached religion simply to please the people, I acquired knowledge to combat with others, Oh Lord! how much should I describe my ridiculous life?

10. I have sullied my mouth by slandering others, my eyes by looking on wives of others to lust after them, my mind by thinking harm to others, Oh Lord, what shall be my fate?

11. Oh Lord, what I, being blind by passion, have endured under the influence of pain caused by the force of cupid, I lay before you through shame. You, being Omniscient know all that.

13. Oh Lord, it was due to my mental delusion that I allowed Prameshti-Mantra (obaisance to the liberated souls, Tirthankars, pontiffs, teachers and good men) to be eclipsed by other Mantras; again literature to be ignored by false scriptures and that I wsa inclined to do wrong acts under the influence of bad gods.

13. I, a fool, having left you who had come within the range of my eye, pondered on the amorous pastimes of beautiful women as regards their glances, breasts, deep navel, loins etc.

14. Oh Saviour! How is it that a particle of mental attachment that

Aho ! Shrutgyanam

stuck to me by gazing at the faces of rolling eyed women, is not gone, though washed in the ocean of pure sacred literature.

15. I am neither beautiful in person, nor do I possess a collection of virtues. I have no pure grace of arts. I do not possess any power of resplendent lusture, still, I am troubled by egoism.

16. Life soon draws near the end, but not my inclination to sin; I grow old, but not my desire for sense-enjoyments; I made efforts for preparing medicines, but not for leading a religious life, Oh Lord! there is no limit to my self-delusion.

17. Oh Lord! fie upon me that I listened to the evil speech of the worldly persons that there is no soul, no merit, no future life and no sin, though you, the sun of absolute knowledge were shining clearly.

18. Although I have reached human stage my life is like crying in the wilderness because I did not worship God, did not revere worthy persons and I did neither observe layman's nor ascetic's religious duties.

19. Oh Lord of Jinas! look at my folly. I ran after imaginary things like the wish-fulfilling cow, wish-fulfilling tree and the wish-fulfiling jewel, but did not run after Jain religion which bestows real happiness.

20. I, a base one always thought of pleasures of enjoying good things, but did not view them as the womb of diseases; I thought of the increasing of wealth and not that of death; I thought only of a woman, but did not consider her as the cause of hell-bondage.

21. I could find no room in the heart of the good by pure conduct, I did not get fame by doing benevolent actions, I did not acquire religious merit by propaganding religion etc.; Alas! my life is really wasted.

22. No feeling of dispassion arose in me by hearing the preachings of my preceptors. I could not keep my peace by hearing the words of wicked men. Oh Lord! I have not a particle of spiritual knowledge. How can I, then, cross this ocean of worldly existence?

23. In my previous life I earned no religious merit. I shall not do it in future life. If I am such, then Oh Lord! all the three lives—the past, the present and the future are ruined.

24. Oh Venerable One! Oh Lord! What is the use of narrating my life in detail before you in vain. As you know the nature of the three worlds, what is my life to you?

25. Oh Best of the Jinas! There is no leader like Thee to save the poor, and there is no man more worthy of compassion other than I among the people. Still Oh Venerable One! I do not ask for worldly wealth, but oh ocean of spiritual wealth! Abode of auspicious things! I pray for the jewel of true faith, that is beneficial and leading to Salvationa.

Aho ! Shrutgyanam

॥ जैन साहित्य संशोधक-ग्रंथमाला-ग्रंथांक १ ॥

अर्हम्

वीरवंशावलि

अथवा

तपागच्छवृद्धपट्टावलि

(जैन साहित्य संशोधक, खंड १ अंक ३-परिशिष्ट)

संपादक-

मुनिराज श्रीजिनविजयजी

प्रकाशक- जैन साहित्य संशोधक कार्यालय,
ठि. भारत जैन विद्यालय-पूना सीटी.

Aho ! Shrutgyanam

Aho ! Shrutgyanam

प्रस्तावना ।

આ વીરવંશાવલિ અથવા તપાગચ્છ વૃદ્ધપટ્ટાવલિની હસ્તલિખિત પ્રતિ, સાહિત્યપ્રેમી શ્રીયુત કેશવલાલ પ્રેમચંદ મોદી બી. એ. એલ્‌એલ્‌. બી. (અમદાબાદ) એ મોકલી હતી જે તેમને પં. શ્રી ગુલાબવિજયજીના પુસ્તકભંડારમાંથી મળી આવી હતી. એ પ્રતિ, જેમ છેવટે જણાવેલું છે, સંવત્ ૧૯૬૨ માં લખાએલી છે–એટલે નવીજ છે. મૂળ કઈ પ્રતિ ઊપરથી એ નકલ કરવામાં આવી છે તે જાણવામાં આવ્યું નથી. એ પ્રતિની પત્રસંખ્યા ૧૧૨ છે તેમાં ૩૭–૩૮ નો આંક ભેગો એકજ પાનાઊપર આવેલો હોવાથી એકંદર પાંનાં ૧૧૧ છે. પાનાની દરેક બાજુએ ૧૨–૧૨ પંક્તિઓ લખેલી છે અને દરેક પંક્તિમાં ૨૫ થી ૩૦ અક્ષરો આવેલા છે. અમે આ આવૃત્તિમાં હાલની નવી પદ્ધતિ પ્રમાણે દરેક પાનની બંને બાજુની સમાપ્તિ સૂચવનારા અંકો ક્રમથી ( ) આવા કૌંસમાં આપ્યા છે.

આ પટ્ટાવલીનો કર્તા કોણ છે તે કાંઈ આદિ અંતમાં લખ્યું નથી. તેમજ બીજા પણ કોઈ સાધનથી તે જાણી શકાયું નથી. પટ્ટાવલિની પૂર્ણાહુતિ સંવત્ ૧૮૦૬ માં થએલા વિજયઋદ્ધિસૂરિના સ્વર્ગવાસસાથે થાય છે તેથી એમ અનુમાન કરી શકાય કે એ જ સમય દરમ્યાન એની સંકલના થએલી હોવી જોઇએ. નહિ તો વિજયઋદ્ધિસૂરિની પાટ ઊપર આવનાર આચાર્યનો ઉલ્લેખ એમાં અવશ્ય કરવામાં આવ્યો હોત. પટ્ટાવલિનો કર્તા કોઇ આણંદસૂર ગચ્છાનુયાયી યતિ હોવો જોઇએ. કારણ કે એમાં વિજયસેનસૂરિ પછીની જે પરંપરા આપી છે તે તેજ પક્ષની છે અને વિજયદેવસૂરિ જેવા પ્રસિદ્ધ આચાર્ય અને તેમના સમુદાયમાંથી ક્રિયા ઉદ્ધાર કરી સંવેગ પક્ષ સ્થાપનાર સત્યવિજય પંન્યાસ આદિનો એમાં જરાએ ઉલ્લેખ નથી.

પટ્ટાવલિ કર્તા ખરેખર બહુ સંગ્રાહક રૂચિવાલો છે એમાં સંદેહ નથી. તેણે પોતાની એ પટ્ટાવલિમાં મળી આવતી દરેક ઐતિહાસિક હકીકતને નોંધવાની કાળજી લીધી છે. આટલા વિસ્તાર સાથે લખાએલી બીજી કોઈ પટ્ટાવલિ અમારી જાણમાં આવી નથી. એમાં વળી ઘણા ઠેકાણે તો સંવત સુધાનો ઉલ્લેખ કરેલો છે જે અન્યત્ર મળવો બહુ દુર્લભ છે. જો કે ઘણાક ઠેકાણે સંવતના આંકડાઓમાં મોટી ભૂલો પણ કરેલી છે અને તે ભૂલોના લીધે તેણે કોઈ વ્યક્તિને કોઈ સાથે સમકાલીન ઠરાવી દીધી છે. જેમ કે પ્રસિદ્ધ દાનેશ્વરી જગડુ શાહ જે વાસ્તવિક રીતે વિક્રમના ૧૪ મા સૈકાના પ્રારંભમાં થયો છે, તેને એમાં ૧૩ મા સૈકાના કુમારપાલના સમકાલીન થએલો લખ્યો છે. આ મોટી ભૂલ સંવતના આંકડાના લીધેજ થએલી છે. કારણ કે જે પંચવર્ષી ભયંકર દુકાલ સંવત્ ૧૩૧૧ થી ૧૫ સુધી પડયો હતો તેના ઠેકાણે એણે ૧૨૧૧ થી ૧૫ સુધી પડેલો લખ્યો છે; અને આવી રીતે શતકના આંકમાં ભૂલ થવાથી સો વરસ પછી થએલા જગડુને કુમારપાલનો સમકાલીન ઠરાવી દીધો છે. આટલી મોટી ભૂલ શી રીતે થઈ તેનું નિશ્ચિત કારણ સમજાતું નથી. પરંતુ એમ અનુમાન કરી શકાય કે જે મૂળ પાના યા પુસ્તકમાંથી જગડુની હકીકત તેણે લીધી હશે તેમાં શતકના અંકમાં લેખ–દોષ હોવો જોઇએ. અને તે દોષની ભ્રાંતિએ તેણે પોતાની કુમારપાલની સમકાલીનતાવાળી કલ્પના ઉપજાવી કાઢી હોવી જોઇએ. અસ્તુ.

Aho ! Shrutgyanam

બીજી પણ આવી અનેક ભૂલો એમાં થએલી નજરે પડે છે. તો પણ એકંદર એ પટ્ટાવલિ બહુ ઉપયોગી છે એમાં જરાએ સંદેહ નથી.

આની ભાષા જેવી હસ્તલિખિત પ્રતિમાં મળી આવી છે તેવીજ અમે કાયમ રાખી છે. તેમાં માત્રાનોએ ફેરફાર કર્યો નથી. જો કે લખનારની ભાષાજ્ઞાનસંબંધી ન્યૂનતાના લીધે એની ભાષા વ્યાકરણબદ્ધ કે એકરુપ જરાએ નથી; તો પણ અજ્ઞાન લેખકની ભાષાના એક નમૂનારુપે પ્રસિદ્ધ કરવાની ઇચ્છાથી અમે તેમાં જરા પણ પરિવર્તન કરવું ઉચિત ધાર્યું નથી. આના લીધે કદાચ કેટલાક વાચકોને તે સમજતાં જરા કઠિણ પડશે ખરી, પરંતુ જો વિશેષ ધ્યાનપૂર્વક અને એક બે વાર ઉલટાવીને વાંચવામાં આવશે તો એકંદર હકીકત બધી સ્પષ્ટ સમજી શકાય તેવી અવશ્ય છે.

આ પટ્ટાવલિનો લગભગ અરધા ઉપર જેટલો ભાગ, 'જૈન શ્વેતામ્બર કાન્ફરન્સ હેરલ્ડ' ના સન્ ૧૯૧૫ ના જુલાઈ–આક્ટોબરના સંયુક્ત અંકમાં, તેના વિદ્વાન્ સંપાદક શ્રીયુત મોહનલાલ દલીચંદ દેશાઈ, બી. એ. એલ્એલ્. બી. એ પ્રકટ કર્યો હતો; જે તેમણે જૈન એસોસીએશન ઑફ્ ઇન્ડિયાના હસ્તલેખોમાંની એક પ્રતિ ઉપરથી ઉતારી લીધો હતો. તે પ્રતિ અધુરી હોવાથી તેમને તેટલોજ ભાગ મળી શકયો હતો. તેમજ તે ઉતારો તેમણે સુધારીને હાલની ભાષામાં કર્યો હતો. એટલે સંપૂર્ણતાની અને મૂળ ભાષાની દૃષ્ટિએ આ પ્રસ્તુત આવૃત્તિ વિદ્વાનોને અવશ્ય આદરણીય થશે એમ સમજીને અહીં એને પુનઃ સમગ્ર રીતે પ્રકાશિત કરવામાં આવી છે. આશા છે કે વિદ્વજ્જનો એનો યથેષ્ટ લાભ લેશે. તથાસ્તુ.

ભારત જૈન વિદ્યાલય, પૂના;
વૈશાખ કૃ૦ ૫, વિક્રમ સંવત્ ૧૯૭૭.

—मुनि जिनविजय ।

वीर वंशावलि

अथवा

तपागच्छवृद्धपट्टावलि।

॥ ३ॐ ॥ अथ वृद्ध पट्टावलि लष्यते ।

श्रीआदिदेवादिजिनांश्च सर्वान्
सीमंधरादीनिह वर्तमानान् ।
श्रीजैनदेवींश्च सुगुरून् प्रणम्य
श्रीवीरवंशावलिकां लिखामि ॥

अथ शिवललनालीलाविलासदातृश्रीपर्वमाहात्म्यकथनानन्तरं श्रीवीरशिष्यपरंपरा कथयति । तत्रादौ वर्तमानतीर्थाधिराजनमस्कारमाह ।

प्रकटितजगदानन्द
सुरतरुमणिसुरभिमहिमरमणीय ।
प्रणते हितप्रणेता
शासननता जयति जिनवीर ! ॥

पुनः स वीर किंदृशः ?

श्रीशासनाधीश्वरवर्धमानो
गुणैरनन्तैरतिवर्धमानः ।
यदीयतीर्थं खखाह्वनेत्रै-
र्वर्षाणि यावद्विजयि प्रसिद्धम् ॥

इति मुख्य स्वामी ।

सद्वासमुष्टिद्वयमुत्तमांगे
प्रक्षिप्य सिद्धार्थजिनो त्रयस्य (?) ।
संस्थापयामास पदे स्वकीये
स्वामी सुधर्मा जयताच्चिरं सः ॥

सद्धर्मवंतं पितरं स्वकीयं
स्वकीयपत्नीरथ मातरं निजाम् ।
संबोध्य रात्रौ प्रभवादिचोरान्
दीक्षां ललौ प्राप पदं च जंबूः ॥

श्रीमान् प्रभवस्वामी
गणनाथो गुणमणिसलिलनाथः ।
शय्यंभ (१-२) वोऽपि सूरि—
र्मणकपिता समजनिष्ट ततः ॥

निजगतिनिर्जित भद्र—
कृतभद्रः श्रीगणियशोभद्रः ।
तत्पट्टे..................
.... ॥

अथ नव गणधर वीर विद्यमान थकां वैभारगिरि—पर्वतोपरि मासभक्त संलेषणाकरी मोक्षगता ॥

श्रीवीरमोक्षें गया पछी बारे वरसें गोतम मुक्त । गोत्र गोतम । मगध देसे गोवर नगरे वसुभूति विप्रगृहे पृथिवी स्त्री सुत । इंद्रभूति नाम । पंचास वर्ष गृहवास । त्रीस वर्ष वीरसेवा । बारवर्ष केवल पर्याय पाली । सर्व आयु बाणु वर्ष भोगवी श्रीवीरथी बारे वर्षे मोक्ष गया ।

१ सुधर्मा स्वामी ।

पछी श्रीवीरपाटे पांचमा गणधर श्रीसुधर्मा स्वामी पहेंलें पाटें थया । तथाहि ।

कोलाग सन्निवेशे धम्मिल नामा विप्र तेहनी स्त्री भदिला नामें । ते हरिद्रायण गोत्रथी उपनी । तेहनो पुत्र । उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्रें जन्म हुओ । सुधर्म्मा नाम दीधु । अनुक्रमे योवनावस्थायें वक्षसगोत्रथकी उपनी एक

Aho ! Shrutgyanam

कन्या परणावी । तेहस्युं संसारिक सुष भोगवतां एक पुत्री हुइ । ते सुधर्मा चार वेद सांगोपांगनो पाठी छें । तेहूनें पासें पांचसयें विद्यार्थि वाडवसुत विद्याभ्यास (२-१) करे छें । पिण ते सुधर्मना चितनें विषें एक महा संदेह छे । ते किस्यो ? जे जेहवो ते तेहवो । ते संदेह श्रीवीरवचनें निःसंदेह हुओ । तिवारें पांचसय छात्र युक्त वर्ष पंचास गृहस्थपणु भोगवी, संसयछेदक श्रीवीरहस्त दीक्षा लीधी । वर्ष बहितालीस शिष्यपणें श्रीवीरनो विनय किधो । एतलो (?) वर्ष वाणु छद्मस्थापद भोगवी । पुनः वर्ष आठ केवली पद भोगवी । एवं सर्व आयु वर्ष सोनो संपूर्ण । मास एक चउविहार अणसण । पांचमें आरें । पश्चिमदिशि । श्रीवीरनें मुक्ति हुआ पछी वीसे वर्षें श्रीगिरनारपर्वतोपरि श्रीसुधर्मा नामें श्रीवीरना पहेला पटोधरनें मुक्ति हुइ ।

श्रीवीरज्ञानोत्पत्तेःचउद वर्षे जमाली प्रथम निन्हव ।सोले वर्षे तिष्यगुप्त द्वितीय निह्नव । प्रथम नाम निग्रंथी । श्रीवीरनें प्रथमपाटें सुधर्मा स्वामी जाणवा ॥ १ ॥

२ तत्पट्टे श्रीजंबूस्वामी ।

हवें ते जंबू कुमारनी उत्पत्ति कहें छें । पूर्वदिशिं मगधदेशें वछ भूमियें राजगृह नगरें काश्यपगोत्री श्रेष्ठ रुषभदत्त । तेहनी स्त्री धारणिनामें । तेहनी कूषें पांचमा ब्रह्मदेवलोकथी आयु संपूर्ण [थयें] देवतानो जीव(२--२) चवी आवी बेटापणें उपनो । तिवारें धारणीइं मध्यरात्रे सूतां थकां सूहणें सफलंत जंबूनो झाड दीठो । तेहनें अहिनांणें जंबू कुमार नाम दीधू । अनुक्रमें वर्ष सोलनो हुओ । एहवे अवसरें श्रीसुधर्मा केवली विचरता आव्या। तेहनें मुषे उपदेस सांभली लघुकर्मी जीव जंबू कुमारें चोथु वर्त आदरयुं । सुधर्मा केवलीयें विहार कीधो । भोग समर्थ जाणी वार २ मातापिता संसारनी वार्ता कहें । तोहि पिण जंबु पाणिग्रहण न वांछें । मातापितायें हर्ष पूरणमाटे घणा आग्रहथी उत्तम व्यवहारियानि बेटी आठस्यूं परणाव्यो । पिण तेहस्यूं स्नेह दृष्टी जोडें नही । संसारीकनां मृदुवचन बोलें नही । यतः

हावो मुखविकारः स्यात् भावो चित्तसमुद्भवः ।
विलासो नेत्रजो ज्ञेयो विभ्रमो भ्रूसमुद्भवः ॥

एहवी २ काम चेष्टा करी अंग देषाडें । पण जंबु ते स्त्री सांहमी दृष्टी जोडें नही, एहवे घणा मनुष्यनें मुखि जंबुनें घरें नवाणु कोडी सूवर्ण द्रव्य आव्यो सांभली प्रभवो नामें चोर पालथी च्यारसें नवाणु चोर मनुष्य लेइ रात्रिं जंबू घेर द्रव्य लेवा (३—१) पइठो । घरनें छूटक चोक माहिं द्रव्यनो ढीग कीधो देषी अवस्वापनी विद्याने प्रक्रमे सकल घरना मनुष्य प्रतें निंद्रा दीधी । पछी तालोद्घाटनी विद्याइं तालां उघाडी गृहाधीसनी परें अबीह थका द्रव्यनी गांठडी बांधी माथें मुकी । च्यारसें नवाणु चोर सहर्षित चित्तथका स्ववरे जावा उद्यमि हुआ। एतले जंबुना सीलधर्म महिमाथकी शासन देव्याइं थांभानि परे निश्चल थंभ्या । अने जंबु तद्भव मोक्षगांमि छें ते माटे अवस्वापनि नीद्रा न आवी । एतले प्रभवो मेढीयें चढ्यो । देषें तो रंगसालायें जंबू नवोढा स्त्रियोने उपदेश रूप प्रतिबोध कही दृष्टांते समजावि छें । ते जंबू वचन सांभली स्त्री पण पाछो पडुत्तररूप दृष्टांत करे छें । पिण संसार विरक्त थका, द्रव्यना ढिग चोर लियें छे ते सांहमु जोता नथी । ए मोटा अचरिज देषी लघुकर्मी जीव प्रभवो जंबू कथक दृष्टांत सांभली मनसुं बिचारें छे जे धन्य ए जंबू कुमारनें । नवांणु कोडि कनक अनें तूरत परणी नवोढा नव कन्या थकी वेगलो छें । धिग मुजने जे हूं राजपूत्र कहवाउं छुं । भौ (३—२) लसंग रही घणा जीवनें दृढबंधनें तथा दृढ प्रहार करी त्रासिं महादुष आपू छु । तो मुझनें कुण गति हुस्यें । इस्युं बिचारी प्रतिबोधपांमी च्यारसेंनवाणु परिकरसहित प्रभवो आवी जंबूनें नम्यो । एतले शासनदेव्याइं ते सकलने व्रत लेवानो आसय जाणी बंधन थकी मुक्या । जंबूयें पण नव स्त्रीओनें प्रतिबोधी प्रभाते स्वमातापिता अने ८ प्रियानां मातापिता—एवं पांचशें सत्यावीस मनुष्य युक्त । पुनः नवाणु कोडी सूवर्ण उपरि मूर्छा तजी नीलोंभिता यें...... पाणिग्रहणनें अवसरें तिलकें दीधा कोडी सत्यावीस वरनो मूलगो द्रव्य—एवं नवाणु कोडि संख्यायें जाणवो । ते तजी वर्षसोल गृहस्थपणें रही । श्रीसुधर्मा हस्तें दीष्य

Aho ! Shrutgyanam

लीधी । वर्ष वीस श्रीसुधर्मानो विनय शिष्यपणें कीधो । वर्ष चउमालीस युग प्रधान पदें केवली पद भोगवी । छेहला केवली बिरुद धराव्यो । श्रीवीर स्वमुखें श्रेणिकनें कह्युं जे पेहला देवलोक थकी आवी इणिं सूर्याभदेव नाटिक कीधू ते देवनो जीव छेहलो जबूनामें केवली होसें । ए वचननें अनुसारें जाणज्यो । सघ (४–१) लो आउषो वर्ष ऐसीनो भोगवी संपूर्ण । प्रभवानें स्वपाटिं थापि श्रीवीरमुक्ति हुआ पछी वर्ष चोसठें श्रीजंबू मोक्ष हुआ । तत्र—

बार वरसेहि गोयमो सिद्धो वीराओ वीसहि सुहमो ।
चउसट्ठी ए जंबू वुच्छिन्ना तत्थ दस ठाणा ॥

ते जंबू मोक्ष हुया ते साथे उत्तम बोल दस विच्छेद हुया ते कहे छे । यतः—

मणपरमोहि पूलाए आहारग खवग उवसमे कप्पे ।
संयमतिय केवल सिज्झणाय जंबूम्मि वुच्छिन्ना ॥

एतलें मुक्तिनां कपाट देता गया । अत्र जंबू उपमा—

लोकोत्तरं हि सौभाग्यं जंबूस्वामिमहामुनेः ।
अद्यापि यं पतिं प्राप्य शिवश्री नान्यमिच्छति ॥

श्लोकः—

चित्तं न नीतं वनिता विकारै–
र्वित्तं न नीतं चतुरैश्च चोरैः ।
यद्देहगेहाद् द्वितीयं निशीथे
जंबूकुमाराय नमोऽस्तु तस्मै ॥

इति जंबू संबंध । द्वितीय पाट ।

३ तत्पट्टे श्री प्रभवस्वामी ।

तेहनो काइक स्वरूप कहे छे । वंध्याचल पर्वतने विषे तलहटीई जयपूर नगरें कात्यायण गोत्रि जयसेन राजा । तेहनें प्रभवनामे १ विणयधरनामे २ बिहू पुत्र छे । ते माहिं पिता गुणें जेष्ट जाणी कनिष्ट जे लघु पूत्रनें राज (४–२) दीधू । एतलें प्रभवो क्रोधे घरथकी नीकली भीलनी पालें पलिपति पासिं जइ रह्यो । तिणे राजपूत्रजाणी आदर देइ पांचसें चोरनो स्वामी कीधो । चारसें नवांणु चोर लेई दूष्टात्मा अति क्रूरपणाथी घणा मनुष्य प्रतिं उपद्रव उपजावे पण कोइ वारवा समरथ नहीं । एहवें जंबूनें घरें द्रव्यना समुह आव्या जनमुखथी जाणी, प्रभवो पोताना समुदायनें लेइ रात्रि जबूनें घरें द्रव्य हरवानें पेठो। बीजा चोर सवला द्रव्यें बिलगा छें । एतलें प्रभवो मालीये चढ्यो, देषे तो रंगमोहले जंबू हस्ते नव परणीत कंकण बांध्यो छे । संसारनें विषे सर्व अनित्य पणु स्त्रीओनें कहे छे । ते उपदेस सांभली जंबू साथें प्रभवें. वर्ष त्रीस संसारिकपणो भोगवी, श्रीसुधर्म्मा केवली हस्तें दीक्षा लीधी । वर्ष चौमालिस श्रीजंबूनी सेवा, शिष्यपणे कीधी अनें वर्ष इग्यार जुग प्रधान पद भोगव्यु । एकदा श्रीप्रभवे पोतानें पाटें थापवानें अर्थें श्रुतबलें करी स्वसंघनें विषे उपीयोग देइनें जोयुं । पिण पाटयोग्य कोइ न दीठो । तिवारे पर सासनें उपीयोग देवे थकें पूर्व दिसें (५–१) मगध देसें राजगृही नगरें वक्षगोत्रि यजुर्वेदीय यज्ञारंभ करतो शिय्यंभव वाडव वेदकुंभ दीठो । तिहां स्वशिष्य मोकली यज्ञकुंडनी खेंटा हेठें श्रीशांतिबिंब दर्शनें करी प्रतिबोध पामी, श्रीप्रभव पासें दीक्षा लीधी । हवे प्रभव स्वामी सर्वायु वर्ष पंचासीनुं संपूर्ण पाली श्रीवीरमुक्ति हुआ पछी वर्ष पंचोत्तरें श्रीप्रभवस्वामी स्वर्ग हूओ । इति त्रिजो पाट ॥ ३ ॥

हवे श्री पार्श्वनाथना प्रथम गणधर श्री सुभेय नामें । तस्य शिष्याचार्य्य श्री हरिदत्त । तस्य शिष्याचार्य्य श्री समुद्र स्वामी । तस्य शिष्याचार्य्य श्री केसी । श्री वीरवारे केसी स्वामी । तस्य शिष्याचार्य्य श्री स्वयंप्रभसूरि । तस्य शिष्याचार्य श्री रत्नप्रभसूरि प्रगट हूआ । तेहनें श्री वीरमुक्ति पछी वर्ष बावन आचार्य पद हुओ । श्री वीरमुक्ति गया पछी वर्ष पच्योत्तरे ओईसा नगरि चामुंडा प्रतिबोधी घणा जीवने अभय दान देई साचिल नाम दीधुं । पुनः तेहीज नगरनो स्वामी परमार श्री उपल देव प्रतिं धर्म्मोपदेस देई एक लाषनें नवाणुं हाजार गोत्री (५–२) स्यू प्रतिबोध्या । तिणे श्री पार्श्वनाथ प्रासाद थाप्यो । एहिज सूरियें प्रतिष्ठयो । तिहांथी उपकेश ज्ञाति कहीवांणी । श्री रत्नप्रभसूरीनें उपकेस गच्छ लोंक कह्यो । तिहां पोहकरणा मोजग हुआ । इति चोथो पाट ॥ ४ ॥

Aho ! Shrutgyanam

४ तत्पट्टे श्रीशय्यंभव स्वामी ।

तेहनो वक्षस गोत्र । तिणे सगर्भा, यज्ञारंभने विषें, स्त्रीनें घरें मुकी श्री प्रभव स्वांमी पासें दीक्षा लीधी छे । यज्ञ करतां शिय्यंभवनें प्रभवा स्वामीइं संवाद करी, यज्ञ स्थंभथी श्री शान्तिनाथजीनी प्रतीमा देषाडीनें प्रतिबोधी दीक्षा दीधी । तेवारें केडें ते स्त्रीनें मनक नांमें पूत्र हूओ । ते बेटे पण लघुपणें पीता श्री शय्यंभव पासे दीक्षा लीधी । पूत्रना स्नेह थकी साधुनो आचार शिषवबा उपगारनें हेतें श्री दशवीकालक एहवें नांमें सूत्र दस अध्यन निपजाव्या । ते बाल साधुनी छमासनी आयु स्थिति थाकतें सूत्र नीपजाव्यो छमासें ए सिद्धांत भण्यो । अनुक्रमें ते बालक साधु मरण पांम्यो । तिवारें अन्य साधुयें पोतानो पुत्र जांण्यो । गुरुयें नेत्रें आंसू पात थाता जांणी (६–१) साधोये वैराग्य वचन कही समझाव्या । निर्मोह दशामां चेतना आणी समता भावे हुआ ।

हवें श्री शय्यंभव स्वांमीयें वर्ष अठावीस गृहस्थ पद भोगव्युं । अनें वर्ष इग्यार श्री प्रभवनी सेवा शिष्यपणें कीधी । पुनः वर्ष त्रेविसताइ युगप्रधान पद भोगवी सर्व आयु (वर्ष) बासठ संपूर्ण पाली श्रीवीर मुक्ति गया पछी वर्ष अठाणुयें श्री शिय्यंभव सूरि स्वर्ग हूओ ।। ५ ।।

यतः—कृतं विकालवेलायां दशअध्ययनगर्भितम् ।
दशवैकालिकामिति नाम्ना शास्त्रं बभूव ततः ।। १ ।।
अतः परं भविष्यंति प्राणिनो ह्यल्पमेधसः ।
कृतार्थास्ते मनकवत् भवंतु त्वत्प्रसादतः ।। २ ।।
श्रुतांभोजस्य किंजल्कमिदं संघोपरोधतः ।
महाफलसमायातौ न संवत्रे महात्मभिः ।। ३ ।।

५ तत्पट्टे श्री यशोभद्र स्वामी ।

तेहनो तुंगीकायन गोत्र । तिणें वर्ष बावीसताइ संसारीपणु भोगवी श्री सय्यंभव गुरुहस्ते दीक्षा लिधि, अने वर्ष चउद श्री सियंभव स्वामीनी सेवा शिष्यपणें कीधी । पुनः वर्ष पचास यूगप्रधान पद भोगवी सर्व आयु वर्ष छा (६–२) सी संपूर्ण पाली, श्रीवीर मुक्ति हुआ पछी, वर्ष एकसो वहेतालीस विते श्रुतकेवली श्रीयशोभद्र स्वामी स्वर्गे हुआ । इति पंचम पाट ।। ५ ।।

६ तत्पट्टे श्री संभूति विजय सूरी ।

श्री भद्रबाहु स्वामी । २ । ए बेहू गुरू भाइ जाणवा । त मांहि श्री संभूति विजय सूरी ते पटधर जाणवा अनें भद्रबाहु स्वामी ते गच्छनी सार संभालीना करनहार जाणवा । ते माटें बिहूनो नाम जोडें लष्यो छे । तिहा प्रथम बडा गुरूभाइ श्री संभूति विजय स्वामी । तेहनो माढर गोल छें । अनें बीजा लघु गुरू भाइ श्री भद्रबाहु स्वामी । तेहनो प्राचीन गोत्र छे । हिवें श्रीसंभूति विजय स्वामीये वर्ष बहेतालीस गृहस्याश्रम भोगवी श्रा गुरू यशोभद्र पासिं दीक्षा लीधी । अनें वर्ष चयालीस श्री यशोभद्र स्वामीनी सेवा शिष्य पणें कीधी । पुनः वर्ष आठ युगप्रधान पद भोगवी सर्वायु वर्ष ९० संपूर्ण । श्रीवीर मुक्ति हूआ पछी वर्ष १५६ वीतें श्री संभूती विजय स्वामी स्वर्गे पूहुता ।। १ ।। हवें बीजो लघु गुरूभाइ भद्रबाहु स्वामि तेहनुं काइक स्वरूप(७--१)कहें छे।

दक्षिण दिशि प्रतिष्ठानपूर नगरें प्राचिन गोत्रिया वराहमीर । १ । अने लघु बंधव भद्रबाहु । २ । नामें वाडव रहें छें । तिणें श्री यशोभद्र गुरुनी वाणी सांभली गुरूहस्तें दीक्षा लीधी । ते बेहूं बंधव घणें दिनें विद्याभ्यास करतां षट् दर्शनना मतना शास्त्र तेहना जाण हूआ । एकदा गुरु यशोभद्र चित्तनें विषें चिंतवें जे ए बडो भाइ योग्य छें, पिण अहंकारी छे । तेहथी पद योग्य नही । अनि नाहनो भाइ भद्रबाहु तेहनि समता-युक्त श्रुतसमुद्र जांनी गुरुयें सूरी कीधो । एतले ते वाराहमिहर बडो भाइ गुरु तथा भद्रबाहू—ए बिहूं उपर घणें कुधें यती वेष लोपी पूनरपि संसारी थइनें आजीवीका हेतिं पोताना नामनी वाराही
योतिषनो शास्त्र नीपजावी मनुष्यनि नि
कहें । एकदा राजसभायें आवी वारा
डालुं करी कहें, जे आज थकी पांचमें
थकी बीजा प्रहरनें अंतें इणिं कुंडा
थकी देव योगें बावन (७--२)
ते सांभली राजा श्रीभद्रबाहूनें कहें,
भद्रबाहु कहें, जे मेह पूर्व दिसी

Aho ! Shrutgyanam

इशान कुणे थकी आवसे । थाकतो दिन घडी छ पाछ लो रहेस्यें तिवारें । पण छठ्ठो दिन पांचममां भलवानी मुख्य घडीयें, ते मच्छ कूडाला बाहिर किंनारें पडस्यें । साडा एकावन पलनो तोलमान होसी । तो तिमही हूओ । राजायें भद्रबाहूनें प्रसंसा अनें वाराहमिहरनें निभ्रंछीओ ।......राजा कहे ए मूढ ते किम ? जे तिहांथी आवतां पवनने जोरें मत्स शोषाणो तेहनी मालीम रही नही । एतली बुद्धि न्यून एहनी जाणवी ।

पुनः केतलेक दिने राजसदनें राणीइ पूत्र जनम्यो । तेतलें वराहमेहर कहें, एहनो शत वर्ष आयु छे । एटलें राजायें भद्रबाहूनें पुछयो । तिवारें भद्रबाहू कहें एहनें आज थकी सातमें दिनें बिलाडी मुषथी नीश्चय मरण छे । ते सांभली राजायें नगर थकी सर्व मंजारी कढावी। सातमि दिन दासी ते बालकनें उच्छंगें लेइ निरषे छे । एहवें भाविने व(८--१)सें अकस्मात् मांजारीनें आकारें भोगल खेटीइं थकी पडी मस्तकघात हूओ । मरण पाम्यो । श्री भद्रबाहुनो वचन साचो जांणी घणी आदर कीर्ति हूइ । राजाईं वराहमीहरनुं वचन असत्य जाणी देश बहार कीधो । तें पिण अणादर थकी क्रोधें मरण लही व्यंतर हूओ । पहेला भवनो वैर संभारी गुरूना संघनें मारिनो उपद्रव्य करे । तिवारें गुरुयें श्रुतनो उपीयोग दीधो । वराह जीव जाणी उपसर्गहर स्तोत्र नपिजाव्यो । जिणि जल मंत्री छाटणी थकी ते व्यंतर नाठो। श्री संघ समाधी हूई । श्री भद्रबाहू स्वामीइं नवमा पूर्व हूंती कल्पसूत्र उधरीनें रचना कीधी । ते भद्रबाहु स्वामीयें वर्ष पस्तालीस संसारि पद भोगवी पछें श्री यशोभद्र सूरी हस्तें दीक्षा लीधी अनें वर्ष सत्तर ताइ श्री यशोभद्र स्वामीनी सेवा शिष्य पणें कीधी । पुनः वर्ष चउद युग प्रधान पद भोगवी श्री स्थूलीभद्रनें अतियोग्य विद्याधिक जाणि पोताने पाटें थापी; सर्वायु वर्ष छहोत्तरनुं संपूर्ण । श्री वीर मुक्ति हूआ पछी व० (८--२) एकसो सित्तरें श्री भद्रबाहु संहिता कारक, पुनः आवश्यक निर्युक्ती ।१। पचषाण निर्युक्ति ।२। ओघ निर्युक्ति ।३। पिंड निर्युक्ति।४। उत्तराध्ययन निर्युक्ति ।। ५ ।। आचारांग निर्युक्ति । ६ । सुगडांग निर्युक्ति । ७ । दशविकालक नीर्युक्ति । ८ । विवहार निर्युक्ति । ९ । दशाकल्प निर्युक्ति । १० । ए दश निर्युक्ति कारक; अनें उपसर्गहर स्तोत्र करी महामारी निवारक पंचम श्रुत केवली बिरुद धारक श्री भद्रबाहू स्वर्ग हुओ । इति भद्रबाहू संबंध । पाट । ६ ।

७ तत्पट्टे श्रीस्थुलिभद्र स्वामी ।

तेहनुं स्वरूप कांइक कहिए छीए । पूर्वदिशि पाडलीपूर नगरें नवमो नंद राज्य करे छे । तेहने नागरज्ञाति गोतम गोत्री शकडाल नामें मंत्री छे । तेहनें लक्ष्मीनामें स्त्री छे । तेहने थूलीभद्र १ अने सिरीओ २ [बेहू पूत्र छें] जखा १ जखदिन्ना २ भूया ३ भूयदिन्ना ४ सेणा ५ बेणा ६ रेणा ७ ए सात थूलिभद्रनी बहेनो जाणवी । हवे ते स्थूलिभद्रनि नीशाल भणी वेश्यावरें संसारीकना सूष विषयासन्न शिखवानि नायका घरें मूक्यो । पूर्व (९--१) कर्मानुयोगें तेहस्यूं संग हूओ । भोगी भ्रमर थको तिहांज रह्यो । पिता सूषभ्रष्ण कहावें । विलसवा द्रव्य मोकलें । इम विलसतां बार कोटि स्वर्ण षाधा । एहवें बार वरसनें अंते राजाने दरबारें कोइक वररुचिनांमे ब्राह्मण पंडत आव्यो । राजानी कीर्ति कीधी । द्रव्य देवराव्यों । तेहनें सकडाले द्रव्य न दीधो । पछें तिणे पंडते प्रपंच करी राजाने पोकार्यो । तेहथी, अकस्मात् लघूभाई सिरीओं तेहनें हाथें पीतानुं मरण जाणी, प्रत्यक्षपणें संसारनु स्वरूप असार देषी, वर्ष त्रीस ग्रहस्थ पणें रही, वैराग्य वासीत चीतथकी श्रीसंभुतिविजय स्वामी हस्तें दीक्षा लीधी । राजा कहें ए किस्यूं कीधूं । तिवारइं श्रीस्थूलिभद्र राजा प्रतिं कहें, यतः—

हस्ते मुद्रा मुखे मुद्रा मुद्रा स्यात्पादयोः द्वयोः ।
तत्पश्चात् गृहे मुद्रा व्यापारं पंच मुद्रिकम् ।। १ ॥

पुनः श्री स्थूलीभद्र स्वामी चउद पूर्व सूत्रें भण्या, अने दश पूर्व अर्थि भण्या । वर्ष चोवीस श्रीसंभूतिविजय स्वामीनी सेवा विनइपणें कीधी । अने वर्ष पस्तालीस युगप्रधान पद भोगवी, सर्व आयु वर्ष नवाणुनुं संपूर्ण । (९--२) श्रीवीरमुक्ति हुआ पछी वर्से पनरे वर्षे, कोसा नामें नायका प्रतिबोधक, गुरु श्री संभूतिविजय दुष्कर २

Aho ! Shrutgyanam

कथक त्वं धन्न २, इदं वड व्रतरक्षक, बिरुदधारक, श्री स्थुलिभद्र स्वामी स्वर्गे पुहुता ।

ते संघाते पहिलुं वज्रऋषभ नारा च संघयण १ अनें पहिलुं सम चउरंस नामे संस्थान २ पुनः पूर्वनुयोग ३ ए त्रिहूं वस्तु विच्छेद हूइ । एहवें श्रीवीर मुक्ति हुआ पछी बसें चउद वर्ष गइ थकें अव्यक्त नामा त्रिजो निन्हव प्रगट हूओ । यत उक्तम्—

केवली चरमो जंबूस्वाम्यथ प्रभवः प्रभुः ।
शय्यंभवो यशोभद्रः संभूतिविजयस्तथा ॥
भद्रबाहुः स्थूलिभद्रः श्रुतकेवलिनो हि षट् ।

ए छ श्रुत केवली जाणवा । अत्र महारुषि श्री—
स्थूलिभद्र वर्णन काव्यं—

वेश्या रागवती सदा तदनुगा षड्भी रसैर्भोजनं
शुभ्रं धाम मनोहरवपुरहो नव्यो वयः संगमे ।
कालोयं जलदाबिलस्तदपि यः कामं जिगीयादरात्
तं वंदे युवतीप्रबोधकुशलं श्रीस्थूलिभद्रं मुनिम् ।१।

श्रीशांतिनाथ'दपरो न दानी
दशार्ण (१०–१) भद्रादपरो न मानी ।
श्रीशालिभद्रादपरो न भोगी ।
श्रीस्थूलभद्रादपरो न योगी ॥ २ ॥

ए श्री स्थूलीभद्रनो संबंध अन्य चरित्रें विस्तार छें । ते माटे अत्र विस्तार कन्यो नथी ।

पुनः श्री वीर मोक्ष हूआ पछी बसें अनें वीस वर्ष गइं हूंति बोध मत प्रकट हूओ । इति थुलिभद्र संबंध । पाट ७ ।

८ तत्पट्टे श्रीआर्य महागिरि ।

श्रीआर्य्य सुहस्ति सूरि ।

ए बेहू गुरुभाइ जाणवां । ते मांहि प्रथम वडा गुरुभाइ श्रीमहागीरी, तेहनो गोत्र एलापत्य नामें छें । अनें बीजा लघु गुरुभाइ श्री आर्य सूहस्ति सुरी तेहनो गोत्र वासिष्ठ छें । ते मांहि प्रथम श्री आर्य महागिरि सूरि ते पटोधर जाणवा अनें श्री आर्य सुहस्ति सूरि ते गछनी सार संभालिंना करणहार जाणवां । ते माटे बिहूंनो नाम जोडें लख्यो छें । तिहां प्रथम बडा गुरुभाइ श्री आर्य महागिरि सूरि वर्ष त्रीस संसारीक पद भोगवी श्री स्थूलीभद्र स्वामीपासें दीक्षा लीधी । अने वर्ष च्यालीसताइं गुरु श्री स्थूलीभद्र स्वामीनी सेवा शिष्यपणें कीधी । वर्ष त्रीस युग प्रधान पद भोगवी सर्वायु (१०-३२)एक शत वर्ष संपूर्ण। लघु श्रीआर्य सुहस्ति सूरीनें गछ भलावी श्री आर्य महागिरी सूरीइं जिन कल्पीनो तूलना करी । श्री वीर निर्वाणि हूआ पछी बसें पसतालीस वर्ष वीते श्री आर्य महागीरी सूरी स्वर्ग हूआ ॥ १ ॥

ए हवें श्रीवीर मुक्ति हुआ पछी बसें अठावीस वर्षे गंग नामा पांचमो निन्हव प्रगट हूओ ।

हवें श्री आर्य सुहस्ति सूरि भव्य जीवनें परमोपकारी थका विचरता मालव देसें उजेणी नगरे भद्रा नामें सार्थवाही पासें वाहनशाला याची चौमासु रह्या छे । तिहां निसि सज्झाय ध्यान करें छें, एतले सात भूमिइं भद्रापूत्र अवंति सुकमाल नामें बत्तीस स्त्रीओ साथें सुष विलास करतां, गुरु कथक अध्ययन मधुर स्वर एक चित थकी सांभली, जाति स्मरण पांमी, पूर्व भव नलनी गुल्म विमाननो देवसुष दीठो । स्त्रीओनो सुष विलास मूकी उतावलो मेढी थकी उतरी गुरुने नमी कहे, साधुजी ए तुमे कही एहवी जे नलनी गुल्म विमान-सुष देवसाहिबीनी वात ते तुम अत्र रह्या किम जाणो छो ? श्री आचार्य कहि—श्रीजिनवचनानुसारिं । श्रेष्टि (११–१) पूत्र कहे, पूज्य ! एतलो ए सुष भोगवी अत्र उपनो अनें पुनरपि ते देवसुष हूं किम पांमु ? श्रीगुरु कहें, व्रत लिओ तो ते सुष लहो । तिवारें तिणें भद्रा मातानी आज्ञा लही, बत्रीस कन्या कोटी द्रव्य तजी; श्री गुरुहस्तिं दीक्षा लीधी । गुरुनें कहे ए कठीण दीक्षा मे घणा दिन ताईं न सचवाय ते माटें अणसण करुं । सांभली कहे तमारा जीवनि जिम सुषनो हेतु हुइ तिम करो । गुरुवचन तहत्ति कही जिहां समसाने कंथेरी बननें विशे काउ
गो रही अणसण कीधु । मारगिं आतां कोमल प
बिहु पगें कंथेरना कांटा खुंचवे करी लोहीना
छें । तेहनी गंधे रात्रिनें विषें प्रसूता सीयाल
परिवारस्युं जिहां अवंति सकुमाल साधु देह

Aho ! Shrutgyanam

काउसग्गीं रह्या छें तिहां आवी । बिहु पगथी मांडी सघलो सरीर भक्षण रूप उपसर्ग कीधो । पिण तें मुनि दृढाचित थकी ध्यान न चल्यो । आयू संपूर्ण उदारीक देह तजी सौधर्म्म राजध्यानीइं नलनीगुल्म विमांने देवनी साहीबीये उपनो (११–२) एतलें मातायें पूत्र आयु पूर्णि, पिण भंगुर देह जाणी एक सगर्भा बहुने घरें मुकी । एकत्रीस वहु युक्त भद्रा दीक्षा आराधी देवलोके गयां । वरें सगर्भानें पूत्र जनम्यो तिणें पीता दग्ध स्थानकें प्रासाद नीपजावी श्रीअवंति नामें श्रीपार्श्वनाथनो बिंब थापी ते सद्गतिनो भजनार हुओ ।

हवें सीयालणीनो संबंध कहें छें—अवंति सूकुमाल पाहिलां त्रीजें भवे माछिनो अवतार हुओ । तिहां बिं स्त्री हुंति । ते माछियें साधुनो उपदेश सांभली श्रीधर्म्म आराधी मरण पांमी नलनी गुल्म विमानें देवपणें उपनो । तिहांथी चवी कोटीध्वज विवहारीयानें वरें अवंति सूकुमाल नामें पूत्र पणे उपनो । अनें वडी स्त्री विभव वणीकपूत्री हुइ । पुनः नाहनी स्त्रीं मरीने अपमांनी हती, ते वाडवी हुइ । तिहां थकी मरण पांमी सीयालणी हूइ । ते वैरे भक्षण रुप महा उपसर्ग साचव्यो । ते पार्श्व बिंब आज दिनताई सप्रभाव उज्जेणी नगरीइ छें । इति अवंति सुकुमाल संबंध छे ।। १ ।।

दश पूर्वधारक श्री आर्य सुहस्ती सुरी पुनः (१२–१) जेहनो नव दीक्षित भिक्षुक जीव तेहने उपगारी पणें हुआ । श्री वीर मोक्षें गया पछी वर्से पंचासी वर्षे संप्रति इसइ नामे राजा हुओ । तेहनो संबंध कहें छें । एकदा श्री आर्य सुहस्ती सूरी विहार करतां कोसंबी नगरीइं वनें वाटिकाइं रह्या । शिष्य गुरू-आज्ञा लही नगरमांही आहारनें उद्यमें गया छे । तिहां दुर्भिक्ष योगें अन्नने अभावें भिक्षुक घणा हुआ छें । पण साधुनें पण घणें आदरें सरस आहार आपता देषी एक रंक भिक्षुक ते साधु साथे हुओ । आहार लेइ साधु वाटीकाइ आव्या । गुरू आगलें आहार आलोइं छें एटलें रंक पण द्वारि आवी उभो । साधुनें कहें छे मुंजनें ए आहार आपो । गुरु कहें साधुनो आहार साधुनें कल्पें, बीजा गृहस्थने न कल्पें । सांभली कहें, मुजने शिष्य करो । पिण आहार आपो । हूं घणो क्षूधार्ति छु । तिवारें गुरु दशपूर्वजाण छें । तिणें श्रूत उपीयोग दीधो । शासन उद्योत कारक जांणी दिक्षा आपीनें आहार पण दीधो । घणा दीन थकी तिनें सरस जांणीनें आहार विशेषें लीधो (१२–२) । निर्बल सरीर थकी तेह रंकाने विसूचिका हूइ । घणी असाता उपनी । उदर पीडा थकी वेंदें । पहेलां जे गृहस्थ भिक्षुक पणें, जे आहार न देता घणा तिरस्कार करतां ते गृहस्थ नगर सेठ जेहवा आवी, नव दीक्षीतिनें साधु वेष उदय आव्यो जांणी; बहूमूल्य औषवादिकें विशेष भक्ति वेयावच साचवें । ते देषी रंक साधु मन चिंतवे जे ए धन्य ए चारित्रनें, धन्य ए वेषनें, जेना महिमा थकी एक कोटीध्वज लखेसरी व्यवहारीया बहुमांने करी मुझ भक्ति साचवे छें । एहवा शुभ चारीत्रनी अनुमोदनाइं काल पांमी उजेणी नगरीइं श्रेणिकनें आठमे पाटे कुणाल राजा, ते ओरमान मातानाकपट थकी वर्ष तेरनो चक्षू हीण थयो छें, तेहने घरे बेटा पणि उपनो । केतलेंक दिनें तेहनो जन्म थयो एतलें अकस्मात पेटशूल रोग पीडा थकी पीतानो नास हुओ । तुरत ते बालकने लावी पाट तषतें बेंसारयो । ते माटे एहनुं नांम संप्रति राजा कहीइं । अनुक्रमें योवन अवस्थाइं पाम्यो । एहवें केतलेंक दिने श्री आर्यसुहस्ति सूरी (१३–१) उज्जेणीई चौमासु आव्या । तिहां दीवालीइं जूहार भटारें दिनें श्री गोतम केवलोछव महिमाइं श्री वीरचैत्यें रथ जात्राइं समस्त संघयुक्त महामहे राजपंथे जातां गवाक्षे वातायनि बेठा थकां संप्रतिइं श्री गुरुने देषी, जातिस्मरणे पूर्व भव दीठो । मनस्यूं चिंतवे, ए गुरि पाहिलां रंकने भवें मुजने महा उपकार, दीक्षा देइनें, कीधो छें । एहवो वीचारी गोख थकी उतरी गुरुने वांदी, कहें मुजने तुंमे ओलखो छो? । गुरु कहे, मालवाधीश प्रबल पून्यनें जगत ओलखें । ते सांभली संप्रति कहें इणहीज नगरनो हुं क्षत्री रंक नव दीक्षित चेलो तुमारो, ते माटें तूंहि कृपा करी मुजनें धर्म उपदेश कहो । तिवारें संप्रतिनें गुरु कहें अथ श्लोक—

Aho ! Shrutgyanam

दिने दिने मंगलमंजुलाली
सुसंपदा सौख्यपरंपरा च ।
इष्टार्थसिद्धिः बहुला च बुद्धिः
सर्वत्र सिद्धिः सृजतां सुधर्म्मम् ॥ १ ॥

अतः कारणात् सर्वत्र चंद्र बल तारा बल ग्रह बल दृग्-बल बाहु बलादिभ्यो बलवत्तरं धर्म्मबलं विलोक्यते ॥२॥

बीजेनैव भवेद्बीजं (१३–२) प्रदीपेन प्रदीपकम् ।
द्रव्येणैव भवेद् द्रव्यं भवेनैव भवांतरम् ॥ ३ ॥

एहवो उपदेश श्री गुरु मुषनो सांभली; संप्रति कहे, हे कृपानिधी ! उत्तम गतिना जाणहार रूडा जीव, तेहना कुंण आचार हुइ ? गुरु कहें हे संप्रति ! हे माहामतिना स्वामी, सांभल । उत्तम प्राणीना एह आचार हूइं । श्लोक—

अधः क्षिपंति कृपणा वित्तं तत्रायियासवः ।
संतस्तु गुरुचैत्यादौ तदुच्चैःपदकांक्षिणः ॥ १ ॥

एहवो वचन उपगारी गुरुना मुषथी सांभली समकित लही सूकृत करतो हुओ, संप्रति नृप, जिन प्रसाद मंडित प्रथवी शोभावतो हुओ । तेहनी संख्या—सवा लाष नोतन प्रसाद निपजायतो हूओ । तेहनें बारणें बे 'हजार धर्म-शाला निपजावी । सवाकोटी श्री जीनबिंब कीधा । ते मांहि पंचाणुं हजार धातूना बिंब । शेष बिंब उपलना राता, पीला, सांम, स्वेत, जाणवा । इग्यार हजार वापिका तथा कूंड नीपजाव्या । कोइ तेरा हजार पण कहें । छत्रीस हजार जिर्णोद्धार निपजाव्या । ते किम, दिन प्रतें एक प्रासाद जीर्णोद्धार नीपजानी (१४–१) वधामणी आवें, ते द्वारपालक बीजे दीनें कहे । एटलें संप्रतिनु आयु वर्ष सोनुं जाणवूं । । अनें सो वर्षना दिवस छत्रीस हजार हूया । ए प्रमाणें जीर्णोद्धार जाणावा । ते मांहि मुख्य जीर्णोद्धार श्री समलीका वीहारनो नीपजाव्यो ।

हवे ते श्री शकुनिका विहारनी उत्पत्ति कहे छें । श्री नर्मदा उपकंठे भृगु क्षेत्रि कोरंटक वने आम्ली वृक्षे एक समली पोताना बालक सहित रहे छें । ते निरंतर पोताना बालकने पोखें । एटले पाटकी बीचारें जे ए समली बाचस्यू सबलो मंस बिगाडें छें । एटले समली आवी चांच पूटें मांस खंड लेइ वड वृक्ष साखायें बेठी । तेतले खाटकीए बाणें करी विंधी । मारग विचमां भूमीइं पडी । एहवें कोइक जैन गृहस्थे नमस्कार संभलावीओ । ते समलीइं सांभल्यो । एतलें पोताना बालक उपरें मोह न आंण्यो । नवकार सद्ह्यो । तेहना महिमा थकी मरण पांमी सीहल द्वीपना राजा श्रीचंद्र घेरे बेटी उपनी । ते वृधवंती हूइ । एकदा पितानें साथें ते कार्यार्थे भृगुकच्छे आवी (१४–२) । ए बजारें दाटें ऋषभदत्त व्यवहा-रियाना मुषथकी नोकार सांभली जाती स्मरण पांमी पाछिलो समली भव दीठो । ते पासें थकी नोकार शि-ख्यो । जैन धर्मि श्रधावंत हूइं । जे ठेकाणें बांणे विंधाणी भूमीइं पडी हूंति तिणहिज ठेकाणे विद्यमांन शासन श्री वीसमा तिर्थंकरनो जांणी बावन्न देवकुलिका सहित प्रासाद नीपजावी श्री मुनिसुव्रत स्वामीनो बिंब थाप्यो । ते प्रासाद मांहिं वड वृक्षे समलीनु स्वरूप कीधु । ते बालीका सील धर्म आराधी तीव्र तप तपी मरण पांमी इशान बीजें देव लोकें देवता पणें उपनी । यतः

हरिवंशभूषणमणि
भृगुकच्छे नर्मदासरें तीरं ।
श्री शकुनीकाविहारे
मुनिसुव्रतजिनपतिर्जयति ॥ १ ॥

इति शकुनीका वीहार उत्पत्ति ॥

पुनः संप्रतिये उत्तर दिस मरूधरि धंधाणि नगरि श्री पद्मप्रभ स्वामीनो प्रासाद बिंब नीपजाव्यो । वीजा-गीरी पासनो प्रासाद निपजाव्यो । ब्रह्माणी नगरी श्री हमीर गढीं श्रीपास प्रासाद बिंब नीपजाव्यो । इलोर गिरि सिषरें श्री नेमी बिंब थाप्यो (१५–१) । ते दक्षण दिसें जाणवो । पूर्व दिसि रोहिसगीरें श्रीसूपासनो प्रासाद बिंब नीपजाव्यो । पश्चिमें देवपतनें पूनः इढर गढें श्री शान्तिनाथनो प्रासाद बिंब निपजाव्यो । पूनः पूनः संप्रति स्व प्राक्रमे त्रिखंडाधीश मंगल श्रेणी निश्रितें सदैव सूर्योदये अष्टोतरी, एकवीस भेदी, सत्तर भेदी, अष्ट भेदी, नवपदादी, मन पवीत्रें श्री जिन भक्ति साचवें । पूनः श्री सिद्धगीरीं । १ । रेवंतगीरी । २ । श्री शंषे-स्वर । ३ । नंदीय । ४ । ब्राह्मण वाटक । ५ । रथ

Aho ! Shrutgyanam

जात्रादि प्रमुख महातीर्थ जाणी वर्ष मांहिं वार च्यार संघपति हूई। जात्रानो लाभ कमावें। प्रचूर चित्ते सप्त षेत्र वित्त वावतो हुओ, मार सब्द मुखें न कहें, कानें पण मार सब्द सांभलें नही। न्याय घंटा वाजे। एहवी रीते संप्रति न्याय धर्मि राज्य करें छे। एहवें एक साधु मास षमणनो चोवीहारी तप संपूर्ण काउसर्गपारी गिरि-गुफा माहिंथी नीकलो, उजेणी नगरें पारणाने दि आहार अर्थे आव्या। तिहां दुर्भिक्षने योगें भिखारी वणा हूआ। कोइ तेहनें अन्न न आपें ; एहवे ते साधुनें तपस्वी जाणीनें (१५--२) गृहस्थे कमाड उघाडी घरमांहि लीधा। साधुयें पारणो करी पूनः अठाइ पचखी, आवी गुफाइं निश्चल काउसग ध्यानें रह्यो। एतलें सघले भिष्यारीइं मली चिंतव्युं जे ए यती तरत आहार लेंइ गयो छे, तिहां भिखारीए आवी तेह तपसीनो उदर विदारी अन्न षाधो। नगरमां वात प्रसिद्ध थई। संप्रतिइं यतीघात जाण्यो। श्री केवली तीर्थंकर वचनानुसारें भस्मग्रहनें योगें दिन रहांणीनों समय जांणी संप्रतिइं समग्र देशें श्री आर्य सुहस्ती प्रमुख साधु समुदायनें घणे आग्रहें महा महोत्सवें वेंसूकृत (?) धर्मशालाइं पधराव्या। कपाट दुआ छें नही। पूनः संप्रति राजाइं पोताना दास तथा घरनी दासी तेहनें साधु साधवीनो वेष देइ अनारज देसें विहार कराव्यो। वणा गाढा मिथ्यात्वीनें समकीत पमाडी आर्य जैन कीधा। इत्यादि उत्तम सूकृतें करी इह परभव आत्मा कल्यांणनु हेतु जाणी (१६-१) नीपजावी, कौरव कुल मोरिय वंस सोभावी संप्रति नृप सो वर्ष आउ संपूर्ण, सदगतिनो भजनार हूओ।

गाथा—कोसंबीए जेण दमगो पव्वाविओ तओ जाओ।
उजेणीए संपइ राया सो नंदओ सुहत्थी ॥१॥

इति संप्रति नृप संबंध ॥

ए श्री आर्य सुहस्ति सूरि लघु गुरुभाइ ते गछना पटोधर हूआ, अने वडा गुरु भाइ आर्य महागिरि सूरि तेहूणें जिन कल्पनी तूलना कीधी। दाक्षिण पणें राज्य पिंड लीधो। ते मार्टे विहूं गुरु भाइनें मांडली आहार पांणीनों व्यवहार जूदो हुओ। श्री महागीरी सूरीइं सम्मित शिषरनी यात्रानें हेतें पूर्वदेशें विहार कीधो। तेहनी च्यार पेढीनें आंतरें श्री देवढी क्षमाश्रमण हूआ। हिंवे श्री आर्य सुहस्ती सूरीइं वर्ष त्रांस संसारी पद भोगवी श्री स्थूलीभद्र स्वांमीने हस्ते दीक्षा लीधी, अनें वर्ष चोवीस शिष्य पणें गुरुनी सेवा कीधी। पुनः वर्ष छहेतालीस युगप्रधान पद भोगवी सर्वायु वर्ष सोनुं संपूर्ण श्री वीर मुक्ति हूआ पछी वसेंनें एकांणु वर्षे श्री आर्य सु (१६--२) हस्ती सुरी स्वर्ग हूआ ॥ पाट ८ ॥

९ तत्पट्टे श्री सुस्थित स्वामी ॥ १ ॥
लघु गुरु भाइ श्री सुप्रति बद्ध स्वामी ॥ २ ॥

ए बिहू गुरु भाइनो व्याघ्रापत्य गोत्र छें। ते माहिं श्री सुस्थित स्वांमी ते पटधर जाणवा अनें लघु भाइ श्री सुप्रतिबद्ध स्वांमी ते गछनी चिंताना करणहार हूआ। ते माटें ए बिहू गुरुभाई नांम जोडें लख्यां छें। पूनः ए बेहू गुरु भाइइं आलीयखंडे काकंदी नगरीइं, महर्षि गौतम कथक जे सूरी मंत्र तेहनो कोटिवार स्मरण कीधो। तिवारें नवमा पाट थकी कोटिक गछे एहवो बीजो नाम प्रगट हुओ। ते पहिलां श्री सुधर्मा स्वांमी थकी मांडी आठ पाट सुधी निग्रंथ गछ एहवो नांम कहेंवातो। तेहनें सर्व आयु संपूर्ण श्री वीर मुक्ति हुआ पछी वर्ष त्रिणसें अनें बहोतर वितकें थकें श्री सुस्थित स्वांमी स्वर्ग हुओ। पूनः श्री वीर निर्वाण हुआ पछी त्रिणसें अनें उगणासी वर्ष वीतें, श्री भृगुकछ नगरें श्री आर्य खपूटाचार्य प्रगट हुआ। पाट ९ मो।

१० तत्पट्टे श्रीइंद्रदिन्न सूरि।

अनें लघु गुरु भाइ बीजा श्री प्री (१७--१) यग्रंथ सूरी। तिहां वृद्द गुरु भाई श्री इंद्रदिन सूरी तेहनो कौसिक गोत्र छे, लघु गुरु भाइ प्रीयग्रंथ सूरी तेहनो कासप गोत्र छें, श्री इंद्रदीन सूरी विहरता मुढेरीइं पुहूता। एहवें श्री वीर मुक्ति हुआ पछी च्यारसें सीतर वर्ष गया हुंते मालव देशें उजेणी नगरें परमार वंसें राजा श्री विक्रमादित्य प्रगट हुओ। तेह वर्षनु मान कहें छें। श्री वीर चिरं (?) पालक राज्य वर्ष साठ। नंद राज्य वर्ष १५५। मोरिय राज्य वर्ष १०८। पुष्फमित्र राज्य

Aho ! Shrutgyanam

वर्ष त्रीस । बलमित्र १ भानुमित्र २ श्रीकालिकाचार्यना भांणेज तेहनो राज्य वर्ष साठ । नरवाहन राज्य वर्ष च्यालीस । गर्द्दभिल राज्य वर्ष तेर । साकी राज्य वर्ष च्यार । श्री वीर मुक्ति हुआ पछी च्यारसें छनु वर्ष गयें दक्षिण दिसें श्री गोदावरी नदीनें कांठे पइठाणें भूजंगा धीप सानीध थकी श्री शालीवाहनो साको प्रगट हूओ । एवं वर्ष च्यारसेंने सीतरनो मेल हूओ ।

श्री वीर मुक्ति हूआ पछी त्रणसेंनें वीस वर्ष गया पछी मोरीय राजानें राजें श्री आर्य सुहस्ती सूरीनें संवाडें (१७–२) पहिला श्री कालिकाचार्य प्रगट हुआ । तिणे सौधर्म्मेंद्र आगलें निगोदनो विचार रुप विवरो कह्यो। पुनः श्री पन्नवणा उपांग सूत्रना कारक ए चोथा युग प्रधान जांणवा । पुनः बीजा कालिकाचार्य श्री वीर मुक्ति गया पछी च्यारसेनें त्रेंहपन वर्ष वीतें बलमित्र–भानुमित्र राजानें राज्यें दक्षण दिसें गोदावरी नदीनें कांठे पइठाणें राजा श्री शालिवाहनना आग्रह थकी एकतालीस जैनाचार्यनी शाक्षिइं, श्री पर्व आयें हूते यक्षोत्सवें श्री पर्वनो अंतराय जांणी भाद्रवा सुद पांचमथी चोथ दीने पर्जुषण पर्व कीधो । एहनो विस्तार श्री कालिकाचार्यनि कथा थकी जांणज्यो ।

श्री वीर मुक्ति गया पछी च्यारसेनें एकवीस वर्ष गयें हूतें श्री इंद्रदिन सूरी स्वर्ग हुआ । हवें लघु गुरु भाइ श्री प्रीयग्रंथ सूरी श्री वीरसासननें प्रभावक हूआ । तेहनो संबंध कहे छें । अजयामेर गढीनी तलहटीइं हर्षपूर नगर वसें छें । एकदा तिहां विहार करता श्री प्रीयग्रंथ सूरी आव्या । एहवें छागनें होमवानें सकल (१८–१) मंत्रना जाण जग्न करता उद्यमी हुआ छे । एतलें जैन गृहस्थें गुरुनें जागनी वार्त्ता कही । तिवारें श्री गुरुयें सूरी मंत्रें वास मंत्री श्रावकने देइ, कह्या जे ए वास बोकडाने माथें ठवज्यो । जिम एहनें अभयदान हूसे अनें शासन पण उन्नत होसें । श्रावके गुरुइं कह्युं तिमज कीधु । एटले बोकडो देव अधीष्टत थकी आकाशें जाइ उभो रह्यो । यागकृत वाडव प्राति मनुष्य भाषायें, अरे विप्रो ! तुम्हे सांभलो, जेतला पसूनी देहीयें रोम होय तेतला हजार वरस सूधी पसूना घातनो करणहारनो जीव नरके रह्यो वेदना वेदे । यतः

महतामपि दानानां कालेन क्षीयते फलम् ।
भीताभयप्रदानस्य क्षय एव न विद्यते ॥ १ ॥

ते छागना एहवा वचन सांभली सकल मनुष्यना वृंद छागनें पुछें छे–जे तूं कूंण छें ? छाग कहे–हुं याचक देवता छुं । ए अज माहरु वाहन छे । तें माटें तुमें ए धर्म वांछो छो ते सर्व मिथ्या छें । साचा धर्म्मनी परीक्षा करो, तो श्री प्रीयग्रंथ सूरीनें पूछो । तिणें वाडवें गुरुनें धर्म्म पूछ्यो तिवारें सूरीइं, यत गाथा—

धम्मो मंगलमु (१८–२) क्किठं अहिंसासंजमो तवो ।
देवावि तं नमंसंति जस्स धम्मे सया मणो ॥ २ ॥

ए गाथाइ कही । ते सांभली सर्व वाडव प्रतिबोध पांमी दया धर्म्म प्रत्यें आराधता हूआ । श्रीगूरूइं बोकडानें अभयदानना देणहार जांणी कीर्त्ति हूइ । एतलें ए प्रीयग्रंथ थिवीरनें श्रीवीर सासनें प्रभावक कह्या ।

इति प्रियग्रंथ सूरी संबंध ।

एहवें अवसरें प्रथम तिर्थंकर श्री रुषभ पूत्र नमि १ विनमि २ तेहनी शाषायें विद्याधर वंशी श्री वृद्धवादी सूरी तेहना शिष्य श्री सिद्धसेन सूरी श्री कल्याण मंदिर स्तोत्रना करणहार प्रगट हूआ । तिहां प्रथम वृद्धवादी सूरीनो संबंध कहें छें । एकदा विद्याधर शाषाइं आ०श्री स्कंद सूरी विहार करता गोड देशें कोसलपूर नगरें आव्या । तिहां मुकूंद नांमे वाडवें वृद्धपणे गूरु वांणी सांभली बूज्यो । चिंतस्युं चिंतवें, जे शास्त्रने विषें पंडितें कह्यां छे ।

यथा चतुर्भिः कनकं परीक्षते
निवर्षणच्छेदनतापताडनैः ।
तथाहि धर्म्मं विदुषा परीक्षते
श्रुतेन शीलेन तपो (१९–१) दयागुणैः ॥१॥

शिव शासननें विषें ए च्यार आत्मशुद्धिना भेद माहिं एके शुद्ध नथी, एक जैन विना । तथा अभिनिवेश मिथ्यात्विना शास्त्र १ शील २ तप ३ दया परिणाम ४ ए च्यार वाना शूद्ध न कहिए । इम जैन दर्शननी साची

Aho ! Shrutgyanam

वस्तु जाणी श्री स्कंदलाचार्य पासिं मुकुंदें दीक्षा लीधी। वृद्धावस्तईं पिण रात्रें गाढिं स्वरें विद्यानो उद्यम करें। तिवारें गुरु कहें, भो महानुभाव! रात्रिं मोटे शब्दे न भणीयें। अनार्य मनुष्य जागे। खांडण पीसण आरंभे प्रवर्तें। तेहवें एक वृद्धा स्त्री ते साधु रात्रें भणतां घोष पाठ करतां ते डोसी कहें---रे साधु! तु घरटपणें भणीने स्यूं मूसल फूलावीस? अमने नीद्रा करवा देतो नथी। ते हेतुथी गाढे शब्दे अहेतु थाइं।

यथा यतः

जागरिया धम्मीणं अहमाणं तु सुत्तया सेइ।
वछाहिव भगोणीए अकहिसु जिणो जयं मिय॥१॥

इति भगवंत्यंगे।

एहवुं गुरुनु वचन सांभली रात्रि भणवुं मूकी दिवसें घोष पाठ करें। तिवारे गृहस्थ तथा लघु शिष्यादिक (१९-२) ते पिण हास्यि करी हसइं। ते किम जे तुम्हे गरढपणें गाढिं शब्दे भणीने किस्युं ते मुशल फूल्हावस्यो? ते हासु सांभली कास्मीर देशि पूंहूंतो सारदा मंदिरे उपवास करी बेंठो। निश्चलें सरस्वति प्रसन्न थइ। कहिं, वृद्ध! वर मांगी। हूं तुझने तूठी। ते कहे गरढपणें बुद्धि वांछुं। ते सांभली वाग्देवी कहइ, जा तूं विद्यापात्र हुओ। ते श्रुतदेव्यादत्त वर लई आवी गुरु वांदी बाजारनें विषइं घणा मनुष्य समाक्षि, ते डोसी समक्षि, सारदादत्त वरना महिमा थकी मुशल सूकूं हतूं तें नवपल्लव कूपलें करी शोभाव्युं फुलाव्युं। काव्य प्राह---

मुद्रो श्रृंग शक्र यष्टिप्रमाणं १
शीतो वान्हि २ मारुतो निःप्रकंप ३
यो पद छूते सर्वथा तत्र किंचिद् ४
वृद्धोवादी क किंमहीम्न वादी॥ १॥

गुरें विद्यापात्र योगजांणी आचार्य पद देइ श्री वृद्धवादी सूरी नाम दीधु।

इति वृद्धवादी सूरी संबंध॥

पुनः हवइं श्री कल्यांण मंदिर स्तोत्रना उत्पत्ती कहइं छइं। (२०-१) श्री वृद्धवादी सूरी विहार करता भृगु कछि आव्या। एहवइ मालव मंडले उज्जेणी नगरी कौशिक गौत्रे देवरषी नामइं वाडव रहि छइं। तेहनी देवशिका नामें स्त्री छे। तेहनो पूत्र कुमुदचंद्र नांमी महा षट् अंगनो जाण छइं। तिणें अन्य पंडितना मुष थकी वाग्देवी प्रशन्न थई श्री वृद्धवादीनो घणो महिमा सांभली अत्यंत गर्व धरी जे मुंजनें विद्यावादे जीतस्यें तेहनो हू शिष्य थाइस। एहवी प्रतिज्ञा धारी जिहां भरुयाच्छि श्री वृद्धवादी छइं तिहां आव्यो। एहवइं वृद्धवादी देह चिंताइं नगर बाहिर आव्या छे। तिहां बिहुं एकठां मिल्या। वनइं विषइं गोवलीया तथा पिंडारा गौ चांरइं छइं। कुमुदचंद्रि विद्यावादनो आसय जणाव्यो। तेह पिंडारानीं शाषीया करी विद्यावाद प्रारंभ्यो। तिहां प्रथम कुमुदचंद्रे संस्कृत वाणी कही। पिंडारा न समजइं। तें कहे, ए विद्या कांई नहीं। ब्रह्म तूं फोकट आरडे छे। मूर्ख छइं। तिवारें वृद्धवादि सूरी अव (२०-२) सरना जाण हुई। कल्पक रजोहरण कटिबांधी डंड उंचो हाथिं राषी प्रदक्षणा रुपी घेरणीइं नाचता हुआ मुषि इम भणिजे। अथ चालि---

नवी मारीइं नवी चोरीइं, परदारा गमण न कीजीइं।
थोडास्युं थोडुं दीजइं, तउं टगि मगि सग्गि जाइइं। १।
गाय भिस जीम नीलु चरइं, तिम तिम दूध दूणो भरइं।
तिम तिम गोवाला मनि ठरइं, छाछिं देयंतां ते हू वरइं।२
गुलस्यु चावइं तिलतांदुली, वेड वजावइं वांशली।
पहिरणि ओढणि हुइं धावली, गोवाला मन पूगी रली।३
मोटा जोटा मिल्या पिंडार, माहो माहि करय विचार।
महीषी दूझणी सरजी भली, दीइं दाबोटा पूगी रली।४।
वन माहि गोवाला राज, इंद्रतर्णि घरि ते नहिं आज।
भमर भिस दूझि बली सोल, सुखि समाधि हुइं रंगरोल।५
वाटउ भरीउं दहीनें घोल, जीमणो कर लेइ बेंसि बोल।
इणि परइं मुह मेलावउ करइं, स्वर्गतणी वातज वीसरइं६
हडहडाट नवी कीजें घणुं, मर्म्म न बोलीजे केह तणुं।
कूडी शिष म देज्यो आल, ए तुम्ह धर्म्म कहुं गोवाल।७
गर (२१-१) डस विच्छु नवी मारइं, मारंतओ पिण उगारिइं।
कूड कपटथी मन वारीइं, इणि पिरइ आप कारिज सारीइं।

Aho ! Shrutgyanam

गोवालीया उच्या गह गही, हर्षित थका ताली देता सही।
भलो एहीज डोकरउ, नही भणीओ एहीज छोकरउ ।९।
भट जे बोल्यो भूतप्रलाप, फोड्या कांन विगोइओ आप।
जीत्यो ए हरयो तुं हुला, पाए लागी करइं ए गुर भला।

ते गोवालीयाना वचन सांभली कुमुदचंद्र श्रीवृद्धवादीनें कहें हूं प्रतिज्ञा संपूर्णि । विद्यावादें हारयो । ते माटिं मुझने शिष्य करो । किसा थकी, तुम्हे समयना जाण अनि हुं समयनो जाण नहि । एतली माहरी बुद्धि काची । गुरें दीक्षा देइ ' कुमुदचंद्र ' साधु नाम दीधुं । केतलेक दिनें गुरुसंग थकी श्रुतधर हूया । अतिगर्वित थकी, एकदा श्रीगुरुनें कहें, गणधर गुंथीत जे प्राकृत सिद्धांत छइं ते सबला संस्कृत करुं । इम कही महा उद्दाम विद्यापणइं ' नमो अरिहंताणं ' ए सकल पंच पद प्राकृत छई, तेहनि संस्कृत निपजावी गुरुनें संभलाव्यो " नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु (२१-२) भ्यः " ते सांभली गुरु कहें—सकल गुण सम्र श्रीदेवाधिदेव सर्वाक्षर संनिपात लब्धिना धणी गणधरादि हुआ। अनि श्रुत केवली पिण आगिं हुया । पिण जे श्रीवीर मुखिं गणधरें त्रिपदी पांमीनइं मुग्ध प्राणीनइं उपगार नइं हेतूइं प्राकृत भाषाइं रचना कीधी । तेहनु वचन अन्यथा करइं ते अनंत संसारी हुइं । ते माटिं ' नमोऽर्हत्सिद्धा०' ए वचनें तुम्हनइं मोटी आलोयणा आवी । ते वृद्धवादी गुरुनो वचन सांभली कुमुदचंद्र चेलो गुरु पासें वृद्धनु वचन अन्य करयानी आलोयण मागई । तिवारइं गुरु कहेइं, गाढा मिथ्यात्वीनें प्रतिबोधी समकित पमाडी जैनपणु आदरावी गत तीर्थ पाछो वालइं तओ श्रीसंघि गच्छ मांडलइं आवइं । एहवुं गुरु १ संघ २ नु वचन माण करी एकाकी वीहार करता अवधुत वेंशि, बारमइं वर्षि, मालवदेसि, उज्जेणी नगरइं, परमार श्री वीक्रमार्क राज्यें शिप्रातटिं श्रीमहाकालेश्वरनि प्रसादि शिव लिंग उ (२२-१) परिं मस्तक देइ सुतो । बीजइं दिनिं प्रात समइं अर्चक सिवपूजक आव्यो । एतलें प्रोढ शरीर, लंब भुजा, विशाल अवयव, निःस्पृह, अबीह, देषी अर्चक कहइं—तूं उठि उठि । ए शिव भोलो भस्मयोगी तेहनें दूहवी किस्यूं मरण मागइं छे । इम गाढइं स्वरि अर्चक वार वार कहइं तेतलइं मनुष्य एकठा हूंआ । कहि उठि उठि । पिण किम हि न उठिं। तिवारें भरडइं विक्रम पोकारयो । वीक्रम कहीइं, ताणी घसरडी प्रासाद बाहि काढी नांख्यो । ते भरड राजाना अनुचर लई मनुष्यना समुदाय मीली उठाडवा लागा। पिण ते वज्र तुल्य । शिवनी आशातना जाणी पुनः अर्चक विक्रमइं पोकारें । विक्रमें शिव मर्यादा लोपी जांणी त्राजणा दीधा । ते त्राजणा रांणीनें प्राहार हुइ । रांणी आक्रंद करें । ते सांभली वीक्रम चित्तें चितवइं, जें ए महा कोइक सिद्ध पुरुष छे । एहस्यु प्राक्रम नही। विक्रम आवी हाथ जोडी नमी कहै—हे कृपानिधी ! मुज अपराध खमी तुम्हे प्रसन्नि प्रत्यक्ष थाओ । ते सांभली कुमुदचंद्र तत्काल उठी कहे, रे अहो ! वि (२२-२) क्रम, आ नगरइं तुज राज्यि किसी अन्याय वार्ता छइं । विक्रम कहेइं, ते अन्याय वार्ता कहो । तिवारइं श्रीकुमुदचंद्रइं धुरथकी विक्रमनइं अवंति सुकुमालनो संबंध संभलाव्यो । विक्रमनइं मनि संदेह हुओ । कहें तें परमेश्वर श्रीपास अवंतिनी तुम्हे कीर्ति कहो । तिवारें कुमुदचंद्र श्रीपार्श्वनाथ त्रेवीसमा तीर्थंकर तेहनी स्तुति रुपें श्रीकल्याणमंदिर स्तोत्र कहइं छइं । ते कहितां जेतलिं एकादशम काव्यें श्रीपार्श्व परमेश्वरिं पाहिलाथी काम राग जीतो छइं ते स्तवइं । " यस्मिन हरप्र० ११ " ए काव्य कहितां शिवलिंग थकी धूम्रज्वाला प्रगट हुई । पुनः कुमुदचंद्रि बारमा काव्यमां अद्भुत रसिं करी श्रीपार्श्वदेवनो महिमा वर्णवइं छे । " स्वामिन्नल्पगि० १२ " ए बारमु काव्य कहितां शिवलिंगनो तेज हीण हूओ । पुनः श्रीकुमुदचंद्र तेरमा काव्यमां वीर रसें करी श्रीपार्श्वनो धर्म्म वीर पणुं वर्णवइं छइं " क्रोधस्त्वया० १३ " ए तेरमूं काव्य कहितां शिवलिंग स्फोट हूई । पिंडीइं विरह हूओ । ते मांही थकी तत्काल (२३-१) श्रीधरणेंद्र श्रीपद्मावतइं सेवीत, पुनः पार्श्वयक्षक्ष १ वैरोट्या देवीइं २ युक्त श्रीअवंतिपासनो बिंब प्रगट हुओ । ते देखी वीक्रम वीस्मय पांम्यो । सकल मनुष्य युक्त श्रीपास प्रणमी बइठो ।

Aho ! Shrutgyanam

कुमुदचंद्र कहै, रे वीक्रम ! किहां ए हरलिंग अनि किहां राग द्वेष वर्जित ए परमेश्वर । यतः—

पापदावाग्निजलदः सुरेंद्रगणसेवितः ।
समस्तदोषरहितो निःसंगः कलुषापहः ॥ १ ॥
अस्य पूजानमस्कारप्रभावैर्भविनां विभोः ।
भवंति संपदो वश्या मुक्तिश्चापि गृहांगणे । २ ॥
सततमुच्चरितं येन जिन इत्यक्षरद्वयं ।
बद्धः परिकरस्तेन मोक्षाय गमनं प्रति ॥ ३ ॥

एहवा कुमुदचंद्रकथक स्तुती सांभली मिथ्यात्व शल्य टाली समकित धर्मि निश्चल हुओ । महामहोत्सवै श्री-अवंतिपास थाप्या । गुरु वचनें संघपति श्रीसिद्धाचलनो हुओ । पुनः महोग्र दानइं करी स्वसंवत्सर प्रवर्तावतो हुओ । निकंट एक छत्र राज्य भोगवी, पात्र अपात्रनी परीक्षा करी, एक शत अनि बाविस नतन प्रासाद नीपजा (२३-२) वी, सत शत जिर्णोद्धार करी, पर दुःख टालवा अग्रेश्वरी हुई, महा परमोपगारि थको परमार वंश शिरोमणि श्रीविक्रमादित्य सुकृतनो संचय करी सद्गतिनो भाजन हुओ । श्रीकुमुदचंद्र इणि परें गयु तीर्थ पाछो वाल्यो । गाढा मिथ्यात्वीनें गाढो समकिती कीधो । आवा बारें वर्षे श्रीवृद्धवादी गुरुनें वांदी आणा-धर्म लोप्यानी आलोयणा लेई, मिथ्या दुष्कृत देई, संघ शाखिं स्व गच्छ मांडले लीधा । श्रीवृद्धवादी गुरुइं पोतानिं पाटिं थापि श्रीसिद्धसेन सूरि नांम दीधुं । सम्मति ग्रंथ करता, अनुक्रमें विहार करतां, दक्षिण देशे प्रतिष्ठान पुरइं दिन ईग्यार अणशणिं, श्रीवीरमुक्ति हुआ पछी, च्यारसइ अनइं सितोतरि वर्षि पुनः विक्रम १८ वर्षि श्रीसिद्धसेन सूरी स्वर्गी हुओ । यतः—

सवे पभावगा तेय जिण शासण संसकारिणो जेओ ।
भवंतरेण चिणओ ए ए भणिया जिणमयंमि ।१।

इति सिद्धसेन सूरिसंबंध ॥

११ तत्पट्टे श्री दिन्न सूरि ।

तेहनो गौतम गोत्र । ए सुरीइं कर्णाटक देशिं विहार की (२४-१) धो । एक भक्ति विगय रहित जाणवा । ए सूरि चउद उपगरणना धरणहार हुआ । अत्र उपगरणनो विवरो । एहवे अवसरि चंदेरी नगरिं साधु शबनें दग्ध स्थिति हुई । ते पहेला साधुनी देह जिनावरने उपगारिं काम आविं एहवउ जांणी जल थलनें विषइं साधु एकठा थई परठवता । ते वार्ता वृद्ध परंपराइं गुरुमुखथी जांणज्यो ॥

१२ तत्पट्टे श्रीसिंहगिरि सूरि ।

तेहनुं कौशिक गोत्र । एहवइं

श्रीशांतिसूरि ॥ १ ॥
श्री सुधर्मसूरी ॥ २ ॥
श्रीआर्यनंदीसूरी ॥ ३ ॥
श्री शांडिल्यसूरी ॥ ४ ॥
श्रीहीमवंत सूरि ॥ ५ ॥
श्रीलोहीतसूरी ॥ ६ ॥
श्रीरत्नाकर सूरी ॥ ७ ॥

ए सात युग प्रधान प्रगट हुआ । पुनः श्री आर्य महागिरिना शिष्य स्थिविर श्री आर्य राक्षित सूरी । तेहनें संघाडें लब्धि संपन्न श्रीदूर्बलीका पुष्पमित्र सूरी प्रगट हूआ । तेहने भणावानइं घोष पाठ उद्यमइं करी सूर्योदये सेर दस घृत जटराग्निं जरतुं । पुनः नागार्जुन सूरी १ श्रीस्कंदिल सूरी । २ । श्रीपादालिप्त सूरी । ३ । औषधिइं पादलेप करी आकासमार्गिं उडी श्री (२४-२) सिद्धाचल । १ । गिरिनार । २ । सम्मित शिखर । ३ । नंदीय । ४ । ब्रह्माण वाटक । ५ । एवं पंच तीर्थनी यात्रा करी पाक्षिक तपनुं पारणुं करता हूया ।

श्रीवीरमुक्ति हूया पछी पांचसओ अनि पचवीस वर्षे श्री शत्रुंजय उच्छेद हूओ ।

श्री वीर निर्वाण हूआ पछी पांचसओ अनइं चुमालीस वर्षे गइं थकि छट्टो निन्हव रोहगुप्त नांमि प्रगट हूओ ।

श्रीवीर निर्वाण हूया पछी पांचसो अनिं सडतालीस वर्षे, पुनः वीक्रम २६४ वर्षे, श्रीसिंहगिरि सूरि स्वर्ग हूया ।

१३ तत्पट्टे श्रीवज्रस्वामी ।

हवि श्री वज्रस्वांमीनो संबंध कहे छइं । जंबुद्वीपे दक्षिणाऽर्धे भरते अवंति देशिं तुंबवन ग्रांमि गौतम

Aho ! Shrutgyanam

गौत्रइं श्रीधनगिरि रहइं छइं । तिणें सगर्भा सुनंदा स्त्रिनें घरें मुकी आर्य समती साला सहित वैराग्यें श्री सिंहगिरि सूरीनो उपदेस सांभली दिक्षा लेई गुरु साथि विहार कीधो । केतलेक दिनें घरे सुनंदानि बेटो हूओ । सुनंदानी सहीयर स्त्री ते बालकने रमाडतां कहइं—ताहरइं पिताइं दीक्षा लीधी न हुत तो (२५-१) जन्म ओत्सव करत । एहवा वचन स्त्रीनां ते बालके कानें सांभली जाति स्मरणइं पूर्व भव दीठो । चित्तिं चिंतवें जे हुं पिण चारित्र लेउं । एहवउ विचारी एकमनो थई घणु रुदन करी । तेह थकी सुनंदा घणी आकुली हूई । मनें चिंतवीं जे एहनो पिता आवे तउ तेहने आपुं । इम करतां षट् मासनउ हूओ । एहवि अवसरई श्रीसिंहगिरि सूरी शालाइं रह्या । तिहां धनगिरि । १ । अनि आचार्य समित । २ । ए बिहूं साधु गुरुनि आज्ञा लही तुंबवन ग्राम मांहिं आहारनी गविषणाइं जाइ छें । एतलें ज्ञान उपयोगी शकुन बिचारी गुरु कहे—हे शिष्य ! तुम्हनें आज गोचरीइं जातां सचित अचित जें मिलें ते लेज्यो । गुरुवचन अंगी करी ते बेहु मुनि संसारिक वंदाववा सुनंदा घरे पुहुंता । नगर मनुष्यइं वर स्त्रीइं ओलखी रुदन करतो बालक तेणीं पीडाती एहवी जे स्त्री कहइं 'आ सुत तुम्हारो तुम्हे लिओ ' इम कही बेटो धनगिरिनइं दीधो । एतलें तुरत रोतो रह्यो । ते बालक झोलाइं (२५-२) लेई गुरु वचन संभारी धर्मलाभ देइ धनगिरि गुरु पासिं आव्या । घणें भारइं बाह नमती देखी वज्रसमान भार जांणी गुरुइं वज्र कुमार नांम दीधुं । साधवीनें उपाश्रयें शिय्यातरि श्राद्धि सुश्रूषा साचवी । पालणइं पउढाडइं । रात्रिने विषइं साधवी इग्यार अंगनी सझाय करें । ते पालणें सूतां सांभलतां थका बालकने अंग इग्यार मुखि आवड्यां । इम करतां ते वज्र बालक त्रिण वरसनो हूओ । एतले तेजवंत पूत्र सुनंदा गुरु पासिं मागइं—मुनइं माहरो बेटो साधुजी आपो । गुरु कहें धरमलाभइं विहराव्यो बालक अम्हें पाछों न दीउं । इम करतां राजा समक्ष विवाद हूओ । राजा कहें—बोलाव्यो जेहनइं पासिं जाइं तेहनो ए बालक, एहवो राजानो वचन सांभली सुनंदाइं भांति २ नी सुखडी मूकी; गुरिं रजोहरण मुक्यो । एतलइं वज्र कुमार राजसभा समक्षि रजोहरण मस्तके लेइं नाच्यो; सुषडी अनि माता साहमुं न जोयुं । तिवारें ते देखी सुनंदा विचारइं, जे माईइं १ स्वामिइं २ (२६-१) अनइं बेटइं ३ पिण दीक्षा लीधी । हवि संसारइं रह्यो मुझनइं कुण आधार । एहवउ जांणीनइं श्री सिंहगिरिपासि सुनंदाइं दीक्षा लीधी । वज्र कुमारइं आठ वर्षनइं दीक्षा लेइं दश पूर्व भण्या । एकदा श्रीसिंहगिरि बाहिर्भुमी गये हुतइं अन्य साधु नगर मांहिं आहारनें अर्थि गया छइं । एहवइं शालाइं यंत्रकपाटि बाल लीलाइं साधुनी उपधि एकठी करी । विद्यार्थी ना भणइं । एहवइं इग्यार अंगनी वांचना दीइ छइं । एतलइं गुरु शालानें द्वारें विवर थकी गुप्त पणइं रह्या ते सघलो व्यतिकर देषी, जोग्य जांणी, श्री सिंहगिरि सूरिइं दश पूर्वधर वज्रनें पोतानें पाटिं थाप्या । श्री सिंहगिरि सूरिनी आज्ञा लही, पांच शत मुनि साथि पूर्व दिशि थकी विहरता उत्तर दिशिं आव्या । श्री वज्र स्वांमी तिहां दुर्भिक्षियोगिं संघ सिदातो जांणी पूर्व भव मित्र जृंभिक देवार्पित आकाशगांमिनि विद्याइं श्री संघनें बार योजन कल्पकनो विस्तार, अडसठि कोठइं (२६-२) निपजावी सुभिक्षइं महानसी पुरइं मुक्या । पुनः श्री वज्र सूरी उत्तर दीशि थकी विहरता दक्षण पंथि तुंगिया नगरइं चोमासइं रह्या । तिहां रस विकारना जोगथी श्लेष्म हुओ । शिष्य प्रति श्री वज्र सूरी कहइं—जिवारइं आज तुम्हें आहारनें अर्थि गृहस्थनें घरें जाओ तिवारें शुंठिनो खंड याचि लावजो । तिणें शिष्यें तिमज सुंठि लावि गुरु हस्ते दीधी । गुरिं कर्णें ते शुंठि थापि चिंते जें आहार करी ए खंड वावरिसु । आहारने करवइं ते सुंठि खंड वावरवी वीसरी स्यांजेनी पडिलेहण करतां, मुष वस्त्रिका पडिलेहतां, कर्ण थकी सुंठी खंड प्रथवीइं पड्यों । ते देखी पोतानो प्रमाद तथा विसरण पणुं जांणी विचारइं, जे हूं दश पूर्वनो धारक तेहनिं ए किंम वीसरी ? उपयोग दीधइं थकी पोतानुं आयु थोडुं जांणी पोताना शिष्य श्री वज्रसेन, तेहनि पोतानें पाटइं थापी, कहें तुम्हे सोपारक पत्तनइं विचरो । तिहां

Aho ! Shrutgyanam

बार वर्षनइं अंतरइं, दुर्भिक्षनइं योगि, लक्ष द्रव्यें, एक हांडी खीरनी विष मिश्रि (२७–१) त थकिं मरणें, श्रे० जिनदत्त, भा० ईश्वरी, पूत्र च्यार, उत्तम पात्र छइं, तेहनइं अभयदान दीओ । इम कहीजो, जे बार हजार जिहांज जुगंधरीना भरया वाहण आवस्यें । समुद्रथी पर द्विपथी आवसी । ए उपकार तिहां जाइं करो । एहवा श्री गुरुनी आज्ञा लही श्री वज्रसेन सुरीइं विहार करता हूवा । एहवी श्री वज्रसेननइं युगप्रधान पदवी हुइं । ते समयइं बीजो उदय हुओ । वीर मुक्ति हुयां पछी छसइं सोले वर्षः ।

हवि श्री वीर निर्वाण हूआ पछी श्री वज्रसुरीनो च्यार सय अनिं पंचाणुं वर्षे जन्म हुओ । वर्ष आठ गृहस्थ पणइं रह्या । अनि वर्ष चुमालीस शिष्यपर्णी श्री सिंह गिरि गुरुनि सेवा कीधी । वर्ष छत्रीस युगप्रधान पद भोगव्युं । सवलुं आयु वर्ष अठ्यासि संपुर्णि । श्री वीर नीर्वाण हुआ पछी पांचसि अनि चौरासी वर्ष गये हूतइं, दक्षिण दिशि, मांगिया नामिं पर्वतनइं विषइं शिलाउपरि अणशणि, श्री वज्र स्वांमी स्वर्ग हुआ ।

श्री वज्र स्वांमी नामि वाज्रि शाषा कहिवाणी । पुन इणहिज वर्षि गोष्टामाहिल्ल नामिं सातमो निन्हव प्रग- (२७--२) ट हुओ ।

जिम श्री जंबू साथि दश बोलनो विच्छेद हुओ तिम श्रीवज्र साथइं, चोथु अर्ध नाराच नांमा संघयण । १ । अनि दश पूर्व २ ए बिहु उत्तम बोलनो विच्छेद हूओ ।

महागिरिः १ सुहस्ती २ च सूरिः श्री गुणसुंदरः ३ ।
श्यामाचार्यः ४ स्कंदिलाचार्य ५ रेवतीमित्रसूरिराट् ६
श्रीधर्म्मः ७ भद्रगुप्त ८ श्च; श्रीगुप्तो ९ वज्र सूरिराट् १० ।
युगप्रधामप्रवरा दशैते दश पूर्विणः । २ ।
चंद्रकुलसमुत्पत्तिपितामहं महाविभुं ।
दशपूर्वनिधिं वंदे वज्रस्वामिमुनीश्वरं ।। ३ ॥

अत्र श्री वज्र वर्णन । उक्तं च—

किं रूपं किमुपांगसूत्रपठनं शिष्येषु किं वाचना
किं प्रज्ञा किमु निस्पृहत्वमथ किं सौभाग्यभंग्यादिकं ।
किं वा संघसुमन्नतिः सुरनातिः किं तस्य किं वर्णनं ।
वज्रस्वामीविभोः प्रभावजलधे रेकैकमप्यद्भुतं ।। १ ॥

ए वज्रस्वामी संबंध अन्य चरित्रे विस्तार छे, माटे लवलेश कह्यो ।

१४ तत्पट्टे श्रीवज्रसेन सूरी ।

तेहनु भारद्वाज गौत्र । गुरु श्रीवज्र-स्वामीने वचनें विहार करता समुद्र तटे सोपारक पुर पत्तनें शालाइं (२८–१) रह्या । मध्यानें सलहड गौत्री श्रे० जिनदत्त, तेहनी स्त्री ईश्वरी, तेहनें बेटा च्यार नागिंद्र १ चंद्र २ निवृत्ति ३ विद्याधर ४ ए नामि छइं । तेहने घरें श्रीवज्रगुरुना वचनानुसारे भिक्षार्थ युहुता । एतलइं स्त्री भरतार विष मिश्रित आ-हार देखी सांहमी दृष्टि संज्ञाइं कहइं, श्रीगूरु ! तुम्ह यो-ग्य निर्दोष आहार नहिं छइं । ते सांभली श्रीवज्रसेन कहें, ए आहार भूमिकाइं शरण करो । गृहस्थ कही, विषम समइं मर्यादावंत गृहस्थनी मर्यादा किम रहइं । वज्रसेनजी कहइं प्रभातिनइं समयइं खाडीइं जिहाज युगं-धरी धानि भर्यां आवस्यइं । ते गूरु वचन सांभली विष हांडी भू शरण करी । व्यवहारीओ जिनदत्त, स्त्री इश्वरी, पुत्र च्यार युक्त हाथ जोडी श्री वज्रसेननें कहइं, तुम्हे महामूनि निस्पृह छो । जओ तुम्हारुं वचन सत्य हुस्ये तओ अम्हे तुम पासें व्रत लेइस्युं । ए प्रतिज्ञा लेइ महा श्रद्धावंत थया । श्री सूरि शालाइं आवी स्मरण करतां बार पहूर संपूरण हुआ । समूद्रीं जिहाज युगंधरी (२८-२) इं भरया आव्या । वणो सुभिक्ष हुओ देखी श्री अभयदानना दाता जाणी जिनदत्त, स्त्री इश्वरी, नागिंद्र १ चंद्र २ निवृत्ति ३ विद्याधर ४ ए च्यार बेटा युक्त श्री वज्रसेन सूरीपासें दीक्षा लीधी । अनुक्रमि ते च्यारे जणा केतलेक उणां दश पूर्वधर हुआ । ते चिहूंनें आचार्य पदि कीधा । नागिंद्र १ चंद्र २ निर्वृति ३ विद्याधर ४ च्यारथी ए च्यार शाषा प्रगट हुई । अनिं तिणें चिहूए पिण एकविस आचार्य कीधा । तेह थकी तेहनें नामिं चुरासी गच्छ कहिंवाणा । एतलइं श्रीवीर निर्वाण हुआ पछी पांचसे ब्यासी वर्ष गयइं हूते ए च्यार शाखा प्रगट हुई। ए च्यार शाषा जाणवी ।

Aho ! Shrutgyanam

तीहां थकी श्री वज्रसेन सूरी केतलेक दीने विचरता श्रीसोरठ देसि मधुमतिइं कपर्दि नामी वणकर वसेछे, तेहनीं घरीं आडी १ अनी कुहाडी २ नामी बे स्त्री छइं, पिण ते कपरदी तेहनीं अभक्ष १ अपेय २ ए बिहूनो अणाचार जांणी प्रहार रूपें शिक्षा दीइं छइं । एहवे श्रीवज्रसेन सूरीयें ते वणकरनिं दूषीयो दे (२९-१) षी बहिर्भूमि जातां थकां श्रीगूरुइं कोमल वचन बोलाव्यो। कही, रे कपर्दी ! तु अम्ह पासिं आवी । ते कपर्दी पिण आवी हाथ जोडी उभो रह्यो । एहवइं श्री गूरुइं आगिम ज्ञान करी दृष्टि दीधी, सुलभ बोधी जांण्यो । वली तेहनुं आयु घडी २ नुं जांणी गूरु श्रीवज्रसेने कहियों, अहो कोकिल ! तुनें महाकष्ट देखिं छइं । तूं धर्म करी पच्चखाणनु परमाण कर, जिम कष्ट मिटें । ते गूरुनुं वचन सांभली विनयवंत कपर्दी कहें, श्री गुरु ! ते पच्चखांणनी मुझने कृपा करो । तिवारें गुरु श्री वज्रसेन कहें-' नमो अरिहंताण ' इत्यादि नमस्कार मुष थक उचारी, पछी कटी दोरानी गांठी छोडि एक ठिकांणे बेठां भोजन १ अनि जल लेवूं २ । पछी तीमहीज कटी दोरानी गांठि बांधीं । ते गुरु वचन कपर्दी अंगि करी, ते व्रत उचर्युं । एहवई तिण हिज दिनें सर्प्प गरल व्याप्त अमिस खंड तेहनो भोजन हुओ । तेहथी ते कप्पर्दी मरण पांम्यो । पच्चखाण अंगी (२९-२) कन्याथी ते महिमाइं अणपन्नी-पणपन्नी मध्ये उपनो । अवधि ज्ञानइं जाण्यो, पोतानो पाछिलो भव । नमस्कार सहित पच्चखाण महिमा मोटो दीसें छे। हवी गुरुइं पच्चखांण शिषव्यो पहिलें भोजनें तूरत मरण पांम्यो जांणी बिहूं स्त्री मिलि राजाने पुकारिओ-जे इणि महात्माइं कांइक शीषवी मारीओ । राजाइं श्री वज्रसेन गुरुने राव लेवा बेसार्‍या । कहे, तुम्हे साधु थई किम ए स्त्रीनो स्वांमी मार्‍यो ? एहवे कपर्दी पोताने ज्ञाने करी जुइं । एतले उपकारी गुरुने कष्ट जांणी गांमप्रमाणे देव शक्तिं पथर शिला निपजावी, आकाशे रहयो, सकल लोकनें कहें--ए मूझ गुरु प्रत्यें खमावी प्रणमो ! नहि तो आ शिला गांम उपरइं पाडुं छुं । ए गूरु मूझ प्रतिं महा उपगारी छइं । तिणे राजाइं मरणना भय थकी श्रीवज्रसेनने प्रणमी शालाइं पधराव्या । एतलि कपर्दीइं शिला संहरी प्रसन थई राजादि लोक समक्षि ए गाथा कहें--

मांसासी मज्जरओ इक्केण चेव गंठिसहिएण ।
सोहं तंतुवाओ (३०-१) सुसाहुवाओ सुरो जाओ ॥

श्री गुरुने वांदी, कहइं, मइं श्री भगवान ! किस्या कर्म कीधा, इम कही, ते तुमहं कृपावंत करुणासमुद्र हित करी कहो । ते सांभली गुरु कहइं--तें पूर्व भवि मोटा पाप कीधा । पिण तेहनी पवीत्रतानी हेतुइं सकल कर्म्म क्षालणइं श्री सिद्ध क्षेत्र गिरिइं श्री संघने साहय्यना कारक थाओ । श्री रुषभ परमेश्वरनी भक्तीमां रहओ । ते श्री वज्र गुरुना वचन सांभली कपर्दी यक्ष हर्ल्यो । कहे, मुज जन्म कृतार्थ हूओ । जे ए महातिर्थनि भक्ति मुजने उदय आवी । ए तीर्थ किस्यो छे--

यत्र बहुकोटिसंख्यासिद्धिमगुः पुंडरकिमुख्यजिनाः ।
तीर्थानामादिपदं स जयति शत्रुंजयगिरीशः ॥ १ ॥

एहवी बहुमानइं स्तुति करतो थको ते व्यंतर श्री सिद्धाचली कपर्दी नामा यक्ष श्री संघने कूशल कारक हूओ । एतलि विरति मास एकताइं कीजइं तओ ओगणत्रीस उपवास कीधानो लाभ हूइं । काव्यं--

यः पूर्वे तंतुवायः कृतः सुकृतलवैर्दुरितः पूरितो यत् (१) प्रत्याख्यानप्रभावादमरमृगदृशा (३०--२) मातिथ्ये यः प्रपेदे । सेवाहेवाकशालिप्रथमजिनपदांभोजयोस्तीर्थ-रक्षा--दक्षः श्री यक्षराजः स भवतु भवतां विघ्नमर्दी कपर्दीः । १ ।

इति कपर्दी संबंध ॥

हवइं श्री वज्रसेन सुरिइं वर्ष नव गृहस्थ पणुं भोगवुं । वर्ष एक सो अनि सोल श्री वज्र स्वामी गुरुनी सेवा शिष्य पणे कीधी । अनि वर्ष त्रिण युगप्रधांन पद भोगवुं । सर्व आयु वर्ष एकसओ अनि अठ्ठावीस संपूर्णी, श्री वीरमुक्ति हूया पछी छसय अनि वीस वर्षे, पुनः श्री विक्रमादित्य थकी एकसो अने आठि वर्षे श्री वज्रसेन सूरी स्वर्ग हूआ ।

एहवे श्रीवीर मुक्ति हूआ पछी पांचसे अनि सीत्तर

वर्षे श्री सिद्धि क्षेत्रि सा. जावडें तेरमो उद्धार कीधो ।

श्रीवीर मुक्ति हूआ पछी श्री वज्रसेन सूरी चिरं राज्ये वर्ष छ सय अनि नव गये हूंतें, पुनः वीकमथी १३९वर्षि दक्षिण दिशि कर्णाटक देशी दिगंबर नामि सर्व विसंवादी सातमें बोलनी परूपणा थापि आठमो ए निन्हव हूओ ।

पुनः श्री वीरनीर्वाण पछी छ सतनें बीसें वर्षे श्री (३१–१) गिरिनारें सा जावडें उद्धार कीधो ।

१५ तत्पट्टे श्री चंद्र सूरि

तेहनां सलहड गोत्रः श्री वज्रसेने चंद्र शाषानो उदय जांणी च्यार गुरु भ्रातामध्यें श्री चंद्रसूरीनिं पाट थापना कीधी । अन्य त्रण गुरु भाई शालाइ रह्या घणा गौत्र प्रतिबोध्या । श्रीचंद्र गछ एवुं बीजु नाम काहिवाणुं ।

पुनः विक्र० संव० ३७७ वर्षे निर्वृति कुलि राज चैत्र गच्छीय आ० श्री धनेश्वर सूरी । सवालाख ग्रंथ श्री सिद्धाचल महातीर्थनो महिमा हूतो । तिवारे वलभी नगरें श्री शिलादित्य राजाइं अल्पायु अनि विकल्प घणा जांणि ते पूर्वग्रंथ सवालक्ष हुंतो ते माहि थकी सार २ संबंध दश हजारनइं संख्याइं उद्धरीनें श्री सिद्धाचल महात्म कीधो ।

हविं ब्रह्म द्वीपीका शाषानी उत्पति कहइं छइं । आहिर देशी अचलपुर नगेर परिसरें कृष्णा अनि बेन्ना एहवे नामइं बिहुं नदीनी वीचली ब्रह्म नामी द्वीप छे । तिहां च्यारसें अने नियाणुं तापसनि परिवारि देवशर्म्मा नांमि कुलपति रहे छे । तें मुख्य देवशर्म्मा आ (३१-२) पणो महिमा वधारवा सर्व तापसने बिहुं पगने विषि उषधी लेप करी संक्रांतिना पर्वना पारणानि दिने बेना नदीना जल उपरी हिंडी अचलपुरे आवे । ते चमत्कार देषी मीथ्यात्वी गृहस्थ भोजन देइ प्रसंसा करे । तपस्वी महा तप सक्ति चमत्कारिं छे । जैननी नींदा करी श्राद्धने कहे तुम्हारा जैन मांहि कोइ एहवा प्रभावक नथि । एहवे तिहां विहार करता श्री वज्र स्वामीना मांमा श्री आर्य समिति सूरी आव्या । तिवारें जैन गृहस्थे तापसनो सर्व संबंध कह्यो । ते गृहस्थ वचन सांभली गुरु विचारी जे कोइक औषधीना जोगथी कपट छइं पिण तपशक्ति नहि । गुरें श्रावकने तेडी कह्यां ए तपासनें रुडि परि बि पग धोइ जीमाडज्यो । गृहस्थे तिमज कीधुं । अमारो हर्ष छइं इम कही बलात्कारिं देवशर्म्मा तापसें ना २ कहितां बि पग घणि प्राक्रमि करी धोया । भोजन देइ बोलवा लोकवृंद साथइं हूया । पादलेप औषधी धोया थकी नदीमां अर्द्ध विचालइं बूडवा लागो । तिवा (३२-१) रे लोके कपट कही निभ्रंच्छीओ । मुष झाषो हूओ । तेहवइं तेहनी प्रतिबोधवाने श्री आर्य समिति सुरी तिहां नदी तटिं आवी सकल लोक वृंद देषतां, चिपटी देई गुरु कहे—है वेन्ने । अम्हे पेलइं पार जावा वांछुं छुं । ततलें नदीना बिहूं कुल एकठा मिल्या । सकल लोक मनि विस्मय हूओ। तिवारि श्री आर्य समिति सूरी मनुष्य वृंद सहित तापस स्थानि कनइं जाइनइं धर्म्मोपदेश देइने ते पांचासि तापस प्रतिबोधी दीक्षा दीधी । ते सवला श्री आर्य समिती सुरीना शिष्य हुआ । तेहनी संघाते तेडी श्री गुरु संघ सहित शालाइं आव्या । श्री जिनशासनो-न्नति हूई । तिहां थकी ब्रह्माण गछ हूओ । श्रीवीर नीर्वाण हूआ पछी छसइं अनिं ईग्यार वर्ष गयइं हूति ते तापस साधु थकी श्री ब्रह्म दीपीका शाषा केहेवाणी ।

एवं पाट पन्नर सुधी श्री थिरावली सुत्रिं करी थविर कह्या; हवे तेहना शिष्य ते आचार्य कहे छइं ।

१६ तत्पट्टे श्री समंतभद्र सूरि ।

श्री वैराग्य निधी थकां किवारइं वाडीनें विषइं रहइं, किवा (३२-२) रइं यक्षनइं देहेरें वासो रहें । किवारइं वननें विषइं रहें । इम जावजीव अह्मथी निःस्पृह पणइं सकल सूरी छत्रीस गुणें संपूर्ण देषी लोकें वनवासी एहवुं बिरुद दीधु । तिहां थकी चोथु नाम वनवासी गच्छ काहिवाणुं ।

श्री वीरमुक्ति हूया पछी आठसइं नइं बीयासी वर्षे चैत्यवासी हूआ ।

विक्र. सं. ४२८ वर्षे श्री अनंगसेन तूंअर थकी दील्ली नगरीनी थापना हूइ ।

१७ तत्पट्टे श्री वृद्धदेव सूरी ।

श्री वीक. सं. ५९५ वर्षे श्री सा‍न्तोरपुर नगरें ओईसा

Aho ! Shrutgyanam

नगर थकी आवी चहूआण श्री नाहडइं श्री वीर बिंब अढार भार सुवर्णमय सप्रासाद थाप्यो । श्री वृद्धदेव सूरीइं प्रतिष्ठयो ।

१८ तत्पट्टे प्रद्योतन सूरी ।

एहवे विक्र. सं. ५९५ वर्षे अजयामेरु नगरें श्री रुषभ बिंब प्रतिष्ठा नीपजावी । पुन: सुवर्णगीरीइं दो. धनपतिइं द्विलक्ष द्रव्य सुकृति करी यक्षवसती नाम श्रीवीर बिंब प्रासाद सहित प्रतिष्ठा हूइ । एहीज सूरीइं प्रतिष्ठा कीधी ।

१९ तत्पट्टे श्री मानदेव सूरी ।

सूरी पदना महिमा थकी षट्विगय त्यागी (३३-१) तेहने भक्तिवंत गृहस्थ भक्ति करी आहार आपे तो आहार न लेवो । ते तपना महिमा थकी पद्मा १ जया २ विजया ३ अपराजिता ४ एच्यार देवी श्री गुरुनी भक्ति साचवें । अमारि पलावइं । श्री सूरिइं नाडओल नगरें लघु शान्ति निपजावी तेहनइं संभलाववाइं तथा तेहनें जलमंत्री छांटवें चतुर्विध संघ थकी महामारि काढि संघ उपद्रव रहीत हूओ । श्री सूरी संघने कुशलकारी हूया । श्री गुरुनो बृध सिंध देशीं विहार हूओ ।

उच्च गाजिघान देराउल प्रमुख नगरिं घणा सोढा राजकुमार प्रतिबोधी उपकेश कीधा । एहनो विस्तार सबंध प्रभावक चरित्रनइं धुरें तें जोइ वांचज्यो ।

२० तत्पट्टे श्री मानतुंग सूरी ।

श्री सूरीइं अष्ट भय गर्भित भयहर कहितां 'नमीऊण' इस्यें नामइं स्तोत्र श्री पार्श्वनाथनी स्तवना रुपइं श्री पद्मावतीनी कृपा थकी नीपजावी ते माहि 'विलसंत भोग भीसण ०' ए गाथा आठमीनइं कहिवें करी जेणइं श्री नागराज वांशे कोधो । पुन: श्री सूरीइं श्री चक्रेश्व- (३३-२) रीना साज्य थकी वृद्ध भोज राजानी सभानें विषे श्री भक्तामर एहवइं नामइं स्तोत्र प्रगट कीधो ।

ते भक्तामर स्तोत्रनो उत्पत्ति कहइं छइं । यथा:— मालवदेशी उजेंणी नगरइं राजा भोज वृद्ध छे । ते राज्य करे छे । तिहां मयुर १ अनें बाण २ एहवें नामइं बिहुं धाडव महाविद्यापात्र रहइं छइं । एकदा ते बिहुं विवाद करता राज सभाइं माहोमाहि अहंकार धरें । हुं बणो भण्यो, तेह थकी हुं अधिक पात्र छुं । इम बेहुं मत्सर धरता देषी वृद्ध भोज कहें, रे दक्षो ! तुम्हे बेहुं कास्मिर देशी जाओ । तिहां सारदा जेहनइं विद्यावंत कहइं ते मोटो पंडित । ते बिहू राजानो वचन सांभली कास्मिर भणी चाल्या । अनुक्रमा वणो मारग उलंघी सारदा मंदिर प्रति पाम्यां । भोजन करी संध्याइं बिहु सुता छइं, एतलइं सरस्वतीइं परिक्षार्थि मयूरनें अर्ध जागतें ए समस्या पद पूछ्युं जे—

"शतचंद्रं नभस्थलं"

ते सांभली मयूरे कह्युं

दामोदरकराघातविह्वलीभूतचेतसा ।
दृष्टं चाणूरमल्लेन शतचंद्रं नभस्थलं ॥१॥ (३४-१)

एहवी समस्या मयूरें संपूर्ण कही ।

ते सांभली पुन: बाणनें परीक्षा हेति सारदाइं समस्यानुं पद पूछीओ जे—"शतचंद्रं नभस्थलं" ते सांभली बाणे अर्ध जागतइं कह्युं

यस्यामुत्तंगसौधाग्रे विलोलवदनांबुजे ।
विरराज विभावर्यां शतचंद्रं नभस्थलं ॥ १ ॥

एहवी समस्या बांणें करी । ते बीहुनी वांणी सांभली कुमारीका कहें तुम्हे बिहुं महाप्रज्ञ छौ; एहवूं बिरुद लही केतलेक दिवसें घरे आव्या । बिहुने पंडित जांणिया । तो पिण मयूरनइं वृद्ध जाणी भोज घणो आदर दीइं । एतलें बाण द्वेष धरी । स्वहस्तें चउरंगो हुइं चंडीकाने प्रासादे बेठो । चंडीकाना काव्य ८१ करी स्तवना कीधी एतलें चंडी प्रत्यक्ष हुइं कहइं वर मांगी, हुं तुठी । ते बाण कहें, लोके आश्चर्यपणा थकी हस्त पाद नव पल्लव आपओ । देवी कहें हूआ । एतलें हस्तपाद नव पल्लव लही नगर मध्य थई दरबारें राजानी कचेरीइं बाण आव्यो । महा आम्नायवंत जांणी राजाइं आदर आप्यो। एहवो चमत्कार देषी राजा श्री (३४ २) वृद्ध भोज सभा समक्ष सकल पंडित मंडलीनें कहइ, जें चमत्कार देषी राजा शिबि दर्शन विना एहवा चमत्कार आमनाय

राजाषो कामदार

Aho ! Shrutgyanam

जैन छे, ते कहे–इणहीज नगरें जैनाचार्य श्री मानतुंग सूरी महा आम्नायना धारक महा विद्यापात्र निगवी छइं। ते सांभली वृद्ध भोजै श्रीमानतुंगसूरीनें कचेरीइं तेड्या। नोदी कहे, हे दर्शनी ! महापुरुष छो तुम्हे सासननो महिमा करो। तिवारें श्रीमानतुंग वृद्ध भोजनें कहें पग थकी कंठ लगें आठील अडतालीस ताला सहीत गाढी मुझ देही करो। राजाइं सहु कचेरीना मनुष्य देषतां तिमज कीधु। पछी तिहां थकी उपाडी ओरडा माहि घाली बारणै ताला देइ रक्षक मुक्या। कह्युं, सज्जपणें रहीज्यौ। श्रीगुरु ओरडे बेठा। श्री रुषभ स्तुति तद्रुप श्रीभक्तामर स्तोत्र कहितां श्रीरुषभ देवनी कींकरी चक्रेश्वरी शक्ति आवी। एक २ काव्यइं एक निगड एक तालओ उघाडें इम (३५-१) कहितां थकां "आपादकंठमुरुशृंखलवेष्टितांगा० ४२" ए काव्य कहितालीसमुं कहितां थकां सर्व आठील भागी ओरडाना कपाट षुल्या। श्री सूरी रक्षकने पासें आवी उभा। सेवके जोइं वृद्ध भोजनें वीनव्या। श्रीगुरु कचेरी आव्या देषी राजा नम्यो। आश्चर्य पांमी कहइं, धन्य ए धर्म्म! धन्य ए दर्शन जैन ! जिहां एहवा प्रभाविक महाम्नायना जांण, श्रीमानतुंग जेहवा रत्न त्रयीना आराधक छइं। महा निस्पृह निर्लोभी जांणी, परमार वृद्ध भोज श्रीसूरीनइं कहइं, तूम्हे कीस्यो स्मरण कीधो। तिवारें श्रीगुरु कहे भक्तामर स्तोत्र रुपीइं श्रीरुषभदेवनी स्तुतीनो स्मरण कीधो। वृद्ध भोज कहै, ते कहो। जे स्तोत्रि आठील त्रुटा एहवा मंत्राम्नाय छै। तिवारें श्रीसुरीइं स्वर पद अक्षर मंत्र युक्त सभा समक्षइं प्रगटपणे श्रीभक्तामर स्तोत्र कह्यौ। ते सांभली वृद्ध भोज श्रीसूरीनें महामहोछवें शालाइं पधराव्या। ते दिन थकी श्रीभक्तामर स्तोत्रनो महिमा भूमंडलइं लोकने विषे विस्तरयो। श्रीजिन शासननी कीर्ति हूइ। इति भक्तामरनी उत्पत्ति जांण (३५-२) वी।

२१ तत्पट्टे श्री वीर सूरी। श्री सुरीये दक्षिण देशी नागपुर नगरें श्री नेमीनाथ बिंब प्रतिष्ठयो। एहवइं समइं श्री वीरनीर्वाण हुआ पछी आठसय अनि पिस्तालीस वर्षे पुनः वि. सं. ४२१ वर्षे पश्चीम दिसि वल्लभी नगरनो भंग हुओ॥

२२ तत्पट्टे श्री जयदेव सूरी। इणी सुरीयें रणतंभोरनइं गिरि श्रृंगइं विक्र. ५७२ वर्षे पद्मप्रभ बिंब प्रतिष्ठ्ये। पूनः श्री पद्मावती मूर्ति स्थापि। श्री गुरुइं थलेची मरुधरई विहार कर्यो। तिहां भाटी क्षत्रीयना प्रतिबोधक हूया।

२३ तत्पट्टे श्री देवानंद सूरी। श्री सुरीइ पश्चिम दिशि देवकई पत्तनइं विक्र. ५८५ वर्षे श्री श्री पार्श्वनाथ बिंब थाप्यो। पुनः वि० ५७१ वर्षि कच्छ देशी सुथरी ग्रामइं शिव अनि जैननइं वाद हूओ॥

२४ तत्पट्टे श्री विक्रम सूरी। श्री गुरने सारदा प्रसंन हुइं। गुर्ज्जर देशी सरस्वती नदीइं तट्टे खरसडी ग्रामने विषे बिमासी चउवीहार तप कीधो। ते तपना महिमा थकी सारदाइं श्री गुरु नमी पीपलीनो वृक्ष सुकओ हूंतो ते (३६-१) नवपल्लव कीधो। श्री गुरु कीर्ति हूई। पुनः श्री गुरुइं धान्यधार देशिं गोला नगरइं घणा परमार क्षत्री प्रतिबोधी उपकेश कीधा।

२५ तत्पट्टे श्री नरसिंह सूरी। श्री सूरीइं उमरगाढि पुहकरना तलावनें कंठे भादा प्रमुष नगरे नवरात्रीय अष्टमीनि दिनइं महिष वधनो व्यंतर राक्षस भोग लेता तेहनें धर्म्मोपदेश देइ महिषना वध मुकाव्या॥

२६ तत्पट्टे श्री समुद्र सूरी। मेवाड देशी कुंभलमेरइं जाति खोमण क्षत्री। संसार असार जांणी गुरु श्री नरसिंह पासि दिक्षा लीधी। श्री गुरुइं योग्य जांणी गच्छ नायक पद दीधुं। श्री सुरीइं बाहडमेर कोटडा प्रमुख नगरि चामुंडा प्रतिबोधक हूया। पुनः अणहिल पत्तने (?) दिगंबर वाद जीती वैराट नगरें जय करयो। यत उक्तं—

> खोमाणराजकुलजोऽपि सुमद्रसूरी
> गच्छे शशांककल्पः प्रवणः प्रमाणी।
> जित्वा तदा क्षपणकान् स्ववशं वितेने
> नागह्रदे भुजगनाथनमस्यतीर्थे॥ १॥

एहवें वि० सं० ५२५ वर्षी श्री जिनभद्र गणि

Aho ! Shrutgyanam

(३६–२) क्षमाश्रमण ध्यान शतकना करणहार प्रगट हुआ । पुनः एहवें छ युगप्रधान प्रगट हूया तेहना नाम कहे छै—

नागहरि। सूरी १
रेवतीमित्र सूरी २
ब्रह्मद्विप सूरी ३
नागार्ज्जुन सूरी ४
भूतदिन्न सूरी ५
भावडहार श्रीकालिक सूरी ६

एवं षट् युगप्रधान जांणीवा । इणी कालिकाचार्ये श्रीवीर निर्वाण हुआ पछी ९९३ वर्ष, कटला एक आचार्य कहें–नवसे अनिं ऐंसी वर्ष हूया पछी, पुनः विक्र० ५०० अनिं त्रेवीस वर्ष गये हूंते चौराणु कालनो विवरो कह्यो । ए पिण त्रीजा कालक सूरीश प्रभावक जांणवा ।

श्रीवीर निर्वाण थया पछी एक हजार वर्षमांहि एकवीस वर्षे ओछइं, पुनः विक्र० ५४५ वर्षे याकिनी महत्तरा सुत श्री हरिभद्र सूरी प्रगट हूया । तेंहनी उत्पत्ति कहै छै—

मगध देसी कुमारीया ग्रामि हारिद्रायण गोत्रैः हारिभद्र नामइं ब्राह्मण व्याकर्ण प्रमुख खट् शास्त्रनो वेत्ता रहै छै । वणुं ब्रह्म क्रीयाइं करी कुशल छै पिण प्रतिज्ञावंत छै । जे कोई मुन्हे प्रश्न पूछइं तेंहनो (*३८–१) अर्थ न उपजे तओ हुं तेहनो शिष्य थाउं । इम चिंतवी तीर्थ यात्राइं निकल्यौं, भृगुक्षेत्रनें पांम्यो । तिहां एकदा संध्याइं नगरमां बाजारे जातां धर्मशालाइं साधवी प्रतिक्रमण संपूर्ण आवस्यक सूत्रनी गाथा गुणे छइं ।

चक्की दुगं हरिपणगं पणगं चक्कीण केसवो चक्की
केसव चक्की केसव दुचक्की केसवो चक्की ॥ १ ॥

ए गाथा उभे रही हरीभद्रे सांभली, शालाइं आवी कहइं–भो साधवी जी तुम्हे कीस्यो आ चिगाचिगायमान शब्द कह्यो । ते सांभली साधवी कहै नवुं शास्त्र लखीइं तिवारे चिग २ शब्द हूइं । एहवुं साधवी कथक वचन सांभली जे हरीभद्र चिंतवै जे म्हारी विद्यानों प्रयास निफल हूओ । ए गाथा साधवी कथक तेहनो अर्थ मुझ थकी न उपनो । साधवीनें कहें—ए गाथानो अर्थ कहो । साधवी कहै–नगर बाहिरे वाडी अम्हारा गुरु रहै छै ते अर्थ कहेस्यें । तिवारे हरिभद्रें वाडीमांहि जाइं गुरु वांदि, गाथा पूछी, अर्थ सांभली, प्रतिज्ञा संपूर्णि शिष्य हूओ । योग्य गीतार्थ जांणी श्रीगुरें आचार्य पद(३८-२) देइ, श्री हरिभद्र नाम दीधु । श्री सूरीइं तिहां थकी विहार कीधो । श्री हरिभद्र भृगुक्षेत्रं मास काल्प रह्या । तिहां रहिता श्री हरिभद्र सूरीनें हंस १ अनिं परमहंस २ नामि बिहू शिष्य शिरोमणी शास्त्रना पाठी छै तिणे गुरू वीनवा—अम्हे बौध मतनी विद्यानों उद्यम करवा बौद्ध देसि जासुं । गुरु कहे ए नही। तो ही पांण कपट थकी ते बिहू बौद्ध मतनी विद्याना रहस्य लेवा बौद्ध देशे जाइं बौद्धाचार्य पासें बिहू सिष्य विद्या भणता हूया । एकदा पुस्तीकाइं शास्त्रना अक्षरनें बिषें बौद्धाचार्यई खडीका दीधी दीठी । चित्ते विचारि जे कोइक जैन छै । ते बेहूंनी परीक्षा करवानें निश्रेणीनई पावडीइं जिन प्रतिमानो स्वरूप खडीनें षंड थकी आलेखो, गुरु छात्रनें भणाववानइं मेंढीइं बेठा। एतलें बौद्धना विद्यार्थि स्वरूप उपरे पग मुकीनें भणवा आव्या । तेहने पाछीले हंस १ परमहंस २ आव्या । जिन बिंब देषी खडीना खंड थकी प्रतिमा उपरइं जनोइनो आकार (३९–१) करी, तेउपर पग थापी, आवी आचार्य पासि भणवा बेठा । आचार्ये जांण्युं जे ए जैन छै । अनिं बिहुं शिष्यें जांण्युं जे आचार्ये आपणनें जैन जाण्यां । मरणना भय थकी पुस्तीका लेइं नभमार्गे विद्याबली पोताना देशि निकळ्या । आचार्ये जाण्युं । बौद्ध राजाने कहयुं—ए जैन मालिम हूआ, आपणां मतनी विद्याना रहस्यनी पुस्तिका लेइ जाइं छै। सांभली राजाइं सैन चडाव्युं । विद्या युद्ध करतां प्रथम हंसने हण्यो । बीजा परमहंस साथि विद्यावाद करतां परमहंस लडथडीओ आवतो २ श्रीभृगुकछइं शकुनिका विहारि तिणे बौद्धनी पुस्तिका नांषी।पछी ते बीजा परमहंसने

*हस्तलिखित प्रतिमां ३७ना बदले मूलथी ३८नो आंक छपाएलो होवाथी ३७ मां पानानो आंक आप्यो नथी.

Aho ! Shrutgyanam

पिण हण्यो । तें बौद्ध सेन प्रातकाल हुओ जाणी पोताने देसि बल्यो । हवि प्रभाते गृहस्थ श्री मुनिसुव्रतनें दर्शनि आव्या । देव प्रदिक्षणाइं गृहस्थनें रजोहरण १ अनि चुपडी २ लाधा । ते श्रीहरीभद्रनें दीधा । गुरें रजोहरण ओलख्यो । बौद्ध पुस्तीकानिं चुपडी ते मांही घंटाकर्णनो मंत्र वा (३९—२) च्यो । श्रीहरीभद्रे चितव्युं जे मुझ शिष्य बिहू बौद्ध देशि विद्या भणवा गया तेहने बौद्धे कंड करी हण्या दीसें छै । विद्याना रहस्य लेइ जातां जांणी हण्या । गुरुनें क्रोध हुओ । शालाने यंत्र कपाट करी, तेलपूरीत कढाइ लोहनी अग्नी चढावी गुरु दत्त पूर्व आम्नाय करी, जेतले कढाइं कांकरी नाषइं तिवारें बौद्ध तपस्वी चउदशत अनि चुमालीस मंत्राकर्षित शकुनीका रुपि कडाहनि प्रदिक्षणा दीये छै । तेहवें जाकिनी नामि साधवी, जेहना मुख थकी गाथा सांभली वाडीमा जाइं गुरुमुष थकी गाथार्थ सांभली संपूर्ण प्रतिज्ञाइं हरिभद्रे व्रत लीधु छै; एतलें इहां याकिनी नामी साधवी ते श्री हरीभद्र सूरी नें उपकारीणी हूई । ते माटी याकिनीसुनु श्रीहरीभद्रसूरी एहवओ बिरुद काहिंवाणूं । ते श्रीहरीभद्रनी गुरुबहिन याकिनी साधवीइं उंचुं जोयुं, एतलइं शकुनीका रुपें बौद्धाचार्य आवता दीठा । साधवीइं जाण्यु जे क्रोधना फल कडवा छइं। घणा जीवनें असंतोष (४०—१) उपनो जांणी आचार्यनि क्रोधनी शांतिनइं हेति शिज्ञातरी श्राविका साथइं लेई शाला द्वारि उभी रही गुरु प्रतिकहै—एक पचिंद्री जीवनो घात अजांण थकी हुओ तेहनी आलोयण कहो । तिवारइं शालाइं रह्या गुरु कहे—पंच कल्याणक तप अनिं उपवास दश चउविहार कह्या छैः । एतले बिहू उपवासें एक कल्याणक तप जांणवो । पंच कल्याणक तपनी आलोयण तुम्हने आवी । ते सांभली साधवी कहें—अजाणपणेनी एवडी आलोयण कहौ छौ, तिवारइं जांणपणाथकी घणा पचैंद्रीय जीवना वधनी आलोयण कीसी हुइं ? ते सांभली गुरु कहै—ते कहयुं स्युं । गुरुने क्रोधनी शांति हुइं । बोध सघला आकर्ष्या ते जीवता मुक्या । ए असार संसारे कुण गुरु कुंण शिष्य इम चिंतवी स्वचित्त थकी कृत पाप शुद्धिनइं देती आकर्षित बोधनी संख्याइं चउदशत अनिं चउमालीस प्रकर्ण पूजापंचाशक प्रमुष, एक २ पंचाशकै गाथा पंचास २ (४०—२) हूइं एहवा ५० पंचाशक, त्रीस अष्टक, सोल षोडस, पुनः आवश्यक वृद्धवर्ति कारक, विक्र० सं० ५६५ वर्षे श्री हरिभद्र स्वर्ग हुओ । इणि परि श्री हरिभद्रसूरी हूवा ।

पूनः श्रीहरिभद्र सूरीना भाणेज श्रीसिद्धर्षि उपमिति भव प्रपंचा १ श्रीचंद्रकेवली चरित्र २ श्रीविजयचंद्रकेवली चरित्र ३ ना करणहार स्वर्ग हुओ ।

इति हरिभद्र संबंध ॥

२७ तत्पट्टे श्रीविबुध प्रभसूरी ।

एहवइं श्रीवीरमुक्ति हूआ पछी एक हजार अनें चउद वर्ष गयइं हूतइं पुनः वीक्रसं० ६०१ वर्षे गये हुंतइं मालवदेशी धारनगरइं श्री सम्मति ग्रंथना करणहार श्री मल्लवादी सुरी प्रगट हूया ।

पुनः एहवे अवसरि आचार्य श्री बप्पभट्टसूरि प्रगट हूया तेह

बप्पभट्टसूरीसंबंध

कहे छै । जुमाहड देशि गोपाचलनी तलहट्टीइं गोपनगर वसें छे । तिहां चहुआंण श्री आम राजा राज करइं छे । एहवें अवसरइं श्री भारद्वाज वंशि प्रष्णवाहन कुलें हर्षपुरी (४१—१) य गछि आचार्य बप्पभट्ट सूरी विहार करता आव्या । श्रीगुरु उपगारीपणें धर्म्मकथा कहे । तिवारइं श्री आम संघ सहित गुरुप्रति वीनती करे, जो तुम्हे महा साधु छौ । भव्य जीवनें पवित्रनइं हेति जंगम तीर्थ छै । ते माटे इंहां गोपनगरें चुमासें तुम्हें अवश्य राहिवुं । गुरु कहइं जिहा लगण तुम्हारि सुदृष्टि हुसि तिहां लगण राहिस्युं । इम कही श्रीगुरु चोमासें रह्या । आम प्रमुख संघ श्रीगुरुनीं बहु विविध भक्ति साचवइं । निरंतर गुरु वांदी गुरुमुषें धर्म्मव्याख्या सांभले । गुरुवांणी रंजितथको परम जैन राजा हूओ । एकदा पून्य तीथीनइं दिनें आम राजानी स्त्री नीला वस्त्र सिणगार पेहरी गुरु मुष आगली गूहलीइं स्वास्तिक करइं छै । तिहां पगले २ वार २ मुखि

Aho ! Shrutgyanam

मरकलडा करइं । तिवारइं आम राजाइं गुरु श्री बप्पभट्टनें पुछ्युं—

बाल.चमकंत्तिए एए कुणह कीस मुहभंगी ।

तदा गुरु कहइं—

तुन रमणीपएसे महल्लिया छवइ मुह भंग ॥ १ ॥

(४१२)

ए वचन सांभली राजा म्लान मुख हूओ । एतलें श्री गुरुनें मुक्ताफलिं वधावतां नील वस्त्र देषी अवस्थाइं चक्षूना तेजहीणनें अंगे नीलावस्त्र उपरि श्री सुरिनी तिहां दृष्टि रही । तिहां आमनि पिण दृष्टि हूई । चितस्यु संदेह हूओ । जे साधुनी दृष्टि नीलें सिणगार उपरि रही । व्याख्यान सांभली घरे आवी राजाइं गुरुनी परिक्षा जोवाने अर्थि पोताना घरनी वडी दासीनइं नीला सिंणगार पहिरावि, रात्रि प्रहर सवा गया पछी, शालाइं गुरु पासें मोकली । जिहां रात्रि बप्पभट्टि संथारा पोरसी कही संथारेइं संथार्या छे, तिहां आवी आचार्यना चरण स्पर्श्या । कोमल हाथ जांणी गुरु कहइं—ए कुण स्त्री ? तिवारइं ते कहइं, हूं राजानी रांणी तेहनी मुख्य दासी ।राजानी आज्ञा थकी इहां तुम्हारी भक्तिमां आवी छुं । गुरु नीरादरइं निर्भ्रंछी काढी । ते दासी म्लान मुखी थइं आम पासिं आवी सर्व स्वरूप कह्युं । हवें (४२–१) श्री गुरुइं उपयोग देतां थकां धर्म्मकथाई नीला वस्त्रनो उपयोग हूओ । आम मन्नें संदेह जांणी सुदृष्टिनी प्रतिज्ञा पूर्ण हूइ । प्रभातना पडीकमणानी क्रिया साचवी गंतुक मनी हूया । विहार करतां थकां खडीनां षंड थकी शालाने बारणे ए गाथा लीषी—

दो तुंबडाइं हत्थें वयणे धम्म अखराय चत्तारी ।

वीउलंच भरहवासं को अम पहूत्तणं हरइ ।१।

आम अनि अन्य राजानें मांहो मांहे विरोध छई, तेहनइं नगरइं आव्या । तिणें आम गुरु आव्या जांणी घणो आदर देई, बिहू हाथ जोडी कहइं—हे पूज्य ! जिवारी आम अत्र तेडवा आवै तिवारइं आमनगरइं जावुं, नही तु नही । एहवी प्रतिज्ञा करी तिहां रह्या । हवइं ग्वालेर नगरें गृहस्थ प्रातकालि देव दर्शन करी शालाइं आव्या, गुरु नहीं । नगरइं वार्ता हूई एतलेइं आम राजा पिण आव्या । शाला जोता बारणीए लखीत गाथा देषी । आम राजाइं वांची, दासी मोकल्यानी वार्ता सांभली । मनस्युं (४२–२) पश्चाताप करतो हूओ—मुझ थकी अवज्ञा हूई । केतलेक दिने गुरु प्रति वीनती कहावी । तिवारइं गुरु धर्म स्नेह जांणी कहिराव्युं, जे तुम्हे वेष परिवर्त्तइं आवज्यो । तिवारें कौतुक रूपइं आम राजा कापडीना वेषे धूसर मलीन हूइं, मस्तकें आम्ल पत्रनो छोगओ धरी, बिहूं कान ऊपरी तुंअरी पत्र थापी, पुनः बिहूं हस्तक मांहि बीजोरानां फल ग्रही, शत्रु नगरी, जिहां गुरु, विरोधी राजा सहित, संघ समक्ष, व्याख्यान कहइं छइं, तिहां उतावलो आवी उभो रह्यो । आचार्यें आम ओलख्यो । साहमु जोइ अ दर देइ कहइं—" आम ! आवओ, आम ! आवओ ते सांभली—सकल सभा महा धुंसर रुप देखी, आमनो शत्रु राजा ते श्री गुरुनें पूछें—ए पुरुषनइं मस्तके किस्युं तेवारइं गुरु कहै—ए आम्ल । ते सांभली विरोधी राजा पुनः पुछै—ए पुरुषनें कांनइं किस्युं ? तिवारइं गुरु कहइं—तुं अरि । ते सांभली विरोधी राजा गुरु...... आमनइं कहइं......(४३–१) विहराति ए समस्या गुरु कथक सांभली शाला बाहिरइं आम नीकली बारणइं खडीना खंड थकी ए श्लोक लिख्यो.

गिरौ गोपपुरे रम्ये प्रभो ! तत्र पधार्यतां ।

सभामध्ये समागत्य, प्रतिज्ञा पूरिता मया ॥ १ ॥

सकल लोक देखतां ए श्लोक लिषि आम पोतानइं घरे आव्या । बीजइं दीनें संघ तथा राजा पासें गुरे आज्ञा मांगी । अम्हे गोप नगरइं जास्युं । तिवारइं आमनो शत्रु राजा कहइं, जिवारइं तूमनइं तेडवा आम आवइं, ते तुह्मारो वचन छइं । ते सांभली गुरु कहइं । ते तो काले वाख्यान मांहि आविनइं गया । तिवारइं विरोधी राजा कहें तुम्हे मुझने कह्यो नही । गुरु कहें संघ समक्षइं मइं कह्युं जे ' आम ! आवो आम ! आवो ' पुन तुम्हे पुछ्युं जे ए पुरुष मस्तके किस्युं, तवारे अम्हे कह्युं जें ए आम्ल । पुनः तुम्हे पुछ्युं, जे ए काने स्युं,

Aho ! Shrutgyanam

अमे कह्यूं जे तुअरी । पुनः तुम्हे कह्यूं जे एहना हाथमांहि स्युं, तिवारें अम्हे कह्यो, जे ए बीजोरा । एतले (४३-२) आम्रनें नामि आम राजा जांणिवा । पुनः तुअरि कहिता ताहरो ए शत्रु । पुनः बीजोरा कहितां तुम्हे राजा ए पिण राजा । ए श्लोक पिण पूर्ण प्रतिज्ञानो बारणइं सकल लोक देवतां लिख्यो छे । ते सांभली आम शत्रु विचारी, जे शत्रु सांकडे आव्यो हुतो पिण तेहना पुन्य थकी कुशलें गयो । प्रतिज्ञा संपूर्ण, संघाज्ञा लेई गुरु ग्वालेर नगरें आव्या । आम राजाइ शालाइं महोच्छवें पधराव्या । महा हर्ष पांमी श्री बप्पभट्ट सूरीनें मुख बार व्रत उचर्यां । एकदा गुरुनइ आम कहइं—तुम्हे श्रीगुरु ! मुझ उपरि कृपा करी कांइक ए जीव प्रत्यें सुकृत कहो । तिवारइं गुरु कहइं आ असार संसार तेहनें विषइं दोष रहित श्रीजिनवर, तेहनी भक्ती, तेहिंज सार, जेह थकी प्राणिनें सद्गति हुई । यतः

> कारयंति जिनानां ये तृणावासमपि स्फुटं ।
> अखंडितविमानानि ते लभंतेऽत्र विष्टपे ॥ १ ॥

ते गुरुनो उपदेश सांभली ग्वालेर नगरइं एक शत अनिं आठ गज ऊंचओ प्रासाद नीपजावी ते मांहि श्री वीरबिंब (४४-१) विक्रम सं. ७५६ वर्षि भूमिगृह थाप्यो । श्रीबप्पभट्टि प्रतिष्ठ्यौ । पुनः श्रीसिद्ध गीरीइं त्रणि लक्ष मनुष्यें संघपति थई यात्रा कीधी । साडाबार कोटि सुवर्ण सुकृति करिं श्रीजिन धर्म आराधी आम चहूआण वि० सं० ७६० वर्षि स्वर्गी हूओ । पुनः श्रीसूरीनें बाल्यावस्थाइं सातसें गाथा सूर्योदयें मुखपाठें चढती । तेहना पोषना शोष थकी सातसेर घृत जरतुं । श्रीवीर निर्वाण हूआ पछी तेरसइं अनि पांत्रीस वर्ष वीतइं पुनः वीक्रम सं. ७६१ वर्षि श्री गोपाचलाधीशः राजा श्री आम प्रतिबोधक आ० श्रीबप्पभट्ट सूरी स्वर्ग हूओ ।

उक्तं च

> य तिष्ठति स्म वेस्मनि, सार्ध द्वादशसुवर्णकोट्याः
> निर्मापितो आमराज्ञा गोपगिरौ जयति जिनवीर ॥ १

इति बप्पभट्ट सूरी संबंध ॥

२८ तत्पट्टे श्रीमानदेव सूरी ।

पोतानी देही असमाधी पणइं चित थकी श्री सूरीमंत्र वीसरी गयो । केतलेक दिनें श्रीसूरिनइं समाधी हूई । तिवारइं श्री सुरि (४४-२) गिरीनार पर्वति आवी बिमासी चउवीहार तप कीधओ । अंबीका आवी कहइं—ए किम ? तिवारें सुरी कहै—मुझ देही असमाधी सूरीमंत्र मुझ चित्त थकी वीसरी गयो । ते सूरीवचन सांभली देव्याइं श्रीसुरिमंत्र संभारी विजया देवीनें पूछी श्रीसुरीनै मंत्र कह्यो—

> विद्यासमुद्रहरिभद्रमुनींद्रमित्रं
> सूरिर्बभूव पुनरेव हि मानदेवः ।
> मांद्यात्प्रयातमपियोनघऽसूरिमंत्रं
> लेभेऽबिकामुखगिरा तपसोज्जयन्ते ॥ १ ॥

२९ तत्पट्टे श्रीजयानन्द सूरी ।

श्री सूरीना उपदेश थकी वि० सं० ८२१ वर्षि श्री हमीरगढि, विज्जानगरें, ब्रह्माणि नंदिय, ब्राह्मण वाटक, महुरि नगरें, श्रीपास इत्यादिक श्रीसंप्रतिकारक नवशत प्रासाद जीर्णोद्धार प्रा० मं० सामंतइं कीधो ।

पुनः विक्र० सं० ८४१ वर्ष थकी मांडी पिस्तालीतांइ पंच दुकाली हूइ । ते अवसरइं घणा साधु मर्याद थकी सिथिल हूया । तिवारें उ० श्री गोविंद, उ० श्री संभूति, श्री दूष्यगणि क्षमाश्रमण, उग्रतपस्वी श्री क्षे (४५—१) मर्षी, मलधारी गच्छीय श्रीहर्षतिलक, श्रीथूलिभद्रवंशे श्रीहर्षपुरीय गच्छे श्रीकृष्णर्षि, प्रमुख गीतार्थो मिलि, श्रीसुरीना वचन थकी समय विषम जांणी महानगरइं शुभ थानिकइं सिद्धान्तना भंडार हूया—ज्ञान यत्न कीधो ।

पुनः वि० सं० ८६१ वर्षि श्रीकरहेडा नगरइं श्री पार्श्वनाथनो प्रासाद हूओ । उपकेशभूत गोत्रें को० खीम सिंघे कराव्यो । एहवा अनेक सुकृत श्रीसूरीना उपदेश थकी हूया ॥

३० तत्पट्टे श्री वीरप्रभ सूरी ।

एहवइं वि०सं०९२९ वर्षि दीलीइं चहूआण हूआ ।

Aho ! Shrutgyanam

तुअरनें दीली थकी चहूयांणें काढ्या। पुन वि० सं. ९५२ वर्षे श्री नाडोलनगरे श्रीनेमि बिंब सूरीइं प्रतिष्ठ्यौ। एहवइं अवसरें दंडनायक श्रीविमल प्रगट हूओ।

विमलनो संबंध कहइं छइं।

श्रीगुर्जरदेशी वढीयार षंडि पंचासरा ग्राम थकी आवीनई चावडो वनराज वि० सं७९५ वर्षि वणोदनगर वसावी रह्यौ। पिण चिहुं दिशि भयंकर वन देषी उदासी रहै। तिवार (४५-२) इं श्रीवीर निर्वाण हुआ पछी बारसइं अनइं बिहोतरी वर्षि पुनः विक्रम सं० ८०२वर्षि अणहिल्लवाडओ पाटण वसाव्युं।

तिवारइं विमलना वृद्ध पितानि ग्रांम गांभू थकी तेडी लावी श्री वनराजिं पाटण मध्ये वसाव्या। तेहनां वंशमां प्रो०दो० वीरो तेहनी भार्य्या वीरी कुक्षि वि० सं० ९४५ वर्षे विमलनो जन्म हूओ। अनि वर्ष ८ थकी मांडी वर्ष ११ ताइं हाटि व्यापार कीधु। वर्ष १३ मे श्री धर्म्मघोष सूरीनो उपदेश सांभली श्री पत्तनाधीस श्री भीम राजाइं बाण प्राक्रम जांणी प्रधान पद दीधो। वर्षे...४ देश साध्यो। द्वादस म्लेछ छत्रोद्दालिक सकल भूप चूडामणि बिरुदधारक चंद्राउलि१ आरासाणि २ नगर थापक। पुनः वि० सं० ९८८ वर्षि श्री धर्म्मघोष सूरी नागिंद्र १ चंद्र २ निवृत्ति ३ विद्याधर ४ प्रमुष सकल आचार्यै मिलि श्री अर्बुदोपरि नवीन प्रासादकारक। तन्मध्ये श्री बालानाह क्षेत्रपाल दत्त श्री रुषभ बिंब स्थापक। पुनः आरासणी श्री नेमि बिंब स्थापक (४६-१) अन्य एकादश शत महाप्रासादकारक, अढी हज्जार जीर्णोद्धारकारक, एहवे वि० सं० ९६१ वर्षि गीरीनारासन्नी श्री जीर्णदुर्गाधिपति श्री राय खिंगारनो जन्म हूओ। वि० सं० ९८९ वर्षि पोरु वणिक प्रति द्रव्य देई विमलइं द्वादश गौत्र प्रति प्रागवाट कीधा। वि० सं० ९९१ वर्षि सोमपुरा वाडवने विमले द्रव्य देई शिलावट कीधा। वि० सं० ९९३ वर्षे दंडनायक बिरुद धारक श्री विमल स्वर्गा हूओ। यतः

नागिंद्र चंद्र निंवृत्ति विद्याधरप्रमुखसंघेन।
अर्बुदकृतप्रतिष्ठो युगादिजिनपुंगवो जयति। १।

तिणहिज विलाइं ए सकलाचार्य मिलि पाखि चउदसि दिने थापी।

इति विमलोत्पत्ति।

३१ तत्पट्टे श्री यशोदेव सूरी।

ते गुर्जर देसी वालिम नगरइं, नागर वाडव कौशिक गोत्रि, विक्र० सं० ९९५ वर्षे जन्म हूओ। एहवइं विक्र० सं० ९४१ वर्षि

श्री यशाभद्र सूरी

प्रगट हूया। तेहनो संबंध कहै छे।

श्री सांडेर गच्छे श्री ईश्वर सूरीइं पोतानइं पाटिं पद देवानें बद (४६-२) री देवी आराधी। ते आवी कहें अर्बुदपासनि रोहाईषंडे पलासी गामी प्रा० नारायण गोत्रि सापुनी भार्या गुणी तत्पुत्र सुधर्म वर्ष पाचनो छइं। ते हवणा पोसालइं भणि छइं। तिहां पूर्व कर्म्मना योगी कोइक वाडव पुत्र खडीओ पाटी एकांति स्थानिके मुकी घेरे जिमवा गयो। एतलइं सुधर्म्मइं तेहनो षडीओ लीधो। पाछो मुकता अफलाणो, भागो खंड २ हुआ। एतलइं ते वाडव पुत्र आव्यो। बालके कह्युं-ताहरो षडीयो सुधर्म्मि षंड २ कीधा। तिवारइं वाडव पुत्र कहइं तेहिज षडियो लेउं। मनुष्ये घणुंज वार्यो पिण न रही। तुज मस्तकनी तूंबडी ते मध्ये शालिना तंदूलनउं करंबउ खाउ तओ हूं वाडव। सुधर्म्म कहइं हूं मूओ तूजने मारुं तओ हूं वणिक। बिहूं एहवी प्रतिज्ञा कीधी छे। ते सुधर्म्म ताहरा गछ पाटनो उदयकारी छै, एहवउ कही बदरी देवी अलोप हूई। ते देवी वांणी सांभली श्री ईश्वर सूरी रोहाइ खंडइं पालासी ग्रामें आव्या। तिहां देवीनी प्रेरणाइं (४७-१) सुधर्म्म गुरु वाणी सांभली दीक्षा लीधी। तिहां थकी श्री सुरी मडाहडई नगर आव्या। पुनः बदरी देवी आराधी। देवी कहै इहां सुधर्म्मनइं पदवी दीओ, हुं तेने सहायकारी छुं। गुरु देवी वचन थकी मुडाहडइं नगरइं तिणहीज वडी ए पद देई आ० श्री यशोभद्र सूरी नाम दीधुं। तिणहिज घडीइं नित्यें आठ कवल आहारना अभिग्रह धारक श्री आ० हुआ। श्री बदरी देवी भक्ति साचवें। तिहां थकी विहार करता गुरु श्री ईश्वर सूरी१

Aho ! Shrutgyanam

श्री यशोभद्र सूरी २ बीहूं पाली नगर चाउमासें रह्या । तिहां निरंतर आ० उत्तर दिशि सूर्य देवनो प्रसाद छइं तेहिज दिसि देह चिंताइं जाइं । महा तपस्वी जांणी श्री दीवाकर आचार्यनइं प्रसन्न हूओ । आ० नइं कहइं; कांइ वर मांगी । तिवारइं आ० यशोभद्र कहइं सकल वांछित दें । सूर्य देव कहि, हुस्येइं । गुरु शिष्य तिहां निर्विघ्न रहइं छइं । एहवइं गुरु श्री ईश्वरी सुरि स्वर्ग हुओ । चउमासइं संपूर्णि विहार करता श्री य- (४७-२) शोभद्र सूरी बलीभद्र गुरुभाइ सहित सांडेरा नगर आव्या । तिहां श्री सूरीना उपदेशथी वोसीर गोत्रे दो० धनराजइं विक्र० सं० ९६९ वर्षि प्रासाद नीप-जावी श्री श्रीयांस बिंब थाप्यो । पुन इणहीज वर्षि मुडाहडइं नगरइं श्री सूरीना उपदेश थकी किंन्हडीओ प्रासाद हूओ । तिहां साहमी वात्स्यलें सांडेरा नगरइं घीई हुंइ रह्यो । दो० धनराज गुरुनइं वीनती करइं जे वृत नही । श्री सूरीइं वीर विद्यानइं प्राक्रमिं करी पाली थकी वृत अणावी साहमी वश्यलइं, श्री गुरुनी कीर्ति हुइ । पछी दिन त्रीजिं सांडेर थकी दो० धनराज घीनौ द्रव्य लेई पाली नगरइं आवी कहइं घीनो द्रव्य लीओ । ते कहइं घी कुण काम आव्यो । दो० धनराज कहै प्रासादनइं ओछवइं साहमि वछली काम आव्यो । ते गृहस्थ हाटमां जाई घीना ठाम जूइं । धीना ठाम ठाली दीठा । एतलइं व्यवहारी कहें ए द्रव्य तुम्हे सुकृत करो । इणि धनराजे पालीमध्ये सुकृत कीधुं । तिहां थकी श्री सूरिइं आ (४८-१) हड, खमणूर, करहेटक, काविलाण, भेसूर प्रमुख नगरें घणा मिथ्यात्वि प्रतिबोधी श्री नाडलाई नगरें चउमासि आव्या । एत-लइं तिहां पूर्वे कलहकारी प्रतीज्ञाधारी पहिलानओ बालमित्र दुकालइं अन्नना अभावथी कांनफटो-योगीनो शिष्य हूओ । मलीन वीद्या सीख्यो । केतलेक दिहाडे पाछो घरे पलासी गांमइं आव्यो । वणिक पूत्रनी सोध करतो जिहां नाडलाई नगरइं शालाइं गुरु व्याख्या-न कहइं छइं तिहा आवी मस्तकनी जटा उतारी सर्प कीधो । वाघ्यांनना लोक बीहता हूया । तेतलइं गुरे मुखाकारी पूर्वलो मित्र विरोधी उलख्यो । एतले श्री सुरीइं बदरी देवी समरी, मुहपत्ती फाडी तेहना खंड खंडइं नकुल प्रगट कीधा । तेह थकी पन्नग नाठा । योगी म्लान वदनइं नाठो । पुनः प्रासादनो वाद हूओ । गुरु कांति नगरी थकी तथा वल्लीपूर थकी बावन वीर-नइं प्राक्रमीं श्री रुषभ प्रासाद आण्यो । योगीइं शंभू प्रासाद आंण्यो । बेइ प्रासाद थंभ्या । जटिलें क्रोध-नइ वसि मंत्र योगि (४८-२) करि प्रतिमाना मुख बांका कीधा । संघे गुरुने वीनती करी, देवदर्शनि कोई मनुष्य न आवइ । तिवारि गुरुइं अष्टोतर जलकुंभ मंत्री बिंबनइं पखाल कीधो । बिंब मूल रुपी हुया । पुनः प्रासादना थांभा तथा पाट डगामग डगमगता जांणी गुरु दत्त आम्नाय थकी पथ्थरनइं पाटि मंत्र लिखी सकल प्रासाद थिर कीधो । गुरुं शंभु प्रासादनुं इंडु मंत्र बलइं पाडयुं । श्री जिन शासननो जय २ कार हूओ । श्री गुरुनी कीर्ति हूई । इम जटिलनें अनेक वादि जित्या । जटिल देश नगरीमां फिरइं ।....................

मस्तकमां मणि छइ । ते तुम्हे मरण हूआ पछी मस्तक मोडी उरही लेज्यो । ते पछी मुज देहनइं अग्निसंस्कार करज्यो । तिणइं शिष्ये तथा संघे तिम-हिज कीधुं । केतलेक दिने तिणें योगीइं गुरु मरण जांणी पूर्व संकेतइं आवी दुधपात्र भरी वेगलो गुप्तइं रह्यौ । गुरु कथके कल्पकनो चहि उपरिं चंदुओ कीधो । बदरी देवी चहि पछवाडइं प्रदिक्षणा दीयें छइं, एतलि तिणें योगी वर्षा वायुनी उत्पत्ति किधी; जांण (४९-१) इं जे मस्तकनी षोपरी लेऊं । एतलि बदरी देवीइं वायुनइं जागिं पोतानी शक्ति थकी योगि-निं उपाडी चहि मांहि गूरु एकठो नाष्यो । ते मरण पांमी श्री सांडेर गछनो रखवालओ यक्ष हूओ । देवी गुरु चितानें नमी स्वस्थानिके मुडाहडइं नगरइं आवी । श्री गूरुनी प्रतीज्ञा बदरी देवीनी साहाज्य थकी संपूर्ण हुई । इणि परें वि० सं० ९७१ वर्षि श्री यशोभद्र सूरी हूंता हुआ ।

यतः— बहुआ १ किन्नरषी २ खीमरषी ३

चउथा यशोभद्रसूर ४
ए त्रिहु कालि प्रणामतां
दूरीय प्रणास इंदूरि ॥ १ ॥

इति सांडेर गछे आ० श्रीयशोभद्र सूरी संबंध ।

३२ तत्पट्टे श्री प्रद्युम्नसूरी ।

श्री सूरीना उपदेश थकी पूर्व दिसि सतर प्रासाद हूया । ११ ज्ञानना भंडार लिखाव्या । सात यात्रा श्री समेत गिरिनी श्रीसूरीइं कीधी ॥

३३ तत्पट्टे श्रीमानदेव सूरी ।

श्री सुरीइं श्रावक श्राविकानइं हेतुइं उपधान वहि- वानि विधा प्रगट कीधी । ए विहुंनओ अल्प आयु जांणिवओ । (४९–२)

३४ तत्पट्टे श्रीविमलचंद्र सूरी ।

तेहनें श्रीपद्मावतीना साहाज्य थकी चित्रकूट पर्वतइं स्वर्गसिद्धिनी प्राप्ति हूई ।

३५ तत्पट्टे श्री उद्योतन सूरी ।

पूर्व दिशि श्री समेत गिरिनी यात्रा पांच करी । ए तीर्थ कहेवओ छई । यतः—

विंशत्यास्तिर्थकरैराजितादिभिर्यत्र शिवपरं प्रातं ।
देवकृतस्तुपगणः स जयति समेतगिरिराजः ॥ १ ॥

पुनः एतलइ सांभल्यु, जे अर्बुदाचल उपरि विमल दंडनायकें श्री रुषभ बिंब थाप्यी, तीर्थ प्रगट कीधो जांणीनइं श्रीसूरी मनिस्युं चितवइं जे—

अष्टषष्टेषु तीर्थेषु यत् पुण्यं किल यात्रया
आदिनाथस्य देवस्य दर्शनेनापि तद्भवेत् ॥ १ ॥

ते माटि आबू, नंदिय, बंभणवाड, दड्आणक प्रमुष इणि नेत्रि न निहाल्या; एहवा हर्ष सहित श्रीगुरु तिहां थकी विहार करता थका आबूनी तलहट्टिइं टेली नामइं गाम, तेहनी सीमइं, मोटी घणी साषा युक्त वडवृक्षनो विस्तार देषी, उष्ण कालइं, शीतल छायाइं श्रीसुरि तिहां विश्राम्या । एतलइं श्री सर्वानुभूति यक्ष प्रगट हूया । प्रसन्न प (५०–१) णि श्रीसूरीनें कहइं ~आ शुभ घटिका छइं, ते माटि तुम्हें तुह्मारा शिष्यनें आचार्य पद दीओ, तओ आ वड वृक्षनी परि अषंड शाषाइं करी विस्तार उदय हूइं । तिवारें श्री सूरीइं देव कथक थकी श्री वीर निर्वाण हूया पछी चउदसइं अनि चउसठि वर्षि, पुनः वि० सं० ९९४ वर्षे श्रीसर्वदेव सूरी, प्रमुष आठ आचार्य स्वपाटि थाप्या । तिवारइं तिहां थकी वडनें अहिनांणि पांचमो वड गछ एहवो नांम प्रसीद्ध हूओ । पिण ते सघला गुरु भाई शालाइं रह्या । तिहां थकी महिमावंत तीर्थनी यात्रा करी अझारी नगर आव्या । तिहां संघपति निर्मापित श्रीवीर प्रासादि डाकरा शिष्यनें योग्यजाणी सूरीपद देइ श्रीवर्द्धमान तीर्थकरना प्रासादनि अहिनांणि श्रीवर्द्धमानसूरी नाम दीधुं । गुरु कृपा जांणी श्री सारदाइं बालिका रुपें गुहलीयें स्वस्तिक कीधो । तुष्टमांन हूइं । प्रा० सा० रांके पदोत्सव कीधो । श्रीगुरें तेहनी गूर्ज्जरी विहार कीधानी आज्ञा दीधी । श्रीसूरी नीत्ये एक भुक्ति जांण (५०-२) वा श्री उद्योतन सूरीनो मेदपाटी धांवल नगरिं स्वर्ग हूओ ॥

३६ तत्पट्टे श्री सर्वदेव सूरी ।

श्री सूरी विचरता भरुअछि नगरि आव्या । तिहां कान्हडीओ योगी श्री गुरुनें गृहस्थनो बहुमान देषी कोधि करी ८४ सापनो करंड लावी शालाइं वाद करवा आवी बैठो । तिवार श्री सूरीयें ते देषतां जिमणा हाथनो कनिष्ठांगुलीइं करी पोतानि चिहूं पासइं भूमंडलें वलयाकारें त्रिण रेषा कीधी । एतलें तिणे ८४ सर्प्प करंडीइं थकी काढी गुरु सांहमा मुक्या । ते रेषा त्रिणतांइं आवई पिण आगिले न आवइं । पाछा कंडीइं आवी बइंठा । पछी तिणे जट्टिले क्रोधि करी वंशनलिका थकी काढी सिन्दुरीओ सर्प्प महा विषाकुल गुरु साहमो मुक्यो । ते रेषा त्रिणसूधी जाइ पाछो आव्यो । एहवे चउसठि योगिणि माहिली कुरुकुल्लानामि देवि ते धर्म- शाला बाहिरइं पिपली वृक्षइं रहे छै । तिणे गुरुनें उग्र तपस्वी जांणी तिहां आवी सिंदूर सापनी दाढा बंध करी । योगीगुरुने नमी पोतानि स्थां (५१-१) निकइं गयो । श्री गुरुनी कीर्ति हूइं । पुनः श्री गुरुना उपदेश थकी वि० सं० १००२ वर्षि सत्तावीस प्रासाद हूआ । प्रतिष्ठ्या ।

Aho ! Shrutgyanam

३७ तत्पट्टे श्री देव सूरी ।

श्री सूरीने हल्लारदेश स्वांमी राजश्री कर्णसिंही रुपश्री बिरुद दीधुं । पुनः जेहना उपदेश थकी ओ० कुर्कट गोत्रि सं० गोपि नव प्रसाद कीधा । पुनः चउदशत एक श्री जिन बिंब धातु पट्टिकाइं भराव्या । दक्षिणें नासिक नगरे श्रीचंद्रप्रभ प्रासादें जीर्णोद्धार हूओ। पुनः वि० सं० १००४ वर्षे श्री रामसैन्य नगरइं श्रीरुषभ प्रासाद हूओ । पुनः श्री सूरीयें मालवदेसिं घणापोरु गृहस्तनें प्रतिबोधिनै जैन प्राग्वाट कीधा । वि० सं० १००७ वर्षि शालानि स्थिति हूई ॥

३८ तत्पट्टे श्री अजितसिंह सूरी ।

श्री सूरीना उपदेश थकी मेवाड देशी मा० दौ० रुगनाथी सप्त प्रासाद नीपजाव्या । पुनः वि० सं० १०१० वर्षि श्री रामसैन्य नगरें श्री रुषभ चैत्ये श्री चंद्रप्रभ स्वांमी बिंब प्रतिष्ठा हूई । (५१-२)

यदुक्तं—चारित्रशुद्धिविधिवज्जिनागमा-
द्विधाय भव्यानभितः प्रबोधयन् ।
चकार जैनेश्वरशासनोन्नतिर्यः
शिष्य लब्धाभिनवोतु गौतम(?) ॥ १ ॥
नृपाद्दशाग्रे (सं. १०१०) शरदांसहस्रे ।
यो रामसैन्याह्वपुरे चकार ।
नाभेयचैत्येऽष्टमतीर्थराज—
बिंबप्रतिष्ठा विधिवत्स्वद्रव्यैः ॥ २ ॥
चंद्रावतीभूपतिनेत्रकल्पं
श्रीकुंकणमंत्रिणमुच्चऋद्धिं ।
निर्मापितोत्तुंगविशालचैत्यं
योऽदीक्षयत् शुद्धगिरा प्रबोध्य ॥ ३ ॥

एहवे वि. सं. १०२८ वर्षि आचारांग सूत्र १ सुगडाग सूत्र २ टीकाना करणहार श्रीशीलाचार्य प्रगट हूआ।पुनः तिणहीज वर्षि नीवृत्ति गछें अनेक ग्रंथकारक श्रीदोणाच्यार्य प्रगट हूया। पुनः मालव देसिं उज्जेणिं श्रीलघु भोजराजानो राज्य हूओ । तेहनइं बेटइं वीरनारायणि वि. सं. १०७७ वर्षि सिवांणो गढ वसाव्यो । पुनः एहवें वि० सं० १०९४ वर्षि, श्रीवडगछइं श्रीलघुभोजदत्त वादीवेताल बिरुदधारक थिराद्रीइं चहुआण क्ष (५२-१) श्री प्रतिबोधक श्रीशांति सुरी प्रगट हूआ । श्री सूरीयें चक्रेश्वरी १ पद्मावती २ ना साहाज्य थकी छवठण (?) पाणि वि० सं० १०९१ वर्षि सातसें श्रीमाली गौत्रने धुलिकोट पडतो कह्यो । एतलि श्रीसंघ रक्षक, उत्तराध्ययननी वृद्ध टीका आढार हजारना कारक, पुनः जीवविचार प्रकरणना कारक, कांनोहडी नगरइं विक्रम सं० ११११ वर्षि श्री शांति सूरीनो स्वर्ग हूओ । एहवइं वि० सं० १११७ वर्षे वडगछइं श्री चक्रेश्वरइं ग्यारसया अनइं पनर राज कुमर प्रतिबोध्या । पुनः धनपाल पंडिते श्रीरुषभ पंचाशिका । १ । देशीनाम माला कीधी ।

३९ तत्पट्टे श्री यशोभद्र सूरी ।

लघु गुरुभाई श्रीनेमिचंद्र सूरी ।

एहवइं डोकरा आ० गुरु श्री उद्योतन सूरी आज्ञा लही श्री अज्ञाहरी नगर थकी विहार करता श्री गुर्जरइं अणहल्ल पाठाणि आवी श्रीवर्द्धमानसूरी स्वर्ग हूया । तेहना शीष्य श्रीजिनेश्वर सूरी । पाटणि राजा श्री दुलभनी सभाइं कूर्चपूरगच्छीय चैत्य (५२-२) वासी साथी कांस्यपात्रनी चरचा कीधी । तिहां श्रीदशविकालिकनि चरचा गाथा कहीने चैत्य वासीने जीत्या । तिवारइं राजाश्री दुलभ कहे ए आ० शास्त्रानुसारे खरुं बोल्या तेह थकी विक्र० सं० १०८० वर्षे श्रीजीनेश्वर सुरिइं खरतर बिरुद लाद्धो । तेहना सिष्य श्रीजीनचंद्र १ लघु गुरुभाई श्री अभयदेव सूरी २ । तत्पट्टे श्रीजिनवल्लभ सुरि हूया । तिणिं चित्रकूट पर्वति आवी श्रीमहावीरनओ छठओ कल्याणक परुप्यौ । पुनः दोढसो, छयासीया ग्रंथ नीपजाव्यो । एक शत अनि चौत्रीस बोलइं करी खरतर गछनी समाचारी थापी । जेहना शिष्य श्री जिनदत्त सूरी हूया । तेहनो संबंध कहइं छइं—

विक्रम० सं० ११३२ वर्षि जन्म । एहवि श्रीजयसिंघ दे राजा जन्म हूओ । वि० सं० ११४१ वर्षि दीक्षा । विक्र० सं० ११७० वर्षे सुरीपद । श्रीसूरीनइं तपस्वी जांणी चउसटी योगिणी, बावन वीर, पुनः पंच-

Aho ! Shrutgyanam

पीर ए सदैव श्री गुरुनि भक्ति साचवइं । एकदा श्रीगुरु विहार करता श्रीगुर्जर(५३-१)देशी वडनगरइं आव्या। तिहां संघ घणि भक्ति साचवइं । श्रीसंप्रति निर्मापित श्रीमहावीर प्रासादि घणा स्नात्रि, अष्ट प्रकारी पुजा, अष्टोत्तरीइं पंच शब्दा सदैव हूया । तिवारइं मिथ्यात्वी वाडवइं जैन महिमा जांणि कोइक त्रिवाडी वाडवने घरे डोकरी गो करेरडी जर्णाने मृत्यु पामी । द्वेष थकी ते वाडवे गौ शव रात्रि एक द्वे मिली उपाडी लेई गुप्तपणइं जिनघरे मूकी । सुप्रभाति शिष्य जिनदत्त दर्शनि आव्या! प्रदिक्षणा करता गौ शव दीठो । तुरत आवी गुरुने कह्यो । गुरे उपयोग देइ जोयुं । मिथ्यात्वि व्यंतर पिण नही । मिथ्यात्वि वाडव जांण्या । श्रीगुरुइं देवघरनी मोटी आसतना जांणी बावन वीर माहिलो पूर्णभद्र वीर तेड्यो । ते हाथ जोडीं कहे कार्य कहो । गुरु कहइं शासनोन्नति करो । आ प्रासाद थकी छ मासनी अवधइं ए शव सजीवन करी प्रगट पणे काढो । किसइं जेह जीव... नें अभयदान हुइं । ते गुरुनइं वचने देव गौ कलेवरइं पइठो । एतलें देवघर थकी प्रगट पाणिं सकल वा(५३-२) डव तथा अन्य मनुष्य देषतां ते गो सिंग धुणावती जिहां त्रिवाडी वाडवनइं घरइं शिघ्रइं देव शक्ति वत्सीनइं हेते करी मिलि । स्तनि दुग्धपान ते वत्सीइं कीधो । ते देषी सकल वडनगर वाडव हर्षित हुआ । माहोमाहि कहइं— अनामुका त्रीवाडी ! आ किस्युं ? ते त्रीवाडी कहइं—ए महा कोईक देव शक्ति । नगरइं वार्त्ता हुई । ए जैनाचार्य महाम्नाय धारक । पुनः अत्र गौ १ अनइं वत्सी २ ए बिहु जीवनें अभयदानना दातार कृपावंत दयावंत जांणी सकल मिथ्यात्वि श्रीगुरुने नम्या । श्रीजिनशासननी उन्नति हूई । एतलइं नाम तो श्रीजिनदत्त सूरी पिण गौ १ वत्सीनें २ अभयदान देवे थकी उपगारी हूया, तेह थकी सकल मनुष्ये वडनगरे मिली श्री जिन दत्तनें 'उपगारी सूरी' ए बीजो नाम कह्यो । पुनः अणहिल्ल पत्तन पार्श्वे श्री वायड नगरें श्रीगुरुइं वायड ज्ञातीया घणा गृहस्त प्रतिबोधी जिनधर्म्म वासित कीधा। पुनः श्री सूरीइं वृद्ध सिंधु देशीं उंचा (५४-१) नगरे पंचनदीइं मध्य भागइं सैयद मलेछनइं वादइं जीत्या । तिहां घणा जाडेचा क्षत्रीय प्रतिबोधी आढार गौत्र उपकेस ज्ञातीं कीधा । ते परम जैन धर्म्म वासीत हूआ । श्री जिन शासनइं शौभिनीक ए सूरी कहीवाणा। श्री गुरुना नाम स्मरणिं दुखार्त्ति विलय जाय । अनुक्रमि श्री कुमारपाल राज्यें विक्र० सं० १२११ वर्षे श्री सूरीनइं स्वर्गा हूओ ।

इति जिनदत्त सूरी संबंधः

पुनः एहवइं श्री मरुदेशी श्री फलवर्द्धि पुरी तीर्थनी उत्पत्ति, ते कहे छै । पुनः नांणावाल गछै श्री मानदेव सूरी विहार करता फलवद्धिपुरी चुमासुं रह्या । तिहां ओ० गुरुड गौत्रि श्रे० पारस नामें गृहस्थ रहे छै । ते भद्रक परिणामिं करी निरंतर श्री सूरी वांदइं । एकदा ते पारस श्रेष्ठी गांम बाहिर कार्यार्थि, लधु बोरडीनी जालि वृक्ष मध्यें कांइक नीला अनि कांइक सूका म्लान फूलइं करी पूजीत एहवओ पाषाणनो ढीगलो देषी, गुरु श्री मानदेवनइं आवी पुछ्युं (५४-२) जे ए दृषद सदैव पूजि देखुं छुं । ते माटे अत्र स्थानिकें काई आश्चर्य दिसें छइं । तिवारी श्री सूरी पारसनइं कहइं— ए दृषद पिहुला करओ । तिणें पारसें गुरु आज्ञा थकी तें दृषद वेगला भिन्न भिन्न कीधा । तेतलइं श्री पार्श्व बिंब दीठओ । पासने अधिष्टायकि प्रगट मनुष्यने शब्दि कहइं—जे प्रासाद करावी पूजा करजें । तिवारइं पारस कहइं द्रव्य नही । अधिष्टायक कहइं श्री पासना मुषाग्री समु प्रभाति स्वर्णना अक्षतनो ढिगलो निरंतर व्यय प्रमाणें हुस्यइं । ते द्रव्यें प्रासाद नीपजावीजे । पिण ए वार्त्ता कोईं आगलइं न कहेवी । ते पारस श्रेष्ठी अंगीकार करी घरे आवी श्री गुरुने बिंब प्रगट हूआनी वार्त्ता कही । तिवारइं ते अधिष्टायक आराध्यो । तिवारइं ते देव आवी गुरुन कहइं—पहिला इणि पुरिं इणि ठिकाणें संप्रति नृपकारक पार्श्वनाथनो प्रासाद हूंतो । ते कालना योगी जज्जर हूई क्षय हुओ । ते बिंब ए श्री पासनो प्रगट हूई । श्रे० पारसनइं दर्शन दीधो । बीजइं दिनें देवक (५५-१) थक प्रमाणें स्वर्ण अक्ष-

Aho ! Shrutgyanam

तनो ढिगलो प्रत्यक्ष साचओ देषी श्रे० पारसइं प्रासाद नवो प्रारंभ कीधो । मूल मंडप १ रंगमंडप २ नृत्यमंडप ३ सर्व निपजाव्युं । द्वार कोट निपजाव्यो। तेहवे एक दिनें स्वपुत्री पुछयुं—ए द्रव्य तुम्हे किहा थकी लावओ छओ ? इम वार ३ पुछै । पारस श्रेष्ठिइं पुत्रीनइं भद्रक पणइं यथास्थित कह्युं । तिवारइं अभिप्रायकइं द्रव्यनी वार्त्ता प्रगट करी जांणी स्वर्णाक्षत द्रव्य बंध कीधो । तिवारइं प्रासाद एतलो रह्यौ । तिवारइं श्रीमानदेव सूरीइं श्रे० पारसना आग्रह थकी वि० सं० ११९८ वर्षे श्री फलवर्द्धि नगरें महा महोछवइं श्री पास बिंब थाप्यो । यदुक्तं—

श्रीमत् पार्श्वजिनाधीशः फलवर्द्धिपुरस्थितः ।
प्रणम्य परया भक्त्या सर्वाभीष्टार्थ साधकः । १ ।

इणिपरें स महिम्न श्रीफलवर्द्धि तीर्थ प्रगट हुओ ।

४० तत्पट्टे श्री मुनिचंद्र सूरी ।

श्री सूरीना उपदेश थकी वि. सं. ११९५ वर्षि श्री दधिपद्रइं वायट ज्ञातीय दो. अंबराजइं श्री शांतिनाथनो बिंब था (५५–२) प्यौ । पुनः श्री सूरीना उपदेश थकी श्री सीरोही नगरे वि. सं. ११९७ वर्षि विज्जापान सगोत्रि(?)चहुआण श्री पृथ्वीराज हुओ । श्री सूरीइं पाखी सूत्र ग्रंथ नीपजाव्यो । एहवइं वि. सं. ११९८ वर्षि श्री अभयदेवसुरी प्रगट हुआ ।

श्री अभयदेवसूरीनी उत्पत्ति कहइं छइं ।

मेदपाट देशी वडसल ग्रामइं तूंअर सगो नामिं राजपुत्र रहै छै । तिहां कौटिक गछें खरतर बिरुद धारक श्री जीनेश्वर सूरी विहार करता तिहां आव्या । श्री सूरीनइं देषी सीधो (सगो ?) नम्यो । श्री गुरुइं भव्यात्मा जांणि उपदेश कह्यो । सांभली बूज्यौ । तत्काल दीक्षा लीधी । जोग्य जांणी आ० पद देई श्री अभयदेव सूरी नांम दीधु । अत्युग्र षट् विगयना त्याग थकी पूर्व कर्म्मानुसारें देही कुष्ठ हूओ । श्री सूरी पूर्वोपार्जित कर्म्मे अहियासता थका गुज्जरात देसि भाणपुर गामि आव्या । वडवृक्ष हेठालि रात्रि सुतां सुप्रमां तप लब्धि थकी अर्धनीसाइं सासन देवी कहइं—ऋषीश्वर ! जाग्र छो ? ते देवीवांणी सांभली सूरी कहै—रोगग्रस्तनइं निद्रा किहां थ (५६–१) की ? । एहवी आ० नी वांणी सांभली शासन देवीइं बालीका स्वरूप धरी आवीनइं आचार्यनइं करइं जिमणै हाथै सूत्रना कोकडा नव देइं । मुझ देही समाधी हूइं उबेलीस्युं । ते सांभली श्री सरस्वती कहइं सेढी नदीनइं कंठी पलास वृक्ष हेठइं चीकणी भूमिका छइं । ते अहिनाणइं पाहिलां श्री नागार्जुन योगीइं विद्यासीधीइं भूमंडारित बिंब श्री थंभण पासनओ समहिम्न छइं । तिहां तुम्हे जाज्यो । श्री थंभण पासनी स्तुती करज्यो । कीर्तना करतां ते बिंब सद्य प्रगट हुसइं । तहेना स्नात्रनइं जलि सकल रोग ए देह थकी जास्यें । पिण कोकडा नव तुम्हे उबेलज्यो । इम कही देव्या श्री शारदा स्वस्थानिकइं गयां । तेहना वचननें अनुसारइं गौदुध चीकणी भूमीनइं अहिनांणी खाखर वृक्ष हेठली जाई श्री अभय देवाचार्य उभा रही श्री थंभण पासनी कीर्ति तद्रूपि जयतिहुण बत्रि ३२ ' फणि फण फार फुरंत रयणकर' १७७० ए काव्य सतरमु कहितां श्री पास बिंब (५६–२) भूमिका थकी प्रगट तत्काल हुओ । श्री संधि स्नात्र ओछवइं श्री पासना अभिषेकनओ जल सुचिपात्रइं भरी गृहस्थि श्री आचार्यनी देहीनइं छांटवि करी गुरु अंग थकी सकल रोग उपद्रव सम्या । देह तप्तसुवर्णोपम हूइ । महोछव मंगल जय शब्द हूओ । तिणहीज ठिकाणइं सेढी नदीनइं तटि थंभणपुरनामें गाम थाप्यो । प्रासाद नीपजावी वि. सं. ११११ वर्षि श्री अभयदेव सूरीइं थंभणपुर प्रासादि श्री पासजी थाप्या । तिहां थकी विहार करता श्री अणहिल्ल पाटणि श्री पंचाश्वर पासने जूहारी चोमासें रह्यां । रहितां थकां एकदा गुरुने शासन देव्या दत्त नव सूत्रना कोकडानो उपयोग आव्यो । तिवारइं श्री सूरीइं वि. सं. ११२० वर्षि भगवती प्रमुख नव अंग सूत्रना जे सिद्धान्त तेहनी टीका नीपजावी । एहवै श्री थंभण पास प्रगट कार वि. सं. ११४५ वर्षि श्री गोपनगरें आ० श्री अभयदेव सूरी स्वर्ग हुओ । तेह पछी (५७–१) केतलेक वर्षे गुर्ज्जर देसी यवनराज हूओ ।

Aho ! Shrutgyanam

तिवारइं श्री सकल संघि मिली सप्रभाव बिंब जांणी वि. सं० १३६२ वर्षे श्री खंभायत नगरे सुठिकाणें घणे यत्नि श्री थंभणापास थाप्या। नीलुप्पल समान नील वर्ण देह धारक सकल क्षुद्रोपद्रववारक ते बिंब आज लगणि सप्रभाव छइं।

उक्तंच—जयत्यसौ स्तंभनपार्श्वनाथः
प्रभावपूरैः पूरितं सनाथः।
विघ्नसधन्वंवतरणैव येन
कुष्ठोपतापोऽभयदेव सूरी॥

स्फुटीचकाराभयदेवसूरी—
योभूमीमध्यास्थितमूर्ति सिद्धं (?)॥ १॥

इणि परि आ० अभयदेव सूरी हूता हूआ।
इति आ० अभय देव सूरी संबंध।

पुनः एहवइं वि. सं. ११५२ वर्षे श्री जयसिंह देवि श्री सीद्धपुर नगर वसाव्युं। इग्यार मालइं करी श्री रुद्रालय थाप्यो। पुनः श्री सुविधिनाथ नवमा तीर्थंकरनओ प्रासाद नीपजाव्यो। स्व दर्शन १ अपर दर्शन २ पोषी घणुं सुकृतइं द्रव्य कीधो। वि. सं. ११५४ वर्षे वृध तटाक १७ (५७-२) कराव्या। ४१ जलनी दीर्घ वापीका निपजावी। ६१ कुंड बंधाव्या। ६७ लघु तटाक; दर्भावती, सहेली, झुंझुंवाडा प्रमुष नगरें गढ बंधाव्या। लघु वापिका १०२१, विश्राम थांनीक १०६८, देव देव्या यक्ष प्रासाद एक लक्ष निपजाव्या। एहवइं गुर्ज्जरे अणहिलपत्तनाधीश सोलंकी श्री जयसिंह देव राज्यें श्री कोटिक गछे, चंद्र कुले, वज्री शाषाइं आ० श्री देवचंद्र सूरी तेहना शिष्य आ० श्री हेमचंद्र सूरी प्रगट हूआ।

हवई श्री हेमचंद्राचार्यनी उत्पत्ति कहै छै।

गुर्ज्जर देशि धंधुकि नगरइं मोढ ज्ञाती गोत्री साचओ रहै छैइं। तेहनी स्त्री चंगी नामि। तेहनओ पुत्र चंगदेव नामि छै। तिहा विहार करता आ० देवचंद्र सूरी आव्या। श्री सूरीनो धर्म्मोपदेस सांभली तिणइं चंगदेव नामिं वणिकुपुत्रे गुरु संयोगे परम श्रावक हूओ। वि. सं. ११४५ वर्षे तेहनो जन्म। पांचमे वर्षे वि. सं. ११५० वर्षे दीक्षा लीधी। सोमदेव रुषी नाम दीधुं। श्री गुरुनी कृपा (५८-१) थी अनुक्रमि गुरु श्री देवचंद्र सुरी १ अनि शीष्य रुषी सोमदेव २ए बिहू कलिंजर नामि पर्वतइं कोइक ओषधीनइं सोधिवा जाइं छइं। तिहां मारगमां श्री मलय गिरि सूरी मिल्या। तिहां थकी कुमारिया गामें जातां थका तटाके धोबी वस्त्र धोतो दीठो। पद्मनी चीर देषी पूछीओ। तिवारें ते वस्त्रख्यालक गुरुने कहइं—आ गामनो श्रेष्टी तेहनी पहिरवानो छे। तिहां चउमासि रह्या। केतलेक दीने ते श्रीमाली गृहस्थनें पद्मनाना मुष आगिलइं विद्या साधननुं रहस्य कह्यो। श्री जीन शासननो भक्तिनें हेते तिणे श्रीमालिइं अंगिकार कीधो। शुभ दिनइं श्री रुषभ देव प्रासादें भूमीग्रहें श्री देवचंद्रसूरी १ श्री मलयगिरी सूरी २ रु० सोमदेव ३ ए त्रिहू साधु दिगंबर हुइ काउस्सग्गे रह्या। सन्मुखि नग्न पद्मनी स्त्री उभी रही। तेहनो स्वामी ग्राम श्रे० ते नग्न खड्ग हाथइं झाली लेई श्री गुरुने पासइं आवी साहस धैर्य धरी उभो र (५८-२) ह्यो। गुरुइं गृहस्थनइं कह्युं—ध्यान थकी चुकै तेहना मस्तकइं तत्काल खड्ग दीजें, विलंब नही। इम विधि विद्या साधतां साहसीक धैर्यपणो देषी ते देव ईग्यारमइं दिने आवी कहइं 'तुठो, वर मांगि'। तिवारइं गुरु श्री देवचंद्र सूरीइं वीर ५२ वसिनओ वर माग्यो। श्री मलयगिरी सूरीइं सिद्धांतनी टीका करवानो वर माग्यो। अनि रु० सोमदेवि राजा प्रतिबोधवानी शक्ति मागी। त्रिहू साधुनें ते देव वर देई अलोप हूओ। गृहस्थनें कोटी द्रव्यनी प्राप्ति हूई। तिहां थकी देवदत्त वर लेई श्री मलयगिरी सूरीइं मालव देशे विहार कीधो अनि गुरु श्री देवचंद्र सूरी १ अनि शिष्य रु० सोमदेव २ ए बिंहू गुरु शिष्य श्री गिरिनारि नेमीश्वरनी यात्राइं दर्शन करवा गया। तिहां मारगे कोइक गामि एक वाणिक दरीद्री रहइं छे। पहिला तेहनइं माता पिता महा श्रीमंत हूता। तेहनी भ्रांति तिणे वणिके घरनी पुनः......थकी खणीने तिहा थकी द्रव्य प्रग (५९-१) ट कीधो। व्यंतराधिष्ठिते सेवतरा प्रगट हूया। तेह थकी घरनें मध्य भागइं ढि-

Aho ! Shrutgyanam

गलो कीधो छे। प्रत्याक्षि लीहालानओ समुह छै। तिणे समयइं बि पोहरइं मध्यानइं श्रीगुरु अनि शिष्य तेहनइं घरे आहारनइं अर्थि गया। तिणे सूक्ष्मरव (?)दान दीधुं। ते आहार देखी सोमदेव शिष्य वार २ गुरु साहमौ दृष्टि करी संज्ञाइं समझावई पिण गुरु संज्ञाइं न समझया। तेतलि वणिक समझयो जे ए रुषी महा भाग्यनो स्वामी जांणी उतावलो आवी तत्काल सोमदेव रुषी प्रति बि हाथि उपाडी सेवंत्राना ढगला उपरि बइंसाड्यौ। एतले ते गृहस्थना पुन्यनइं योगइं ते सेवंत्राना समुहना ढिगला थकी रु० सोमदेवनी दृष्टिना प्रभाव थकी ते व्यंतर नाठौ। एतलें वणिकें साक्षात् प्रगटपणें सुवर्ण ढगलु दीठौं। तिवारे ते गृहस्थे घणा आग्रहे गुण निष्पनि श्री गुरुनइं वीनती करी वि०सं०११६६ वर्षि रु० सोमदेवनइं श्री गुरुइं आचार्य (५९-२) पद देई श्री हेमचंद्र सूरी नाम दीधुं। वि० सं० ११६७ वर्षि गुरु श्री देवचंद्र सूरी स्वर्ग हूओ। एहवइं अनेक ग्रंथ कारक श्री मलयगिरिसूरी स्वर्ग हूओ।

श्री मुनिचंद्र सूरी जावजिव लगइं छ विगायना नियम धारक श्री सूरीइं सोरठ देसि प्रासाद बिंब प्रतिष्ठ्या। सुमतादि चारित्रइं समर्थ यतः—

संविग्नमौलिविकृतीश्चसर्वा—
स्तत्याज देहेप्यममः सदा यः।
विद्वद्विनेयाभिवृत्तप्रभावः
प्रभागुणै र्यः किल गौतमोऽयं ॥ १ ॥
अग्रहयेश (११६८) मितेऽब्दे
विक्रमकालाद्दिवंगतो भगवान।
श्रीमुनिचंद्रः मुनींद्रो
ददातु भद्राणि संघाय ॥ २ ॥

४१ तत्पट्टे श्री आजितदेवसूरी।

लघु गुरु भाइ सकल वादी मुगट बिरूद धारक श्री वादि देव सूरि २। ए बिहूं गुरु भाई। ते मध्ये बडा गुरु भाई ते पट्टधर अनि लघु भाई ते गछनी मर्यादाना सार संभालिना करणहार। वि०सं० ११६८ वर्षे निवृत्ति कुलें श्री महेंद्र सूरीना उपदेश थकी घोघा बिं (६०-१) दरें श्री मालि ज्ञाति नांणवट्टी सा०हीरुइं श्री नवखंडा पार्श्वनाथनो बिंब भराव्यो। वि०सं० ११७७ वर्षी श्री नागुरी शाखा कहिवांणी। श्री अजित देव गुरु प्रति गुरु वाणि रंजित थको अणहिल पत्तनाधीशः सो० श्री जयसिंह देव निरंतर त्रिणं प्रदिक्षणा देइ वांदेई। श्री सूरी पश्चिम दीसी देवकें पत्तनइं श्री जिन शासनइं शोभा कारक हूया १ अनि लघु गुरु भाई श्री वादिदेव सूरी तेहना शिष्य श्री रामचंद्र सुरी, तिणि स्नात्र विधि प्रगट कीधी।

तेहवइं श्री मरुदेशीं जीराउली तीर्थनी उत्पत्ती हुई। आबूनी पासिं जीराउली गामइं घोसिरगोत्रि श्रे० श्री धांधल रहै छइं। तेहनी गौ सेहली नदीनइं कांठइं बोरडीनी जाल मांही सीमाडे चरवा जाइं छे। तिहां दूध झरइं। संध्यासमयइं ते गौ वणिक घरे दूध न दीइं। तिवारइं ते धांधल गृहस्थ जाणइं जे कोई सीमइं दोहीने दूध लीइ छैं। तेहनीं भ्रांती तेणे संघाते पुत्रनें मोकल्यो। जिहां गौ चरई तिहां पृथ्वीनइं ठिकांणि दूध करी गई। ते देषी पुत्र घरे आवी (६०--२) दूध झरण वात पिता प्रति कही। तिणइं धांधलइं आश्चर्य जांणी ते दूध झरण भूमीका षणी। एतलइं घणा कालनी श्री पास मूर्ति प्रगट हूई। एतलइं अधिष्ठायकें स्वप्न दीधो, ते मुझनें जीराउली नगरइं थाप्यो। तिवारइं धांधलइं प्रासाद नीपजावी महोत्सवें वि० सं० ११९१ वर्षि श्री पार्श्वने प्रासादे थाप्या। श्री अजितदेव सूरीइं प्रतिष्ठ्या। घणा दिन ताइं श्री पार्श्वनाथनी भक्ति साचवतो श्रे० धांधल सद्गतीनो भजनार हुओ। ते श्री पार्श्व परमेश्वर जे जीरापल्ली नगरइं रह्या। सकल भक्ति लोकनी वांछापूरक मारि उपद्रव निवारक सप्रभाव तीर्थ हुओ। यतः—प्रबलेपि कलिकाले

स्मृतमपि यन्नाम हरति दुरितानि।
कामितफलानि कुरुते
स जयति जीराउलीपार्श्वः ॥ १ ॥

इणि परि श्री जीराउली पार्श्व उत्पत्तिः

पुनः वि० सं० ११९१ वर्षे दीली नगरें बिल्हारी

Aho ! Shrutgyanam

पठांण आव्या । चहूआणनइ काळ्या, म्लेछाण हूओ ।

हवइं श्री देव लोडण पास तिर्थनी उत्पत्ति कहे छे ।

गुज्जर देसि सेरिसा नगरें नागिंद्र गछइं श्री देवेंद्र सूरि शिष्य सहित विहार करता आव्या । पिण गुरु शिष्य थकां (६१–१) वीराकर्षण विद्यानी पुस्तिक गुप्त पणि राखइं । एकदा गुरु रात्रिं निद्राइं आव्या । एतलइं एक शिष्ये तें पुस्तिका चंद्रमानइं उद्योति वांची। बावन वीर आव्या । कहि, किस्युं काम छे ? । तें शिष्य कहइं इणि पुरें जिन प्रासाद नही छइं ते माटिं पछिम दिशिं जैन कांति नगरी थकी श्री जिन दर्शननो आ घणो पुन्य जाणी तुह्मारी शक्ति इहां एक प्रासाद लाव्यो । तिवारें ते शिष्यना वचनें वीर कहें अह्मारुं प्राक्रम प्रभाति कुर्कट शब्द न हूइं तिहां लगण, शब्द पछी नही । शिष्य आज्ञा लही बावन वीर जैन कांति नगरी थकी रात्रि प्रासाद लेई सेरिसई नगरइं आव्या । एहवें उंच थकी गुरु जाग्या । तिवारें आकासि कोलाहल, बावन वीर नो आंण्यो प्रासाद श्री पासनो देखी चित्ते चिंतवइं ए किस्युं ? पुस्तिकानो उपयोग आव्यो । एतलि तिहां पुस्तिका नही । श्री गुरुइं शिष्यनां कांम जाणी श्री चक्रेश्वरी स्मरीनइं कहइं ए शिष्यने मालिम नही । रात्रि घणी छइं ते माटि तुमो कारिमा कुर्कट बोलावओ । गुरु आज्ञा थकी ते देवीइं तिमज कीधो । एतलइं प्रभात हूइं जांणी वीर स्वस्थानकि (६१–२) मोहता । एतलइं प्रासाद तिहांज रह्यौ । तेह थकी वि० ११...वर्षे सेरीसा नगरइं श्री लोडण पासनी थापना हुइ । आ० श्री देवेंद्र सूरी तिहां थकी विहार करी अणहील पत्तनइं पंचाश्वरो प्रणम्या । इति सेरीसा तीर्थ उत्पत्तिः ।

४२ तत्पट्टे श्री विजयसिंह सूरी ।

चारित्र चूडामणी बिरुद रधता विचरीं । एहवइं सोलंकी श्री कुमारपाल प्रगट हुओ । तेहनी उत्पत्ति कहइ छइं ।

गुर्जर देसि अणहिल वाडा पाटण पासें देइथली नगरइं सो० श्री त्रिभुवनपाल भार्या वाघेली कास्मीरी । पुत्र पांच, ते माही कनिष्ठ कुमारपाल नामी तेहनो वि.सं.११७७ वर्ष जन्म हुओ । विक्रम सं० ११९७ वर्षि श्री षंभायते श्री सूरी मुखें धर्म्मोपदेश लह्यौ । वि.सं.११९९वर्षे कुमारपाल टीको हूओ । एतलइं गुरुनें घणइं ओच्छवइ शालाइं पधराव्या । सदेव व्याख्यान सार कांइक सुकृत कहो । तिवारें सूरी कहीइं

दीर्घायुः परं रूपमारोग्यं श्लाघनीयता ।

अहिंसायाः फलं सर्वं किमन्यत् कामदेवसा ॥ १ ॥

एहवा वचन श्री गुरुनां सांभली चउमासइं जी- (६२-१) वाकूल भूमिका जांणी गुरु मुखे कुमारपालि नियम लीधो जे चउमासें सैन्य चढाइं युध न करवओ। ते वार्त्ता केतलेक दिनें दिल्ली नगरइं म्लेछइं सांभळी । तिहां थकी सैन्य आवी अणहील्ल वाडें उतर्य्यो । सहिर पाषति गढ कोट नही तिवारिं कुमारपालि गुरु विनव्या— सैन्य १ अनइं युद्ध २ नो तुह्म मुखइं माहरइं नीयम छइं । सूरी कहइं धर्म्म थकी कुशल हुसइं । श्री सुरीइं कंटेश्वरी पादर देवी स्मरीनें कहें जिन शासनइं ए राजा नियम धारक छे तेह थकी परचक्रनो उपद्रव्य निवारो । ते गुरु आज्ञा लही देव्यांइं रात्रि निद्राइं सुतो म्लेछनइं उपाडी कुमारपालना महेलमां लावी मुंक्यौ । प्रभाते जागी उठयो । स्व सैन्य अनुचर नही । एतलइं चढति दिनइं राजर्षिनइं अनुचरें दंतधावन निमित्तें पावन जलसंपूर्ण पात्र अंचलो लावी दीधो । ते देषी मुगल कहइ—ए कुण स्थान ? तूं कुण ? ते अनुचर कहइं ए राजा श्रीकुमरपालनओ मंदिर । हुं तेहनो सेवक । ते मुगले सेवकना वचन सांभली मनस्युं विचारइं—हुं एहनो राज्य लेवा आव्यो छुं, पिण सांकडें हू आण्यो इंण (६२-२) इं, अनइं एह महा भाग्यनो स्वांमी मुझस्यु मैत्री वांछइं छइं । एहना पीर पिण साचा छइं । तओ ए राजानओ हुं मित्र । तिवारइं मुगल्ल १ अनि कुमारपाल २ बिहू मित्र हूई माहों माहि भेट आपि पीराण पत्तन नगरनो नांम देइ, कुमारपालनइं स्वधर्मि दृढता पणुं १ अनि उपगारी पणुं २ देषी प्रसंसा करतो दील्ली नगरइं मुगल पुहतो । श्री जिन सासनइं महिमा हुओ । गुरु कीर्ति हूइ । एतलइं विक्र० सं० १२०७ वर्षि सो० श्री कुमा॰

Aho ! Shrutgyanam

रपालें अढार देशि अमारि पलावि। हवे तें अढार देशना नाम यथा—

कर्णाटे १ गुर्जरे २ लाटे ३ सौराष्ट्रे ४ कच्छ ५ सौंधवे ६। उच्चायां ७ चैव भंभेर्यां ८ मारवे ९ मालवे १० तथा ॥ १ ॥ कौंकणे ११ च तथा राष्ट्रे १२ कीरे १३ जालंधरे १४ पुनः। पंचाले १५ लक्षमेवाडे १६ दीपे १७ काशी १८ तटे पुनः ॥ २ ॥

मारि शब्द एहवओ मुखि कहिवइं करी चउविहार उपवास एक करइं। सकल प्राणि अणगो पाणी पीइं। पुन वि० सं० १२०९ वर्षि हेमी व्याकरण श्री हेमाचार्यें प्रगट कीधो। विक० सं० १२११ वर्षि सग लक्ष मनुष्ये श्री सिधाच (६३-१) ली संघपति हूओ। वि० सं० १२११ वर्षे लेउआ गाथापतिनइं दया पाल जांणी सांडरिया विरुद दीधो। वि० सं० १२१३ वर्षे श्रीमाली मं० बाहड देइं श्री सिध्दाचलइं चउदमो उद्धार नीपजाव्यो। वि० सं० १२१६ वर्षे बंबेरागढ थकी श्री शांतिपूजानें नूतन वस्त्रार्थि शालविना सात हजार घर पाटणी लावी वसाव्या। वि० सं० १२१८ वर्षे श्री हेमाचार्य अमावस्यानी पूर्णिमा देषाडी। वि० सं० १२२१ वर्षे तारणगीरीइं श्री अजित जिन बिंब थाप्यो। तिणहीज वर्षे सातसें लेखकने द्रव्य आपी एकवीस ज्ञानकोश लिषाव्या। न्याय घंटा सदेव वाजइं। श्री गुरु उपदेशि चउदशत अनि चुमालीस, ८४ मंडप सहित प्रासाद नीपजाव्या। पुनः एकवीस शत जीर्णोद्धार नीपजाव्या। एकदा मं० बाहडदे श्री गुरुने वीनती कहे जे नवीन प्रासाद नीपजावइं पुण्य किंवा जीर्णोद्धारनो लाभ? एहवुं मंत्रीनुं वचन सांभली श्री सूरी कहइं। यतः—

नूतन श्रीजिनागारविधाने यत्फलं भवेत्।
तस्मादष्टगुणं पुण्यं जिर्णोद्धारे विवेकिनः ॥ १ ॥

एहवओ गुरुवचन सांभली मंत्रीइं पन्नरशत जीर्णोद्धार निपजा (६३—२) व्या। तेमांहि प्रथम जीर्णोद्धार वि. सं. १२२० वर्षे श्री भृगुकच्छे श्री शकुनिका विहारनो कीधो। श्री गुरुना साहज्य थकी। पुनः इणहीज वर्षि आगिम गच्छ हूओ। पुनः एकदा कुमारपालनें रात्रि सूतां थकां पूर्वि बालावस्थाइं अभक्ष भक्षण खाधओ छइं तो गुरु पासइं व्रतव्रत उच्चर्यां, ते मांसनो स्वाद दाढामां उपनो जाणी चिंतवइं अभक्ष भक्षनइं संभरवइं खंडित हूओ। प्रभाते गुरु वांदि पूछिओ। निवारइं गुरु कहइं—एहनी आलोयणा तुम्हे बत्रीस लक्षणा पुरुष छओ तेह थकी बत्रीस वरो प्रासाद, बावनदेव कुलिका सहित निपजावओ। ए व्रत भंग हूआनी तुम्हने ए आलोयण दीधी। ते गुरुवाणी अंगीकार करी स्वपिता तिहुयण पालने नामि तिहूयण वीहार, बहुत्तरी देव कुलिका सहित निपजाव्यो। तेमांहि २४ बिंब रत्नमय, बिंब २४ स्वर्ण—पित्तलमय, बिंब २४ रुपमय, पुनः मुख्य प्रासादे एक सओ अनि पंचवीस अंगुल प्रमाणी अरिष्ट रत्नमय मूल नायक श्री रुषभदेव बिंब स्थापित, सकल देव कुलिका सुवर्ण कलसे युक्त जा (६४—१) णवी। निरंतर सत्तरभेदि, पुनः षट् पर्वि अष्टोत्तरी, जिनभक्ति हुइं। बिहूं टंक प्रतिक्रमण, त्रि टंक देववंदनक, साच वइं। सूर्योदये स्वगृहइं श्री शांतिनाथनइं अर्चि वीतराग एकशत आठ नाम समरी पछी अढारसय कोटी ध्वज गृहस्थ युक्ति, तिहूयणपाल विहारइं, श्री रुषभदेव दर्शन करी, गुरु वांदि, उपदेश सांभली, घरें आवी, सदैव सातसिं साधर्म्मिक जीमाडी। पछी एक भक्त करइं। मासे २ लक्ष साधर्म्मिक पोषि। प्रति वर्षि यात्रा सात सवा २ लक्ष मनुष्यइं करवि।

अथ द्रव्य संख्या, कोठार चार अघटित स्वर्ण भर्या। कोठार चार अघटित रुपि भर्या। कोठार १ मुक्ता फलि भर्यो। कोठार १ नानाविधि रत्ने भर्या। पार्श्वे पार्श्वाणना खंड च्यार। कोठार १ विद्रुमनो षंडे भर्यो। १५ लक्ष कोठार पवीत्र धानइंकरी भर्या। अथ सैन्य द्विपद संख्या—७२ सामंत। च्यारशत प्रधान। सातसै कोटवाल। १८ लक्ष पायक। एक लक्ष दूत। ११ हजार गज (?)। १२ हजार अंगमर्द्दक। १७ हजार सूयार। १५ दास अनि दासि। बि स्त्रि। अथ चउपद संख्या—११ लक्ष हय। ११ हजार (६४—२) पालखी। ५७ हजार रथ।

Aho ! Shrutgyanam

२४ हजार करभ । १७ हजार वेसर । २२ हजार महिषा । दोढलाष वृषभ । एक लक्ष शकट । १५ सो कौतुक चडोल । इणि परि पूर्वभवपून्ये भोगवें । पूर्व-लइ भवइं कोइक व्यवहारीयाने घरे कुमारपालनउ जीव चाकर हूतो । तिहां निर्म्मल श्रद्धा थकी नव कपर्दीकानां अढार फूल आव्यां । ते लेइ सिद्ध गीरीइं श्री परमेश्वर-नइं चढाव्यां । तिणै पून्येकरी १८ देशनी साहिबी भोगवतो, श्री गुरु वचनें सुकृत करतो, जिन सासन सोभावतो, थको दिन नीगमइं । एहवइं वि. सं.१२२९ वर्षि सार्ध त्रि कोटि ग्रंथ करता, कलिकाल सर्वज्ञ बिरुद धारक, अष्टादश देशाधिपति बोधक, श्री तारणगिरी तीर्थ थापक आ० श्री हेमचंद्रसूरी स्वर्ग हूओ । उक्तंच:—

सो जयइ वुड्ढवाई १ सिद्धसेनो जयउ खलु हरिभद्दो । सिरी बप्पभट्टसुरी ४ पालित्तो ५ अभयदेवो य ६। सिरीमलयगिरिसूरी ७ सूरी सिरीयसोभद्दो य ८। सिरीहेमसूरीअ ९ अभि पवरथेरा जयंतु जुगपवरा ।। पुनः विक्र. सं. १२३० वर्षि कलिकाल राजर्षि बिरुद धारक श्री जीनसासनुन्नतिकारक (६५–१) सो० श्री कुमारपाल स्वर्ग हूओ। यतः उक्तम्

दया धर्म्म सुवेलडी रोपीरुषभ जिणंद ।
श्रावककुलमंडप चडी सिंची कूमर नरिंद ।।१।।

श्री कुमारपाल संबंध ।।

हवइं श्री अंचल गछनी उत्पत्ती कहइं

वडगछ बिरुद धारक श्री उद्योतन सूरी । तेहनें पाटी श्री सर्वदेव सूरी । तेहना लघु गुरु भाइ आ० श्री पद्मदेव सूरी १। तेहना शिष्य श्री उदयप्रभ सूरी २, धर्म्मचंद सूरी ३, विनयचंद्र सूरी ४, गुणसागर सूरी ५, विजयप्रभसूरी ६ तेहना नरचंद्र सूरी ७ तेहना श्री वीरचंद्रसूरी ८ तेहना शिष्य आ० श्री जयसिंह सूरी । ते आबूनी तलहटीइं दत्ताणि नगरें शालाइं रह्या छे । एहवइं तिहां ओ० वृद्ध द्रोण नाभि सेठ रहिछइं । तेहनइं नाटी नांमी स्त्री छइं, तेहनइं गोदो नामइं बेटो छें । तेहनो वि० सं० ११३६ वर्षि जन्म हुओ । पुनः तिणे पुन्यने योगे वि० सं० ११४२ वर्षि श्री जयसिंहसूरी हास्ते दीक्षा लीधी । तिहां प्रथम साधुनओ आचार ओलषवानइं हेति श्री दशवैकालिक सुत्र गुरु तेहनें भणाविता हूया । भणता थका अध्ययन सातमानी गाथा छठी भणवा मांडी । (६५–२) ते गाथा—

सीउदगं न सेवेज्जा शिलावुठं हिमाणियं ।
उसिणोदगं तत्थ फासुयं पडिगाहिज्ज संजइ ।।१।।

ए गाथानओ अर्थ गुरुइं भणाव्यो । ते अर्थ गोदें चित्तमांहि विचारयौ । पोशाल मांहि ताढा सचित्त पांणीना भांडा भरया देषी गुरुनइं पूछें, श्री गुरुजी अम्नहा वाहाई अम्नहा किरिया कहीइं । ए वचन सांभली गुरु कहें, सुशिष्य एह किरिया आ समयइं न चालि । तिवारि तिणै शिष्यै कह्युं ए किया करइं तेहनइं लाभ किंवा त्रौटो ? गुरु कहे—लाभ, पिण तेहने त्रोटो नही । एहनी गुरें योग्य क्रियापात्र तपस्वी जांणी उपाध्याय पद देइ श्री विजयचंद्र नाम दिधुं । तिणइं तिहां थकी गुरु वांदी आज्ञा लही च्यार साधुस्युं विहार कीधो । केतलेक दिवसें पावइ पर्वति आव्या । तिहां संप्रति नृप कारक प्रासादे श्री संभव देवनइं नमस्कार करी चउ विहार मासखमणें उपाध्याय काउस्सगि रह्या । मास संपूर्णि जितेंद्रिय तपस्वी पणइ जांणी महाकाली देव्या वांदी कहीइं—हुं तुम्ह उपरी प्रसन्न छुं । तुह्मो सेवनइं कल्याणकारी छुं । मुझनें संभारइं उपद्रव वेगलो करीस । पिण आज (६६–१) कृष्णाष्टमी छइं ते माटि मुझनइं अष्टमोइं दीनइं उपवासी तुम्हे संभारज्यौ । ते देवी दत्तवर थकी उपाध्याय श्री विजयचंद्र पावागिरि पीठ थकी उतरी भालिज नगरइं आवी मासखमणनें पारिणए यशोधन भणशालीनइं घरे आहार लीधो । एतलइं देवीनइं वर थकी मुख्य गृहस्थ यशोधन धनशाली हुओ । एतले पांचमा आरानइं योगी केवलीनें अभावें करी आपआपणी स्वईछा थकी नव नवी क्रिया नव नवी समाचारी आदरी । एतलि पोताना गुरुनी मूल समाचारी लोपीनइं, वि० सं० ११६९ वर्षि, श्री जयसिंह दैव राज्यै एकसओ अनिं सित्तर बोलनी परूपणाइं श्री विधिपक्ष गछनाम दीधुं । तिहां थकी केतलेक दीनें श्रीविजयचंद्र उपा-

Aho ! Shrutgyanam

थ्याय विहार करता वइणप नगरि आव्या । तिहां श्री श्रीमाली कोडि नामें व्यवहारीओ प्रतिबोधी स्व गछिं कीधो। तिहां थकी विहार करता घणा गृहस्थने प्रतिबोधी दीक्षा देता पुनः श्राधि प्रमुषनें दीक्षा देता थका पश्चिम देशे मंदाउर नगरइं आव्या । तिहां वि० सं० १२०२ वर्षि उ० श्री विजयचंद्रनें सूरी पद हुओ । श्री आर्यरक्षित सूरी ना (६६-२) म दीधुं । केतलाक चौमासा पश्चिम दिशि कीधा । तिहां थकी विहार करता श्री विधि पक्ष गछ विरुद धारक श्री आर्यरक्षीत सूरी गुज्जराति अणाहिल पत्तनि पंचाश्वरनइं नमवा आव्या । तिहां शालवी गृहस्थनइं तंतुआ जीवनी उत्पत्ती देखाडी स्व गछइं लीधा । तिहां चउमासे रह्या । एहवइं बइणप नगर थकी कोटी व्यवहारीओ कोइक कार्यार्थे पाटणइं आव्यो । तिहां देव दर्शन करी जिहां शालाइं राजा कुमारपाल आ० श्री हेमचंद्रना मुष थकी उपदेश सांभलीइं छे, तिहां आवी सभा समक्षइं श्रीहेमचंद्रने वस्त्रांचलइं वांदइं । ते देखी राजा कुमारपाल कहइं—ए कुण गृहस्थ जे वीगर वांदणइं इम वांदइं ? ते सांभली श्री हेमचंद्र कहै—ए विधिपक्षीक। तिवारि कुमारपाल कहइं--ए वस्त्रांचलि गुरुनइं वांदइं छइं तेह थकी एहनो नांम अंचलिक कहो । एतलइं वि०सं० १२२१ वर्षि बीजुं नांम अंचल गछ कहिवाणो । तिहां थकी श्री आर्य-रक्षित सुरि विहार करता श्री बइणप नगरी आव्या । एहवइं सओ वर्ष आठ संपुर्णी (६७-१) वि० सं० १२३६ वर्षे श्री आर्य रक्षित सूरी स्वर्ग हूओ । एहवइं वि० सं० १२३६ वर्षि साढ पूर्णिमा प्रगट हूओ ।

इत्यंचलगच्छ उत्पत्तिः ।

तेहवइं गुजराति सोलंकी कुमारपाल राज्य छतइं एहवइं, सोरठ देशि, हलार खंडा, भद्रेश्वर नगरें, श्री माले सा. सोल्हा भार्या खेंति पुत्र सा०जगडु, तेह दरीद्री पणइं नगर मांही मनुष्यना कार्य करतो माता सहित कठिण उदर पूर्ण करे छे । एकदा तिहां विद्याधर शा-खाइं आ० श्री धर्ममहेंद्र सूरी आवी चउमासी रह्या । एकदा एकादशीनइं दिवसि सकल गृहस्थ प्रतिक्रमणइं करी स्व २ नइं घरे गया, पिण सा जगडूओ शालाइं खुणे एक ठिकाणें अंधकारी सुतो छइं । एहवइं आकाश थकी एक तारानो पत्तन हूओ । एतलइं शिष्ये कह्यो, श्री गुरु एह किस्युं ? तिवारइं गुरु कह्यु—पांचवर्ष लागटइं दूर्भिक्ष हुसइं । तिहा घणा जीवनो संहारनो मालिम हूओ । ते सांभली शिष्य कहइं—तिणें समयइं कोइ अभयदाननो देणहार हूसि किंवा नहि ? तिवारि गुरु कहइं—इसि नगरइं सा० जगडू श्रीमाली रहि छइं । हिवणां ते दरिद्रि छइं । पिण तेहना वृद्ध पिता श्रीवंत हूता । ते पोताना पितानी घरभूमि षणइं द्रव्य काढी व्यापारइं घी द्रव्यने वधारो करी नइं, घणा जी-वने रक्षक पणइं, जिन प्रासाद नीपजावी, श्री सिद्धाचलें यात्रा करी, श्री जिनशासनि आचंद्रार्क विख्यात् हूसिं । ते गुरु वचन सांभली तिण जगडूइं गुरु वांदि तिमज कीधुं । समुद्रनो व्यापार ते जेम—तुरीनीं वुहरत—द्रव्य वधारी देशि २ द्रव्य मोकली, अन्न—उदक—घृत—गुड—खंड—साकर—तैल—प्रमुषनो संग्रह कराव्यो । ते वि. सं. १२११ वर्ष थकी वि. सं. १२१५ तांइं एवं वर्ष पांच सा० जगडू घणा जीवनइं अभयदाननो देणहार हूओ । श्री सिद्धाचल १ गिरीनारि २ श्री वेलाकूलि ३ श्री नर्म्मदातटे ४ श्री अजयामेरु ५ इत्यादि महादान शाला कीधी ।

दूहो—नोकारवाली मणि अडा० ।

पुनः कवीत—अट्ठ सहस्स मुंड० ।

एहवो जगडूओ दानें उदार, उपकारी, गुण जांणी दुर्भिक्ष वृद्ध वाडव रूपि जगडुनी परीक्षा करी वाचा दीधी जो तुज मुझ मिलवो हूओ, मिलाइ हूइ । ति(६८-१)हां थकी पन्नरो तरो वर्ष जे हूसे तें दुर्भिक्ष नही थाइ । इम कही दुर्भिक्ष पोतानइं थानकें गयो । श्रीमाली सा० जगडुओ पिण देव गुरुनी भक्ती साचवी घणा सुकृत करी सद्गतिनौ भजनार हुओ । यतः

दानामृतं यस्य करारविंदे
वाक्यामृतं यस्य मुखारविंदे ।
कृपामृतं यस्य मनोरविंदे

Aho ! Shrutgyanam

स वल्लभः कस्य नरस्य न स्यात् ॥ १ ॥
देयं देयं सदा देयं अन्नदानं विचक्षणैः ।
अन्नदातुर्यशो नित्यं जगडूकस्य यथाद्भुतं ॥२॥
इति श्रीमालि सा जगडू उत्पत्ति ।

४३ तत्पट्टे श्रीसोमप्रभसूरी ।

लघु गुरु भाई श्री मणिरत्नसूरी ।

ए बेहू गुरु भाई जाणवा । श्री सूरी उत्तम प्राणिनें धर्म्मोपदेशनइं कहिवइं थकी उपगार करता विचरइं । एतलइ प्रा० मंत्री वस्तुपाल १ लघुभाइ मं० तेजपाल २ प्रगट हूया । तेहनो संबंध कहइ छइं ।

वस्तुपाल तेजपाल संबंध ।

गुर्जरात देसि धुलका नगरइं प्राग्वाट जाति ऊंबरड गौत्रि सा० आसराज रहै छै । ते पाटणि वस्त्र व्यापारे आव्यो । तिहां हाटमांडी रह्यो । मालसुद गांमि व्यापार करी । एकदा पंचासरा पासनी यात्रा करी धर्म्मशालाइं चित्रावाल गछि आ० श्री भुवनचंद्रसूरी प्रति वांदि बइठो । एहवि तिहां श्रीमा (६८-२) ली ज्ञाती वणहर गौत्रें सा० आंबो, तेहनी स्त्री लक्ष्मी, तस्य पुत्री बाल विधवा कुंवर नांमी । ते श्री गुरुनि वांदि छइं । एतलि गुरु वांदतां थका श्री सूरीइं वामकुक्षी तिल वर्ण देषी मस्तक धूणीओ । तिवारइं पासे बेसी शिष्ये कह्युं श्री गुरु ए कीम ? गुरु कहे-एहनि कुक्षि युग्म पुत्र वस्तुपाल १ तेजपाल २ नामि पुत्र घणा पुन्यना करणिना कारक हूसिं। तेहनो आचंद्रार्कि नाम रहस्यइं । ते गुरु कथक वचन सा० आसराजी सांभल्युं । केतलेंक दिवसें पूर्व कर्म्मना संचयना योगे थकी ते बिहूनो संग हूओ । एतलि तिहां थकी ते बिहू पलायन हूई मांडलि नगरइं जाइ रह्या । अनुक्रमि वि० सं० १२६० वर्षि वस्तुपालनो जन्म हूओ । पुनः एकसओने पंचास पलनइं अंतरे तेजपाल जन्म हूओ २ । तिणे आसराजि पहिला गुरि नाम कह्या हूंता तेहीज नांम दिधां । एहवि मालव देसि नलवर नगरइं शालिकुमार प्रगट हूओ । तेहनइं मनुष्य ढोलो नांम कहे छै । राजा श्री वीरधवलनइं राज्यइं पुनः वि० सं० १२४१ वर्षि लाषो फुलाणी प्रगट हूओ । एतलि वस्तुपाल १ तेजपाल (६९-१) २ मांडलि नगरइं वर्ष पांचना हूया । तिवारि तिहां मनुष्यि ज्ञात पूछि । एतलिं तिहां थकी आसराज पश्चिम दिशि जाइं देवकइं पत्तनइं रह्यो । तिहां मनुष्यि बालक मोटा तेजवंत देषी गांम ठिकांणुं पूछइं । तिहां थकी एतलें धोडिआल गामि पोतानें देशि आवी रह्या । तिहां वर्ष आठना बि बालक हूया । तिवारइं घृत कूपिकानो व्यापार करइं । एहवे तिहां श्री भुवनचंद्रसूरी विहार करता आव्या । सा० आसराजइं कुंवर स्त्रीइं ओलख्या । गुरुइं बि बालकने पुनवंत जांणी तिवारइं श्री गुरुइं वि०सं० १२६९ वर्षि वस्तुपालनइं जिनशासन किर्ति कारक उत्तम योग्य जांणी अंबिका १ अनि कवड यक्षनओ २ वर दीधो । गुरुइं विहार करतां तारणगिरिं श्री अजितनाथनी यात्राइं गया। केटलेक दिनें सा० आसराज तिहां थकी स्त्री कुअर युक्त बिं बंधव लइ धवलकइ नगरे आवी रह्या । इहां थकी गुरुदत्त वरनइं महिमाइं दिन २ व्यापार थकी उदयवंत हूया । एहवइं विक्र० सं० १२७४ वर्षे वस्तुपालने ललतादेस्युं पाणी ग्रहण हूओ १ पुनः भ्रातृ तेजपालने अनोपदेस्युं पाणिग्रहण हूओ (६९-२) २। एहवें माता कुअरदेनो स्वर्ग हूओ । दिवस इग्यारनइं आंतरइं पिता सा० आसराजनो स्वर्ग हूओ । एवं वर्ष १८ व्यापारें हूया । तिणहिज वर्षि अंबिका-कवड यक्षनी कृपा थकी राजा श्री वीरधवली वस्तुपालनें घणा आग्रहि मंत्रि पद दीधो । तेजपालनें भंडारी पद दीधो । अणहिल पाटणे आगार निपजावी तिहां रह्या । तेतलें तिहां भंडारी पद तथा मंत्री पदनइं तिलक अवसरि मंत्री वस्तुपालें ज्ञाति त्रीस पाटण माहलि पोषतो हूओ । एहवें पाटण नगरश्रेष्ठीनें घरें भवीतव्यना योग थकी अजाणपणे नुहतरो वीसरयो। ते सेठनो पुत्र वर्ष १३ नो ते सामान्यपणा थकी घी तेल हलद्र हींग्वा वेची चिहुं पुहरें वरें आव्यो । एतलें मातानें रुदन करती दीठी । ते देषी पुत्र कहें-ए किम् ? तिवारे माता कहें-आपणइं वरें नुहुतरु नही । अनि राजमंत्री भाग्यवंत हूओ पिण ए छिद्र सहित छइं ।

Aho ! Shrutgyanam

वयोवृद्धास्तपोवृद्धा ये च वृद्धा बहुमता : ।
सर्वेपि धनवृद्धानां द्वारे तिष्ठति किंकराः॥१॥

इम विचारी तीणइं वृद्धाइं बेटा आगलि कहें—आसराज प्रागवाट सा०, कु (७०—१) यर बाल विधवा श्रीमाली, मंत्री तेहना पुत्र, मोटो छींद्र ए छइं । ए वात पुत्रनें सघली कही । ते सांभली बेटानें हर्ष हूओ । एतलें जिहां समग्र साजनो भोजन करइ छें मुख्य गृहस्थ हर्ष मई बेठा वार्त्ता करइं छें, तिहां तिणें आवी चोरासी साजनानी आज्ञा करी, बिहाथ जोडी, माताइं कही जे विपरीत वात, तेहनी वीनती सकल साजानानइं कीधी । तिवारइं तेहनो साजनो कहइं—रे मुग्ध ! तुं कुण घर आ पत्तने मुख्य हुई ? ते ए कीसी वात कही ? लाजतुं नथी । एतले ते कहे मंत्रीनी उत्पत्ती सघली ते वृद्ध गृहस्थ आगलि प्रकासी । सांभली सकल लज्जावंत हूआ । चितइं संदेह पड्यो । सकल साजनइं तेहनी माता वृद्धा पूछी । तिणें कह्युं मुझ वरइं नुहतरुं नही, अनि तेहने घरें तुम्हे द्रव्यें गया । पिण तुम्हे सकल साजनो जाइ वरुडी गामी जे एहनी उत्पत्तीना कारक श्री भुवनचंद्र गुरु सत्य गौत्रीयानें पूछौ । तिणें साजनें वृद्ध गुरु पुछ्या । तिवरे श्री गुरुइं यथार्थ कह्यौ । एतालि ते पाटणि आव्या । मंत्रीनी वात मांहो मांही कहीवइं नगरमां तथा अन्य गामि वि (७०-२) स्तरि । एतलें तिहां थकी वि०सं० १२७५ वर्षे मंत्री वस्तुपाल १तेजपाल २ थकी प्राग्वाट लघुशाषा प्रगट हूई । एतलें स्वज्ञातीयां परज्ञातीया दुर्बल गृहस्थनें भोजन तेडी कवल २ स्वर्ण मुहर देइ स्वज्ञात बधारी नाम राष्युं । सकल ज्ञाती जीम्या । ते लघुशाषा हुइ । एतलिं श्री भुवनचंद्र सुरी विहार करता पाटणि आव्या । महामोहोत्सवि शालाइं पधराव्या । चौमासइं रह्या । मं० वस्तुपाल गुरु वचनइं पंचासरपास प्रासादि वर्षि मांहि च्यार प्रौढ साधर्मिक संतोषइं । पुनः कुमारपाल विनिर्मित श्री तीहुणपाल विहारि एकादसि, चतुर्दशिइं, अष्टोतरी पुजाइं स्वजाति साधर्मिक पोषइं । नित्यें सतरभेदि स्व नीर्म्मापित श्री सम्पुपूज्य प्रासाद हूई । एकदा श्री भुवनचंद्र सूरी मं० थकी उपदेश कहे

जीयं जलबिंदु सम्मं संपत्तिओ तरंगलोलाओ ।
सुमिणं च समं पिम्मं जं जाणिज्ज करीज्ज सु ॥१॥

एहवो उपदेश गुरुमुष थकी सांभली मंत्री वस्तुपालि वि०सं० १२८० वर्षि श्री अ (७१-१)र्बुदोपरि प्रासाद थंभ थाप्यौ । पुनः वि०सं० १२८२ वर्षि प्रासादि कलस दंड ध्वज चढाव्यौ । श्री नेमिश्वर थाप्यौ । तिहा श्री भुवनचंद्र सूरीइं स्व शीष्य उ० श्री जगचंद्रनें तथा पं० देवेंद्रने सूरी पदइं कीधा । तिणहिज प्रासादि बिहुं भ्रातानी स्त्रीयइं नव नव लक्षइं द्रव्य वावरीनें स्व स्व नामि बिहुं आलीया नीपजावी नाम राख्युं । तिण हिज वर्षि श्री गिरनारी मं० वस्तुपालें उद्धार कीधो । एतलइं श्री आबु, सिद्धाचल, गीरनार, ए तिहु तीर्थें अढार लक्ष मनुष्यइं उ० श्री देवभद्र आ० श्री जगचंद्र आ० श्री देवेंद्र प्रमुख स्वेतांबर इग्यार आचार्य, पुनः दिगंबर भ० एकवीस आचार्य युक्ति यात्रा करी । सकल संघ सहित मं० वस्तुपाल पाटणि आव्या । केटलिक दिनें गुरु श्री भुवनचंद्र सूरि स्वर्ग हुआ । तिवारें मंत्रीइं घणे आग्रही उ० श्री देवभद्र आ० श्री जगचंद्र आ० श्री देवेंद्र नइं वीनती करी पाटणें चौमासु राख्या । उतरीइं चउमासइं मं० नी आज्ञा लही त्रिहु विहार कीधो । भीलडी नगरइं श्री पास दर्शनि आव्या । एहवे तिहां हिंदूआणि (७१-२) देश थकी श्री सोमप्रभ सूरी पिण विहार करता भीलडी नगरें सह हर्षि पास दर्शनि आव्या । तिवारइं उ० श्री देवभद्र, आ० जगचंद्र, आ० देवेंद्र, ए तिहुए श्री सोमप्रभ सूरीनें वांदणइं करी वंद्या । तिवारी श्री सोमप्रभ सूरीइं षरतर, स्तवपक्ष, आगिम, राकापक्ष, बिंवदणिक, उपकेश, जीरावल्ली, नांणावाला, निंबजिया, इत्यादि आचार्यनी शाक्षि वि०सं० १२८३ वर्षि श्री सोम प्रभ सूरि १ मणिरत्न सूरिइं जावजीव आंबल तपना धारक १ पुनः समता आदि गुण आगला जाणी स्व गच्छइ लेइं आ० श्री जगचंद्र सूरी नइं पोतानी पाटि थाप्या । श्री बीजापूर नगरीं उ० श्री देवभद्र, आ०श्री जगचंद्र सूरी, आ० श्री देवेंद्र, ए त्रिहु चौमासि रह्या, अनि श्री सोम प्रभ सूरी१ श्री मणिरत्न सूरी २ वडाली

Aho ! Shrutgyanam

नगरी चउमासइं रह्या । एतलि पुनः मं० वस्तुपाल बीजी वार संघपति हूओ । श्री सोमप्रभ सूरी, श्री मणिरत्न सूरी, आ० श्री जगचंद्र सूरी, आ० श्री देवेंद्र सूरी उ० श्री देवभद्र सहित श्री सिद्धाचल यात्रा जातां मार्गि श्री वढवाणि नगरें संघ उ (७२-१) तर्यौ । तिहां श्री मालि शा० वृ० सा. रत्नें दक्षिणावर्त्त शंखनें माहेमाइं सत दिन ताइं नाना विधि सुखाशिकानइं भोजानि तथा सवस्त्र आभूषणिं पहिरामणी सकल संघनइं कीधी । तिहां थकी मंत्री मोरवी प्रमुष नगरें स्व ज्ञाति साधर्म्मिक प्रति नगरें नगरें गामिं गामिं पकवान आभूषण वस्त्रइं संतोषतो हूओ । श्री सिद्धाचल, श्री गिरिनारनी यात्रा करी देवकिं पाटणी संघ आव्यौ । तिहां मंत्रीइं नूतन प्रासाद निपजावि श्रीचंद्रप्रभ स्वामिनो बिंब थाप्यौ । श्री सोमप्रभ सूरी १ श्री जगचंद्र सूरी २ प्रतिष्ठ्यौ । तिहां मंत्रीइं स्वज्ञात घणुं संतोषी सधर्म्मिकनि संतोष्या । अणहिल पाटणि संघयुक्त श्री सूरी अनि मंत्री आव्या । उ० श्री देवभद्र, श्री जगचंद्र, श्री देवेंद्र, श्री सोमप्रभ सूरीनी आज्ञा लही पाल्हणपुरइं चौमासाइं रह्या । श्री सोमप्रभ सूरी अंकेवालीइं चोमासी रह्या । श्री मणिरत्न सूरीइं हिंदुआणि देशि विहार कर्यो । श्री सत्यपुरि चोमासी रह्या । श्रीवंत मंत्रीइं संघ यात्राना मनुष्य मनुष्य प्रति पाटणि सुवर्ण मुहर दीधी । चउमासइं उतरइं पाल्हणपुर (७२-२) थकी उ० श्री देवभद्र आ० श्री जगचंद्र सूरी, श्री देवेंद्र सूरी विहार करता आबु, दाहिआणाक, नंदिय, ब्राह्मण वाटक इतीयादि तीर्थ फरसी अजारी नगरइं श्री वीर प्रासादे श्री सुरीइं अठम तपिं श्री शारदानो स्मरण कीधो । ब्रह्माणी प्रसन्न हूई कहि तुझ किर्ति हुसि । ए सारदा दत्त वर लेई श्री सुरीइं मेवाड देसिं विहार कीधो । एहवि श्री सोमप्रभ सूरी एक शब्दना शत अर्थना कर्त्ता, पुनः श्री सिंदुर प्रकरण ग्रंथना कारक श्री श्रीपालि नगरि स्वर्ग हूओ ।१। अनि लघु गुरु भाइ श्री मणिरत्न सूरी नवतत्व प्रकर्ण कर्ता ते त्रिमास अंतरि श्री थिराद्र नगरइं स्वर्ग हूया ।२।

हवि मंत्रि वस्तुपालनइं अणहिल्ल पट्टनि १ आसापल्लीइं २ खभायति ३ प्रमुष नगरि छप्पन्न कोटि द्रव्य भूमध्ये जूइ २ शांति ते उपरि देवसनिधिओ भेरी शब्द हुई...ते समय द्रव्य सुकृति कीधो ते कहछइं—अढार कोटि द्रव्य तीर्थ यात्रामें उजमणि व्यय कीधा । आबु, पाटण, वडनगर, खंबायत, देवकि, पाटणि, भृगुकच्छ, गुज्ञा, थुडिआला, सांडेरा, प्रमु (७३-१) ष नगरइं पाच हजार प्रासाद नीपजाव्या । सवा लाष जिन बिंब निपजाव्या । ते मांहि एकतालिस हजार सुवर्ण-पीतल धातुमयि जाणवा । श्री तारणगिरी, श्री भीलडी नगरि, श्री ईडरगढि, श्री विज्जानगरि, श्री शंखेश्वरि, श्री विज्जापुरी चिंतामणि पास प्रासादि, पुरहातिज पद्मप्रभ प्रासादि. इत्यादि त्रविश शत जिर्णोद्धार निपजाव्या । नव शत अनि चउरासी धर्म्मशाला निपजावी । पांच शत समोसरण निपजाव्या । पुनः देवकि पाटणि ज्ञान कोश ईग्यार लिषावी सोंपाव्या । बत्रीस हजार श्वेत चंदननी ठवणी, उगाणीस हजार रहिल नीपजावी । बहितालीस हजार सांपुडी कवली नीपजावी । पुनः स्मरणी श्वेत चंदन, मोती, प्रवाला, सूत्र, प्रमुषनी नीपजावी, नगरी गामि २ देशदेशांतरे पुण्यार्थे दीधी । पुनः द्रव्य संख्या कहइं छइं—आठकोडी अनिं त्राणुं लाख टका यात्रा स्नात्र प्रासाद बिंब थापनइं, श्री पुंडरिक गीरीइं, आत्म हेतूना कारण माटि सुकृतिइं वावर्या ।१। पुनः अढार कोटी अनि आसी लक्ष टका श्री रेवताचलि सुकृ(७३-२) तिइं कीधो २ । पुनः बारकोटिं अनिं त्रहिपन्न लक्ष अधिक श्री अर्बुदाचले सुकृति कीधा ३ । एतले ए ओगणीस सयकोटी, अनि आसी कोटि, अइसी लक्ष, वीस हजार, नवसय अनि तांणुं टका ते नव चउकडीइं उणा एतलो द्रव्य मंत्री श्री वस्तुपालइं त्रिहूं तिर्थे सुकृति कीधो । पुनः कवित्तः—

पांच अरबनइं खरब कीधां जेणे जीमण बारह ।
सात अरबनें खरब दीध दूबल परिवारह ।
द्रव्य पंच्यासीय कोडी दीध भोजक वड भट्ट ।
सत्ताणु सय कोडी फूल तंबोली हट्ट ।

Aho ! Shrutgyanam

चंदन चीर कपूर मषि कोडी बहूत्तरी कप्पडे ।
पोरवाड वंश श्रवणे सुण्यो श्रीवस्तुपाल महिमंडळे ॥

इत्यादि अनेक सुकृतीकारक श्री भुवनचंद्र सूरी उपदेशात् श्री अंबिका कवडयक्ष सानिधकारक, प्रागवाट लघुशाषा विरुदधारक एवं वर्ष १८ सुकृत कीधु । सर्व आयु वर्ष ३६ संपूर्णी तेहनो वि० सं० १२९८ वर्षि अंकेवालीया गामि मं. श्री वस्तुपाल स्वर्ग हूओ १ पुन: वि० सं० १३०२ वर्षि लघुभाई मं. तेजपाल (७४-१) चंद्राणा गामि स्वर्ग हुओ । २ ।

इति मं० वस्तुपाल तेजपाल संबंध ।

४४ तत्पट्टे श्री जगच्चंद्र सूरी ।

श्री गुरु जावजीव आंबील तप अभिग्रहना धारक थका मेवाड भूमंडळी विरहता श्री आहाडनगरि आव्या । एहवइं गच्छना साधु समुदाय प्रतइं क्रिया आचारि शिथलपणि जांणी पहिलां दीधां जें श्री आ० सारदाइं वर तेहनी कृपा थकी पुन: श्री देवभद्रनो साह्ज्य पामी उग्र क्रीयानो आरंभ श्री आहड नगरइं कीधो । तिहां श्री सूरी वर्षा कालि चउमासि रह्या । एतलें जावजीव आंबील तप करतां वर्ष बार हूया । तिवारइं चित्रोड पति राउल श्री जयसिंह घणा मनुष्य मुषि छ विगयना त्याग कारी, सचित्त परिहारी, आंबिल तपनाकारक सांभली शालाइं आवी देही कुशल कहें । ए श्री सुरीनो वडु अनि जिहां लगिणि चिरंजीवी हुइं तिहां लगण आंबिल तप देही कुशल देखी वांदी कहे—गुरांजी तुम्हारी कुण गछ अनि कुण तप ? तिवारि उ० श्री देवकुशल कहे...... एहवा वचन उ० श्रीदेवभद्र सांभली श्री जयतसिंह भूप क (७४-२) हे—ए तप करता केटला वर्ष हुया । तिवारि सूरि श्री देविंद्र कहें—ए सूरीनें तप करतां वर्ष बार हुया । तिवारि श्री जयतसिंह मनस्युं चिंतवइं—माहा योगिंद्र महायतीनी तपस्या बार वर्ष कही छै, अधिक नही । तेह थकी ए अधिक तप जाणी आश्चार्य पांमीं राउल श्री जयतसिंह सकल मनुष्य वृंद समक्षइं कहि—भो भो लोकां ! तुम्हे ए सूरीनइं आज थकी तप्पा कहीज्यो । एतलेइं श्री वीर नीर्वाण हूया पछी सत्तर सय अनि पंचावन वर्ष गयइं हूंतें, पुन: वि० सं० १२८५ वर्षे वैशाष सित त्रीजनें दीनी राऊल श्री जयतसिंह दत्त तपा गछ बिरुद श्री जगचंद्र सूरीने हूओ । एतलइं प्रथम पट्टधर श्री सुधर्म्मा स्वांमी थकी निग्रंथ गछ एहवुं नाम प्रथम कहिवाणुं, ते आठ पाट लगइं ए बिरुद कहिवांणो १.

तिवार पछी नवमइं पाटिं श्री सुस्तित स्वांमी अनि सुप्रतिबुद्ध स्वांमी ए बिहूं गुरु भाइइं काकंदी नगरीइं कोटी वार सूरी मंत्रनो स्मरण कीधो, तेह थकी बीजुं नांम कोटिक एहवुं गछ कहिवाणुं, ते गछ छे पाट लग- (७५-१) ण बिरुद जांणवो २.

तिवार पनरमे पाटि श्री वज्रसेन सूरीनो शिष्य श्री चंद्र सूरी हूया तेह थकी चंद्र गछ ए त्रीजो ३.

पुन: सोलमे पाटि सामंतभद्र सूरी ते निस्पृहपणा थकी वननें विषे रहि । ते सूरी थकी वनवासी गछ ए चोथु नांम ४. ते सोल पाट सूधीं.

तिवार पछी तेत्रीसमै पाटें सर्वदेवसूरीनें उद्योतन गुरुइं आबु तलहटी नइं वनें वड वृक्ष हेठि आठ शिष्यनें सूरी पदे कीधा तेंहथी वड गछ एहवुं पांचमुं नांम ५. ए इग्यार पाट लगइं.

तिवार पछी चउमालिसिमें पाटि श्री जगचंद्र सूरी हूया । तेणइं आयु पर्यंत आंबिल तप करतां वर्ष १२ हूया, तिवारी श्री जगच्चंद्र सूरीनें तपा बिरुद हूओ । तेह थकी हवणां छठो तपा गछ नाम कहिवाणो ६. ते पाहिला वड गछ कहिवातो । एतलें कह्या ए पांच आचार्य तेहने एक एक बिरुद कहिवाणो अने श्री जगचंद्र सूरी पांच बिरुद कहिवाणो ते कहे छें.—कौटिक वंश १ चंद्र कुल २ वज्री शाषा ३ वड गछ: ४ अनि पांचमो तपा गछ बिरुद ५; ए पांच बिरुद श्री (७५-२) आ० जगच्चंद्र सूरीने कह्या । ते किम जे श्री जगच्चंद्र सूरी पछी एहवा बिरुद धारक कोई आचार्य हूया नही । ते माटे श्री जगचंद्र सूरीनें पांच बिरुदनी उपमा कही । श्री जगचंद्रे क्रीया उद्धार कीधो । तिवारें एकासी गौत्र

Aho ! Shrutgyanam

उ० श्री देवभद्रना शिष्यनें दीधा । ते शिष्य सीता नगरें शालाधारक हूई रह्या । श्री सूरी आहड नगर थकी विहार करता श्री नडलाइ नगरि देव दर्शन करी श्री सीरोही नगरइं चौमासि रह्या । तिहां उ० श्री देवकुशलनो स्वर्ग हूओ । तिहां थकी श्री जगचंद्र सूरी १ श्री देविंद्रसूरी २ ए बिहूं गुरुभाई विहार करता गुजराति धवलकि नगरि चउमासि रह्या । एहवि तिहां माणसा गांम वास्तव्य ओ० वृ० आंब गौत्रि सा० विजयचंद्र, राजा श्री वीरधवलनें गामनी उत्पत्ती खपती लषतो कोईक मोटि अपराधि राजाइं कारागारि दीधो । ते किमही काढई नही । तिवारें विजयचंदइं श्री देविंद्र सूरिनें कह्यो जे मुझनें कारागार थकी कढावओ तो हू तुंम्हारो सिष्य थाउं । तिवारि श्री देविंद्र सूरीइं मंत्री वस्तुपालनें कही सा० विज (७६-१) यचंदनें बंदीषांणांथी कढाव्यो । तिणें श्री जगत्चंद्र सूरी हस्ते दिक्षा लीधी । रु० विजयचंद्रनाम दीधुं । पिण लिगारेक अभिमान धरइं । चउमासी संपूर्णि धवलकइं थकी श्री जगतचंद्रइं विहार कीधो । मेवाडिं धावल नगरि आव्या । तिहां रु० विजयचंद्रनें उत्तम पात्र जाणी श्री जगत्चंद्रि वि० सं० १२८८ वर्षि आ० पद देइ श्री विजयचंद्र सूरी नाम दीधो । श्री जगत्चंद्र सूरी १ श्री देवेंद्र सूरी २ आ० श्री विजयचंद्रसूरी ३ विहार करता कउआणा नगरें चौमासि रह्या । तिहां थकी मोसिल गामि आव्या । तिहां सात दिगंबराचार्यस्युं जैन वाद हुओ । श्री श्रुतदेवीनी कृपा थकी तेहनें जीत्या । एतलें जैन शास्त्रनें वादि हार्‍या नहिं, तिवारी हीरानी परे निर्मल अभेद्य देषी लोके ' हीरला श्री जगचंद्र सूरी ' एहवी कीर्ति कही । तिहां नाणावाल, कोरंटक, पिपलीक, वडगछ, राजगछ, चंद्रगछ इत्यादि केतलाक शाषाधारीइं श्री सूरी हस्तें क्रिया उद्धरी तेहनें स्वगछे लीधा । तिहां श्री सूरीइं वंदणक, बिवंदणक, प्रतिक्रमणा (७६-२) दि प्रमुष स्वगछनी सामाचारी थापी । ते पाहिलां छ आवश्यक लगाणि क्रिया करता, श्री सूरी आंबिल तपनो आराधन करता, निर्म्मल तपाचार धरता, योग्य जीव प्रतें सुउपदेशे करी संसार थकी उधरता, मेवाडदेशि विचरता, अनुक्रमिं वीरशाले गामें आयु पर्यंत आंबिल व्रत कारक, तपागछ सामाचारी धारक, पुनः श्री तपागछ बिरुद धारक, श्री जगत्चंद्र सूरीनो वि० सं० १२९७ वर्षि स्वर्ग हूओ । पुनः की दृश श्री गुरु ?

श्रीगुरु षट् दर्शनकारा मुक्ति दान
दूरी कृत दूषण गुण निधान
युग पद धारक जयतीशः
भवि मानव कुवलय भामिनीशः ॥ १ ॥

४४ तत्पट्टे श्री देवेंद्र सूरी ।

लघु गुरु भाई श्रीविजयचंद्र सूरी २। ए बेहुं मेवाड देश थकी विहार करता मालवइं उज्जेणी नगरइं श्री अवंती पासनी यात्रा कीधी । तिहां श्री देविंद्रि सूरीइं श्री विजयचंद्र सुरीनी गुजराति विहार करवानी आज्ञा कीधी । तिवारी श्री विजयचंद्र सूरी गुज्जराति गया । श्री खंभायाति आवी रह्या । अनी श्री देवेंद्र सूरी मासकालिं उ(७७-१) ज्जेणी रह्या । तिहां खंडेरवाल ज्ञाति सा. जिनचंद्र तेहना पुत्र वीरधवल १ अनि भिमसिंह २ ए बिहुं बंधव प्रति पाणिग्रहणनइं ओत्सवि श्री गुरुइं धर्म्मोपदेश देइ वि० सं० १२९८ वर्षि बि भाइने दीक्षा देइ वीपर्षि १ अनि भीमर्षि २ ए नांम दीधा । तिहां थकी हरीयाणी नगरी चउमासे रही श्री पावकाचलि संभव देव वंदी श्री देविंद्र सूरी कर्प्पटवाणिज नगरी आव्या । हवि श्री खंभायत नगरें श्री विजयचंद्र सूरी रह्या छै, तिणें श्री देवेंद्र सूरीनी आज्ञा विना क्रियाइं शिथिल साधु प्रति पं० उ० दिक्षादिक दिई स्व आज्ञाइं यत्नें क्रिया अनिं गृहस्थनें आवर्जन निमित्तें प्रतिक्रमणादि क्रिया करता हुवा । पुनः मालवइं थकी आवी मोटी पोशाल ते श्रावकनें उपाश्रयइं एकवासि रह्या । किहांइं विहार न कीधो, नगरमां मास कल्पपि ण न साचव्यो । एहवओ गछना साधु मुष थकी सांभली श्री देविंद्र सूरी कर्पटवाणिज्य नगर थकी खंभायति श्री ग्रंमाण यात्राइं आव्या । तिवारी श्री विजयचंद्र सूरी तथा तेहनो (७७-२) पक्षना साधु मत्सरि

Aho ! Shrutgyanam

घरी । श्री देवेंद्र आवी साधवीनें उपाश्रे नांहनी शालाइं आवी रह्या । तिवारी गृहस्थ माहो माही पूछइं—जे तुम्हे गुरु वांदवानइं कुण शालाइं जास्यो ? ते सांभली अन्य श्राद्ध कहइं बिहुं ए सूरी एक गुरूना शिष्य छइं तेह थकी आप आपणुं चित्त प्रशन्न हुइ तिहां जाइ वंदना करो । एतलइं श्री विजयचंद्र सूरी तो पहेला थकीज वृद्ध शालाइं रह्या, एतलइं विजयचंद्र सूरीना साधु समुदायनइं मनुष्यें वृद्धशालि कह्या, अनि श्री देवेंद्र सूरीना साधु समुदायनइं, नांनी शालाइं रह्या तेह थकी श्रावके लघु-शालिक कह्या । एतले श्री विजयचंद्र थकी वि०सं० १३०१ वर्षि श्री वृद्धशाला नामिं गछ जुदो हूओ । हवी लघुशालिक श्री देवेंद्र सूरी पाल्हणपुरें श्री पाल्ह विहारी श्री पासनें नमवा आव्या । तिहां तिणहीज प्रासादी दिन प्रतिदीन अक्षत एक मुडो अनि सो मण सोपारी आवे छे । एतलें जैन गृहस्थ घणो छइं । श्री सूरी चउमासिं रह्या । तिहां विप (७८-१) र्षिनें श्री गुरुइं सूरिपदे, श्री विद्यानंद सूरी नाम दीधो । अनी बीजा भीमर्षीनें पाठकपदे श्री धर्मकीर्ति नाम दीधो । श्री गुरुइ श्री विद्यानंद सूरीनें इडरगाढिं श्री शांति दर्शननइं विहारनी आज्ञा कही । श्री देवेंद्र सूरी खंभायति आवी चौमासी रह्या । श्री गुरु सदैव उपगारी पणि धर्म्म कथा कहे छै । एकदा गुरु वांणी रंजित थको श्री गुरु प्रति श्री मालि सा० सोनी भीमजी वीनती कहइं—श्री गुरु मुझने कृपा करी कांइक हित शिक्षा कहो । तिवारी गुरु कहइं—सत्य वचन मुष थकी बोली मनुष्य जन्म सफल करओ । ते सांभली भीमजी मनस्युं विचारइं जे सोनार-नओ व्यापार तो मिथ्या वचननों ज छइं, पिण मुझस्युं गुरुनु वचन किम लोपाइं; एहवुं मनिं धारी गुरुमुखि सो. भीमजीइं एहवुं नियम लीधुं जे मइं सदाकालिं सत्य बोलवुं पिण असत्य नही । ते घणें यत्नें सत्यनीयम जालवीनें राषइं । एकदा सोनी भीमजीनइं महितटि चोरे ग्रह्यो । भीमजीनइं भील पूछइं तुझ घरी केतलो द्रव्य छइं ? ति (७८-२)वारें सोनी भीमजी मनस्युं विचारीनें कहें छइं जे चार हजार रुक्मनो घर वाघरो छइं । भील्ल तेंमलोज द्रव्य मांगइं, तिवारइं सो. भीमजीनइं पुत्रइं खोटा नीकलची द्रव्यें नीपजावी डंड भरवानी चोरनों आप्या । कही, परषी लीओ । भील्ल कहि, इहां कुण पारखूं । एहिज सोनार छइं । कारागार थकी काढी कहइं—आ द्रव्यनी परिक्षा करी । तिवारइं भीमजी चित्त स्यु विचारइं जे—कृत कर्म उदय आव्या छइं, अनि वली उदय आवइं, तओ हुं मिथ्या न कहुं । एहवुं जांणी, कही ए द्राम सकल खोटा छे । ते भीमजी-नु वचन चोर सांभली मनस्युं चिंतवइं जे एकतओ आपणा पुत्रनें झूठो कीधो, अनि आपि पण बंदीखानें रह्यो । इणि सोनी भीमजीइ किस्यु कीधुं ? तिवारइं भीमजी कहइं—मिथ्या कह्यानो माहरइं नीयम छे । चोर पिण तिमज अन्य मनुष्य मुखि सांभल्युं । सत्य-वादी जांणी पल्लीपतिइं पांच वस्त्र पहिरावी गांमनो कामदार थापी घणें आदरें घरें मुक्यो । श्रीगुरुकार्ति हुई । इति सूरी उपदेशात् सत्ये सो० भीमजी संबध । (१९-१)

श्री देविंद्र सूरीइं श्रीखंभायत नयरि छ कर्म्मग्रंथ—सूत्र अनि तेहनी टीका, सिद्धपंचासीका—सूत्र अने तेहनी टीका, श्राद्धदिनकृत्य—सूत्र अनि तेहनी टीका, पुनः भाष्य ३ तेहनी टीका; इत्यादि ग्रंथकारक श्री देवेंद्र सूरी सत्यपुर नगरें वि. सं १३३४ वर्षि स्वर्ग हूओ । एहवे देवना योग थकी श्री गुजरातइं बीजापुर नगरइं श्रीविद्यानंद सूरी पिण दिन तेरनइं आंतरइं स्वर्ग हूआ । तिवारें छ मास लगणइं गछ निराधार हुओ । पछी वड-गछीक वृद्धशालिक श्री क्षेमकीर्ति सूरी प्रमुष गोत्रीक आचार्य मीली श्री पाल्हणपुर नगरि उ० श्री धर्म्म-कीर्तिनइं सूरी पद देइं श्रीधर्मघोष सूरी नामइं पाट थापना कीधी । तिणहीज अवसरि ते प्रासाद मंडपि गोमुख यक्षि कुंकुम वृष्टि कीधी । एहवइं वृद्धशाला बिरुदधारक श्री विजयचंद्र सूरी तत्पट्टे श्री क्षेमकीर्त्ति सूरीइं श्री बृहत्कल्पनी टीका वि० सं० १३३४ वर्षि बहिंतालीस हज्जार नीपजावी ।

Aho ! Shrutgyanam

४६ तत्पट्टे श्री धर्म्मघोष सूरी।

विजयवंत विहार करता तारणगिरें (७९-२) श्री अजितनाथ वांदी श्री बीज्जापुरें चौमासिं रह्या। तिहां सकल गृहस्थ सदेव श्रीगुरु मुखि धर्म्म व्याख्या सांभलि। एतलि श्री माली वृद्ध शाखा सा पेथड उपदेश सांभली शुभाशय थकी बूज्यौ। श्री गुरुनइं कहइं-मुझ पूर्व तूछ पुण्यनइं योगे करी महारइं घरे सामानपणाइं अल्प द्रव्य छइं तेह थकी मुझनें पांचमो परिग्रह परिमांण व्रत उचरावओ। आत्मार्थे माहरइं रुक्म पंचशत राखवा ते उपरांत नोयम। तिवारि श्री सूरी कहै-हे गृहस्थ! तुम्हारा पूर्व कृत पुण्ये करी तुम्हारे भाग्यनो उदय हुणहार छइं, तेह थकी तुम्ह निमित्तइं पांच हज्जार रुक्मनी जयणा रावो। अधिक हूइं ते सुकृति करज्यौ। इम कही परिग्रह प्रमांण व्रत श्रीगुरुइं उचराव्यो। तिवार पछी सा० पेथड लाटाउली गामि वस्त्र, गुड, घी, साकर, खांड, लवण, तेल, हींग, हळद प्रमुष व्यापार थकी केतलेक दिने पुन्योदये राजा श्रीसारंगदेवनो कामदार हूओ। माहा रुद्धि पाम्यो। तिवारइं पोताना पुत्र झांझणनें वडाउली गामि पर (०-१) णाव्यो। सा० झांझण पोतानो स्वामी जाणी राजा श्री सारंगदेवनइं जुहार करवा गयो। तिवारें सारंगदेवइं सा० झांझणनी बाल स्त्रीनें ओत्सवइं बईसारी पोताने देशि, नगर, गाम प्रति प्रतिमनुष्यइं सुवर्ण गदीयाणो एक कंचूकीनें ठिकाणें दीधो। तिवारि सा० पेथडनइं घरें थोडइं दिनइं घणो सुवर्ण हुओ। मनस्युं विचारइं जे माहरइं तो श्रीगुरु वचनानुसारी पांच हजार रुकानो खप छइ। पिण द्रव्य अधिक सुकृतइं देवओ। एहवइं श्री पर्व आव्यइं हुंते परिग्रह परमाण व्रतना दायक उपगारि गुरु श्री धर्म्मघोष सूरीनें चैत्य परवाडि श्री चिंतामणी पासना दर्शनना अवसरे ७२ हजार टका संघनें पहिरामणी कीधी। संघ वात्सल कीधो। श्री गुरु उपदेश थकी बावन देव कुलिका युक्त कोडाकोडी नामि प्रासाद प्रमुष ८४ प्रासाद निपजाव्या। शत जीर्णोद्धार निपजाव्या। पुनः च्यार ज्ञान कोश अणहिल पत्तनें लिषाव्या। त्रिण शत प्रासादनें शिषरइं स्वर्ण कलस निपजाव्या। श्री गुरुनें वचनें श्रीसि(८०-२)द्धाचलि १, तारणगिरे २, श्री बीजानगरे ३, श्री पोसीना गामि ४, इडरगढि ५, ए पंच तीर्थनो संघपति हूओ। छप्पन्न घडी सुवर्ण व्ययइं श्री सिद्धाचलइं श्री वर्त्तमान चौवीसीइं प्रथम जिनना मुखागलइं सा० पेथडे इंद्रमालक पिंहरी। वर्ष बत्रीस समइं श्री गुरुमुखि ब्रह्म व्रत लीधो। पुनः एकवीस घडी सुवर्णनी खोल, आंगुल त्रणनी प्रमांण जाडी उपजावी ते खोली मूल गंभारानो मंडप कीधो। इणि परि सा० पेथड पूत्र सा० झांझणें अढार भार कांचन वावरी स्वन्यायोपार्ज्जित लक्षमी सफली कीधी।

एकदा एकादशी दिनें वृद्ध सप्त (?) श्राद्धी व्याख्यान अवसरइं श्री गुरुनें वांदी कहें-चेलाओ! तुम्हे ते पाट महेलवा किम विसरी गया। तिवारइं गुरु कहि इम हांज बईसओ। तिवारें ते श्राद्धी व्यंतरी कही अमारी नीतिहुइ ते किम मिटइं। एतलि सप्तश्राद्धी रुप व्यंतरीनें चेले पाटला आघा लीधा ते बेठे एतले श्री गुरुइं पाटलइं थंभी। धर्म्म कथा विसर्जन (८१-१) इ ते घरें जायवा उठी, तिवारें पाटला आसनी विलगा आव्या। लोके हास्य हुओ। ते व्यंतरी श्राद्धी घणुं लज्जा पांमी। अन्य दर्शनी तथा जैन गृहस्थ एकठा हुआ। ते व्यंतरी रांक पणुं मुखइं उचरइं, आज पछी एहवो साधुनो अविनय नही करुं। श्री गुरें दया आणी, पाटलाना बंधन थकी मुंकी। ते गुरु वांदी घरें पुहती, पिण चित्ते गुरु उपरि रोष वहइं। एकदा ते स्त्रीए कार्मण ५ वटका साधुनें वहिराव्या। ते वटक गोचरी आलोतां श्री सूरीइं दीठा। तिवारइं ते व्यंतरी गुरुदृष्टि नाठि, ते वटक श्री सूरीइं साधुनें आहारे निषेध्या। एकांति भूमि मुंकाव्या। बिजे दिनइं प्रभाति जोया ते पाषांणना वटक दीठा। पुनः केतलेक दिनें ते व्यंतरीइं श्री गुरुनो सुस्वर जांणी, स्वरभंग करवानें गुरुनी गलनालकांठि केशनो गुच्छ कीधो। एतले श्रीसूरिइं ते व्यंतरी कर्तव्य जांणी गलनालकंठिं रजहरण फेरव्यो। श्रीसूरि नइं समाध हूइं। उण

Aho ! Shrutgyanam

कालि श्री वजीपुर थकी विहार करता गोधिरा नगरइं अव्या। (८१–२) तिहां डाकिणिना उपद्रव थकी सांजनी वेलाइं साधु घंटाकर्णने मंत्री मंत्रीने कपाट देता, अनें जे दीवसइं श्रीसूरी आव्या तेहिज दिनें उतावली रात्रिइं कोइक अजाण साधुइं घंटाकर्णनो मंत्र भण्या विगेर शालाना कपाटनी जयणा कीधी । गुरु पिण पोरसी कही पाटि संथार्‍या छइं, निद्राइं आव्या । एतली व्यंतरी ज्यारे मीली आवी गुरु संथार्‍यानी पाटि ज्यारे पाइया उपाडी आकासे लेई चाली । एतलइं श्री गुरु जाग्या, डाकिणी जांणी, चिंहु दिसि रजहरण फेरव्यो । तेतलें डाकिणी आकासें मस्तकिं पाट सहित अधर लटकइं । वाच दीधी तुम्हारइं गछइं उपद्रव नहीं करुं । प्रभात कालि संघाग्रहि मूकी । तिहां थकी सूरि विहार करता मालव देशि मांडवगढि आव्या । तिहां श्री सूरीना उपदेश थकी प्राग्वाट ज्ञाति वृद्ध शाषाइं सं० पृथवीधर बहितालीस हेम घडी वेची प्रासाद एकवीस स्वदेसे अनि धार नगरइं प्रमुषइं निपजाव्या । ते माहि मूल नायक सकल बिंब सप्त धातुना थाप्या । श्री धर्मघोष (८२–१) सूरीइं प्रतिष्ठ्या । श्री गुरु ब्रह्मंडल नगरे आव्या, तिहां रात्रि अहिडंस हुओ, संघनें व्यग्र चित्त जांणी श्री सूरी संघ प्रति कहइं— प्रभाति नगरनी पोल उघडासि; तिवारइं प्रथम सुका काष्ठनी भारी आवस्यइं, ते माहि काष्ठ वीणि सकल महा विषापहारण नामि ओषधीनो मूल सर्प्पाकारी हुसइं, तेहनी आदा सूंठसु घसी अहिडंके देज्यो । एतलि मुझनी समाधि थास्यें । श्री संघि तिमज कीधो । श्री गुरु समाधि पणि हूआ । ते दिन थकी श्री सूरीइं जावजीव लगी छ विगयनो नीम लीधो, अनि सदाकाल युगंधरीनो आहार करवो, ए बिहु नीम लीइं, श्री सूरी अवंती पासना दर्शनइं उत्कंठीत थका उज्जेणी नगरइं आव्या । तिहां पाखंडीना उपद्रव्य थकी यती कोई चोमासु न रहइं । ते सकल वार्त्ता श्री गुरुइं संघनी पूछी निर्णय कीधो । एतलें मध्यानें यति गोचरी जाता बाजारें देषी पाखंडी जट्टीलें यतीनें बोलावी कहें—तुह्ने अत्र चौमासइं थिर हुई रहिज्यो । तिवारइं ते यति कहें—रहिवानइं आव्या छु, ते रहिस्युं ज । ते सांभली (८२-२) तिणे पाखंडीए यतीनें क्रूर दांत देषाड्या । तिवारइं यतीइं तेहनी कूहणी देषाडी । ते सकल वार्ता साधुइं आवी श्री सूरीनें कही । गुरु कहइं भलु । एतलें संध्यानइं समयइं प्रतिक्रमण कीधा पछी तिणे जटिलें शालाइं कोइक मंत्रनइं योगइं करी मूषक मेल्या । साधुइं गुरुनि कह्यो, एतलि श्री सूरीइं नूतन घटनइं मूषइं कल्पक आछादी गुरु दत्त आम्नाय स्मरण कीधो । तिवारइं ते जट्टील बुंबाट करतो आवी गुरुनइं नमी कहइं—आज पछी तुह्म गछि उपद्रव नही करुं । मइं तुम्हनें जांण्या नहीं । इम कही स्वथानिकेगयो । श्रीगुरु कीर्ति हुइ । तिहां थकी विहार करता नोलाई नगरें चौमासि रह्या । एहवइं संघाचार १, कालसत्तरि २, कायस्थिति ३, प्रमुष ग्रंथकारक विक्र० सं० १३४७ वर्षि श्री धर्मघोष सूरी स्वर्ग हूओ ।

एहवइं गुज्जराति वीसलनगरा वाडव मंत्री माधव भाइ केशव थकी राजा श्री कर्ण लडीनइं तूरकाणी राज्य हूओ ।

पुनः वि० सं० १३६३ वर्षि सिद्धपुरनगरि सि- (८३-१) धराय कृत रुद्रालयनो छेद हूओ ॥

४७ तत्पट्टे श्रीसोमप्रभ सूरी ।

तेहनो वि० सं० १३१० वर्षे जन्म । वि० सं० १३२१ वर्षि व्रत । वि० सं० १३३२ वर्षि सूरी पद । श्रीसूरीने ईग्यार अंग सूत्रार्थ तदूभय जिह्वाग्रि नित्यें स्वाध्याय करता । भूमंडालि शील, तप, संजम आराधतां मालव देशि विचरइं । एहवि स्वगौत्रिया वृद्धशालिक श्रीरत्नाकर सूरी प्रगट हूया, तेहनो संबंध कहइं छइं ।

श्रीरत्नाकर सूरी ।

गूर्ज्जर देशि रायखंडी वडली नगरी वृद्धशालाइं श्री रत्नाकर सूरी सप्त कलसि मुक्ताफलना परिग्रह धारक रहइं छे । एहवे धवलका नगरनो वासी प्राग्वाट वृद्ध शा० सा० रुनो व्यवसायार्थि तिहां आव्यो । श्री चिंतामणि पासने नमी शालाइं श्री रत्नाकर सूरी वंद्या, सपरिग्रहि दीठा । तथापि श्री सूरीनें महा उत्तम जांणी सा०

Aho ! Shrutgyanam

रुनओ कहइं—स्वामी तुम्हे मुझनें षट्मासनो नियमनो प्रासाद करो । तिवारी श्री रत्नाकर सुरी कहें—किस्यो नियम ? सा० रुनओ कहइं तुम्ह वांदि अन्न लेवो । जे दिने न वांदु तओ अन्न न लीऊं । तेहनी श्री गुरुइं तिमज नियम दिधो । एतले ते श्रावक छ (८३-२) मासनो अभिग्रही हूओ । निरंतर सूर्योदयें श्री पासनइं नमी पछी रत्नाकर सूरीनें त्रिण्य प्रदिक्षणाइं वांदी मुखाग्रि उभो रहि बिहु हाथ जोडी मुषी महर्षि उपसमनी गाथा कही बिरुदावइं छइं । ते गाथा—

गोयम सोहम जंबू पभवो सिज्जंभवा य आयरिया ।
अन्नेवि जुगप्पहाणा ते दीठहं सुगुरु ते दीठा ॥१॥
अज्ज कयत्थो जम्मो अज्ज कयत्थो जीवीयं मुज्झ ।
जेण तुह वदणामयरसेण सिद्धाइं नैणाइं ॥ २ ॥
ववरीया सुरधेणु संजाया मह गिहे कणयवुट्ठि ।
दारिइं अज्ज मयं दिठे तुह सुगुरु मुह कमले ॥३॥
पुनः—पंचिंदिय संवरणो० ॥ ४ ॥
पंचमहव्वयजुत्तो० ॥ ५ ॥

एहवा वृद्ध आचार्यनी उपमा आपी हेटो बेसइं धिर्यपणइं श्री सूरी प्रति ललित वाक्यि करी ए गाथानो अर्थ पूछइं । ते गाथा—

दोसस्स मूलजालं पुव्वीरिषि विवज्जियं जइ वत्थं ।
अयं वहसी अनथं किं च अन्नथं तवं चरसी ॥ १ ॥

इणि परि ते गाथानो अरथ पूछतां संपूर्ण छमास हूआ । श्री सूरी पिण तेहनी निरंतर बुद्धिनें प्राक्रमइ थकी ते गाथानो नवो नवो अर्थ कही समुज्झावइं । अनुक्र (८४-१) मि छमासनें अंतें सा० रुनो गुरुनें वांदी कहइं भवतारक निर्ग्रथ स्वामी! मूझ अजाणनइं जेहवो अर्थ हुइं तेहवो ज कहओ । तिवारइं श्री सूरी मनस्युं विचारि जे ए गृहस्थ घणें उद्यमि मुजनइं हितूपणाइं हूइं छइं । गुरु कहे छइं हे गृहस्थ ! तुम्हे प्रभाति अवस्य आवीवो । किस्या माटि जे हिवणां सत्य अर्थ कह्यानो समय छइं नही । इम कही विसर्जव्यो । तिवारि संध्याइं श्रीगुरु कलसी सात मुक्ताफलनो परिग्रह असार जाणी घरटीइं पोसी छारी दीवो, एतले स्व शिष्य आ० श्री रत्न प्रभ सूरी कहे—श्री गुरु आ किस्यु ? तिवारि गुरु कहिं—मुझ प्रतिबोधक गृहस्थनें ए गाथानो सत्यार्थ कहिवो छइं तेह थकी कहिणी अनि करणीमां फेर हुइं बीजइं दीनें प्रभातें ते सा० रुनओ आवी पहिलानी परि वांदि मुष थकी कहइं तुम्हे कृपानिधि मुझनें प्रसन्न हुई । सत्यार्थ कहो । ते गृहस्थ वचन सांभली श्रीगुरि रजहरण मुषपट्टी प्रमुख साधु धर्म्मना उपगरण संभाली नोरवद्य थकी (८४-२) 'दोष समूल जाला० ॥ १ ॥' ए गाथानो यथार्थ अर्थ कह्यो । एतलि ते श्रावकि सात कलसा मुक्ताफलनो चूर्ण छारी दीधों देषी कहइं आज मइं तुझ मुखि सत्यार्थ घणे दिहाडइं सांभली तुम्हारी कृपा थकी हुं भव निसारयो । आज तुह्मारा दर्शन थकी मुझ जन्म कृतार्थ हुओ । तुह्मे श्री वीरना पट्टधर हूई शासन शोभावओ । इम बिरुदावि सा० रुनओ अनुक्रमिं स्व घरें धवलकइं नगर पुंतो । एतलि श्री गुरुइं स्वशिष्य श्री रत्नप्रभ सूरीनें गछ भलावी श्री संघनी आज्ञा लही निस्पृह हुइं विहार कीधो । केतलेंक दिनें श्री सूरी चित्रोड गढी आव्या । तिहां ओ० वृ० कुर्कट चुपडा गोत्रि सा० समरा प्रति धर्म्मोपदेश कहै छइं । यतः—

सद्द्रव्यं १ सुकुले जन्म २ सिद्धिक्षेत्र ३ समाधयः ।
संघश्चतुर्विधो लोके ५ सकाराः पंच दुर्लभाः ।१।
अष्टषष्टीषु तीर्थेषु यत्पुण्यं किल यात्रया ।
आदिनाथस्य देवस्य दर्शनेनापि तद् भवेत् । २ ।
जिनं स्त्त्वा मुनिं भक्त्या, कृत्वा साधर्मिवात्सलं ।
एन केन प्रकारेण पुरुषः प्रसिद्धो भवेत् । ३ ।

श्रीगु (८५-१) रुनो उपदेश एहवो सा० समरो पामी श्री सिद्धशैलि श्री सोमप्रभ सूरी युक्त बि लक्ष मनुष्यइं संघपति हुइं वि० सं० १३७१ वर्षे श्री शत्रुंजय गिरें श्री रुषभ बिंब थापि पंदरमो उद्धार निपजाव्यो ।

तिहां संघ साक्षि श्री रुषभना मुष आगलि श्री रत्नाकर सूरीइं स्व चारित्र षंडण आलोयाणि रुपि 'श्रेयः श्रियां मंगल०' रुप स्तवने पंचवीसी निपजावी ।

Aho ! Shrutgyanam

तेह मांहि पोताना आत्मानी शिक्षा रुपइं वैराग्यना काव्य कहे छै–

वैराग्यरंगो परवंचनाय० ॥ १ ॥

परोपवादे मुखं सदोपं० ॥ २ ॥

एहवा ८ काव्य रुप आलोयण लेई लघु कर्म्मि हूइं घणा जीवनें उपगारी थका वि० सं० १३८४ वर्षि सा० समर उपदेशक श्री रत्नाकर सूरीनो स्वर्ग हूओ । यदोक्तं—

महयाडंबर जत्तो सूरी पयंवडा पल्लीए जायं ।

रयणायर सूरी नामेण जाओ सासणंमि सिणगारो॥१॥

इणि परि श्री रत्नाकार सूरि संबंधः ॥

पुनः वि० सं० १३७५ वर्षि श्री सोमप्रभ सूरी स्वर्ग हुओ ।

४८ तत्पट्टे श्री सोमतिलक सूरी ।

तेहनो वि० सं० १३५५ वर्षि जन्म । (८५-२) **वि० सं०१३६९** वर्षि दीक्षा । वि० सं० १३७३ वर्षि सूरी पद । श्री सूरी विहार करता श्रीसिरोही **नगरइं चोमासि रह्या** । तिहां **श्री** चंद्रशेखर सूरी १, श्री जयानंद सूरी २, श्री देवसुंदर सूरी ३, ए त्रिहुं शिष्यानें श्री सूरीइं सूरी पदि कीधा। एहवइं ' देवा प्रभोयं ' स्तवनकारक श्री जयानंद सूरि श्री गुरु चिरंजीवी थका स्वर्ग हुया । नव्य क्षेत्रसमास, सत्तरीसयठाणा, श्री तीर्थराज स्तुती प्रमुष ग्रंथकारक श्री सोम तिलक सूरी वि० सं० १४२४ वर्षि स्वर्ग हुआ ।

४९ तत्पट्टे श्री देवसुंदर सूरी ।

लघु गुरुभाइ श्रीचंद्रशेखर सूरी ।

श्री देवसुंदर सूरीनो वि० सं० १३९६ वर्षि जन्म । वि० सं० १४०४ वर्षि लघु मरुदेसि महेश्वर गामि व्रत । वि० सं० १४२० वर्षि अणहिल पत्तनीं सूरी पद । एहवइं वि० सं० १४४८ वर्षि श्री अहीमदाबाद नयर पणुं । वि० सं० १४५५ वर्षि ओ० वृ० सा० आंबा भाई सा० गणिआ श्री सिद्धाचलि संघपति हुया । पुनः वि० सं० १४५६ वर्षि सा० आंबाइं व्रत लीधो । श्री देवसुंदर सूरीनो शिष्य हुओ । वि० सं० (८६–१) १४६२ वर्षि पातसाह गज्जनी षांन आव्यइं हुतइं श्री सिद्धाचलिं सा० समरा थापक मूल नायक बिंब श्री चक्केश्वरीइं असुरनो उपद्रव जांणी अलोप कीधो । पछी सवा लाख पहोर पाछो मूक्यो । पुनः रादखंडि वडाली वास्तव्य ओ० वृ० सा० गोविंदइं असुरनो उपद्रव देषी तारणगिरइं श्री कुमारपाल थापित प्रवालानो श्री अजितनाथनो बिंब भूमी गृह भंडारी प्रासाद मध्यें नवीन बिंब थाप्यो । श्री देवसुंदर सूरीइं प्रतिष्ठ्यो । तिहां श्री सूरीइं स्व पंच शिष्य तेहने सूरी पदे कीधा । ते पांचना नांम कहे छइं ।

पहिला श्री ज्ञानसागर सूरी ते आवश्यक अवचुरी १ ओघनिर्युक्तिनी अवचूरी २ प्रमुष ग्रंथकारक ॥ १ ॥

बीजा श्रीकुलमंडन सूरी ते श्री कुमारपाल चरित्रना कारक ॥ २ ॥

त्रीजा श्री गुणरत्न सूरी जेहनी अवग्रंम १ रोष २ अनि विकथा ३ ए त्रिहुनी ते नीम छइं । क्रियारत्नसमुच्चय १ षट्दर्शनसमुच्चय २ प्रमुष ग्रंथ कारक ॥ ३ ॥

चोथा श्री साधुरत्न सूरी ते यति जीतकल्प (८६-२) नी टीकाना कारक ४. ए च्यार शिष्य श्री गुरु चिरंजीव थकइं अल्प आयुइं स्वर्ग हुआ । अनि पांचमा शिष्य श्रीसोमसुंदर सूरी विद्यमान विहरंत जाणी श्रीसूरीइं श्रीसोमसुंदर सूरीनें कछ देशि विहारनी आज्ञा दीधी । एतलइं श्रीसोमसुंदर सूरी केतलेक दिनें देवकइं पत्तने गया । नवखंडइं, श्रीसिद्धक्षेत्र, श्रीरैवताचल फरसी देवके पत्तने गया । गुरु देवसुंदर गोपगिरइं श्रीवीरदर्शन करी केतलेक दिनें दीली नगरइं पुहता । तिहां श्रीमाली वृ० सा० जगसिंह १ भाइ सा०महणसिंहि २ श्री तपागछइं समस्त संघनें संघवाछल नीपजावी श्रीजिनदर्शननइं समयइं चुरासि हज्जार टका सुकृति करी सहस्र आभुषणि तिलकें ए रीते हूओ । एहवइं ओडछा नगरइं वि० सं० १४६२ वर्षि श्रीदेवसुंदर सुरी स्वर्ग हूओ ।

५० श्री तत्पट्टे सोमसुंदर सूरी ।

तेहनो वि० सं० १४३० वर्षे जन्म । विक्र० सं० १४३७ वर्षि व्रत । वि० सं० १४५० वर्षि वाचकपद ।

Aho ! Shrutgyanam

वि० सं० १४ (८७-१) ५७ वर्षे सूरीपद हूओ। श्रीगुरु भुजपत्तनइं, अंजारइं, मांडवी, प्रमुष नगरे विचरता चउबारी नगरीइं महाक्रियावंत महिमामंदिर गुरू प्रतिदेषा तिहां कोइक रुठइं द्रव्यलींगीइं द्रव्यदेइं शस्त्रधारक पुरुषनइं गुरुघातार्थिं सज्ज कीधो। ते दुर्बुद्धि वसतीइं गुरु घातार्थि गुप्तपणइं रह्यो। जेतलइं अनुचित काम करवा उद्यम करइं एतलइं चंद्रमाने अजूआलइं श्रीगुरु रजहरणि निद्रा मांहि पुंजी पासुं पालटयूं। वधकारक पुरुषइं चितव्यूं जे निद्रामांहि पिण जेहनइं जीव उपरइं एहवी कृपा छइं, एहवा महापुरुषनो वध करी मुझनीं कुण गति जावुं। एहवा विचारी परलोक थकी बीहतो श्रीसूरीनइं नमी स्ववरें पोहतो। तिहां थकी गुरु विहार करता केतलेंक दीनें मालव देशिं आमझरे नगरइं आव्या। एहवइं सो० संग्राम प्रगट थयो, तेहनो संबंध कहे छे।

सो० संग्रामसिंह—

गुजरात देशि वढीयार खंडे लोलाडा ग्रामि प्राग्वाट वृ० पूस गोत्री सोनो अवटंकइं संग्राम नाम रहि छइं। ते कोइ समयानुयोगि मालव (८७-२) देशि मांडव गढि चिकथा श्रीग्यासदनिनें राज्यें, माता नाम देवां, स्त्री नाम तेजां, पूत्री नाम हांसां, ए परिवार सहित जेतलइं मांडवगढि नगरनी पोलि पइसइं तेहवइं डावी दिशि महामणीधरें फूण कीधो छइं अनि तेह फूणि उपरि दुर्गा पईठि सहर्षित शब्द करइं छइं। ते अचरिज देषी सपरिवारि संग्राम उभो रह्यो। एहवइं तिहां एक आहेडी उभो छइं। ते संग्रामने देशांतरी जाणी कहइं ए शकुनी जे नगरमां पइसइं तेहने ते महारुद्धिना देणहार छै। तेह चिकथा श्री ग्यासदीन हज्जूर रहइं। ते शब्द अनि शकुन सांभली चित्त धरी सहर्ष ओछाइ सो० संग्रामइं नगरपोलि प्रवेश कीधो। राजदरबार पासइं आवी रह्यौ। अल्प द्रव्य थकी थोडु २ तेल, नाना प्रकारनो घी, गुड, हिंग, मिरची, साकर, श्वेत, रक्त वस्त्र, पुनः सौगंधिक प्रमुषनो व्यापार करइं। पून्य प्रमाणि सुषि तिहां काल नीगमी। एकदा उष्ण कालि चि० श्रीग्यासदीनें असवारी कीधी। एतलइं घणा तापयोगि चिकथा स्वदरबारनी (८८-१) वृक्षवाडीकाइं, सुंदराकार शाषाइं, प्रतिशाषाइं, हरिकुंपल पत्रइं, मनोहर सुवटाइं, शीतल सुछाया दीषी उभा रही वीसामओ लेइ स्वस्त हूई। ते सहकारनें देखी आराभिकनइं चिकथा कहइं 'सब आंबकु फल हइं पिण इस आंबकू फल क्युं नहीं' तिवारें आराभिक कहइं ' पा० सिलाभित इसू आंबके दरखतमे सब गुण अछे, पिण एक अएब बुरी हइं, जे फल नहीं। बांजीए आंब हइं। ' एहवो वचन पुष्पपालकनो सांभली श्रीग्यासदीन कहइं ' इसू बांझीए आंबकी सूरतदेषी कूण कामका। इसै वाडीसे काट डालौ। ' एहवइं पुन्योदय थकी सो० संग्राम पिण ते वाटिकानइं जुइं छइं। तिणि चिकथा कहिण सांभली मनस्युं विचारि जे ए उत्तम नवपलव वृक्ष ते तूरत काढसिइं, एहनइं हु अभयदान देउ। धर्म्म प्रभावि महा मंगलिक हुसइं। तिणहिज वेलाइं दृढ चित्तइं संग्रामि सकल जन देषतां चिकथा श्रीग्यासदीननें सिलाम करी अरजी करइं छइं—' जे ए आंब जन्मवंध्य हइं पिण मुजे एक मुह (८८-२) मांग्या दीओ। महा पसाय करो। आवतइं जेष्ठ मासें इंसू आंबके फल श्रीपातसाहकु भेट करुं। ' ते अचिरज वात सांभली चिकथा संग्रामनइं कहइं—' आवतई जेष्टी इणि दिनें ईस आंबके फल न लाया तओ इसू आंबका जैस हवाल तैसे तेरा हवाल्र। ' ते वात संग्रामि अंगिकार कीधी। चिकथो १, अनि संग्राम२ स्वघरि आव्या। पूर्वोदयना योग थकी सो० संग्रामनो अत्र थकी भाग्योदय हुओ। ते वात सघली मातानइं स्त्रीनइं कही। हवइं संग्रामइं ते सहकारनइं पछवाडइं किनायत तथा चंदूआ बंधावी स्नात्रादिकइं सुचि हूइ पवित्र वस्त्र धरी निर्मल चित्तें धूप, दीप, चंदन, अक्षत, पुष्प ते आवांनइं अर्चइं एतले शील गुणइं साहसीक जांणीनइं; पूर्वभवी वणिक सा० आंबो नामि द्रव्य धारक इणि स्थानिकें रहितो, 'ते वांझियो मरण पांमी इणहीज स्वद्रव्य स्थानिके बीजें भवइं आंबो वृक्ष हुओ। ते आंबानो जीव आवी संग्रामनइं कहइं ते मुझनि अभयदान दीधो छई तेह थकी हुं तुंज प्रति तूठो। ए

Aho ! Shrutgyanam

(८९–१) आंबाना मूल हेठि द्रव्य छइं ते तूं भूमि षणीं काढि लेजे । ए तुझ भाग्यनो छइं ।' ते वचनें संग्रामि तिमज लघु लाघवी कलाना योग थकी माता स्त्री पूत्री प्रमुषी ते द्रव्य स्वगृहे थाप्यो । आंबानी मूलि पाणी लूण माटीइं करी सिंच्यो । अनुक्रमि उष्णकालि ते सहकारी सुगंध मुहर आवी तिमज फल हूया । ते फल यत्ने जालवी सध्वास्त्रि आछादि गीत वाजीत्रइं चि० श्री ग्यासदीनने चरणे भेटी कीधा । संग्राम हाथ जोडी कहइं 'पा० सिलामति ! ए फल सुगंधओ वांजीए आंबके' । ते सांभली ग्यासदीन त्रूठो, पांच वस्त्र देइं वरि कांमदार कीधो । ते संपदावंत हूओ । एहवइं तिहां विहरता श्री सोमसुंदर सूरी आव्या । सो० संग्राम संघ समस्तना आग्रहइं तिहां मांडवगढिं श्री सूरी चउमासइं रह्या । सदैव सुर्योदयी श्री भगवती अंगनी व्याख्या कहइं । सो० संग्राम १ माता २ स्त्री ३ सहित निश्चल निर्म्मलइं चित्ते सद्दहणांइं सांभली । जिहां छत्रीस हज्जार बार 'गोयमा ! गोयमा ! ' एहवुं नाम आवइं (८९–२) तिहां सो० संग्राम नांमि नांमि एक एक सोनइओ मुकइं । एतलइं श्री भगवती सूत्र अंग संपूर्णि छत्रीस हज्जार सोनइआ सो० संग्रामइनी नेश्राइं हूया । तेह थकी अर्ध सोनइओ मातानी नेश्रानो । तेह थकी अर्ध सोनइओ भार्यानी नेश्राइं हूओ । एवं संख्याइं त्रहिसठि हज्जार सोनइया हुवा । सो० संग्राम श्रीगुरुनइं कहइं आ ज्ञान द्रव्य लीओ । गुरु कहइं साधु हुइं ते ए द्रव्य प.प दोषनुं मूल जांणी एह थकी वेगलो रहि, जेह थकी पंचमहाव्रत जाइं । तिण थकी ए ज्ञान द्रव्यइं ज्ञानंनो यत्न करो ।

लिखापयंति जिनशासनपुस्तिकानि
व्याख्यानयंति च पठंति च पाठयंति ।
श्रृण्वंति रक्षणविधौ च समाद्रियंते
ते मर्त्यदेवशिवशर्म नरा लभंते ॥ १ ॥

भक्षाभक्षं तथापेयं पेयं वा कृत्याकृत्ययोः ।
गम्यागम्यं तथा श्रेयं हेयोपादेयकादिकं ॥ २ ॥

जेह थकी श्री वीरवांणी ओलखी प्राणी प्रत्यक्ष सुखनें वरइं । एहवुं वचन श्री गुरुनुं सांभली सोनी संग्रामे पहिलांना त्रहिसठि हज्जार सोनईया, पुनः अन्य द्रव्य स्वघर थकी लीधो तेहनी संख्या एक लाष अनि पिस्तालिस हजार सोन (९०–१) इया एकठा मेली वि. सं. १४५१ वर्षि श्री कल्पाध्ययन सूत्र १ अनि आ० श्री कालक सूरी कथा २ एवं सचित्रीत स्वर्णाक्षरे तथा रुपाक्षरि लिखावी सकल साधु प्रति ज्ञानपुण्यार्थे ते प्रति वांचवा भणवा दीधी । केतलिक प्रति ज्ञान कोशि ज्ञानलाभार्थि थापि । पुनः गुरु वाक्ये मालव मंडले श्री मांडवगढि श्री सुपासनओ प्रासाद, मुगसिपुरइं श्री मुगसिपासनो बिंब प्रासाद वि. सं. १४७२ वर्षि थाप्यो । मेइ, मंदसोर, ब्रह्मंडल, सामलीया, धार, नगर, खेडी, चंडाउलइं प्रमुष नगरइं सो. संग्रामि सत्तर प्रासाद निपजाव्या । इणिहिज सूरीइं प्रतिष्ठ्या । एकावन जीर्णोद्धार निपजाव्या । इत्यादिक सुकृत श्री गुरु वचनि सो. संग्रामइं कीधो इति ॥

श्री सूरी चरित्र, तप, शीलनइं आराधता, द्रव्य १ क्षेत्र २, काल ३, भाव ४, अनुमानें विहार करता, पुनः गुर्ज्जरि वटपद्र नगरइं, संखेहडा नगरइं, डभोइ नगरें जंबूसर न०, आमोद्र न०, खंभायत न०, अहिमदाबाद न०, आसापल्लीइं, कोठर्व (?) पुरइं, फूरमान वाटिकाइं, शिके (९०–२) दर पूरी, विसलनगरि, श्री वृद्धनगरइं आव्या । तिहां प्राग्वाट वृ० सं० देवराजें श्री अभिनंदन स्वांमीनओ बिंब सप्त धातुमयि निपजाव्यो । ते श्री सूरीइं प्रतिष्ठ्यो । तिणहिज अवसरि सं० देवराजिनइं हर्षि स्व्च्यार शिष्यनइं सूरी पद कीधा । तेहना नांम प्रथम मोहननंदन नांम श्री मुनीसुंदर सूरी नांम दीधो १ । बीजा शिष्य जयउदय नांम श्री जिनकिर्त्ति सूरि दीधो । २ । त्रीजा शिष्य श्री भुवनधर्म्मनो नांम श्री भुवनसुंदर सूरी दीधो । ३ । चोथा जयवंत हर्ष तेहनो नांम श्री जिणसुंदर सूरी दीधो । ४ । वि० सं० १४७८ वर्षे छत्रीस हजार टका व्ययइं सूरी पदो त्सव कीधा । ए च्यार शिष्य युक्त श्री सूरी नगरी गामइं स्नात्रोपदेशना दायक तिहां थकी तारणगिरि श्री अजित दर्शन करी हणाद्र, पोसीणा नगरइं आव्या । श्री गुरुना उपदेशें

Aho ! Shrutgyanam

प्रा० वृ० सा धुलइं श्री रुषभ १ श्री शान्ति २ श्री नेमि ३ श्री पास ४ श्री वीर ५ एवं पंचतीर्थोना प्रासाद पांच जुदा जुदा निपजाव्या । तिहां थकी श्री अर्बुदाचलनी यात्रा करी श्री भार्या नगरइं आव्या । तिहां समस्त संघइं श्री गुरुनें (९१–१) उपदेशी भार्या नगरइं प्रासाद कीधो । एवं भद्रां प्रमुष नगरइं अर्बुदासनि श्री सूरीना उपदेश थकी सप्त प्रासाद नीपजाव्या । एकवीस जीर्णोद्धार हूया । श्री सूरी नीतोहडा नगरें आव्या । तिहां संप्रति नृपकारक प्रासादि वि० सं० १४८१ वर्षि देवका पत्तन थकी तेडावीनें बावायक्षनी मूर्ति नीतोडे प्रासादमां थापि । तिहां थकी श्री सूरी जीवित स्वांमी नंदीपुरें, पुनः वीरवाटकें श्री बंभणवाडिनी यात्रा करी सरस्वतीनें नमी अनुक्रमि मेवाडदेशी गोडवाड खंड नाडलाइ नगरि श्री नेमि प्रमुष सकल प्रासादना देव नमी तिहां वर्षा कालि रह्या । केतलेक वर्षे श्री सूरि राणपूर नगरइं चौमासि रह्या । पातसाह श्री पीरोजना हूकमथी प्रा० वृ० सं० धरणि श्री गुरुनो उपदेश लही वि० सं० १४६९ वर्षे श्री राणपुरें प्रासादारंभ कीधो । पुनः वी० सं० १४९८ वर्षि चतुर्मुष प्रासाद संपूर्ण हुओ । तिहां श्री सूरीइं कृष्ण सरस्वती बिरुद धारक श्री मुनिसुंदर सूरी १ महाविद्याविडंबनटीकाना कारक श्री (९१–२) जिनकीर्ति सूरी २ कंठगत एकादशांग सूत्रार्थ धारक श्री भुवनसुंदर सूरी ३ दीपालीकादि माहात्म्य कारक श्री जिनसुंदर सूरी ४ ए च्यार शिष्य युक्ति शुभसकल, वसादि नव पाठक युक्त; पंडित, गणि, रुषी युक्त इत्यादि पांच शत साधुनइं परिवारि करी सहीत वि०सं०१४९९ वर्षे सा० धरण निर्म्मापित त्रैलक्य दिपिका नाभि चतुर्मुष प्रासादें श्री रुषभादि अनेक बिंबनी प्रतिष्ठा कीधी । प्रथम सं० १४९५ वर्षि सा० धरणो श्री सिद्धाचलि संघवि हूओ । स्त्री वर्षे १८ मइं सा० धरणो वर्ष २१ मइं श्री सिद्धाचली मुख्य तीर्थकरनें आगली श्री पातसाह मंत्री ते सं० संघाते इंद्र मालनइं अवसरइं सजोडे चोथु व्रत उचरी, गुरु मुखी तिहां पोते सं० धराणि इंद्रमाल पिहिरि । पुनः सं० धरणो मुख्य जिनना गु [illegible] गें बिहु हाथ जोडी शुभ निर्म्मलाशयथी विनती करी किसु मांगइ छइं ? गाथा—

सुलहो विमाणवासं
एगच्छत्ता वि मेइणिय सुलहा ।
दुलहा पुण जीवाणं
जिणंदवरसासणे बोही ॥ १ ॥ (९२-१)

इणि परि सुशील व्रत आराधतो, निरंतर श्री जिन भक्ति साचवतो अन्य घणा साधर्म्मिक पोषतो संसारनि विषइं रहि छइं ।

श्री गुरुइं स्व शिष्य श्री भुवनसुंदर सूरीनइं श्री शीरोही नगरइं चौमासानी आज्ञा दीधी । पुनः श्री जिनसुंदर सूरीनें श्री श्रीमाल नगरी चोमासानी आज्ञा कही । तिणे तिहां गुरु आज्ञा लही विहार कीधो । श्री गुरु राणकपुर थकी बिहूं शिष्य युक्ति नाडओलनगरी चोमासी आव्या । वर्षाकाल संपूर्ण स्वपट्टधर श्री मुनिसुंदर सूरीनइं गछ भलावी श्री गुरु आम नृपति निर्मापित श्रीवीर दर्शनइं उत्कंठित गोपनगरें चउमासी रह्या । एहवइं भाष्य त्रिणनी चूर्णि १, कल्याणकस्तव २, रत्नकोश ३; पुनः योग शास्त्रनो ४, उपदेश मालानो ५, षडावश्यकनो ६, नव तत्वनो ७, आराधना पताकानो ८, इत्यादि ग्रंथनो बालावबोधना कारक श्री सोमसुंदर सूरी वि०सं० १५०१ वर्षे स्वर्ग हुया ।

५१ तत्पट्टे श्री मुनिसुंदर सूरी ।

तेहनो वि. सं. १४३६ वर्षि जन्म । (९२–२) सं. १४४३ वर्षे व्रत । सं. १४६६ पाठक पद । सं. १४७८ वर्षि सूरी पद । आटलीना नादना एकशत अनि आठ शब्द तेहना ओलखणहार, श्री कृष्णसरस्वती बिरुदधारक, श्री उपदेश रत्नाकर ग्रंथकारक, श्री शांतिकर स्तवन निर्मापितेन तन्मंत्रीतजलेन योगिनिकृत मारि उपद्रवनिवारक, सुलभबोधी प्राणिनें उपदेश दायक, श्री मुनि सुंदर सूरि सं. १५०३ वर्षि श्री कोरंटानगरें स्वर्ग लह्यो ॥

५२ तत्पट्टे श्री रत्नशेखर सूरी ।
श्री जयचंद्र सूरी ।

श्री रत्नशेषर सूरीनो सं. १४५७ वर्षि जन्म । सं.

१४६३ वर्षे व्रत । सं. १४८३ वर्षे पं. पद । सं. १४९३ वर्षे वाचक पद । सं. १५०२ वर्षे सूरी पद। श्री सूरीइं अजमेरे नगर पार्श्वे वीठारपुरे श्री नेमि बिंब प्रतिष्ठयौ । श्राद्धविधि सूत्र-वृत्ति १ श्राद्धप्रतिक्रमण सूत्र-वृत्ति २, आचारप्रदीप ३, प्रमुष ग्रंथकारक। श्री सूरीनइं बाण देव्या दत्त वर थकी हस्त सिद्धि जांणवी । सं. १५११ वर्षे स्वर्ग हूओ ॥ १ ॥ लघु गुरुभाई श्री जयचंद्र सूरी (९३–१) प्रतिक्रमण गर्भहेतु १, वीसस्थानिकनो विचारामृत संग्रह २, इत्यादि ग्रन्थकारक कुमुठीइं गांमि स्वर्ग हुया ॥ २ ॥

५३ तत्पट्टे श्री लक्ष्मीसागर सूरी ।

२ श्री सोमदेव सूरी ।

३ श्री सोमजय सूरी ।

श्री लक्ष्मीसागर सूरी तेहनो वि. सं. १४६४ वर्षे जन्म हुओ । सं. १४७० वर्षे व्रत । सं. १४७९ वर्षे पं. पद । वि. सं. १५०१ वर्षि पाठक पद । सं. १५०८ वर्षे आ. पद । सं. १५१५ वर्षे गछनायक पद । श्री सूरीना उपदेश थकी वागडदेशि गिरिपुर नगरे सो. साल्हे श्री गंभीरापासनो प्रासाद निपजाव्यो । पुनः मालव देशि धारनगरे श्री गुरुना उपदेशी प्रा. वृ. सं. हर्षसिंहइं सत्त घडी सुवर्ण सुकृति प्रासाद ईग्यार निपजाव्या । एहवि गुज्जराति अणाहिल्ल पत्तनइं जिन बिंबोत्थापक सा. लुको प्रगट हुओ ।

सा० लुकानी उतपत्ती कहि छइं ।

यथा गुर्जर अणाहिलाख्य पत्तनें नूतन पाटकि प्रा० वृ० भवेचा गोत्रे सा. लुंको एक सामान्य धणि रहि छइं । ते पुनिमगछ गुरु संयोगइं जैन लिपि शिख्यौ (९३-२) तिणि वि. सं. १५२८ वर्षे ज्ञानकोशि जैन सिद्धान्त वार ७ लिख्या । ते सकल ज्ञानद्रव्य लेतां थकां साडासत्तर दोकडा रह्या लिखवाना । सा० लुको गृहस्थने कहें साडासत्तर दोकडा...ज्ञान पिण घणो लिख्यो छै । ज्ञानद्रव्य मांहि थकी काढी आप्यौ । तिवारे गृहस्थ कहै–सा० लुका! तुम्हे जैन सुधर्म्मि छो, एतलो तुम्हने ज्ञान लाभ हूओ । शालाइं जाइं साधुनइं कहे तुम्हे श्रावकनइं कहो—तुम्हारइं उपदेशि ज्ञानकोश ए लिषावइं छइं । साधु कहे अह्म पासि द्रव्य नहि अनि पुस्तक पिण ज्ञान कोश थकी गृहस्थ पासइं मांगी वांची पाछा ते गृहस्थनइं दीजइं छइं । ज्ञान द्रव्य पिण गृहस्थ जांणइं । सांभली सा० लुको क्रोधी घरे आव्यौ । एहवइं संध्याने अवसरें उत्सवइं जिन भक्ति जिन मंदिरि बाजारि थयो । तिहां वांमभागि कपालि देव मंदिरनो थांभ भागो । प्रभातिं कुणगिरि बाजारि कोइक हाटि बेठौ । एतलि तिहां गुजराति सैयद लेखक मित्र मिल्यो । ते पिण म्लेछनी पारसीना हिरफइं बरख लिखइं । ते पिण कह्यु सा० लुंका (९४-१) लेखक ! ए तुम्हारइं कपालि क्या लगा हइं । लुको कहि–देवमंदिरका थंभा लगा । ते सांभली म्लेछ कहइं–तुह्मारे जे फकीर दुनीया छोडिके हुये सो साहिबकी बंदगी करइ कै, साहिब के हजूर मुक्तिमइं बेठा, हे अल्ला अनंत ते जय अखंड हइ, असत्या नापाकीसे दुर हइं । ते म्लेछ वचन सांभली सा लुकाने चितइ म्लेछ बुद्धि प्रगट हुई । सा० लुकानइं म्लेछ धर्म्म प्यारो जांणी तिणे सैयदइं पीर हाजीनो आम्नाय दीधो । अनि साडासत्तर दोकडा पिण गृहस्थे न दीधा । तेहना क्रोध थकी म्लेछनी बुद्धि चित्ते धरी । सा० लुको गृहस्थनइं कहइं–ए गुरु सावद्य उपदेश कहइं छइं । जेह वचन थकी हिंसानो पोष हुइं । निरवद्य वचननो उपदेश कही नहि छइं । अनि साधु प्रति इम कहइं–साधुनी जेम में पिण आगिमना पुस्तक वार सात लिख्या छइं तिहां श्रावकनी कीयाइ जिन–पडिमा नो पाठ किहांइ मइं न दीठो । अनि छइं पिण नही । ते माटि पंचेंद्री जीव ते एकेंद्री जीवनइं नमइं अनि ए एकेंद्रीयना दल थकी (९४-२) छ कायना जीवनी विराधना हुइं । तेह थकी जिन बिंब आराधक नहीं । ए प्रासाद बिंब सर्वे मिथ्या छइं । ते सांभली साधु कहइं–सा० लुका ! तुम्हे प्रत्यक्ष पाणि किम अनंत संसारी थाओ छओ । श्री सिद्धांत द्रव्य थकी लिखावी साधु पोतानइं भणवा सिद्धांतनी यत्न करइं । तिवारि ते द्रव्य नेश्राइं कहिवांणो । तेह थकी

Aho ! Shrutgyanam

ठवण नीक्षेपे छइं अनी नंदी प्रमुष सिद्धान्ते पूर्वि चोरासी आगिम कह्या छइं ते वीर नीर्वाण हुया पछी त्रिणवार बार दुःकाल पडयो तिहां ८४ आगिमनो विछेद थयो। तिवारे सकल सुविहित गितार्थे मिली साधु मुष थकी जिम सांभल्युं तिम उद्धर्‍युं छइं। पछी तो ते केवलीनइं गम्य, मनुष्य कुण मात्र। हा पिण नहि ना पिण नही। इम घणइं नयइं उपनयइं श्री गीतार्थि समझाव्यौ पिण ते लुको कदाग्रह न मुकइं। जिन बिंबनी निंदा करतो जांणी ज्ञाती पंक्ति बाह्य कीधो। तेह थकी वणे क्रोधी संसार पणुं तजी वि० सं० १५३० वर्षे समणोपासक वेष आदरी अणहील्ल वाडा पाटण थकी (९५-१) सिद्धपुर नगरें आव्यो। तिहां प्राग्वाटि तपा लुकाइं ज्ञाति भेद हुओ। तिहां थकी केतलेक दीनें श्री सीरोही देशि अरटवाडि गांमइं आव्यों तिहां उपकेश वृद्ध शाषाइं सा० भाणो रहि छइं तिणि समणोपासक सा० लुकानो उपदेश सांभली स्वहस्ति सा० भाणें दिक्षा लीधी। वि० सं० १५३२ वर्षि प्रथम वेषधर रु० भाणो हुओ। पुनः वि० सं० १५४० वर्षि श्री सीरोही नगर वास्तव्य ओ० स० वृ० साथरीया गौत्रइं सा० भींदें रु० भाणा हस्ति दीक्षा लीधी। एतले वि० सं० १५३५ वर्षे श्री सत्यपुरें सा० लुकानो आयु पूर्ण हुओ। तिहां थकी रु० भाणो शिष्य रु० भीदा गुजराति अहिमदाबाद नगर माहि शाहापुरी उष्ण कालि आवी रह्या। तिहां रु० भीदानो उपदेश सांभली श्रीमाली लघु शाषाइं सा० नानचंदि रु० भीदा हस्ते दिक्षा लीधी। नानां रुषि नांम दीधुं। तेहनो शिष्य रुप रुषि हुओ। इत्यादि कुमती छे तेहनो संग तजवो। सुमति भजवो। उत्तम जीवे स्व आत्म हित काराणि चितइं (९५-२) शुद्ध सद्दहणा धरी श्री जिन भक्ति तेहिज मुक्ति पंथ गमन रुप जांणी आदरवी। यथोक्तः—

वर गंध १ धूप २ चोखएहि ३ कुसुमेहि ४ पवरदीवेहिं ५ नैवेद्य ६ फल ७ जलेहि ८ जिण पूआ अठहा होई ॥ १ ॥

इत्यादि अष्ट विधिना जिनराज पूजा
ख्याता कृता सुरनरगणैः सदैव
खंडी कृता सुमतिभिः कलिकाल योगात् ॥

इति श्री जिन बिंब उथापक सा० लुका उत्पत्ति समाप्त।

एहवि मांडवी बिंदरें तपा श्री सोमदेव सूरी १, खरतर श्री जिनहंस सूरी २, अंचलीक श्री जयकेसर सूरी ३, ए त्रिहुं गछना आचार्य तिहां आव्या। तिवारइं सोरठ देशि लुकाना मतनो विस्तार जांणी ए त्रिहुं गीतार्थे मिलि वि० सं० १५३९ वर्षि आपआपणा गछ थकी आज्ञा धर्म्म थाप्यो। एतलइं इहां थकी आदेश निर्देशनी मर्यादा थपाणी। पुनः पात्रमांहि सफेदानी ओली एक दीधानी आलोयण अठमनी साधुनइं कहावी। ते पहिला स्व स्व संघाटक समुदाय मध्ये जे गीतार्थ दीक्षाइं वृद्ध हुइं तेहनइं (९६-१) मोटा मोटा क्षेत्रनी श्री पूज्य चीठ्ठीका देता। इम सकल संघाडे ए नीती। पछइं ते वृद्ध गीतार्थ साधु प्रमाणें क्षेत्रि आज्ञा लही साधु बे तथा च्यार विहार करता। एहवे वि० सं० १५४७ वर्षि गूर्जर देशि धानधार खंडई श्री यक्षनी उत्पत्ति हुइ। श्री सुरीइं मुतगामें बलदुठइं पांच प्रासाद प्रतिष्ठ्या। वि० सं० १५३७ वर्षि हाडोती देशि सुमाहली गामि श्री सुरीनो स्वर्ग हुओ। २ आचार्य श्री सोमदेव सुरीनो वागड देशि वढियार नगरें स्वर्ग हुओ।

५४ तत्पट्टे श्रीसुमतीसाधु सूरी।

तेहनो जन्म अर्बुदासनें वेलांगरी नगर प्रा० वृ० नारण गोत्रि सा० टिडु, स्त्री रुडी कुक्षे वि०सं० १४९४ वर्षे जन्म। वि० सं० १५११ वर्षे दीक्षा। वि० सं० १५१८ वर्षे गछनायक पद। श्रीसूरीयें जेसलमेरे, कृष्ण गढें, अर्बुदासनइं, देवके पट्टणि, गढे नगरें, खंभायतें, गंधार, ईडर नगरइं ज्ञानकोश गितार्थ पासी सोधाव्या। ज्ञान जत्न कीधो। श्रीगुरुना उपदेश थकी मालव देशी मांडवगढि प्रा० वृ० सरहडीया गोत्री पातसाहना द्रव्यना भंडारी खजानाना (९६-२) भलामणिया सा० सहसा भाई सुलतान श्रीअर्बुदगिरि उपरि अचलगढि

Aho ! Shrutgyanam

इग्यार लाष द्रव्य सुकृति करी पांच लक्ष मनुष्यनो संघ लेई श्रीरुषभदेवनो चतुर्मुष प्रासाद नीपजावी ते माही सतधातु चउद शत मण प्रमाणें तेहना बिंब चार कराव्या। तेमांहि आठ बिंब काउसगीया अने च्यार बिंब चतुर्मख प्रासादि मूलनायक श्रीरुषभदेवना जांणवा। वि० सं० १४५४ वर्षे श्रीसुमति साधु सुरीइं प्रतिष्ठयौ। श्रीसूरी अतिचार रहित चारित्र धर्म्मने आराधता, सुध परुपक बिरुद धारक वि० सं० १५५१ वर्षे खमणुर गामिं श्रीसूरीइं स्वर्ग हूओ।।

५५ तत्पट्टे श्रीहेमविमल सूरी।

(२) श्रीकमलकलस सूरी।

(३) श्रीइंद्र नंदी सूरी।

ए त्रिहु गुरुभाइ तेमांहि श्रीकमल कलस सूरी थकी वि० सं० १५५५ वर्षे कमलकलसा गछ हूओ।

पुनः श्रीइंद्रनंदीसूरी अणहिल्ल वाडा पाटण पार्श्वे कुतपुर ग्रामें स्वशिष्यनें आ० पद देइ गामनें नामें श्रीकुतपुर सूरी नांम दीधु। तिहां थकी वि० सं० १५५८ वर्षि कुतपुरा गछ (९७–१)कहिवाणो। एतलइं ए बिहुं लघु गुरुभाइना भिन्न गछ हुंया। अनि श्रीहेमविमल सूरी जे क्रिया भ्रष्ट साधु समुदाय गछ मर्यादा शिथल जांणी देश आज्ञा देता हुया। श्रीगुरु ब्रह्मचारी चुडामणि बिरुद धारक निर्लोभतापणें सकल जन विख्यात कीर्ति संवेग रंगइं समतावंत पक्वान्नादिक त्याज्यता, घणा जीव लुपाक मतनइं तर्जी श्रीसूरी हस्ति दीक्षा लेइ तपानिश्राइं चारित्रना भजनारा हूवा। रु० गणपति रु० श्रीपति रु० वीपा रु० जगा प्रमुष नवदीक्षित साधु ६८ युक्ति प्रतिबोधी तपा कीधा। त्यारें अन्य साधु क्रिया उद्धारवा तत्पर थया। सपरिग्रहि जे त्रांबाना पात्रां, त्रपणी, लोट प्रमुष जेहने जांणता तेहनें संघ अने पंक्ति बाहिरनी आलोयणा कहेता। एक भुक्त उपवास, पारणि नीवी छठ अठम, नीवी पारणें गंटीसही प्रमुख तपना कारी भूमंडलें विचरइं। एहवयं समयइं कटुक नामि गृहस्थनी परुपणा हुइ। जे क्रिया शिथिल साधु समुदायमां रहि त चारित्रियानें (९७–२) चारित्र न संभवे। पिण ते इम न कहिवुं। इम हुंति पिण गछनायकनें चारित्र संभवइं—यदागमे—

साले नाम एगे आयरिए एरंडे नाम परिवारे।

एव चउभंगी जांणवी। हवइं कटुक गृहस्थनी उत्पती कहइं छइं—गुर्ज्जरात देशि वडनगरें नागर ज्ञाति वृद्ध शाषाइं टोकर गौत्रि सा० वाणारसी, तेहनी स्त्री हरी, पुत्र कडूओ नामि छइं। पिण ते देव गुरुनो...। पं० हर्ष कीर्तिगुरु मिल्या। तिणी भव्यात्मा जांणी कडुओ बोलाव्यो। यती जांणी नम्यो। गुरु पासे रह्यौ। वृद्ध जांणी कडुओ विशेष भक्ति साचवें। एहवइं गुरु आणा लही शिष्य अम्मदावादइं चोमासें गया। गुरुनी सेवा करतां केतलेक दिनें गुरु मुख थकी कडूओ श्री सिद्धांतनो समझू थयो। सचित्त त्यागी श्रावकनी करणीइं आगलो हूओ। तिवारि गुरु कहइं सा० कडूया तुमे घरे जाओ संसारि थाओ। ते गुरु वचन सांभली कडूओ कहइं, तुम जे हवा...। सा० कडूया ना वचन सांभली योग्य जांणी प्रसन्न पणइं गुरु मुखि वीसइं वर्षे सा० कडूइं चोथु व्रत आदर्यु। (९८-१) श्री पंडितजीइं कह्यु—जे तुम्हे गुरु लोपा न थासो। तिवारइं कडूओ कहइं—पिता माता जो वृद्ध नागर हुइं अनि वणिकनो पुत्र छुं तओ उपगारी गुरुनें नहि लोपुं। तिवारें गुरें सा० कडूयानइं क्षेत्रपालनो वर दीधो। गुरु कहें तुमारो उदय थिरापद्र नगरइं श्रीमालि वृद्ध शाषा ध्रु अवटंकि छइं, अस्मिन् देसि नही छइं। ते माटि तुम्हे तिहां जाओ। सा कडूओ गुरु वांदी आणा लही केतलेक दिनें श्री शंखेश्वर पासनइं नमी अनुक्रमि थिरापद्रइ आव्यो। जिम श्री पंडित श्रीहर्ष कीर्तिइं कहयुं हुतुं, ते तिमज सत्य हूओ। एकदा सा० कडुओ गृहस्थ प्रति उपदेश कहइं—बिहज्जार अनि च्यार युग प्रधान कहइं छइं, पण ते बिहज्जार अनि बि जांणुं, एक एह संदेह। १। पुनः पांचमा आरामां सुसाधु सुचारित्री नही, ए संदेह छइ। २। संप्रति वर्तमान कालि चारित्रिया साधु मुज दृष्टि आवता नथी, एतलें एहनो पिण संदेह। ३ ।इम-गुरु लोपी मिथ्या प्ररूपणा करतो त्रिण थुईइं (९८-२)

Aho ! Shrutgyanam

स्वमत थापतो हूओ । एतलइं गुरु वेष तथा गुरु कथन लोप्युं । तेह थकी कडूयानें शिष्यनें उदय न हुइं । एतली वि० सं० १५६२ वर्ष साधु वेषोत्थापक कडूक गृहस्थ थकी कटुक नाम मति प्रगट हूओ ।

इति कटुक मतोत्पत्ति ।

पुनः एहवइं लुकांना गछ थकी रु० विजयइं विज्जा मति नामि मत प्रवर्ताव्यो । एहवइं पासचंद मति प्रगट हूओ तेहनी उत्पत्ती कहइं छइं ।

पासचंद मत ।

अबुर्दासन्नि हमिरपुरनगरइं लिंव गोत्रिइं प्रा० वृ० सा० पासवीर नांमी अल्पद्रव्यें भारवाहकनी आजीविका करतो रहइ छइं । एकदा हाथि कुठार लेइ पर्वत दिशि वडि पीप्पल वृक्ष चढतां इंधण लेतां भूमि पड्यो । देहो गाढो लागो । पिप्पल वृक्ष हेठि उभो छइं । एहवइं तिहां नागुरी शाषाइं शाला धारक श्री चंद्रकीर्ति सूरी, तेहना शिष्य पं० लक्ष्मीनिवास, तेहना शिष्य एकान्तरि चोविहार उपवास कारक पं० श्री साधुरत्न; तेहनी श्री आबूनी यात्रा करी वाटी उतरी (९९-१) हमीरपूरने मारगि आवता देषी पासवीरें वंदणा कीधी । पं० साधुरत्ने योग्य जांणी धर्म्मोपदेश कह्यो । तेहमां वनस्पति छेद्याना मोटां पाप कह्यां । ते सांभली लघु कर्मि प्रांणी तुरत बूझ्यो । कांणेद्र नगरें वि० सं० १५६५ वर्षे पासवीरने दीक्षा देइ रु० पार्श्वचंद्र नाम दीधुं । तिहां थकी गुरु १, शिष्य २, नागोर नगरें आवी शालाइं रह्या । एकदा ओरडइं जीर्ण यंत्रनी मुद्रा दीधी देषी रु० पासचंद्र गुरु श्री साधुरत्ननइं—इणि ओरडइं किस्युं छइं । कदहि उघाडता नथी । तिवारइं गुरू कहइं आगि महा बारावर्षि दुर्भिक्ष हुओ, ते समयइं साधु शिथलचारि जांणि तेहना पुस्तक ज्ञान आशातना देखि, तिहां वृद्ध गितार्थे मिली ए ओरडामां ज्ञाननां डाबा भरी यंत्र कीधो छइं । ते थकी आपणे कास्यें कामि उघाडवुं नहीं ! वृद्ध वचन कुण लोपीइं । एहवओ वाक्य गुरु श्री साधुरत्ननुं सांभली शिष्य रु० पासचंद्र मौन हुइ रह्यो । एक दिन गुरु नगरमां कोइक (९९-२) कार्यार्थि गया । एतले पासचंद्री गुरु आज्ञा विगर ते ओरडो उघाडी जोयओ । पुस्तक जिम तिम मुक्यां दीठा । एहवे गुरु आव्या एतलि उतावलिमां आगले पड्या ते अढी पत्र लेइ रजोहरणि घालि यत्ने राख्या । पछी गुरुनें किमाड उघाड्यो । गुरु कहइं एवडी देर क्युं हुई । शिष्य कहइं इमहिज । पछी ते अढी पत्र वांची क्षेत्रपालनो आम्नाय जांणी एकांति ठिकांणे साधन विधि कीधो । एतलइं कालो अनि गोरओ बिहुं क्षेत्रपाल आवी वर दीधो । अनुक्रमि वि० सं० १५७४ वर्षे रु० पासचंद्रे वीरदत्त वर साहज्य थकी पासचंद्र नामि मति उत्पन्नः ।

ते मांहि थकी श्री पासचंद्र शिष्य रु० ब्रह्म नामइं, तेह थकी अणहिल्ल पटनि वि० सं० १५७८ वर्षी ब्रह्मा मति गछ प्रगट हुओ । एतलइं जे जिहां थकी फांटो हुओ, तिणइं तिहां थकी पोताना मूल गुरुनी सामाचारी लोपिने सूत्र विरुद्ध सामाचारी प्रवर्तावी । अने सूत्रोक्त जे पर्व ते पुनः अन्यथा कीधा । पोतानि मति भेदी करी नवा नवा गछना नांम थाप्या । (१००-१) तिवारि ए मति कहीइं ।

इति पासचंद्र मतोत्पति ।

हवइं श्री हेम विमलनो वि० सं० १५२२ वर्षे जन्मः । सं० १५३८ वर्षि दीक्षा, हेमधर्म्म नाम दीधुं । सं. १५५५ वर्षि गुर्ज्जराति वडियार खंडि पंचासरा नगरइं श्रीमाली वृ० सं० पातइं सूरी पदोत्सव कीधो । सं० १५५६ वर्षे क्रिया उद्धरी । सं० १५६८ वर्षे स्वर्ग हुओ ।

५ ६तत्पट्टे श्री आणंद विमल सूरी ।

(२) श्री सोभाग्य हर्ष सूरी ।

श्री आणंद विमलसूरीनो वि० सं० १५४७ वर्षे जन्म । सं० १५५२ वर्षे व्रत, अमृत मेरु नाम दीधो । सं० १५७० वर्षे कर्प्पट वाणिज्य नगरइं आ० पद हुओ । सं० १५८२ वर्षे देसूरी नगरइं गछ नायक पद हुओ । एकदा गुरु श्री सौभाग्य हर्ष सूरीनइं कहइं । आपणे बिहुं क्रिया उद्धरीइं । तिवारी श्री सोभग्य हर्ष सूरी कहें आपणि शाला धारक बिरुद गुरुनो छइं ।

Aho ! Shrutgyanam

तिवारइं श्री आणंद विमल सूरी कहे .... बावन्न साधुस्युं क्रिया उद्धरि सपरिग्रही जाणता ते साधुने गछ बाहिर काडता, भव्य जीवनइं धर्मोपदेश देइ तारता, (१००–२) पुनः जेसलमेरु देसि जल दुर्लभ जांणि श्री सोमप्रभ सूरीइं विहार निषेध्यो छइं । पिण लुंकामत व्यापितुं जांणी उ० श्री विद्यासागरनइं विहारनी आज्ञा देता हुया । तथा जेसलमेर खरतर, मेवाति बिजामति, मोरबीइ लुंका, वीरमगामि पासचंद्र, इत्यादि नगरि श्री सूरीइं छठ तप्पनइं पारणि रक्षा तक्रनइं करवइं, षट् विगय त्यागी, महा तपस्वी जांणी घणा जीव श्री जीन पूजानी सदहणा आणी । पुनः श्री सूरीना उपदेश थकी ओ० वृ० बाफणा गोत्रे दो० कर्मि चितोडगढ वास्तव्य सं. १५८७ वर्षे श्री सिद्धाचलि सोलमो उद्धार कराव्यो। श्री सूरीइं अजयामेरु, सांगानयर, जेसलमेरे, मंडोवेरे, नागोरि, नाडलाईइं, साद्डीइं, सीरोही नगरे, पाटणि, महिसाणें प्रमुख अनेक नगरें घणा जिनबिंब प्रतिष्ठ्या । कलियुगि श्रीसूरि युगप्रधानोपमः सम जांणिवा । यतःउक्तं-वदन्ति तस्मैति जनो निरीक्ष्य निरीहितज्ञानतपःक्रियाढ्यं। अवातरत्सर्वगुणः किमेष श्रीमज्जगश्चंद्रगुरु र्द्वितीयः ॥

श्री सूरी छठ, अठम, (१०१–१) चउथ, विंशतिस्थानक, तपना कारक, षट काय जीव यत्नावंत, समता समुद्र, जन्म पर्यंत अतिचार आलोइ । पांचदिवस अणसणइं अहिम्मदावाद नगरइं निशा पाटकि वि. सं. १५९६ वर्षे श्री आणंद विमल सूरी स्वर्ग हुओ ।

अनि श्री सौभाग्य हर्ष सूरी थकी गुर्जराति विजापुर नगरइं वि. सं. १५८२ वर्षे लघुशाली नामें गछ भिन्न हुओ । एहवे समइ श्री सिद्धाचलि असुरनो उपद्रव हुओ ते कहइ छइं ।

गुर्जर देशि अणहिल पत्तन पासि कुणगिरि नगरी श्रीमाली लघुशाषा अडालजा गोत्रि सो. भाणसी रहे छे। तेहनी स्त्री कोडाइ नामि अत्यंत रूप सुंदराकारे देषी चिकथो श्री शेरशाह आसक हूओ । ते स्त्रीनइं दरबार राखी, तेहनी मोहनीइं क्षण वेगलो न रहि । एकदा कोडाइ पवित्र पणि स्मरणि स्मरइं छइं, एतलइं शेरशाह काम विहालि आव्यो । कोडाइं कहई ' तसबी पढति हूं।' शेरशाह कहइं ' किसके नामकी । ' कोडाइ कहइं ' मेरे पीरके नामकी । ' ते सांभली शेरशाह कहइं ' उनकी जमी अस्थल किहां है । '. कोडाइ कहइं ' सोरठ देशि (१०१–२) है शत्रुंजय पाहाडइं रहइं छइं । ' तिवारै स्त्रीनो प्रेर्यो शेरशाह शैन्य लेइ देश द्रव्य उवराया नीकल्यो।अनुक्रमिं पालिताणि नगरी आव्यो । सैन्य सर्व तिहां उतर्यो । तिणहिज रात्रि शेरशाह १, कोडाइ २ अनि चमरनो विजनार विलाति फकीर आंगारशाह नामि ३, ए त्रिहुं लस्कर थकी छांना पाहाडे चढ्या । श्री रुषभ दर्शन कोडाइने हुओ । कोडाइ कहई' ए बेठे सो मेरे पीर । ' एतलइं चिकथइं सुवर्ण मुहरनो ढिग जिनने आगि कीधो । ते देखी महाम्लेछ अंगारस्याह द्वेषी हुओ, मनि विचारई जे-'ओरतकें लीइं चिकथेने काफिराणा कीया । पूतलेंकु पाउं लगा । ' एतलइं चिकथो अनि कोडाई ए बिहुं दर्शन करी उतावलि पाछा निकल्या । अंगारशाह कपट थकी पछवाडें अंतरइ रह्यौ । मूढिं श्री मूलनायक उपरि गुर्ज शस्त्र नांखी आसातना कीधी । तिवारि तीर्थ रक्षक देव कोप्या । म्लेछ नाठो। हिंदु जक्ष जांणी त्रासतां चिहु दिशि भयंकर देखि सुहाली पुग थारिइं थकी षसी देवल बाहिरइं अथडाइं (१०२–१) हेठो भूमी पड्यौ, तत्काल निधन हुओ । प्रत्यक्ष पीर हुइं, हिन्दु यक्षनइं कहइं, असूरनो उपद्रव्य जिवारि किवारइं श्री क्षेत्रि हुइं तिवारइं मुझ ठिकांणि धूप, दीप, अबीर, अक्षत, यव, तथा युगंधरी, पुष्प मरूओ, सवा वहित रातो वस्त्र, गुलीरंगनो नीलो वस्त्र, बांधण चंदुओ, तथा ध्वजा सवा वहितनी, सवासेर गुड वांटि देवो, तिहां हुं महा असुरांणइ साहय्यकारी छुं । ए तीर्थनो उपद्रव टालवा समर्थ छुं । तुम्ह सकल देवनो भक्ति छुं । तिणि तीर्थ रक्षक देवि असुरांण जांणी स्थानीक किधुं । केतलेंक दीनें चिकथो अनि कोडाइ पाटणि आव्या । एतलिं वि. सं. १५९५ वर्षे श्री सिद्धाचलि असुरनो उपद्रव्य हुओ, तिवारइं सकल संघ श्वेत.बराचार्य एकठा मिली ए तीर्थि दुग्ध धाराइं जैनमतना आम्नायना प्रयोग

Aho ! Shrutgyanam

करवइं थकी श्री गिरो थकी असुर छाया निवारण कीधी।

५७ तत्पट्टे श्री विजयदान सूरी ।

तेह गुर्जरखंडि राओदेशि जामला नगरइं ओ० वृ० करमयागोत्रि सा० जगमाल (१०२-२) स्त्री सुर्याई पूत्र । तेहनो वि० सं० १५५३ वर्षे जन्म । वि० सं० १५६२ वर्षे व्रत, उदयधर्म्म नाम दीधुं । वि० सं० १५८७ श्री सीरोही नगरइं गछ नायक पद हूओ । श्री सूरी अप्रमत्तपणि भव्य जीवनइं धर्म्मोपदेश देता भूमंडलि विहार करता संप्रति श्री तपागछि सूर्योपम सुमता समुद्रे वैराग्य निधि आगिम ४५ ना कोश खंबायति, गंधारि, पाटणि, सिद्धपुरी, बिजापुरे, देवकिपाटणि, नागौरी. प्रमुष नगरें गीतार्थने पासि सोवाव्या । खट् द्रव्यना विगयना अभिग्रहधारि श्री मुगसीपासनइं दर्शनि आव्या । मांडवगढ चौमासी रही पुनः गुजराति-गोधरा नगरें रही उमरठ नगरें आव्या । तिहां उपकेश गछि विवंदणिक बिरुद धारक श्री सिद्ध सूरी वंशि आ० श्री जीवकलसें---लोके केकोजी भट्टारक एहवुं नाम जाणवुं---वि० सं० १५८४ वर्षे श्री विजयदान सूरीने वंद्या । सकल सच्चित त्यागी एकांतर उपवास चुविहार तपना कारक यति धर्म्मि आगला योग्य जांणी श्री विजय दांन सुरीइं अणाहिल्ल पाटणि माणिकार (१०३-१) पाटकी वि० सं० १५११ वर्षे गछ नायक पद देई स्वपाटि श्री राजविजय सूरी नाम दीधुं । श्री गुरु शिष्ययुक्त हिंदुआणि देशी विहार करता भरडुया नगरइं आव्या । एहवइं कोइक रूचि शाखाना गीतार्थ प्रति श्री भीन्नमाल प्रमुष क्षेत्रनइं बदलवइ जांणी वि० सं० १६१३ वर्षि मोरवी नगरइं श्री राजविजय सूरीनो गच्छ भिन्न हुओ । सं० १६१९ वर्षे उ० श्री धर्म्म सागरनइं गछ बाहीर कीधो । कंदकुदाल नामा ग्रंथ जलसरण कीधो । तेहनो लिखावबो, विस्तार करवो, तेहनो मिथ्या दुक्कड दीधो । एकदा सुरीनइं स्वप्नइ आवी यक्ष श्री माणिभद्र कहइं---तुम्हारी विजयशाषाइं पाट थापना कीजो । अपर शाषा तुम्ह पाटि आज थकी नहीं छइं । पाटि नाम थाप्यो तिवारि महारा नाम माहीलो एक अक्षर लेइ तेहनो नाम देज्यो । हुं तुम गछि कुशलपणु करीस । विजय शाषाइं विजयवंत गछ पाट हुस्यइं । श्रीविजयदानसूरी पिहिला त्रीजी पेढीइं शाषा फरती । श्रीसूरीइं हाडोति देशि, (१०३-२) ढुंढाड देशि, कछ देशि, मालव देशे, महिशाणा प्रमुख नगरइं अनेक जिन बिंब थाप्या । एहवइं अणहिल पत्तन आसनी वडली गामि वि० सं० १६२२ वर्षे श्री विजयदानसूरी स्वर्ग हुओ ।

५८ तत्पटे श्रीहीरविजय सूरी ।

तेहनो गुज्जराति पालणपुर नगरें ओ० खमसरा गोत्रि सा० कुयरा स्त्रीनाथी कुक्षै वि० सं० १५८३ वर्षे जन्म । पूत्र हीराचंद नाम । एकदा पाटणि बहिनने मिलवा आव्यो, तिहां खडाकोटडीइं श्रीविजयदान सूरी गुरुनो उपदेश सांभळी वि० सं० १५९६ वर्षे दीक्षा लीधी । हीरहर्ष नाम दीधुं । सं० १६१७ वर्षे नाडुलाइ नगरें श्रीरुषभ प्रासादि पं० पद हूओ । १६१८ वर्षे नाडउल नगरें श्रीनेमीनाथ प्रासादे पाठक पद हुओ । सं० १६२० वर्षे सीरोही नगरइं श्रीरुषभप्रासादि गछ नायक पद हुओ । तिणहीज वर्षे श्रीअजितनाथ बिंब थाप्यो । तिहां थकी श्रीसुरी नंदीय, लोटांणक, ब्राह्मणवाटक, अजारी, आबू, ईडरगढ, पोसीनापास, (१०४-१)विजापुर, प्रमुषइं विहार करता अहिम्मदाबादि शिकंदरपुरइं चोमासी तप करी रह्या । एहवे आगरा नगरइं श्रीपर्व आवे थकी ओ० वृ० दो० कृष्णचंद्र स्त्री खीमाइ दोढ मासि तप कीधो छइं । महा आडंबरी देवदर्शनी जाइं छइं । ते देखी श्रीअकबर खीमांनइ तेडो कहइं ‘ केते दीनके रोजे धरे हइं । ’ तिवारे खीमा कहइं ‘ दोढ मासके रोजे लीये हइ । ’ शाह कहे ‘ तेरे कुंण पीर ’ खीमा कहइं ‘ मेरा पीर सो हीर गुजराति रहइं । ’ एहवि कीर्ति सांभली पातसाहइं फुरमांन लिखी पं० भाणचंद्रनइं अहमदाबादि तेडवानें श्रीसूरीपासे मोकल्या । एटले श्रीसूरि शिकंदरपुरथकी चोमासइं वीतइं श्रीशंखेश्वर पास नमी वांदी, रायधन्यपुरइं आव्या । तिवारि पं० भाणचंद्रे पिण तिहां आवी श्रीसूरीनें सकल वात आगरानी कही

Aho ! Shrutgyanam

श्रीसूरी प्रसन्न हुया । पं० माणचंद्रने पाठक पद देई लाहोरनी आज्ञा दीधी । एतलि श्री पाठकनइं तपगच्छ उद्योतकारक जांणि वाचक (१०४–२) प्रमुष एह आशिर्वाद वचन कह छइं । दुहा:—

सूर उदय दिनकर समइं
चंद्रउदय निशि होत ।
दोनु याके नामपर
सो गुरु सदा उद्योत ॥ १ ॥

एहवइं श्रीवड गछि चतुर्दशिक पक्षे पिप्पलिशाषाइं श्रीमालदेवइं श्रीहारीज नगरें वि० सं० १६३५ वर्षे श्रीहीरविजय सूरीनें वंद्या । श्रीसूरीइं पिण पोताना गोत्री जांणि आदर देइ पासइं राष्या । अनुक्रमइं श्रीसूरीइं मालदेव सहित दीली नगरइं पोहता । श्रीसूरीनइं पातिशाह कहें—बेठो । तब हीर कहे जीवत दिया बिछात उद्धाइ देषइतो पा० मेवा धर्‍या हे तिणेंसु कीडी आइ (?) प्रथम दिन एता जीव हुंओ । बिजे दीन पातसाहीनो बहुमान देषी बिछात नीचे षाडकर बकरी एक सगर्भा मांहि घाली दरीमाना कीयो । पातसाह कहइं—बिजेहीर बेठो । तदा हीर कहे इस जमींमें जीव हइं । सा० कहइं केता जीव । तदि गुरु कहें—तीन जीव हें । पातसाह खोलकर देषी तो १ बकरी २ बच्चा हुआ । सो देष पातसाह कहें (१०५–१) ए दूसरा षूदा हइं, सच्चे पीर हो, तुम्ह अम्हारे गुरु होइसो । पातसाहनो सन्मान देषी म्लेछ मुल्लांणीया द्वेष धरी कहइं अयसे सचे फकीर हइं तो अल्लाकी बंदगीसें हजुर कछुं करामत देषावइं । ते सांभली एक पातसाह मुल्लाणीया सहित श्रीसूरीनें सभाइं आदर देइं कहइं आप अपणी करामत देखाओ तिवारि पिपीलिका १ अजा भूमीगृह २ बिछात ठिकाणें कहे वली रजहरण १ टोपी २ वली अनेक वीद्या करामत देखी पा० तूटो थको कहि—तुम्ह वडे दर्शनी हो । इम कही सकलात्मीय देशिं पर्व आवीइं आठ दिन जलचर थलचर तीर्यंच जीव प्रमूषनी आमारी पलावी, प्रवर्तावी । पुनः श्रीसिद्धाचले पातसाह मनुष्य मूंडकादि द्रव्य लेता तेहनी माफी कीवी । अकबराग्रहि सं० १६३६ वर्षे श्रीचिंतामणी पास प्रतिष्ठया । पुनः श्रीरावणपास जुहारी दिली नगर चौमासुं रही सं० १६३७ वर्षे अकबर भूगल वंदावी आगरें मेरुते आवी जालंधरादिक (१०५–२) नगरइं चौमासो कीधो । श्रीसूरीनी कीर्त्ति सांभली याचक प्रमूष श्रीसूरीनें ओपम रुप (?) बीरुदावइ । दूहो—

हीर वइरागर नीपजइं खीमसरारी खांण ।
पातसाह प्रतिबोधिओ अकबर मानी आंण ॥१॥

श्रीसूरी अकबरदत्त जगद्गुरु बिरुद धारता, भिनमाल हुइं रायधनपुर नगरइं आव्या । तिहां स्वपाटि श्रीविजयसेन सूरी नाम प्रतिष्ठयो । आ० पद लही गुरु आण लही श्रीविजयसेन सूरी पाटणि सीरोहीइं विहार कीधो । अने श्रीगुरु अहिमदाबादि वर्जारपूर नगरइं आव्या । तिहांलुका गछि रु० मेघजी सतावीश शिष्यइं श्री सूरी प्रतिबंद्या । सूरीइं पिण तेहनी स्व शिष्य थापि कुशल, वर्द्धन, आनंद, सोभाग्य, ए च्यार शाषाइं नाम दीधा । श्री गुरु अढार शाखाइं विस्तारे कही विचरता जंगम कल्पवृक्ष समान सोभइं । अथ अष्टादश शाषा नाम—श्रीमद विजय १, विमल २, सागर ३, चंद्र ४, हर्ष ५, सोभाग्य ६, सुंदर ७, रत्न ८, सुधर्म्म ९, हंस १०, आनंद ११, वर्द्धन १२, सोम १३, रुचि १४, (१०६-१) सार; १५, राज १६, कुशल १७; उदय १८, निरमल नाम । श्री सुरी खंबायति हुइं गंधार बिंदिरइं आव्या । तिहां गुरु उपदेश थकी सा० रामजीइं वि० सं० १६४९ वर्षे श्री वीर चउमुख प्रासार निपजाव्यो । चौमासि उतर्ये पतनइं आव्या । एतलइं श्री सूरीइं तिहां बारबोल प्रगट कीधा । तिहां थकी श्री सूरी श्री सिद्धाचालि आव्या । एतलइं तिहां मेवाड, वागड, मरुधर, ढुंढाड, दक्षिण, गुजरात, मालव, सोरठ, देवका पतन, प्रमुष सकल द्वि लक्ष मनुष्य वृंद सहित वि० सं० १६५० वर्षे महा महोत्सवि श्री सूरीइं श्री प्रथम तीर्थंकरनो दर्शन कीधो । तिहां घणा याचकने दान हुया । स्नात्र, अष्टभेदी, सत्तरभेदी, अष्टोतरी, साधर्मिक वात्सल

व ला जाणीवा । किंबहुना ! श्री सूरी उ० सोमविजय, उ० विमलहर्ष, उ० कल्याण विजय पांचसें विबुध युक्त पुनः श्री सकल संघ युक्त श्री रैवताचलि श्री नेमी दर्शन कीधो। तत्रियासि संघाग्रही जीर्णगढि चउमासि(१०६-२) रह्या । अनुक्रमि श्री सूरी उन्ना नगरि आव्या । तिहां द्विप वास्तव्य ओ० वृ० पासाहस्तें (?) स्फाटिक बिंब श्री शान्ति नाथनो प्रतिष्ठाव्यो । तिहां संघाग्रही चउमासी रह्या । एहवइं श्री गुरु तेजस्वी यशस्वी हुतइं उ० श्री सोमविजय ग०, उ० श्री विमल हर्ष ग० गछ भलामण कीधी । श्री विजयसेन सूरीनें संघ भलामणि कहीरावी । पं० श्री गुणहर्ष, पं० श्री कुशलराज ग० प्रमुष गीतार्थ श्री सूरीनें उत्तराध्ययन, नंदीसूत्र, चउसरण संभलावइं । अषंड निश्चल शुभ ध्यानइं नमस्कार समरता, श्री मत्तपागच्छाधीश्वर, शाह श्री अकबर प्रतिबोधक, तत्प्रदत्त जगद्गुरु बिरुद धारक, अनेक जल, स्थल, तिर्यंच जंतु जाति अभय अमारी पटहाभिवादनोपदेश दान प्रवृत्यतिलाभ ग्राहक निरतिचार अणशण आराधक सर्व आयु वर्ष ६९ अनि मास त्रिक संपूर्णि भट्टारक श्रीमच्छ्री हीर विजय सूरी वि० सं० १६५२ वर्षि भा० सीतकादशी दिनें सूर प्रतिबोधी स्वर्ग पहुता । ते माटे श्री सूरीनइं नाम स्मरणी कुशल श्रेणी हूइं ।। यदुक्तं

श्री अकबरभूपालं कृपालुं भूशिरोमणिम् ।
विदधे येन तस्मै स्तात् श्री हीरगुरवे नमः ।। १ ।।

५९ तत्पट्टे श्री विजयसेन सूरी ।

तेहनो वि० सं० १६०४ वर्षे ओ० वृ० इणवल गौत्रि सा...कुक्षि जन्म । सं० १६१३ वर्षे व्रत । सं० १६२६ वर्षे पं० पद । वि० सं० १६४१ वर्षे गछ नायक पद हुओ । ते श्रीसूरीइं अहिम्मदावादी जिहांगिरपुर नगरें पातीसाह श्री जिहांगीरनी सभाइं लाहोरना अपर मति शास्त्रवादि जीत्या । तिवारइं जिहांगीर साही घणइं आदरथकी श्रीगुरुनें ' सवाइ जगतगुरु ' बिरुद दीधो । एहवइं सं० १६७१ वर्षे अहिम्मदावादी नगरइं हाजापाटाणि चतुर विधि संघ शाक्षि उ० श्रीधर्म्म सागरइं पांच बोलनो मिथ्या दुःकृत दीधो । पुनः श्री सूरीनो आज्ञा लही समस्त गीतार्थ मिलि सर्वज्ञ शतक १ धर्म्म तत्व विचार २, प्रवचन परीक्षा ३, इरीयावही कुलक ४, प्रमुष ग्रंथ...ज्ञानकोशी अहिम्मदावादि खंभायति, पाटाणि, गंधारी, प्रमुष नगरइं थाप्या । वि० सं० १६६९ पत्तनि उ० श्री सोमविजयने सागर आश्री बांत सूरीनें संघातइं विरोध हुओ । वि० सं० १६७१ वर्षे श्री खंभायति पासि नायर गामि श्री विजय सेन सूरी स्वर्ग हुया ।

६० तत्पट्टे श्री विजयतिलक सूरी

तेह गुजरात देशि वीशल नगरइं प्रा. वृ. हलसर गौत्रि सा. देवराज स्त्री जयवंती गृहे सं. १६५१ वर्षे पुत्ररत्न जन्म्यो । वि. सं. १६६२ वर्षे पावइं गढि व्रत, रामविजय नाम । सं. १६६७ वर्षे पं. पद, जिर्णगढि हुओ । सं. १६७३ वर्षे खंभायते गछ नायक हुओ । तेहना अमात्य उ. श्री सोमविजय ग. उ. सिवचंद्र ग. पं. श्री श्री हर्ष, पं. हर्षाणंद, पं. राजविमल, प्रमुष गीतार्थ युक्त श्री मरूधर देशि विचरें । एहवइं वि. सं. १६७३ वर्षे बांतसूरी थकी बांत पक्ष कहिवाणो । ते मांहि थकी वि. सं. १६८६ वर्षे अहिमदावादी उ. श्री धर्म्मसागर तस्य शिष्य पं. लब्धिसागर तस्य शिष्य पं. नेमिसागर, उपाध्याय श्री मुक्तिसागर थकी सागर गछ कहिवाणो (१०८-१) । एहवइं लुंकागछ थकी वि. सं. १६७२ वर्षी ढुंढक मती हुओ । वि. सं. १६७५ (?) वर्षे श्री सीरोही नगरइं श्री विजयतिलक सूरी स्वर्ग हुओ।

६१ तत्पट्टे श्री विजयानंद सूरी ।

मरूधर देशि रोहा नगरें सं० १६४२ वर्षे चायण सा चहूआण गौत्रि सा० श्रीवंत भार्या सिणगारदे पुत्र । तेहनो जन्म...। सा० श्रीवंतइं श्री हीरविजय सूरीना मुख थकी उपदेश सांभली संसारनो स्वरूप असार जांणी दश मनुष्य संघाति व्रत लीधो । तेह देशना नाम-मुष्य पिता सा० श्रीवंत वृद्ध तेहनु नाम रु० श्रीवंत दीधो । हवी च्यार पुत्रना नाम, वृद्ध पुत्र ते धारो तेहनुं नांव धर्म्म विजय, २ बीजो पुत्र अजो तेहनुं नांम अमृतविजय ३, त्रीजा पुत्र भवानुं नांम मेरुविजय ४, लघु पुत्र वर्ष ९,

नो कह्यो नांम तेहनुं नांम कमलविजय ५, ए पांच पिता सहित पुत्र ते । पुनः सा० श्रीवंतनो बनेवी सं० सादूल वृद्ध छै, माटे ह० सादूल नांम दीधो ६, तस्य पुत्र स० भक्ति तेहनो नांम भक्तिविजय ७, सा० श्री वंतनी (१०८-२) बहिन रंगादे तेहनो नाम रंगश्री दीधो ८, सा० श्रीवंतनी पत्नी सिणगारदे तेहनो नांम लाभश्री दीधो ९, सा० श्रीवंतनी पूत्री सहिजां तेहनो नांम सहीज श्री दीधो १० । एवं दश संबंधी साथी च्यारसे अनि सत्तावन मण घृति ज्ञाति, गोत्रि, मित्र, साधर्मिक प्रमुख सप्तक्षेत्र पंच जीर्णोद्धार इत्यादि सुकृति करीने श्रीहीरें स्व नेश्राइं श्री सिरोही नगरइं श्री रुषभ चैत्ये सं० १६५१ वर्ष व्रतई, पहिला कह्या ए नाम दीधा । ते मांहि लघु कमलविजयनें श्री गुरुए समतादिक गुणि योग्य जांणी उ० श्री सोमविजय ग० ने वाचनाइं भलाव्या । अनुक्रमि पुन्योदयि षट् शास्त्रना ज्ञाता हुया । तिवारें श्री विजयसेन सूरीइं अणहिल्ल पत्तनइं श्री पंचासर पास प्रासादे कमलविजयनें पं० पदि कीधा । वि० सं० १६७५ वर्षे श्रीसिरोही नगरइं गछ नायक पद हुओ । प्रा० वृ० पोलिव्या गोत्रि सं० वीरपाल सुत सं० आंबा भाइ सं० मेहाजालि पद महोत्सव कीधो । सकल सहिर पुनः साधर्मिक संतोषी मनुष्यि मनुष्यि पीरोजी एक एक दीधी । श्री सूरीनें उपदेशि रंजित थको श्री सिद्धाचल १ (१०९-१) गिरिनार २, तारणगीरी ३, अर्बुदगीरी ४, घोघा नव खंड पास ५, शंखेश्वर पास ७, बंभणवाड ६, एवं सप्त तीर्थनो संघाधिपति हुओ । ते संघनो वर्णन ।

कवितः—

सत्तर सहस्र गुजरात सुभट मिल सोरठ सारी ।
हांटा बद्ध हज्जार वडके वडके व्यापारी । खंभायत
निजखेत सहिर घोघा सारीखा । हीला झाला
हलवद पांति कीधा पारिखा । पूरब उत्तर दक्षिण पश्चिम
कृपाण कोइ न सकि कालि । ताहरिं संघ वीरपाल
तणा मेहाजल दुनीआं मली । १ ।

श्री सीरोहीइं, नाडलाइं, भमराणी, चचरडी, आबु प्रमुखि एकसठि प्रासादि जीर्णोद्धार कीधो । वि० सं० १६८२ वर्षे श्री शांतीलपुर नगरें श्री संघाग्रही विजयदेव सूरीने श्री विजयानंद सूरीनें गछ मेल हुओ । पुनः सं० १६८५ वर्षे अणहिल्लपटनि श्री विजयानंद सूरी थकी कपट करीनें श्री विजयदेव सूरी गछ भेद करी सागरनें गछ माहि लेइने देवसूरी जुदा हुया । २ गछ हुया अणहिल्ल पत्तनि । श्री विजयानंद सूरीयें संखेडइं नगरइं श्री आसापुरी प्रासाद दत्त वर थकि(११०-२) सं० १६९१ वर्षे पंचांगुलीनो उपद्रव देवसूरीइं कीधो । ते श्री सूरीइं आसपुरी देव्याइं उपद्रव टाल्यो । जय हुओ। श्री गुरु गछि मंगल श्रेणि हुइ । केतलेक दिने मुगसी पासनी यात्रा कीधी । श्री गुरुने अंतरीक पासनी यात्रानो हर्ष हूओ । केतलेक वर्षे दक्षिणे बुहरानिपुर नगरें चोमासइं रह्या । खानदेशी कुंकणे विचरतां सूरति चोमासी रह्या । अनुक्रमि कान्हमि विचरता खभायति तत् शाषा श्री अकबरपुर नगरें श्री सूरी संघाग्रही चउमासि रह्या । तिहां श्रीमालि वृ० शाषाइं परिष वजीयाना आग्रह थकी श्री विजयराज सूरीने भट्टारकपद दीधो । पा० वजीयायें पदोत्सव कीधो । श्री गुरुनी आज्ञा लही श्री विजयराज सूरीइं दोसी मनीयानें आग्रही अहमिदाबाद नगरें विहार कीधो । एकदा श्री गुरु मुखि पा० वजीओ सभा समक्ष धर्म्मोपदेश समाधि पणिं सांभलि छइं । एहवें वाणोतरइं आवी वधामणी दीधी जे लोहना गंजते अधिकरणे भर्या जिहाज समुद्रि आव्या । वाणोतर कहे शेठजी लाभ बहोत (११०-१) छै । एतले श्री गुरुइं खांडा, कुसि, कुदाला, छरी, तेहना शास्त्रे पाप देखाडया । श्री गुरुनइं वचनइं रंजित थको घणा जीवनइं असमाधिनाकारक एह लोहना गंजनइं समुद्रमांहि जल सरणि कीधा । गुरु मुखिं एहनी आलोयाणि लीधी । जो तेहनइं समुद्र मांहि.........जहां लगइं चिरंजीवी रहुं आयु पर्य्यंत जण जण दीठ प्रवालानी जपमालीका देवी पूर्ण्यार्थि । पुनः श्री सूरीने उपदेशि समुद्रे जलचर जीवनी घणी यत्ना कीधी । श्री गुरुनइं एहवा परोपकारी देषी

Aho ! Shrutgyanam

प्रथम गुणवाणीया प्रमुष ए आशिर्वचन कहे छइं ।

श्रीमज्जैन प्रवचन रहस्य प्रकाशिवचन गुण ।
श्री विजयानंद सूरीर्जयतु चिरं संघहितकर्ता ।१।

एहवइं आशापुरी दत्तवर थकी स्व आयु नजीक जांणी कर्म्म रोग टालवा हेति धर्म्मरुप ओषध धैर्य भरी करता हुया । गछनी भलामणी उ० श्री हीरचंद्र ग० उ० श्री वीजयराज ग० ने दीधी । संघनी हित शिक्षा श्री आचार्यनें कहावी । श्री गुरुनें उ० श्री कुशलवर्धन, उ० श्री देवविमल ग० प्रमुख गितार्थ उत्तराध्ययन (११०-२) चउसरणि निझामणि चउद पूर्वनो सार नमस्कार करता सवी आयु ६९ वर्ष संपूर्णि दिन ३ अणसण आराधी सं० १७११ वर्षे आसाढ कृष्ण प्रतीपदइं श्री अकबरपुर नगरइं बालपणि व्रतधारक जल थल चर तिर्यच जीव रक्षाकारक युग पवर सम बिरुद ग्राहक श्री गुरु हीरवचनाराधक सूरी श्री विजयानंदनो स्वर्ग हुओ । यथोक्तः—

शुद्ध प्रागवाद् वंशाभ्र प्रभासनदिवाकरः ।
दद्यादानंदमानंदः सद्गुरुः सततोदयः ।१।

६२ तत्पट्टे श्री विजयराज सूरी ।

तेहनो गुज्जर देशि कडी नगरें श्रीमाली वृ० शाषाइं गोत्रि मणिकार अवटंके सा० खीमचंद तद्गृहिनी गमतादे पुत्र सं० १६७९ वर्षि जन्म, नें नांम कुवरजी । सं० १६८९ वर्षि वजीर पुरइं व्रत, नाम कुशलविजय । सं० १७०१ वर्षे चांपानेर नगरइं पंडित पद हुओ । सं० १७०४ वर्षे श्री सिरोही नगरें आचार्य पद हुओ । श्रीमाली बृद्धशाषा पा० वजियइं पाट महोत्सव कीधो । प्रा० सा० राउते पदोत्सव कीधो । सं० १७०६ वर्षे श्री खंभायतें (१११–१) भट्टारक पद हुओ । श्री सूरीनइं उपदेशि श्री अहिम्मदावाद नगरें वालेला गोत्री चांपानेरी अवटंकि श्रीमाली वृ० शाखा दो० मनीया सुत दोसी शांतिदाशि दुर्भिक्षना योग थकी घणा प्राणी सीदाता जाणी सं० १७२० वर्षे दुर्बल रंक संसारीनें मास १९ पर्यंत वस्त्र अन्न घृत गुड खांड शरकरा धातुपात्र गृह नानाविधि ओषध दान शालाइं आपवइं करी अभयदान आधारपणें हूया । यथोक्तः

काव्यः—

व्योम युग्म मिताब्द वाह शशधर प्रोज्जृंभमाणप्रथं
नानादेश दरीद्र दीन जनतान्नादि प्रदानायुधैः ।
सत्रागाररणांगणे निहतवान् दुर्भिक्ष विश्वाद्विषं
हाजापाटकमंडनः स जयति श्रीशांतिदासो भटः ।१।

अथ कवितः—

गयो महा निर्मलो चैत्र धुंधलो दीठो......
भादरवे न मीजवी आसुसइं मुइं मेहली आसा ।
चाल्या महिना च्यार मुइ नर वहोत हूआ निरासा ।
विपरीत काल बीसोतरो प्राणिमात्र पोषण भरण
शांतिदास मनीया सुत तसु कर्वी आया तो शरण।।१।।

अर्बुद उपरि स० १७२५ वर्षे स्वनांमें श्री शांतिनाथनो (१११-२) प्रासाद नापजाव्यो । पुनः श्री हमीराचल, तारणगिरि, आरासणि, नंदीय, राणकपुर, संखेश्वर, भीलडीक, एवं सत तीर्थइं जीर्णोद्धार कीधो । पुनः स्फाटिक श्री शांतिनाथ प्रमुख बिंब २१ थाप्या । सं० १७४२ वर्षि श्री विजयराज सूरी स्वर्ग हुआ ।

६३ तत्पट्टे श्री विजयमान सूरी ।

तेहनो दक्षिण देशि बुहरानपुर नगरें प्रा० वृ० दो० वाघजी श्री स्त्रीं वीरां पुत्र सं० १७०७ वर्षे जन्म । सं० १७१७ वर्षे मालपुरे व्रत । सं० १७३६ वर्षे श्री सीरोही नगरइं सा० धर्म्मसी धनराजि आचार्य पदनो उछव कीधो । सं० १७४२ वर्षे नाडलाइ नगरें गछ नायक पद हुओ । एहवइं अणहिल्ल पाटण पासें संडेर नगरइं सं० १७४९ वर्षे पं० नयविमल थकी संवीज्ञ मत हूओ। सं० १७७१ वर्षे श्री साणंद नगरें श्री विजयमान सूरी स्वर्ग हुआ ।

६४ तत्पट्टे श्री विजयऋद्धि सूरी ।

वृद्ध मरुधर देशि भेटाहला नगरें श्री० वृ०(११२-१) लिंब गोत्रि सा० जसवंत स्त्री यसोदा तेहनो पुत्र सं० १७२७ वर्षे जन्म । सं० १७४२ वर्षे पिता सा जसवंत पुत्र सहित श्री रुकपुरें दीक्षा । सं. १७६६ वर्षे

श्री सीरोही नगरें आचार्य पद हूओ, सा० हरराज खेम-करणइं पदोत्सव कीधो । सं. १७७१ वर्षे गछनायक पद श्री साणंद नगरें हुओ । महेता देवचंद महेता मदन तिणे पाट महोत्सव कीधो । सं. १८०६ वर्षे श्री सूरति बंदेर स्वर्ग हुओ ।

अथ आसीर्वाद कही छेः—

जयंतु गुरवो जैनास्तीर्थ क्षेत्र शिष्यसंतति ।
येषां नाम्नापि जायंते रसना सफला सतां ।। १ ।

संसारवांछां य तस्य भूयसीं
जग्राह दीक्षां शिवभूतिदां वरां ।
ज्ञानामृतापूरीत मानसः सन्
नित्यं पुनातु प्रतिवासरं गुरुः ।। २ ।।
पट्टावलीयं रचिता सुयत्नैः
शृणोति यो मंजुल भावभक्त्या ।
तस्यालये चिंतित कामसिद्धिः
श्री कल्पवल्लीव फलानि जन्यात् ।। ३ ।।

इति श्री सुविहित तपागछ पट्टधर नाम्नी
श्री वीर वंशावली समाप्तः ।।

।। संवत् १९६२ वर्षे कारतक वदी ७ ।।

Aho ! Shrutgyanam

Aho ! Shrutgyanam

विषय सूचि।

१ क्षेत्रादेश पट्टक १०५

२ सदयवत्स सावलिंगानी जैनकथा लेख० स्वर्गस्थ सी. डी. दलाल ... १३५

३ डॉ० हर्मन जेकोबीनी जैन सूत्रोनी प्रस्तावना:—अनुवादक—अंबालाल च० शाहा, बी. ए. (कार्यालय तरफथी) ... १४०

ENGLISH.

1 A Comparative Study of **उत्तराध्ययनसूत्र** with Pali Canonical Books: By Prof. P. V. BAPAT, M. A., 7

2 Ratnakara Panchavimshatika: By K. P. Modi, B. A. LL. B. 15

---

१ वीर वंशावलि अथवा तपागच्छ वृद्ध पट्टावलि.

भूल संशोधन.

इस अंकमें जो अंग्रेजी लेख दिया गया है वह प्रुफ-करेक्टरकी गैर हाजरीमें छप जानेके सबबसे उसमें कुछ विशेष भूलें छप गई हैं जिनमेंसे कुछ महत्त्वकी यहांपर सुधार दी जाती हैं। पाठक इनको सुधारकर फिर उस लेखको पढें।

पृष्ठ	कालम	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
९	२	१	their	in their
९	२	७	spoken in	spoken to in
१०	२	१	or the	of the
१०	२	३	enjoying	engag[illegible]
१०	२	४	love	low
११	१	७	forests	of forests
११	१	२६	the	and the
१३	१	१६	menner	manner
१३	१	२८	Nevaras	Nivaranas
१३	१	३१	condition	times
१३	१	३७	ward	word
१३	१	३७	mataphors	metao.
१३	२	१५	**सेलो थधा**	**सेलो यथा**
१४	२	४	canenot	cannot

Aho ! Shrutgyanam

पढिए

महावीर

पढिए

(हिन्दी–गुजराती पाक्षिक पत्र)

संपादक—मुनिराज श्रीजिनविजयजी

महाशय,

क्या आप भगवान् महावीर के अनुयायी हैं? क्या आप महावीर के वीर धर्मका मर्म समझना चाहते हैं? क्या आप अपने आपमें वीरत्वकी भावना जागृत करना पसंद करते हैं? क्या आप जैन समाजकी वर्तमान स्थिति के सच्चे हालके जाननेकी उत्कंठा रखते हैं? और क्या आप जैन समाजमें जो जडता, अकर्मण्यता, विचारहीनता और रूढीकी प्रबलता जमी हुई है उसे उखाड दूर फेंकनेकी मनोभावना रखते हैं?

यदि इन सब प्रश्नोंका उत्तर 'हां' ऐसा देना है तो, आज ही एक कार्ड लिखकर 'महावीर' की ग्राहक श्रेणिमें अपना नाम दर्ज करा दीजिए; और चाहें तो नमूनेके लिए महावीरका एक अंक मुफत मंगा देख लीजिए।

यह पत्र मुनि श्रीजिनविजयजी के संपादकत्वमें गत 'महावीर जयंती' के दिनसे प्रकाशित होने लगा है। प्रत्येक मासकी प्रति प्रतिपदा (एकम) के दिन यह पत्र प्रकाशित होता है। इसमें सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक, ऐतिहासिक और विविध विषयके अच्छे अच्छे विद्वानोंके लिखे हुए उत्तम लेख छपते हैं। "जैन धर्म–परिचय" नामक एक संपादकीय लेखमाला शुरू हुई है जिसमें जैन समाज, इतिहास, साहित्य और तत्त्वज्ञानकी सरल और सुबोध रीतीसे प्रामाणिक चर्चा की जाती है। प्रत्येक जैनको–चाहे श्वेतांबर हो चाहे दिगंबर हो–सभी को इसकी यह लेखमाला अवश्य पढते रहना चाहिए।

पत्रमें गुजराती और हिन्दी दोनों तरह के लेख रहते हैं। वार्षिक मूल्य मनिऑर्डरसे ३ तीन रूपये और वी. पी. से ३। (सव्वा तीन) रुपये हैं।

पत्रव्यवहार करनेका पत्ता—

व्यवस्थापक—'महावीर'

ठि. भारत जैन विद्यालय, पूना सिटी.

Publisher—Saha Keshavlal Manekchand,-Jain Sahitya Sanshodhaka Sama
Fergusson College Road, Poona City.
Printer—Laxman Bhaurao Kokate, '*Hanuman Press*' Sadashiv, 300 Poona C

Aho ! Shrutgyanam

संरक्षक—श्रीयुत हरगोविंददास रामजी शाह—मुंबई

॥ अर्हम् ॥

॥ णमो त्थु णं समणस्स भगवओ महावीरस्स ॥

खण्ड १] जैन [अंक ४

साहित्य संशोधक

जैन इतिहास, साहित्य, तत्त्वज्ञान आदि विषयक सचित्र त्रैमासिक पत्र

संपादक
मुनिराज श्रीजिनविजयजी

प्रकाशक—
जैन साहित्य संशोधक कार्यालय
ठि० भारत जैन विद्यालय, पूना सिटी।

वार्षिक मूल्य ५॥ रु०] * [प्रस्तुत अंक मूल्य १॥ रु०

Aho ! Shrutgyanam

इसे अवश्य पढिए

इस अंकके साथ जैन साहित्य संशोधकका प्रथम खंड समाप्त होता है; इस लिए ग्राहकोंका मूल्य भी पूरा होता है । आगामी अंकसे दूसरा खण्ड प्रारंभ होगा। जो सज्जन दूसरे खण्डके ग्राहक बनना चाहें वे अपना मूल्य, जो साडे पांच रूपया है, मनिऑर्डर करके यथावकाश भेज दें ।

बहुतसे सज्जनोंने इस विषयमें हमें उपालंभ दिया है कि पत्र नियमित समय पर नहीं निकलता । उनका उपालंभ यथार्थ है, परंतु जिन कठिनाइयोंके कारण हमको अनियमितताका शिकार होना पडा है उनमेंसे कुछकका जिक्र हमने तीसरे अंकके मुखपृष्ठ २ रे पर किया है, और विशेष स्मरणार्थ फिर भी उसे यहां पर उध्दृत करते हैं ।

* * *

पत्रके संपादक मुनिजीका आजकल अधिक रहना अमदावाद होता है । उनके शिरपर, गुजरातके राष्ट्रीय विद्यापीठकी एक नहीं पर दो दो संस्थाओंका कार्यभार रहा हुआ है—वे 'गुजरात पुरातत्त्व मंदिर' और 'आर्यविद्या मंदिर' नामक महत्त्वकी संस्थाओंके 'आचार्य' बनाये गये हैं; इस लिए वहांके कामको संभालना उनका प्रथम कर्तव्य है । जब वहांके कामसे कुछ फुर्सद मिलती है तब वे यहां (पूने) आ कर इस पत्रका काम शुरू करते हैं । यह पत्र इतना बडा है कि इसके छपनेमें कमसे कम दो-ढाई महिने लगते हैं, सो भी प्रेसवालोंकी कृपा होती है तो-नहीं तो इससे भी ज्यादह समय लग जाता है । इस लिए यथासमय पत्र नहीं निकल सकें तो उसमें हमारा कोई इलाज नहीं; ऐसा समझना चाहिए

* * *

दूसरी बात यह है कि इस प्रकारके पत्र सभी इसी तरह विलंबसे निकला करते हैं । हमारे पत्रकी तो बात जाने दीजिए; खुद गवर्मेंटकी ओरसे प्रकाशित होनेवाले 'इन्डियन एंटीक्वेरी' और 'एपिग्राफिया इन्डिका' जैसे जगत्प्रसिद्ध जर्नलस् भी कभी कभी १२ महिने[illegible] तने 'लेईट' छपते हैं !

* * *

यह पत्र कोई कमाईके लिये नहीं निकाला जात[illegible] केवल साहित्यके प्रकाशनार्थ ही प्रकट किया जाता है। इसका खर्च कोई ग्राहकोंकी फीससे पूरा नहीं हो[illegible] ग्राहकोंकी जितनी फी आती है उससे तो तिगुनासे [illegible] अधिक खर्च इस संस्थाको गांठका जोडना पडता है यदि सारा खर्च ग्राहकों ही की जिम्मेवारी पर रखक[illegible] इसको प्रकाशित करना हो तब तो इसका मूल्य ५[illegible] रूपयेकी बनिस्बत 'इन्डियन एंटिक्वेरी' आदि जर्न[illegible] लोंकी तरह २० रूपये वार्षिक रखना पडे । परंतु जै[illegible] समाजमें ऐसे विषयोंके जिज्ञासुओंकी उत्कंठाका ज[illegible] खयाल किया जाय तो शायद एक भी जिज्ञासु वैस[illegible] नहीं निकलेगा जो २० रूपये वार्षिक दे कर इसक[illegible] ग्राहक बने । इससे पाठक समझ सकेंगे कि जैन साहित्य संशोधककी क्या परिस्थिति है ।

* * *

परिस्थितीके ऐसा होने पर भी पत्रके संरक्षक शेठ[illegible] श्री हरगोविंददास रामजीकी निष्कामभावपूर्ण उदा[illegible] आर्थिक सहायता और पत्रके संपादक मुनिजीकी जै[illegible] साहित्यविषयक सेवापरायणताके विशिष्ट संयोगसे जिस[illegible] प्रकार इस पत्रने अपना प्रथम वर्ष निर्विघ्न रूपसे उत्तमता और सुन्दरताके साथ परिपूर्ण किया है उसी प्रका[illegible] यह अपना भावि वर्ष भी करेगा ऐसा हमें पूर्ण विश्वास है ।

* * *

यहां पर हम अपने ग्राहकोंसे सिर्फ यह निवेदन[illegible] हैं कि जिस प्रकार हम अपना कर्तव्य बजानेमें [illegible] हैं उसी प्रकार ग्राहकोंको भी अपना कुछ कर्तव्य [illegible] चाहिए । हम ग्राहकोंसे और कुछ नहीं चाहते सिर्फ[illegible] ना ही चाहते हैं कि प्रत्येक ग्राहक इस वर्ष एक एक[illegible] ग्राहक बना दें जिससे इस पत्रके लिये उठाया जाने[illegible] परिश्रम कुछ सफल हो सके ।

Aho ! Shrutgyanam

Aho ! Shrutgyanam

जैन साहित्य संशोधकना संरक्षक

शेठ हरगोविंददास रामजी शाह

मुंबई.

Aho ! Shrutgyanam

Aho ! Shrutgyanam

जैन साहित्य संशोधकना संरक्षक

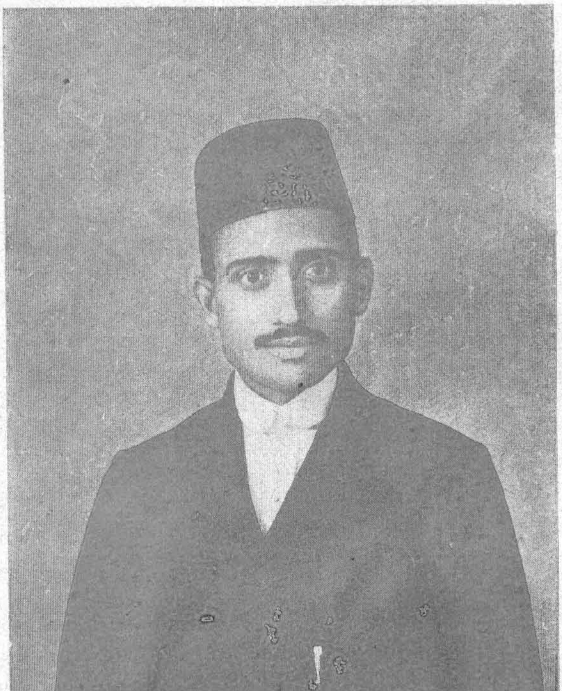

शेठ हरगोविंददास रामजी शाह

मुंबई.

Aho ! Shrutgyanam

जैन साहित्य संशोधक समिति

पेट्रन.

श्रीयुत हीरालाल अमृतलाल शाह. बी. ए. मुंबई.

वाईस पेट्रन

श्रीयुत केशवलाल प्रेमचंद मोदी. बी. ए. एल् एल्. बी. वकील अमदाबाद.

शेठ चिरंजी लालजी बडजात्या वर्धा.

सहायक.

शेठ परमानंददास रतनजी, मुंबई.

श्रीयुत मनसुखलाल रवजीभाई मेहता, मुंबई.

शेठ कांतिलाल गगलभाई हाथीभाई, पूना.

शेठ केशवलाल मणीलाल शाह, पूना.

शेठ बाबूलाल नानचंद भगवानदास झवेरी, पूना.

लाईफमेंबर.

श्रीयुत बाबू राजकुमार सिंहजी बद्रीदासजी, कलकत्ता.

श्रीयुत बाबू पूरणचंदजी नाहार. एम्. ए. एल् एल् बी. कलकत्ता.

शेठ लालभाई कल्याणभाई झवेरी, वडोदरा (मुंबई).

शेट नरोत्तमदास भाणजी, मुंबई.

शेठ दामोदरदास, त्रिभुवनदास भाणजी, मुंबई.

शेठ त्रिभुवनदास भाणजी जैन कन्याशाला, भावनगर.

शेठ केशवजीभाई माणेकचंद, मुंबई.

शेठ देवकरणभाई मूळजीभाई, मुंबई.

शेठ गुलाबचंद देवचंद, मुंबई.

श्रीयुत मोतीचंद गिरधरलाल कापडिया बी. ए. एल् एल्. बी. सोलीसीटर, मुंबई.

श्रीयुत केशरी चंदजी भंडारी इंदौर.

शाह अमृतलाल एण्ड भगवानदास कुं० मुंबई.

शाह चंदुलाल वीरचंद कृष्णाजी, पूना.

शाह धनजीभाई बखतचंद सागंदवाळा, हाल पूना.

शाह बालुभाई शामचंद, तळेगाम (ढमढेरे).

शाह चुनिलास झवेरचंद, मुंबई.

शाह भोगीलाल चुनिलाल, सोलापुरबजार, पूना कॅप.

Aho ! Shrutgyanam

जैन साहित्य संशोधकना द्वितीय खण्डमां

केवा केवा विषयो आवशे ते जाणवुं होय

तो आ नीचेनी नोंध ध्यानपूर्वक वांचो

बीजा खण्डमां, जैन धर्मना प्राचीन गौरव उपर अपूर्व प्रकाश पाडनारा अनेक प्राचीन शिलालेखो अने ताम्रपत्रो प्रकट थशे.

बीजा खण्डमां, जैन संघना संरक्षक जुदा जुदा गच्छोनी पट्टावलियो प्रसिद्ध थशे.

बीजा खण्डमां, जैन साहित्यना आभूषणभूत ग्रन्थोना परिचयो अने तेनी प्रशस्तिओ प्रसिद्ध थशे.

बीजा खण्डमां, जैन अने बौद्ध साहित्यनी तुलना करनारा प्रौढ अने गंभीर लेखो आवशे.

बीजा खण्डमां, भगवान महावीर देवना निर्वाण समय संबंधी जुदा जुदा विद्वानोए लखेला लेखोनां भाषान्तरो तथा स्वतंत्र लेख आवशे.

बीजा खण्डमां, प्रो० वेबरनां लखेली जैन आगमो वेबरनी विस्तृत समालोचना आपवामां आवशे

बीजा खण्डमां, जैन साहित्यमां उल्लिखित प्राचीन स्थळोनां वर्णनो आवशे.

बीजा खण्डमां, बौद्ध साहित्यमां जैन धर्मविषये शा शा विचारो लखाएला छे तेना विचित्र उल्लेखो आवशे.

बीजा खण्डमां, जैन संघमां आज पर्यंत थई गएला बधा प्रसिद्ध पुरुषोनो टुंक परिचय आपवामां आवशे.

आ सिवाय बीजा पण अनेक नाना मोटा अपूर्व अपूर्व लेखो प्रकट करवामां आवशे अने साथे तेवां ज सुन्दर, मनहर, दर्शनीय अने संग्रहणीय अनेक चित्रो पण यथायोग्य आपवामां आवशे.

Aho ! Shrutgyanam

॥ अर्हम् ॥

॥ णमोत्थु णं समणस्स भगवओ महावीरस्स ॥

जैन साहित्य संशोधक

जैन इतिहास, साहित्य, तत्त्वज्ञान आदि विषयक

सचित्र त्रैमासिक पत्र ।

प्रथम खण्ड

संपादक

मुनिराज श्रीजिनविजयजी

प्रकाशक

जैन साहित्य संशोधक कार्यालय

भारत जैन विद्यालय, पूना सिटी

वीरनिर्वाण संवत् २४४७—विक्रम संवत् १९७७

Aho ! Shrutgyanam

प्रकाशक—
शा. केशवलाल माणेकचंद
भारत जैन विद्यालय.
पूना सिटी

मुद्रक—
लक्ष्मण भाऊ कोकाटे
हनुमान प्रेस, सदाशिव पेठ
पुणे-सिटि.

Aho ! Shrutgyanam

प्रथमखण्ड–विषयसूचि.

(हिन्दी लेख विभाग)

१ मंगल १
२ निर्ग्रन्थ प्रवचन २
३ उद्बोधन २
४ सिद्धसेन दिवाकर और स्वामी समन्तभद्र ६
५ हरिभद्रसूरिका समयानिर्णय ... २१
६ हरिषेणकृत कथाकोष
(ले. पं. नाथूरामजी प्रेमी) ... ५९
७ जैनेन्द्र व्याकरण और आचार्य देवनन्दी
(ले. पं. नाथूरामजी प्रेमी) ... ६३
८ गन्धहस्ती महाभाष्यकी खोज
(ले. बाबू जुगलकिशोरजी मुख्तार) ८८
९ तीर्थयात्राके लिये निकलनेवाले संघोंका
वर्णन ९६
१० जेसलमेरके पटवोंके संघका वर्णन ... १०७
११ शोकसमाचार ११३
१२ चित्र परिचय ११८
१३ बालन्याय (ले० श्रीयुत चंपतरायजी जैन
बॅरिष्टर–एट–लॉ) ... १२४
१४ दक्षिण भारतमें ९ वीं १० वीं शताब्दिका
जैनधर्म (ले० स्व० कुमार देवेन्द्र
प्रसादजी जैन) १२९
१५ जंबुदीवपण्णत्ति (ले० पं. नाथूरामजी
प्रेमी) १४४

(गुजराती लेख विभाग)

१ डॉ० हर्मन जेकोबीनी कल्पसूत्रनी प्रस्तावना १
२ जैन धर्मनुं अध्ययन (ले० प्रो० सी. वी.
राजवाडे एम्. ए. बीएस्. सी ... २९
३ जैन आगम साहित्यनी मूळ भाषा कई
(ले० पं. बेचरदास जीवराज, न्याय–
व्याकरणतीर्थ) ३१
४ 'हरिभद्रसूरिनो समयनिर्णय' (ले० श्रीयुत
हीरालाल अमृतलाल शाह, बी. ए.) ३८
५ संपादकीय विचार ४३
६ सोमप्रभाचार्य विरचित कुमारपाल
प्रतिबोध ५५
७ डॉ० हर्मन जेकोबीनी जैन सूत्रोनी प्रस्तावना
(प्रथम भाग) ६९,१४०
८ " (द्वितीय भाग)... ... १६७
९ साहित्यसमालोचन ९७
१० क्षेत्रादेश पट्टक १०५
११ सदयवत्स सावलिंगानी जैन कथा (ले० स्व०
सी. डी. दलाल एम्. ए.) ... १३५
१२ सप्तभंगी (ले० अध्यापक रसिकलाल
छोटालाल परीख बी. ए.)... ... १४५
१३ ब नवा क्षेत्रादेश पट्टक १५३
१४ बृहट्टिप्पनिका नामक प्राचीन जैन
ग्रंथ सूचि १५७
१५ एक ऐतिहासिक पत्र १५८
१६ एक श्रीमाळी जैन कुटुंबनी जुनी
वंशावली १५९
१७ अहिंसा अने वनस्पति आहार—खास करीने
बौद्ध धर्ममां १८६
१८ डॉ० होर्नलना जैनधर्म विषेना विचारो
(ले० श्रीयुत नानालाल नाथाभाई
शाह, बी. ए.) १९४
१९ महावीर निर्वाणनो समय विचार ... २०४

Aho ! Shrutgyanam

२० आगराना संघनो सांवत्सरिक पत्र ... २१२
२१ महावीर तीर्थंकरनी जन्मभूमि ... २१८

[इंग्रेजी लेख.]

1 The Undercurrents of Jainism, By Dr. S. K. Belvalkar, M. A. Ph. D 1
2 The Immediate task before us, By Prof Benarasi Dass Jain, M. A. 3
3 A Comparative Study of उत्तराध्ययनसूत्र with Pali Canonical Books. By Prof P. V Bapat M.A 7
4 Ratnakar Panchavimshatika By K P. Modi, B.A. LL.B. ... 15
5 Logic for the Masses. By C. R. Jain, Bar-at-Law (हिन्दीविभाग)११९

[परिशिष्ट]

१ बृहट्टिप्पनिका नाम प्राचीन जैनग्रंथ सूचि (द्वितीय अंक) पृष्ठ १-१६
२ वीर वंशावली अथवा तपागच्छवृद्ध पट्टावलि (तृतीय अंक) पृष्ठ १-१४

चित्रसूचि.

१ श्रीमहावीर निर्वाणभूमि, पावापुरी (रंगीन).
२-३ अति प्राचीन जैन कीर्तिस्तंभ, चितोड गढ.
४ पार्श्वनाथ जैन मन्दिर, करहेडा.
५ डॉ० सतीशचंद्र विद्याभूषण, महोपाध्याय.
६ स्वर्गीय लोकमान्य बाळ गंगाधर तिळक.
७ चतुर्मुख जैनमन्दिर, कापरडा.
८ जैन मंदिर मानस्तंभ, देवगढ, (झांसी).
९ गिरनार पर्वत-पांचमी टुंक.
१० गिरनार पर्वत-नेमिनाथनी टुंक.
११ विजयसेन सूरिने आगराना संघे मोकलेलो सचित्र सांवत्सरिक पत्र.

Aho ! Shrutgyanam

Aho ! Shrutgyanam

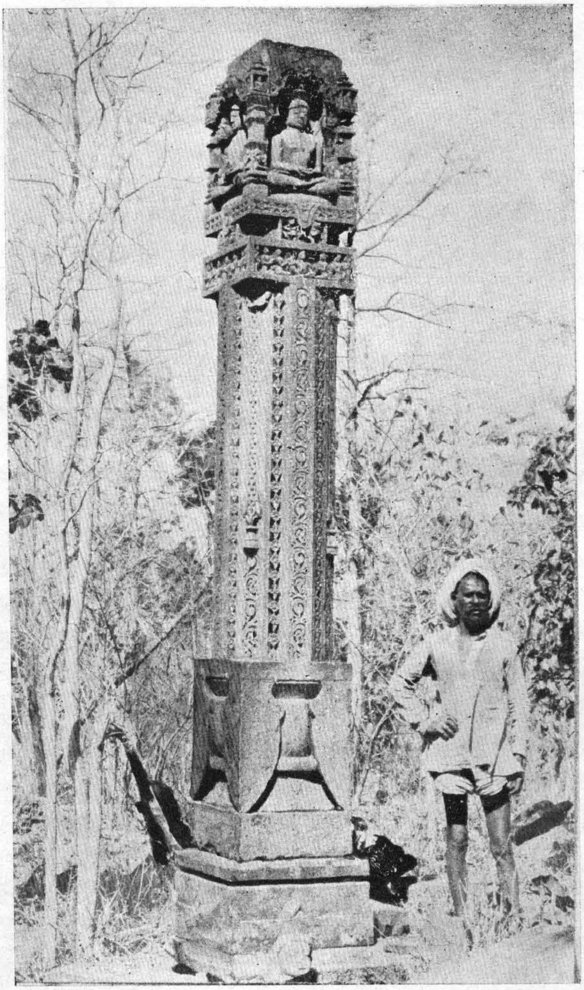

जैनमंदिर मानस्तंभ, देवगढ (झांसी)

Aho ! Shrutgyanam

॥ अर्हम् ॥

॥ नमोऽस्तु श्रमणाय भगवते महावीराय ॥

जैन साहित्य संशोधक

'पुरिसा! सच्चमेव समभिजाणाहि। सच्चस्साणाए उवट्ठिए मेहावी मारं तरइ।'
'जे एगं जाणइ से सव्वं जाणइ; जे सव्वं जाणइ से एगं जाणइ।'
'दिट्ठं, सुयं, मयं, विण्णायं जं एत्थ परिकहिज्जइ।'

—निर्ग्रन्थप्रवचन—आचारांगसूत्र।

खंड १] हिन्दी लेख विभाग [अंक ४

LOGIC FOR THE MASSES.

By C. R. JAINA, Bar-at-Low.

[This little article owes its existence to my growing conviction that the real cause of India's downfall has been the disappearance of what might be termed the scientific or logical turn of mind from her people. How to restore this logical tendency to the Indian mind speedily and in a simple manner naturally flowed from such a conviction. The solution of this troublesome problem has at last been found in the Jaina *nyaya* upon which this monogram is grounded. May it fulfil its great purpose, will, I doubt not, be the heartfelt wish of every true patriot.

C. R. JAIN.]

FOREWORD.

Reader,

Has it ever occurred to you to find out why a simple rustic who knows nothing of the three Rs and who is most certainly innocent of all pretensions to logic immediately infers the presence of fire at the sight of smoke? How do

Aho ! Shrutgyanam

you account for the unerring accuracy of his inference in this matter? Is it not that there is inherent in the human mind a natural capacity for valid deduction independently of a school or collegiate education?

Well, this is what may be termed natural logic which, as you see, is a very simple thing. Compared with this the modern system of logic which forms part of the higher education that is imparted only to advanced students, is but a bundle of artificial forms and formulae. It is cumbersome and too much loaded with technicalities, definitions and diagrams which only go to confuse the mind and confound the sense. Besides, it is meant only for a certain class of college students, is learnt with difficulty and is productive of no practical good outside. Natural logic, on the other hand, is a practical function of life, and, therefore, natural to every man, woman and child. It only requires the drawing of attention to a few principles which can be understood and mastered by any one in a short time. There is certainly nothing in the nature of an impossibility in its principles to place it beyond the reach of the moderately intelligent man in the street. How quickly one masters this branch of practical learning, depends on the way it is imparted to men. Certainly, their failure, if any, is to be laid at the door of their instructor.

It would be out of place to compare in detail the method advocated here with what is taught as logic in our colleges, but it is well-known that the highest achievement of artificial logic is the possession of a set of rigid diagrams and forms which it applies to each and every proposition to test its formal validity quite irrespective of the question whether the statement of fact or facts involved in its premises be, in reality, true or not. The least advantage to be derived from natural logic, on the contrary, is the acquisition of what may be termed the logical turn of mind that seeks to discover and establish actual relations among things and the true principles of causation of events in nature. The highest gain from this system of natural deduction must, consequently, imply a complete mastery over the empire of nature for our individual and racial good.

It only remains to be said that logic is the one science which is the crown of glory of Intellectualism. It is highly practical, useful in every department of learning and the sweetener of life. It was logic which was truly the source of undying fame to the ancient rishis and philosophers of our land; and it is logic whose neglect has reduced us to the lowest level of existence to day. It is, therefore, the duty of every true well-wisher of India and Indians, as well as of the entire human race, to spread the knowledge of this most important science amongst men; and most certainly it should be taught to our boys and girls in their child-hood to impart to them that logical attitude which is the source of all auspiciousness and good.

Hardoi,
22nd August 1920.

CHAMPAT RAI JAIN,
Bar-at-law.

Aho ! Shrutgyanam

LOGIC FOR THE MASSES.

LESSON I.

Logic is the method of valid deduction. A valid deduction is only possible where there is a *fixed rule* to lead the mind to a particular conclusion from a given mark or fact.

Illustration.

1. There is fire in this room, because it is full of smoke.

[Here smoke is the mark of fire. The sight of smoke immediately leads one to the conclusion that there is fire in the room, because smoke is not produced except by fire.]

2. It will be Monday to-morrow, because it is Sunday to-day.

Where there is no fixed rule there can be no valid deduction there, *e. g.*, you cannot tell the number of keys in my pocket, because there is no fixed rule that I should always have a partilar number of keys into my pocket and never more or less.

LESSON II.

A fixed logical rule means something more than a mere long course of practice, or a series of disconnected events. Suppose a man has hitherto always carried 5 keys in his pocket and never any more or less : does it entitle any one to say that he will have only five keys in his pocket to-morrow also? No, because we have heIe only a long course of practice which might be discontinued any moment. Suppose further that I have a friend who is the father of one dozen boys and who has never had a girl born to him, and suppose that his wife expects to become a mother again : can any one say what will be the sex of the next child of my friend? No, because there is no fixed rule in nature that a particular person should always get boys and never a girl.

It is thus evident that a long course of practice or even an uninterrupted series of natural events does not justify an inference which can only be drawn from certain fixed natural or quasi-natural rules.

LESSON III.

There is a fixed logical rule to guide the mind from :--

(1) Cause to effect.

Illustration.

Moist fuel if set burning produces smoke.

(2) Effect to cause.

Illustration.

Where there is smoke there is fire.

(3) Antecedent to consequent.

Illustration.

i Monday following Sunday ;
ii Youth following childhood ;
iii Old age following youth.

(4) Consequent to Antecedent.

Illustration.

i Saturday preceding Sunday.
ii Youth preceding old age.
iii Childhood preceding youth.

(5) Concomitance.

Illustration.

i Age and experience.
ii Childhood and inexperience.
iii Marks of ripeness and deliciousness of taste in fruit.

(6) Container and contained, *i. e.*, the whole includes the part, or, what comes to the same thing, the attributes of the whole are to be found in the part.

Illustraion.

There is no fruit tree in this garden ;

Therefore there is no mango tree in this garden.

The instructor should illustrate these

six kinds of fixed rules by many illustrations.

LESSON IV.

A conclusion may be drawn from an affirmative logical relationship, *e. g.*, wherever there is smoke there is fire. This is called the *anvaya* form. Hence when you see smoke you immidiately say that there must be fire present at its source. But the sight of fire does not entitle you to conclude that smoke must be there too; for while smoke is always caused by fire, every kind of fire does not produce smoke, *e. g.*, red hot charcoal fire. But you may sefely infer from the relationship of fire and smoke that where there is no fire there is no smoke. This is technically known as *vyatireka.*

Thus from the relationship between fire and smoke we can infer

1. the existence of fire wherever there is smoke, and

2. the non-existence of smoke where there is no fire.

But we cannot infer

1. the existence of smoke from fire, nor

2. the non-existence of fire where there is no smoke.

Anvaya and *vyatireka* taken together establish the validity of a logical relationship.

LESSON V.

The argument or reason is either of a contradictory type or of a non-contradictory one. The former of these implies the existence of a fact which is incompatible with the existence of the fact expressed in the conclusion. The other type is the non-contradictory one.

Illustration.

1. There is no fire in this pitcher, because it is full of water.

2. There is fire on thls hill, because there is smoke on it.

The *hetu* (reason) in the first of these illustrations is called contradictory because it (water) is opposed to the nature of fire the presence of absence of which is the subject of inference; the pitcher being full of water which is hostile to and destructive of fire there can be no fire in it. The second illustration is a simple case of non-contradictory *hetu* (reason).

Further illustrations

Non-contradictory affirmative reason:

1. Sound is subject to modification, because it is a product.

(Explanation: All products are liable to modification; sound is a product; therefore, sound is subject to modification).

This is an instance of the rule that part is included in the whole, *i. e.*, the attributes of a class are to be found in the individual.

2. There is fire on this hill because there is smoke on it.

(Effect to cause.)

3. It must be raining yonder, because potent rain-bearing clouds are gathered there.

[(Active) Cause to effect.]

4. It will be Sunday to-morrow because it is Saturday to-day.

[Antecedent to consequent.]

5. Yesterday was a Sunday, because it is Monday to-day.

[Consequent to antecedent]

6. This mango has a delicious taste, because it is ripe yellow in colour.

[Concomitance.]

Contradictory negative reason:

7. The atmosphere inside a steam boiler when fire is burning in it is not cold, because heated bodies are not cold.

Aho ! Shrutgyanam

[This is an instance of the whole and part tpye. Its amplified form would be :—

All heated bodies are not cold. A steam boiler is a heated body when a fire is burning in it.

Therefore, a steam boiler when a fire is burning in it is not cold.]

8. This woman is not barren, because she has a grandchild (which is the effect of the antithesis of female barrenness).

[Effect to cause, antithetical.]

9. This man is not happy, because he has present in him the causes of misery (the opposite of happiness).

[Cause to effect, antithetical].

10. Tomorrow will not be a Sunday, because it is Friday to-day.

[Antecedent to consequent, antithetical.]

11. Yesterday was not a Friday, because it is Tuesday to-day.

[Consequent to antecedent, antithetical]

12. This wall is not devoid of an outside, because it has an inside.

[Concomitance, antithetical.]

Non-contradictory negative :

13. There is no oak in this village, because there is no tree in it.

[Whole and part]

14. There are no potent rain-bearing clouds here, because it is not raining here.

[Effect to cause.]

15. There is no smoke in this place, because there is no fire here.

[Cause of effect.]

16. It will not be Sundy to-morrow, because it is not Saturday to-day.

[Antecedent to consequent.]

17. It was not Monday yesterday, because to-day is not Tuesday.

[Consequent to antecedent.]

18. The right hand pan of this pair of scales is not touching the beam, because the other one is on the same level with it.

[Concomitance.]

Contradictory affirmation :

19. This animal is suffering from some disease, because it has not got the appearance of health.

[Effect to cause.]

20. This woman is feeling unhappy, because she has been forcibly separated from her lover.

[Cause to effect, antithetical.]

Aho ! Shrutgyanam

बा ल न्या य

[लेखकः—श्रीयुत चंपत रायजी जैन, बारिष्टर–ऍट–लॉ.]

(प्रथम वक्तव्य)

अध्यापकजी !

यह लेख जो आपके सम्मुख उपस्थित है; बालकों अर्थात् छठी, सातवीं और आठवी कक्षाके छात्रोंको न्यायमें प्रवेश करानेके लिये लिखा गया है । " युरुपीय–न्याय " तो कालिजहीमें अध्ययन कराया जाता है; किन्तु यह प्रकट है कि जो मनुष्य प्राकृतिक न्यायको जानता है, वह बिना कालिज तक पढे भी उचित नतीजा निकाल सकता है। इससे यह सिद्ध होता है कि प्राकृतिक न्याय अत्यन्त सरल और सुबोध है । मेरा विचार है कि छठी, सातवी और आठवी कक्षाके बालकोंको भले प्रकार " न्याय " की शिक्षा दी जा सकती है ।

इसमें योग्यता केवल अध्यापकमें होनी चाहिये, जो कि प्रत्येक पाठ तथा दृष्टान्त भलाभांति विद्यार्थीको समझा दे । इस शिक्षामें स्मरण शक्तिपर बलात् बल डालनेकी कोई आवश्यकता नहीं–यदि छात्रको समझा दिया जाय। और न इसमें कोई बात ऐसी ही है, कि उपरोक्त छात्र भलीभांति न समझ सकें । इससे स्वयं छात्रकी नैतिक शक्तियां न्यायका प्रतिबिम्ब हो जायंगी, और उसका मन स्वयं न्यायमें प्रवृत्त होने लगेगा । आशय यह है, कि यदि बालकों की समझमें न्याय न आय तो अध्यापक महाशयकी त्रुटि है और किसीकी नहीं ।

" न्याय " के गुणोंके बारेमें भी इतना कहना उचित प्रतीत होता है कि बिना इसके जाने हुये बुद्धि तीक्षण नहीं होती, और जो इसको जानता है उसीका जीवन सफल समझना चाहिये । न्याय ही की बदौलत भारत बर्षके प्राचीन कालमें ऋषि, मुनि और विद्वान पंडितगण सारे संसारमें प्रख्यात हो गये । और न्यायके जाते रहने हीका यह फल है कि वर्तमान कालमें भारतमें चारों ओर अविद्या और अज्ञान फैला हुआ है । अतः जो मनुष्य देश और जातिके शुभचिंतक हैं, उनका कर्तव्य है कि वे यथासंभव शैशवकालहीमें अपनी सन्तान और छात्रोंके मनको "न्याय" में प्रवृत्त करावें ।

इसप्रकार "न्याय" में प्रवेश करनेके अर्थ उचित है कि छठी–सातवीं कक्षा तक तो येही पाठ–जो आप लोगों के सन्मुख उपस्थित हैं–पढाये जायं । तत्पश्चात् आठवीं श्रेणीमें " न्याय दीपिका " " परीक्षा मुख " अथवा इसी प्रकारकी किसी अन्य पुस्तका अध्ययन कराया जाय । इस प्रकार छात्रोंमें न्यायकी योग्यता स्वयं बढती जायगी ।

Aho ! Shrutgyanam

प्रथम पाठ

(क)

प्रश्न—बच्चो! आज रविवार है; तुम बतला सकते हो कि कल कौन दिन होगा?

उत्तर—सोमवार।

प्र०—क्या तुम बता सकते हो कि कल मंगल, बुध, या बृहस्पति वार क्यों नहीं होगा?

उ०—क्यों कि रविवारके बाद सदैव सोमवार ही होता है, कभी दूसरा दिन नहीं होता।

प्र०—इस लिये यदि हम यह कहें, कि कल बुध होगा तो क्या हमारा कहना ठीक होगा?

उ०—नहीं साहब! आपका ऐसा कहना नितान्त भ्रमात्मक होगा।

(ख)

प्र०—बच्चो! हमारी जेबमें चाबियोंका एक गुच्छा है; क्या तुम बतला सकते हो कि उसमें कितनी कुंजियें हैं?

उ०—नहीं साहब!

प्र०—क्यों?

उ०—इस लिये कि कोई ऐसा नियम नियत नहीं है कि जिससे किसी गुच्छेकी कुंजियोंकी संख्या निर्धारित हो सके।

उपरोक्त प्रश्नोत्तर-रीतिसे यह प्रकट है कि न्यायके अनुसार नतीजा वहीं निकाला जा सकता है कि,

१—जहां कोई निर्धारित नियम हो, और

२—वहां कोई न्यायका नतीजा नहीं निकल सकता जहां कोई निश्चित नियम नहीं है

दूसरा पाठ

बच्चो!

कल तुमको यह बताया गया था कि जहां कोई नियम नहीं है वहां कोई ठीक नतीजा नहीं निकाला जा सकता। आज हम दो उदाहरणोंपर और विचार करेंगे, कि "नियम" से क्या प्रयोजन है।

१—कल्पना करो कि एक ग्वाला सूर्य्य निकलनेसे पूर्व शहरमें दूध बेचनेके लिये मेरे मकानके सामनेसे जाया करता है। और यह भी कल्पना कर लो कि यह मनुष्य ५० बर्षसे लगातार योंही मेरे मकानसे जाता है—और कोई नागा कभी इससे नहीं हुई। तो क्या तुम बता सकते हो, कि प्रातःकाल भी वह मेरे मकान के सामने से गुजरेगा, या नहीं?

२—कल्पना करो मेरा एक मित्र रामदत्त है जो १२ लडकोंका पिता है; और जिसके आज तक कभी लडकी पैदा नहीं हुई। इस रामदत्तकी पत्नी गर्भवती है। क्या तुम बता सकते हो कि उसका गर्भस्थ-बालक पुत्र होगा या पुत्री?

इन दोनों प्रश्नोंके उत्तर "नहीं" में है। क्यों कि पहिले प्रश्नमें दूध बेचनेवालेका बीमार हो जाना अथवा किसी अन्य आवश्यककार्य या लाभकारी व्यापारमें लग जाना, या दूध ही का अभाव हो जाना संभव है। दूसरे उदाहरणमें प्रकृतिका कोई ऐसा नियम नहीं है, कि अमुक मनुष्यके घर सदैव लडके ही हों—लडकी कभी न हो।

बस हम देखते हैं कि "न्याय" के नियमका प्रयोजन ऐसी घटनाओंसे नहीं है, जो किसी मुख्य बातमें अब तक प्रचलित रहीं हों; किन्तु उस नियत नियमसे है-जो अबतक सत्य पाया गया है—और भविष्यमें भी कभी असत्य नहीं हो सकता। जैसे बालक-पनका युवावस्थासे पहले होना।

तृतीय पाठ

उपरोक्त निर्धारित नियम ६ प्रकारके हो सकते हैं, अधिक नहीं।

१—कारणके ज्ञात होनेसे कार्य्यका अनुमान। जैसे सुलगते हुये गीले ईंधनसे धुंवाका ज्ञान।

नोट—अध्यापकका कर्तव्य है कि बालकों के मन पर नाना उदाहरणों द्वारा यह सिद्धान्त अंकित कर दे।

Aho ! Shrutgyanam

२—कार्यसे कारणका ज्ञान।

उदाहरण—धुंवेसे अग्निका बोध।

३—पूर्व पक्षसे उत्तर पक्षका बोध।

उदाहरणः—१—रविवारके पश्चात सोमवारका होना।

२—शैशव कालके पश्चात् युवावस्था।

३—युवावस्थाके पश्चात् वृद्धावस्था।

४—उत्तरपक्षसे पूर्वपक्षका ज्ञान।

उदाहरण—१रविवारके पूर्व शनिवारका बोध।

—२बुढापेसे पूर्व युवावस्था।

५—एक साथ होनेवाली बातोंका ज्ञान।

उदाहरण—१ जैसे वय और अनुभव।

—२ बालकापन और अबोधता।

—३ फलमें उसके पकनेके चिन्ह और उसका स्वाद विशेष।

६—व्याप्य—व्यापक अर्थात् कुलमें जुज (अंश) शामिल है; या यों कहो कि जातिके गुण व्यक्तिमें पाये जाते हैं।

उदाहरण—१ इस फुलवाडीमें कोई फलदार वृक्ष नहीं है; अतः इसमें आम भी नहीं है।

अध्यापकका कर्तव्य होगा कि इन ६ प्रकारके नियमोंको भली भांति बालकोंको समझा दे और नाना प्रश्नों द्वारा इस बातका भी निश्चय करा दे कि केवल ६ ही प्रकार के नियम प्रकृति में हैं—न्यूनाधिक नहीं।

चतुर्थ पाठ

बच्चो !

न्यायका सिद्धान्त " धनरूप " **नियमसे निकाला जा सकता है,** जिसको " अन्वय " कहते हैं।

उदाहरण—जहां कहीं धुंवां है; वहां अग्नि अवश्य है।

नोट—सप्ताह दो सप्ताहमें जब यह बात छात्रगण समझ जावें, तो फिर आगे बढे।

इस लिये जब कभी तुम धुंवा देखो तो मनमें तुरन्त नतीजा निकाल सकते हो कि वहां अग्नि अवश्य होगी; किन्तु अग्निको देख कर तुम यह नहीं कह सकते कि धुंवा भी वहां है। क्यों कि धुंवा तो बिना आगके हो नहीं सकता; किन्तु आग बिना धुंवाके भी हो सकती है। जैसे सुलगते हुये अंगारे की आग। और आग तथा धुंवेके पारस्परिक संबधसे तुम यह भी नतीजा निकाल सकते हो कि जहां जहां आग नहीं होती वहां वहां धुंवा भी नहीं होता। क्यों कि धुंवा बिना आगसे नहीं होता। यह 'ऋणरूप' **है और इसको** 'व्यतिरेक' **कहते हैं।**

बस यह प्रकट है कि आग और धुंवेके संबंधसे ४ नतीजे निकलते हैं।

१—अग्निका ज्ञान धुंवेके ज्ञानसे।

२—धुंवेके अभावका ज्ञान अग्निके अभावके ज्ञानसे।

३—धुंवेका ज्ञान अग्निके ज्ञानसे।

४—अग्निके अभावका ज्ञान धुंवेके अभावके ज्ञानसे।

इनमेंसे पहिले दो तो नियमानुसार हैं और इस कारणसे ठीक हैं। और पिछले दो नियमके प्रतिकूल हैं अतः ठीक नहीं। जहां अन्वय और व्यतिरेककी तुलना होती है, वहां नियम सिद्ध समझा जाता है। यथा—

१—जहां जहां धुंवा होता है वहां वहां अग्नि होती है। (अन्वय)

२—जहां जहां अग्नि नहीं होती वहां वहां धुंवा भी नही होता। (व्यतिरेक)

पञ्चम पाठ

बच्चो !

इस उदाहरणमें कि " इस पहाडपर अग्नि है, क्यों कि इसपर धुंवा है" अग्निको साध्य कहते हैं और धुंवेको हेतु।

साध्य वह कहा लाता है जो सिद्ध किया जाय।

हेतु वह है जिसके द्वारा साध्यकी सिद्धी हो।

यह हेतु साध्यका चिन्ह या संबंधी हुआ करता है; जैसे अग्निका चिन्ह धुंवा । क्यों कि धुंवा किसी और वस्तुका चिन्ह नहीं है । कारण यह कि धुंवा अग्नि हीसे पैदा होता है; और अग्निके अभावमें नहीं पैदा हो सकता । अतः वह अग्नि हीका चिन्ह है और इसी कारणसे तुरन्त अग्निका बोध करा देता है ।

हेतु दो प्रकार का होता है, विरुद्ध व अविरुद्ध ।

विरुद्ध—वह है जो साध्यके विरोधी का चिन्ह हो और जिससे साध्यके प्रतिकूल नतीजा निकले । जैसे इस घडेमें आग नहीं है; क्यों कि यह पानीसे भरा हुआ है । यहां पानी अग्निका विरोधी है । अतः अग्निके अस्तित्वका निषेध करता है ।

अविरुद्ध हेतु—वह है जो सरलता पूर्वक साध्यके अस्तित्वको सिद्ध करता है । जैसे इस पहाड की चोटीपर आग है, क्यों कि वहांसे धुंवा ऊठ रहा है ।

(विभिन्न उदाहरण)

(क) अविरुद्ध-विधि-साधक अर्थात् जिनसे अस्तित्व सिद्ध हो । जैसे—

१—शब्द परिणामी होता है; क्योंकि वह क्रियासे उत्पन्न होता है ।

यह उदाहरण व्याप्य–व्यापकके संबधमें है; जिसका पुरा रूप इस प्रकार बैठता है । शब्द परिणामी होता है क्यों कि वह कार्यसे उत्पन्न होता है । जो जो किये हुये होते हैं वे वे पदार्थ परिणामी होते हैं। जैसे घट । उसी प्रकार शब्द भी किया जाता है, अतएव वह भी परिणामी होता है । अथवा जो पदार्थ परिणामी नहीं होते वे किये भी नहीं जाते । जैसे वन्ध्या स्त्रीका पुत्र । बस उसी प्रकार शब्द कृतक होता है इसी कारण परिणामी भी होता है ।

२—इस प्राणीमें बुद्धि है; क्यों कि बुद्धिके कार्य बचन आदि इसमें पाये जाते हैं । यहां बुद्धि साध्य है और बचनादि हेतु । कार्यसे कारणका ज्ञान होता है ।

३—यहां छाया है; क्योंकि छत्र मौजूद है । यहां समर्थ कारणसे कार्यका बोध हुआ ।

४—कल इतवार होगा; क्यों कि आज शनिवार है। यहां पूर्व-पक्षसे, उत्तर-पक्षका ज्ञान हुआ ।

५—कल इतवार था; क्यों कि आज सोमवार है । यहां उत्तर-पक्षसे पूर्व-पक्ष का ज्ञान हुआ ।

६—इस आममें रस है; क्यों कि यह पका हुआ पीले रंगका है । यह सहचरका उदाहरण है ।

(ख) विरुद्ध–निषेध–साधक ।

७—यहां शीत स्पर्श नहीं है; क्यों कि अग्नि-ताप मौजूद है । यहां अग्नि, शीत से विरुद्ध है और ताप, अग्नि का व्याप्य है । अतः वह अग्नि का ज्ञान कराता है ।

८—यह मनुष्य अस्वस्थ है; क्यों कि शय्याग्रस्त है । यह उदाहरण कार्यसे कारणके निषेधाका ज्ञान विरुद्ध रूप से कराता है। क्यों कि स्वास्थ्यके निषेधका बोध होता है—उसके विरोधी बीमारीके कार्य अर्थात् शय्या-ग्रस्त होने से ।

९—इस जीवको सुख नहीं है; क्यों कि उसके हृदयमें व्यग्रता मौजूद है । यहां दुखका कारण हृदयकी व्यग्रता है । अतः वह दुखको जमावेगी और दुखके अस्तित्वमें—जो सुखका विरोधी है—सुख का होना असम्भव है ही ।

१०—कल इतवार नहीं होगा; क्यों कि आज शुक्र है । यह उदाहरण पूर्व-पक्षसे उत्तर-पक्षका है । शुक्रवार यहां शनिवारका विरोधी माना गया है ।

११—कल शुक्रवार नहीं था; क्यों कि आज मंगल है । यहां मंगलको बृहस्पतिका विरोधी मानकर उत्तर पक्षसे पूर्व पक्षका अनुमान किया है ।

१२—इस भीतमें उस ओरके भागका अभाव नहीं है; क्यों कि इस ओरका भाग मौजूद है । यह सहचरका दृष्टान्त हुआ ।

(ग) अविरुद्ध–निषेध–साधक ।

१३—इस नगरमें शीसम नहीं है; क्यों कि यहां

Aho ! Shrutgyanam

वृक्षका अभाव है। यह उदाहरण व्याप्य-व्यापकके संबंधमें है।

१४—यहां बरसाऊ बादल नहीं है; क्यों कि यहां बर्षा नहीं हो रही। यह उदाहरण कार्य्य-कारणके संबंधका है।

१५—यहां धुंवा नहीं है; क्यौं कि यहां अग्नि नहीं है। यहां कार्य्यसे कारणकी ओर ध्यान गया।

१६—कल रविवार नहीं होगा; क्यौं कि आज शनिवार नहीं है।

१७—कल सोमवार नहीं था; क्यौं कि आज मंगल नहीं है।

१८—इस तराजूका दाहिना पलडा डंडीको नहीं छू रहा है; क्यौं कि दूसरा पलडा उसके बराबर है। यह सहचरका उदाहरण है।

(घ) विरुद्ध–विधि–साधक।

१९—इस प्राणीमें रोग है; क्यौं कि इसकी चेष्टा निरोग नहीं पाई जाती।

२०—इस स्त्रीके हृदयमें पीडा है; क्यौं कि यह अपने पतिसे हठात् पृथक् कर दी गई है।

अध्यापक महाशय को उचित है कि नाना उदाहरणों द्वारा इन चारों किसमके अनुमानोंका ज्ञान बालकोंको करा दे॥ इति।

सम्पादकीय टिप्पणी—ऊपरके दोनों लेख (इंग्रेजी और हिन्दी) लेखक महाशयने, खास करके बालकोंको न्यायशास्त्रका सरल रीतिसे बोध करा देनेके हेतुसे लिखे हैं। मनुष्यमें रही हुई बुद्धि–शक्तिको विकसित करने और सत्यासत्यके विचारकी जिज्ञासाको तृप्त करने में एकमात्र साधन न्यायशास्त्र ही है। न्यायवेत्ताओंकी दृष्टिमें जिस मनुष्यने न्यायशास्त्रका अध्ययन नहीं किया वह, चाहे, फिर अन्य सभी विषयोंमें पारंगत क्यों न हो, परंतु "बाल" ही कहलाता है। "**अधीतव्याकरणकाव्यकोशोऽनधीतन्यायशास्त्रः बालः।**" (जिसने व्याकरण, काव्य, कोश आदिका अध्ययन तो कर लिया है परंतु न्यायशास्त्रका अध्ययन नहीं किया वह 'बाल' ही है) यह नैयायिकोंके "बाल" का लक्षण है। इस लक्षणमें सत्यता अवश्य रही हुई है। क्यौं कि विना न्यायशास्त्रका अध्ययन किये मनुष्य सत्यासत्यका भी निर्णय नहीं कर सकता और पदार्थके कार्य–कारणका भी ज्ञान नहीं कर सकता। न्यायतत्त्वके जाने बिना मनुष्यकी बुद्धिशक्ति कुंठित हो रहती है और विचारशक्ति अन्धी बनी रहती है। अतः इस कथनमें कोई भी अत्युक्ति नहीं है कि न्याय शास्त्रके अध्ययन विनाका मनुष्य बिलकुल "बाल" ही है।

भारतके प्राचीन विद्वानोंने न्यायशास्त्रका कितना सूक्ष्म और विस्तृत परिशीलन किया है इसकी साधारण जनोंको तो कल्पना भी आनी कठिन है। उन्होंने एक एक विषयपर तो क्या परंतु एक एक मामूली विचारपर भी सेंकडों ग्रंथ और हजारों श्लोक लिख डाले हैं! उनके इन गहन तर्कोंको देख कर आज कलके विद्वान् मनुष्यका मस्तिष्क भी चकराने लगता है तो फिर औरोंकी तो बात ही क्या। एक तो यों ही यह विषय कठिन है और फिर उसपर इनकी भाषा संस्कृत होकर उसकी शैली उससे भी कठिनतर है। इस लिये विना संस्कृतका अच्छा अभ्यास किये न्यायतत्त्वका ज्ञान होना आज प्रायः हमारे देशवासियोंके लिये दुर्लभ्य हो रहा है। इस दुर्लभताको कुछ सुलभ बनानेके लिये और सर्व साधारणको सहज ही में इस विषयका परिचय प्राप्त करा देनेके लिये श्रीयुत जैनीजीने यह प्रशंसनीय प्रयत्न किया है। आप इस बारेमें लिखते हैं कि—"मेरा दृढ विश्वास है कि मनुष्य यदि प्राकृतिक नियमोंका विधिपूर्वक अनुशीलन कर ले तो न्यायशास्त्रका दुरुहपथ उसके लिये भलीभांति प्रशस्त हो सकता है। इसी विचारको भविष्यमें कार्य रूप प्रदान करनेके निमित्त यह लेख प्रकाशित कराया जाता है। ताकि इस शास्त्रके धुरंधर विद्वानों द्वारा इसकी उचित समालोचना हो जाय। अगर इन नियमोंमें यदि किसी महानुभावको संशोधन करनेकी आवश्यकता प्रतीत हो तो पूरी छानबीनके बाद कर दी जाय। इस लेख द्वारा इस शैलीकी उपयोगिता सिद्ध हो जाने पर इस विषयको पुस्तकाकार प्रकाशित करनेका उद्योग किया जायगा जिससे मातृभाषा भाषी छात्र न्यायमें प्रवेश करके सत्यासत्यका स्वयं निर्णय कर सकें।"

आशा है कि विद्वान्वर्ग जैनी महाशयके इस उच्च आशयको लक्ष्यमें लेकर इस बारेमें अपनी योग्य सम्मति प्रकाशित करेंगे।

Aho ! Shrutgyanam

दक्षिण भारतमें ९ वीं-१० वीं शताब्दिका जैन धर्म।

[लेखकः—स्वर्गस्थ कुमार देवेन्द्र प्रसादजी जैन]

गंग वंश।

भारतवर्षके प्राचीन राजवंशोंमें पश्चिमके गंगवंशीय राजा जैनधर्मके कट्टर अनुयायी थे। यह बात परम्परासे चली आई है कि नंदीगण सम्प्रदायके सिंहनन्दी नामक एक जैनधर्मके आचार्यने, गंगवंशके प्रथम राजा शिवमारको राज्यसिंहासन प्राप्त करनेमें सहायता दी थी। एक शिलालेखमें इस बातका वर्णन है कि शिवमार कोंगुणी बर्मा सिंहनन्दीका शिष्य था, और दूसरेमें यह कि सिंहनन्दी मुनिकी सहायता से गंगवंश वैभवसंपन्न हुआ। एतदर्थ इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि जैनग्रन्थोंमें इस भावके श्लोक पाए जायं कि गंगवंशीय राजा सिंहनन्दीकी चरणवन्दना करते हैं[3]। अथवा जिस राजवंशका जन्म एक जैन धर्माचार्यकी कृपासे हुआ हो उसके राजाओंका कट्टर जैनधर्मावलम्बी होना भी कोई आश्चर्यकी बात नहीं है। ऐसे लेख विद्यमान हैं जो इस बातको निस्संदेह सिद्ध कर देते हैं कि गंगवंशीय राजा जैनधर्मके उन्नायक और रक्षक थे। ईसाकी चौथीसे बारहवीं शताब्दी तकके अनेक शिलालेखोंसे इस बातका प्रमाण मिलता है कि गंगवंशके शासकोंने जैन मन्दिरोंका निर्माण किया, जैन प्रतिमाओंकी स्थापना की, जैनतपस्वियोंके निमित्त चट्टानोंसे काट काटकर गुफाएं तैयार कराईं और जैनाचार्योंको दान दिया।

मारसिंह द्वितीय।

इस वंशके एक राजाका नाम मारसिंह द्वितीय था, जिसका शिलालेखोंमें धर्ममहाराजाधिराज 'सत्यवाक्य' कोंगुणीवर्मा—परमानडी मारसिंह नाम मिलता है। इस राजाका शासन काल चेर, चोल, और पाण्ड्य वंशोंपर पूर्ण विजयप्राप्तिके लिये प्रसिद्ध है। मारसिंह द्वितीयने अपने शत्रु बज्जलदेवके साथ सर्वोत्कृष्ट विजय प्राप्त किया और गोनूर और उच्छंगीमें उसने बहुत घनघोर युद्ध लडे। जैन सिद्धान्तोंका सच्चा अनुयायी होनेके कारण इस महान् नृपने अत्यन्त ऐश्वर्यसे राज्य करके राजपद त्याग दिया और धारवार प्रांतके बांकापुर नामक स्थानमें अपने प्रसिद्ध धर्म-गुरु अजितसेनके सन्मुख

---

१ देखो Repertoire d'epigraphie Jaina (A. A. Guerinot शिलालेख नं. २१३ और २१४; तथा चन्द्रगिरि पहाडी पर स्थित पार्श्वनाथवस्तीके शिलालेखका निम्न लिखित पद्य—

"योऽसौ घातिमलाद्विषद्बलशिला—स्तम्भावली—खण्डन—
ध्यानासिः पटुरर्हतो भगवतः सोऽस्य प्रसादीकृतः।
छात्रस्यापि स सिंहनन्दिमुनिना नो चेत् कथं वा शिला-
स्तम्भो राज्यरमागमाध्वपरिघस्तेनासिखण्डो घनः"॥
(श्रवण बेलगोल शिलालेख, नं. ५४, पृष्ठ ४२)

२ सलेम जिलाकी Manual-Revd.T. F.Foulkes द्वितीय भाग, पृ० ३६८ का निम्न लिखित पद्य देखिए—

"यस्याभवत् प्रवरकाश्यपवंशजोऽग्रे
कण्वो महामुनिरनल्पतपःप्रभावः।
यः सिंहनन्दिमुनिपप्रतिलब्धवृद्धि—
र्गंगान्वयो विजयतां जयतां वरः सः॥"

लुईस राईसके पाठानुसार 'महिप' की जगह 'मुनिप' पाठ दिया है, जो ठीक संगत मालूम देता है।

३ "श्रीदेशीयगणाब्धिपूर्णमृगभृच्छ्रीसिंहनन्दिव्रति—
श्रीपादाम्बुजयुग्ममत्तमधुपः सम्यक्त्वचूडामणिः॥
श्रीमज्जैनमताब्धिवर्द्धनसुधासूतिर्महीमण्डले
रेजे श्रीगुणभूषणो बुधनुतः श्रीराजमल्लो नृपः॥"
(बाहुबली चरित्र, श्लोक ८)

Aho ! Shrutgyanam

तीन दिनोंके व्रतसे शरीर त्याग दिया। मारसिंह द्वितीयकी समाधिका लेख कूगे ब्रह्मदेव खंभ नामक स्तम्भके निम्न भागमें चारों ओरके शिलालेखोंमें विद्यमान है। वह स्तम्भ श्रवण बेलगोल (माइसोर) की चन्द्रगिरी पहाडियोंपर स्थित मन्दिरोंके द्वारपर है[४]। यद्यपि इस लेखमें कोई तिथि नहीं लिखी है,—तथापि मारसिंह द्वितीयके मृत्युकी तिथि एक दूसरे शिलालेखके आधारपर सन ९७५ ई० निश्चय की गई है[५]।

चामुण्डराय।

चामुण्डराय या चामुण्डराज इस महान् नृपतिका सुयोग्य मंत्री था। इस मन्त्रीके शौर्यही के कारण मारसिंह द्वितीय वज्जलसे तथा गोनूर और उच्छंगीके रणक्षेत्रोंमें विजय प्राप्ति कर सका। श्रवणबेलगोलके एक शिलालेखमें चामुण्डराय की इस प्रकार प्रशंसा की हुई है—" जो सूर्यकी भांति ब्रह्मक्षत्र कुलरूपी उदयाचलके शिरको मणिकी नाई भूषित करता है; जो चंद्रमाकी भांति अपने यशरूपी किरणोंसे ब्रह्मक्षत्र कुलरूपी समुद्रकी वृद्धि करता है; जो ब्रह्मक्षत्र कुलरूपी खानियुक्त-पर्वतसे उत्पन्न मालाका मणि स्वरूप है और जो ब्रह्मक्षत्र कुलरूपी अग्निको प्रचण्ड करनेके हेतु प्रबल पवनके समान है; ऐसा चामुण्डराय है।

" कल्पान्त क्षुभित समुद्रके समान भीषणबलवाले और पातालमल्लके अनुज वज्जलदेवको जीतनेके हेतु इन्द्र नृपतिकी आज्ञानुसार, जब उसने भुजा उठाई; तब उसके स्वामी नृपति जगदेकवीरके विजयी हाथीके सन्मुख शत्रुकी सेना इस प्रकार भाग गई जैसे दौडते हुए हाथीके सन्मुख मृगोंका दल।

" जिसकी उसके स्वामीने नोलम्बराजसे युद्धके समय इस प्रकार प्रशंसा की थी " जो वज्ररूप दांतोंसे शत्रुके हाथियोंके मस्तकको विदीर्ण करता है और जो शत्रुरूपी हिंस्र जीवोंके लिये अंकुशके समान है। ऐसे हाथीवत् आप जब वीर से वीर योद्धाओंके सन्मुख विराजमान हैं तो ऐसा कौन नृप है जो हमारे कृष्णबाणोंका ग्रास न बने"।

" जो नृप रणसिंहसे लडते हुए इस प्रकार गर्ज कर बोला, " हे नृपति जगदेकवीर! तुम्हारे तेजसे मैं एक क्षणमें शत्रु को जीत सकता हूं, चाहे वह रावण क्यों न हो, उसकी पुरी लंका क्यों न हो, उसका गढ त्रिकूट क्यों न हो, और उसकी खाई क्षारसमुद्र क्यों न हो।"

" जिसको स्वर्गांगनाओंने यह आशीर्वाद दिया था " हम लोग इस वीरके बहुतसे युद्धोंमें उसको कण्ठालिंगनसे उत्कंठित हुई थीं, परन्तु अब उसकी खड्गकी धारके पानीसे हमलोग तृप्त हुई हैं। हे रणरंगसिंहके विजेता! तुम कल्पांत तक चिरंजीव रहो। जिसने चलदंकगंग नृपतिकी अभिलाषाओंको व्यर्थ कर दिया, जो अपने भुजविक्रमसे गंगाधिराज्यके वैभवको हरण करना चाहता था; और जिसने वीरोंके कपालरत्नोंके प्याले बना कर और उनको वीरशत्रुओंके शोणितसे भरकर खूनके प्यासे राक्षसोंकी अभिलाषाको पूर्ण कियाँ।" उपरोक्त शिलालेख स्वयं चामुण्डराजका लिखा हुआ अपना वर्णन है। परन्तु ऐसा जान पडता है इस शिलालेखका अधिक भाग अप्राप्य है। ऐसा मालूम देता है कि हेग्गडे कन्नने, अपने लिए केवल अढाई पंक्तिओंका लेख लिखनेके लिए, चामुण्डरायके मूल-लेखको तीन ओर अच्छी तरहसे घिसा दिया; और केवल एकही ओरके लेखको

---

४ देखो, लुईसराईस रचित 'श्रवणबेलगोलके शिलालेख' नं ३८।

५ देखो, मेलागानिका शिलालेख जिसको लुईस राईसने अपने 'श्रवण बेलगोलके शिलालेखोंकी भूमिकाकी पाद टीकामें उद्धृत किया है। पुनः देखो, एपिग्राफिया इन्डिका, भाग ५, शिलालेख नं. १८।

६ इन्द्र चतुर्थ, तृतीय कृष्णका पौत्र-देखा 'एपिग्राफिया इन्डिका' भाग ५, लेख नं० १८।

७-८ "ब्रह्मक्षत्रकुलोदयाचलशिरोभूषामणिर्भानुमान्
ब्रह्मक्षत्रकुलाब्धिवर्द्धनयशोरोचिः सुधादीधितिः।
ब्रह्मक्षत्रकुलाकराचलभवश्रीहारवल्लीमणिः
ब्रह्मक्षत्रकुलाग्निचण्डपवनश्चामुण्डराजोऽजनि॥
कल्पान्तक्षुभिताब्धिभीषणबलं पातालमल्लानुजम्
जेतुम् वज्जलदेवमुद्यतभुजस्येन्द्रक्षितीन्द्राज्ञया।

रख छोड़ा, जिसका अनुवाद ऊपर दिया है। "चामुण्डरायने एक ग्रन्थकी रचना की जिसका नाम चामुण्डराय पुराण है और जिसमें २४ तीर्थंकरोंका संक्षिप्त इतिहास है और उसके अन्तमें ईश्वर नाम शक संवत्सर ९०० (९७८ ईस्वी) उसकी तिथि दी हुई है[९]"। उपरोक्त शिलालेखके श्लोकोंमें दिया हुआ वर्णन चामुण्डरायपुराणके वर्णनसे मिलता जुलता है। उस पुराणके प्रारंभके अध्यायमें यह लिखा है कि उसका स्वामी गंगकुल चूडामणि जगदेकवीर नोलम्बकुलान्तक–देव था; और वह ब्रह्मक्षत्रवंशमें उत्पन्न हुआ था। अन्तके अध्यायमें यह लिखा है कि वह अजितसेनका शिष्य था।

पत्युः श्रीजगदेकवीरनृपतेर्ज्जैत्रद्विपस्याग्रतो
धावद्दन्तिनि यत्र भग्नमहतानीकं मृगानीकवत् ॥
अस्मिन् दन्तिनि दन्तवज्रदलितद्विट्कुम्भिकुम्भोपले
वीरोत्तंसपुरोनिषादिनि रिपुव्यालाङ्कुशे च त्वयि।
स्यात् को नाम न गोचरः प्रतिनृपो मद्बाणकृष्णोरग-
ग्रासस्येति नोलम्बराजसमरे यः श्लाघितः स्वामिना ॥
खातः क्षारपयोधिरस्तु परिधिश्चास्तु त्रिकूटः पुरी—
लङ्कास्तु प्रतिनायकोऽस्तु च सुरारातिस्तथापि क्षमे।
तं जेतुं जगदेकवीरनृपते त्वत्तेजसीतिक्षणान्
निर्व्यूढं रणसिंहपार्थिवरणे येनोर्ज्जितं गर्ज्जितम् ॥
वीरस्यास्य रणेषु भूरिषु वयं कण्ठग्रहोत्कण्ठया
तृप्ताः सम्प्रति लब्धनिर्वृतिरसास्तत्-खड्गधाराम्भसा।
कल्पान्तं रणरङ्गसिंहविजयि जीवेति नाकाङ्गना
गीर्वाणीकृतराजगन्धकरिणे यस्मै वितीर्णाशिषः ॥
आक्रष्टुं भुजविक्रमादभिलषन् गङ्गाधिराज्यश्रियं
येनादौ चलदंकगङ्गनृपतिर्व्यर्थाभिलाषी कृतः।
कृत्वा वीरकपालरत्नचषके वीरद्विषः शोणितं
पातुं कौतुकिनश्च कोणपगणाः पूर्णाभिलाषीकृताः ॥

(त्यागड ब्रह्मदेवखम्भका शिलालेख, ई. स. ९८३; देखो, लु. रा. श्रवणबेलगोल. पृष्ठ ८५)

तथा कृतयुगमें वह षण्मुख था, त्रेतामें राम, द्वापरमें गाण्डीवि और कलियुगमें वीर मार्तण्ड था। फिर उसकी अनेक उपाधियोंके प्राप्त होनेके कारण लिखे हैं। खेडग युद्धमें विज्जलदेवको परास्त करनेसे उसको समरधुरन्धर-की उपाधि मिली। नोलम्बयुद्धमें गोनूर नदीकी तीर, उसकी वीरतापर 'वीरमार्तण्ड' की उपाधि, उच्छंगी गढके युद्धके कारण 'रणरंगसिंह' की उपाधि, बागलूरके किलेमें 'त्रिभुवन-वीर' और अन्य योद्धाओंका वध करने और गोविन्दको उस किलेमें प्रवेश कराने के उपलक्ष्यमें 'वैरीकुलकालदण्ड' की उपाधि; काम नामक नृपति के गढमें राजा तथा अन्य लोगोंको हरानेसे 'भुज-विक्रम' की उपाधि, अपने कनिष्ठ भ्राता नागवर्मा को उसके द्वेषके कारण मारडालने के निमित्त 'चलदंकगंग' की उपाधि; गंगभट मुदु राचय्यके वधसे 'समर-परशु-राम' और 'प्रतिपक्ष-राक्षस' की उपाधियां; सुभट-वीर के गढको नाश करनेके कारण 'भटमारि' की उपाधि; अपनी और दूसरोंके वीरगुणोंकी रक्षाके कारण 'गुणवं काव' की उपाधि; उसकी उदारता एवं सद्गुण आदिके कारण 'सम्यक्त्व रत्नाकर' की उपाधि; दूसरोंके धन दारा हरण की इच्छा न करनेसे 'शौचाभरण' की उपाधि; हास्यमें भी कभी असत्य न बोलनेसे 'सत्य युधिष्ठिर' की उपाधि; अत्यन्त वीर योद्धाओंके शिरोमणि होनेके कारण 'सुभटचूडामणि' की उपाधि मिली। अन्तमें अपने ग्रन्थमें वह अपनेको 'कविजन-शेखर' भी कहता है।

इन उपरोक्त उल्लेखोंमेंसे बहुतोंका और कहीं वर्णन नहीं है। परन्तु यह बात ध्यान देने योग्य है कि इतने प्रसिद्ध और गौरवान्वित कार्योंके साथ उसके एक भी धार्मिक कार्यका वर्णन नहीं है। प्रत्युत आदिसे अन्त तक युद्ध और रक्तपातकी ही कथा वर्णित है।[१०]

परन्तु इस बातको सिद्ध करने के लिए सन्देह रहित प्रमाण उपस्थित है कि वृद्धावस्था प्राप्त होनेपर चामुण्ड-

९ लुईस राईस 'श्रवणबेलगोलके शिलालेख' भूमिका पृ. २२; तथा कर्नल मेकेन्जीका कलेक्शन (एच्. एच्. विल्सनद्वारा संपादित, भाग १, पृ. १४६; जहां यह लिखा है कि चामुण्डराय पुराणमें जैन धर्मके ६३ प्रसिद्ध पुरुषोंका वर्णन है।

१० देखो, लुईस राईस, 'श्रवण बेलगोलके शिलालेख,' भूमिका, पृ. ३४.

Aho ! Shrutgyanam

राय अधिकतर अपने गुरु अजितसेनकी सेवामें, धार्मिक विचारोंमेंही, अपना समय व्यतीत करता था और श्रवण बेलगोल (माइसोर) के विन्ध्यगिरि और चन्द्रगिरि पर गोमटेश्वर और नेमिनाथकी विशाल मूर्तियोंकी स्थापना करने और अपनी सम्पत्तिके अधिक भागका इन मूर्तियोंकी पूजामें व्यय करने के कारण उसका नाम जैनमतके महान् उन्नायकों में अमर हो गया।

राचमल्ल या राजमल्ल द्वितीय।

गंगवंशीय मारसिंह द्वितीयके मरणोपरान्त पाञ्चालदेव, जिसका पूरा नाम धर्ममहाराजाधिराज सत्यवाक्य कोंगुणी वर्मा पाञ्चलदेव था, सिंहासनारूढ हुआ। उसके अनन्तर राचमल्ल या राजमल्ल द्वितीय[११] राजा हुआ जिसका पूर्ण नाम धर्म–महाराजाधिराज सत्यवाक्य कोंगुणिवर्मा राचमल्ल था। चामुण्डराज राचमल्ल अथवा राजमल्ल द्वितीयका भी मन्त्री था। एक शिलालेखमें लिखा है, " राय (अर्थात् चामुण्डराय) नृपति राचमल्ल का श्रेष्ठ मन्त्री "[१२], और दूसरे में " चामुण्डराय जो वैभवमें नृपति राचमल्ल का द्वितीय है "[१३] बाहुबली–चरित्र नामक एक जैनग्रन्थमें यह लिखा है कि राजमल्ल नामक एक नृपति था, जो सिंहनन्दी मुनिका चरणोपासक था। चामुण्डभूप (अथवा राज) उसका मन्त्री था।[१४]

एक हस्तलिखित पुस्तकमें लिखा है कि " चामुण्डराय जो ' रणरङ्गमल्ल ' 'असहाय–पराक्रम' 'गुणरत्नभूषण' 'सम्यक्त्व–रत्न–निलय' आदि उपाधिधारी है, जो सिंहनन्दी महामुनिद्वारा अभिनन्दित गंगवंशीय नृपति राजमल्लदेवका महामात्य (प्रधानमन्त्री) है "[१५]।

चामुण्डराय द्वारा स्थापित मूर्त्तियों और मन्दिरों का वर्णन करनेके पूर्व यह उत्तम होगा कि हम उन स्थानोंका संक्षेप वर्णन करें जिनमें उक्त धार्मिक स्मारक स्थित हैं और जो आजकल जैनयात्रियोंके लिये अत्यन्त पवित्र तीर्थ हैं।

श्रवण बेलगोल।

श्रमण बेलगोल अर्थात् श्रमण या जैनियोंका बेलगोल माइसोरमें हसन जिलेके चन्नरयपत्न तालुकेमें एक ग्राम है। हेल बेलगोल और कोडी बेलगोल नामक दो बेलगोलोंसे पृथक् करनेके लिये यहां बेलगोलके पूर्व श्रवण शब्दका प्रयोग हुआ है। कानडी भाषामें बेलगोलका अर्थ है "श्वेतसरोवर" और बहुतसे शिलालेखोंमे " धवल सरोवर " " धवल सरस " और " श्वेतसरोवर " का उल्लेख है,[१६] और उस स्थान पर स्थित मनोहर सरोवर ही के कारण उसका यह नाम पडा होगा। वहां दो पहाडियां हैं। एक उसके उत्तरमें और एक दक्षिणमें। उनके

---

११ डॉ० फ्लीटके मतमें राचमल्ल नाम शुद्ध है (देखो, एपिग्राफिया इन्डिका, भाग ५, लेख नं. १८) और कुछ शिलालेखोंमें भी यह नाम मिलता है, पर जिन जैनलेखोंको हमने भूमिकामें उध्दृत किया है वे राजमल्ल नाम हीका उपयोग करते हैं। और देखो, एपिग्राफिया करणाटिका, भाग २, लेख नं. १०७.

१२ ' राचमल्ल भूवरवर मंत्री–रायने।'
(भांडारी बस्ती शिलालेख, लु. रा. श्रवण बेलगोल, लेख पृ० १०३)

१३ " राचमल्लं जगन् नुतन् आभूमिपण द्वितीयविभवं चामुण्डरायम् " (द्वारपालक दरवाजे के बाइं ओरका शिलालेख, देखो, लु. रा. श्रवण० पृ० ६७

१४ "श्रीदेशियगणाब्धिपूर्णमृगभृच्छ्रीसिंहनन्दिव्रति—
श्रीपादाम्बुजयुग्ममत्तमधुपः सम्यक्त्वचूढामणिः।
श्रीमज्जैनमताब्धिवर्धनसुधासूतिर्महिमण्डले
रेजे श्रीगुणभूषणो बुधनुतः श्रीराजमल्लो नृपः ॥...
तस्यामात्यशिखामणिः सकलवित् सम्यक्त्वचूडामणि-
र्भव्याम्भोजवियन्मणिः सुजनवन्दिव्रातचूडामणिः।
ब्रह्मक्षत्रियवैश्यशुक्तिसुमणिः कीर्त्यौघमुक्तामणिः
पादन्यस्तमहीशमस्तकमणिश्चामुण्डभूपोऽग्रणीः ॥"
(बाहुबलीचरित्र, श्लोक ६–११)

१५ सिंहनन्दिमुनीन्द्राभिनन्दितगङ्गवंशललाम......
श्रीमद्राजमल्लदेव—महीवल्लभमहामात्यपदविराज-
मान–रणरङ्गमल्ला—सहायपराक्रम—गुणरत्नभूषण—
सम्यक्त्वरत्ननिलयादिविविधगुणग्रामनामसमासा-
दितकीर्त्ति...श्रीमच्चामुण्डराय—भव्यपुण्डरीक—
द्रव्यानुयोगप्रश्नानुरूपं......"
(अभयचन्द्र त्रैविद्यचक्रवर्तीरचित गोमटसार टीका)

१६ श्रवण० शिलालेख नंबर १०८ तथा ५४.

Aho ! Shrutgyanam

नाम क्रमशः चन्द्रगिरि और विन्ध्यगिरि हैं, जिनपर जैनियोंके मन्दिर और प्रतिमाएं हैं; और शिलालेख भी हैं जिनसे जिनमतके प्राचीन इतिहासपर बहुत प्रकाश पडता है। एक परम्परागत किन्वदन्तीके अनुसार चन्द्रगिरि नाम चन्द्रगुप्तके कारण पडा है, जो अपने गुरु भद्रबाहु और उसके १२००० शिष्योंके साथ एक भयंकर दुर्भिक्ष के निकट आनेपर पाटलिपुत्र छोडकर दक्षिणकी ओर चला गया था। चन्द्रगिरि ही पर भद्रबाहुने अपने नश्वर शरीरका त्याग किया और अन्तकालमें उसके निकट केवळ एक ही शिष्य उपस्थित था और वह उपरोक्त चन्द्रगुप्त था। यदि हम जैन-किम्वदन्तीको स्वीकार करलें तो परिणाम वही निकलता है कि उपरोक्त चन्द्रगुप्त जो भद्रबाहु मुनिका शिष्य था, प्रसिद्ध मौर्य-सम्राट् ही है।[१७]

चन्द्रगिरि ही पर चामुण्डरायने एक भव्य मंदिर निर्माण करा था जिसमें उसने २२ वें जैन तीर्थंकर नेमिनाथ की मूर्ति स्थापित करवाई। तदनन्तर चामुण्डरायके पुत्रने उसका दूसरा खण्ड भी बनवा दिया और उसमें तेइसवें तीर्थंकर पार्श्वनाथकी मूर्ति स्थापित की गई। यह दोनों खण्ड ईसाकी दसवी शताब्दी में निर्मित हुए और उनसे इस समयकी गृह निर्माण कलाका उत्तम बोध होता है।

गोम्मटेश्वर।

विन्ध्यगिरिपर चामुण्डरायने बाहुबली अथवा भुजबलीकी, जिनका अधिक लोकप्रसिद्ध नाम गोम्मटस्वामी अथवा गोम्मटेश्वर है, एक विशाल प्रतिमाका निर्माण किया। कालान्तरमें चामुण्डरायका अनुकरण करके वीर-पाण्ड्यके मुख्याधिकारीने कर्कल (दक्षिणी कनारा) में सन् १४३२ ई० में गोम्मटेश्वर की दूसरी मूर्ति बनवाई। और कुछ काल उपरान्त प्रधान तिम्मराज ने येनूर (दक्षिणी कनारा) में सन् १६०४ ई० में गोम्मटेश्वरकी उसी प्रकारकी एक और मूर्ति बनवाई।[१८]

ये "विशाल एक ही पत्थरमें बनी हुई नग्न जैन-मूर्तियां संसारके आश्चर्योंमेंसे हैं"[१९] ये "निस्संदेह जैन-प्रतिमाओंमें सर्वोत्कृष्ट और समस्त एशियाकी पृथक्-स्थित प्रतिमाओंमें सबसे बडी हैं। ऊंचाई पर स्थित होनेके कारण, कोसोंतक दृष्टि गोचर होती हैं। और एक विशेष सम्प्रदायकी होने पर भी, उनका विशाल गुरुत्व और दिव्य शान्ति-प्रकाशक स्वरूपके कारण हमें उन्हें प्रतिष्ठा युक्त ध्यानसे देखना पडता है। श्रवण बेलगोल वाली सबसे बडी मूर्तिकी उंचाई लगभग ५६½ फीट है और कटिके निम्नभागमें उसकी चौडाई १३ फीट है। वह 'नीस (Gneiss)' पत्थरके एक बडे टुकडेसे काटकर बनाई गई है; और ऐसा जान पडता है कि जिस जगह पर वह आज स्थित है वहीं पर वह बनी थी। कर्कलवाली मूर्त्ति जो उसी पत्थर की है, परन्तु जिसकी लम्बाई १५ फीट कम है, अनुमानसे ८० टन तौलमें होगी। इन भीमकायमूर्तिओंमें सबसे छोटी येनूरवाली मूर्ति है जो ३५ फीट लम्बी है। ये तीनों मूर्तियां लगभग एकसी हैं, परन्तु येनूरवाली मूर्तिके कपोलोंमें गड्ढे हैं और उससे गंभीर मुसकुराहटकासा भाव प्रकट होता है, जिसके कारण लोगोंका यह कहना है, कि उसके प्रभावोत्पादक-भावमें न्यूनता आ गई है। जैन कलाकी अति एकनियमबद्धताका यह उत्तम प्रमाण है कि यद्यपि येनूरवाली मूर्तिकी मुसकराहटको छोडकर वस्तुतः तीनों विशाल मूर्तियां एक हीसी हैं, तथापि उनके निर्माण कालोंमें बडा अन्तर है[२०]।"

---

१७ इस विषय पर विशेष देखनेके लिये देखो—एपिग्राफिया कर्नाटिका, भाग २, भूमिका पृ० १-१४। और भी देखो मिसेज सिनक्लेयर स्टिवन्सन रचित "दि हार्ट आव जैनीजम" पृ० १०।

१८ श्रवण बेलगोलकी मूर्तियोंके लिये देखो—'इन्डियन एन्टीक्वेरी' भाग २, पृ. १२९; 'एपिग्राफिया इन्डिका,' भा. ७ पृ. १०८, लूईस राईसका 'माईसोर और कुर्ग' पृ. ४७। कर्कलकी मूर्तियोंके लिये देखो—'इन्डियन एन्टीक्वेरी' भाग २, पृ. ३५३, 'एपिग्राफिया इन्डिका' भा. ७, पृ. ११२। —येनूरकी मूर्तियोंके विषयमें देखो—'इन्डि. एन्टी.' भा. ५, पृ. ३७, एपि. इन्डि. भा. ७, पृ. ११२।

१९ देखो—'इम्पीरियल गेझेटियर आव इन्डिया' पृ. १११.

२० देखो—विन्सेण्ट स्मीथ रचित 'ए हिस्टरी आव फाईन आर्ट इन इन्डिया एन्ड सिलोन' पृ. २६८।

Aho ! Shrutgyanam

चामुण्डराय–निर्मित मूर्ति "केवल तीनोंमें अधिक प्राचीन अथवा लम्बी ही नहीं है, किन्तु बडी ढालू पहाडीकी चोटीपर स्थित होने और एतदर्थ उसके निर्माणमें बडी कठिनाइयोंका सामना करनेके कारण उसका वृत्तान्त सबसे अधिक रोचक है। यह मूर्ति दिगम्बर है और उत्तराभिमुख सीधी खडी है......जंघोंके ऊपर वह बिना सहारेके है। उरुस्थल तक वह वल्मीकसे आच्छादित बनी हुई है, जिसमेंसे सर्प निकल रहे हैं। उसके दोनों पदों और बाहुओंके चारों ओर एक वेलि लिपटी हुई है जो बाहुके ऊपरी भागमें फलोंके गुच्छोंमें समाप्त होती है। एक विकसित कमलपर उसके पैर स्थित हैं।"[२१]

श्रवण बेलगोलकी गोमटेश्वरकी मूर्तिके निम्न भागका शिलालेख।

श्रवण बेलगोलकी गोम्मटेश्वरकी मूर्तिके दाहिने और बाएं पैरोंके समीप छोटासा लेख है। दाहिने पैरका लेख यह है:—

श्रीचामुण्डराजं माडिसिदं;
श्रीचामुण्डराजन [शे] ग्व [व] इत्तां;
श्रीगंगराज सुत्तालयवं माडिसिद;

अर्थात्—

श्रीचामुण्डराजने निर्माण कराया,
श्रीचामुण्डराजने निर्माण कराया,
श्रीगंगराजने चैत्यालय निर्माण कराया।

"प्रथम और तृतीय पंक्तिकी लिपि और भाषा कानडी है। द्वितीय पंक्ति प्रथम पंक्तिका तामिल अनुवाद है, और उसमें दो शब्द है जिनमें पहला 'ग्रन्थ' और दूसरा 'वट्टेलुत्तु' लिपिमें है। पहिली दो पंक्तियोंमें यह लिखा है कि चामुण्डराजने मूर्ति बनवाई; और तीसरी पंक्तिमें लिखा है कि गंगराजने मूर्त्तिके आसपासका भवन बनवाया।"[२२]

बाईं ओरके पत्थरमें यह लेख है—

श्रीचामुण्डराजे करविपलें
श्रीगंगराजे सुत्ताले करविपले।

अर्थात्—

श्रीचामुण्डराजने निर्माण कराया।
श्रीगंगराजने चैत्यालय निर्माण कराया।

"इसकी लिपि नागरी है और भाषा मराठी है... शायद महाराष्ट्र देशके जैनयात्रियोंके लाभार्थ मराठी भाषाका प्रयोग किया गया है।"[२३]

चित्र ई ६ में † हमने उपरोक्त शिलालेखोंकी प्रतिलिपि दी है। पहिले बाईं ओरका लेख है। दोनों पंक्तियोंमें एकही प्रकारके अक्षर होनेके कारण बाईं ओर के लेखका गंगराजके समयमें खुदा जाना माना जाता है, जब उसने चामुण्डराज स्थापित गोमटेश्वर मूर्तिके चारों ओर भवन निर्माण कराया। यह देखते हुए भी यह बात सम्भव जान पडती है कि बाईं ओरका लेख दाहिनी ओर वालेका केवल दूसरी भाषामें रूपान्तर है।

गंगराज।

गंगाराज होयशाल–वंशीय–नृपति विष्णुवर्धनका मन्त्री था, जिसने ईसाकी १२ वीं शताब्दीमें शासन किया। लगभग सन् ११६० ई० के एक शिलालेखमें गंगराज, चामुण्डराय और हुल्लकी प्रशंसा इस प्रकार पाई जाती है।

"यदि यह पूछा जाय कि प्रारम्भमें (श्रवण बेलगोलमें) जैन–मतके कौन २ उन्नायक थे–तो कहना होगा कि (वे थे) राचमल्ल नृपति का मन्त्री राय, उसके

इन मूर्तियोंकी शिल्पकलाका विशेष वर्णन जाननेके लिये— स्लरक (Slurrock) रचित 'मेन्युअल आव साउथ कनारा, पृ. ८५, फर्गुसन साहेबकी 'हिस्टरी आव इन्डियन आर्चिटेक्चर, पृ. २६७, 'फ्रेजर्स मेगजीन' के मई १८७५ के अंकमें प्रकाशित मि. वालहाउस का लेख, इत्यादि देखने चाहिए।

२१ देखो, एपिग्राफिया कर्नाटिका, भाग २, भूमिका पृ. २८.

२२-२३ देखो, एपिग्राफिया इन्डिका, भाग ७, पृ. १०८-९।

† इस लेखके साथ लेखकने कई चित्र देने चाहे थे परंतु उनका अकाल स्वर्गवास होजानेके कारण वे चित्र हमें न मिल सके।

संपादक।

अनन्तर, नृपति विष्णुका मन्त्री गंग; और उसके पश्चात् नृसिंहदेव नृपतिका मन्त्री हुल्ल। यदि और भी इसके योग्य हैं, तो क्या उनके नाम न लिये जायंगे?"[२४]

मूर्तिके नीचेके शिलालेखके अतिरिक्त ११८० ई० के लगभगके एक और शिलालेखमें इस प्रकार इसका वर्णन है—

"जिसमें बुद्धिमत्ता, धर्मिष्ठता, वैभव, उत्तमाचरण, और शौर्यका समावेश है, ऐसा राचमल्ल गंगवंशका चन्द्र था, उसका यश भूमंडल व्यापी था। नृपतिसे वैभवमें द्वितीय [उसका मन्त्री चामुण्डराय], मनुके समान, क्या उसीने अपने प्रयत्नसे यह गोम्मट नहीं बनवाया?"[२५]

भुजबलीका वृत्तान्त, किम्बदन्तियोंके आधार पर। तीनों मूर्त्तियां बाहुबली, या भुजबलीको व्यक्त करती हैं, जिनको गोम्मटेश्वर भी कहते हैं और जो जैनियोंके प्रथम तीर्थंकर आदिजिन ऋषभनाथके पुत्र थे। लोककथाके अनुसार ऋषभनाथ एक राजा थे और उनके दो स्त्रियां थीं, जिनके नाम थे नन्दा (या कुछ लोगोंके मतमें सुमंगला) और सुनन्दा। नन्दा या सुमंगलाने दो जुड़वें उत्पन्न किए; जिनमें एक लड़का था और एक लड़की थी और जिनके नाम थे क्रमशः भरत और ब्राह्मी। जब ऋषभदेवने अनन्त ज्ञानकी खोजमें वनवास स्वीकार किया; तब उन्होंने अपने राज्यका भार भरतको सोंपा। बाहुबली और उनकी बहिन सुन्दरी सुनन्दाकी सन्तान थे, और जब उनके पिताने अपने पुत्रोंको राज बांट दिया तो बाहुबली तक्षशिलाके सिंहासनपर सुशोभित हुए। भरतके पास एक अद्भुत चक्र था जिसका सामना कोई भी योद्धा रणमें न कर सकता था। इस चक्रकी सहायतासे पृथ्वी, विजय करके भरत अपनी राजधानीको लौट आया। परन्तु चक्र राजधानीमें (अथवा दूसरोंके मतसे—अस्त्रालयमें) प्रविष्ट नहीं होता था। भरतने इसका अर्थ यह समझा कि पृथ्वीमें कोई ऐसा राज्य शेष है जिसको उसने नहीं जीता है; और विचार करनेपर यह फल निकला कि केवल तक्षशिलाका राज्य शेष था, जहां उसका भाई भुजबली राज्य करता था। तब भरतने अपने भाई भुजबली पर युद्ध ठान दिया परंतु उस घोर युद्धमें विजयलक्ष्मी भुजबलीको प्राप्त हुई। भरतके चक्रसे भी भुजबलीको कोई हानि नहीं पहुंची। परन्तु विजयी होनेपर भी इस संसारको असार जानकर भुजबली क्षणभर में समाधिस्थ हो गए। भरतने भुजबलीको वंदना की और फिर अपने स्थानको लौट आए। फिर भुजबली कैलाश पर्वतके शिखरोंमें चले गए और वहां (अथवा दूसरे वर्णनके अनुसार—युद्धभूमिमें) वर्षभर मूर्त्तिकी भांति खडे रहे[२६] तटस्थ वृक्षोंमें लपटी हुई लताएं उनके गलेमें लिपट गईं। उन्होंने अपने वितानसे उनके शिरपर छत्र सा बना दिया और उनके पैरोके बीचमें कुश उग आए और देखनेमेंमे वे मानों वल्मीक प्रतीत होने लगे[२७]। अन्तमें भुजबलीको अनन्त ज्ञानकी प्राप्ति हुई और वे केवली हो गए।

परन्तु एक शिलालेखमें यह लिखा है कि भुजबली या बाहुबली और भरतके पिता पुरु थे[२८]। और उसके आगे यह लिखा है कि,—"पुरुदेवके पुत्र भरतने, जिसके चारों ओर उसके पराजित राजा बास करते हैं, प्रसन्नतासे विजयी बाहुबली केवली की मूर्त्ति निर्माण कराई जो पौदनपुरके समीप है और ५२५ चाप लम्बी है। बहुत समयके अनन्तर अनेक लोक भयकारी कुक्कुट-सर्प उस

२४ देखो, एपिग्राफिआ करनाटिका. भाग २, भूमिका पृ. ३४. हुल्ल होयशालवंशीय नृपति नरसिंह प्रथमका मंत्री था। वह १२ वीं शताब्दीमें विद्यमान था।

२५ देखो. एपि. कर्ना. भा. २, पृ. १५४. मूर्तिके निर्माणके संबंधमें यह पंक्ति है—" चामुण्डरायं मनुप्रतिमं गोम्मटं अल्ते माडिसिदन् इन्ती देवनं यत्नदिम्"

२६ देखो, जिनसेन रचित हरिवंश पुराण, अध्याय ११। कुछ भिन्न वर्णनके लिए देखो, कथाकोश (टूवेनी द्वारा इंग्रेजीमें अनुवादित) पृ. १९२-९५.

२७ देखो, कथाकोश, पृ. १९२-९५.

२८ " पुरुसूनु-बाहुबलि-बोल् " एपि. कर्ना. भा. २ शिलालेख नं. ८५, पृ. ६७.

Aho ! Shrutgyanam

जैनकी मूर्त्ति के आसपास उत्पन्न होगए और इसी कारण मूर्त्तिका नाम कुक्कुटेश्वर पड़ गया " [२९]

इन लोकप्रसिद्ध कथाओंके द्वारा हम समझ सकते हैं कि उन वल्मीकमयी मूर्त्तियों का क्या भाव है जिनसे सर्प निकल रहे हैं, तथा श्रवण बेलगोल कर्कल और येनूर गोम्मटेश्वरकी मूर्त्तियोंमें लिपटी हुई लताओंका क्या तात्पर्य है ? " तीनों मूर्तियोंमें ये सब बातें एक समान हैं और उनसे यह भाव प्रकट होता है कि, वे तपस्या में ऐसे पूर्ण लीन होगए हैं कि उनके पैरों पर वल्मीक लग जाने; और शरीरमें लताओंके चिपट जाने पर भी सांसारिक विषयोंपर उनका ध्यानभंग नहीं होता । " [३०]

चामुण्डरायकी मूर्त्तिके स्थापनका वृत्तान्त ।

बाहुबली चरित्र नामक एक संस्कृत काव्य में चामुण्डराय—द्वारा—स्थापित गोम्मटेश्वरकी मूर्त्तिकी स्थापनाकी कथा इस प्रकार वर्णित है ।

बाहुबली चरित्रकी कथा ।

द्रविड देशकी मधुरा नगरी (वर्तमान मदुरा) में राजमल्ल नामक एक राजा था; जिसने जैन सिद्धान्तों के प्रचारका उद्योग किया और जो देशीय—गण [३१] के सिंहनन्दिका उपासक था । उसके मन्त्रीका नाम चामुण्डराय था । एक दिन जब राजा अपनी सभामें मन्त्रीयोंके सहित विराजमान था, एक पथिक व्यापारी आया और उनसे कहा कि उत्तरमें पौदनपुरी नामक एक नगर है जहां भरत द्वारा स्थापित बाहुबली अथवा गोम्मटकी एक मूर्ति है । यह सुनकर भक्त चामुण्डरायने उस पवित्र मूर्त्तिके दर्शन करनेका विचार किया और घर जाकर अपनी माता कालिकादेवीसे यह वृत्तान्त कहा, जिसपर उसने भी वहां जानेकी इच्छा प्रकट की । चामुण्डराय तब अपने गुरु अजितसेनके पास गया, जो सिंहनन्दिका उपासक था । उसने सिंहनन्दिके सन्मुख यह प्रतिज्ञा की कि जब तक मैं बाहुबली मूर्त्तिके दर्शन न कर लूंगा तब तक मैं दूध न ग्रहण करूंगा । नेमिचन्द्र अपनी माता और अनेक सैनिकों एवं सेवकोंके सहित चामुण्डराजने यात्रा प्रारंभकी और विन्ध्यगिरि (श्रवण बेलगोल) में जा पहुंचा । रात्रिमें जैनदैवी कुष्माण्डी (बाईसवें तीर्थंकर नेमिनाथकी यक्षिणी दासी) ने चामुण्डराज नेमिचन्द्र और कालिकाको स्वप्नमें दर्शन दिया और कहा कि पौदनपुरीको जाना अत्यन्त कठिन है, परन्तु इसी पहाडीपर पहिले पहिल रावण द्वारा स्थापित बाहुबलीकी एक मूर्त्ति है । और उसके दर्शन तभी हो सकते हैं, यदि एक सुवर्ण—बाणसे इस पहाडीको फाड दिया जाय । स्वप्नके अनुसार, दूसरे दिन चामुण्डरायने दक्षिणाभिमुख पहाडीपर खडे होकर अपने धनुषसे एक सुवर्ण-बाण छोडा । तत्क्षण पहाडके दो टुकडे होगए और बाहुबलीकी एक मूर्त्तिके दर्शन हुए । चामुण्डरायने तब उस मूर्त्तिकी स्थापना और प्रतिष्ठा की तथा उसके पूजार्थ कुछ भूमि लगा दी । जब नृपति राजमल्लने यह वृत्तान्त सुना तो उसने चामुण्डराजको 'राय'की उपाधि प्रदान की और उस मूर्त्तिकी नियमित पूजाके लिए और भी भूमि प्रदान की ।

राजावली कथेके अनुसार कथा ।

देवचन्द्र-द्वारा-रचित कानडी भाषाकी एक नवीन पुस्तकमें भी यही कथा वर्णित है, परंतु कहीं कहीं कुछ बातोंमें अन्तर है । उसमें लिखा है कि चामुण्डराय राजा

---

२९ " धृत—जयबाहु—बाहुबलिकेवलि—रूपसमान—पञ्चाविंशति—समुपेत—पञ्चशतचापसमुन्नतियुक्तम् अप्प तत्—प्रतिकृतियं मनोमुददे माडिसिदं भरतं जिताखिलक्षितिपतिचाक्रि पौदनपुरान्तिकदोल् पुरुदेव—नन्दनम् । चिरकालं सले तज्जिनांतिक—धरित्री—देशादोल् लोकभीकरणं कुक्कुटसर्पसंकुलं असंख्यं पुट्टि दल् कुक्कुटेश्वरनामन्......" (देखो, एपि. कर्ना. भा. २, पृ. ६७.)

३० लु. रा. का, श्रवण बेलगोल, भूमिका पृ. ३३.

३१ जब नन्दी संघके जैन आचार्य सारे देशमें फैल गये, तब उनके संघका नाम 'देशीयसंघ' हो गया ।

देखो बाहुबली चरित्रका निम्न श्लोक—

" पूर्वं जैनमतागमाब्धिविधुवच्छ्रीनन्दिसंघेऽभवन्
सुज्ञानर्द्धितपोधनाः कुवलयानन्दा मयूखा इव ।
सत्सङ्घे भुवि देशदेशानिकरे श्रीसुप्रसिद्धे सति
श्रीदेशीयगणो द्वितीयविलसन्नाम्ना मिथः कथ्यते ।।"

Aho ! Shrutgyanam

राजमल्लका एक अधीन-शासक था। उसकी माताने पद्म पुराणका पाठ सुनते समय यह सुना कि पौदनपुरमें बाहुबलीकी एक मूर्त्ति है। इस लिए अपने पुत्रसमेत वह उस मूर्त्तिके दर्शनको चली, परन्तु मार्गमें एक पहाडीपर, जहां भद्रबाहु स्वामीका देहान्त हुआ था उसने स्वप्न देखा जिसमें पद्मावती देवीने उसे दर्शन देकर कहा कि उसी पहाडीपर बाहुबलीकी एक मूर्त्ति है जो पत्थरोंसे आच्छादित है, और जिसकी पूर्व समयमें राम, रावण, और मन्दोदरीने पूजा की थी। फिर दूसरे दिन एक बाण मारनेसे बाहुबलीकी मूर्त्ति दृष्टि-गोचर हुई।

इस प्रकार जैनियोंकी किम्वदन्तियोंके अनुसार यह पता लगता है कि चामुण्डरायने उस मूर्त्तिको नयी निर्माण नहीं कराया, किन्तु उस पहाडीपर एक मूर्त्ति विद्यमान थी जिसकी उसने सविधि स्थापना और प्रतिष्ठा कराई। इन लोक--कथाओंके अनुसार श्रवण बेलगोलके प्रधान पुरोहितने भी यह कहा था, कि प्राचीन कालमें इस स्थानपर एक मूर्त्ति थी, जो पृथ्वीसे स्वतः निर्मित हुई थी, और जो गोम्मटेश्वर स्वामीके स्वरूपकी थी। उसकी राक्षसराज रावण सुखप्राप्तिके हेतु उपासना करता था। चामुण्डरायको यह विदित होनेपर उसने कारीगरों द्वारा उस मूर्त्तिके सब अंगोको उचित रूपसे सुडौल बनवाया। उसके सब अंग मोक्षकी इच्छासे ध्याना-वस्थित गोम्मटेश्वर स्वामीके असली स्वरूपके समान थे। उसने उनके चारों ओर बहुतसे मन्दिर और भवन बनवाए। उनके बनजानेपर उसने बडे उत्सव एवं भक्ति-पूर्वक मूर्त्तिकी उपासनाका क्रम प्रारंभ किया।[३२] स्थल-पुराणसे उद्धृत एक अवतरणमें यह लिखा है जो उपरोक्त कथासे मिलता-जुलता है।

स्थल-पुराणमें वर्णित कथा।

"चामुण्डराजने सपरिवार, पदनपुरस्थित-देव गोम्म-टेश्वर एवं उसके आसपास स्थित १२५४ अन्य देवताओंके दर्शनार्थ यात्रा प्रारंभ की। देव गोम्मटेश्वरके सम्बन्धमें बहुत कुछ सुनकर, वह मार्गमें श्रवण बेलगोल क्षेत्रमें जा पहुंचा। वहां उसने गिरे पडे मन्दिरोंका जिर्णोद्धार किया और अन्य विधानोंके साथ पंचामृत-स्नान की भी प्रक्रिया कि। दैनिक, मासिक, वार्षिक एवं अन्य उत्सवोंके संचालनके, लिए उसने सिद्धान्ता-चार्यको मठका गुरु नियत किया। मठमें उसने एक 'सत्र' स्थापित किया जहां यात्रियोंके लिए भोजन औषध और शिक्षाका प्रबन्ध था। उसने अपनी जाति-वालोंको इस लिए नियत किया, कि वे तीनों वर्णोंके यात्रियोंकी, जो दिल्ली, कनकाद्रि, स्वित्पुर, सुधापुर, पापापुरी, चम्पापुरी, सम्मिदगिरि, उज्जयन्तगिरि, जय-नगर आदिस्थानोंसे आवें, आदरपूर्वक सेवासुश्रूषा करें। इस कार्यके लिए मन्दिरमें कई ग्राम लगादिए गए। उसने चारों दिशाओंमें शिला-शासन लगवा दिए। १०९ वर्षों तक उसके पुत्रपौत्रोंने इस दानको निय-मित रक्खा"[३३]

अब हमें इस बातका निर्णय करना उचित है कि यह बात कहांतक ठीक है कि चामुण्डराय श्रवण बेल-गोलकी गोम्मटेश्वरकी मूर्त्तिका केवल अनुसन्धानकर्त्ता था। भुजबली चरित्र अथवा बाहुबली चरित्र नामक ग्रन्थ संस्कृत छन्दोंमें है, और उसमें केवल जनश्रुति-योंका समुच्चय है, और कई मुखोंतक पहुंचनेके कारण उनमें विचित्रता आगई है। इस ग्रन्थका रचनाकाल ठीक ठीक निर्णय नहीं किया जा सकता। परन्तु इसकी लेखशैलीसे यह अनुमान किया जा सकता है कि यह गोम्मटेश्वरकी मूर्त्तिके स्थापनाके बहुत काल पश्चात् बना होगा। राजावली कथे जैन इतिहास, किम्बदन्ती, आदिका बृहत् संग्रह है जिसको वर्तमान शताब्दीके पूर्व-भागमें माईसोर राजवंशकी एक महिला देवी रम्मके निमित्त मलेपूरकी जैनसंस्थाके देवचन्द्रने रचा था।[३४]

---

३२ वेली पागलका ऐतिहासिक और किम्वदन्तियोंके आधार पर वर्णन. (एशियाटिक रिसर्च, भाग ९, पृ. २६३.)

३३ "स्थल पुराण" से लिया हुआ केप्टेन आई. एस. एफ. मेकेंजीका अवतरण (इन्डियन एन्टीक्वेरी, भाग २, पृ० १३०).

३४ देखो, लु. रा. का श्रवण बेलगोल, भूमिका पृ. ३, (१८८९).

Aho ! Shrutgyanam

एतदर्थ यह ग्रन्थ भी प्रस्तुत प्रश्नके निर्णयके हेतु प्रमाणकोटिमें नहीं परिगणित किया जा सकता। राजा-वली-कथे और स्थलपुराणमें, ग्रन्थकर्ताओंने ऐतिहासिक घटनाओंकी यथार्थताके लिए कोई प्रयत्न नहीं किया है, क्योंकि उनका विषय दन्तकथाओं एवं जनश्रुतियोंका संग्रह था। यह सत्य है कि इन कथाओंमें कहीं कहीं ऐतिहासिक सामग्री विद्यमान है, परन्तु उनको तबतक बिना जांचे ऐतिहासिक घटनाएं न मान लेना चाहिए, जबतक अन्य अधिक विश्वस्तसूत्रोंके आधारपर उनकी यथार्थता सिद्ध न हो जाय। स्थलपुराणकी निर्मूल बातोंके उदाहरण स्वरूप यह पंक्ति लिखी जा सकती है—" चामुण्डराज, दक्षिण मदूराका राजा, और जैन-क्षत्रिय-पाण्डु-वंशोत्पन्न था।"[३५] इससे इस बातका पता लगेगा कि किस प्रकार किम्वदन्तियोंमें मन्त्री चामुण्डरायको मदूराका राजा वर्णन किया गया है।

यदि यह सिद्ध करनेके लिए, कि, इस मूर्त्तिको किसने निर्माण कराया, कोई विश्वस्त अथवा समकालीन लेख न होता तो इन किम्बदन्तियोंके आधारपर यह बात संदिग्ध रहती कि चामुण्डरायने स्वयं इस मूर्त्तिको बनवाया। परन्तु हमारे लिए यह सौभाग्यकी बात है कि यह सिद्ध करनेके लिए लेख विद्यमान है कि, चामुण्डराय हीने न कि और किसीने, गोम्मटेश्वरकी मूर्त्ति बनवाई।

सबसे प्रथम, उस मूर्तिके पैरोंवाला शिलालेख है—जिसका वर्णन पहिले हो चुका है—जिसमें यह साफ साफ लिखा है कि चामुण्डरायने इस मूर्त्तिको निर्मित किया। द्वितीय, एक अन्य शिलालेखमें, जिसकी तिथि ११८० ई० है, हम ऊपर देख चुके हैं कि चामुण्डरायने निज उद्योगसे इस मूर्तिको बनवाया। इन लेखोंका समर्थन एक पुस्तकसे होता है, जिसका नाम है गोम्मटसार और जिसको आचार्य नेमिचन्दने, जो चामुण्डरायके समकालीन थे, रचा है। उसमें निम्न-लिखित वर्णन है।

" गोम्मटसंग्रहसूत्रकी जय हो, जिसमें गोम्मटगिरि स्थित गोम्मटाजिन और गोम्मटराज–निर्मित दक्षिण–कुक्कुट–जिनका वर्णन है।"

" उस गोम्मटकी जय हो, जिसके द्वारा मूर्त्तिका मुख निर्मित हुआ, जिसको सब सिद्ध और देवताओंने देखा।"[३६]

गोम्मटेश्वरकी मूर्त्तिके कारण जिस गिरिपर यह स्थित थी उसका नाम गोम्मटगिरि होगया और इस बारेमें नेमिचन्द्र यह शब्द प्रयुक्त करते हैं। " चामुण्डराय द्वारा निर्मित (विणिम्मिय)"। हम कह चुके हैं कि पौदनपुरमें भरत द्वारा स्थापित गोम्मटेश्वरकी मूर्त्तिका नाम कुक्कुटेश्वर हो गया, जब उसके चारों ओर सर्प निकल आए। चामुण्डराय द्वारा स्थापित मूर्त्तिका नाम दक्षिण कुक्कुट-जिन होगया, जिससे उत्तरीय मूर्त्तिसे वह भिन्न जानी जा सके। इस मूर्त्तिको बनवानेके कारण चामुण्डरायका नाम गोम्मटराय पडगया।

इन प्रमाणोंसे इस बातमें कोई सन्देह नहीं रह जाता कि चामुण्डराय ही ने इस मूर्त्तिको निर्माण कराया। इस महान् कार्यके कारण वह स्वयं गोम्मटराय कहलाने लगा। परन्तु यदि उसने केवल मूर्तिका अनुसन्धान ही किया होता तो कदापि यह बात न होती। चामुण्डरायके गुरु नेमिचन्द्र मूर्त्तिस्थापनके समय अवश्य विद्यमान होंगे (क्योंकि बाहुबली चरित्रतकमें यह लिखा है कि उस अवसरपर नेमिचन्द्र भी उपस्थित थे) अतएव

३५ केप्टेन मैकेन्जी द्वारा उद्धृत 'स्थलपुराण' का अवतरण (इन्डि. एन्टी. भाग २, पृ. १३०) यह कहना भी उचित होगा कि सेनगणकी पट्टाबिलिमें भी ऐसा ही लिखा हुआ है—" दक्षिण मधुरानगर निवासि—क्षत्रियवंश शिरोमणी—दक्षिण तैलंग कर्नाटक देशाधिपति चामुण्डराय प्रतिबोधक—बाहुबील प्रति बिम्ब गोमट प्रतिष्ठापकाचार्य—श्री अजितसेन भट्टारकाणाम्।" (देखो, जैन सिद्धान्तभास्कर, भाग १, सं. १, पृ. ३८.)

३६ " गोम्मटसंगहसुत्तं गोम्मटसिहरुवरि गोम्मटजिणो य।
गोम्मटरायविणिम्मियदक्खिणकुक्कुडजिणो जयउ ॥
जेण विणिम्मिय-पडिमा-वयणं सवट्ठसिद्धिदेवेहिं ॥
सबपरमोहिजोगिहिं दिट्ठं सो गोम्मटो जयउ ॥
(गोम्मटसार, कर्मकाण्ड, श्लोक ९६८-६९)

Aho ! Shrutgyanam

नेमिचन्द्रके शब्दोंको, जिनका समर्थन शिलालेखसें होता है, इस प्रश्नके सम्बन्धमें प्रमाणित मानना चाहिए।

तो फिर इसका क्या कारण है कि बाहुबली चरित्र राजावली कथे आदिग्रन्थोंमें चामुण्डरायको मूर्त्तिका केवल अन्वेषकही लिखा गया है? शायद कारण यह हो कि इन ग्रन्थोंके लेखक मूर्त्तिको अधिक प्राचीन कहकर अधिक पूज्य और पवित्र बनाना चाहते थे।

गोम्मटरायकी मूर्त्तिके सम्बन्धमें एक और किम्बदन्ती है जिसमें इस बातका वर्णन है कि ऐसि मूर्त्तिको स्थापन करनेके कारण चामुण्डरायके गर्वने किस प्रकार नीचा देखा। कथा इस प्रकार है:—

" इस मूर्त्तिको स्थापित करनेके अनन्तर चामुण्डराय यह सोचकर मारे गर्वके फूला न समाया कि मैंने अपने ही सामर्थ्यसे, इतने धन और परिश्रमसे इस देवताकी स्थापना करा ली। तदनन्तर जब उसने देवताकी पंचामृत-स्नान-विधि की, तो इस पदार्थसे भरे अनेक पात्र चुक गए, परन्तु देवताकी अलौकिक मायासे, पंचामृत तोंदीसे नीचे न जा सका, जिससे उपासकके व्यर्थाभिमानका नाश हो। कारण न जानकर चामुण्डरायको यह सोचकर अत्यन्त शोक हुआ कि पंचामृतसे समस्त मूर्त्तिको स्नान करानेकी मेरी इच्छा पूर्ण न हुई। जब वह इस अवस्थामें था, देवताकी आज्ञानुसार पद्मावती नाम्नी अप्सरा एक वृद्धा निर्धन स्त्रीका रूप धारणकर प्रकट हुई, जिसके हाथमें एक बेलियगोलमें (छोटी चांदीकी कटोरी) मूर्त्तिके स्नानके हेतु पंचामृत था। उसने चामुण्डरायसे मूर्त्तिको स्नान करानेका प्रस्ताव प्रकट किया। परन्तु चामुण्डराय यह समझकर, उस असंभव प्रस्तावपर हंस दिया, कि जिसको मैं नहीं कर सका उसे यह करने चली है। परन्तु विनोदार्थ उसने उसे यह करनेकी आज्ञा देदी। तब दर्शकोंको यह देखकर बडा आश्चर्य हुआ कि उसने उस चान्दीके छोटे पात्रहीसे समस्त मूर्त्तिको स्नान करा दिया। तब चामुण्डरायने अपने अपराध एवं गर्वके लिए शोक प्रकाशित करके, बडे आदरसे, द्वितीय बार स्नानकी विधि की, जिसमें पहिले उसने इतनी सामग्री व्यर्थ खो दी थी, और पूर्ण रूपेण उसने मूर्त्तिके समस्त शरीरको स्नान कराया। उस समयसे इस स्थानका नाम, उस चान्दीके पात्रके कारण, जो पद्मावती हाथमें लिए थी, बेलियगोल पड गया।"[३७]

मूर्त्ति निर्माणकी तिथि।

अब हम अनुमानसे उस तिथिका निश्चय करेंगे जिसमें चामुण्डरायने गोम्मटेश्वरकी मूर्त्ति निर्माण कराई। हम कह चुके हैं कि चामुण्डराय मारसिंह द्वितीय और राचमल्ल या राजमल्ल द्वितीयका मन्त्री था। किम्बदन्तीके अनुसार राजमल्लके समयमें मूर्त्ति स्थापित हुई। हम देख चुके हैं कि मारसिंह द्वितीयके शासनकालमें चामुण्डरायने अनुपम शौर्यकी ख्याति प्राप्त की थी और एक शिलालेखमें, जिसमें उसने अपना वृत्तान्त दिया है, वह केवल अपनी जीतोंका वर्णन करता है। उसके द्वारा किए हुए किसी धार्मिक कार्यका उनमें वर्णन नहीं है। यदि मारासिंह द्वितीयके समयमें उसने इस विशाल-मूर्त्तिका निर्माण कराया होता तो वह इस बातका अवश्य वर्णन करता। क्योंकि इससे उसका नाम अमर हो गया है। मारासिंह द्वितीयकी मृत्यु सन ९७५ ई० में हुई। चामुण्डराय अपने ग्रन्थ चामुण्डराय पुराणमें अपनी वीरताका सविस्तर वर्णन करता है और अपनी समस्त उपाधियोंका वर्णन करके उनके प्राप्तिके कारण भी बताता है; परन्तु गोम्मटेश्वरकी मूर्त्तिके निर्माणका तनिकभी उल्लेख नहीं किया है। इस ग्रन्थके अन्तमें, उसका रचना काल शक ९०० (९७८ ईस्वी) दिया है। अतएव ९७८ ईस्वीके अनन्तर और राजमल्ल या राचमल्ल द्वितीयके शासनके अन्तिम वर्षके पूर्व गोम्मटेश्वरकी इस मूर्त्तिका निर्माण हुआ होगा। राजमल्ल द्वितयिने ९८४ ईस्वीतक राज्य किया। इस लिए

---

३७ एशियाटिक रीसर्च, भाग ९, पृ. २६६। उपरोक्त वर्णनमें श्रवण बेलगोलके नाम पडनेका बिल्कुल दूसरा कारण बताया गया है। अभी कुछ दिन हुए जैनोंने गोम्मदेश्वरका पंचामृत स्नान कराया था।

Aho ! Shrutgyanam

९७८ और ९८४ ईस्वीके अन्तर्गत कालमें इस मूर्त्तिका निर्माण हुआ होगा।

बाहुबली चरित्रमें एक श्लोक है जो मूर्त्तिस्थापनका ठीक ठीक समय बताता है। वह श्लोक इस प्रकार है—

कल्क्यब्दे षट्शताख्ये विनुतविभवसंवत्सरे मासि चैत्रे,
पञ्चम्यां शुक्लपक्षे दिनमणिदिवसे कुम्भलग्ने सुयोगे।
सौभाग्ये मस्तनाम्नि प्रकटितभगणे सुप्रशस्तां चकार
श्रीमच्चामुण्डराजो वेल्गुलनगरे गोमटेश-प्रतिष्ठाम्॥"

अर्थात्—श्रीचामुण्डरायने बेलगुल नगरमें कुम्भलग्नमें, रविवार शुक्ल पक्ष चैत्र शुक्ल पंचमीके दिन विभवनाम कल्कि-संवत्सर ६०० के प्रशस्त मृगशिरा नक्षत्रमें, गोमटेशकी प्रतिष्ठा की।

यदि हम उपरोक्त तिथिको यथार्थ मान लें, क्योंकि सम्भव है ऐसे उत्तम मुहूर्तमें ऐसा बडा कार्य किया गया हो, तो हमें यह निकालना पडेगा कि ९७८ और ९८४ ईस्वीके अन्तर्गत किस दिन यह सब योग पडते थे। हमने भलीभांति सावधानीसे ज्योतिषकी रीतियोंके अनुसार सर्व सम्भाव्य तिथियोंको जांचा है और उसका परिणाम यह निकलता है कि रविवार ता० २ अप्रैल सन् ९८० ई० को मृगशिरा नक्षत्र था और पूर्व दिवससे (चैत्रकी बीसवीं तिथि) शुक्ल पक्षकी पंचमी लगगई थी, और रविवारको कुम्भ लग्न भी था। अतएव जिस दिन चामुण्डरायने मूर्त्तिकी प्रतिष्ठा की उसकी हम यही तिथि मान सकते हैं परन्तु उपरोक्त श्लोकमें एक बात है जो प्रथम बार देखनेसे इतिहासके विरुद्ध जान पडती है। इस श्लोकमें यह कहा गया है कि कल्क्यब्द ६०० विभवनाम संवत्सरमें गोम्मटेश्वरकी मूर्त्तिकी प्रतिष्ठा हुई। शक सम्वत् महावीरके निर्वाणके ६०५ वर्ष ५ मास पश्चात् प्रारम्भ होता है[३८] और कल्कि संवत् शक संवत्के ३९४ वर्ष ७ मास अनन्तर प्रारम्भ होता है। अर्थात् वीरनिर्वाणके १००० वर्ष अनन्तर कल्कि संवत् आरम्भ होता है। अतएव, कल्कि संवत्का आरम्भ ४७२ ईस्वीसे होता है। इसलिए कल्कि संवत् ६०० (४७२+६००) १०७२ ईस्वी सन् होगा। परन्तु यह बात इतिहासके विरुद्ध है, क्योंकि राचमल्ल द्वितीयका शासन सन् ९८४ ईस्वीमें समाप्त होता है। इसके अतिरिक्त ज्योतिष गणनासे भी यह ज्ञात होता है कि कल्कि संवत् ६०० में चैत्र शुक्ल पक्षकी पंचमी तिथि, चैत्रके तेईसवें दिन शुक्रवारको पडती है, जो उपरोक्त श्लोकसे विरुद्ध है क्योंकि उसके अनुसार उस साल चैत्र शुक्ल पंचमीको रविवार था।

अतएव कल्कि संवत् ६०० का अर्थ कल्कि संवत्की छठी शताब्दी लेना चाहिए। विभव संवत्को ८ वां मानना चाहिए जिससे इतिहासानुसार ठीक ठीक बैठे। इसलिए विभवनाम कल्कि संवत् ६०० के अर्थ लेना चाहिए कल्कि संवत्की छठी शताब्दीका ८ वां वर्ष—अर्थात् ५०८ कल्क्यब्द। यदि हम इस तिथिका स्वीकार कर लें तो ठीक ९८० ईस्वीको यह सम्वत् पडता है और श्लोकमें वर्णित सर्व ज्योतिषके योग भी मिल जाते हैं।

अतएव अब हमारे माननेके लिए दो मार्ग हैं। प्रथम; कि हम बाहुबली चरित्रके श्लोकको इतिहास-विरुद्ध कहकर प्रमाणित न मानें, या जैसा हमने किया है वैसा उसका अर्थ लगावें, जिससे वह शिलालेखकी तिथिसे मिल जाय। और हमारी समझमें तो दूसरा मार्ग ग्रहण करनाही सर्वोत्तम है।

नेमिचन्द्र सिद्धान्तचक्रवर्ती।

अब हम द्रव्यसंग्रहके लेखकके सम्बन्धमें समस्त प्राप्य सामग्री एकत्र करनेका प्रयत्न करेंगे। इस ग्रन्थके अन्तिम श्लोकसे यह पता लगता है कि इसके रचयिता मुनि नेमिचन्द्र थे।[३९] बाहुबली चरित्रमें यह लिखा है

---

३८ देखो, नेमिचंद्र रचित त्रिलोक सारका निम्न उल्लेख—

'पण छ सयवस पण मासजुदं
गमिय वीरणिवुइदो सगराजा॥'

अर्थात् वीरनिर्वाणके अनन्तर ६०५ वर्ष और ५ मास व्यतीत होने पर शकराजा हुआ। (इन्डियन एन्टिक्वरी, भाग १२, पृ. २१.)

३९ देखो, द्रव्यसंग्रह (श्लोक ५८)—

'दव्वसंग्गहमिणं मुणिणाहा दोससंचयचुदा सुदपुण्णा।
सोधयतु तणुसुत्तधरेण णेमिचंदमुणिणा भणियं जं॥'

कि देशीय गणके नेमिचन्द्र मुनि, चामुण्डराय और उसकी माताके साथ पौदनपुर गोम्मटेश्वरके दर्शनार्थ गये थे । और नेमिचन्द्रने स्वप्न देखा कि विन्ध्यगिरिपर गोम्मटेश्वरकी एक मूर्त्ति है, और चामुण्डरायने मूर्त्तिकी प्रतिष्ठा करानेके अनन्तर उसकी नित्य पूजा और त्यौंहारोंके हेतु नेमिचन्द्रके चरनोंपर कुछ ग्राम प्रदान किए जिनकी आय ९६००० मुद्रा थी ।[४०]

माइसोरके शिमोगा जिलेके नगर तालुकेमें स्थित पद्मावतीके मन्दिरके हातेमें खुदे हुए लगभग सन् १५३० ईस्वीके एक शिलालेखके निम्नलिखित श्लोकसे यह पता लगता है कि चामुण्डराय नेमिचन्द्रके चरणकमलोंकी पूजा करता था । :—

" त्रिलोकसार-प्रमुख.........
.........भुवि नेमिचन्द्र ।
विभाति सैद्धान्तिक-सार्वभौमः
चामुण्डराजार्चित-पादपद्मः ॥ "

अर्थात् " त्रिलोकसार और अन्य (ग्रन्थों) के रचयिता......नेमिचन्द्र सिद्धान्त सार्वभौम सुशोभित है, उसके चरणकमल चामुण्डराज द्वारा अर्चित हैं "[४१] यद्यपि इस श्लोकका कुछ भाग मिट गया है, तथापि भाव सुस्पष्ट है । ' सिद्धान्त-सार्वभौम ' सिद्धान्तचक्रवर्ती नामक उपाधिका पर्याय वाची है जो बहुधा नेमिचन्द्रके साथ प्रयुक्त होता है ।

स्वयं नेमिचन्द्रने अपने ग्रन्थ गोम्मटसारमें गोम्मटराय या केवल राय की प्रशंसा की है और ऐसा हम देख चुके हैं कि यह चामुण्डरायका उपनाम है। उन प्रशंसात्मक श्लोकोंमें नेमिचन्द्रने लिखाहै कि अजितसेन उस चामुण्डराय के गुरु थे जिसने गोम्मटेश्वरकी मूर्ति निर्माण कराई ।[४२]

अभयचन्द्र रचित गोम्मटसारके भाष्यमें लिखा है कि यह ग्रन्थ चामुण्डरायकी इच्छानुसार रचा गया;जिसको जैनियोंके पवित्र ग्रन्थोंमें वर्णित द्रव्योंकी व्याख्याका अध्यन करनेकी अभिलाषा थी । नेमिचन्द्र-रचित त्रिलोकसारकी एक अति प्राचिन सचित्र हस्तलिखित पुस्तकमें एक चित्र है जिसमें चामुण्डराय अनेक सभासदोंके साथ नेमिचन्द्रसे जैन-सिद्धांतोंकी व्याख्या सुन रहे हैं ।

नेमिचन्द्रके ग्रन्थ ।

नेमिचन्द्र सिद्धान्त चक्रवतीने इन ग्रथोंकी रचना की:— (१) द्रव्यसंग्रह (२) गोम्मटसार (३) लब्धिसार (४) क्षपणसार, और (५) त्रिलोकसार । बाहुबली चरित्रमें लिखा है कि " नेमिचन्द्र, गोम्मटसार, लब्धिसार, और त्रिलोकसारके रचयिता हैं "[४३] द्रव्यसंग्रहके अन्तिम श्लोकमें नेमिचन्द्रने अपना माम प्रकट किया है ।[४४] इसी प्रकार गोम्मटसारके एक श्लोकसे यह ज्ञात

---

४० " मास्वद्देशीगणाग्रेसररुचिरसिद्धान्तविन्नेमिचन्द्र—
श्रीपादाग्रे सदा षण्णवतिदशशतद्रव्यभूग्रामवर्य्यान् ।
दत्वा श्रीगोमटेशोत्सवसवननित्यार्चनावैभवाय
श्रीमच्चामुण्डराजो निजपुरमथुरां संजगाम क्षितीशः ।
(बाहुबलि चरित्र, श्लोक ६१.)

४१ एपि. कर्ना. भाग ८, लेख नं. ४६.

४२ "गोम्मट संगहसुंत्त गोम्मटासिंहरुवरि गोम्मटजिणे य ।
गोम्मटरायविणिम्मियदक्खिणकुक्कुडजिणो जयउ ॥
जेण विणिम्मियपडिमावयणं सव्वट्टसिद्धिदेवेहिं ।
सव्वपरमोहिजोगिहिं दिट्ठं सो गोम्मटो जयउ ॥
वज्जयणं जीणभवणं ईसिपमारं सुवण्णकलसं तु ।
तिहुवणपडिमाणिक्कं जेण कयं जयउ सो रायो ॥
जेणुब्भियथंभुवरिमजक्खव--किरीटग्गाकिरणजलधोया ।
सिद्धाण सुद्धपाया सो राओ गोम्मटो जयउ ॥
जम्हि गुणा विस्संता गणहरदेवादि—इड्ढिपत्ताणं ॥
सो अजियसेणणाहो जस्स गुरु जयउ सो राओ "

४३ सिद्धान्तामृतसागरं स्वमतिमन्थक्ष्माभृदालोड्य मध्ये
लेभेऽभीष्टफलप्रदानपि सदा देशीगणाग्रेसरः ।
श्रीमद्गोमटलब्धिसारविलसत् त्रैलोक्यसारामर-
क्ष्माजश्रीसुरधेनुचिन्तितमणिन् श्रीनेमिचन्द्रो मुनिः ॥
(बाहुबलि चरित्र, श्लोक ६२)

४४ ' णेमिचंद मुणिणा भणियं जं '
(द्रव्यसंग्रह, श्लो० ५८)

Aho ! Shrutgyanam

होता है कि नेमिचन्द्रने इसकी रचना की है ।[४५] हम समझते हैं, इस स्थानपर नेमिचन्द्रके ग्रन्थोंका संक्षिप्त वृत्तान्त दे देना उत्तम होगा ।

गोम्मटसार ।

इसका नाम गोम्मटसार पडनेका कारण यह है कि यह चामुण्डरायके पठनार्थ लिखा गया था, और हम बतला चुके हैं कि चामुण्डरायका दूसरा नाम गोम्मटराय था । इस ग्रन्थको पञ्चसंग्रह भी कहते हैं[४६] क्योंकि इसमें इन पाँच बातोंका वर्णन दिया है (१) बन्ध (२) बध्यमान (३) बन्धस्वामी (४) बन्धहेतु और (५) बन्ध-भेद ।

यह ग्रन्थ प्राकृतमें है और इसमें १७०५ श्लोक हैं । इसके दो भाग हैं जिनके नाम हैं जीवकाण्ड और कर्मकाण्ड । इनमें क्रमानुसार ७३३ और ९७२ श्लोक हैं । जीवकाण्डमें मार्गणा, गुणस्थान, जीव, पर्याप्ति, प्राण, संज्ञा, और उपयोगका वर्णन है । कर्मकाण्डमें ९ अध्याय हैं, जिनके नाम हैं—प्रकृतिसमुत्कीर्तन, बन्धोदयसत्त्व, सत्त्वस्थानभंग, त्रिचूलिका, स्थानसमुत्कीर्तन, प्रत्यय, भवचूलिका, त्रिकरणचूलिका, और कर्मस्थिति-रचना । आठ प्रकारके कर्म और कर्मबन्धका अपनी अपनी प्रकृति, स्थिति, अनुभाग और प्रदेशके साथ सविस्तर वर्णन भी दिया हुआ है । कर्मके सम्बन्धके अन्य अनेक विषयोंका भी इसमें वर्णन है । संक्षेपसे गोम्मटसारके प्रथम भागमें जीवोंके स्वाभाविक गुण, और उनकी उन्नतिके उपायों और उपकरणोंका वर्णन है; और दूसरे भागमें उन कर्मबन्ध उत्पन्न करनेवाली अडचणोंका वर्णन है, जिनके निवारण करनेसे जीवोंको मुक्ति प्राप्त होती है । ग्रन्थकर्ता सर्वदा जीवकी उत्तरोत्तर उन्नतिको ध्येय मानता है, और इसी लक्ष्यसे उसने गोम्मटसारमें जैन-आचार्योंके सिद्धान्तोंका सार दिया है । साधारण रूपसे इस ग्रन्थमें जैन-दर्शन शास्त्रके मुख्य मुख्य सिद्धान्तोंका समावेश है ।

गोम्मटसारके भाष्य ।

स्वयं चामुण्डरायने कानडी भाषामें गोम्मटसारकी एक टीका रची थी । गोम्मटसारके अन्तिम श्लोकमें इस बातका उल्लेख है कि चामुण्डरायने सर्व साधारणकी भाषामें वीर-मार्तण्डी नाम्नी एक टीका रची।[४७] चामुण्डरायकी एक उपाधि-वीर-मार्तण्ड थी, इस लिए उसने अपनी टीकाका नाम रक्खा 'वीर-मार्तण्डी' अर्थात् वीर-मार्तण्डकी रची हुई । चामुण्डरायकी उक्त टीका अब अप्राप्य है, अन्य एक दूसरी टीकामें अब केवल इसका उल्लेख मात्र है, जिसका नाम है केशववर्णीया वृत्ति, (अर्थात् केशववर्णी रचित) । उसके प्रथम श्लोकमें लिखा है "मैं कर्नाटक-वृत्तिके आधारपर गोम्मटसारकी वृत्ति लिख रहा हुं ।"[४८] गोम्मटसारपर एक और टीका है जिसका नाम है मन्द-प्रबोधिका, और जिसके टीकाकार हैं अभयचन्द्र ।[४९] इन्हीं टीकाओंके आधारपर टोडरमल्लने हिन्दी भाषामें एक टीका लिखी है; जिसका वर्तमान समयके जैन-पंडितोंमें बहुत प्रचार है ।

नेमिचन्द्रके गुरु ।

गोम्मटसारमें अनेक मुनियोंके नाम दिये हैं जिनको नेमिचन्द्र आचार्य कहकर वन्दना करता है । वे नाम इस प्रकार हैं:—अभयनन्दि, इन्द्रनन्दि, वीरनन्दि,

---

४५ सिद्धं सुदयतडुग्गयणिम्मलवरणेमिचंदकरकलिया ।
गुणरयणभूसणं बुहिमइवेला भरउ भुवणयलं ॥
(गोम्मटसार, कर्मकांड, गाथा ९६७)

४६ 'श्रीमच्चामुण्डराय प्रश्नानुरूपं गोम्मटसारनामधेयं पञ्चसंग्रहशास्त्रं प्रारंभमानः ।'
(अभयचन्द्राचित गोम्मटसारवृत्ति)

४७ गोम्मटसुत्तल्लिहणे गोम्मटरायेण या कया देसी ।
सो राओ चिरं कालं णामेण य वीरमत्तण्डी ॥
(गोम्मटसार कर्मकाण्ड, गाथा ९७२)

४८ नेमिचन्द्रं जिनं नत्वा सिद्धं श्रीज्ञानभूषणम् ।
वृत्तिं गोम्मटसारस्य कुर्वे कर्णाटवृत्तितः ॥
(केशववर्णीयावृत्ति)

४९ मुनिं सिद्धं प्रणम्याहं नेमिचन्द्रं जिनेश्वरम् ।
टीका गोम्मटसारस्य कुर्वे मन्दप्रबोधिकाम् ॥
(अभयदेवकी वृत्ति)

Aho ! Shrutgyanam

और कनकनन्दि ।[50] वीरनन्दि रचित एक 'चन्द्रप्रभ चरितं' नामका ग्रन्थ है जिसके अंतमें लिखा है कि वे अभयनन्दिके शिष्य थे,[51] और अभयनन्दि गुणनन्दिके शिष्य थे। गोम्मटसारके उल्लेखानुसार कनकनन्दि इन्द्रनन्दिके शिष्य थे ।[52] इससे नेमिचन्द्रकी गुरुपरंपराका टेबल इस प्रकार होता है ।

गुणनन्दि
- अभयनन्दि
  - वीरनन्दि
- इन्द्रनन्दि
  - कनकनन्दि
    - नेमिचन्द्र

[यह लेख, आरासे जो द्रव्यसंग्रहकी इंग्रेजी आवृत्ति प्रकाशित हुई है, उसकी प्रस्तावनाका अविकल अनुवाद स्वरूप है, ऐसा पीछेसे उसके साथ मिलान करनेसे मालूम हुआ है ।

—संपादक जै. सा. सं.]

---

५० " णमिऊण अभयणंदिं सुदसायरपारगिंदणंदिगुरुं ।
वरवीरणंदिणाहं पयडीणं पच्चयं वोच्छं ॥ "

तथा—

" वरइंदणंदिगुरुणो पासे सोऊण सयलसिद्धंतं ।
सिरिकणयणंदिगुरुणा सत्तट्ठाणं समुद्दिट्ठं ॥ "
(गोम्मटसार, कर्मकाण्ड ।)

५१ "बभूव भव्याम्बुजपद्मबन्धुः पतुर्मुनीनां गणभृत्समानः।
सदग्रणीर्देशिगणाग्रगण्यो गुणाकरः श्रीगुणनन्दिनामा ॥
मुनिजननुतपादः प्रास्तमिथ्याप्रवादः
सकलगुणसमृद्धस्तस्य शिष्यः प्रसिद्धः ।
अभवदभयनन्दी जैनधर्माभिनन्दी—
स्वमहिमजितसिन्धुर्भव्यलोकैकबन्धुः ॥
भव्याम्भोजविबोधनोद्यतमतेर्भास्वत् समानत्विषः
शिष्यस्तस्य गुणाकरस्य सुधियः श्रीवीरनन्दीत्यभूत् ।
स्वाधीनाखिलवाङ्मयस्य भुवनप्रख्यातकीर्तेः सतां
संसत्सु व्यजयन्त यस्य जयिनो वाचः कुतर्काङ्कुशाः ॥"
[चन्द्रप्रभचरितप्रशस्तिः । श्लोकः १, ३, ४,]

५२ वरइंदणंदिगुरुणो पासे सोऊण सयलसिद्धंतं ।
सिरिकणयणन्दिगुरुणा सत्तट्ठाणं समुद्दिट्ठं ॥
(गोम्मटसार, कर्मसार, गा० ३८६)

Aho ! Shrutgyanam

जं बु द्दी व प ण्ण त्ति।

(ग्रंथ परिचय)

[ले. श्रीयुत नाथूरामजी प्रेमी]

जैन साहित्यमें करणानुयोगके ग्रंथोंकी एक समय बहुत प्रधानता रही है। जिन ग्रंथोमें ऊर्ध्वलोक, अधोलोक, और मध्यलोकका; चारों गतियोंका, और यूगोंके परिवर्तन आदिका वर्णन रहता है, वे सब ग्रन्थ करणानुयोगके[1] अन्तर्गत समझे जाते हैं। आजकलकी भाषामें हम जैन धर्मके करणनुयोगको एक तरहसे भूगोल और खगोल शास्त्रकी समष्टि कह सकते हैं। दिगंबर और श्वेतांबर दोनोंही संप्रदायमें इस विषयके सैकडों ग्रन्थ हैं और उनमें अधिकांश बहुत प्राचीन हैं। इस विषयपर जैन लेखकोंने जितना अधिक लिख्खा है उतना शायदही संसारके किसी संप्रदायके लेखकोंने लिखा हो। परंरापरासे यह विश्वास चला आता है कि इन सब परोक्ष और दूरवर्ती क्षेत्रों या पदार्थोंका वर्णन साक्षात् सर्वज्ञ भगवानने अपनी दिव्य-ध्वनीमें किया था। जान पडता है कि इसी अटल श्रद्धाके कारण इस प्रकारके साहित्यकी इतनी अधिक वृद्धि हुई और हजारों वर्ष तक यह जैन धर्मके सर्वज्ञ प्रणीत होनेका अकाट्य प्रमाण समझा जाता रहा।

हिंदुओंके पौराणिक भूवर्णनको पढनेसे ऐसा मालूम होता है कि दो ढाई हजार बरस पहले भारतके प्रायः सभी संप्रदायवालोंका पृथ्वीके आकार-प्रकार और द्वीप-समुद्र-पर्वतादिके सम्बन्धमें करीब करीब इसी प्रकारकी धारणा थी, जिस प्रकार कि जैन धर्मके करणानुयोगमें पाई जाती है। पृथ्वी थालीके समान गोल और चपटी है, उसमें अनेक द्वीप और समुद्र हैं, द्वीपके बाद समुद्र और समुद्रके बाद द्वीप, इस प्रकार क्रम चला गया हैं; जम्बूद्वीपके बीचमें नाभीके तुल्य सुमेरु पर्वत है, इत्यादि। परन्तु पीछेसे विद्वान् लोगोंके अन्वेषण और निरीक्षणसे इस विषयका ज्ञान बढता गया, और आर्यभट्ट, भास्कराचार्य आदि महान् ज्योतिषिओंने तो पूर्वोक्त विचारोंको बिलकुलही बदल डाला। इसका फल यह हुआ कि इस विषयका जो प्रारंभिक हिन्दु साहित्य था उसका बढना तो दूर रहा, मगर वह धीरे धीरे क्षीण होता गया और इधर चूंकि जैन विद्वानोंका विश्वास था कि यह साक्षात् सर्वज्ञ प्रणीत है; अतएव वे इसे बढाते चले गये और नई खोजों तथा आविष्कारोंकी और ध्यान देनेकी उन्होंने आवश्यकताही नहीं समझी।

यह करणानुयोगका वर्णन केवल इस विषयके स्वतंत्र ग्रन्थोंमें ही नहीं है, प्रथमानुयोग या कथानुयोगादिके ग्रन्थोंमें भी इसने बहुत स्थान रोका है। दिगम्बर संप्रदायके महापुराण, हरिवंशपुराण, पद्मपुराणादि प्रधान २ पुराणोंमें तथा अन्य चारित्र ग्रन्थोंमेंभी यह खूब विस्तारके साथ लिखा गया है। श्वेताम्बर संप्रदायके कथा ग्रन्थोंका भी यही हाल है। बल्कि इस संप्रदायके तो आगम ग्रंथोंमें भी इसका दौरदौरा है। भगवती सूत्र (व्याख्याप्रज्ञप्ति) आदि अंग और जम्बू-

---

१ लोकालोकविभक्तेर्युगपरिवृत्तेश्चतुर्गतीनां च।
आदर्शमिव यथामतिरवैति करणानुयोगं च॥
—रत्नकरण्ड श्रा०

द्वीप प्रज्ञप्ति, सूर्यप्रज्ञप्ति, चन्द्रप्रज्ञप्ति आदि उपांग ग्रन्थ करणानुयोगकेही वर्णनसे लबालब भरे हुए हैं ।

दिगम्बर संप्रदायमें इस विषयका सबसे प्राचीन और विशाल ग्रन्थ त्रिलोकप्रज्ञप्ति[1] है। इसका और लोकविभाग[2] ग्रन्थका परिचय हम जैनहितैषी (भाग १३—अंक १२) में दे चुके हैं। त्रैलोक्यसार नामक ग्रन्थ मूल प्राकृत और संस्कृत टीका सहित माणिकचन्द्र ग्रन्थमालामें प्रकाशित हो चुका है। आज इस लेखमें हम जम्बुद्दीवपण्णत्तिका परिचय देना चाहते हैं। इसी नामका और एक ग्रन्थ माथुरसंघान्वयी अमितगति आचार्यका भी है । अमितगतिने चन्द्रप्रज्ञप्ति और सार्द्धद्वयद्वीपप्रज्ञप्ति नामक ग्रन्थ भी इसी विषयपर लिखे हैं। परन्तु ये अभीतक हमारे देखनेमें नहीं आये । जम्बुद्दीवपण्णत्ति नामका एक ग्रन्थ श्वेताम्बर संप्रदायका भी है। इसका संकलन करनेवाले गणधर सुधर्मास्वामी कहे जाते हैं। यह छठा उपांग है और आगमग्रन्थोंकी शैलीसे लिखा हुआ है। इसकी श्लोक संख्या ४१४६ है। मुर्शिदाबादके राय धनपतिसिंह बहादुरके द्वारा यह वाचनाचार्य रामचन्द्र गणिकृत संस्कृत टीका और ऋषि चंद्रभाणजीकृत भाषा टीका सहित छप चुका है ।

दिगम्बरसम्प्रदायी जम्बुद्दीवपण्णत्तिकी दो प्रतियाँ हमने देखी हैं; एक स्वर्गीय दानवीर शेठ माणिकचन्द्रजीके चौपाटीके ग्रन्थभाण्डारमें है और दूसरी पूनेके भांडारकर ओरिएन्टल रीसर्च इन्स्टिटयटमें। पहली प्रति सावन वदि १२ सं० १९६० की लिखी हुई है और इसे सेठजीने अजमेरसे लिखवाकर मँगवाई थी। दूसरी प्रतीपर उसके लिखे हुएका समय नहीं दिया है; परन्तु वह कुछ प्राचीन मालूम होती है !

यह ग्रन्थ प्राकृत भाषामें है और गाथाबद्ध है। इसमें १३ उद्देश या अध्याय, २४२७ गाथायें और भरत, ऐरावत,पूर्व विदेह, उत्तर विदेह, देवकुरु, उत्तरकुरु, लवणसमुद्र, ज्योतिषपटल आदिकावर्णन है। वर्णन त्रिलोकप्रज्ञप्तिकी अपेक्षा कुछ संक्षिप्त है।

इसके कर्ताका नाम सिरिपउमणंदि या श्रीपद्मनन्दि है। वेह अपनी गुरुपरम्परा इस प्रकार बतलाते हैं— वीरनन्दि, बलनन्दि, और पद्मनन्दि। अपने लिए उन्होंने गुणगणकलित, त्रिदण्डरहित, त्रिशल्यपरिशुद्ध, त्रिगारवरहित, सिद्धान्तपारगामी, तप-नियम-योग-युक्त, ज्ञानदर्शनचारित्र्योद्युक्त और आरम्भकरणरहित विशेषण दिये हैं। अपने गुरूओंकी भी उन्होंने ज्ञान और तप आदिके विषयमें प्रशंसा की है। उन्होने ऋषिविजय गुरुके निकट जिनवचन—विनिर्गत सुपरिशुद्ध आगमको श्रवण करके, उनहींके कृपामाहात्म्यसे इस ग्रन्थकी रचना की है। विजयगुरुका विशेष परिचय वे नहीं देते, इससे उनकी गुरुपरम्परापर कोई प्रकाश नहीं पडता। माघनन्दी नामके एक विख्यात आचार्य थे जो राग-द्वेष-मोहसे रहित, श्रुतसागरके पारगामी, प्रगल्भ मतिमान्, और तपःसंयम—संपन्न थे। उनके शिष्य सकलचन्द्र गुरु हुये, जो नव नियमों और शीलका पालन करते थे, गुणी थे और सिद्धान्त महोदधिमें जिन्होंने अपने पापोंको धोडाला था। इनके शिष्य नन्दिगुरुके[1] लिए—जो सम्यग्दर्शन—ज्ञान-चारित्र्यसम्पन्न थे—यह ग्रन्थ बनाया गया है।

आचार्य पद्मनन्दि जिस उमय बारानगरमें थे, उस समय यह ग्रन्थ रचा गया है। इस नगरकी प्रशंसामें लिखा है कि उसमें वापिकायें, तालाब, और भुवन बहुत थे, भिन्नभिन्न प्रकारके लोगोंसे वह भरा हुआ था, बहुतही रम्य था, धनधान्यसे परिपूर्ण था, सम्यग्दृष्टि-जनोंसे, मुनियोंके समूहसे, और जैन मंदिरोंसे विभूषित था। यह नगर पारियत्त (पारियात्र) नामक देशके

---

१ इसके कर्ता श्रीयतिवृषभाचार्य हैं, और इसकी रचना लगभग १००० वीरनिर्वाणसंवत् में हुई है ।

२ इसके कर्ता मुनि सर्वनन्दि है और यह शक संवत् ३८० में लिखा गया है। इस ग्रन्थका संस्कृत अनुवाद उपलब्ध है।

१ पुराणसारके कर्ता श्रीचन्द्रमुनि—जो वि. सं. १०७० के करीब हुए हैं—अपने गुरूका नाम श्रीनन्दिलिखते हैं। वे इनसे पृथक् व्यक्ति जान पडते हैं। वसुनन्दि आचार्यकी गुरुपरम्परामे भी एक श्रीनन्दि है।

Aho ! Shrutgyanam

अन्तर्गत था। बारानगरके प्रभु या राजाका नाम शक्ति[1] या शान्ति था। वह सम्यग्दर्शनशुद्ध, व्रती, शीलसम्पन्न, दानी, जिनशासनवत्सल, वीर, गुणी, कलाकुशल और नरपतिसंपूजित था।

आचार्य हेमचन्द्रके कोषमें लिखा है—" उत्तरो विन्ध्यात्पारियात्रः "। अर्थात् विन्ध्याचलके उत्तरमें पारियात्र है। यह पारियात्र शब्द पर्वतवाची और प्रदेशवाची भी हैं। विन्ध्याचलकी पर्वतमालाका पश्चिम भाग जो नर्मदा तटसे शुरू होकर खंभाततक जाता है और उत्तर भाग जो अर्बलीकी पर्वतश्रेणीतक है पारियात्र कहलाता है। अतः पूर्वोक्त बारानगर इसी भूभागके अन्तर्गत होना चाहिए। राजपूतानेके कोटा राज्यमें एक बारा नामक कसबा है, जान पडता है कि यही बारानगर होगा। क्योंकि यह पारियात्र देशकी सीमाके भीतरही आता है। नन्दिसंघकी पट्टावलीके[2] अनुसार बारामें एक भट्टारकोंकी गद्दी रही है और उसमें वि. सं. (विक्रमराज्याभिषेक) ११४४ से १२०६ तकके १२ आचार्योंके नाम दिये हैं। इससे भी जान पडता है कि सम्भवतः वे सब आचार्य पद्मनन्दि या माघनन्दि की ही शिष्यपरम्परामें हुये होंगे और यही बारा—कोटा जम्बुद्वीप प्रज्ञप्तिके निर्मित होनेका स्थान होगा।

ज्ञानप्रबोध नामक भाषाग्रन्थमें (पद्यबद्ध) कुन्दकुदाचार्यकी कथा दी है। उसमें कुन्दकुन्दको इसी बारापुर या बाराके धनी कुन्दश्रेष्ठी और कुन्दलताका पुत्र बतलाया है। पाठकोंसे यह बात अज्ञात न होगी कि कुन्दकुन्दका एक नाम पद्मनन्दि भी है। जान पडता है कि जम्बुद्वीपप्रज्ञप्तिके कर्ता पद्मदन्दिकोही भ्रमवश कुन्दकुन्दाचार्य समझकर ज्ञानप्रबोधके कर्ता, कर्नाटकदेशके[3] कुन्दकुन्दका जन्म स्थान बारा[1] बतलानेका प्रयत्न कर बैठे हैं। पर इससे यह बात बहुत कुछ निश्चित हो जाती है कि मालवेके या कोटा राज्यके इसी बारामें यह ग्रन्थ निर्मित हुआ है।

शान्ति या शक्तिराजा जान पडता है कि कोई मामूली ठाकूर होगा। यद्यपि उसे नरपतिसंपूजित लिखा है, परन्तु साथ ही ' बारानगरस्य प्रभुः ' कहा है। यदि कोई बडा राजा या मांडलिक आदि होता, तो वह किसी प्रदेश या प्रान्तका राजा बतलाया जाता। राजाका वंश आदिभी नहीं बतलाया है, जिससे राजपुतानेके इतिहासोंमे उसका पता लगाया जा सके और उससे पद्मनन्दि आचार्यका निश्चित समय मालूम किया जा सके।

पद्मनन्दि नामके अनेक आचार्य और भट्टारक हो गये हैं। उनमें पद्मनन्दिपंचविंशतिकाके कर्ता बहुत प्रसिद्ध हैं। वे अपने गुरूका नाम [2]वीरनन्दि लिखते हैं और प्रज्ञप्तिके कर्ताके गुरु बलनन्दि हैं। इस लिये ये दोनों एक नहीं हो सकते। इसके सिवाय 'पचविंशतिका '[3] अपेक्षाकृत अर्वाचीन ग्रन्थ है। हमारे अनुमानसे वह १३ वीं शताब्दीसे पहलेका नहीं हो सकता। उस समय दिगम्बर मुनि [4]जिनमन्दिरोमें रहने लगे थे और यह उपदेश दिया जाने लगा था कि बिम्बाफलके पत्तेके भी बराबर मन्दिर और जोके भी बराबर जिनप्रतिमा बनवानेवालेके पुण्यका वर्णन नहीं किया जा [5]सकता।

---

१. पूनेकी प्रतीमें सन्ति (शान्ति) और बम्बईकी प्रतीमें सत्ति (शक्ति) पाठ है।

२. देखो जैनसिद्धान्तभास्कर किरण ४; और इन्डियन ॲन्टिक्वेरी २० वी जिल्द।

३ कर्नाटक देशके कोण्डकुण्डनामक ग्रामके निवासी होनेके कारण इनका नाम कोण्डकुण्ड हुआ था। कुन्दकुन्द उसीका श्रुतिमधुर संस्कृत रूप है।

---

१ सुना है कि बारामें पद्मनन्दिकी कोई निषिधाभी है।

२ यत्पादपङ्कजरोभिरपि प्रमाणत्लग्नैः शिरस्यमलबोधकलावतारः। भव्यात्मनां भवति तत्क्षणमेव मोक्षं स श्रीगुरुर्दिशतु मे मुनिवीरनन्दी॥

४ यह ग्रन्थ काशीमें छप चुका है। इसमें अनेक विषयोंके २५ प्रकरण हैं।

१. सम्प्रत्यत्र कलौ काले जिनगेहे मुनिस्थितिः।
धर्मस्य दानमित्येषां श्रावका मूलकारणम् ॥
उपासकाचार प्रकरण।

२. बिम्बादलोन्नति यवोन्नतिमेव भक्त्या—

Aho ! Shrutgyanam

प्रज्ञप्तीके कर्ता पद्मनन्दि कब हुए हैं, यह बतानेके लिये अभीतक हमें कोई पुष्ट प्रमाण उपलब्ध नहीं हुआ है। परन्तु हमारा अनुमान है कि यह ग्रन्थ विक्रमकी दसवीं शताब्दीके बादका तो नहीं है, पहलेका भले ही हो। क्यों कि—

१) ग्रन्थकी रचनाशैली बिलकुल त्रिलोक प्रज्ञप्तिके सदृश है और भाषा भी अपेक्षाकृत प्राचीन मालूम होती है।

२) नववीं दसवीं शताब्दीके बादके ग्रन्थकर्ता अपनी गुरुपरम्परा बतलाते समय संघ और गण गच्छादिका परिचय अवश्य देते हैं। पर इस ग्रन्थमें किसी संघ या गण गच्छादिका नाम नहीं है। मंगराजकविके शिलालेखके[1] अनुसार अकलंकभट्टके बाद देव, नन्दि, सेन, और सिंह इन चार संघोंकी स्थापना हुई है। अतः हमारी समझमें यह ग्रन्थ अकलङ्क देवसे पहलेका होना चाहिए। अकलङ्क देवका समय विक्रमकी ८ वीं शताब्दी है।

३) ऐसा मालूम होता है कि इस ग्रन्थसे पहले इस विषयका कोई स्वतंत्र ग्रन्थ नहीं था। पद्मनन्दि मुनिने श्रीविजयगुरुके निकट आचार्य परम्परासे चला आया हुआ यह विषय सुनकर लिखा है। किसी एक या अनेक ग्रथोंके आधार आदीसे नहीं। इस विषयमें नीचे लिखी हुई गाथायें अच्छी तरह विचारने योग्य हैं।

ते वंदिऊण सिरसा वोच्छामि जहाकमेण जिणदिट्ठं।
आयरियपरम्परया पण्णत्तिं दविजलधीणं॥ ६॥

× × × × ×

आयरियपरम्परया सायरदीवाण तह य पण्णत्ती।
संखेवेण समत्थं वोच्छामि जहाणु पुव्वीए॥ १८॥

× × × × ×

......रिसिविजयगुरुत्ति विक्खाओ॥ १४४॥
सोऊण तस्स पासे जिणवयण विणिग्गयं अमदभूदं।
रइदं किंचुद्देसे अत्थपदं तहव लध्दूणम्॥ १४५॥

यदि यह अनुमान ठीक हो कि दिगम्बर सम्प्रदायमें इस विषयका यह पहला ग्रन्थ है तो अवश्यही यह पुराना है। और आश्चर्य नहीं जो त्रिलोकप्रज्ञप्तिके रचे जाने के[1] समयमें अथवा उससे कुछ पीछे लिखा गया हो। इस ग्रन्थमें 'उक्तं च' कह कर अन्य गाथायें या श्लोकादि भी उध्दृत नहीं हैं। इससे भी इसे प्राचीन माननेकी इच्छा होती है।

यह ग्रन्थ जिन नन्दिगुरुके लिये बनाया गया है, उनके दादागुरुका नाम **माघानन्दि** था, और वे बहुतही विख्यात, श्रुतसागरपारगामी, तपःसंयमसम्पन्न, तथा प्रगल्भबुद्धि थे। इन्द्रनन्दीने अपने[2] श्रुतावतारमें लिखा है कि वीरनीर्वाणसे ६८३ वर्ष बाद तक अंगज्ञानकी प्रवृत्ति रही। उनके बाद अर्हद्बलि आचार्य हुए और उनके कुछ समय बाद (तत्कालही नहीं) माघनन्दि आचार्य हुए। आश्चर्य नहीं जो नन्दिगुरुके दादागुरु यही माघनन्दि हों। उन्हें जो विशेषण दिये गये हैं उससेभी मालूम होता है कि वे कोई सामान्य आचार्य न होंगे। इन्द्रनन्दिके कथनक्रमसे माघनन्दीका समय वीरनिर्वाणसंवत् ८०० लगभग तक आसकता है। और इस हिसाबसे नन्दिगुरु और पद्मनन्दीका समय वीरनिर्वाणकी ९ वीं शताब्दि माना जा सकता है। पर इस विषयमें अधिक जोर नहीं दिया जा सकता कि इन्द्रनन्दिकथित माघनन्दि और यह माघनन्दि एकही होंगे।

इस ग्रन्थमें भगवान् महावीरके बादकी आचार्य-परम्पराके विषयमें जो कुछ लिखा है उसका आशय इस प्रकार है।

विपुलाचलके ऊंचे शिखरपर विराजमान **वर्धमान**

ये कारयन्ति जिनसद्म जिनाकृतिं वा।
पुण्यं तदीयमिह वागपि नैव शक्ता–
स्तोतुं परस्य किमु कारयितुर्द्वयस्य॥ २२॥

१. देखो श्रवण बेल्गोला इन्स्क्रिप्शनका १०८ वां शिलालेख और जैनसिद्धान्त भास्कर किरण ३।

१ वीरनिर्वाण संवत १००० के लगभग।
२ यह ग्रन्थ माणिकचन्द्र ग्रन्थमालाके 'तत्त्वानुशासनादि-संग्रह' नामक १३ वे अंकमें छप चुका है।

Aho ! Shrutgyanam

जिनेन्द्रने गौतममुनीको प्रमाणसंयुक्त अर्थ कहा । उन्होंने लोहार्यको, लोहार्यने–जिनका नाम सुधर्मा भी है–जम्बुस्वामीको कहा । ये तीनों गणधर, गुणसमग्र, और निर्मल चारज्ञानके धारी थे । ये केवल ज्ञानको प्राप्त करके मोक्षको प्राप्त हुए । इनको मैं नमस्कार करता हूं । इनके बाद नन्दि, नन्दिमित्र, अपराजित, गोवर्धन और भद्रबाहु ये पांच पुरुषश्रेष्ठ चौदह पूर्व और बारह अंगके धारक हुए । इनके बाद क्रमसे विशाखाचार्य, प्रोष्ठिल, क्षत्रिय, जय, नाग, सिद्धार्थ, धृतिषेण, विजय, बुद्धिल, गंगदेव और धर्मसेन, ये दस पूर्वधारी हुए । फिर नक्षत्र, यशः पाल, पाण्डु, ध्रुवसेन, और कंस ये पांच ग्यारह अंगके धारक हुए । इनके बाद सुभद्र, यशोभद्र, यशोबाहु और अन्तिम लोह (लोहाचार्य) ये आचारांगके धारक हुए ।

इस परम्परासे एक यह विशेष बात मालूम हुई कि सुधर्मास्वामीका दूसरा नाम लोहार्य भी था । लोहार्य नामके एक और भी आचार्य हुए हैं जो आचारांगधारी थे । उन्हें दूसरे लोहाचार्य समझना चाहिए । श्रवण वेल्गोलकी चन्द्रगुप्तवस्तीके [१]शिलालेखके–' **महावीरसवितरि परिनिर्वृते भगवत्परमर्षि–गौतमगणधरसाक्षाच्छिष्य–लोहार्य**–जम्बु–××" आदि वाक्यमें जो लोहार्यको गौतमगणधारका साक्षात् शिष्य लिखा है, उसका भी इससे खुलासा हो जाता है । अभीतक इस बातका स्पष्ट उल्लेख कहीं भी नहीं मिला था कि सुधर्मास्वामीका दूसरा नाम लोहार्यभी था ।

इस परम्परामें और त्रिलोकप्रज्ञप्तिकी परम्परामें कोई अन्तर नहीं है । आचार्य गुणभद्रकृत उत्तर-पुराण, ब्रह्म हेमचन्द्रकृत श्रुतस्कन्ध, और इन्द्रनन्द्रिकृत श्रुतावतारमें भी बिलकुल यही परम्परा न्दी हुई है । परन्तु हरिवंशपुराण, नन्दिसंघ–बलात्कार गण–सरस्वती-गच्छकी प्राकृत पट्टावली, [३]सेनगणकी पट्टावली और [४]काष्ठासंघकी पट्टावलीमें नन्दिकी जगह विष्णु नाम मिलता है । इसके सिवाय नन्दिसंघकी पूर्वोक्त पट्टावलीमें और काष्ठासंघकी पट्टावलीमें यशोबाहुके स्थानमें भद्रबाहु नाम है । जान पडता है नन्दीका नामान्तर विष्णु और यशोबाहुका भद्रबाहु भी होगा ।

लोहाचार्य तककी यह गुरुपरम्परा दिगम्बर संप्रदायमें एकसी मानी जाती है । इसमें कोई मतभेद नहीं है । परन्तु यह बडे आश्चर्यकी बात है कि श्वेताम्बर संप्रदायमें जम्बूस्वामीके बाद जो परम्परा मानी जाती है, वह इससे सर्वथा भिन्न है । यद्यपि ये दोनों संप्रदाय वि० सं० १३६ के लगभग पृथक् हुए कहे जाते हैं । यदि यह समय सही है तो आचारांगधारियों तककी परम्परा दोनों संप्रदायोंमें एकसी होनी चाहिए थी । या तो यह समय ही ठीक नहीं है–जम्बूस्वामीके बादही यह सम्प्रदाय भेद हो गया होगा, या फिर दोनोंमेंसे किसी एकने अथवा दोनोंने ही पीछेसे भूलभाल जानेपर इन्हें गढा होगा । इतिहासके विद्यार्थिओंके लिये यह विषय खास तोरसे विचार करने योग्य है ।

---

१ देखो, जैनसिद्धान्तभास्कर किरण १.

१. यह ग्रन्थभी तत्त्वानुशासनादि–संग्रहमें छपा है ।
२-३-४ –देखो जैनसिद्धान्तभास्कर, किरण ४ ।

Aho ! Shrutgyanam

परिशिष्ट--

जंबुद्दीवपण्णत्तिका आदि और अंतका कुछ भाग नमूनेके तौर पर यहां पर दिया जाता है ।

देवासुरिंदमहिदे दसद्धरुवूण कम्मपरिहीणे । केवलणाणालोए सद्धम्मुवएसदे अरुहे ॥ १ ॥
अट्ठविहकम्मरहिए अट्ठगुणसमण्णिदे महावीरे । लोयग्ग–तिलयभूदे सासयसुहसंट्ठिदे सिद्धे ॥ २ ॥
पंचाचारसमग्गे पंचेंदियनिज्जिदे विगयमोहे । पंचमहव्वयानिलए पंचमगइनायगायरिए ॥ ३ ॥
परसमयतिमिरदलणे परमागमदेसए उवज्झाए । परमगुणरयणणिवहे परमागमभाविदे वीरे ॥ ४ ॥
णाणागुणतवणिरए ससमयसब्भावगहियपरमत्थे । बहुविहजोगज्जुत्ते जे लोए सव्वसाहुगणे ॥ ५ ॥
ते वंदिदूण सिरसा वोच्छामि जहा कमेण जिणदिट्ठं । आयरियपरंपरया पण्णत्तिं दीवजलधीणं ॥ ६ ॥

\+ + + + + +

विउलगिरितुंगसिहरे जिणिंदइंदेण वड्ढमाणेणं । गोदममुणिस्स कहिदं पमाणणयसंजुदं अत्थं ॥ ९ ॥
तेणवि लोहज्जस्स य लोहज्जेण य सुधम्मणामेण । गणधरसुधम्मणा खलु जंबूणामस्स णिद्दिट्ठं ॥ १० ॥
चदुरमलबुद्धिसहिदे तिन्नेदे गणधरे गुणसमग्गे । केवलणाणपईवे सिद्धिंपत्ते णमंसामि ॥ ११ ॥
णंदी य णंदीमित्तो अवराजिदमुणिवरो महातेओ । गोवद्धणो महप्पा महागुणो भद्दबाहू य ॥ १२ ॥
पंचेदे पुरिसवरा चउदसपुव्वी हवंति णायव्वा । बारसअंगधरा खलु वीराजिर्णिदस्स णायव्वा ॥ १३ ॥
तहय विसाखायरिओ पोट्ठिल्लो खत्तियओ य जयणामो । णागो सिद्धत्थो विय धिदिसेणो विजय णामोय ॥
बुद्धिल्ल-गंगदेवो धम्मसेणो य होइ पच्छिमओ । पारंपरेण एदे दसपुव्वधरा समक्खादा ॥ १५ ॥
णक्खत्तो जसपालो पंडु-धुवसेण-कंस-आयरिओ । ऐयारस[१] अंगधरा पंचजणा होंति णिद्दिट्ठा ॥ १६ ॥
णामेण सुभद्दमुणी जसभद्दो तहय होइ जसबाहु । आयारधरा णेया अपच्छिमो लोहणामो य ॥१७॥
आयरियपरंपरया सायरदीवाण तहय पण्णत्तिं । संखेवेण समत्थं वोच्छामि जहाणुपुव्वीए ॥ १८ ॥

\+ + + + + +

परमेट्ठिभासिदत्थं उद्धाधेतिरियलोयसंबंधं । जंबूदीवणिबद्धं पुव्वावरदोसपारिहीणं ॥ १४० ॥
गणधरदेवेण पुणो अत्थं लध्दूण गंथिदं गंथं । अक्खरपदसंखेज्जं अणंतसत्थेहि संहुतं ॥ १४१ ॥
आयरियपरंपरेण य गंथत्थं चेव आगयं सम्मं । उवसंहरीय लिहियं समासदो तहय णायव्वं ॥ १४२ ॥
णाणाणरवइमहिदो विगयभमुसंगभंग–उम्मुक्को[२] । सम्मद्दंसणसुद्धो संजय–तव–सील–संपुण्णो ॥ १४३ ॥
जिणवर-वयण-विणिग्गयपरमागमदेसओ महासत्तो।सिरिनिलओ गुणसहिओ रिसिविजय गुरु त्ति विक्खाओ।
सोऊण तस्स पासे जिणवयणविणिग्गयं अमदभूदं । एइदं किंचुदेसे[३] अत्थपदं तह व लध्दूणं ॥ १४५ ॥

\+ + + + + +

अहतिरिय–उड्ढलोएसु तेसु जे होंति बहुवियप्पा दु । सिरिविजयस्स महप्पा ते सव्वे वण्णिदा किंचि।१५३।
गयरायदोसमोहो सुदसायरपारओ मइ–पगब्भो।तवसंजमसंपण्णो विक्खाओ माघनंदिगुरू ॥ १५४ ॥
तस्सेव य वरसिस्सो सिद्धंतमहोदहिम्मि धुयकलुसो । णवणियमसीलकलिदो गुणउत्तो सयलचंद गुरू १५५

१ 'एयारसंगधारी' भी पाठ है. २ 'भउ' पाठ द्वितीय पुस्तक में है । ३ 'किंचिद्देसं' भी है ।

Aho ! Shrutgyanam

तस्सेव य वरसिस्सो णिम्मलवरणाणचरणसंजुत्तो । सम्मद्दंसणसुद्धो सिरिणंदिगुरु त्ति विक्खाओ ॥१५६॥
तस्स णिमित्तं लिहियं जंबूदीवस्स तहय पण्णत्ती । जो पढइ सुणइ एदं सो गच्छइ उत्तमं ठाणं ॥ १५७ ॥
पंचमहव्वयसुध्दो दंसणसुद्धो य णाणसंजुत्तो । संजमतवगुणसहिदो रागादिविवज्जिदो धीरो ॥ १५८ ॥
पंचाचारसमग्गो छज्जीवदयावरो विगदमोहो । हरिस-विसाय-विहूणो णामेण य वीरणंदित्ति ॥१५९॥
तस्सेव य वरसिस्सो सुत्तत्थवियक्खणो मइप्पगब्भो । परपरिवादणियत्तो णिस्संगो सव्वसंगेसु ॥ १६० ॥
सम्मत्तअभिगदमणो णाणेण तह दंसणे चरित्ते य।परतंतिणियत्तमणो बलणंदि गुरु त्ति विक्खाओ॥१६१॥
तस्स य गुणगणकलिदो तिदंडरहियो तिसल्लपरिसुद्धो । तिण्णिवि गारवरहियो सिस्सो सिद्धंतगयपारो।१६२॥
तवणियमजोगजुत्तो उज्जुत्तो णाणदंसणचरित्ते।आरंभकरण रहियो णामणे य पउमणंदीत्ति ॥ १६३ ॥
सिरिगुरुविजयसयासे सोऊणं आगमं सुपरिसुद्धं । मुणि--पउमणंदिणा खलु लिहियं एयं समासेण ॥१६४॥
सम्मद्दंसणसुद्धो कदवदकम्मो सुसीलसंपण्णो ॥ अणवरयदाणसीलो जिणसासणवच्छलो वीरो ॥१६५॥
णाणागुणगणकलिओ णरवइसंपूजिओ कलाकुसलो ॥ वाराणयरस्स पहू णरुत्तमो खत्तिभूपालो ॥ १६६ ॥
पोक्खरणि--वावि--पउरे बहुभवणविहूसिए परमरम्मे । णाणाजणसंकिण्णे धनधन्नसमाउले दिव्वे ॥ १६६ ॥
सम्मादिट्ठिजणोघे मुणिगणणिवहेहि मंडिए रम्भे । देसम्मि पारियत्ते जिणभवणविहूसिए दिव्वे ॥ १६८ ॥
जंबूदीवस्स तहा पण्णत्ती बहुपयत्थसंजुत्तं (त्ता) । लिहियं संखेवेणं वाराए अच्छमाणेण ॥ १६९ ॥
छद्मत्थेण विरइयं जं किंपि हवेज्ज षवयणविरुद्धं । सोद्धं तु सुगीदत्था तं पवयण वच्छलत्ताए ॥ १७० ॥

× × × × ×

विउध-वइ-मउड-मणिगण-कर-सलिलसुधोयचारु पयकमलं । वरपउमणंदि णमियं वीर जिणिंदं णमंसामि ॥१७६॥

इय जंबूदीवपण्णत्तिसंगहे पमाणपरिच्छेदो णाम तेरमी उद्देसो सम्मत्तो ॥ १३ ॥

४ 'रइयं' पाठ पूनेकी प्रतिमें है ।

Aho ! Shrutgyanam

Aho ! Shrutgyanam

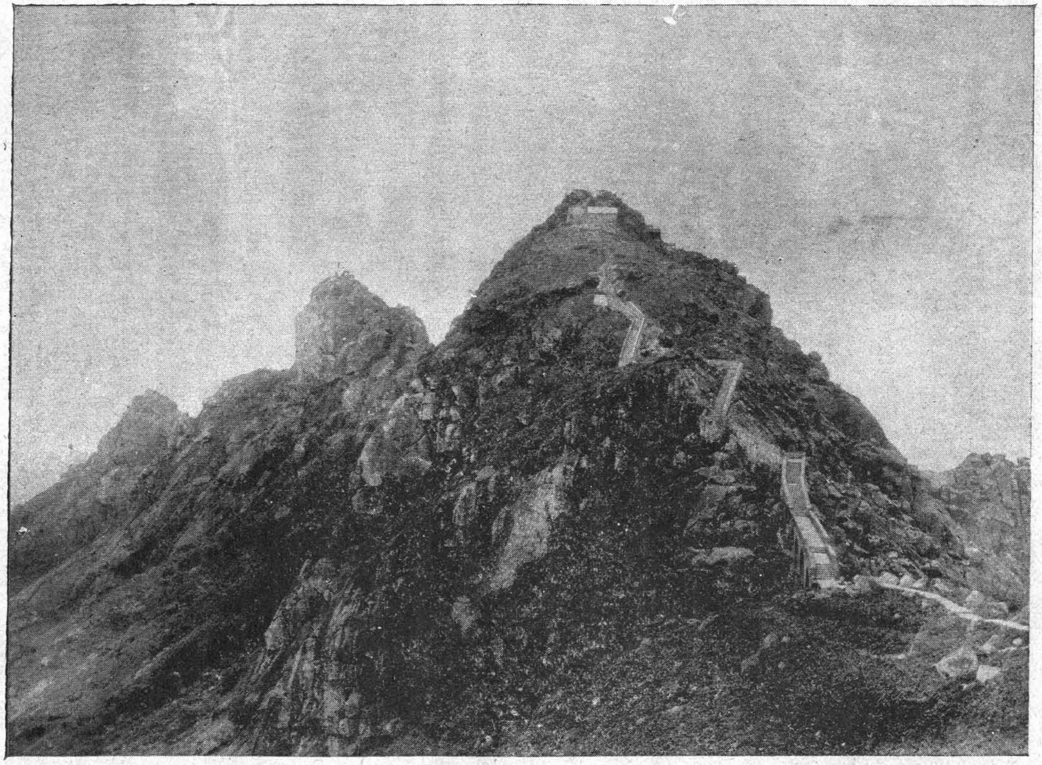

गिरनारपर्वत—पंचमी टोंक.

Aho ! Shrutgyanam

अर्हम्

॥ नमोऽस्तु श्रमणाय भगवते महावीराय ॥

जैन साहित्य संशोधक

खंड १] गुजराती लेख विभाग [अंक ४

सप्तभंगी

अथवा

सत्-असत्-तत्त्वमूलक प्रमाण पद्धति

[ले० अध्यापक रसिकलाल छोटालाल परीख. बी. ए.]

जैन दर्शन अथवा आर्हत दर्शनना तत्त्वज्ञाननो मूल पायो सप्तभंगी उपर रचाएलो छे. सप्तभंगी एटले वस्तु तत्त्वना स्वरूपनो संपूर्ण विचार प्रदर्शित करवा माटे योजेली सात प्रकारनी वाक्यरचना. ते आ प्रमाणे छेः—

(१)	[वस्तु]	कथंचित्	छे. *
(२)	,,	,,	नथी.
(३)	,,	,,	छे अने नथी.
(४)	,,	,,	अवाच्य छे.
(५)	,,	,,	छे अने अवाच्य छे.
(६)	,,	,,	नथी अने अवाच्य छे.
(७)	,,	,,	छे, नथी, अने अवाच्य छे.

आ प्रमाणे सप्तभंगीनी वाक्यरचना छे. सामान्य वाचकने बहु विचित्र, निरुपयोगी अने हास्यजनक लागे तेवुं तेनु बाह्य स्वरूप देखाय छे. परंतु गंभीर विचार-पूर्वक जो ते संबंधी ऊहापोह करवामां आवे तो तेमां रहेलां तत्त्वो सर्वसाधारण अने सर्वव्यापी छे एम स्पष्ट जणाई आवशे. ए विचार पद्धतिमां सत्—असत् अनेक धर्मवत्त्व, अने एक वाक्य एक समये एक धर्मनो निर्देश ज करी शके; ए तत्त्वोनो अन्तर्भाव थएलो छे. ए तत्त्वोए आ विशिष्ट स्वरूप क्यारे अने कई परिस्थितिमां धारण कर्युं तेनो निर्णय करवो हजी सुलभ नथी. परंतु जैन न्यायशास्त्रना अध्ययन उपरथी तेनो विकास अने प्रयोजन तो आपणे चोक्कस जाणी शकीए तेम छीए.

जैनोना आ विशिष्ट सिद्धान्तना इतिहास विषे हालमां हूं आटलुं जणावी शकुं छुंः—उत्तराध्ययन सूत्रमां एनो निर्देश नथी. भद्रबाहुनी आवश्यक सूत्रनी निर्युक्तिमां

* संस्कृत वाक्यो आ प्रमाणेः—

(१) स्यादस्ति (४) स्यादवक्तव्यम्
(२) स्यान्नास्ति (५) स्यादस्ति अवक्तव्यम् च
(३) स्यादस्ति नास्ति (६) स्यान्नास्ति अवक्तव्यम् च
(७) स्यादस्ति नास्ति अवक्तव्यं च

Aho ! Shrutgyanam

पण एनो उल्लेख दुर्लभ छे; तत्त्वार्थाधिगम सूत्रमां पण ते उपलब्ध नथी. पण आना जेवी देखाती चर्चा भगवती सूत्रमां मळी आवे छे. नयचक्रना कर्ता मल्लवादी " नय " ना सिद्धान्त माटे आगम प्रमाण आपती वखते भगवती सूत्रना केटलांक वाक्यो टांके छे. गौतम गणधर भगवान महावीरने पूछे छे ' भगवन् ! आत्मा ज्ञान [मय] छे के नहि ? ' स्वामी समझावे छे 'गोतम ! नियमे करीने ज्ञान [मय] छे. कारण के, ज्ञाननी आत्मा विना वृत्ति देखाती नथी; पण आत्मा ज्ञान पण होय अने अज्ञान पण होय (आया पुण सिय णाणे सिय अन्नाणे) "[1] अहिं आ ' सिय ' शब्द ए ' स्यात् ' नुं प्राकृत रूप छे, ते लक्षमां राखवा जेवुं छे. आ उपरथी जणाय छे के, आ सिद्धांतना बीज जो के जुना आगमोमां मळी आवे ए शक्य छे; छतां आ विशिष्ट स्वरूप तो तेना करतां अर्वाचीन छे. आ सिद्धांत एना आ स्वरूपमां तो सौथी पहेलो कुंदकुंदाचार्यना पंचास्तिकायमां अने प्रवचनसारमां मळी आवे छे. दिगंबरो कुंदकुंदाचार्यने घणा प्राचीन गणे छे[2] तेमनी परंपरा प्रमाणे तेओ विक्रमनी पहेली शताब्दीमां थएला छे. ते पछीना तो जैन न्यायना—श्वेतांबर अने दिगंबर बंनेना—प्रत्येक ग्रंथमां ए सिद्धान्तनी स्फुट चर्चा मळी आवे छे अने तेना विषयमां दरेकनो समान मत छे.

आ सिद्धान्तनी प्रमाणनी दृष्टिए चर्चा कर्या पहेलां तेमां वस्तुस्वरूपना जे तत्वो रहेलां छे तेनी चर्चा कर्याथी विषय समजवामां वधारे सरळता थशे.

सौ कोई सहेलाईथी समजी शके छे के वस्तु सत्स्वरूप छे. पण वस्तु असत्स्वरूप छे अने वळी एक साथे ते सदसद्रूप छे, एम सांभळीने तो घणा डाह्या माणसो आश्चर्य पाम्या वगर रहे नहि. ज्यारे एलीयाना मुसाफरे थीएटेटसने कह्युं के " अमुक अर्थमां " असत् छे, अने " सत " नथी[3] " त्यारे तेना मननी स्थिति एवीज थई हशे. एने जो एम कहेवामां आव्युं होत के " सदसद्रूपं वस्त्वङ्गीकर्तव्यम् " त्यारे पण तेना मनमां एवोज भाव थात. परंतु असत् अथवा अभाव शब्दनो अर्थ जरा वधारे उंडाण साथे समजवामां आवे तो आ बाबत समजवी सहेली थई पडे. प्लेटो ना सोफीस्ट नामना संवादमां एलीयानो मुसाफर कहे छे के—"ज्यारे आपणे असत् विषे बोलीए छीए त्यारे, हुं धारुं छुं के, आपणे सत्‌थी विरुद्ध एवी कोई वस्तु विषे बोलता नथी पण आपणे फक्त अन्यना अर्थमां वापरीए छीए."[4]

न्यायदर्शनमां चार प्रकारना अभाव मानेला छे—१) प्रागभाव, २) प्रध्वंसाभाव. ३) अत्यन्ताभाव अने ४) इतरेतराभाव. आमां पहेला त्रण वस्तुना स्वरूपने लगता छे ज्यारे इतरेतराभाव ए अन्य वस्तुनी अपेक्षाए तेनो अभाव छे. आ तत्त्व वस्तुओने तेमना विशिष्ट स्वरूप अर्पे छे अने आ अर्थमां जैन आचार्यो कहे छे के वस्तु सदसद्रूप छे; सत्—स्वभावनी अपेक्षाए; अने असत्—अन्यवस्तुनी अपेक्षाए. आ सिद्धि करवा जैन आचार्यो जेवी रीते चर्चा करे छे अने जे प्रमाणो आपे छे ते जाणवा जेवा छे. तेथी तेनुं संक्षिप्त स्वरूप हुं अहिंया आपुं छुं.

---

१ सर्वनयानां जिनप्रवचनस्यैव निबन्धनत्वात् । किमस्य निबन्धनमिति चेत्—उच्यते—निबन्धनं चास्य ' आया भन्ते नाणे अन्नाणे ' इति स्वामी गौतमस्वामिना पृष्टो व्याकरोति ' गोदमा णाणे नियमा । ' अतो ज्ञानं नियमादात्मनि । ज्ञानस्यान्यव्यतिरेकेण वृत्त्यदर्शनात् ।

—' आया पुण सिय णाणे सिय अन्नाणे । '

—नयचक्र, द्रव्यार्थस्यादस्ति प्रकरणने अंते. आ उतारामाटे हुं पूज्य मुनिश्रीजिनविजयजीनो आभारी छुं.

२ पंचास्तिकाय, अधिकार १, गाथा ८, १४. प्रवचनसार, स्कन्ध २, गाथा २२—२३.

३. "......In certain sense not-being is, and that being, on the other hand, is not." पा. ३७० वा.४ The Dialogues of Plato— (त्रिजी आवृत्ति.)

४ " When we speak of not-being, we speak, I suppose not of something opposed to being, but only different." पा. ३६१ वा. ४. Dialogues of Plato.

Aho ! Shrutgyanam

अष्टसहस्रीना कर्ता विद्यानन्दी कहे छे के "तेमां 'सत्त्व' वस्तु धर्म छे; तेनो अस्वीकार करतां गधेडाना सींगडानी माफक वस्तु वस्तुत्व विनानी थई जाय छे; ते प्रमाणे कथंचित् 'असत्त्व' छे, कारण के स्वरूपा-दिथी जेम सत्त्व अनिष्ट नथी तेम पर रूपादिथी पण अनिष्ट न होय तो प्रतिनियत स्वरूपना अभावथी वस्तु प्रतिनियमनो विरोध थाय तेथी[५] (एम मानवुं जोईए के स्वरूपनी अपेक्षाए जेम सत् इष्ट छे तेम पररूपादिनी अपेक्षाए नथी.)

अनेकान्तजयपताकाना कर्ता हरिभद्र सूरि कहे छे के "ते (वस्तु) स्वद्रव्य-क्षेत्र-काल-भाव-रूपे सत् छे, अने-परद्रव्य-क्षेत्र-काल-भावरूपे 'असत्' छे. तेथी ते'सत्-अने 'असत्' छे. नहिं तो तेना अभावनो प्रसंग आवे (घटादिरूप वस्तुनो अभाव थाय) एटले के–जो ते जेम स्वद्रव्य क्षेत्र काल भाव रूपे 'सत्' छे, तेम परद्रव्यादिरूपे पण होय, तो ते घट वस्तुज न थाय. कारणके ते परद्रव्यादिरूपे पण, तेनाथी अन्य पोताना स्वरूपनी माफक, हयात छे. ते प्रमाणे जो जेम परद्रव्य क्षेत्र काल भावरूपे ते 'असत्' छे तेम स्वद्रव्यादिरूपे पण 'असत्' होय, तो एम पण गधेडाना सींगडानी माफक घट वस्तुज न थाय. आ प्रमाणे तेनो (वस्तुनो) अभाव थाय तेथी ते सदसद्रूप ज कबुल करवी जोईए."[६]

ते ज ग्रंथमां अन्य स्थाने हरिभद्रसूरि जणावे छे के 'न हि स्वपरसत्ताभावाभावरूपतां विहाय वस्तुनो विशिष्टतैव सम्भवति।' स्वसत्तानो भाव अने परसत्तानो अभाव न होय तो वस्तुनी विशिष्टतानो ज सम्भव नथी" प्रमेयरत्नकोषमां चन्द्रप्रभसूरि आवुं ज तत्त्व दर्शावे छे.

५ तत्र सत्वं वस्तुधर्मः, तदनुपगमे वस्तुनो वस्तुत्वायोगात्, खरविषाणादिवत्। तथा कथंचिदसत्वं, स्वरूपादिभिरिव पररूपादिभिरपि वस्तुनोऽसत्त्वानिष्टौ प्रतिनियतस्वरूपाभावाद् वस्तुप्रति नियमविरोधात्। अष्टसहस्री पृ. १२६

६ यतस्तत् स्वद्रव्यक्षेत्रकालभावरूपेण सद्–वर्तते, परद्रव्यक्षेत्रकालभावरूपेण चासत्। ततश्च सच्चासच्च भवति। अन्यथा तदभावप्रसंगात्। (घटादिरूपस्य वस्तुनोऽभावप्रसंगात्) इत्यादि। अनेकान्तजयपताका, पृ० ३०

ते कहे छे के जो आ तत्त्व स्वीकारवामां न आवे तो एक ज घटादि वस्तु सर्वत्र व्यापि अने तेथी एक वस्तु सर्व पदार्थ थवानो दोष नीपजे.[७]

जोसेफ 'Introduction to Logic' नामना पोताना ग्रंथमां पण आज मुद्दानी वात करे छे. ते कहे छे के "निषेधात्मक वचनने आपणे वस्तुओनो वास्तविक व्यवच्छेद दर्शावनार गणवुं जोईए......अमुक धर्मोनी अने अस्तित्वना अमुक प्रकारोनी परस्पर व्यवच्छेदकता ए निषेधमां रहेलुं वास्तविक सत्य छे. जो एम न होय तो दरेक वस्तु दरेक अन्य वस्तु थई जाय; एटले के अस्तित्वना आ विविधप्रकारना जेटली विध्यात्मक थई जाय."[८]

हरिभद्र सूरि आ प्रमाणे वस्तु तत्त्वनी दृष्टिए ऊहापोह करी तेनी सदसदात्मकता सिद्ध करी ज्ञान तत्त्वनी दृष्टिए पण एज बाबत सिद्ध करे छे. 'स्वपररूपानुवृत्तव्यावृत्तरूपमेव तद्वस्त्वनुभूयते।'–स्वरूपे अनुवृत्त अने पररूपे व्यावृत्त ज अमुक वस्तु अनुभवाय छे. टुंकामां एमना कारणो आ प्रमाणे छे. 'प्रथम तो संवेदन वस्तु छे. अने वस्तु उभय रूप छे, माटे ते पण उभय रूप छे.' आनो अर्थ आपणे एम ज करवो जोईए के अमुक संवेदन स्वरूपे सत् छे अने अन्य संवेदन दृष्टिए असत् छे. एटले आ पण वस्तु तत्त्व विचारमां ज समाई जाय छे. पण

७ तदा यथा स्वद्रव्याद्यपेक्षया सत्त्वं तथा परद्रव्याद्यपेक्षयापि सत्वं, तथा तदेव घटादि वस्तु सर्वत्र प्राप्नोति। ततश्च सर्वपदार्थापत्तिलक्षणं दूषणमापद्येत। प्रमेयरत्नकोष,० पृ०

८. "Hence we must accept the negative Judgment as expressing the real limitation of things......The reci_procal exclusivness of certain attributes and modes of being is the real truth underlying negation But for that every thing would be every thing else; that is as positive as these several modes of themselves." पृष्ठ १७२–१७३.

Aho ! Shrutgyanam

बाह्य विषयनी दृष्टिए पण वस्तु-अनुरूप-संवेदन पण उभय रूप ज छे. "आगल रहेलो घट पोताना भाव अने इतरना अभावना अध्यवसाय एटले के निर्णय रूपे ज ओळखाय छे.........सदसद्रूप वस्तुनुं केवल सदात्मक ज्ञान खरूं ज्ञान नथी. कारण के ते सम्पूर्ण अर्थनुं प्रतिभासन करतुं नथी. जेम नरासिंहना रूपनुं ज्ञान केवल सिंहना ज्ञानथी पूरूं थतुं नथी. अने आ प्रमाणे उभयनो प्रतिभास करतुं ज्ञान न थाय एम नथी, कारण के संविति तदन्य-विविक्तताथी विशिष्ट छे (एटले के अन्य पदार्थथी जे भिन्नता, तेनाथी विशिष्ट छे) अने तदन्य विविक्तता एटले अभावे."

९.........सदसद्रूपस्य वस्तुनो व्यवस्थापितत्वात् । संवेदनस्यापि च वस्तुत्वात् । तथा युक्तिसिद्धश्च । तथाहि संवेदनं पुरोऽवस्थित घटादौ तद्भावेतराभावाध्यव सायरूपमेवोपजायते ।......न च सदसद्रूपे वस्तुनि सन्मात्रप्रातभीस्वये तत्त्वतस्तत्प्रतिभास्येव, संपूर्णार्थाप्रतिभासनात्, नरसिंह-सिंहसंवेदनवत् । न चैतदुभयप्रतिभासि न संवद्यते तदन्यविविक्तताविशिष्टस्यैव संवित्तेः । तदन्याविविक्तता चाभावः । अनेकांतजयपताका. पृ. ६२.

आ साथे जहॉन केर्डना नीचेना विचारो सरखावा जेवा छेः—

Nor, again, can you reach this unity merely by predication or affirmation, by asserting, that is, of each part or member that it is and what it is. On the contrary, in order to apprehend it, with your thought of what it is you must in seperably connect that also of what it is not. You cannot determine the particular number or organ save by reference to that which is its limit or negation . It does not exist in and by itself, but in and through what is other than itself......It can exist only as it denies or gives up any seperate self-identical being and life-only as it finds its life in the larger life and being of the whole. You cannot apprehend its true nature under the category of 'Being, alone, for at every moment of its existence it at once is and is not; it is in giving up or losing itself; its true being is in ceasing to be. Its notion includes negation as well as affirmation.' An Introduction to the Philosophi of Religion, P. 219.

उपर जे अवतरणो आप्यां छे ते उपरथी जैनाचार्योनो वस्तुस्वरूपविषयक ख्याल स्पष्ट थाय छे. प्लेटोना शब्दोमां ते नीचे प्रमाणे मूकी शकाय "त्यारे अभाव गति अने अन्य पदार्थ वर्गमां छे; कारण के अन्यत्व ते सर्वमां व्यापी प्रत्येकने अस्तित्वथी अन्य करे छे. एटले के 'असत्' करे छे. अने तेथी आ रीते आपणे ते बधा विषे आस्तिकताथी कही शकीए के ते बधा 'असत्' छे अने वली बेओ अस्तित्व वाळा छे माटे एम कही शकाय के ते सत् छे.[१०]

आ प्रमाणे वस्तुना सदसदात्मक स्वभावनी समजणथी सप्तभङ्गीनुं एक तत्त्व सुगम थाय छे. तेमां बीजुं जे तत्त्व रहेलुं छे ते अनेकान्ततानुं छे. म्हारा समजवा प्रमाणे आ तत्त्व जैन तत्त्वज्ञानना इतिहासमां 'सदसत्' ना करतां वधारे प्राचीन हशे अने जैन मार्गनुं तेना उत्पत्तिना समयमां विशिष्ट लक्षण हशे. विक्रम पूर्वेनी पांचमी अने छठ्ठी शताब्दिमां आर्यावर्तमां अनेक मतो अने सम्प्रदायो उत्पन्न थया हता; ते समए आ अनेक अने केटलीक वार विरुद्ध तत्त्वोने प्रत्येकनी दृष्टिए

१०. Then not-being necessarily exists in the case of motion and of every class; for the nature of the other entering into them all, makes each of them other than being and so non-existent; and therefore, of, all of them, in like manner, we may truly say that they are not; and again in as much as they partake of being, that they are and are existent पा. ३९१. Dialogues of Plato. Vol. IV.

Aho ! Shrutgyanam

जोई तेनो समन्वय जैन दर्शने अनेकांतता द्वारा कर्यो होय एम मानवाने वांधो लागतो नथी.*

आ तत्त्व समजवुं बहुज सहेलुं छे; अने जैन तत्त्वज्ञान ते वडे व्याप्त थएलुं छे. प्रमितिनी दृष्टीए कहीए तो एक वस्तुविषे अनेक धर्मोनो आरोप करवो शक्य छे, वस्तुनी दृष्टीए कहीए तो वस्तु अनेक गुणमय छे अने अनेक पर्यायो धारण करे छे. वस्तु स्वभावना आ तत्त्वना स्वीकारथी कोई पण प्रकारना सदैकान्तिक के असदैकान्तिक मतथी आ सिद्धान्त स्पष्ट रीते जुदो पडी जाय छे.

आपणे जोई गया के जैनाचार्यो वस्तुनो स्वभाव सदसदात्मक सिद्ध करे छे. आ सिद्धान्तमांथी सामान्य अने विशेषनो सिद्धान्त सहेलाई थी निपजावी शकाय छे. कारण के वस्तुना सामान्य गुणो 'सन्मूलक' अने विशेष गुणो 'असन्मूलक' छे. (असत् शब्दनो अर्थ उपर जणाव्या प्रमाणेज लेवानो) शाथी जे, वस्तु अमुक विशिष्ट वस्तु बीजी वस्तुओ नथी तेना वडे छे. एटले के विशिष्टतानो आधार 'असत्' उपर छे, अने तेथी जैनाचार्यो कहे छे के वस्तु सामान्य विशेष मय छे. 'सत्कार्य' अने 'असत्कार्य' नो सिद्धान्त पण आमांथी ज निकली शके छे. अमुक वस्तु अथवा कार्य पोताना कारणमां ऊर्ध्व सामान्य पूरतुं तो छे ज. अने पोताना विशेष वडे पोताना कारणमां नथी. तेथी कारणमां कार्य सत् अने असत् बन्ने छे. आवां अनेक द्वन्द्वो जैनाचार्यो घटावे छे अने चन्द्रप्रभ सूरिना शब्दोमां कहीए तो "वयं खलु जैनेन्द्राः एकं वस्तु सप्रतिपक्षानेकधर्मरूपाधिकरणं ' इत्याचक्ष्महे ।" अमे जैनेन्द्रो एक वस्तु प्रतिपक्ष युक्त अनेक धर्मोनुं अधिकरण छे एम मानीए छीए." [११]

---

*प्रारंभना समयमां एम होय के न होय तो पण सिद्धसेन दिवाकरना न्यायावतार उपर टीका करनार सिद्धर्षि आ रीते अनेकान्तवाद ने समजावे छे. लेखक.

११ सरखावो—' अनेकात्मकं वस्तु गोचरः सर्वसंविदाम् ।' न्यायावतार.—वळी ' तदेवमनेकधर्मपरीतार्थग्राहिका बुद्धिः प्रमाणम् । न्या टीका.

ग्रीक फीलसुफ प्लेटोनी, वस्तुनी सदसदात्मकता विषेनी मान्यता आपणे पहेलां जोई गया. अनेकान्तता विषे पण तेनी आने मलतीज मान्यता छे अने ते आ प्रमाणे छेः—

" एलीयानो मुसाफर—अनेक वस्तु विषे आपणे शी रीते अनेक धर्मोनो आरोप करीए छीए, ते बाबत आपणे विचार करीए.

थीएटेटस—उदाहरण आपो.

मुसाफर—उदाहरण तरीके हूं एम कहेवा मांगु छूं के एक माणस विषे आपणे अनेक नामो वडे व्यवहार करीए छीए—एटले के तेने विषे रंग, रूप, परिमाण, गुण अने दोषादिनो आरोप करीए छीए. आमां अने बीजा सेंकडो उदाहरणोमां आपणे तेने माणस कहीए छीए एटलुंज नहीं पण तेने 'ते भलो छे' अने एवा अनेक गुणवालो छे एम कहीए छीए. अने ए ज रीते हर कोई वस्तु जेने आपणे शरूआतमां एक धारता होईए छीए तेने आपणे अनेक कहीए छीए अने अनेक नामो वडे तेनो व्यवहार करीए छीए.

थीएटेटस—बराबर छे. [१२]

---

१२ जुओ.—Dialogues of Plato-Vol. iv. पा. ३८३ (आवृत्ति त्रीजी.)

Str. Let us enquire, then, how we come to predicate many names of the same thing.

Theart. Give an example.

Str. I mean that we speak of man, for example under many names-that we attribute to him colours and forms and magnitudes and virtues and vices, in all of which enstances and in ten thousand others we not only speak of him as a man, but also as good, and having numberless other attributes; and in the same way anything else which we originally supposed to be one is describ-

Aho ! Shrutgyanam

अहिंयां एक बाबत विषे सावधान रहेवानी जरूर छे. अनेकान्तताने अनिर्धारणात्मकता के अनिश्चितस्वरूपता गणवानी भूल थई जवानो संभव छे. म्हारा समजवा प्रमाणे जैनाचार्यो कदी पण कहेता नथी के वस्तुनुं स्वरूप अनिश्चित के अनिर्धारणात्मक छे. शंकराचार्ये स्याद्वादना खंडनमां आज भूल करी छे. डॉ. बेलवेलकर जेवा विद्वाने पण आ भूलनुं अनुसरण कर्युं छे. जैनाचार्यो फक्त एटलुं ज कहे छे के वस्तु अनेक धर्मात्मक छे; अने एक वखते एक ज धर्मनो निर्देश थई शके. तेथी एक वाक्यमां वस्तु स्वरूपनुं संपूर्ण कथन करवुं अशक्य छे. वस्तु स्वरूप निश्चित ज छे. पण साधारण माणस अने सर्वज्ञमां ए अन्तर छे के सर्वज्ञ सर्व पदार्थोने संपूर्ण रीते एना विविध स्वरूपमां एक साथे जाणे छे ज्यारे साधारण माणस एक वस्तुने पण पूर्ण रीते जाणी शकतो नथी.[13] पण वस्तुनुं आ स्वरूप ध्यानमां रहे तेथी तेओए वाक्य रचना एवी करी छे के उपर उपरथी जोनारने एम लागे के आ बधां वाक्यो संशयमूलक छे. पण वस्तुस्थिति एम नथी ए अकलंकदेवना तत्त्वार्थसूत्रउपरना राजवार्तिकना नीचेना वार्तिकोथी स्पष्ट थाय छे.

" संशयहेतुरिति चेन्न विशेषलक्षणोपलब्धेः (सू. ६ वा. ५)

तेना उपर टीका आ प्रमाणे छे.

इह प्रत्यक्षाद् विशेषाप्रत्यक्षाद् विशेषस्मृतेश्च संशयः। ....नच तद्वदनेकान्तवादे विशेषानुपलब्धिर्यतः स्वपराद्यादेशवशीकृता विशेषा उक्ता। व्यक्ताः प्रत्यर्थमुपलभ्यन्ते।

'जो कोई एम कहे के सप्तभंगी संशयनो हेतु छे तो तेम नथी.—शाथी जे विशेष लक्षणनुं ज्ञान थाय छे " अहिंयां [अमुक] प्रत्यक्ष थवाथी [जेना वडे वस्तु निश्चय थाय ते] विशेष न देखावाथी अने विशेषोनी स्मृति थवाथी संशय थाय छे......ते प्रमाणे अनेकान्तवादमां विशेषनी उपलब्धि थति नथी एम नथी; शाथी जे स्वादेश अने परादेश ने वशेकरी विशेषो प्रत्येक अर्थमां कहेला अथवा सूचवेला (व्यक्त ?) जणाई आवे छे. आगल कहे छे.—

" विरोधाभावात् संशयाभावः " । सू. ६, वा. ५

[विशेषोमां] विरोध न होवाथी संशयनो अभाव छे "

" अर्पणाभेदादविरोधः पितापुत्रादिसंबंधवत् । सू. ६ वा. १०

" अर्पणाना भेदथी (एटले के दृष्टिबिन्दुना भेदथी) विरोध रहेतो नथी. एक ज माणसने विषे पिता पुत्र विगेरेना संबंधनी माफक (जेम एकज माणसने जुदा जुदा संबंधनी जुदी जुदी दृष्टि अथवा अर्पणा वडे पिता पुत्र भाई इत्यादि कहेवामां विरोध नथी तेम स्व अने परना दृष्टि बिन्दुथी सत् अने असत् कहेवामां विरोध नथी.)

आ प्रमाणे आपणे सप्तभङ्गीना सिद्धान्तना आधार रूप बे तत्त्वो जोया. आ तत्त्व विचारमांथी बे बाबत स्पष्ट थई आवे छेः—एक तो सप्तभंगीनी वाक्यरचनामां 'सत्' अने 'असत्' नो शो अर्थ छे ते, अने बीजी 'स्यात्' शब्द प्रत्येक वाक्यना प्रारंभमां केम मुकवमां आवे छे ते.

स्यात् ए सर्वथात्वनो निषेधक अने अनेकान्तता द्योतक कथंचित् अर्थमां वपरातुं अव्यय छे.[14] जे तत्त्वज्ञो वस्तुने अनेक धर्मात्मक मानता होय अने एम मानता होय के तेना निरूपणमां वपरातां वाक्योमां एक साथे एक ज बाबतनुं निरूपण थई शके; तेओ अनेकान्तता सूचक आवो कोई शब्द मुके ए स्वाभाविक छे. जो के एम कर्याथी ते वाक्यो संशयात्मक देखाय छे अने वांचनारने भ्रमणामां नाखे छे. परंतु एम

ed as many, and under many names.

Theart. That is true.

१३ प्रवचनसार, १—५२

१४ अत्र सर्वथात्वनिषेधकोऽनैकान्तिकताद्योतकः कथंचिदर्थे स्याच्छब्दो निपातः। पंचास्तिकायटीका पृ० ३०.

Aho ! Shrutgyanam

कर्यानो मोटो फायदो ए छे के माणस कदाग्रही न थई शके.

सप्तभङ्गीनुं वधारे पृथक्करण कर्या पहेलां शंकराचार्ये तेनुं जे खंडन कर्युं छे तेनो टुंकामां उल्लेख करी जईए. सौथी प्रथम तो जणाववानुं ए छे के तेमणे पूर्व पक्षनुं कथन पूरेपूरू कर्यू नथी. सप्तभङ्गीनुं स्यादस्ति स्यान्नास्ति इत्यादिथी वर्णन करती वखते तेमणे '**स्वरूपेण**' अने '**पररूपेण**' ए अगत्यना शब्दो छोडी दीधा छे. जो ए ध्यानमां होय तो ते छोडवामां वांधो नथी. पण शंकराचार्ये ए बाबत उपर लक्ष्य ज नथी आप्युं. अने एमनुं आखुं खंडन आ भूल उपर रचायेलुं छे. एमनो पहलो वांधो ए छे के "एक धर्मीमां एक साथे असत्त्वादि विरुद्ध धर्मनो समावेश सम्भवे नहिं. शीतोष्णनी माफक."[15]

जो शंकराचार्ये स्वरूपेण अने पररूपेण ए शब्दो ध्यानमां लीधा होत अने सत् अने असत् शब्दने पूर्व पक्षीना अर्थमां समजवा प्रयास कर्यो होत तो तेमने समजात के 'सत्' अने 'असत्' एटला बधा विरोधी नथी. बीजो वांधो ए छे के जेनुं स्वरूप अनिर्धारित छे ते ज्ञान संशयनी माफक प्रमाण न थाय.[16] आ अने बीजा वांधाओ अनेकान्तताने अनिर्धारणात्मक गणवानी अने संशयमूलक गणवानी भूलने परिणामे छे. तेनो रदियो अकलङ्कदेवना उपर आपेला वार्तिकमां आवी जाय छे. त्रीजो वांधो उपर जणाव्युं ते प्रमाणे अनेकान्तताने जे अनिर्धारणात्मक गणवामां आवे छे ते छे. चोथो ए छे के ज्यारे वस्तुने वक्तव्य कहो छो त्यारे वळी शी रीते ते अवक्तव्य कहेवाय. आ केवल शब्दखेल छे.

शंकराचार्यना मत अने जैनमत वच्चे विरोध बन्नेना वस्तुस्वभावना ख्यालमां छे. शंकराचार्य जगत्‌ने एक मात्र ब्रह्ममय माननार छे ज्यारे जैन अनेकान्त तत्त्वनुं प्रतिपादन करे छे. तेथी शंकराचार्ये जो आ दृष्टिए खंडन करवा प्रयास कर्यो होत तो ते वधारे योग्य कहेवात. तेमणे करेलुं खंडन तो भूल अने भ्रमणा उपर रचायेलुं छे.

हवे सप्तभंगीनो प्रमाण पद्धतिनी दृष्टिए विचार करीए अने आ विचारो आ विशिष्ट रूपमां कया प्रयोजनथी मुकाया ते पण जोईए.

प्रथम प्रश्न ए छे के प्रमाण पद्धतिनी दृष्टिए साते भंगो आवश्यक छे ? एटले के वस्तुस्वभाव नक्की करवा माटे सातेनी आवश्यकता छे ? आ बाबत तो स्पष्ट छे के एक विधान एक वखते एक ज निर्देश करी शके. विध्यात्मक के प्रतिषेधात्मक. सघला विध्यात्मक वाक्योनो एक वर्ग अने निषेधात्मकनो एक वर्ग करी आपणे विध्यात्मक वर्गने विधि-विधान कहीए अने निषेधात्मक वर्गने निषेध-विधान कहीए. हवे प्रश्न ए छे के वस्तु समजवा माटे आवा केटला विधानोनी जरूर छे. स्वाभाविक रीते प्रथम वस्तु पोते शुं छे तेनो निर्णय करीए. ए दृष्टिए '**स्यादस्ति**' वाक्य बराबर छे. पछी वस्तु शुं नथी ते नक्की करीए अने ते दृष्टिए '**स्यान्नास्ति**' भङ्ग बराबर छे. आ बन्नेमांथी नीपजतुं वस्तुस्वरूप '**स्यादस्ति नास्ति**' ते द्विवाक्यात्मक भंगथी दर्शावी शकाय. आ रीते प्रथम त्रण भंगोनी जरूर तो 'स्यादस्ति स्वरूपेण घटः; स्यान्नास्ति पररूपेण घटः; अने स्यादस्ति 'नास्ति क्रमेण'थी समजी शकाय. चोथो भङ्ग 'स्यादवक्तव्य' छे. आ भाषा तत्त्वनी दृष्टिए समजी शकाय तेम छे. एक वखते एक ज वाक्यमां विधि अने प्रतिषेध थई शके नहिं. तेथी ते अपेक्षा समये वस्तु अवक्तव्य कहेवाय.[17]

पण सप्तभंगीना 'निरूपणनुं बीजुं पण एक दृष्टिबिन्दु छे अने ते ए छे के सप्तभंगी अमुक प्रकारनी वाद पद्धतिमांथी उत्पन्न थएली छे अने आथी सप्तभंगीनुं प्रयोजन विशेष समजाय छे. आ साते भंगो सात प्रकारना प्रश्नोना

---

१५ न ह्येकस्मिन् धर्मिणि युगपत्सदसत्त्वादिविरुद्धधर्मसमावेशः संभवति शीतोष्णवत्। शांकरभाष्य, २-२-२२,२३.

१६ अनिर्धारितरूपं ज्ञानं संशयज्ञानवत् प्रमाणमेव न स्यात्।

१७ अतस्तदुभयात्मकोऽसौ क्रमेण तच्छब्दवाच्यतामवस्कन्दन् स्याद् घटश्चाघटश्चेत्युच्यते। यदि तदुभयात्मकं वस्तु घट इत्येवाच्येत, इतरात्मासंग्रहादतत्त्वमेव स्यात्। अथाघट एव इत्युच्येत घटात्मानुपादनादभूतमेव स्यान्न वस्तु तावदेवेति। न चान्यः शब्दस्तदुभयात्मकावस्थतत्त्वाभिधायी विद्यतेऽतोऽसौ घटो वचनगोचरातीतत्वात् 'स्यादवक्तव्य' इत्युच्यते। राजवार्तिक पृ—६.

Aho ! Shrutgyanam

उत्तर रूपे छे. आ बाबत अकलंकदेवे आपेला तेना लक्षणथी स्पष्ट थाय छे. "प्रश्नने लईने एक वस्तुमां अविरोधथी विधि प्रतिषेधनी कल्पना ते सप्तभंगी " (अविरोधथी एटले दृष्ट अने इष्ट प्रमाण अविरुद्ध). जे माणसे सप्तभंगीनी प्रथम रचना करी हशे तेनो उद्देश ए शोधी कहाडवानो हशे के पुनरुक्ति कर्या विना माणस अमुक वस्तु स्वभाव विषे केटला प्रश्नो पूछी शके. (अथवा तो आपणे एम मानीए के सप्तभंगीनो विकाश धीमे धीमे थयो तो जे माणसे छेल्लां त्रणा वाक्यो उमेर्या हशे तेनो उद्देश तो आवो ज कोई होवो जोईए.) दाखला तरीके कोई एम पूछे के 'स्यादवक्तव्य' ने आठमा भंग तरीके केम स्वीकार्यो नथी ? तो एनो एवो जवाब अपाय के ज्यारे वस्तु विषे स्यादस्ति नास्ति कहेवामां आवे छे त्यारे ते वक्तव्य थाय छे. तेथी तेने आठमा भंग तरीके स्वीकारवानी जरूर नथी. आ रीते एक बाजुथी सप्तभंगी सत् अने असत् विषे उत्पन्न थता सर्व प्रश्नोनो उत्तर आपी शके छे अने बीजी बाजुए केवल सत् असत् माननारनुं खंडन करे छे. छतांए मने एम लागे छे के प्रमाण पद्धतिनी दृष्टिए तो प्रथम त्रण ज भंग आवश्यक छे; चोथाने भाषा–दृष्टिए स्थान छे पण छेल्ला त्रणनो तत्त्वज्ञाननी दृष्टिए खास उपयोग जणातो नथी.[१८]

हवे जैन प्रमाण शास्त्रमां सप्तभंगीनुं स्थान क्यां छे ते आपणे जाणवुं जोईए. श्रीवादिदेवसूरि प्रमाणना बे भाग करे छे प्रत्यक्ष अने परोक्ष. परोक्षना पांच विभाग करे छे–स्मरण, प्रत्यभिज्ञा, तर्क, अनुमान अने आगम. आगमनुं बीजुं नाम शब्द प्रमाण छे. आप्त वचनमांथी निपजतुं ज्ञान शब्द प्रमाण. ते वचन, वर्ण, पद अने वाक्योनुं बनेलुं होय छे. शब्द स्वशक्तिथी अने समयथी ज्ञान पेदा करे छे. आ पछी वचननो सप्तभंगी साथे संबंध दर्शावे छे. " दरेक जग्याए आ शब्द विधिप्रतिषेध वडे पोताना अर्थने जणावतो सप्तभंगी ने अनुसरे छे."[१९] आ रीते आपणे जोई शकीए छीए के सप्तभंगीनो आगम अथवा शब्दप्रमाणमां समावेश थाय छे.

आ निबंधमां जेनुं विवेचन कर्युं छे तेने प्रमाण सप्तभंगी कहे छे. आने मलती ज बीजी एक सप्तभंगी छे ते नय सप्तभंगी कहेवाय छे. प्रमाण अने नयमां ए तफावत छे के प्रमाण वस्तुना सकल स्वरूपनुं निरूपण करे छे, ज्यारे नय वस्तुना अंश मात्रनुं करे छे.[२०] पण एनी विशेष चर्चा आ निबंधमां थई शके एम नथी तेने माटे बीजो निबंध लखवानी जरूर रहे छे. इत्यलम्.

|| ॐ शांतिः ||

---

१८ 'सप्तविध एव तत्र प्रश्नः कुत इति चेत्, सप्तविधजिज्ञासाघटनात् । सापि सप्तधा कुत इति चेत्, सप्तधा संशयोत्पत्तेः । सप्तधैव संशयः कथमिति चेत्, तद्विषयवस्तुधर्मसप्तविधत्वात् । अष्टसहस्री, पृ. १२

१९ तत् (प्रमाणं) द्विभेदं प्रत्यक्षं परोक्षं च । स्मरण-प्रत्यभिज्ञा तर्का–नुमाना–गमभेदतस्तत्पंच प्रकारकम् ।

२० आप्तवचनादाविर्भूतमर्थसंवेदनमागमः । वर्णपदवाक्यात्मकं वचनम् । स्वाभाविकसामर्थ्यसमयाभ्यामर्थबोधनं शब्दः । सर्वत्रायं ध्वनिर्विधिप्रतिषेधाभ्यां स्वार्थमभिदधानः सप्तभंगीमनुगच्छति, ननु चोदाहृता नयसप्तभंगी, प्रमाणसप्तभंगीतस्तु तस्याः किंकृतो विशेष इति चेत् सकलविकलादेशकृत इति ब्रूमः । विकलादेशस्वभावा हि नयसप्तभंगी वस्त्वंशमात्रप्ररूपकत्वात् । सकलादेशस्वभावा तु प्रमाण–सप्तभंगी यथावद्वस्तु प्ररूपकत्वात् । मेयकमलमार्तंड, पृ. २०६.

Aho ! Shrutgyanam

बे नवा क्षेत्रादेश पट्टक

१

गया अंकमां जे क्षेत्रादेश पट्टकोनी नकलो आपी छे तेमां सौथी जूनो पट्टक वि. सं. १७७४ नी सालनो छे. परंतु पाछळथी एक तेनाथी पण १०० वर्ष जेटलो बधारे जुनो पट्टक मळी आव्यो छे जे अहिं आपवामां आवे छे. ए पट्टक तपागच्छना सुप्रसिद्ध आचार्य विजयसेन सूरि तरफथी संवत् १६६७ नी सालमां लखाएलो छे. आ पट्टक फक्त मेवातदेश माटेनो छे. आगरा अने तेनी आसपासना प्रदेशने ते वखते मेवात देशना नामथी ओळखवामां आवतो हतो. संवत् १६६७ नी सालमां जे यतियो ए प्रदेशमां रहेता—विचरता हता तेमनां चातुर्मास स्थळो जाहेर करवा माटे आ पट्टक लखायो हतो; गुजरात के राजपूताना आदि बीजा देशो माटे नथी. तेथी आमां फक्त १७ यतियोनां नामोज आपवामां आव्यां छे. नहीं तो विजयसेन सूरिनो यति समुदाय तो लगभग बे हजार जेटली संख्या वाळो हतो. आनी लंबाई ५ इंच अने पहोळाई ३¾ इं. छे. पंक्ति कुल २० छे.

पट्टकनी नकल

ई०।। श्रीहीरविजय सूरीश्वर गुरुभ्यो नमः । संवत् १६६७ वर्षे श्रीविजयसेनसूरिभिर्ज्यैष्ठस्थित्यादेशपट्टो लिख्यते ।। मेवात देशे ।।

उपाध्याय श्री विवेक हर्ष ग० आगरुं १ पार २
उपाध्याय श्री भानुचंद्र ग० आगरामध्ये
पं. जयविजय ग. पं. विजयहंस सत्क सांगानेर १
पं. हर्षविजयगणि नरायणुं १
पं. भीमविजय ग. पं. यसविजय गणि सत्क मालपुर १
पं. महानंद गणि अलवर १
पं. धनचंद्र गणि रयवाडी तथा दिल्ली १
पं. जयविजय ग. उ. श्री कल्याणविजय ग. सत्क शमाणुं १
पं. कमलविजय गणि हंसार १ महिम २
ऋ. पद्मकुशल गणि अभिरामाबाद १
ऋ. रत्नविमल गणि मांडलि १
ऋ. हर्षविमल गणि अणिआरुं १
ऋ. लाभकुशल पर्वतसर १
ऋ. मुनि सौभाग्य ग. सेरपुर १
ऋ. शिवविजय ग. टुंक १
ऋ. कनकसागर मसूदुं १
ऋ. रविसागर ग. टोडा १
ऋ. भोजविमल सिरवाडी १

२

हालमां, पं. श्रीगुलाबविजयजीना शास्त्रसंग्रहमांथी एक बीजो पट्टक मळी आव्यो छे जे आ नीचे आपवामां आवे छे. आ पट्टक सं. १८४५ नी सालनो छे. ते वखते आचार्यपद उपर विजयजिनेन्द्र सूरि हता.

।। श्री ।।

।। ॐ० ।। श्रीविजयधर्म्म सूरीश्वर गुरुभ्यो नमः सं. १८४५ वर्षे भ । श्रीविजयजिनेंद्रसूरीश्वर गुर्जर देशे ज्येष्ठस्थित्या देश पट्टको लिख्यते ।।

पं. सौभाग्यविजय ग । श्रीजीसपरिकरा सूरति १ नवसारी २ बलसाडी ३ बोराकठोर ४
उ. श्रीषुशालविजय ग । वृद्धश्रीजी स । पं. कल्याणचंद्र पं. खूषाल स । विरमगाम १ भोजया २ गोरीआ ३ ठा ४ अस्मत् पार्श्वे ।
पं. हितविजय ग । पं. हंसविजय ग । पं. सुजाण स । खंभात १ धारापरो २ वडोदरा ३

Aho ! Shrutgyanam

पं. न्यानविजय । पं. नेम स । पाटण १ कुणगर २

पं. जयविजय ग । पं. दीप स । राजनगर १ शरखेज २ रायपर ३ प्रोसायो ४ नवोवास ५

पं. भक्तिवि. । पं. कांति स । पं. कृष्णवि । पं. राज स । पं फत्तेवि । पं. कुसल स । राधनपूर १ कमालपूर२ भोलोट ३ सोनेथ ४ धंधाणा ५

पं. कल्याणवि । पं. प्रसिद्ध स । पं. जीन वि । पं. पद्म स । चाणसमो १ कंबोई सोलंकीनी २

पं. मोहनवि । पं. नय स । पं. पुन्यवि । पं. भक्ति स। वीसनगर १ कडा २ जासका ३ गोठुया ४

पं. उत्तमविजय । पं. सुमति स । रानेंर ठा ४ अस्मत् पार्श्वे

पं. मुक्तिवि । वृद्धश्रीजी स । पं. डुंगरवि । पं. मुक्ति स पादरु १

पं. रत्नकुशल । पं. विनित स । पं. न्यान पं. रत्न स । वाराही १ धोलकडुं २ कोरडा ३ झझाम ४

पं. मनरूपसागर । पं. अनंत स । मालवदेशे

पं. कनकविजय । पं. शुभ स । पं. राजेंद्र । पं. कनक स । मियांगाम १

पं. अमृतविजय ग । पं. विवेक स । भरुयच १ देज-बारुं २

पं. षुशालविजय । पं. जिन स । सोरठदेशे

पं. धुशालविजय पं. ऋद्धि स । प्रागधरु १ सायला २ पालीयाद ३ मडढा ४

पं. राजवर्धन । पं. सकल स । पं. विवेकवर्धन । पं. मेघ स । वढवाण १ पाणसाणा २

पं. सुबुद्धिविजय पं. रुप स । हेवदपूर १

पं. विनीतविजय । पं. नेम स । पाटडी १

पं. हीराचंद्र । पं. गुलाब स । पं. धीर्यचंद्र । पं. हीर स । ईडर १ वेराल्ट २ सीपर ३ प्रांतेज ४

पं. पद्मविजय । पं. उत्तम स । राधनपुर मध्ये

पं. हस्तिविजय ग । पं. कुशल स । विजापूरं

पं. अमीविजय ग । पं. सुख स । थिराद १ कोटबावली २

पं. हंसविजय ग । पं. गज स । मालण १

पं. लालविजय ग । पं. रत्न स । लींबडी १ अंचेवालीउं २

पं. माणिक्यविजय पं. मोहन स । इलोल १

पं. गुलालविजय ग । पं. राम स । सावली १

पं. लक्ष्मीविजय ग । पं. राम स । जामला १

पं. हेमविजय ग । पं. कपूर स । पंचासर १

पं. षुश्यालविजय । पं. राज स । वडावली १ आंकरा २

पं. जिनविजय ग । पं. जय स । दमण १ उडपाड २ अगासी ३

पं. शांतिविजय ग । पं. रंग स । मावड १ गोठडा २

पं. भाग्यविजय ग । पं. श्रीजी स । वेंड १

पं. उमेदविजय ग । पं. वृद्धि स । आगलोड १

पं. पद्मविजय ग । पं. उमेद स । मेंसाणा १ साभे-तरा २

पं. लालविजय ग । पं. माणिक्य स । चीलोडो १ बद-रखु २

पं. हर्षविजय ग । पं. मोहन स । वडनगर १ उंमता २

पं. हस्तिविजय ग । पं. रंग स । राणकपूर १

पं. ज्ञानविजय ग । पं. लक्ष्मी स. । साचोर १

पं. हस्तिविजय ग । पं. चतुर स । मातर १ वटा-दरुं २

पं. सुबुद्धिविजय ग । पं. जीव स । शमी १ दूधषा २ अ-णवरपूर ३ राफु ४

पं. वृद्धिविजय ग । पं. देव स । पं. तेजविजय । पं. रंग स । कंबोइ कोलीनी १ आंगणवाडु २

पं. षुशालविजय ग । पं. कपूर स । केसरडी १

पं. कस्तूरविजय ग । पं. मान स । इटोलू

पं. वृद्धिविजय पं. सुजाण स । पं. रुपविजय पं. षुष्याल स डभोइ १ कारवण २

पं. रत्नविजय । पं. न्यांन स । लांघणोज १

पं. माणिक्यविजय । पं. मोहन स । पाटण मध्ये

पं. बुद्धिविजय ग । पं. मोहन स । वावि १ माढकुं २

पं. विवेकविजय । पं. ऋद्धि स । रानेर १ उंबरी २

पं. रविविजय । पं. केसर स । भांभेर १ तेरवाडु २

पं. मोहनविजय । पं. रत्न स । वसु १ मेंता २

Aho ! Shrutgyanam

पं. गौतमविजय ।पं धन स । दसाडो १ कलाडो २
पं. अमृतविजय पं. प्रताप स । गणाद्बहिः
पं. प्रतापचंद्र । पं. दान स । पं. मावचंद्र । पं. दोलत स। कुकुआव १
पं. जयविजय । पं. कांति स । कटोसण १ डांगरवुं २
पं. गुलाबविजय पं. कुंवर स । झीणोट १
पं. दयाचंद्र पं. हर्ष स । खेड ब्रह्मानी १
पं. नायक विजय पं. विनय स । दक्षण देशे
पं. माणिक्यविजय पं. विनित स । कुंवर १ मुंजपर २
पं. चंद्रविजय पं. उत्तमविजय स । राजनगरमध्ये.
पं. हर्षविजय पं. जस स । धोलको १ मोरीयो २
पं ऋद्धि सागर पं. बिंमेंद्र स । छठीयाडो ।
पं. ज्योतिविजय पं. रत्न स । व्यारा १ बुहार २
पं. हीरविजय पं. भाण स । चंदूर १ लोलारू २
पं. कांतिविजय पं. नायक स । पेटलाद १ वसोर २ वासज ३
पं. प्रेमविजय पं भाण स । देवाडभू १
पं. अमृतवि । पं. चंद्र स । पं. तेजवि । पं. भाण स । छनायार १ देकावाड्ड २
पं. माणिक्यविजय पं. सुबुद्धि स । कोठ १
पं. जीवणविजय पं. लाल स । गांभू १ सरदारपूर २
पं. प्रेमवि । पं. दर्शन स । पं. रुपवि । पं. प्रेम स । वागड देशे
पं. कांतिविजय पं. दर्शन स. । वखतापुर १ वलासणु २
पं. षीमविजय पं. षुष्याल स । लींच १ पीपलदलकरवटीउं २
पं. देवविजय पं. दीप स । कडी १
पं. विनयचंद्र पं. भक्ति स । वडगाम १ धोतासकलाणा २
पं. हेमविजय पं. भीम स । काकर १
पं. कपूरवि. । पं. देवविजय १पं. अमी स । पालणपुर १ वगदा २ मयादर ३ दांतावसही ४
पं. नायकविजय पं. गुलाल स । द्यावड १
पं. वसंतविजय पं. माव स । डभोई १

पं. नित्यविजय पं. भाण स । गोधावी १
पं. रत्नविजय पं. प्रेम स । नडियाद १
पं. गोविंदविजय पं. हेम स । लेंणप १ मोरवाड्ड २
पं. मेघविजय । पं. माणिक्य स । गोत्रकुं १
पं. जीवणचंद्र ग । पं. उदय स । थिरा १ बडा २ झालिम ३
पं. उत्तमचंद्र । पं. उदय स । लूंणपूर १ छत्राला २
पं. दोलतिवि । पं. लक्ष्मीविजय पं. महिमा स । मुंडेठ १ नेवडा २
पं. राजविजय पं. सुंदर स । टषर १ वलण २
पं. षूष्यालविजय पं. प्रेम स । वडाली १
पं. जसविजय ग पं. प्रताप स । शंखेश्वर १
पं. सोभाग्यविजय पं. षिमा स । मुजपूर १ रचियाणुं २
पं. गुणविजय पं. षूष्याल स । पं. रविविजय पं. दोलत स । समु १ वाव २
पं. भाणविजय पं. केशर स । वजाणुं १
पं. वृद्धिविजय पं. कांति स । पीलुचुं १ मगरवाड्ड २
पं. जसविजय पं. कनक स । सोजतरा १
पं. नायकविजय पं. इंद्र स । मणोद १ संडेर २
पं. रविविजय पं. कनक स । नानोदरु १
पं. हंसविजय पं. जीवण स. । अहमदनगर १
पं. पुन्यसोम पं. केसर स । सोवनगढ १
पं. पानाचंद पं. उदय स । झेरडा १ वरापाल २ झिणाल ३
पं. माणिक्यविजय पं. दीप स । धेणोंज १
पं. इंद्रविजय ग पं. अमृत स । गणाद्बही
पं. जिनविजय ग । पं. दर्शन स । हरसोर १ बलोल २
पं. वृद्धिविजय ग । पं. विनय स । गांगद १ फेदरा २
पं. कृष्णविजय ग पं. षूष्याल स । सीद्धपूर १ लालपर २ कलांणा ३
पं. विनयविजय पं. राघव स । थाषां १ धनेरा २
पं. उग्रचंद्रगणी । पं. मोहन स । डीसा १ राजपूर २ वडाल ३
पं. जीवनविजय पं. जीत स । आत्रोली १

Aho ! Shrutgyanam

पं. भवानविजय पं. नायक स । कसरा १
पं. रूपविजय पं. गौतम स । जामपूर १ वासाबावल बाडीया
पं. भवानविमल पं. ऋद्धि स । कुयारज १
पं. वसंतविजय पं. देव स । चांगा १
पं. मानविजय पं. रत्न स । गोला १
पं. हर्षविजय पं. षूष्याल स । नंदासण १
पं. न्यानविजय पं. कपूर स । भलगाम १
पं. भाग्यविजय पं. जस स । मांडल १
पं. मोहन सोभाग्य पं. भाग्य स । पाडला १
पं. मणिकविजय पं. मान स । रणोद १
पं. रत्नविजय ग । ऋ. देव स । सांपरा १
पं. गुणविजय पं. प्रेम स । षेंमाण १
पं. षीमारुचि पं. गणेश स । वणोद १
पं. देविंद्रविजय पं. हर्ष स । वालोल १
पं. भाग्यविजय पं. कुसल स । सांडवा १
पं. माणिक्यविजय पं. राम स । अस्मत्पार्श्वे
पं. रामविजय पं. तेज स । साहाणी १
पं. ज्ञानसागर पं. उदय स । मालक १
पं. दयासोम पं. जीत स । मोभा सादडा १
पं. रविविजय पं. विनीत स । गणद्रही १

Aho ! Shrutgyanam

बृहट्टिप्पनिका नामक प्राचीन जैन ग्रंथ सूचि

बीजा अंकमां परिशिष्ट रूपे ए सूचि प्रकट करवामां आवी छे. ए सूचि कोणे अने क्यारे बनावी छे तेनो कांई पतो लाग्यो नथी. परंतु एमां आवेला ग्रंथोना नामो उपरथी एटलुं अनुमान करी शकाय छे के विक्रमना पंदरमा सैकाना मध्य भागमां कोई विद्वाने आ सूचि तैयार करी छे. कारण के सालवारना जे ग्रंथनामो आमां आपेलां छे तेमां सौथी छेवटनुं नाम, संवत् १४४३ मां रचाएला कुलमंडनसूरिना 'प्रवचनपाक्षिकादि आलापक संग्रह'नुं छे (नं. १६४). तेना पछीनी सालनो रचाएलो कोई ग्रंथ ए सूचिमां दाखल थएलो जणातो नथी. तेनी पहेलां, सं. १४३६ मां रचाएला उपदेश चिंतामणि, (नं. २२३) सं. १४२९ मां रचाएली प्रश्नोत्तर रत्नमालावृत्ति (नं २२२), १४२६ मां बनेली भक्तामरस्तवटीका (नं. १३२); इत्यादि ग्रंथोनी नोंध थएली एमां अवश्य जोवाय छे. परंतु ते पछीनुं एके नाम जोवातुं नथी. लगभग पंदरमां सैकाना त्रीजा ज पादमां थएला सोमसुंदर, मुनिसुंदर, गुणरत्न, ज्ञानसागर आदि प्रसिद्ध ग्रंथकारोना ग्रंथोनी नोंध एमां बिलकुल लेवाई नथी. तेथी हुं ए सूचिनी तैयार थवानी तारीख वि. सं. १४४० थी ६० नी वच्चे मूकुं छुं. एटले आज थी लगभग सवापांचसो वर्ष पहेलां ए सूचि थएली छे.

सूचि करनार कोई समर्थ विद्वान् अने उत्कृष्ट साहित्य प्रिय यतिजन ज होवो जोईए. तेणे ए सूचि घणीज बारीकी थी पूरेपूरी जांच साथे करेली छे. ग्रंथोने विषयवार तारवी काढ्या छे अने दरेक ग्रंथने तपासी तपासीने नोंध्या छे. सूचिमां ग्रंथ, तेना कर्ता, तेनी रचायानी साल अने तेनी एकंदर श्लोकसंख्या; एम चार बाबतो लीधी छे अने दरेक ग्रंथना संबंधमां शोध करी करी छेवटे आ ४ बाबतोमांथी जेटली मळी तेटली नोंधी छे.

सूचिकर्ताए मुख्य करीने पाटण (अनहिलपुर पत्तन), खंभायत (स्तंभतीर्थ), भरूच (भृगुपुर) अने प्रभास पाटण (देवपत्तन) ना मुख्य पुस्तक भंडारो जोईने आ सूचि बनावी छे. मारवाडना सुप्रसिद्ध जैसलमेरना ज्ञानभंडारनुं आमां नाम नथी तेथी ते जोवायो होय तेम जणातुं नथी. ए उपरथी एम पण अनुमानाय छे के सूचिकर्ता कोई गुजरातनो अने खास करीने तपागच्छनो विद्वान् होवो जोईए.

सूचिकर्तानी शोधकबुद्धिनो नमुनो आपणने १५५ नंबरवाळी नोंध उपरथी स्पष्ट जणाई आवे छे. ए नोंधमां 'शत्रुंजय महात्म्य' जेवा प्रसिद्ध अने प्रामाणिक कहेवाता ग्रंथने स्पष्टरुपे 'कल्पित' अने 'आधुनिक धनेश्वरकृत' बताव्यो छे! मूळ ग्रंथमां तो ग्रंथ कर्ताए ए 'माहात्म्य' ने घणुं ज प्राचीन अने तेथी घणुं ज प्रामाणिक होय तेवुं बतावता माटे आकाश–पाताळ एक कर्यां छे. परंतु शोधक विद्वान्ना हाथमां जतां ते बधी कर्त्रिमता एकदम उघाडी पडी गई अने तुरत ज तेना माटे तेणे 'कल्पितता' नो चोखो शेरो मारी दीधो. प्रो. वेबर अने डॉ. बुल्हरने जो आ शेरानी खबर पडी होत तो ए महात्म्यने कल्पित सिद्ध करवा माटे जे मोटी महेनत तेमने उठाववी पडी हती ते जराए न पडत अने मात्र आ एक ज प्रमाणथी तेमनो सिद्धांत सत्य साबीत थई शकत. अस्तु.

आ सूचिमां जणावेला केटलाक ग्रंथोनो आजे क्यां ए पतो संभळातो नथी. तो ते माटे विद्वानोए शोध करवानी खास आवश्यकता छे. दाखला तरीके 'सम्मतितर्क' जेवा सुप्रसिद्ध अने जैन साहित्यभूषण ग्रंथनी आजे मात्र एक बृहद्वृत्ति ज मळी आवे छे. परंतु ए सूचिमां तेनी त्रण वृत्तिओ नोंधेली छे. (जुओ क्रमांक ३५८) तेमां प्रथम वृत्ति तो बहु ज महत्त्वनी छे, कारण के तेना कर्ता मल्लवादी जणाव्या छे. मल्लवादी सूरिए सम्मति उपर कांईक विवरण लख्युं छे तेनो पुरावो तो आपणने हरिभद्रसूरिना लेखमांथी पण मळी आवे छे. ऐतिहासिक

Aho ! Shrutgyanam

दृष्टिए मल्लवादीनी ए टीकानुं घणुं ज महत्त्व होई शके छे. कारण के तेना आधारे न्याय शास्त्रना विकास अने इतिहास संबंधी अनेक प्रश्नोनो विशिष्ट ऊहापोह करी शकाय छे; अने ते उपरथी अनेक अज्ञात बाबतोनुं ज्ञापन अने संदिग्ध वातोनुं निराकरण करी शकाय छे. तेथी सम्मतिनी ए टीकानी शोधखोळ करवा माटे दरेक विद्वानने आग्रहपूर्वक भळामण करवामां आवे छे.

सम्मतिनी एक त्रीजी टीकानी पण एमां नोंध करेली छे. तेनो कर्ता कोण छे ते एमां जणाव्युं नथी. फक्त 'अन्य कर्तृक' छे, एम जणावी छे. कदाच ए टीका कोई दिगंबर विद्वान् कृत होय, जेना संबंधमां अमारा विद्वान् मित्र श्रीयुत नाथूरामजी प्रेमीए जैनहितैषीना सन् १९२१ ना जान्युआरी-फेब्रुआरी मासना संयुक्त अंकमां एक महत्त्वनी टिप्पणी प्रकाशित करी छे. तो शोधक जनोए ए टीकानी पण गवेषणा करवी आवश्यक छे. आवी ज रीते बीजा पण अनेक ग्रंथोनां नामो जोवामां आवे छे के जे ए सूचिमां नोंधायला छे पण अत्यारे उपलब्ध थता नथी.

आ सूचि बे हस्तलिखित प्रतो उपरथी मुद्रित करवामां आवी छे जेमांनी एक प्रत तो लगभग ३००–४०० वर्ष जेटली जुनी हती अने एक नवी लखाएली हती. बंने प्रतो वडो दराना जैन ज्ञानमंदिर वाळा प्र. श्री कांतिविजयजीना शास्त्र संग्रहमांनी हती.

एक ऐतिहासिक पत्र

[नोटः––आ नोटनी नीचे आपेलो पत्र मने एक जूना भंडारमां पडेला रद्दी कागळोना ढगलामांथी मळयो छे. कोई कोई वार रद्दी कागळोमांथी बहु महत्त्वनी चीजो मळी जाय छे के जेने साधारण मनुष्य नकामी गणीने कचरामां फेंकी दे छे. आ पत्र विक्रम संवत् १८३१ मां लखायलो छे. ते मेवाड राज्यना प्रसिद्ध देवस्थान 'नाथदुआरा' थी तपागच्छना यति ऋषभविजयजीए पोताना कोई वृद्ध अने पूज्य यतिना उपर लखेलो छे. तेमनुं नाम पत्रनी किनारी फाटी जवाथी जतुं रहयुं छे. पत्रनी भाषा राजपूतानी–मुख्यत्वेकरी मेवाडी छे. आ पत्रमां ए समयनी राजपुतानानी राजकीय परिस्थितीनो बहु सारो अने मजेदार चितार आपेलो छे. ए जुना वखतमां ज्यारे रेलवे, टपाल, तेमज समाचारपत्र विगेरे साधनो न होतां त्यारे लोकोने एक बीजा प्रांतमां किंवा राज्यमां शी शी हीलचालो थई रही छे ए बहु ओछुं जाणवामां आवतुं हतुं. ए जमानामां सर्वसाधारण लोकोना करतां यति, संन्यासी, बनजारा अने बाजीगर आदि जे मनुष्य हमेशां देशाटण अथवा परिभ्रमण करता रहेता तेओ ज राष्ट्रीय तेम ज सामाजिक परिस्थितिथी विशेष वाकेफ रहेता. ए बीना आ कागळ उपरथी स्पष्ट थाय छे. राज्यक्रान्तिना वखतमां लोकोने केवा केवा संकटो भोगववा पडे छे, एनो पण ख्याल आ कागळ उपरथी थई शके छे. संसारनो संसर्ग तजीने यति–संन्यासी थयेला मनुष्योने पण देशनी अस्वस्थताने लीधे केवुं अस्वस्थ थई जवुं पडे छे ए बाबतनुं पण स्पष्ट अने अनुभूत वर्णन आ पत्रमां छे. संवत् १८३१ मां राजपूतानानी–विशेषतः मेवाडनी–सामाजिक, आर्थिक अने राजकीय परिस्थिति केवी हती एनुं संक्षेपमां पण पूर्ण विश्वसनीय वर्णन आ पत्रमां छे. ऋषभविजयजी एक सारा विद्वान् यति हता (जेना प्रमाण मने बीजा अनेक उल्लेखोमांथी मळ्या छे परन्तु ए बधांनो अत्रे उल्लेख करवानी आवश्यकता नथी.) एथी तेमनी पासे अनेक प्रकारना मनुष्योनुं आवागमन रहेतुं ज हशे.

Aho ! Shrutgyanam

बीजूं मेवाड राज्यना घणा खरा कर्मचारीओ जैनी ओसवाळ ज वधारे हता, एथी तेमनी मारफते यति–साधुओनी पासे एवी बातोना विश्वसनीय खबरो विशेष रूपमां आवे ए पण स्वाभाविक छे. यतिवर्गना अधिकारवाळा जूना भांडारोमांथी जो आवी जातना साहित्यनी शोध खोळ करवामां आवे तो एमांथी अनेक प्रकारना एवां ऐतिहासिक साधनो मळी शके के जे धर्म अने देश एम उभय दृष्टिथी बहु महत्त्वना थई पडे तेम छे.—संपादक]

|| र्द० || स्वस्ति श्रीपार्श्व परमेश्वरं प्रणम्य श्रीमति तत्र श्रीजीदुआरातो से | ऋषभविजयस्सानंदेन लिखत्यपरं वंदणा १०८ वार अवधारवीजी. अत्र सुष व श्रेय छंइ तथा श्रीपंडितजीना सुख पत्र देई हर्ष पोष करवाजी. अपरं श्रीपंडितजी परमेष्ट श्रेष्ठ सकल गुणगरिष्ठ विद्वज्जन वरिष्ठ संत दंत सज्जनसिरोमणि कृपानिधान सर्वत्र राजसभायां लब्धसन्मान गुणालंकृत परम प्रीतिपात्र गुणग्राहक मोटा सत्पुरुष छो. सेवकोपरि सदा हितप्रीति सुदृष्टि राषो छो तिमज राषवीजी. जे दिवसै श्रीपंडितजीस्युं मिलस्युं वातो करस्युं ते दिवस घणुं सफल करी जाणस्युं जी. अप्रंच गत वर्षै पत्र १ श्रीपंडीतजीनो गोढवाडनो, एक अनुचर हस्ते श्रीजीदुआरामें आव्यो हतो, वैशाष द्वितीय मैः ते हस्ते पत्र १ श्रीपंडितजीना नामनो...हस्ते मूक्यो हतो ते पोहताना समाचार नाव्याजीः बीजुं ईकतीसानो चोमासो श्रीजीदुआरै थयोजीः उदेपुरमै ठांणुं २ बैठा राख्या छेः वस्तुभाव कुशल षेमै रह्यौ छैः ओर सर्वस्थानक नष्ट थया पिण आपणो आलय कुशल षेमे रह्यो छेः भगवान राष्यो छे; माल्यानो साजबाज भंडान्या मध्ये मूकी बे मालिम करी ने हुं श्रीजीदुआरे आव्योः सर्व वणिक दिसोदिस नीकले गयाः सकल साधासुं दषल थई. सात दिवस फतेषांन मावथनी ओरीयै ठांणुं १५ संघातै बैठा रह्याः सर्व महाजन चोरासीगच्छना मिली राय सहस्र तृक दीधा पंडित जमांन थयो त्यारै सातमे दिवस घडी २ दिन रहते अठे आव्या. सर्व श्रावक साथे पंडित साथै आवी साधांने पारणो कराव्योः पछे वणिक पिण नीकल्या ने अमे पिण नीकली आघाट आव्याः मास बे तिहां रह्या; तिहां पिण पंडितजीनो कारण संधीइ लोप्युं त्यारै पंडित जावतो करी नाथदुआरे पोहचता कन्या; हवै रावत अर्जुनसिंघजी मैहतो लषमीचंद विजैसिंघ नाणाविटी दिषणीना पंडित रूपनगर वालानो कांमदार देवीदास मुंणोत मिली उदेपुर आव्या; च्यार लाष रुप्या जूना देई ने संधी (सिंधी—काबुली) सर्व ने बारे काढ्या छेः दीवांण हमीर पासे रजपूतनो साथ मूकी संघनी चोकी रावला मांहिथी घणा कष्टथी काढी छेः हवे सतानी ठव्यारडानै थई छै जीः त्वारांनो जोर घणो वधी गयोः सहिर मध्ये नोग्यारो क्रोडां पांनै पड्यो; सर्व षोदे षणे ग्यारो ग्राह्य कीधो; हजी हजार ५० जूना देणा छैः ते दीधे सर्व नीकलस्यैः पंच महाजन नाडोल हता ते रावत अर्जुनसिंघना पत्रथी आव्या छेः वराड फेर हजार २८ नो नांष्यो छेः रुप्या हम्मीरसाई उदेपुरमै नवा पडे छेः टका २० चाले छेः ते दीधे संधीनो काटलो कटस्ये त्यारै लोक उदेपुर मै पाछा आवस्ये जीः हजी देशनो बिग्रह मिट्यौ नहीं छैः दोय राणा छैः हमीरजी तो अडसीने पाट उदेपुर मै छेः रतनसिंघ कुंभलमेर मै बैठा छेः जोगी साबत छे; गोढवाड विजेसिंघजी ने छेः चीतोड, मांडलगढ, उदेपुर, राजनगर; ए जायगां राणा हमीरजीनो अमल छे. सेरोनलो, कुंभलमेर, कैलवाडो, देवगढ रतनसिंघजीनो अमल छैः देश मै लूटा षोसो पकडणो मारणो आमो सामो लागे रह्यो छे; नाथदुआरे महाराजनी फोज हजार बारेसे पड्या छेः ते तिमज छेः महाराज विजैसिंघनी फोज राघोदास मिली देवसूरी वाला ऊपरे आव्या हताः वास राट धूलधाणी मिली पिण देवसूरीवालो महाराजसुं नम्यो नही, सोलंषीनो मजो रह्योः फोज झषमारे पाछी गई. ढाणां मै बैठो छैः नाल देवसूरीनी कोई छोडी नहींः बीरम मेडत्यो चांणोदवालो जोधपुर चाकरी मै पड्यो रडवडे छेः सोलंषी नी टेक घणी रहीः रांडने पगे लागो तथा विजेसिंघने पगे लागोः चाकर चितोडरो छुं. आउआ वाला जेतसिंघने महाराज विजेसींघे ठारयो. चांपावत तेहना बेटा गुणावल कडुंजै छांडी आव्या छेः इस्यो रूप बणे रह्यो छेः जैपुर मैं पिण मेवाड सरीषो विषो लागे छै. रावत जसूंतसिंघजी ने जैपुरमांहिथी परा काढ्या छेः सोबोकरजी

Aho ! Shrutgyanam

आया सुण्या छेः रावत अर्जुनसींघजी लेवा जासीः एकलींगजी भेला वेसीः इसी बात छैः पछै तो वणै सो षरीः उदे-पुर नो...............नही पिण हवे रजपूत राणावतांरो साथ हजार दोय सहर मै आवे...........यो हवे संधी सर्व बारै डेरा दीधा छे...............मांही छे बाकी रुप्या दीधासुं निजर आवसी. राज–देशविग्रह भारी ठेरयो मिटणो तो साहिबरे हाथ छैः वले एक टिंखल थयो छेः सलूंबरना घरमे पहाडसिंघ रावत उजेणनी राडि मै काम आव्या पछे भीमसिंघजीने तरवार बंधावी राणे अडसीजीइ सलूंबरनी गादी बैठा. हवै पांच वरस पछी पाछा पहाडसिंगजी प्रगट थया छे. ए विग्रह नवो प्रगव्यो छे. हवणा महीना ५ छ थया छैः डुंगरपुरने चोषले आव्या छे. भीमसिंघजी चीतोड ऊपरे हता तिहांनो जाबतो करी थांणो मेलीने सलूंबर दाषल थया छे. विग्रहमे पाछ नही छै. और समाचार छे ज्युं छे. अत्रत्य पं. नरोत्तमविजयगणि पं. प्रतापविजयगणि विनयविजयगणि लघुशिष्य गिरधरनी वंदणा जाण-वीजी पं. क्षेमानंद ग. नेमविजयगणि ठाणु२उदेपुरमें मेल्या छेः हेमविजयजी ग. झाडोल छे. ठाणुं २जासमे छे. रत्ना-नंद ग. मानविजयगणि, उदयपुरनो ढंग महीना एक दोयमें सुदरस्ये जी त्यारे उदेपुर नो ढंग सुदरसी जदी बुलावो आव्ये उदेपुर जावो थास्ये जी ते जांणवुंजी. तत्र पार्श्वस्थ साधुसमुदायने पं. सौभाग्यविजय ग० पं. जयविजयग० पं. भाग्यविजयग० पं. फतेंद्रसागरगणि प्रमुष सर्व साधुसमुदायने वंदणा कहवीजीः पं. हेमसोभाग गणिनी वंदणा पण जांणवीः पं. गुलाबहंसगणि ठाणुं २ नी वंदणा जांणवीः × × × मेदपाटमे ग्राम.........कोई कोई जायगा वसती छेः इस्यो ढंग ढोल देशनो छे जीः केटलुं लषवामें आवैजीः कृपापत्र वलमान कृपा करवी जीः देवदर्शनमें संभारवा मिती संवत् १८३१ रा मिगसरवदि अष्टम्यां रात्रो पत्र—तुराई लष्युं छे जीः

Aho ! Shrutgyanam

एक श्रीमाली जैन कुटुंबनी जुनी वंशावली

श्वेतांबर जैन संप्रदायने अनुसरनारी मुख्य त्रण वैश्य जातो छे: १) ओसवाल, २) श्रीमाली, अने ३) पोरवाड. ओसवाल जातिनुं मूल उत्पत्ति स्थान ओसिया नगरी मनाय छे जे मारवाडनी जोधपुर राजधानीनी पासे आवेली छे. ए जातिनी वधारे वसती राजपूताना अने मालवामां रहेली छे. श्रीमाली जातिनुं मूल स्थान श्रीमाल नगर कहेवाय छे. एने हालमां भिन्नमाल कहे छे अने ए पण मारवाडना जोधपुर राज्यमां, राज्यनी उत्तरनी सीमा तरफ आवेलुं छे. ए जातिनी वधारे वसती गुजरात अने काठियावाडमां आवेली छे. पोरवाड जातिनुं जन्म स्थान क्यां छे ते चोक्कस जणातुं नथी पण किम्वदन्ती प्रमाणे अरवलीनी पर्वतमालामां वसेलो वागडदेश तेनुं उत्पत्ति स्थान होय एम जणाय छे. पोरवाडोनी मोटी संख्या मारवाड राज्यना गोडवाड—के जेने नानी मारवाड पण कहेवामां आवे छे—प्रांतमां प्रसरेली छे. गुजरात अने मालवामां पण ए जातिनी साधारण वसती छे. ए जातोनुं जन्म क्यारे अने कई रीते थयुं तेनो सविस्तर निर्णय करवा जेटलां साधनो हजी ज्ञात थयां नथी. साधारण मान्यता प्रमाणे जैनाचार्योए, ते ते प्रदेशमां वसता रजपूतो अने बीजा तेवा लोकोने धर्मबोध आपी जैन बनाव्या अने तेमने, पूर्वना बीजा बीजा व्यवसायो छोडी दई व्यापारनो व्यवसाय करवा तरफ प्रेरणा करी. ए जातोनुं निर्माण कोई एक ज आचार्य द्वारा अने एक ज वखते थयुं छे एम नथी. परंतु प्रथम एक आचार्ये केटलाक कुटुंबोने जैन बनावी तेमनी एक जात बनावी अने पछीथी बीजा बीजा आचार्योए प्रसंगे प्रसंगे बीजा बीजा स्थळोना लोकोने जैन बनावी बनावी ते ते जातिमां दाखल करता गया, अने तेम करी ए त्रणे जातिनी संख्यामां क्रमे क्रमे वधारो करता गया. श्रीमाली अने पोरवाड जातिनी आवी रीते क्यां सुधी वृद्धि थती रही तेनी तो माहिती हजी सुधी मळी नथी परंतु ओसवाल जातिनी तो छेक विक्रमना १७ मा सैका सुधी वृद्धि चालु रही होय एम जणाई आवे छे.

लोकमान्यता प्रमाणे, उपर जणाव्युं तेम, मूल तो ए त्रणे प्रसिद्ध अने समृद्ध जैन जातो मारवाडनी सीमामां ज उत्पन्न थएली, परंतु पाछळथी जनसंख्यानी वृद्धिने लईने, व्यापारना निमित्तने लईने, तेम ज राज्योनी उथल पाथलना कारणने लईने भारतना जुदा जुदा प्रदेशोमां ए प्रसरती गई.

ए जातोमां अनेक गोत्रो छे अने दशा-वीसा आदि जेवा केटलाक पेटा-भेदो छे. गुजरात अने काठियावाडमां वसनारा लोकोने फक्त दशा-वीसाना भेदनी तो माहिती रहेली छे परंतु गोत्रनुं ज्ञान तो लगभग सर्वथा भुलाई जवायुं छे. मारवाडमां वसता लोकोने—अने तेमां खास करीने ओसवालोने—पोताना गोत्रोनी माहिती अवश्य होय छे. ए माहिती होवानुं खास कारण ए छे के त्यांना लोकोना कुलगुरु हजी हयात छे जेओ दरेक कुटुंबना विवाह आदि शुभ प्रसंगो उपर हाजर थई ते ते कुटुंबनी वंशावलि विगेरे वारंवार संभळावता रहे छे. ए वंशावलिओमां १०-१०, २०-२० पेढी सुधीना पूर्वजोनां नामोनी तेमज केटलाकना ठाम अने मोटा कामोनी पण नोंधो करेली होय छे. जो के ए नोंधोमां कपोलकल्पित जेवुं पण घणुं होय छे तो पण जेटली नोंध—नोंधनी वही—वधारे जुनी होय तेटली ते वधारे विश्वसनीय होई शके छे. गुजरातमां तेवा कुलगुरुओनो सर्वथा अभाव थई गयो छे तेथी त्यांना वतनिओ पोताना गोत्रो पण भूली गया छे.*

* अने हवे तो केटलाक पोतानी जातोने पण भूली जवानी कोशीस करता नजरे पडे छे ! थोडा दिवस उपर अमदावादना एक श्रीमंत जैन गृहस्थना बालकोने तेमनी जाति पूछतां तेओ तेनो जवाब आपवा असमर्थ निवडया हता. (त्यारे बीजी बाजुए तेओ इंग्लांडना इतिहासनी वातो अने आयरीश, इंग्लीश, स्काच विगेरे जातोना परिचयो झटापट आपी देता हता.) जे बालको

Aho ! Shrutgyanam

गुजरातना वासिओने भाग्ये ज पोताना पूर्वजोना संबंधमां कांई माहिती होय छे. तेओ पोतानी ३-४ पेढी उपरांतना वडावाओनां नामो सुधां जाणी शकता नथी तो पछी तेओ क्यांथी आव्या अने क्यां वस्या, तेमना पूर्वजो ए शां कामो कर्यां इत्यादि तो जाणे ज क्यांथी. तेमने कुलगुरुओ अने तेमनी नोंधवाहिओनी पण कल्पना आवी शकती नथी.

आ नीचे एक श्रीमाली जैन कुटुंबनी जुनी वंशावलि आपवामां आवे छे, जे एक कुलगुरूनी जुनी नोंधवही-मांथी उतारी लेवामां आवी छे. ए नोंधवही लगभग ४०० ५०० वर्ष जेटली जुनी छे अने कपडा उपर लखेली छे. आ वही पाटणना एक प्राचीन पुस्तक भंडारमां छे. आ वंशावलिमां श्रीमालि-जातिना नोडा नामना शेठनी वंशपरंपरा आपेली छे. ए शेठ, आ नोंधमां जणाव्या प्रमाणे, भिन्नमाल (जे श्री-मालनुं बीजुं नाम छे) नगरमां रहेतो हतो. एनुं रहेठाण, नगरना पूर्वना दरवाजा तरफ आवेली भट्टनी पोलमां हतुं. मूल जातिए ए भारद्वाज गोत्रीय (ब्राह्मण ?) हतो. संवत् ७९५मां कोई आचार्यना प्रतिबोधथी ए जैन थयो हतो. ए मोटो व्यापारी हतो अने पांच क्रोडनी आसामी गणातो. एनी गोत्रजा अंबाई माता हती. तेनुं स्थान, नगरनी पासे आवेला गो...णी नामना सरोवरना कांठे, जे देविओनुं स्थान हतुं, तेमांनी ईशान कोनमां आवेली चंपकवाडीमां हतुं. ते वाडीमां, चारे बाजु आंबाना झाडोथी ढंकाएलुं एक मन्दिर हतुं जेमां चार भुजा वाळी ए अंबामातानी रूपानी बनेली मूर्ति स्थापित हती. आसो अने चैत्र मासनी सुदी ९ ना दिवसे ए माताने नैवेद्य चढावी पूजा करवामां आवती. नैवेद्यमां लापसी, पुडला अने जवारनुं खीचडुं मुकवामां आवतुं.

ए शेठ नोडानी १७ मी पेढिए नान्हा नामे पुरुष थयो. तेना वखतमां, संवत् ११११ नी सालमां, भिन्नमाल शहर भांग्युं. तेमां संख्याबन्ध माणसो मार्या गया तथा केदमां पकडाया. ते अवसरे शेठ नान्हा त्यांथी नासी छूट्यो अने कोलिहाराना पायची नामे गाममां जईने वस्यो. त्या तेना पुत्र-पौत्र विगेरेनो परिवार वध्यो अने तेना वंशजो पाछळथी यथा समये पाटण, नरेली (गांभू पासे), मोढेरा, वलाद, सलखणपुर इत्यादि अनेक गामोमां जई जईने वस्या. एमांना केटलाकोए संघो काढया, मान्दिरो बन्धाव्या, महोत्सवो कर्या, जमण जमाड्या अने कोईक तो संसार छोडी यति पण थया. आवी रीते आ वहीनी अंदरथी केटलीए जाणवा जोग हकीकतो मळी आवे छे.

उपर जणाव्युं छे तेम ए वही ४००-५०० वर्ष जेटली जुनी छे तेथी एमां छेवटे जणोवला कुटुंबोना वंशो क्यां सुधी पहोंच्या अने आजे तेमांनो कोई वंश हयात छे के नहिं ते जाणवा-जणाववानुं कशुं साधन नथी.

आ वंशावलिनी भाषा अस्सल प्रमाणे ज कायम राखी छे. तेम ज एमां फक्त नामो सिवाय बीजी कोई विशेष हकीकत पण जेथी वाचनारने कोई जातनी कठिनता पडे तेम पण नथी.

गुजरात पुरातत्त्व मन्दिर
भाद्रपद पूर्णिमा } —संपादक.

अथ भारद्वाज गोत्रे संवत् ७९५ वर्षे प्रतिबोधित श्रीश्रीमालीज्ञातीयः श्रीशान्तिनाथ गोष्ठिकः । श्रीभिन्नमालनगरे भारद्वयज गोत्रे श्रेष्ठि नोडा. तेहनो वास पूर्वीली पोली भट्टनई पाडइ. कोडी पांचनो व्यवहारियो. तेहनी गोत्रजा अंबाई. नगरीनी परिसरि गो...एणी सरोवरी देव्यानां ठाम नेऊ सहिस तेहमांहि ईशाणकुणदिशि चंपकवाडी तेहमांहि चैत्य. चिहुपासइ आंबाना वृक्ष तिण स्थानकि चतुर्भुजा गोत्रज स्वरूप रुप्यमई हादरि न हुई तु कुंकुनी लीटी पाटली ३ कीजइ नैवेद्य लापसी पूडला खीचडुं जवारिनुं. चैत्री आसोइ ९, पुत्र जन्मइ पारणे त्रि मुंडणिं जमणीनुं कापडुं. फइनइ सहर्षी १ पुत्र जन्मइ पुत्रीई अर्द्धकर कीजई ॥

आजे आवी रीते पोतानी जातिने भूली जवानी तैयारीमां छे तेओ काले पोताना धर्म अने परम दिवसे देशने पण केम न भूली जाय ?

Aho ! Shrutgyanam

[सेठ नोडानी वंशपरंपरा—]

श्रेष्ठ नोडा, भार्या सूरमदे—

पुत्र गुणा, भार्या रंगाई—

पु. हरदास, भा० माहवी—

पु. भोला, भा० गंगाई—

पु. गोवाल, भा० मर्घी—

पु. असा, भा० पुहती—

पु. वर्जांग, भा० करमी—

पु. शीवा, भा० पती—

पु. महीराज, भा० कमाई—

पु. राजा भा. पूरी—

पु. गुणपति, भा. रही—

पु. झांझण, भा० कपू—

पु. मणोर, भा० हापी—

पु. कुंयरपाल, भा० वाछी—

पु. पासा, भा० प्रेमी—

पु. वस्ता, भा० वनादे—

पु. कान्हा, भा० सांपू—

पु. नान्हा संवत् ११११ वर्षे श्रीभिन्नमाल-भग्नं. मनुष्यनी कोडी मरण गई. बंदि पड्या. श्रेष्ठी नान्हा नाठा. कोलीहारामांहि पायची ग्रामे वास्तव्य.

श्रेष्ठी नान्हा, भा० पूगी—

पु. अमरा, भा० आऊ—

पुः—१ हरदे, २ बरदे, ३ नरदे, ४ नगा.

हरदे भार्या हांसलदे

पु.—१ गोपी, २ पदमा

गोपी भा० गुरीदे

पु. जोगा, भा० हापू—

पु. नांदिल. भा. नांदलदे

पु. १ सारिंग २ महिपा ३ संघाड ४ धपा.—पत्तनि वास्तव्य सासरिं संवत् १२२५ वर्षे फोफलीया वाडिं—सारंग भा. नारिंगदे पु. १ सीधर २ जीवा.

सीधर भा. सरीयादे, एउ चली. गांभूपासे नरेली ग्रामे वास्तव्य सासरइं संवत् १२८५ वर्षे.

सीधर भा. सिरियादे—पु. १ अना, २ वन्ना.

अना भा. अनादे—पु. मूला.

—१ श्री आदिजिन बिंबं चउवीस षट्ट भराव्यउं. संवत् १३१६ वर्षे श्री अंचलगच्छे श्री अजितसिंह सूरीणा-मुपदेशेन प्रतिष्ठितं. एक कूप, गोत्रजा चैत्य, मूलाकेन एवं कृतं।

मूला भा. मालणदे पु. १ वर्धमान, २ जइता.

वर्द्धमान भा. वयजलदे—पु. १ करमण, २ लाला.

एउ चली मोढेरइ वास्तव्य. तेणइ मोढेरइ दाभेलीऊ महं. कर्मा ते साह्र तेणि सगपणि संवत् १३९५ वर्षे महं. ।

करमण भा. करमादे

पु. महुया, भा. सोहागदे. पु. १ धना, २ हीरा ३ खीमा, ४ चुथा.

२ हीरा भा. हीरादे—पु. हेमा.

संवत् १४४५ वर्षे बिंब चुवीसवट्टो प्रतिष्ठामहोत्सव श्री अंचल गच्छे श्रीमेरुतुंग सूरि चोमासि कराव्या प्रतिष्टितं महोच्छव करावी,

मोढेरि हेमा भा. हेमादे—

पु. भावड, भा. पूनी पुः—१ देवा, २ पर्वत, ३ नंदा.

देवा भा. सरियादे—पु. १ सूरा, २ लखमण.

लखमण भा. लखमादे. पु. १ हर्षा, २ जगा. हर्षा भा. पूरी पुः—१ नरपाल, २ वरजांग, ३ फतना, ४ रतना.

१ नरपाल भा. लीलादे.

पु. नरबद भा. नांमल दे, पु. वस्ता.

२ वरजांग भा. सखी पु. १ राणा, २ श्रीवंत, ३ भाणा, ४ महीराज.

३ फतना भा. महणादे

पु. वेणा, भा. मरघादे पु. १ भीमा, २ अमा, ३ लहुया.

जगा भा. जस्मादे पु. १ सीपा, २ सामल

Aho ! Shrutgyanam

पर्वत भा. प्रेमलदे, पु. १ रामा, २ पदमा, ३ मादा.

१ रामा भा. ढद्दू, पु. १ नाथा, २ नारद, ३ सोमा.

नाथा भा. नागल दे

पु. आनंद नाकर भा. टांक, पु. १ सधारण, २ शिवसी, ३ गोपी.

वलाद्रग्रामे

नंदा भा. लाखू, पु. १ रूपा, २ आसा.

रूपा भा. कुंअरी पु. १ भचा, २ अजु, ३ महिपा, ४ कान्हा ।

भचा भा. नाथी.

पु. राधव भा. रीजलदे, पु. १ धना, २ वर्द्धमान ३ पोचा, ४ पोपट.

आजु भा. अजादे पु. १ रूडा, २ राजा, ३ नायक. रूडा भा. २ वयजलदे,—माणिकदे. वयजलदे पु. १ मेघजी, २ जगमाल.—माणिकदे पु. अभयराज.

नायक भा. नारिंगदे पु. १ देवराज, २ संवराज.

वलद्रि मं. नंदाख्येन मल्लिनाथ बिंब भराव्यो. ए आदे कुटुंबिं बिंब ३ भराव्या. श्री अंचलगच्छे श्री विजयकेसरसूरीणामुपदेशेन प्रतिष्ठितं.

मं. नंदा भार्या हीरू

पु. साहू भा. सुहागदे.

पु. रतीमा भा. देवलदे, पु. १ वीसा, २ देशल, ३ लाला.

वीसा भा. टूबी

पु. सहिसा भा. मरघाई, पु. सिंघा.

देशल भा. मकू.

पु. लाखा भा. खीमाई पु. १ हरखा, २ मेघा, ३ जगा, ४ आणंद, ५ कीमा, ६ पोमा—दीक्षा लीधी, ७ अर्जण.

हरखा भा. गुरी पु. १ वर्द्धमान, २ ठाकुर.

अर्जण भा. अहिवदे पु. मांडण.

पूर्वि करमण भाई लाला भा. लाडमदे.

पु. हरदास भा. हांसलदे पु. रहिया, २ महिया—दीक्षा लीधी,

महिया भा. मानबाई पु. हीरा—

एउ वली गोलवाडी वलद्दग्रामि वास्तव्य. मं. हीरा, भा. सखू—तेहनि डालिं सिद्ध शीकोत्तरी भाव. तेह कारणिं पूछी कहीऊं माहरइ गोत्रज जुहारूं. तेह कारणें पांजरी नाम लेई गोत्रज जुहारइ. नणंदनइ सेर २ नी मात. पारणे त्रिमुंडाणिं. माणा ४ ना लाडू कुटुंबमाही लाहि फईनइ सहर्षि १.

मं. हीरा भा. सखू—

पु. चाचा भा चांपल दे पु, १ पोमा, २ मका.

पोमा भा. प्रेमलदे.

पु. श्रीवंत भा. सरियादे

पु. भोला भा. भावलदे

. रीडा भा. सोमी

पु. सिंघा भा. जयवंती पु. १ कीला, २ अर्जुन, ३ वन्ना.

काला भा. मरखु पु. १ देवा, २ भीमा

देवा भा. नाथु

पु. दूदा, मा. आनी पु. जसा

भीमा भा. भरमादे

पु. जोधा भा. जसमादे

अर्जुन भा. माणिकदे

पु. नाकर भा. पुहती पु. १ सीहा, २ पेथा, ३ नाईया ४ नगा, ५ पांचा.

सीहा भा. सरियादे पु. १ देवराज, २ शिवराज.

पत्तणिनगरे

पूर्वि महुया चतुर्थ पुत्र चुथा भा. चाहणिदे पु. सोभा संग्रहणं कृतं. नोरते वास्तव्यः संप्रति पत्तमि वास्तव्यः । संवत् १४४१ वर्षे लघुशाखी बभूव ।

सोभा भा. रंगाई—

पु. माहव भा. देमी पु. १ रंगा, २ जागा.

रंगा भा. रंगादे

Aho ! Shrutgyanam

पु. वरसंग भा. जिस्मादे पु. १ सुंटा, २ राईया. **दीक्षा लीधी.**

सुंटा भा. करमादे पु. १ राजपाल, २ विजपाल, ३ ब्रह्मदास.

लहरी सलखणपुर पार्श्वे मं. जगा फडीयाना व्यापारथी फडीया अडक. जगा भा. जिस्मादे पु. १ जोगा.

पूर्वि वर्द्धमान भाई जयता. एऊ चली चाहणसामि वास्तव्यः सासरा मांहि तव श्री मट्टेवा श्री पार्श्वनाथ चैत्यं कारापितं संवत् १३३५ वर्षे श्री अंचलगच्छे श्री अजितसिंह सूरीणामुपदेशेन प्रतिष्ठितं।

मं. जयता भा. जयवंती

पु. हपा भा. देमाई

पु. मांडण भा. मालणदे

पु. रहिया भा. रहियादे

पु. वस्ता. एउ चली गेगूदणि वास्तव्यः

वस्ता भा. वलादे

पु. वागुरणसी भा. रमादे पु. १ मदा, २ वाछा, ३ रामा.

मदा भा. सलखू पु. १ नगा, २ हापा, ३ तेजा.

नगा भा. धनी

हापा भा. मानू

पु. करमसी भा. मोली पु. १ होईया, २ भीमा, ३ गल्या

भीमा भा. करमी पु. १ नायक, २ माली, ३ हरखा, ४ गोरा, ५ सामल, ६ कुंरा.

नायक भा. नायकदे

माली भा. मानूं पु. १ सीहा, २ सरवण, ३ करमण

सीहा भा. टाकू पु. १ जागा, मेघा

जागा भा. जीवादे

सरवण भा. सहिजलदे पु. १ वीरम, २ खोखा, ३ जूठा. वीरम भा. वनादे

करमण भा कामलदे पु. १ रीडा, २ लखा

रीडा भा. राजलदे

पु. रावसी भा. सुषमादे

पु. लखा भा. लखमादे पु. १ जगसी, २ हरखा

,, ,, माणकदे पु. १ मेला, २ मांका, ३ जीवा, ४ नाथा.

मांका भा. मालणदे पु. १ श्रीवंत, २ वीणा, ३ धना, ४ धरमसी, ५ अजा

श्रीवंत भा. सरीयादे पु. १ पूंजा, २ देवा

पुंजा भा. रत्नादे

पु. वीणा भा. वलादे पु. रांका

डहिरवालिया

पूर्वि सीधर भाई जीवा पत्तनि. मं. जीवा भा. जीवादे पु. जिणदत्त भा. पकू. पु. १ वना, २ विजय-**दीक्षा लीधी.** वना. एउ चली सासरइ जांबूथी डाहिरवालिवास्तव्य सं. १२९५ वर्षे

मं. वना भा. सखू

पु. माधव भा. सांपू पु. १ नयणा, २ नगा, ३ रंगा

नयणा भा. नारिंगदे पु. सारिंग वयजलके वास्तव्य.

सारंग भा. सारियादे

पु. जेसा भा. नाकू पु. १ रंगा, २ मेला, ३ रामा

रंगा भा. जोमी पु. वाछा श्रीपार्श्वनाथ चैत्यं प्रतिष्ठितं श्री अंचलगच्छे श्रीभुवनतुंगसूरीणामुपदेशेन

मं. वाछा भा. माऊ पु. १ करमण, २ लखमण **चारित्र लीधुं.**

करमण भा. करमादे

पु. मोका भा. फूगी पु. १ महीराज, २ मांडण

महिराज भा. माणिकदे पु. १ देवा, २ नगा.

मं. देवा भा. देवलदे

पु. माना भा. मानू

पु. जागा भा. देगी

पु. धरणि भा. पूरी

पु. पासा भा. अजी पु. १ शीवा, २ पोचा

शीवा भा. वलादि पु. १ जाणा, २ भाणा, ३ भावड, ४ नरसंघ, ५ करमसी

वढवाण पांसि बलदाणु

पूर्वि महिराज भाई मांडण, भा. सोभी पु. १ वरधा

Aho ! Shrutgyanam

२ काला, ३ नोला, ४ लखा.

वरधा भा. देगी

पु. सांगा भा. सांगारदे

पु. कान्हडदे, एउ चली वडुद्रइ वास पछी बलदाणा वास्तव्यः । तत्र वसही कारापिता मूल नायक श्रीपार्श्वनाथ बिंब ।

कान्हडदे भा. कपूरदे पु. १ चांपा, २ अमीया

चांपा भा. प्रेमलदे

पु. सहसा भा. सरियादे पु. १ जीवा, २ खीमा. जीवा भा. टूबी पु. १ भीमा, २ शाणा, ३ भुजवल ४ जसा, ५ जाणा, ६ जोधा.

भीमा भा. भावलदे पु. १ श्रीवंत, २ जयचंद, ३ रंगा.

पूर्वि बलदांणे अधुना नागतेशठिं—

शाणा भा. समाई

पु. शिवराज भा. अजादे पु. १ सामल, २ श्रीमल ३ मला, ४ मोजा

सामल भा. सुरमदे पु. १वाघा,२नागजी, ३हेमराज.

वाघा भा...पु. १आंबा, २ सिद्धराज.

नागजी भा. देवकी पु. १ सुरजी, २ हेमराज

,, ,, गेला पु. सहिजपाल, २ खेता.

—श्रीमल भा. शणगारदे पु. १ मेघा, २ मेला

मेघा भा. सवीरा, पु.१ सिवगण, २ श्रीपाल.

श्रीमल द्वितीय भा. वीरमदे, पु. वेला.

खंभायत पासिं तारापुरिं—

पूर्विं माधवपुत्र नगा भा. नागदे पु. १ गोगन, २ गणपति । संवत् १४४५ वर्षे श्रीशत्रुंजय तीर्थनी यात्रा कृता । श्रीरंगरत्नसूरिनिं आचार्यपद स्थापना श्रीअंचलगच्छे गुजरातीं सोरठी चोरांसी गच्छना यतिनिं वेस वुहराव्या । वाणोत्र मेलीनी एणिं कारणिं डहरवालीया प्रसिद्ध बिरुद ।

—गोगन भा. गुरादे पु. १ मंगल, २जिणदत्त.

मंगल भा. मयगलदे पु. १ खोजा, २ कान्हा.

खोजा भा. सहिजलदे पु. १ गहगा, २ गणपति

गहगा भा. मनाई पु. १ कुंभा, २ कुंरा.

कुंभा भा. कुंभलदे पु. १ पोपट, २ लाला, ३ वाला.

पोपट भा. माई

पु. विद्याधर भा. हर्षादे पु. १ वाछा, २ सहसा — **दीक्षा लीधी.** वाछा भा. दाडिमदे पु. १ भोजा, २भीमा, ३ संतोषी.

भोजा भा. धनी पु. शिवसी अधुना.

—पूर्विं सारिंग माई महिपा भा. फूलां, पु. माटा, ते सिद्धराज जेसिंगदेव राज्ये व्यापारी सहस्रलिंग उपरिरायनुं आदेश चित्तकरी तिहां पाषाण अणावि ते पांच गज लाडलां दीठ रखावई. वरतण माटे रायें गोभलेज गाम आप्यउ छई. चिडोत्तर मांहि मातर पासिं. तिणिं गांमि पाषाण मोकलई तिणि गांमि तलाव १ कूप १२ कराव्या । श्रीशत्रुंजये प्रासादबिंबं प्रतिष्ठितं अंचल गच्छे । पछि कालांतरे राजा रूठो देखी ए पाषाणनी राव (?) कीधी ।

मं. माटा मंडपदुर्गे वास्तव्यः । माटा भा. देमी—

पु. लुंभा भा. मानी पु. १ माधव, २ केशव

माधव भा. मालणदे पु. १ गांगा, २ गोरा.

गांगा भा. रूपी.

पु. जयवंत भा. जीस्मादे पु. १ मूंभच, २ भरमा.

मूंभच भा. रजाई पु. १ नाका, २ माका.

नाका भा. नयणादे पु. सोभा. एउ चली

वडोदरे वास खेतसीनइ पागटिं.

मं. सोभा भा. सरियादे पु. १ करमा, २ धरमा.

करमा भा. करमादे पु. भमिड, २ भावड.

भीमड भा. भीमादे.

पु. देवड भा. देमाई पु. १ राजड, २ चांपा.

राजड भा. पदमाई पु. १ मावड, २ भरमा.

मावड भा. रुपाई पु. ठाकरसी. एउ चली खंभायति पार्श्वे तारापुरि वास्तव्यः । पछी सीगी वाडई.

ठाकरसी भा. मलाई पु. १ जेसंग, २ बट्टा.

जेसंग भा. जिस्मादे. पु. सोमा भा. रूडी.

(समाप्त)

Aho ! Shrutgyanam

डॉ हर्मन जेकोबीनी जैन सूत्रोपरनी प्रस्तावना

(भाग बीजो)

[अनुवादकः—श्रीयुत अंबालाल चतुरभाई शाह बी. ए. जैन साहित्य संशोधक कार्यालय]

[प्रथम अंकमां डॉ. हर्मन जेकोबीनी कल्पसूत्र (मूल आवृत्ति) नी प्रस्तावना आपवामां आवी हती अने बीजा अने त्रीजा अंकमां, 'सेक्रेड बुकस् आफ धी ईष्ट' नामनी प्रख्यात ग्रंथमाळाना २२ मां पुस्तकमां प्रसिद्ध थएला जैनसूत्रोना प्रथम भागनी प्रस्तावना प्रसिद्ध करवामां आवी छे. आ अंकमां ए ज जैन सूत्रोना बीजा भागनी (जे उक्त ग्रंथमाळाना ४५ मा पुस्तकरूपे बहार पडेल छे) प्रस्तावना आपीए छीए. आ भागमां, सूत्रकृतांग अने उत्तराध्ययन एम बे सूत्रोनुं इंग्रेजी भाषान्तर आपेलुं छे. डॉ. जेकोबीनी आ त्रणे प्रस्तावनाओए युरोपीय विद्वानोना जैनधर्मविषयक जुना विचारोमां घणुं संशोधन कर्युं छे अने सर्व साधारणमां जैन संबंधी व्यापेला अज्ञानने घणे अंशे दूर कर्युं छे. इंग्रेजी केळवणी पामेली आलमने जैनधर्मनुं जे कांई थोडुं वणुं खरुं ज्ञान मळ्युं होय तो तेनो बधो यश डॉ. जेकोबीनी आ महत्त्वनी प्रस्तावनाओने घटे छे. बौद्ध धर्मथी जैनधर्म तद्दन स्वतंत्र अने तेना करतां जुनो छे ए सिद्धान्त डॉ. जेकोबीए ज सौथी प्रथम अने सचोट रीते स्थापित कर्यो छे. जैनधर्मना सामान्य स्वरूपने समजवा माटे आ त्रणे प्रस्तावनाओ विद्वानोमां खास प्रमाणभूत मनाय छे.

आ साथे एक आटली सूचना करी लेवानुं हुं उचित समजुं छुं के आ प्रस्तावनाओमांना बधा विचारो मने सम्मत छे एम कोईए समजी लेवानी भूल न करवी जोईए. आमांना केटलाए विचारो साथे मारो मतभेद छे के जे हुं भविष्यमां सविस्तर प्रकट करवा इच्छुं छुं; अने ए ज विचारथी में आ प्रस्तावनाओ साथे कोई पण प्रकारनी टीका-टिप्पणी लखी नथी के जेम करवामाटे मने घणाक सज्जनो तरफथी सूचनाओ सुधां मळी हती.

आ अनुवादो में मारी जातीय देखरेख नीचे कराव्या छे अने पाछळथी घणी काळजी अने महेनत पूर्वक मूळ साथे संपूर्ण सरखाव्या छे. छतां जो कोई सज्जनने आमां क्यांए स्खलन विगेरे जणाय तो ते खास लखी जणाववा सूचना छे जेथी तेनुं संशोधन करी देवांमां आवे.—संपादक.]

जैनसूत्रोना मारा भाषान्तरना प्रथम भागने प्रकट थए दश वर्ष थयां. ते दरम्यान केटलाक उत्तम विद्वानोद्वारा जैनधर्म अने तेना इतिहासविषयक आपणा ज्ञानमां घणो अने महत्त्वनो वधारो थयो छे. हिंदुस्तानना विद्वानोए संस्कृत अने गुजरातीमां लखेली सारी टीकाओ साथे सूत्र ग्रंथोनी साधारण आवृत्तिओ बहार पाडी छे. प्रो. ल्युमन[1] अने प्रो. होर्नले[2] आ सूत्र ग्रंथोमांना बे सूत्रोनी गुण—दोषना विवेचनवाळी आवृत्तिओ पण प्रकट करी छे; अने तेमांए प्रो. होर्नले तो पोतानी आवृत्ति साथे मूळनुं काळजीपूर्वक करेलुं भाषान्तर अने पुरतां उदाहरणो पण

१ दस्, औपपातिक सूत्र, Abhandlungen fur die kunde des Morgenlondes नामनी ग्रंथमाळा, पुस्तक ८; दशवैकालिक सूत्र अने निर्युक्ति, जर्नल आफ धी ओरिएन्टल सोसायटी, पु. ४५.

२ उवासग दसाओ (बिब्लिओथिका इन्डिका) भाग १ मूळ अने टीका, कलकत्ता १८९०, भाग २, इंग्रेजी भाषान्तर, १८८८.

Aho ! Shrutgyanam

आप्यां छे. प्रो. वेबरे पोते तैयार करेला बर्लिनना हस्तलेखोना विस्तृत सूचिपत्र[3]मां संपूर्ण जैन साहित्यनुं साधारण अवलोकन कर्युं छे. तेम ज तेमणे जैन सूत्रो उपर एक अति विद्वत्तापूर्ण मोटो निबंध पण प्रकट कर्यो छे.[4] प्रो. ल्युमने वळी जैन वाङ्मय अने शास्त्रना विकासनुं सारु अध्ययन कर्युं छे, तथा केटलीक जैन कथाओ अने तेना ब्राह्मण अने बौद्ध कथाओ साथेना संबंधनी तपासणी पण करी छे[5]. श्वेताम्बर संप्रदायना जुना इतिहासनी माहिती आपनारो एक महत्त्वानो ग्रंथ मे पण संपादित कर्यो छे[6], तथा तेमना केटलाक गच्छोनो इतिहास होर्नेल अने क्लाट द्वारा जाहिरमां आव्यो छ. आमांनो छेल्लो विद्वान (क्लाट) जे अत्यारे आपणी वच्चे मौजुद नथी, तेणे सघळा जैन लेखको अने ऐतिहासिक पुरुषोनो एक जीवन चरित्रात्मक महान् नामकोष (Onomasticon) तैयार कर्यो छे अने जेना केटलाक नमुना प्रकट पण थया छे. होफ्रेट बुल्हरे सर्वविद्याविशारद एवा प्रसिद्ध विद्वान् हेमचंद्रनुं विस्तृत जीवन चरित्र लख्युं छे[7]. वळी तेमणे घणाक जुना शिलालेखोना अर्थो पण प्रसिद्ध कर्या छे. डॉ. फुहररे मथुरामांथी खोदी काढेला कोतर कामोनुं विवेचन कर्युं छे[8], अने मि. लेवीस राइसे श्रवण बेल्गोलमांना घणाक महत्त्वना शिलालेखो बहार पाड्या छे[9] एम्. ए. बार्थे जैनधर्म विषयक आपणा ज्ञाननी समालोचना करी छे[10]. बुल्हरे पण एक नानो निबंध लखी तेवी आलोचना प्रकट करी छे[11]. अने छेवटे भांडारकरे संपूर्ण जैन धर्मनी एक महत्त्वनी अने घणी उपयोगी रूपरेखा आलेखी प्रसिद्धिमां मुकी छे[12]. आ रीते, आपणा जैन धर्म विषयक ज्ञानमां थएला वधाराओए (जेमांना मात्र खास नोंधवा लायक ग्रंथोनो ज मे अहिं उल्लेख कर्यो छे) आ आखा विषय उपर एटलुं बंधु अजवाळुं पाड्युं छे के जेथी हवे मात्र कल्पनाने आ विषयमां घणो ज थोडो अवकाश रहेशे. अने ऐतिहासिक तेम ज भाषाविज्ञानात्मक साची पद्धति, ते साहित्यना सघळा भागोने लागु पाडी शकाशे. तेम छतां, हजी केटलाक मुख्य प्रश्नोना खुलासा करवा बाकी रह्या छे, तथा जे निराकरणो आ अगाउ थई गयां छे ते हजी बधा विद्वानोने मान्य थयां नथी; तेथी आ सुअवसरनो लाभ लई आनंद पूर्वक हुं अहिं केटलाक विवादग्रस्त मुद्दाओनुं स्पष्टीकरण करवा इच्छुं छुं. आ मुद्दाओना खुलासाओ माटे आज पुस्तकमां भाषान्तरित थएला सूत्रोमांथी घणी किंमती सहायता मळी शके तेम छे.

ए बाबत तो हवे सर्व सम्मत थई चुकी छे के नातपुत्त (ज्ञातपुत्र) जे साधारण रीते महावीर अथवा वर्धमानना नामे ओळखाय छे ते बुद्धना समकालीन हता. निगण्ठो (निर्ग्रन्थो)[13] जे हालमां जैन अथवा आर्हतना नाम-

३ बर्लिन १८८८ अने १८९२.

४. Indische Studien पु. १६, पृ. २११ आदि. इ. ए. मां अनुवाद तथा जुदा पुस्तक रूपे, मुंबई १८९३.

५. Actes du VI Congres International des Orientalistes, section Arienne पृ. ४५९ तथा Wienerzeitschrift fur die Kunde des Morgenlandes पु. ५ अने ६. वळी,जर्नल आफ दी जर्मन ओरिएन्टल सोसायटी, पु. ४८.

६. हेमचंद्राचार्य रचित परिशिष्ट पर्व, कलकत्ता.

७. Denkschriften der philos-histor. Classe der Kaiserl. Akademie der Weissens chaften, Vol. XXXVII, p.171ff

८. Wiener Zeitschrift fur die Kunde des Morgenlaudes, Vols. II and III. Epigraphia Indica, Vols. I and II.

९. बेंगलोर १८८९.

१०. The Religions of India. Bulletin des Riligions de l'Iande, 1889-94

११. Uber die Indische Secte der Jaina, Wien 1881.

१२. रीपोर्ट सन १८८३-८४.

१३. निगण्ठ ए स्पष्टरूपे मूळ रूप ज होय एम जणाय छे. कारण के अशोकना शिलालेखोमां, पालीमां, अने केटलीक वखते जैन ग्रन्थोमां पण ए ज रूप मळी आवे छे. पण आ त्रणे बोलीओना स्वरशास्त्रना नियमो प्रमाणे तो तेनुं वधारे वास्तविक रूप 'निगन्थ' एवुं थवुं जोईए. अने आवुं रूप जैन ग्रंथोमां स्वीकारेलुं पण मळी आवे छे.

Aho ! Shrutgyanam

थी वधारे प्रसिद्ध छे; तेओ, ज्यारे बौद्ध धर्म स्थपाई रह्यो हतो त्यारे एक महत्त्वशाली संप्रदाय तरीके क्यारनाए प्रसिद्ध थई चुक्या हता. परंतु हजी ए प्रश्ननुं निराकरण थवुं बाकी रह्युं छे के—ए प्राचीन निर्ग्रन्थोनो धर्म, ते खास करीने वर्तमान जैनोना आगमो अने बीजा ग्रंथोमां जे वर्णवेलो छे ते ज हतो, के सिद्धान्तो पुस्तकारूढ थया त्यां सुधीना समयमां घणो रुपान्तरित थई गयो हतो.

आ प्रश्ननुं निराकरण करवा माटे, अत्यार सुधीमां प्रकट थएला बधा बौद्ध ग्रंथोमां, जेमने आपणे सौथी जुना समजीए छीए तेमांथी जैन निगण्ठो, तेमना सिद्धान्तो अने तेमना धार्मिक आचारोना विषयमां जेटलां प्रमाणो जडी आवे ते बधांनो ऊहापोह करवो जोईए.

अंगुत्तरनिकाय ३,७४ मां, वैशालीना लिच्छविओमांनो अभय[१४] नामे विद्वान राजकुमार निगण्ठोना केटलाक सिद्धान्तोनुं नीचे प्रमाणे वर्णन करे छे:—'भदन्त! निगण्ठ नातपुत्त जे सर्वज्ञ अने सर्वदर्शी छे, जे संपूर्ण ज्ञान अने दर्शनथी संपन्न होवानो (आ आगळ जणावेला शब्दोमां) दावो करे छे के "चालतां, उभतां, ऊंघतां अने जागतां हुं सर्वज्ञ अने सर्वदर्शी छूं" ते जुना कर्मोनो तपस्या वडे नाश थवानुं प्ररूपे छे. अने संवरद्वारा नवां कर्मोने रोकवानो उपदेश आपे छे. ज्यारे कर्मनो क्षय थाय छे त्यारे दुःखनो क्षय थाय छे. ज्यारे दुःखनो क्षय थाय छे त्यारे वेदनानो अंत आवे छे. ज्यारे वेदना मटशे त्यारे सर्व दुःखनो क्षय थशे. आ रीते ज्यारे पापनो पूरो ध्वंस थशे त्यारे मनुष्य वास्तविक मुक्ति मेळवशे."

१४ आ नामना, स्पष्टरीते, बे पुरुषो मळी आवे छे. बीजो अभय श्रेणिकनो पुत्र हतो अने जैनोनो सहायक हतो. तेनो जैनोना सूत्रो तेम ज कथाओमां उल्लेख थएलो छे. मज्झिम निकायना ५ मां (अभय कुमार) सुत्तमां एवुं वर्णन छे के निगण्ठ नातपुत्ते तेने बुद्धनी साथे वाद करवा मोकल्यो हतो. प्रश्न एवो चालाकी भरेलो तैयार करवामां आव्यो हतो के बुद्ध तेनो गमे तेवा हकार अगर नकारमां जवाब आपे पण ते स्वविरोध वाळा न्यायशास्त्र प्रसिद्ध दोषमां सपडाया वीना रहे ज नहिं. परंतु आ युक्ति सफळ थई नहिं अने परिणाम तेथी उलटुं ए आव्युं के अभय बुद्धानुयायी थई गयो. आ वर्णनमां नातपुत्तना सिद्धांत उपर प्रकाश पाडे एवुं कांई तत्त्व नथी.

८

आ विचारोनुं जैन प्रतिबिंब उत्तराध्ययनना २९ मा अध्ययनमां मळी शके छे:—'तपथी मनुष्य कर्मने छेदी शके छे २७.' 'योगना त्यागथी अयोगपणुं प्राप्त थाय छे; कर्म रोकवाथी ते नवीन कर्मने ग्रहण करी शकतो नथी अने पूर्वे ग्रहण करेला कर्मोनो क्षय करे छे. ३७' आ प्रकारनी प्रवृत्तिनी बे अन्तिम दशाओ (सूत्र ७१ अने ७२ मां) वर्णवामां आवेली छे. अने वळी अध्ययन ३२, गाथा ५, ७ मां आवती नीचेनी हकीकत वांचीए छीए:—'जन्म अने मरणनुं कारण कर्म छे अने जन्म अने मरण ए ज दुःख कहेवाय छे.' आ उपरांत बीजी पण उपरना अर्थने मळती ३४, ४७, ६०, ७३, ८६ अने ९९ मी गाथानो संक्षिप्त अर्थ नीचे प्रमाणे छे:—'परंतु जे मनुष्य इंद्रियोना विषयोथी अने मानसिक लागणीओथी [आनो अर्थ बौद्ध तत्त्वज्ञाननी 'वेदना' ना अर्थ साथे घणो ज मळतो आवे छे] उदासीन रहे छे तेने शोक स्पर्श करी शकतो नथी. जो के ते संसारमां मौजुद छे तो पण ते दुःख परंपराथी, जेम कमलनुं पान पाणीथी अलिप्त रहे छे तेम, ते मनुष्य पण अखिन्न रहे छे.'

आ सिवाय बौद्ध ग्रंथमां, नातपुत्त सर्वज्ञान अने सर्व दर्शन प्राप्त करवानो दावो करे छे—ए प्रकारनुं जे कथन छे तेने स्पष्ट करवा माटे प्रमाण आपवानी जरूर नथी. कारण के आ तो जैन धर्मनुं खास एक मौलिक मंतव्य ज छे.

निगण्ठोना सिद्धांत विषयक बीजी वधारे माहिती महावग्ग ६, ३१ (S. B. E, पु. १७, पृ. १०८) आदिमांथी मळी आवे छे. ए स्थळे सीह[१५]नुं एक वृत्तान्त आपेलुं छे. ते सीह लिच्छविओनो सेनापति हतो अने नातपुत्तनो उपासक हतो. ते बुद्धने मळवा इच्छतो हतो परंतु नातपुत्त क्रियावादी होई बुद्ध अक्रियावादी हतो तेथी तेनी पासे जवानी तेने ना कहेवामां आवती

१५ 'सीह' नुं नाम भगवती [कलकत्ता आवृत्ति, पृ. १२६७ जुओ होर्नलनी उवासगदसाओ, परिशिष्ट, पृ. १०] मां महावीरना एक शिष्य तरीके पण आवेलुं छे, परंतु ते साधु होवाथी महावग्गमां आवता आ नाम साथे तेनी एकता बतावी शकाय तेम नथी.

Aho ! Shrutgyanam

हती. परंतु ते तेमनी आज्ञाने उल्लंघी पोतानी मेळे बुद्ध पासे गयो अने बुद्धनी मुलाखातना परिणामे ते तेनो अनुयायी बन्यो. आ वृत्तान्तमां निगण्ठोने जे क्रियावादी जणाववामां आव्या छे, ते बाबत आ पुस्तकमां अनुवादित सूत्रोना उल्लेखथी सुसिद्ध थाय छेः—सूत्रकृताङ्ग १, १२,२१, (पृ० ३१९) मां जणावे छे के 'तीर्थंकर—अर्हनने क्रियावाद प्ररूपवानो—उपदेशवानो अधिकार छे.' आचारांगसूत्र १, १, १, ४ (भाग १ पृ० २) मां पण आ विचार, आ प्रमाणे दर्शावामां आव्यो छेः— 'ते आत्माने माने छे, जगत्ने माने छे, फळने माने छे, कर्मने माने छे, (एटले के ते आपणां ज करेला छे अने जे आ प्रमाणेना विचारोथी स्पष्ट जणाय छे) ते कर्म में कर्युं छे; ते बीजा पासे करावीश; ते हुं बीजाने करवा दईश.' इत्यादि.

महावीरना जे बीजा शिष्यने बुद्धे पोतानो अनुयायी बनावी लीधो हतो तेनुं नाम उपालि हतुं. मज्झिमनिकायना ५६ मां प्रकरणमां जणाव्या प्रमाणे तेणे बुद्धनी साथे, ए बाबतनो वाद कर्यो हतो के—'निगण्ठ नातपुत्त कहे छे तेम कायिक पाप मोटुं छे, के बुद्ध माने छे तेम मानसिक पाप मोटुं छे? ए संवादना प्रारंभमां उपालि कहे छे के, मारा गुरु साधारणरीते कर्म अथवा कृत्य माटे दण्ड (शिक्षा) शब्दनो उपयोग करे छे.' जो के आ उल्लेख साचो छे परंतु संपूर्णरूपे नहिं. कारण के जैनसूत्रोमां कर्म अर्थमां पण 'कर्म' शब्दनो तेटलो ज उपयोग थएलो छे. अने दण्ड शब्दनो पण तेटलो ज थएलो छे. सूत्रकृताङ्ग २, २ (पृ० ३५७) मां १३ प्रकारना पापकर्मनुं वर्णन करेलुं छे जेमां पांच स्थळमां 'दण्डसमादान' शब्द आवेलो छे अने बाकीनां स्थळमां 'किरियाथान' शब्द आवेलो छे.

निगण्ठ उपालि विशेषमां जणावे छे के कायिक, वाचिक अने मानसिक एम त्रण प्रकारनो दण्ड छे. उपालिनुं आ कथन, स्थानांग सूत्रना त्रीजा प्रकरणमां (जुओ इन्डि. एन्टि. पु. ९, पृ० १५९) जणावेला जैन सिद्धान्तनी साथे पूर्ण मळतुं आवे छे.

उपालिनुं बीजुं कथन के, जेमां ते निगण्ठोने मानसिक पापो करतां कायिक पापोने वधारे महत्त्व आपनारा जणावे छे, ते कथन जैन सिद्धान्त साथे बराबर मळतुं आवे छे. सूत्रकृतांग २, ४ (पृ० ३९८) मां एवा एक प्रश्ननी चर्चा करवामां आवी छे के अणजाणपणे कराएला कृत्यनुं पाप लागे के नहिं. त्यां आगळ स्पष्ट रीते जणावेलुं छे के निश्चित रीते तेवुं पाप लागे छे. (सरखावो पृ० ३९९ टिप्पण ६) वळी ते ज सूत्रना ६ ठा अध्ययनमां (पृ० ४१४) बौद्धोना ए मंतव्यनुं के— 'अमुक कर्म पापयुक्त छे के पापरहित छे तेनो निर्णय ते कर्म आचरनार मनुष्यना आशय उपर आधार राखे छे,' खूब खण्डन अने उपहास करवामां आव्यो छे.

अंगुत्तर निकाय ३,७०,३ मां निगण्ठ श्रावकोना आचारोनुं वर्णन आपेलुं छे. ते भागनुं नीचे प्रमाणे भाषान्तर आपुं छुं. 'हे विशाखा, निगण्ठनामे ओळखातो श्रमणोनो एक संप्रदाय छे. तेओ श्रावकोने आ प्रमाणे उपदेश आपे छे. "हे भद्र, अहींथी पूर्वदिशा तरफ एक योजन प्रमाण भूमिथी बहार रहेता जीवतां प्राणिओनी हिंसाथी तमारे विरमवुं, तेवी ज रीते दक्षिण, पश्चिम अने उत्तर दिशा तरफनी योजन प्रमाण भूमिथी बहार रहेता प्राणिओनी हिंसाथी विरमवुं" आ रीते तेओ केटलांक जीवतां प्राणिओने बचाववानो उपदेश आपी दयानो उपदेश करे छे; अने एज रीते वळी तेओ केटलांक जीवतां प्राणियोने न बचाववानो बोध करी क्रूरता शिखडावे छे.' ए समजाववुं कठिण नथी के आ शब्दो जैनोना दिग्विरति व्रतने उद्देशीने कहेला छे के, जे व्रतमां श्रावकने अमुक हद बहार मुसाफरी के व्यापार विगेरे नहिं करवा संबंधीनो नियम उपदेशवामां आव्यो छे. आ व्रतनुं पालन करनार मनुष्य, अलबत्त, पोते छूटी राखेली भूमि बहारना प्राणीनी हिंसा तो न ज करी शके ए तो स्पष्ट ज छे. परंतु, आवा एक निर्दोष नियमने विरोधी सम्प्रदाये केवा विकृत रूपमां आलेख्युं छे? पण एमां ए आश्चर्य जेवुं कशुं नथी. कारण के कोई पण धार्मिक सम्प्रदाय पासेथी, तेना विरोधी मतना सिद्धान्तोनुं यथा-

Aho ! Shrutgyanam

र्थ अने प्रामाणिक आलेखन मेळववानी आपणे आशा न ज राखवी जोईए. तेओ स्वाभाविक रीते, ते सिद्धान्तोनुं आलेखन एवा ज रूपमां करशे के जेथी तेमां देखाई आवता दोषो वधारे मोटा प्रमाणमां बतावी शकाय. जैनो पण आ बाबतमां बौद्धो करतां लेशमात्र उतरे तेम नथी. तेमणे पण बौद्धोना सिद्धान्तोने आ ज प्रमाणे विकृत रूपमां आलेख्या छे. बौद्धोना ए मंतव्यनुं के—पाप ए तेना आचारनारने आशय उपर आधार राखे छे, तेनुं जैनोए, आ पुस्तकना पृ० ४१४ उपर, केवुं असत्य निरूपण कर्युं छे ते जोवा जेवुं छे. ए ठेकाणे जैनोए बौद्धोना एक महान् सिद्धान्तने मिथ्या कल्पित अने मूर्खतापूर्ण उदाहरण साथे मेळवी उपहास पात्र बनावी दीधो छे.

अंगुत्तर निकायनो एक उल्लेख जेनी थोडीक चर्चा आ उपर करवामां आवी छे तेमां वळी आगळ चलावतां जणाववामां आव्युं छे के—'उपोसथना दिवसोमां तेओ (निगण्ठो) श्रावकोने आ प्रमाणे उपदेश आपे छे के "भद्र, तमारे सघळां वस्त्रो काढी नांखवां जोईए अने कहेवुं जोईए के—हुं कोईनो नथी अने मारुं कोई नथी." अहीं विचारवानुं छे के, तेना माता—पिता तेने पोतानो पुत्र तरीके माने छे अने ते पण तेमने पोताना माता—पिता माने छे. तेनो पुत्र अगर तेनी पत्नी, तेने पिता अगर पतिरूपे माने छे. अने ते पण तेमने पोताना पुत्र अगर पत्नी तरीके माने छे. तेना गुलामो अने नोकरो तेने पोतानो मालिक या शेठ माने छे अने ते पण तेमने तेओ पोताना गुलामो अगर नोकरो छे, तेम माने छे. आ कारणथी (निगण्ठो) तेमने (श्रावकोने) उक्त रीते बोलवानुं कही तेमनी पासेथी असत्य भाषण करावे छे. वळी ए रात्री व्यतीत थया बाद, तेओ, ते ते वस्तुओनो उपभोग करे छे जे सर्व (तेमना माटे) अदत्तादानरूप छे. आथी हुं तेमने अदत्तादान लेवाना पण दोषी तरीके मानुं छुं.'

आ वर्णन उपरथी समजाय छे के निर्ग्रन्थ—उपासकना उपोसथना दिवसोवाळा नियमो साधुजविनना नियमो जेवा ज होवा जोईए. गृहस्थ अने साधुजीवनना नियमोनुं भिन्नत्व बीजा दिवसोमां रहेतुं हतुं. परंतु आ वर्णन जैनोना पोसहव्रतना नियमो साथे पूरेपूरुं मळतुं आवतुं नथी. प्रो. भांडारकर, तत्त्वार्थसार-दीपिकाना आधारे पोसहव्रतनुं स्वरूप नीचे प्रमाणे आपे छे; अने आ वर्णन बीजा तेवा वर्णनो साथे बराबर संगत थाय छे. भांडारकर लखे छे:—'पोसह एटले दरेक पक्षनी अष्टमी अने चतुर्दशीना पवित्र दिवसे उपवास करवो अथवा एकाशन करवुं अथवा एक ज ग्रास खावो. ते दिवसोमां यतिनी माफक वैराग्य धारण करी स्नान, लेपन, आभरण, स्त्री संगमन, सुगन्धी धूप—दीप इत्यादिनो त्याग करवो' जो के वर्तमान जैनोनुं ए पोसहव्रत—पालन बौद्धो करतां घणुं सखत छे, ए वात खरी छे; तो पण ते, निगण्ठ—नियमो के जेमनुं वर्णन उपर आपवामां आव्युं छे, तेना करतां घणुं शिथिल होय तेम जणाय छे. मारा जाणवा प्रमाणे जैन गृहस्थ, पोसहमां कपडांनो त्याग करतो नथी. पण बाकीना आभूषणो अने बीजा विलासोनो त्याग करे छे. तेम ज दीक्षा ग्रहण करती वखते जेम साधुने त्यागना सूत्रो बोलवा पडे छे तेम तेने बोलवा पडतां नथी. आ उपरथी एम जणाय छे के—कां तो बौद्धोनुं आ वर्णन मूल भरेलुं अगर असत्यमूलक होय अने कां तो जैनोए पोताना नियमोमां कांईक शिथिलता दाखल करी होय.

दीघनिकाय १, २, ३८ (ब्रह्मजाल सूत्र) मां आवता निगण्ठ विषयक उल्लेख उपरनी पोतानी टीकामां एक ठेकाणे बुद्धघोष लखे छे के—'निगण्ठो आत्मा वर्णरहित छे एम माने छे; अने आजीविको आत्माना वर्णनी अनुसार समस्त मानव जातिना ६ विभागो पाडे छे. परंतु मृत्यु पछी पण आत्मानुं अस्तित्व वरावे छे अने ते बधा रोगोथी मुक्त (अरोगो) होय छे, ए बाबतमां निगण्ठो अने अजीविको बंने समानमत वाळा छे.' छेवटना शब्दोनो अर्थ गेम तेम हो, परंतु तेनी उपरनुं वर्णन तो, आ पुस्तकना पृ. १७२ उपर आपेला जैनोना आत्मस्वरूपना वर्णन साथे बराबर मळतुं आवे छे. एक बीजा

Aho ! Shrutgyanam

फकरामां (I c p 168) बुद्धघोष जणावे छे के निगण्ठ नातपुत्त थंडा पाणीने सचेतन माने छे (सो किर सीतोदके सत्तसञ्ञी होति) अने तेथी ते तेनो उपयोग करता नथी. जैनोनुं आ मंतव्य अत्यंत प्रसिद्ध होवाथी तेनी साबीती आपवा माटे सूत्रोमांथी अवतरणो आपवानी आवश्यकताने हुं निरर्थक मानुं छुं.

पाली ग्रन्थोमांथी प्राचीन निगण्ठोना मंतव्यो संबंधी जे कांई माहीती हुं एकत्र करी शक्यो छुं, लगभग ते बधी उपर आपी दीधी छे. जो के आपणे इच्छीए तेना करतां ते घणी अल्प प्रमाणमां छ, तो पण तेथी तेनी किंमत बिल्कुल ओछी गणाय तेम नथी. प्राचीन निगण्ठोना मंतव्यो अने आचारोना संबंधमां जे उल्लेखो आपणे एकत्र कर्या छे ते सघळा, एक अपवादने बाद करतां, वर्तमान जैन मन्तव्यो अने आचारो साथे मळता आवे छे अने तेमांना केटलाक तो जैनोना खास मौलिक विचारो छे. आ उपरथी आपणने एम संदेह करवानुं जराए कारण नथी जडतुं के आ बौद्ध ग्रन्थोमांनी नोंधो अने जैन सिद्धान्तोनी रचना वच्चेना--अंतर्वर्ती काळमां जैन सिद्धान्तोमां झाझो फेरफार थयो होय.

में जाणी जोईने ज निगण्ठ नातपुत्तना मत विषयक एक प्रधान फकरानुं विवेचन करवुं आ स्थळे मुलतवी राख्युं छे. कारण के ए फकरामां आपेली बाबत उपरथी आपणने एक नवी ज पद्धतिए तपास करवानी जरूरत रहे छे. आ फकरो दीघनिकायनो सामञ्ञफलसुत्तमां आपेलो छे. हुं तेनुं अहिं सुमङ्गलविलासनी नामे बुद्धघोषवाळी टीकाना अनुसारे भाषान्तर आपुं छुं–' महाराज, अहिंयां एक निगण्ठ चारे दिशाना नियमनथी सुरक्षित छे (--चातुयाम संवरसंवुतो). हे महाराज, केवी रीते निगण्ठ चारे दिशाना संवरथी रक्षित छे ? महाराज, आ निगण्ठ सघळुं [थंडुं] पाणी वापरता नथी. सर्व दुष्ट कर्म करता नथी. अने सघळा दुष्कर्मोना विरमणवडे ते सर्व पापोथी मुक्त छे. अने सर्व प्रकारना दुष्कर्मोथी, सघळां पापकर्मोथी निवृत्ति अनुभवे छे. आ प्रमाणे हे महाराज, निगण्ठ चारे दिशाना संवरथी संवृत छे. अने महाराज, आ प्रमाणे संवृत होवाथी ते निगण्ठ नातपुत्तनो आत्मा मोटी योग्यतावाळो, संयत अने सुस्थित छे.[1]' अलबत्त, आ जैनधर्मनुं यथार्थ तेम ज संपूर्ण वर्णन नथी. परंतु तेमां जैनधर्मनुं विरोधी तत्त्व पण नथी. आना शब्दो जैनसूत्रोना शब्दो जेवा ज छे. में बीजे[2] स्थळे जणाव्युं छे तेम ' चातुयाम संवर संवुतो ' ए वाक्य मात्र टीकाकारे ज नहीं परंतु मूळ ग्रन्थकारे पण खोटी रीते समजेलुं छे. कारण के पाली शब्द ' चातुयाम ' ते प्राकृत शब्द ' चातुज्जाम ' नी बराबर थाय छे. अने आ प्राकृत शब्द नो एक प्रसिद्ध जैन पारिभाषिक शब्द छे जे महावीरना (पंच महव्वय) पांच महाव्रतोथी भिन्न एवा पार्श्वनाथना चार व्रतोनो वाचक छे. आथी आ स्थळे बौद्धोए, जे सिद्धान्त वास्तविकमां महावीरना पुरोगामी पार्श्वनाथने लागू पडे छे तेने, महावीर उपर आरोपित करवामां भूल करेली छे, एम हुं धारुं छुं. आ उपरथी एम सूचित थाय छे के बौद्धोए आ शब्दने निगण्ठोना धर्मवर्णनमां लीधेलो होवाथी तेमणे ते पार्श्वनाथना अनुयायियोना मुखेथी सांभळ्यो हशे; अने बीजी ए पण कल्पना थई शके के महावीरना संशोधित मतो जो बुद्धना समयमां सर्व सामान्यरीते स्वीकाराया होत तो पार्श्वनाथना अनुयायियो पण ते वखते ते शब्दनो उपयोग नहीं करता होत. बौद्धोनी आ भूल द्वारा हुं जैनोनी ए परंपराने सत्य स्थापित करी शकुं छुं के महावीरना समयमां पण पार्श्वनाथना शिष्यो विद्यमान हता.

आ पद्धतिए तपास करवानी शरुआत करतां पहेलां हुं बौद्धोनी एक बीजी पण अर्थपूर्ण भूल तरफ

---

१ सुमंगलविलासिनी [पाली टेक्स्ट सोसायटी] पृ. ११९

१ ग्रीमब्लोट्, Pali sept suttas मां, गोगर्ली (Gogerly) अने बर्नफ (Burnouf) नां जे भाषान्तरो आपेलां छे ते तेमणे टीकानी सहायता लीधा विना करेलां होवाथी दुर्लक्ष्य करवा जेवां छे. बुद्धघोषनुं वर्णन परंपरागत हशे के कल्पित हतुं ते संदिग्ध छे.

२ जुओ, इन्डि. एन्टि भा. ९. पृ. १५८ मां प्रकट थएलो मारो On Mahavir and his Predecessors नामनो निबन्ध.

वाचकनुं ध्यान खेंचवा मांगु छुंः बौद्धो नातपुत्तने अग्गिवेसन अर्थात अग्निवैश्यायन कहे छे, परंतु जैनोना मतानुसार ते काश्यप हता; अने पोताना तीर्थंकरो संबंधी आवी बाबतोमां जैनोनुं ज कहेवुं विश्वासपात्र मनावुं जोईए. वळी महावीरनो एक मुख्य शिष्य, जे सुधर्मा नामे हतो अने जेने सूत्रोमां महावीरना धर्मना मुख्य उपदेशक तरीके बतावेलो छे ते पोते अग्निवैश्यायन हतो; अने तेणे जैन धर्मनो प्रसार करवामां मुख्य भाग भजवेलो होवाथी बहारना बीजा माणसो शिष्यने गुरु समजी लेवानी भूल करी होय अने तेथी करीने शिष्यनुं गोत्र गुरुने लगाडी देवामां आव्युं होय, ते घणुं संभवित छे. आ रीतनी बौद्धोए करेली बेवडी भूल महावीरनी पूर्वे पार्श्वनामना तीर्थंकरनी तथा महावीरना मुख्य शिष्य सुधर्मानी हयातीनी साक्षी आपे छे.

पार्श्व ए एक ऐतिहासिक पुरुष हता ते वात तो बधी रीते संभावित लागे छे. केशी[1] के जे महावीरना समयमां पार्श्वना संप्रदायनो एक नेता होय तेम देखाय छे तेनो तथा अन्य पण तेवा अनुयायीओना जैन सूत्रोमां घणे ठेकाणे उल्लेखो थएला छे; अने ते उल्लेखो एवी सरळ रीते थएला छे के जेथी करीने तेनी सत्यासत्यताना संबंधमां शंका उठाववाने कारण मळतुं नथी. उत्तराध्ययनना २३ मा अध्ययनमां जुना अने नवा संप्रदायनो परस्पर मेळ केवी रीते थई गयो हतो ते बतावनारी; एक कथा आ विषयमां घणी ज अगत्यनी छे. केशी अने गौतम के जेओ बंने जैन धर्मना बे संप्रदायोना प्रतिनिधि तथा नेता हता, तेओ पोताना शिष्यपरिवार सहित एक वखते श्रावस्ती पासेना उद्यानमां भेगा मळे छे, अने महाव्रतोनी संख्या विषयक तथा सचेलकाचेलक अवस्था विषयक तेमना धार्मिक मतभेदो वधारे विवेचन कर्या सिवाय मात्र सहज समजावीने दूर करवामां आवे छे. अने त्वराथी मौलिक नीतिविषयक विचारोना संबंधमां प्रत्येक पक्ष दृष्टान्तो द्वारा एक बीजाना विचारो समजी समजावी निःशंक बनी संपूर्ण एकमत थाय छे. बन्ने संप्रदायो वच्चे कांईक मतभेद जेवुं जोवामां आवे छे, परंतु परस्पर द्वेष या वैर बिलकुल जोवातुं नथी. जो के प्राचीन संप्रदायना अनुयायिओने 'पंच महाव्रत प्रतिपादनार ' महावीरना धर्मनो स्वीकार करवो पडयो हतो, ए वात खरी छे; तो पण तेओ पोतानी केटलीक जूनी रूढिओने पण वळगी रह्या हता. खास करीने वस्त्र वापरवाना विषयमां के जे रूढीनो महावीरे त्याग कर्यो हतो, तेम आपणे मानवुं जोईए. आ कल्पनानुसार आपणे श्वेताम्बर अने दिगम्बर संप्रदायरूपी बे फिरकानी उत्पत्तिनुं मूळ कारण पण बतावी शकीए छीए, के जेना संबंधमां श्वेताम्बर अने दिगम्बर बने संप्रदायमां भिन्न भिन्न अने परस्परविरोधी दंतकथाओ प्रचलित छे.[1] आ भेद देखीती रीते ज कांई आकस्मिक थयो न हतो; परंतु असलनो एक मतभेद [उदाहरण तरीके जेवो के श्वेताम्बर मतना केटलाक गच्छोनी वच्चे अत्यारे ए हयाती धरावे छे] काळे करीने विभागना रूपमां परिणत थयो अने आखरे तेणे एक महान् धर्मभेदनुं रूप लीधुं.

बौद्ध ग्रन्थोमां मळी आवता उल्लेखो, नातपुत्तनी पूर्वे पण निर्ग्रन्थोनी हयाती हती, ए प्रकारना आपणा विचारने दृढ करे छे. ज्यारे बौद्ध धर्मनो प्रादुर्भाव थयो त्यारे निर्ग्रन्थोनो संप्रदाय एक मोटा सम्प्रदायरूपे गणातो होवो जोईए. ए निर्ग्रन्थोमांना केटलाकने बौद्ध पिटकोमां, बुद्धना अने तेना शिष्योना विरोधी तरीके अने वळी केटलाकने तेना अनुयायी थएला तरीके वर्णवेला छे के जे उपरथी आपणे उपर प्रमाणे अनुमान करी शकीए छीए. एथी उलटुं ए ग्रंथोमां कोई पण स्थले एवो उल्लेख के सूचन सरखुं पण थएलुं जोवामां नथी आवतुं के निर्ग्रन्थोनो सम्प्रदाय ए एक नवीन सम्प्रदाय छे. आ उपरथी आपणे अनुमान करी शकीए छीए के निर्ग्रन्थो बुद्धना जन्म पहेलां घणा लांबा कालथी अस्तित्व धरा-

१ राजप्रश्नीमां पार्श्वने (?) राजा पएसी साथे संवाद थयो हतो अने त्यार बाद राजाने तेणे पोतानो धर्मानुयायी बनाव्यो हतो.

१ श्वेताम्बर अने दिगंबर सम्प्रदायोनी उत्पत्तिना संबंधमां जर्मन ओरिएन्टल सोसायटीना जर्नलना ३८ मां भागमां प्रकट थएलो मारो निबंध जुओ।

Aho ! Shrutgyanam

वता हशे. आ अनुमानने बीजी एक बाबत द्वारा पण टेको मळे छे. बुद्ध अने महावीरना समकालीन एवा मक्खलि गोसले मनुष्य जातिनी छ वर्गोमां वहेंचणी करी हती.[1] बुद्धघोषना [2]कहेवा मुजब आ छ वर्गमांना त्रीजावर्गमां निर्ग्रन्थोनो समावेश करवामां आव्यो हतो. हवे विचारीए के निर्ग्रन्थो जो ते ज अरसामां हयातीमां आव्या होत तो तेमनी गणना एक खास–एटले के मनुष्य जातिना एक स्वतंत्र–पेटाविभाग तरीके कदापि न करवामां आवी होत. जरूर तेणे निर्ग्रन्थोने एक महत्त्वना अने साथे मारा मानवा प्रमाणे प्राचीन बौद्धो मानता हता तेम एक प्राचीन संप्रदायरूपे लख्या हशे. मारा उपरोक्त छेल्ला मतनी पुष्टिमां नीचे मुजबनी दलील पण छे. मज्झिमनिकाय, ३५ मां बुद्ध अने सच्चक नामना एक निर्ग्रन्थपुत्र वच्चे थएला वादनुं वर्णन आपेलुं छे. सच्चक वादमां नातपुत्तने हराव्यानी बडाई मारतो होवाथी ते निर्ग्रन्थ होय तेम लागतो नथी. अने बीजुं ए के जे सिद्धान्तोनुं ते समर्थन करवा मथे छे ते सिद्धान्तो जैनोना नथी. आ उपरथी ए विचारवा जेवुं छे के एक प्रसिद्ध वादी के जेनो पिता निर्ग्रन्थ हतो अने जे पोते बुद्धनो समकालीन हतो, तेना पुरावा उपरथी निर्ग्रन्थोनो संप्रदाय बुद्धना समयमां स्थापित थयो हतो तेम भाग्ये ज मानी शकाय.

हवे आपणे जे जे जैनेतर पाखंडी मतावलंबिओ सामे जैनोए पोतानो तात्त्विक विरोध बताव्यो छे, अने ते संबंधे जे उल्लेखो तेओए कर्या छे, ते तपासीए, अने तेनी साथे बौद्धोना उल्लेखो सरखावीए. सूत्रकृतांग २, १, ५५ (पृ० ३८८) अने २१ (पृ०३४३) मां घणे अंशे परस्पर मळता आवता एवा बे जडवादी सिद्धान्तोनो उल्लेख छे. पहेला सूत्रमां जे लोको आत्माने एक अने अभिन्न माने छे तेमना एक अभिप्रायनुं वर्णन छे, अने बीजा सूत्रमां पंचभूतने नित्य अने बधुं तेनुं ज बनेलुं छे तेम माननार एक सिद्धान्तनुं वर्णन आपेलुं छे. बन्ने मतना अनुयायीओ जीवतां प्राणीनी हिंसा करवामां पाप मानता नथी. आवा ज प्रकारनो मत सामञ्ञफलसुत्तमां पूरण कस्सप अने अजित केशकंबलिनो होवानुं बताव्युं छे. पूरण कस्सप पुण्य अगर पाप जेवी कोई वस्तुने मानतो नथी अने अजित केसकम्बलीनो एवो सिद्धांत छे के अनुभवातीत मंतव्य के जे लोकोमां प्रचलित छे तेने मळतुं कोई तत्त्व ज नथी. आ उपरान्त ते एम माने छे के 'माणस (पुरिसो) चार भूतोनो बनेलो छे; ज्यारे ते मरी जाय छे त्यारे पृथ्वी पृथ्वीमां, पाणी पाणीमां, अग्नि अग्निमा, वायु वायुमां, अने ज्ञानेंद्रियो हवामां[1] (अथवा आकाशमां) विलीन थई जाय छे. ठाठडीने उपाडनार, चार पुरुषो मुडदाने स्मशानभूमिमां लई जाय छे त्यारे कल्पांत करे छे; कपोत रंगना हाडकां बाकी रहे छे अने बीजा सघळां (पदार्थो) बळीने भस्मीभूत थई जाय छे. आ छेल्लुं सूत्र थोडा फेरफार साथे सूत्रकृतांग ना पृ० ३४० उपर आवे छे:—' अन्य जनो मुडदाने बाळवा माटे लई जाय छे. ज्यारे अग्नि तेने बाळी नांखे छे त्यारे मात्र कपोतरंगना हाडकां बाकी रहे छे अने चार उपाडनारा ठाठडीने लई गाम तरफ पाछा वळे छे.[2]

जडवादना बीजा सिद्धांत (पृ. ३४३, २२, अने पृ. २३७) ना संबंधमां एक बीजी शाखानो पण उल्लेख

१ दीघनिकाय, सामञ्ञफलसुत्त. २०.

२ सुमंगलविलासीनी पृ. १६२मां बुद्धघोष स्पष्ट जणावे छे के गोसाले पोताना शिष्यो जे चतुर्थ वर्गना हता तेना करतां निर्ग्रन्थोने हलकी प्रतिना गण्या छे. गोसाले तो भिक्खुओने तेथीए हलका प्रकारना गण्या छे के जे बाबत उपर बुद्धघोषे लक्ष्य आप्युं नथी. ते उपरथी स्पष्ट जणाय छे के आ भिक्खुओने बौद्ध साधुओ करतां ते भिन्न मानतो हतो.

१ आकाशने बौद्ध ग्रंथोमां पांचमा तत्त्व तरीके मान्युं नथी, परन्तु जैन ग्रंथोमां ते मान्युं छे. जुओ आगळ पृ० ३४३ अने पृ० २३७ गाथा १५. आ मात्र एक शाब्दिक भेद छे नहीं के तात्त्विक.

२. हुं आ स्थळे बंने मूळ सूत्रोने सामसामे मुकुं छुं जेथी करीने तेमनी वच्चेनुं साम्य वधारे स्पष्टरीते समजी शकाय:—

आसन्दि पञ्चमां पुरिसा मतमा- | आदहणाए । परेहि भिज्जइ; दाय गच्छन्ति याव अळाहना | अगणिज्झामिते सरीरे कवोपदानि पञ्ञापेन्ति, कापोतकानि | तवण्णाइं अट्ठीनि आसन्दि अट्ठीनि भवन्ति भस्सन्ता हुतियो | पञ्चमां पुरिसा गामं पच्चा गच्छन्ति

थएलो छे. ते मतमां पांच भूत उपरान्त छट्ठुं तत्त्व नित्यात्मा मनाय छे. आ मत ते अत्यारे वैशेषिक नामना दर्शनथी जे प्रसिद्धिमां आवेलुं छे तेनुं प्राचीन अथवा लोकप्रसिद्ध रूप छे. बौद्धग्रंथमां आ दर्शनना संस्थापक तरीके पकुध कच्चायन निर्दिष्ट थएलो छे. तेनो मत एवो हतो के आखुं विश्व सात वस्तुनुं (पदार्थोनुं) बनेलुं छे. अने ते सर्वे पदार्थो नित्य निर्विकार अने परस्पर स्वतंत्र छे. ते पदार्थो चार भूत, सुख, दुःख अने आत्मा ए प्रमाणे छे. आ सर्वेनी एक बीजा उपर कांई असर थती नहीं होवाथी कोई पण पदार्थनो वास्तविक नाश थतो नथी. मारे कहेतुं जोईए के सुख अने दुःखने नित्य मानवा छतां पण ते बन्नेनी आत्मा उपर कांई असर थती न मानवी ते मारा अभिप्राय प्रमाणे तो अज्ञानता भरेलुं छे. परन्तु बौद्धोए कदाच असल सिद्धान्तोनुं असत्य आलेखन कर्युं होय तो ते पण संभवित छे. पकुध कच्चायनना विचारो अवश्य करीने अक्रियावादमां अंतर्गत थाय छे. अने आ बाबतमां ते वैशेषिक दर्शन के जे क्रियावादी छे तेनाथी भिन्न पडे छे. आ बन्ने वादो बौद्ध तेम ज जैन साहित्यमां आवता होवाथी तेमनी विशेष व्याख्या करवी अहीं अस्थाने नहीं गणाय. जे सिद्धान्त आत्माने क्रियाशील अने क्रियालित (क्रियाथी जेना उपर असर थाय तेवो) माने छे ते क्रियावादी कहेवाय छे. आ वर्गमां जैनधर्म, ब्राह्मणधर्मो पैकी वैशेषिक अने न्यायदर्शनो (आ बे दर्शनोना स्पष्ट उल्लेखो बौद्ध अने जैन धर्मशास्त्रोमां थएला नथी) तथा बीजां पण एवां केटलांक दर्शनो—के जेनां नाम अत्यारे उपलब्ध थई शकतां नथी परंतु जेनी हयातीनी माहीती आपणे आपणा आ ग्रंथोमांथी मेळवी शकीए छीए, ते सर्वेनो--समावेश थाय छे. अक्रियावाद ते सिद्धान्त कहेवाय छे जेमां आत्मानुं नास्तित्व अगर निष्क्रियत्व अथवा कर्मालिप्तत्व प्रतिपादन करवामां आवे छे. आ वर्गमां सघळा जडवादी मतो; ब्राह्मणधर्मो पैकी वेदान्त, सांख्य अने योगदर्शनो; तथा बौद्ध धर्मनो अंतर्भाव थाय छे. बौद्ध धर्मना क्षणिकवाद तथा शून्यवादनो उल्लेख सूत्रकृतांग १, १४, ४ थी अने ७ मी गाथामां थएलो छे. साथे ए पण जणाववुं जोईए के वेदान्तिओ अथवा तेमना मंतव्योनो पण सिद्धान्तोमा घणे स्थले उल्लेख आवे छे. सूत्रकृतांगना बीजा पुस्तकना पहेला अध्ययनमां, पृ. ३४४ उपर, त्रीजा पाखंड मत तरीके वेदान्तनुं वर्णन थएलुं छे. छठ्ठा अध्ययनमां, पृ. ४१७ उपर, तेनुं फरीथी वर्णन आवेलुं छे. परंतु बौद्धोए गणावेला छ तीर्थीकोमां आ मतनो कोई पण आचार्य नहीं होवाथी आपणे ते उपर आ स्थळे ध्यान देता नथी.[1]

सूत्रकृतांगना बीजा भागना प्रथम अध्ययनमां, चोथा पाखंड मत तरीके दैववाद (Fatalism) नुं वर्णन आवेलुं छे. सामञ्ञ फलसुत्तमां आ मतनुं मक्खली गोसाल नीचे प्रमाणे प्रतिपादन करे छेः—' महाराज, जीवात्माओनी अपवित्रतामां कोई हेतु अगर पहेलां हयाती धरावतुं एवुं कांई कारण नथी. ते अनन्यकृत छे. तेम ज ते पहेलां हयाती धरावती कोई बीजी वस्तुथी उत्पन्न थयेली नथी. (तेवी ज रीते) जीवात्माओनी पवित्रतामां पण कोई कारण अगर पूर्वे हयाती धरावतो कोई हेतु नथी. ते अनन्यकृत छे. तेम ज तेनुं कोई उपादान कारण नथी. आनी उत्पत्ति व्यक्तिओना कोई आचारनुं परिणाम नथी. तेम ज पारकाना कार्योनी पण तेना उपर असर नथी. तेम मनुष्यप्रयत्ननुं पण ते फल नथी. जेने उत्पन्न करवामां, पुरुषनी शक्ति, प्रयत्न, बल, धैर्य, अगर सामर्थ्य एमांनुं कोई कारणभूत थतुं नथी. सर्वे सत्त्व, सर्वे प्राणिओ, सर्वे भूतो, अने सर्वे जीवो,* पछी ते पशु, अगर वनस्पति

१ एक वात याद राखवा जेवी छे के वेदान्तिओ पण बुद्धना प्रतिस्पर्धी तरीके काम बजावता अने तेओ वैदिक धर्मना तत्त्वज्ञोमां आगळ पडता होवाथी आपणे एम अनुमान करवुं जोईए के बौद्ध धर्मनी असरवाळा लोकोथी विद्वान् ब्राह्मणो दूर ज रहेता.

* मूळमां ' सव्वे सत्ता, सव्वे पाणा , सव्वे भूता, सव्वे जीवा, एवो पाठ छे. जैन सूत्रोमां पण आ ज क्रमथी अनेक ठेकाणेए पाठ आवे छे अने ए पाठनुं संक्षेपमां all classes of living beings

सचेतन प्राणिओना बधा वर्गो ' एवुं भाषान्तर करेलुं छे. बुद्ध घोषनी टीकानुं भाषान्तर, होर्नले, उवासगदसाओना परिशिष्ट नं. २ जाना पान १६ उपर नीचे प्रमाणे आप्यु छे ' सव्वे

गमे ते हो पण तेमनामांना, कोईमां आंतर बल, शक्ति तथा सामर्थ्य नथी; परंतु आ दरेक जीव पोतानी स्वभावनियतिने वश थई, छ प्रकारमांनी कोई पण जातिमां रही सुख-दुःख भोगवे छे. इत्यादि.' आ सिद्धान्तोनुं सूत्र कृतांगमां (I. c.) आपेलुं वर्णन जो के थोडा शब्दोमां छे, छतां पण सरखा भावार्थवाळुं छे; अलबत, ते स्थळे आ सिद्धान्तो मक्खलिपुत्र गोसालना छे एम स्पष्ट कहेवामां आव्युं नथी. जैनो प्रधानतया चार दर्शनोनो उल्लेख करे छेः—क्रियावाद, अक्रियावाद, अज्ञानवाद अने वैनयिकवाद. आमांथी अज्ञानिकोना मतोनुं मूळमां स्पष्ट कथन करेलुं देखातुं नथी. आ सवळां दर्शनोना विषयमां टीकाकारे जे समजुती आपेली छे, अने जे में पृ. ८३ नी २ नंबरनी टीपमां नोंधेली छे, ते घणी ज अस्पष्ट अने गेरसमजुती उत्पन्न करे तेवी छे. परन्तु ए अज्ञेयवादनो यथार्थ ख्याल आपणने बौद्ध ग्रंथोथी आवी शके तेम छे. सामञ्ञफलसुत्तमां जणाव्या प्रमाणे ते मत सञ्जय बेलट्ठिपुत्तनो हतो; अने त्यां नीचे प्रमाणे तेनुं वर्णन करेलुं छेः—'महाराज, जो मने तमे पुछशो के जीवनी कोई भावी अवस्था छे ? तो हुं जबाब आपीश के जो हुं भावी अवस्था अनुभवी शकुं, तो पछी हुं ते अवस्थानुं स्वरूप समजावी शकुं. जो मने पुछशो के शुं ते अवस्था आ प्रकारनी छे ? तो (हुं कहीश के) ते मारो विषय नथी. शुं ते ते प्रकारनी छे ? ते मारो विषय नथी. शुं ते आ बन्नेथी भिन्न छे ? ते पण मारो विषय नथी. नथी एम नथी ? ते पण मारो विषय नथी.' इत्यादि. आ ज रीते मृत्यु पछी तथागतनी हयाती रहे छे के नहीं ? रहे छे अने नथी रहेती ? रहे छे एमए नथी ? अने नथी रहेती एमए नथी ? ' आवा प्रश्नो जो कोई पूछे तो तेनो पण ते ए ज रीते जबाब आपे छे. आ उपरथी स्पष्ट छे के अज्ञेयवादीओ कोई पण वस्तुना अस्तित्व अने नास्तित्वना संबंधमां सर्वे प्रकारनी निरूपण पद्धतिओ तपासता हता अने जो ते वस्तु अनुभवातीत मालुम पडती तो तेओ सर्वे कथननी रीतिओनो इनकार करता हता.

बुद्ध अने महावीरना समयमां प्रचलित एवा अन्य तात्त्विक विचारोना विषयमां जैन तथा बौद्ध ग्रंथोमां मळी आवती नोंधो गमे तटली जूज होय, तो पण ते नामांकित कालना इतिहासकारने अति महत्त्वनी छे. कारण के आ नोंधो द्वारा ते कालना धार्मिक सुधारकने केवा प्रकारना पाया उपर तथा कया साधनोनी मददथी पोतानो मत उभो करवो पड्यो हतो ते जणाई आवे छे. एक बाजुए आ बधा पाखंडी मतोमां मळी आवती परस्परनी केटलीक साम्यता अने बीजी बाजुए जैन अगर बौद्धोनी जणाती विशिष्टता उपरथी स्पष्ट रीते अनुमान करी शकाय छे के बुद्ध अने महावीरे केटलाक विचारो तो आ पाखंडीओना मतोमांथी लीधा हता अने केटलाक तेओनी साथे चालता तेमना सतत वादविवादनी असरथी उपजावी कढाया हता. मारुं एम धारवुं छे के सञ्जयना अज्ञेयवादनी विरुद्ध महावीरे पोतानो स्याद्वादनो मत स्थाप्यो हतो. अज्ञानवाद जणावे छे के जे वस्तु आपणा अनुभवनी पछे तेना संबंधमां अस्तित्व अगर नास्तित्व अथवा युगपत् अस्तित्व अने नास्तित्वनुं विधान, अगर निषेध करी शकाय नहीं. ते ज रीते पण तेथी उलटी दिशाए दोडतो स्याद्वाद एम प्रतिपादन करे छे के एक दृष्टिए (अपेक्षाए) कोई पुरुष वस्तुना अस्तित्वनुं विधान करी शके (स्याद अस्ति) तेम बीजी दृष्टिए तेनो निषेध करी शके (स्यादे नास्ति); अने तेवी ज रीते भिन्न भिन्न कालमां ते वस्तुना अस्तित्व तथा नास्तित्वनुं विधान करी शके (स्याद् अस्ति नास्ति) परन्तु जो एक ज कालमां अने एक ज दृष्टिए कोई मनुष्य वस्तुना अस्तित्वनुं तथा नास्तित्वनुं विधान करवा इच्छतो होय तेणे एम कहेवुं जोईए के ते वस्तु विषये कांई कही शकाय नहीं (स्याद् अवक्तव्यः). ते प्रमाणे केटलाक संयोगोमां अस्तित्वनुं विधान करवुं अशक्य छे (स्याद्

सत्ता—एटले ऊंट, बळद, गधेडा अने तेवा बीजा बधा पशुओ. सब्बे पाणा—एटले एकेन्द्रिय द्विन्द्रिय आदि चेतनावाळा प्राणिओ, सब्बे भूता-एटले अण्डज अने गर्भज जीवो; अने सब्बे जीवा —एटले डांगर, जव, घऊं इत्यादि (वानस्पतिक) जीवो.

Aho ! Shrutgyanam

नास्ति अवक्तव्यः); केटलाक प्रसंगे नास्तित्व (स्याद् नास्ति अवक्तव्यः); अने केटलीक वखते बन्नेनुं विधान करवुं अशक्य होय छे (स्याद् अस्ति नास्ति अवक्तव्यः)[1]

आ वाद ते जैनोनो प्रसिद्ध सप्तभंगी नय छे. शुं कोई पण तत्त्ववेत्ता पोताना भयंकर प्रतिस्पर्धीने चूप करवाना प्रयोजन सिवाय, जेने प्रमाणनी जरूर नथी, एवी उवाडी बाबतोनी व्याख्या करवानी इच्छा करे खरो ? एम लागे छे के अज्ञेयवादिओना सूक्ष्म विवादोए प्राय तेमना घणा खरा समकालीन मनुष्योने गुंचवणमां नांख्या हशे अगर भमाव्या हशे; अने तेथी करीने ते सर्वेने अज्ञानवादनी मूल-मूलामणीमांथी बहार निकळवा माटे स्याद्वादनो सिद्धान्त एक क्षेममार्ग तरीके देखायो हशे. आ शास्त्रनी मददथी विरोधिओ उपर आक्रमण करनार अज्ञानवादिओ पोताना ज सामे थई जता हता. आपणे नथी कही शकता के अज्ञेय-वादना केटला अनुयायिओ, आ सप्तभंगी नयना सत्यनी प्रतीति पामी महावीरना धर्ममां आवी गया हशे !

अज्ञेयवादनी बुद्धना उपर पण केटली बधी असर थई हती ते आपणे पाली ग्रंथोमां निरुपित बुद्धना निर्वाण विषयक सिद्धान्तमां जोई शकीए छीए. आ प्रकारनां नि-श्चयात्मक वाक्यो तरफ प्रथम ध्यान प्रो. ओल्डनबर्गे खेंच्युं हतुं. आ वाक्यो निःशंक पणे जणावे छे के मृत्यु बाद तथागत (अर्थात् मुक्तात्मा अथवा जेने वास्तवमां व्यक्तित्वनो हेतु कही शकाय ते) हयाती धरावे छे के नहीं; एवा प्रश्नो उत्तर आपवा बुद्ध चोक्खी ना पाडता हता. जो तेमना समयना लोकोना सांभळवामां आवा विचारो बिलकुल न आव्या होत अने आवी केटलीक बाबतो के जे मनुष्यना मनथी अतीत होई ते घणी महत्त्वनी गणाय छे तेना संबंधमां, तेवा प्रकारना उत्तरोथी ते लोकोने संतोष न वळतो होत तो तेओ, तेवा कोई धार्मिक सुधारक के जे ब्राह्मणधर्ममां तर्कसिद्ध निरुपित सघळी बाबतोना संबंधमां पोतानो स्पष्ट अभिप्राय न आपे, तेना उपदेशोने आदरपूर्वक सांभळे ए असंभवित छे. परन्तु वस्तुस्थिति जोतां एम लागे छे के अज्ञेयवादे बौद्धोना निर्वाणना सिद्धान्तने झीलवा माटे भूमि तैयार करी राखी हती[2]. एक बाबत खास नोंध लेवा जेवी छेः—संयुत-निकाय जेनुं भाषांतर प्रो. ओल्डनबर्गे करेलुं छे, तेमां एक ठेकाणे पसेनदि राजा अने खेमा नामनी आर्या वच्चे थएलो संवाद आवे छे. तेमां राजाए मृत्युबाद तथागत हयाती धरावे छे के नहीं ए संबंधमां प्रश्नो पूछेला छे. जे सूत्रोमां आ प्रश्नो पूछेला छे, तेमां सामञ्ञफलसुत्त —के जेनुं भाषांतर उपर आपेलुं छे,—मां जेवा शब्दो संजय वापरे छे तेवा ज शब्दो वापरेला छे.

बुद्धना समयना अज्ञेयवादनी असर बुद्ध उपर थई हती तेवा प्रकारना मारा अनुमाननी पुष्टिमां हुं महावग्ग १, २३ अने २४ मां आपेली एक परंपरागत कथा अत्रे रजु करूं छुं. ते कथामां एम जणावेलुं छे के बुद्धना सौथी वधारे प्रख्यात एवा सारिपुत्त अने मोग्गलान नामना बे शिष्यो, तेमना अनुयायी थया पहेलां सञ्जयना शिष्यो हता अने पछीथी तेओए पोताना जूना गुरुना मतना २५० शिष्योने पण बौद्धमार्गी बनाव्या हता. आ हकिकत बुद्धे बोधि प्राप्त कर्युं त्यार पछी तरत ज बनी हती. आ थी ए संभवित छे के पोताना नवा मतना प्रारंभ काळमां बुद्धे शिष्यो मेळववा माटे ते वखते प्रचलित एवा बीजा मतो तरफ सर्वप्रकारनी योग्य वर्तणुंक राखवानी कोशीश करी हशे.

महावीरना सिद्धान्तोना विकास उपर, मारी मान्य-

---

१ भांडारकर—रिपोर्ट सन् १८८३-४ पृ. ९५

२ निर्वाणना स्वरूप-कथन संबन्धमां बुद्धे जे मौन धारण कर्युं हतुं ते तेमना वखतना भले डहापण भर्युं गणातुं होय, परंतु ते संप्रदायना विकासने माटे तो तेमां घणा परिणामो समाएला हता. कारण के बौद्ध मतना अनुयायीओने, ब्राह्मण दार्शनिको जेवा दूधमांथी पोरा काढनारा तर्कशास्त्रीओनी विरुद्ध पोताना मतने टकावी राखवानो होवाथी, आ महान् प्रश्न के जे विषयमां तेमना धर्मसंस्थापके कांई पण निश्चयात्मक कथन कर्युं नहोतुं, ते उपर वधारे स्पष्ट विचारो जणाववानी फरज पडी हती. आ रीते पोताना गुरुए अधुरा राखेला महेलने पूर्ण करवा माटे सामग्री भेगी करवाना उद्देशथी बुद्धनिर्वाण पछी तरत ज बौद्धधर्म पुष्कळ संप्रदायोना रूपमां विभक्त थई गयो हतो. आश्चर्य पामवानी जरूर नथी के सिलोन जे ब्राह्मणविद्याविषयक केंद्रथी घणुं दूर आवेलुं छे त्यां बौद्धोना आ निर्वाणनो सिद्धांत असल रूपमां अखंडित रही शक्यो छे.

Aho ! Shrutgyanam

तानुसार, मक्खलिपुत्त गोसालनी मोटी असर थयेली छे. भगवती १५, १, मां आपेलो तेना जीवननो इतिहास, हॉर्नले पोताना उवासग दसाओना भाषान्तरने अंते, एक परिशिष्टमां संक्षेपमां भाषान्तरित करेलो छे. तेमां ए प्रमाणे नोंधेलुं छे के, गोसाल महावीरनी साथे तेमना शिष्य तरीके श्रमणधर्म पाळतो थको छ वर्ष सुधी रह्यो हतो. परन्तु पछी ते तेमनाथी जुदो थई गयो अने पोतानो नवो धर्म स्थापी जिन तरीके आजीविकोनो नायक कहेवडाववा लाग्यो. परन्तु बौद्ध ग्रंथोमां तेना संबंधमां एवी नोंध मळी आवे छे के ते नन्द वच्छ अने किस संकिचनो उत्तराधिकारी हतो अने तेनो संप्रदाय साधुवर्गमां चिरस्थापित (लांबा वखत पूर्वे स्थापित थएलो एवो) मनातो होई अचेलक परिव्राजकना नामे प्रसिद्ध हतो. जैनोनी ए हकिकत के महावीर अने गोसाल ए बन्नेए केटलाक वखत सुधी साथे तपश्चर्या करी हती, तेमां शंका करवानुं काई कारण नथी. परन्तु तेओ बन्ने वच्चे जे संबंध बताववामां आवे छे ते वास्तवमां तेनाथी जुदा प्रकारनो होय तेम लागे छे. मारुं एवुं मानवुं छे;—अने मारा आ अभिप्रायना पक्षमां हुं हमणा ज केटलीक दलीलो आपीश—के महावीर अने गोसाल ए बन्ने पोताना संप्रदायोने एक करवाना अने एकने बीजामां भेळवी देवाना इत्यादाथी परस्पर सहचारी बन्या हता; अने लांबा वखत सुधी आ बन्ने आचार्यो साथे रह्या हता. ए बाबत उपरथी चोक्कस अनुमान थाय छे के ते बन्नेना मतोनी वच्चे केटलुंक साम्य होवुं ज जोईए. आगळ पृ० २६ उपरनी टीपमां में जणाव्युं छे के 'सव्वे सत्ता, सव्वे पाणा, सव्वे भूता, सव्वे जीवा' ना स्वरूपनुं वर्णन गोसाल तेम ज जैनोनी वच्चे समान छे. अने टीकामां जणावेल एकेंद्रिय द्विन्द्रियादि वर्गरूपे प्राणिओना विभागो के जे जैन ग्रंथोमां घणा ज साधारण छे, तेवा विभागोनो गोसाले पण उपयोग कर्यो छे. चमत्कारी अने लगभग असत्याभासरूप छ लेश्यानो जैनसिद्धान्त,—जेने पहेली ज वखत दृष्टिगोचर कर्यानुं मान प्रो० ल्यूमनने घटे छे—गोसाले करेला सघळी मनुष्यजाति माटेना छ वर्गोना विभाग साथे संपूर्ण रीते मळतो आवे छे. परंतु आ बाबतना संबंधमां मारुं एवुं मानवुं छे के जैनोए मूळ आ विचार आजीविको पासेथी लीधो हतो, अने पाछळथी पोताना बीजा बधा सिद्धान्तोनी साथे ते संगत बने तेवी रीते तेमां फेरफार कर्यो हतो. आचार विषयक सघळा नियमोना संबंधमां, जेटला प्रमाणो उपलब्ध थाय छे ते उपरथी, लगभग सिद्ध थाय छे के महावीरे अधिक कठोर नियमो गोसालना लीधा हता. कारण के उत्तराध्ययन २३, १३ (पृ० १२१) मां जणाव्या प्रमाणे पार्श्वना धर्ममां निर्ग्रंथोने नीचे अने उपरना भागमां एकेक वस्त्र पेहरवानी छूट हती. परंतु वर्धमानना धर्ममां कपडानो स्पष्ट निषेध करवामां आव्यो हतो. नग्न साधु माटे जैन सूत्रोमां अनेक स्थळे मळी आवतो शब्द 'अचेलक'[1] छे जेनो शब्दार्थ 'वस्त्र रहित' एवो थाय छे. बौद्धो अचेलको अने निर्ग्रंथोने भिन्न भिन्न माने छे. उदाहरण तरीके धम्मपद[2] उपरनी बुद्धघोषकृत टीकामां केटलाक भिक्षुओना संबंधमां जणावेलुं छे के, तेओ अचेलको करतां निर्ग्रंथोने वधारे पसंद करता हता. कारण के अचेलको तद्दन नग्न रहे छे (सब्बसो अपटिच्छन्ना) परन्तु निर्ग्रन्थो कोई जातनुं टूंकुं आवरण[3] राखे छे; जेने ते भिक्षुओ खोटी रीते 'लज्जानी खातर' मानता हता. अचेलक शब्दद्वारा बौद्धो मक्खलि गोसाल अने तेनी पूर्वे थई गएला किस संकिच अने नन्द वच्छना अनुयायिओने सूचवे छे; अने तेओना धार्मिक आचारोनुं वर्णन मज्झिमनिकायमां संगृहीत राख्युं छे. तेमां ते स्थले निगण्ठपुत्त सच्चक—जेनी ओळखाण आपणने उपर थई गएली छे

१ बीजो एक शब्द 'जिनकल्पिक' छे जेनो अर्थ 'जिन जेवो आचार पाळनार' थई शके. श्वेतांबरो कहे छे के जिनकल्पने बदले प्राचीन काळमां ज स्थविरकल्प स्थिर करवामां आव्यो हतो जेनी अंदर वस्त्र राखवानी छूट आपवामां आवी हती.

१ जुओ फुसबोलनी आवृत्ति, पृ. ३९८.

२ मूळमां आवेला 'सेसकं पुरिमसमप्पिता व पटिच्छादेन्ति' ए शब्दो बराबर स्पष्ट थता नथी. परंतु तेमां जोवामां आवतो विरोध निशंकरीते ए ज भावार्थ सूचवे छे. पाली शब्द 'सेसक' ते मारा धारवा प्रमाणे संस्कृत 'शिश्नक' नुं रूप छे आ जो खरूं होय तो उपरना शब्दोनुं भाषान्तर नीचे प्रमाणे थई शके 'तेओ (शरीरना) आगळा भाग उपर (कपडुं) पेहेरी गुह्यांगने ढांके छे

Aho ! Shrutgyanam

ते—कायभावना एटले शारीरिक पवित्रतानो अचेलकोना आचारने उद्देशीने अर्थ समजावे छे. सच्चकना वर्णनमांनी केटलीक विगतो टीकाना अभावे नहीं समजी शकाय तेवी दुर्बोध छे. परन्तु केटलीक तो तद्दन स्पष्ट छे; अने ते, केटलाक प्रसिद्ध जैन आचारो साथे संपूर्ण सादृश्य धरावे छे. दाखला तरीके अचेलको पण जैन साधुओनी माफक भोजननुं आमन्त्रण स्वीकारता नथी. तेओने माटे अभिहत अथवा उद्दिस्सकत अन्न लेवानो निषेध छे. आ बन्ने शब्दो जैनोना अभ्याहृत अने औद्देशिक शब्दो (जुओ पृ० १३२ टिप्पण) समान होय तेम दरेक रीते संभवित छे. वळी तेओने मांस अने मदिरा लेवानी छूट नथी. ' केटलाक मात्र एक ज घरे भिक्षा लेवा जाय छे अने मात्र एक ज ग्रास खोराक ले छे. केटलाक वधारेमां वधारे सात घेर भिक्षा माटे जाय छे; केटलाक एक ज वार आपेलुं अन्न लईने रहे छे; केटलाक वधारेमां वधारे सात वार सुधी आपेलुं लईने रहे छे ' आ प्रकारना ज जैन साधुओना केटलाक आचारो कल्पसूत्रनी सामाचारीमां वर्णवेला छे (२६, भाग १, पृ० ३००; अने आ ग्रंथना पृ० १७६; गाथाओ १५अने १९). नीचे वर्णवेलो अचेलकोनो आचार अने जैनोनो आचार बरावर एक ज छे एम स्पष्ट जणाय छे. 'केटलाक हमेश एक ज वखत भोजन करे छे अने केटलाक बे दिवसमां एक ज वखत भोजन करे छे,[1] इत्यादि; अने ए रीते वधता क्रमे केटलाक ठेठ एक पखवाडीए एक वार भोजन ले छे. ' अचेलकोना आवा बधा नियमो अने जैनोना नियमो या तो लगभग एक ज छे अगर तो अतिशय मळता छे. अने आ प्रकारनुं साम्य जोवामां आवतुं होवा छतां, तथा सच्चक एक निगण्ठपुत्त गणातो होवाना लीधे तेमना धार्मिक आचारोथी ते परिचित होवा छतां, कायभावनाना आदर्श तरीके निर्ग्रन्थोनो उल्लेख करतो नथी ते खरेखर आश्चर्यजनक लागे छे. परन्तु आ आश्चर्यजनक बाबतने नीचेनी कल्पना द्वारा आपणे सहेलाईथी समजावी शकीए छीए, अने ते एवी रीते के बौद्ध ग्रंथोमां बहुधा जे असलना प्राचीन निर्ग्रन्थोनी बाबतना उल्लेखो मळी आवे छे, ते (निर्ग्रन्थो) जैन समाजना जे एक वर्गे महावीरना उग्र व्रतोनो स्वीकार कर्यो हतो तेओ नहीं, परन्तु महावीरना मतना विरोधी न बनतां जेओ ते संयुक्त संप्रदायमां रहीने पण पोताना प्राचीन संप्रदायना केटलाक खास आचारोने वळगी रह्या हता ते प्रकारना पार्श्वना अनुयायिओ हता. आ प्रकारना केटलाक कठोर नियमो के जे प्राचीन धर्मना अंगभूत मनाता न हता अने जेमने महावीरे ज दाखल करेला हता, ते संभवित रीते तेमणे गोसालना अचेलक अथवा आजीविक नामे प्रसिद्ध अनुयायिओना लीधा हता. अने आवुं कारण ते तेओए (महावीरे) जे छ वर्ष सुधी गोसालनी साथे अत्यंत निकट सहचर तरीके रही तपश्चर्या करी हती, ते छे. आ प्रमाणे आजीविकोना केटलाक धार्मिक विचारो अने आचारोनो स्वीकार करवामां महावीरनो आशय गोसाल अने तेना अनुयायिओने पोताना पक्षमां लेवानो होय एम लागे छे; अने केटलाक समय सुधी तो आ उद्देश सफळ पण थयो होय. परन्तु आखरे बन्ने नेताओनी वच्चे मतभेद थयो हतो, के जेनुं कारण घणुं करीने ए प्रश्न हतो के आ संयुक्त संप्रदायनो नेता कोण बने. गोसालने साथे थएला आ टुंक समयना सम्बन्धथी स्पष्टरीते महावीरनी पदवी घणी सुस्थित बनी हती; परन्तु गोसाले, जैन हकिकतो अनुसार, पोतानी प्रतिष्ठा गुमावी हती अने आखरे तेना शोकपूर्ण अवसानथी तेना संप्रदायना भाविने सखत फटको लाग्यो.

आपणे जो के ते बधुं साबीत न करी शकीए, परन्तु महावीरे अन्य संप्रदायोमांथी घणुं लीधुं छे ए वात निःसंशय छे. जैन धर्म यथार्थमां एक संस्थिति रूप दर्शन नहीं होवाथी तेमां नवा मतो तथा सिद्धान्तोना उमेरा घणा सहेलाईथी थई शके तेम हतुं. जे जे संप्रदाय अगर

---

१ आ प्रकारना उपवासोने जैनो चउत्थभत्त छट्ठभत्त इत्यादि नामो आपे छे (जुओ उ. त. ल्युमनसंपादित औपपातिक सूत्र ३० I A); अने आ उपवास करनारा साधुओ अनुक्रमे चउत्थभत्तिय, छट्ठभत्तिय, इत्यादि नामोथी ओळखाय छे. (जुओ दा. त. कल्पसूत्र सामाचारी २१.)

Aho ! Shrutgyanam

हो तेना भागो महावीरनी सफल कार्यदक्षताने[1] लईने जैनधर्ममां आवता गया ते सघळा संप्रदायोना केटलाक प्रीतिपात्र विचारो तेम ज तेमना प्रिय गुरुओ, जेओने तेओ चक्रवर्ती अथवा तीर्थंकरना नामे ओळखता हता, ते सघळां दाखल थई गयां होय तो तेमां नवाई नथी. अलबत् आ एक मात्र मारूं अनुमान छे. परन्तु आ अनुमाननी मददथी आपणे जैनोनी आचार्यो साधुओ विषयक विलक्षण परंपरानुं उत्पत्ति कारण समजी शकीए छीए. प्रत्यक्ष प्रमाणनो ज्यां सर्वथा अभाव होय त्यां आपणने अनुमानो उपर ज आधार राखवो पडे छे; अने ए अनुमानोमां पण जे अनुमान विशेष सत्य—सांभळतां खरूं लागे एवुं—होय ते स्वीकारवा योग्य बने छे. फक्त आ बाबत ने छोडीने बाकीनी जे जे बाबतो आ प्रस्तावनाना प्रारंभनां पानाओमां में मारी कल्पनानुरुपे रजु करेली छे ते सघळी आना करतां वधारे प्रमाणभूत छे, ए हुं अत्रे खास जणावी दउं छुं. ए बधा विचारोमां मारा कोई पण कथनथी जैन परंपरागत कथन के—जे लेखी पुरावाओना अभावमां आपणने एक मात्र ते ज मार्गदर्शक बने छे—तेने आघात पहोंचतो नथी. अने बीजुं, मारी एके कल्पना पण एवी नथी के जे ते समयनी परिस्थिति अनुसार असंभवित लागे. जैन धर्मना प्राचीन इतिहासनी रचनामां मुख्य स्थान रोकनार जे, ए एक हकीकत छे के, महावीरना समयमां पार्श्वनाथना शिष्यो हयाती धरावता हता अने जेनो निर्देश बतावती परंपरा पण विद्यमान होई तेनी सत्यता पण अत्यारना सघळा विद्वानो एके अवाजे स्वीकारे छे, तेनो ज में अहिं उपयोग कर्यो छे.

हवे आ रीते जो जैनधर्म ए एक प्राचीन कालथी चालतो आवतो धर्म होय अने महावीर तेम ज बुद्ध करतां वधारे जुनो होय तो तेना तत्त्वज्ञानना स्वरूपमां पण कांईक प्राचीनतानां चिह्नो देखावां जोईए. आवुं एक चिह्न ए धर्ममां खास मळी आवे छे, अने ते तेनो, सघळी वस्तु चैतन्य युक्त छे, एम बतावतो सचेतनवाद छे. ते वाद जणावे छे के मात्र वनस्पतिमां ज नहीं परन्तु पृथ्वी, पाणी, अग्नि, अने वायुना कणोमां पण आत्मतत्त्व रहेलुं छे. मानवजातिशास्त्र (Ethnology) आपणने एम शीखवे छे के जंगली लोकोनी तत्त्वज्ञान, विषयक सघळी मान्यताओ सचेतनवादमूलक होय छे. आ सचेतनवाद जेम जेम जनसंस्कृति वधती जाय छे, तेम तेम शुद्ध मनुष्यत्वरूपमां ज मात्र परिणत थतो जाय छे. आथी करीने जो जैन धर्मनुं नीतिशास्त्र मोटे भागे आ प्राचीन सचेतनवाद—मूलक होय तो जैनधर्मनी पहेल वहेली उत्पत्तिना समये ते सचेतनवादनो सिद्धांत हिन्दुस्ताननी प्रजाना मोटा भागोमां विस्तृतरुपे विद्यमान होवो जोईए. आ परिस्थिति ते अति प्राचीन समयनी होई शके के जे वखते हिन्दुस्तानना मनुष्योना मन उपर उंचा प्रकारनी धार्मिक मान्यताओए अने पूजानी पद्धतिओए असर करी न होती.

जैन धर्मनी प्राचीनतानुं बीजुं चिन्ह ते तेनी वेदान्त अने सांख्य जेवां बे सौथी प्राचीन ब्राह्मण दर्शनोनी साथे रहेली सिद्धांतविषयक समानता छे. ते प्राचीन कालमां तत्त्वज्ञानना (Metaphysics) विकास क्रममां गुण नामना पदार्थनो जेवो जोईए तेवो खुलो अने स्पष्ट ख्याल थई चूक्यो ह न हतो; परन्तु ते पदार्थ द्रव्यपदार्थमांथी उत्क्रांत थई रह्यो हतो एम लागे छे. जे जे वस्तुने आपणे गुण तरीके ओळखीए छीए ते, ते वखते मूलथी वारंवार द्रव्य तरीके मनाई जती अने केटलीक वखते द्रव्य साथे तेनुं मिश्रण पण थई जतुं. वेदान्तमां परब्रह्मने शुद्ध सत्ता, ज्ञान, अने आनन्दरूप स्वाभाविक गुणथी सम्पन्न नहीं, परंतु सत्, चित्, अने आनंदस्वरूप ज मानवामां आव्युं छे. सांख्यमां पुरुष अथवा आत्माना स्वभावनुं वर्णन करती वखते तेने ज्ञान अथवा तेजोरूप बताववामां आव्यों छे. अने जो के सत्त्व, रजस्, अने तमस्,

---

१ खरेखर महावीर तेमना पोताना मार्गमां एक महान् व्यक्ति हशे, तेम ज तेमना समकालीन पुरुषोमां ते एक उत्तम प्रकारना नेता पण हशे, तेमां शक नथी. तेमनी तीर्थंकर पद—प्राप्तिमां जेटली अंशे, तेमणे पोताना मतनो प्रचार करवाथी संपादित करेलो तेमनो यश कारणभूत थयो छे तेटले बधे अंशे तेमनुं पवित्र जीवन कारणभूत न होतुं थयुं.

ए त्रण पदार्थोने गुणरूपे गणाव्या छे खरा, परंतु गुणनुं जे लक्षण आपणे स्वीकारीए छीए ते अनुसार ते गुणो थई शकता नथी. प्रो० गार्बेना जणाव्या प्रमाणे वास्तवमां ते मूळ प्रकृतिना अवयवो ज छे. आ ज प्रकारना सिद्धांतने लईने सामान्य रीते जैनोना प्राचीन सूत्रोमां द्रव्य अने तेना पर्यायोनो ज मात्र उल्लेख करेलो होय छे. सूत्रोमां गुण पदार्थनो ज्यारे कोईक ज ठेकाणे उल्लेख थएलो मळी आवे छे त्यारे पाछळना बीजा बधा ग्रंथोमां ते नियमित रीते वर्णवेलो होय छे. आ उपरथी एम स्पष्ट जणाय छे के ते पाछळना काळमां स्वीकारवामां आव्यो होवो जोईए. अने तेनुं कारण न्याय वैशेषिक दर्शनोना तत्त्वज्ञान अने साहित्यनी जे असर धीमे धीमे भारतवर्षना वैज्ञानिक विचारो उपर थती हती ते ज होवुं जोईए. पर्याय एटले विकास अगर अवस्थान्तरनी मान्यतामां गुण जेवा स्वतंत्र पदार्थने स्थान ज मळी शके तेम नथी. कारण के द्रव्य दरेक काळमां तेना पर्यायना रुपमां ज रहे छे, अने तेथी करीने पर्याय गुणात्मक ज होय छे; अर्थात् पर्यायोनी अंदर गुणोनो समावेश थई ज जाय छे. अने आ ज विचार प्राचीन सूत्रोमां लीधेलो होय तेम जणाय छे. अन्य एक उदाहरण, जैनोए जे अद्रव्यत्वयुक्त पदार्थ उपर द्रव्यत्वनो आरोप करी, वास्तविक रीते जे वस्तु गुणना वर्गमां आवी जाय छे तेवी ' धर्म ' अने 'अधर्म' ए बे वस्तुओ, विषयक छे. आ बे वस्तुओने जैनोए द्रव्य तरीके वर्णवी छे के जेनी साथे जीवनो संबंध रहेलो होय छे.[1] आ द्रव्योने आकाशनी साथे ज संपूर्ण लोक व्यापी मानेला छे. वैशेषिको पण आकाशने द्रव्य माने छे. जो ते समयमां द्रव्य अने गुण ए बंने पदार्थोनुं भिन्न भिन्न वर्गीकरण थयुं होत अने बन्ने अन्योन्याश्रित मनाता होत, के जेम वैशेषिको माने छे, (गुणाश्रयं द्रव्यम् अने द्रव्यान्तर्वर्ती गुणः) तो उपर जणावेल गोटाळा भरेला विचारो जैनोए कदापि स्वीकार्या नहीं होत.

१ आ कल्पना मूळ वैदिक हिन्दुओनी हती, तेम ओल्डनबर्गे पोताना Die Religion des veda नामना पुस्तकना पृ० २१७ उपर जणाव्युं छे.

उपरोक्त विवेचन उपरथी स्पष्ट जोई शकाय छे के वैशेषिक दर्शन साथे जैनोना केटलाक विचारो मळता आवता होवाथी जैनधर्मनी उत्पत्ति तेना पछी थई छे, एवो जे मत डॉ० भाण्डारकरे[2] उपस्थित करेलो छे तेनी साथे हुं समत थई शकुं तेम नथी. वैशेषिक दर्शनना स्वरुपनुं संक्षिप्त वर्णन नीचे प्रमाणे आपी शकाय के— संस्कृत भाषा बोलनार तथा समजनार बधा माणसोए मनन करेला सर्वसाधारण विचारोनी जे पद्धतिसर व्यवस्था अने तेनुं जे तात्विक प्रतिपादन — निरूपण, ए ज वैशेषिक दर्शन छे. आ प्रकारनुं पदार्थविज्ञानशास्त्र प्राप्त करवानुं काम तो घणा प्राचीन काळथी शुरु थयुं हशे अने कणादना सूत्रोमां जेवुं ए शास्त्र संपूर्ण रूपे प्रतिपादित थयुं छे तेवुं तैयार थता पहेलां मनुष्योने घणी सदीओ सुधी धीरजथी मानसिक परिश्रम उठाववो पड्यो हशे; तेम ज तत्त्वज्ञानविषयक सतत चर्चाओ चलाववी पडी हशे. आथी वैशेषिक दर्शननी आदि अने अंतिम स्थपनानी वच्चेना काळमां जो वैशेषिक विचारो लई लेवानो खोटो या खरो आरोप जैनो उपर मूकवामां आवे तो, ते कदाच तेम संभवी शके खरूं. आ स्थळे बीजी एक बाबतनो उल्लेख करवो अस्थाने नहीं गणाय, अने ते ए छे के जे मुद्दाओ हुं अत्र चर्चवा इच्छु छुं ते मुद्दाओने लईने डॉ० भाण्डारकरनो एवो मत थएलो छे के 'जैनोना विचारो ते एक बाजु सांख्य अने वेदान्तदर्शन अने बीजी बाजु वैशेषिक दर्शन एम बे पक्षनी वच्चेना समन्वयना आकारना छे. ' परन्तु प्रस्तुत चर्चाने माटे तो ते बन्ने प्रकारना विचारो सरखा छेः—एटले के साक्षात् लेवुं अगर बे प्रकारना विरुद्ध विचारोनुं तडजोड करवुं, ए एक ज छे. उपरोक्त मुद्दाओ नीचे प्रमाणे छेः— (१) जैन दर्शन अने वैशेषिक दर्शन ए बन्ने क्रियावादी छे. अर्थात् ते बन्नेनुं मानवुं छे के आत्मा उपर कर्म, कषायो तथा वासनादिनी साक्षात् असर थाय छे. (२) बन्ने दर्शनो असत्कार्यना सिद्धान्तने माने छे; एटले के तेमना मते कार्य ते तेना उपादान कारणथी भिन्न छे. परन्तु

२ जुओ तेमनो रीपोर्ट, सन १८८३—८४, पृ. १०१

Aho ! Shrutgyanam

वेदान्त अने सांख्य बन्ने सत्कार्य वादने माने छेः अर्थात् कार्य कारणने भिन्न माने छे. (३) ए बन्ने दर्शनोमां गुण अने द्रव्यनो पृथक् विभाग थएलो छे. ए छेल्ली बाबत तो आपणे उपर चर्ची गया छीए; तेथी हवे आपणे प्रथम बे मुद्दाओना संबंधमां विचार करवानो रह्यो छे. (१) अने (२) मां जे मन्तव्योनुं निरुपण करेलुं छे. ते व्यावहारिक ज्ञान–साधारण बुद्धिना विचारो छे. (अर्थात् सहु कोई समजी शके तेवा छे) कारण के आपणा उपर वासनाओनी साक्षात् असर थाय छे ज, तेम ज कारणथी कार्य भिन्न छे ते पण आपणा अनुभवनी बहारनी वात नथी. उ.त. बीज अने वृक्ष ए बन्ने परस्पर भिन्न छे, एम दरेक विवेकी माणस जाणे छे; अने ते मात्र सामान्य अनुभवनो विषय छे तेम पण लाग्या विना नहीं रहे. आवा विचारोने अमुक दर्शनना खास लक्षण रूपे मानी शकाय ज नहीं; अने एक बीजा मतोमां आवा विचारो समानरूपे जोवामां आवे ते उपरथी ते, एके बीजाना मतमांथी लीधेला छे तेम पण कही शकाय नहीं. परंतु जो बे भिन्न दर्शनोमां परस्पर विपरीत विचारदर्शी एक ज सिद्धान्त आव्यो होय तो ते बाबत अवश्य विचारणीय होय छे. आवो सिद्धान्त मूळ तो ते एक ज दर्शनमांथी उत्पन्न थएलो होय छे अने ते तेमां सुप्रतिष्ठित थया पछी ज अन्यद्वारा स्वीकृत थाय छे. दिक् अने आकाश ए बन्ने भिन्न द्रव्यो छे ए जातनो वैशेषिकोनो खास स्वतंत्र तर्कसिद्ध सिद्धांत छे. ते जैन दर्शनमां बिलकुल देखातो नथी. वेदांत अने सांख्य जेवा अधिक प्राचीन दर्शनोमां तथा जैन दर्शनमां आकाश अने दिक् वच्चे बिलकुल भेद करवामां आव्यो नथी. ए दर्शनोमां एकलुं आकाश ज बन्नेनुं प्रयोजन सारे छे.

वैशेषिक अने जैन दर्शननी वच्चे मूल सिद्धान्तोमां भेदसूचक एवां केटलाक उदाहरणो नीचे प्रमाणे छे. पहेलाना मते आत्माओ अनन्त अने सर्वव्यापी (विभु) छे; परन्तु बीजाना (जैनोना) मते तेओ मर्यादित परिमाणवाळा छे. वैशेषिको धर्म अने अधर्मने आत्माना गुणो माने छे, परन्तु उपर जणाव्युं तेम जैनो ते बन्नेने एक जातना द्रव्यो माने छे. एक बाबतमां, एक विरुद्ध वैशेषिक विचार अने तद्भिन्न जैन सिद्धान्त वच्चे केटलुंक सादृश्य जोवामां आवे छे. वैशेषिक मतमां चार प्रकारना शरीरो मानेलां छे—पार्थिव शरीर जेवुं के मनुष्य पशु आदीनुं, जलात्मक शरीर जेम वरुणनी सृष्टिमां छे, आग्नेय शरीर जेम अग्निनी सृष्टिमां छे, अने वायवीय शरीर जेम वायुनी सृष्टिमां मळी आवे छे. आ विचित्र विचार साथे सदृशता धरावनारो जैनदर्शनमां पण एक विचार छे. जैनो पृथ्वीकाय, अप्काय, तेजस्काय, अने वायुकाय; एम ४ काय माने छे. आ ४ मौलिक पदार्थो के जे मूळ तत्त्वो छे अथवा तो तेना पण सूक्ष्मभागो छे, तेनी अंदर एक एक विशिष्ट आत्मा रहेलो छे, एम तेओ माने छे. आ जड-चैतन्यवादनो सिद्धान्त उपर जणाव्या प्रमाणे असल सचेतनवादनुं परिणाम छे. वैशेषिकोनो एतद्विषयक विचार जो के मूळ एक ज विचार प्रवाहमांथी उत्पन्न थएलो छे खरो, परन्तु तेमणे ते विचार लौकिक पुराणोना अनुरूपे गोठवेलो छे. आ बन्नेमां जैनमत वधारे प्राचीन छे अने ते वैशेषिक दर्शनना चार प्रकारना शरीर वाळा मतना करतां पण तत्त्वज्ञानना वधारे पुरातन विकासक्रमना समयनो छे. मारा अभिप्राय मुजब वैशेषिक अने जैन दर्शननी वच्चे एवो कोई पण संबंध ज न हतो के जेथी एक दर्शने बीजामांथी विचारो लीधा छे, एम स्थापित करी शकाय. छतां पण हुं एम कबूल करूं छुं के ए बे दर्शनो वचे केटलुंक विचारसादृश्य अवश्य रहेलुं छे. वेदान्त अने सांख्यना मूळ तत्त्वभूत विचारो जैन विचारोथी तद्दन विरुद्ध छे; अने तेथी करीने जैनो पोताना सिद्धान्तने कांई पण आंच आव्या दीधा सिवाय तेमना विचारो स्वीकारी शके ज नहीं. परन्तु वैशेषिक ए एवा प्रकारनुं दर्शन छे के जेथी जैन सिद्धान्त पोताना मतने आघात पहोंचाड्या सिवाय केटलीक हद सुधी तेनी साथे संमत थई शके छे. अने आथी ज न्याय–वैशेषिक दर्शन उपरना ग्रंथकारोमां जैनोनां पण नामो जोवामां आवे तो तेमां नवाई पामवा जेवुं नथी. जैनो तो आनाथी पण आगळ वधीने त्यां

Aho ! Shrutgyanam

सुधी जणावे छे के वैशेषिक दर्शन स्थापनार तेमना मत-नो ज एक कौशिक गोत्रीय छलुय रोहगुप्त नामनो निन्हव हतो जेणे वि. सं. ५४४ (इ. स. १८) मां त्रैराशिक मत नामनो छठ्ठो नैन्हविक संप्रदाय स्थाप्यो हतो. आ दर्शननुं जे वर्णन आवश्यक सूत्र VV. 77-83 मां आपेलुं छे ते वांचवाथी जणाय छे के ते सघळुं वर्णन कणादना वैशेषिक दर्शनमांथी लीधेलुं छे. कारण के तेमां (सात नाहीं पण) छ पदार्थो अने तेना पेटा भेदोनुं वर्णन आपेलुं छे; अने आ उपरान्त गुणना वर्गमां (२४ नहीं परन्तु) १७ वस्तुओनुं वर्णन करवामां आवेलुं छे; जे वैशेषिक दर्शन १, १, मां आपेली हकिकत साथे बराबर मळी रहे छे.

मारुं मानवुं छे के, जैनो अनेक बीजी बाबतोनी माफक, हिंदुस्तानना प्रत्येक प्रसिद्ध पुरुषने पोताना धर्मना इतिहास साथे जोडी देवानी बाबतमां पोताने घटे तेना करतां अधिक माननो हक्क करे छे. उपरोक्त जैन दंतकथाने असत्य मानवामां मारां कारणो नीचे मुजब छे:—वैशेषिक दर्शन वास्तवमां एक आस्तिक ब्राह्मण दर्शन मनाय छे अने ते मुख्यत्वे करीने स्वधर्मचुस्त हिन्दुओ द्वारा विकासित थयुं छे. आम होवाथी तेमणे सूत्रकारनुं जे नाम तथा काश्यप एवुं जे गोत्र बताव्युं छे ते संबंधमां तेओ असत्यालाप करे छे, एवी शंका करवानुं जराए कारण जणातुं नथी. अने बीजुं ए के समग्र ब्राह्मण साहित्यमां एवो क्यांए उल्लेख मळी आवतो नथी के वैशेषिक दर्शनना कर्तानुं खरूं नाम रोहगुप्त हतुं तथा तेनुं गोत्र कौशिक हतुं. तेम ज रोहगुप्त अने कणाद ए बन्ने नामो एक ज व्यक्तिनां होय तेम पण मानी शकाय नहीं, कारण के तेओना गोत्र स्पष्ट भिन्न भिन्न जोवामां आवे छे. 'कणादनो अनुयायी ते काणाद' ए शब्द, व्युत्पत्तिशास्त्रना अनुसारे काक-भक्षक एटले घुवड वाचक छे; अने एथी ते दर्शननुं उपहासात्मक नाम औलूक्य दर्शन पडेलुं छे. रोहगुप्तनुं बीजुं नाम छुलुय छे, जेनुं संस्कृतरुप षडुलूक[2] थाय छे. तेमां घुवड अने घणुं करीने काणादोनुं सूचन थाय छे ए खरुं छे, परन्तु उलूक शब्द जैनोए रोहगुप्तना गोत्रने अर्थात् कौशिकने[3] उद्देशीने लखेलो होय तेम जणाय छे. कौशिक शब्दनो अर्थ पण घुवड ज थाय छे. परन्तु आ बाबतमां जैनोनी दंतकथा करतां सर्वब्राम्हणसंमत परंपरा वधारे पसंद करवा लायक होवाथी, आपणे जैनोना परंपरागत कथनने एवी रीते समजावी शकीए के रोहगुप्ते आ वैशेषिक दर्शनने नवुं प्ररूप्युं न होतुं परंतु पोताना नैन्हविक विचारोने समर्थित करवा वैशेषिक मतनो मात्र अंगीकार कर्यो हतो.

आ भागमां भाषांतरित करेलां उत्तराध्ययन अने सूत्रकृतांग सूत्रना विषयमां प्रो. वेबरे Indische Studien, Vol. XVI. p 259ff अने Vol. XVII, p 43ff. मां जे लख्युं छे ते उपरान्त मारे कांई विशेष उमेरवानुं नथी. आ बन्नेमां, सूत्रकृतांग ए बीजुं अंग गणाय छे अने जैन आगमोमां अंगोने प्रथम—प्रधान—स्थान आपवामां आवे छे,तेथी ते उत्तराध्ययन सूत्र, के जे प्रथम मूळ सूत्र गणातुं होई सिद्धान्तमां तेने छेल्लुं स्थान मळेलुं छे, तेना करतां वधारे प्राचीन छे. चोथा अंगमां आपेला सिद्धान्तोना सार उपरथी जणाय छे के सूत्रकृतांगनो मुख्य उद्देश नवीन साधुओने विरोधी आचार्योना पाखंडी मतोथी संरक्षित राखवानो अने ते रीते सम्यग् दर्शनमां स्थिर बनावी तेमने परमश्रेय प्राप्त कराववानो छे. आ हकिकत एकंदर साची छे, परन्तु सर्वांगपूर्ण नथी; ए आपणे आ पुस्तकनी शुरुआतमां आपेली विषय सूचि उपरथी जोई शकीए छीए. ग्रन्थनी शुरुआतमां विरोधी मतोनुं निराकरण आपवामां आवेलुं छे अने तेनो ते ज विषय फरीथी अधिक विस्तार साथे बीजा श्रुतस्कंधना प्रथम अध्ययनमां चर्चवामां आवेलो छे. प्रथम श्रुतस्कं-

१ जुओ, कल्पसूत्रनी मारी आवृत्तिनुं पृष्ठ. ११९

२ अक्षरशः—छ घुवड. आ शब्दनो पहेलो 'छ' शब्द वैशेषिक दर्शनना छ पदार्थोनो सूचक छे.

३ भाग १, पृ० २९०; परन्तु प्रो. ल्युमेने l. c. p. 121. उपर भाषान्तर करेली एक दंतकथामां तेनुं गोत्र 'छऊलू' तरीके लख्युं छे.

Aho ! Shrutgyanam

धर्मां आनी पछी पवित्र जीवन गाळवा संबंधी, साधुना परिषहो संबंधी, जेमां खास करीने तेमना मार्गमां बतावबामां आवतां प्रलोभनो तथा असाधुजनो तरफथी मळता शारीरिक कष्टो संबंधी, तथा धर्मना आदर्शभूत महावीरनी स्तुति विषयक अध्ययनो आवेलां छे तेनी पछी बीजा पण तेवा ज विषयोपर अध्ययनो छे. बीजो श्रुतस्कंध जे लगभग संपूर्ण गद्यमां ज लखाएलो छे तेमां पण आवा ज प्रकारना विषयोनुं निरूपण करेलुं छे. परन्तु तेना विविध भागो वच्चे कोई पण देखीतो संबंध जोवामां आवतो नथी. आ उपरथी ते स्कन्ध अनुपूर्तिरूपे गणी शकाय अने तेथी ते पाछळना कालमां प्रथम स्कंधमां थएलो एक उमेरो छे. प्रथम स्कन्धनो उद्देश स्पष्ट रीते जुवान साधुओने मार्ग बताववानो छे.[1] तेनी रचना शैली पण आ ज प्रयोजनने उपकारक थाय तेवी राखवामां आवी छे. तेमां घणा छंदोनो पण उपयोग करवामां आव्यो छे, जेथी तेमां कवित्वनो पण समावेश थएलो छे एम मानवुं जोईए. आमांथी केटलीक गाथाओनुं रूप कृत्रिम लागे छे अने ते उपरथी ए ग्रंथ एक ज कर्तानो रचेलो होय तेम आपणे मानी शकीए छीए. बीजो स्कन्ध प्रथम स्कन्धमां चर्चेला विषयो उपर लखेला निबन्धोनो एक समूह होय एम जणाय छे.

उत्तराध्ययन अने सूत्रकृतांग बन्ने सूत्रोनो उद्देश तथा तेमां चर्चाएला केटलाक विषयो परस्पर समान छे, परंतु सूत्रकृतांगना मूळ भाग करतां उत्तराध्ययन वधारे लांबुं छे तेम ज ते सूत्रनी योजना पण वधारे कुशळतापूर्वक करवामां आवी छे. तेनो मुख्य आशय नविन साधुने तेनी मुख्य फरजोनो बोध आपवानो, तथा विधि अने उदाहरणो द्वारा यति जीवननी प्रशंसा करवानो, तेना दीक्षाकाळ दरम्यान आवतां विघ्नो सामे चेतवणी आपवानो, तथा केटलुंक तात्त्विक ज्ञान आपवानो पण छे पाखंडीमतोनुं घणाक ठेकाणे सूचन मात्र करवामां आव्युं छे परंतु तेमने विस्तृत रीते चर्चवामां आव्या नथी. ते दिशामांथी आवतां विघ्नो जेम जेम वखत जवा मांड्यो तेम तेम स्पष्ट रीते ओछा थता गया अने जैनधर्मनी संस्थाओ सुदृढ रीते स्थिर थती गई. नविन साधुने जीवाजीविनुं बराबर ज्ञान वधारे उपयोगी मनातुं होय तेम लागे छे. कारण के आ विषय उपर एक मोटुं अध्ययन आ ग्रंथना अंते आपवामां आव्युं छे. जो के आ आखा ग्रंथमां आवेला जुदा जुदा बधां अध्ययनोनी पसंदगी तथा गोठवणीमां कांईक योजना जेवी देखाय छे खरी परंतु ते सघळां अध्ययनो एक ज कर्ताना रचेलां छे के लेखी अगर मौखिक परंपरागत साहित्यमांथी चूंटी काढेलां छे, ए एक विचारणयि बाबत छे. कारण के आवा प्रकारनुं साहित्य जैन संप्रदायमां, तेम ज अन्य संप्रदायोमां पण, धर्मशास्त्र ग्रंथोनी रचनानी पूर्वे वर्तमान होवुं ज जोईए. मारुं एम मानवुं छे के आ अध्ययनो प्राचीन परंपरागत साहित्यमांथी ज उद्धृत करी लीधेलां छे. कारण के तेनी वर्णनशैली तथा भाषाशैली परस्पर भिन्न होय तेम स्पष्ट जणाई आवे छे. अने ते बाबत एक ज कर्तानी कल्पना साथे संगत थई शकती नथी; अने आम मानवानुं बीजुं कारण ए छे के वर्तमान सिद्धांतोमां घणा ग्रंथो आ ज प्रकारे उत्पन्न थया छे; एम मान्या विना छुटको नथी. कया समयमां आ प्रस्तुत ग्रंथो रचवामां आव्या अथवा तो वर्तमान स्वरूपमां मुकवामां आव्या ते प्रश्नने संतोषदायक निर्णय करी शकाय तेम नथी. परंतु आ ग्रंथनो वाचनार स्वाभाविक रीते ज आ बाबतमां भाषांतरकारनो अभिप्राय जाणवानी आशा राखतो होवाथी, हुं अत्यंत संकोचपूर्वक मारो मत जाहेर करुं छुं के, सिद्धान्त ग्रंथोना घणा खरा भागो, प्रकरणो तथा आलापको खरेखर जुनां छे. अंगोनुं आलेखन प्राचीन काळमां (परंपरानुसार भद्रबाहुना समयमां) थयुं हतुं; सिद्धान्तना अन्य ग्रंथो काळक्रमे घणुं करीने ई. स. पूर्वेनी पहेली शताद्बिमां संगृहित थया हता. परंतु देवर्धी गणिए सिद्धान्तोनो आ छेल्ली आवृत्ति तैयार करी (वि. सं. ९८० ई. स. ४५४) त्यां सुधी तेमां उमेराओ तथा फेरफारो थता गया हता.

उत्तराध्ययन अने सूत्रकृतांगनुं भाषान्तर, में, मने मळेली सौथी प्राचीन टीकाओमां स्वीकारेला मूळना आधारे करेलुं छे. आ मूळ, हस्तलिखित अन्य प्रतिओ तथा

१ पुराणी परंपरा अनुसार दीक्षा लीधा पछी चार वर्ष वीत्या बाद सूत्रकृतांगनुं अध्ययन कराववामां आवतुं हतुं.

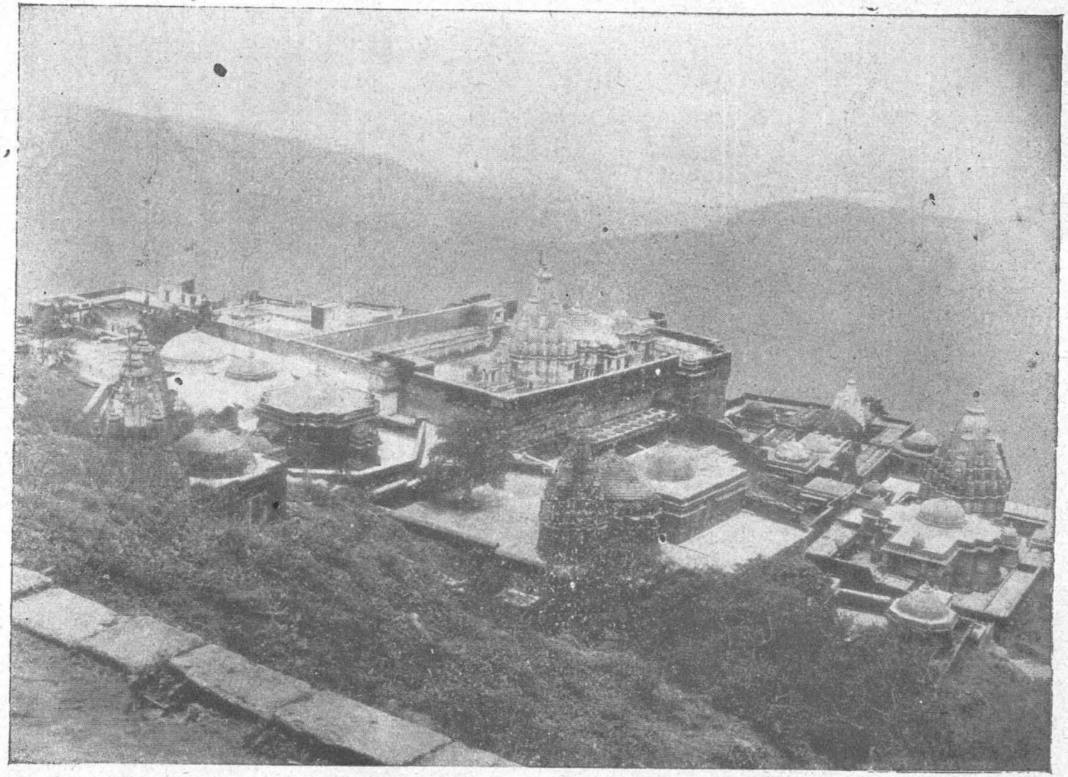

गिरनारपर्वत—नेमिनाथकी टोंक.

Aho ! Shrutgyanam

Aho ! Shrutgyanam

मुद्रित प्रतिओना मूळथी थोडेक अंशे ज भिन्न छे. में एकत्रित करेली केटलीक हस्तलिखित प्रतिओ उपरथी एक स्वतंत्र मूळ तैयार करी लीधुं हतुं के जे मने मुद्रित मूळ साथे मेळवी जोवामां घणुं उपयोगी थई पडयुं छे.

उत्तराध्ययन सूत्रनी कलकत्ता वाळी आवृत्ति (संवत् १९३६ ई. १८७९) मां गुजराती विवरण उपरांत खरतरगच्छीय लक्ष्मीकीर्ति गणिना शिष्य लक्ष्मीवल्लभनी रचेली सूत्र दीपिका आपेली छे. आ टीकाथी वधारे प्राचीन देवेन्द्रनी टीका छे अने ते ज टीका उपर में मुख्य आधार राख्यो छे. ए टीका संवत् ११७९ एटले ई. स. ११२३ मां रचाई छे अने ते प्रकटरीते शांत्याचार्यनी बृहद्वृत्तिना सारांश रुपे छे. शांत्याचार्य वाळी वृत्ति में वापरी नथी. मारी पासे स्ट्रेस्सबर्ग युनिवर्सिटी लाइब्रेरीनी मालीकीनी अवचूरिमी पण एक सुंदर प्राचीन हस्तलिखित प्रति छे. आ ग्रंथ पण स्पष्टरीते शान्त्याचार्यनी वृत्तिनो संक्षेप मात्र छे: कारण के लगभग ए तेने अक्षरशः मळतो आवतो जणाय छे.

सूत्रकृतांगनी मुंबईवाळी आवृत्ति (संवत् १९३६— ई. स. १८८०) मां त्रण टीकाओ आपेली छे: (१) शीलांकनी टीकाः जेमां भद्रबाहुनी निर्युक्ति पण आपेली छे. आ टीका सर्वे विद्यमान टीकाओमां सौथी प्राचीन छे. परंतु आना पहेलां पण बीजी टीकाओ थएली हती. कारण के शीलांक केटलेक स्थळे प्राचीन टीकाकारोनो उल्लेख करे छे. शीलांक नवमी शताब्दिना पश्चार्धमां थई गया होय एम जणाय छे, कारण के तेमणे आचारांग सूत्रनी टीका शक वर्ष ७९८ एटले ई. स. ८७६ मां समाप्त करी हती, एम कहेवाय छे. (२) ए टीकामांथी हर्षकुले करेलो संक्षेप जेनुं नाम दीपिका छे, ते संवत् १५८३ अथवा ई. स. १५१७ मां रचेलो छे. मारी पासे दीपिकानी एक प्रति छे जेनो में उपयोग कर्यो छे. (३) पासचन्द्रनो बालावबोध—एटले गुजराती टीका. माहीतीना मुख्य ग्रंथ तरीके में साधारण रीते शीलांकनी ज टीका वापरी छे. ज्यारे शीलांक अने हर्षकुल बंने मळता आवे छे त्यारे टीप्पणमां में तेमने बतावबा ' टीकाकारो ' एम लख्युं छे. ज्यारे शीलांकनो अमुक टीकांश हर्षकुले पडतो मुकेलो होय छे त्यारे हुं मात्र शीलांकनु ज नाम आपुं छुं; अने ज्यारे कोई उपयोगनी असल हकिकत हर्षकुल ज आपे छे त्यारे त्यां आगळ में तेनुं ज नाम आपेलुं छे. मारे आ स्थळे खास जणावी देवुं जोईए के मारी एक हस्तलिखीत प्रतिमां हासियामां तथा बे बे लीटिओनी वच्चे केटलीक संस्कृत नोटी आपेली छे के जेनी मददथी हुं केटलीक वखते मूळनो खास अर्थ निश्चित करी शक्यो छुं.

बोन
नवेंबर, १८९४.

एच्. जेकोबी.

अहिंसा अने वनस्पति आहार–खास करीने बौद्ध धर्ममां

[बुद्धिस्ट रिव्युना, पुस्तक ६, अंक १ मां प्रकट थएला—
डॉ. F. OTTO SCHRADER, PH. D. ना लेखनो अनुवाद.]

अहिंसा—एटले जीवित प्राणिओने कोई पण प्रकारनी इजा करवामांथी अलग रहेवानुं—व्रत हिंदुस्तानना आर्योमां ज जन्म पाम्युं हतुं. याहुदी—खिस्ती संस्कारोथी ए व्रत केटलुं बधुं विदेशीय छे, ए वात नीचेना विरोधदर्शक दृष्टान्तोथी जणाई आवे छे.[१] ज्यारे क्राईस्ट पिटरने मळ्या त्यारे पिटरे पोतानुं माछलीओ पकडवानुं काम शरु कर्युं हतुं. पिटरे जलमां नाखेली जाळोने क्राईस्टे एटला बधा आशीर्वादो आप्या के जेथी पकडाएली माछलीओना मोटा समूहने लीधे होडीओ डुबी जवाना भयमां आवी पडी. एथी उलटुं, पाणीमां नांखेली पोतानी जाळोने बहार खेंची काढवानी तैयारी करता केटलाक माछीमारो ज्यारे पायथागोरसनी दृष्टिए पड्या त्यारे तेणे ते माछीमारो पासेथी जाळग्रस्त बधी माछलीओ वेचाती लई लीधी अने पछी ते बधी माछलीओ तेम ज ते जालमां पकडाएल बीजा प्राणिओने पण तेणे मुक्त कर्यां. जो के अत्यारे आर्य ओलादनो दरेक पश्चिमवासी पोताना पौर्वात्य बन्धु जेटलो ज अहिंसाव्रतनो पक्षपाती होय छे. छतां हजुए पश्चिममां सामान्यरीते बन्धनकारक नियम तरीके तो अहिंसाव्रतनो स्वीकार घणो ज अल्प छे.

अहिंसाने धार्मिक तत्त्वनुं स्थान क्यारे मळ्युं ए कहेवुं मुश्केल छे; परन्तु अत्यारे अस्तित्व धरावता धर्मोमां **जैनधर्म एक एवो धर्म छे के जेमां अहिंसानो क्रम सम्पूर्ण छे अने जे शक्य तेटली दृढताथी सदा तेने वळगी रह्यो छे.**

उत्तराध्ययन सूत्र नामक जैनोना एक आगम ग्रंथमां अहिंसाने उद्देशीने जैनोनुं दृष्टिबिन्दु आ प्रमाणे बताव्युं छे:[२]—

" कोईए पण जीवता प्राणिओनी हिंसामां अनुमति आपवी नहीं; तेम करवाथी मनुष्य सर्व दुःखमाथी मुक्त थशे; जे आचार्योए यतिधर्म कह्यो छे तेओए ए प्रमाणे आज्ञा करी छे.

" जे ज्ञानी पुरुष जीवता प्राणिओने इजा करतो नथी ते समित (चारे बाजुए जोनारो) कहेवाय छे. जेम जल उच्च प्रदेशनो त्याग करे छे तेम पापकर्म ते पुरुषने त्यजी देशे.

" जंगम अथवा स्थावर जे प्राणिओ जगत्मां रहेला छे तेमने हानी थाय तेवुं कांई पण कर्म मनथी, वचनथी के कायाथी मनुष्ये करवुं नहीं. "

"(मनुष्यो सहित') प्राणिओ, अग्नि अने पवन ए त्रस—चाली शके तेवा प्राणिओ छे; पृथ्वी, पाणी, अने वनस्पति ए स्थावर—न चाली शके एवा प्राणी छे. "

आचारांगसूत्र नामना एक बीजा प्राचीन अने आगम ग्रंथमां आ बधानो यथाक्रमे संक्षेपमां नीचे प्रमाणे समावेश करवामां आव्यो छे.[३]

" ते पाप कर्मने जाणीने ज्ञानी पुरुषे पृथ्वी (जल तेज विगेरे)[४] प्रत्ये हिंसक रीते वर्तवुं नहीं, बीजाने ते प्रमाणे वर्तवा प्रेरवुं नहीं, तेम ज जेओ ते प्रमाणे वर्तता होय तेमने प्रशंसवा नहीं. "

जैन धर्ममां अहिंसाना विचार संबंधी जे उत्कटता छे तेनो आथी ख्याल आवे छे. जो के आ नियमो मात्र यतिओ माटे छे छतां हाली चाली शकतां प्राणिओनो वध न करवानुं अहिंसाणुव्रत—अहिंसा संबंधी नानो नियम—तो यति न होय तेने पण दृढताथी पाळवो पडे छे[५]:—

* ब्लॅक टाईप अमे मुक्या छे.–संपादक जै. सा. सं.

" त्रस एटले चाली शके एवां प्राणिओने अभय दान आपवामां तत्पर रहेनार सत्पुरुषोए प्रमादक पान, मांस, मद्य अने रसवाला वृक्षोना फलोनो हमेशां त्याग करवो जोईए.

" जेमां सूक्ष्म जंतुओनो नाश थाय छे अने अभक्ष्य वस्तुओ खवाय छे तेवुं रात्री भोजन, दयालु सज्जनो कदी करता नथी.

" जेओ स्थावर प्राणिओनो नाश करीने अन्नाहारी तरीके रहे छे अने जेओ त्रस प्राणिओनो नाश करीने मांसाहारी तरीके जीवे छे, ते बंनेना पापनुं अन्तर, सत्पुरुष जणावे छे के, परमाणुं अने मेरुना जेटलुं होय छे.

" अन्नाहारमां जे परमाणु जेटलुं पाप छे तेनो नाश प्रायश्चित्त मात्रथी करी शकाय छे, परन्तु मांसाहरमां पाप पर्वतराज जेवुं मोटुं छे अने तेथी तेनो नाश करी शकातो नथी[५]. "

मध, रेशम अने ऊन विगेरेनी उत्पत्तिमां बने छे तेम प्राणिओनी संपत्ति खूंचवी लेवानी यति अने उपासक बन्नेने मना करवामां आवी छे. मध खावामां चोरी अने हिंसा बन्ने रह्या छे. हिंसा एटला माटे के " मधनुं दरेक बिन्दु असंख्य मक्षिकाओना वधथी ज प्राप्त थाय छे[६]. " " जेटलुं पाप सात गामोने बाळी नांखवाथी थाय छे तेटलुं पाप मधनुं एक टीपुं खावाथी थाय छे[७]. " ज्यां हजारो ढोरो भूखे मरे छे एवा हिन्द देशमां उपरना विचार साथे आश्चर्यजनक विरोध धरावनार वात तो ए छे के प्राणिओनुं दूध पीवामां पाप बिलकुल गणवामां आव्युं ज नथी !

अहिंसानो आवो उत्कट मार्ग अनुक्रम वगर एकदम उत्पन्न थाय ए भाग्ये ज मानी शकाय तेवुं छे, तेथी; तेम ज महावीर अने पार्श्वनाथ पण आमांना घणा नियमो उपर भार मूकता हता तेथी; आपणे एवी कल्पना तरफ दोराईए छीए के बुद्धनी पूर्वे बे शतक के तेथी पण पहेलां (एटले क्राईस्टनी पूर्वे ८०० वर्ष पहेलां) हाल जेने अहिंसानुं ' अणुव्रत ' कहेवामां आवे छे तेना जेवा एक मन्तव्यनी प्रथम स्थापना जैनो अथवा कोई अन्य धर्मानुयायीओ तरफथी करवामां आवी हशे. आ कल्पनाथी आपणे वैदिक युगनी समाप्ति सुधी पाछळ जईए छीए, अने अहिं छान्दोग्य उपनिषद्ना अन्तिम भागमां आपणे इच्छेलुं अहिंसा व्रतनुं प्रथम पगथियुं आपणने मळी आवे छे.–जो के देखीती रीते ते मूळनी शरुआतनुं तो नथी ज. छान्दोग्य उपनिषद्नो ते भाग नीचे प्रमाणे छे–

" आचार्यना घरे यथाविहित समयमां, यथा विधि, वेदनो अभ्यास करीने जे गुरुना घेरथी पाछो आवे छे, तेणे पोतानी मेळे पोताने घरे पवित्र स्थानमां, ते पवित्र ग्रंथोनो अभ्यास करवो; सत्यशील शिष्योने भणाववा; पोतानी सकल शक्तिओनुं स्थान आत्माने बनाववो; पवित्र तीर्थो सिवाय अन्यत्र कोई पण प्राणीनी हिंसा करवी नहीं; ते खरेखर आ प्रमाणे यावज्जीवन रही ब्रह्मलोक मेळवे छे; अने पुनः आवतो नथी.—पुनः आवतो नथी. "

एनो अर्थ ए के—जे मोक्षनी आकांक्षा राखे छे ते यज्ञ सिवाय अन्यत्र पशुवध करी शके नहीं. ए ध्यानमां राखवुं जोईए के अहिं गृहस्थने उद्देशीने आ अहिंसाना नियमनुं वर्णन थाय छे. केम के घणुं करीने ते समये, वैदिक युगना अन्तमां पण, ' सन्नयास ' नो प्रारंभ थयो न हतो.

परन्तु त्यार पछीना उपनिषदोमां चतुर्थाश्रम पूर्ण विकास पामेलो जोवामां आवे छे, अने तेने माटे आपेला नियमो जैन यतिना नियमोने केटलेक अंशे मळता आवे छे. जैन यतिनी जेम, ब्राम्हण संन्यासीने पण वर्षाऋतुमां फरवानुं बंध राखवुं पडे छे, अने पाणी पीधा पहेलां गाळवुं पडे छे. अने स्पष्ट पणे ज—जो के चोक्कस नथी छतां—ते मांसाहार करी शकतो नहीं.[८] गमे तेम हो परन्तु आटलुं तो चोक्कस छे के ब्राम्हण धर्ममां पण घणा लांबा समय पछी सन्नयासिओ माटे आ सूक्ष्मतर अहिंसा विहित थई; अने आखरे वनस्पति आहारना रूपमां ब्राह्मण ज्ञातिमां पण ते दाखल थई हती. कारण ए छे के जैनोना धर्मतत्त्वोए जे लोकमत जीत्यो

Aho ! Shrutgyanam

हतो तेनी असर सज्जडरीते वधती जती हती. बुद्धना समये अने त्यार पछी पण केटलाक वखत सुधी ब्राह्मणोए वनस्पति अहारनो स्वीकार पूरे पूरो कर्यो न हतो ए वात सुप्रसिद्ध पंच पंचनख व्रतथी[९] साबीत थाय छे. महाभारत (१२, १४१, ७०) मां आ नियम नीचेना रूपमां आपेल छे—

" ब्राह्मण, क्षत्रिय अने वैश्ये मात्र पांच पांच नख वाळा प्राणीनुं भक्षण करी आ धर्म प्रमाणे चालवुं अने जे अभक्ष्य छे ते प्रत्ये मन दोरवुं नहीं. "

ए ध्यानमां राखवा जेवुं छे के ते ज नियम एक जूना बौद्ध जातकमां अने लगभग बधा जूना ब्राह्मण धर्मग्रंथो–स्मृतिओमां[१०] मळी आवे छे. कूर्मपुराणमां तेने मनुए कहेलो बताव्यो छे, परंतु मनु (तेम ज गौतम) छ प्राणीओनी अनुमति आपे छे; अने आपस्तंब सातनी पण रजा आपे छे. महाभारतमां बीजे स्थळे (१२, ३७, २१–२४)[११]ब्राह्मणने अभक्ष्य एवा प्राणीओनुं एक लांबु लीष्ट व्यास मुनिए आप्युं छे. जो भक्ष्य प्राणीओनी संख्या बहु थोडी होत तो व्यास आटली मेहनत लेत नहीं. परंतु समय जतां ज्यारे जैन अने बौद्ध धर्म देशमां प्रबळ थया त्यारे प्राणी–हिंसा अने मांस–भक्षण मात्र यज्ञमां ज करवां एवो नियम कर्या वगर ब्राम्हणोथी चलावी लेवायुं नहीं.[१२] अने तेमां पण पशुहिंसा वधारे ने वधारे ओछी करवामां आवी अने अन्ते मांसनी इच्छा राखनारा (आमिषकांक्षिणः) पितृओने [जेओनो मांसभक्षणनो हक्क महाभारतना छल्ला भागोमां सहेज नामरजी साथे स्वीकारवामां आव्यो छे[१३]] पण वनस्पति-भक्षक थवानी फरज पाडवामां आवी. अने आखरे दक्षिण हिंदमां ई. स. ना तेरमा सैकामां उत्पन्न थएला माधव संप्रदायना केटलाक प्रतिनिधिओए अन्तिम पगलुं लीधुं. तेमणे गमे ते प्रकारनी प्राणीहिंसाने पापवाळी गणीने धिक्कारी अने यज्ञमां प्राणी बलिदानने स्थाने कहेवातो पिष्ट–पशु एटले अन्ननी बनावेली प्राणीनी आकृति वापरवानो रिवाज दाखल कर्यो.[१४]

परन्तु आ सर्व ब्राह्मणोने ज उद्देशीने छे; अथवा बहु तो द्विजोने उद्देशीने छे. वैदिक संप्रदायना अवशिष्ट वर्गोने मांसाहारमांथी मुक्त राखवामां आव्या न हता. तेथी आधुनिक स्थिति बहुशः नीचे दर्शाव्या मुजब छे. दक्षिण हिन्दमां सर्वत्र ब्राह्मणो वनस्पति आहार करनारा छे. उत्तरमां घणा ब्राह्मणो मत्स्य-भक्षक छे अने काश्मीरमां तो अन्य मांस पण खाय छे. क्षत्रियो सदा मोटे भागे मांस खाता ज हता अने हजुए खाय छे. वैश्यो (व्यापारी वर्ग, जेने दक्षिणमां चेटीआर अने उत्तरमां वाणीआ विगेरे कहे छे तेओ) साधारण रीते ब्राह्मणोना भोजननुं अनुकरण करता देखाय छे. शूद्रो मांस-भक्षक तेम ज वनस्पति-भोजी पण होय छे. घणा भागे तेओ वनस्पति आहार उपर रहे छे, केम के मांस घणुं मोंघुं होवाथी तेमना माटे दुर्लभ जेवुं छे.

संन्यासीओना विषयमां तो में प्रथम ज कह्युं छे के जे नियमोने तेओ अनुसरे छे ते घणे अंशे जैन मतने मळता आवे छे. तेओ झाझे भागे तपस्या करे छे अने तेथी तेओमांना घणा तो मांसनो स्पर्श पण करता नथी; केम के इंद्रियोना विषयोनी वृत्तिओने तेथी पोषण मळे छे. परन्तु जन्मथी ब्राह्मण एवो एक आदर्श रूप अने विद्वान् संन्यासी के जेना परिचयमां हुं आव्यो छुं, तेणे मने कह्युं के श्रद्धापूर्वक अर्पण करवामां आवेली मांसवाळी वस्तुनो पण अनादर करवो ए खरा भिक्षु माटे अयोग्य अने दौर्बल्यसूचक छे. तेनो विचार आवो होय एम जणाय छे, के जे यति तेने आपवामां आवेली खावायोग्य गमे ते वस्तु खावाने शक्तिमान न होय, ते तैत्तिरीय उपनिषद्मां (२, ७) कहेल, तेनी अने संसारनी वच्चे रहेला खाडानी ('उदरं अन्तरं' मी) पेली पार जवाने फतेह थयो गणाय नहीं; तेम ज द्वन्द्व-मोह अने जुगुप्साने जीत्यां गणाय नहीं, के जे आत्म-साक्षात्कारमां मुख्य साधन मनाय छे. आ उपरथी 'मिलिन्दपह्न' (३,६) नो एक जाणवा जेवो उल्लेख स्मरणमां आवे छे, जेमां बौद्ध साधु कहे छे के " हे महाराज! ते हजु रागथी मुक्त थयो नथी, जे भोजन करती वखते

स्वाद अने स्वादजन्य सुखनो पण अनुभव करे छे ज्यारे खरेखर राग रहित पुरुष तो भोजन करती वखते मात्र स्वादनो ज अनुभव करे छे परन्तु स्वादजन्य सुखनो अनुभव करतो नथी. "

हवे आपणे बौद्धधर्म तरफ वळीए. अहिं अहिंसा अने वनस्पति आहारना संबंधमां एक विवादग्रस्त प्रश्न उत्पन्न थाय छे, के जे प्रश्ननो निर्णय मारा जाणवा प्रमाणे हजु कोई लावी शक्युं नथी. डॉ० न्यूमेन आदिनो पक्ष कहे छे, के बुद्ध वनस्पति आहार ज करता; ज्यारे बीजो पक्ष के जेमां घणा विद्वानो छे; तेओ 'अमुक खास प्रसंग सिवाय अन्यत्र बुद्ध मांसाहारनी मना करता हता,' ए वातनो इन्कार करे छे. पूर्वपक्ष ज्यारे, अहिंसा ए व्रत भिक्षु तेम ज गृहस्थे पाळवाना नियमोमां प्रथम स्थान धरावे छे, ए बाबत उपर भार मुके छे, त्यारे उत्तर पक्ष, धर्म ग्रंथोना केटलाक फकराओनो, तथा महायान तेम ज हीनयान ए उभय शाखाओना अनुयायीओनो मोटो भाग जे आजे मांस भक्षण करवा छतां पोते अहिंसानुं पालन करे छे एम माने छे, ते बाबतनो आश्रय ले छे.

मारा मत मुजब सत्य बन्ने पक्षमां रहेलुं छे अने तेना कारणो हवे हुं विस्तारथी आपुं छुं.

एक आश्चर्यजनक वात ए छे, के दक्षिण हिन्दना जैनोमां बुद्धसम्बन्धी अद्यापि जाणीती एवी एक हकिकत छे के ते 'बुद्ध एक घणो खराब माणस हतो अने मांसाहारने उत्तेजन आपतो हतो,' ब्राह्मणधर्मनुं उपहास आलेखतुं अने खण्डनमण्डन करतुं धर्मपरीक्षा नामे पुस्तक[१५] जे तामिल भाषान्तरना रूपमां घणुं प्रसिद्ध छे, तेमां उल्लेखेली बुद्धनी आ अपकीर्त्तिनुं कारण आपणे गोतवुं जोईए. ए पुस्तकमां बौद्धधर्म ऊपर घात पड्यो छे; अने तेमां पहेलो ज जे आक्षेप करवामां आव्यो छे ते ए छे के 'बुद्धना मत प्रमाणे मांसाहार करवामां पाप नथी. ' आ आक्षेप मात्र मनःकल्पित नथी. बीजा प्राचीन जैन पुस्तकोमां पण ते रूपान्तरथी मळी आवे छे. दृष्टांत तरीके सूयगडांगसूत्रमां[१६] एम कहेलुं छे के बुद्धे नीचे प्रमाणे उपदेश कर्यो हतो,

"(दुष्कालना वखतमां) एक गृहस्थ पोताना पुत्रने मारीने खाई शके, अने एक ज्ञानी भिक्षु जो तेमांथी मांस ले तो तेने पाप लागे नहीं.

" जो कोई माणस मूलथी धाननो ढगलो मानीने[१७] माणस अथवा बालकनो वध करे, तेने अग्नि उपर मूके, पकावे तो ते बुद्धोनो माटे योग्य एवुं भोजन होई शके. "

आहिंया आ प्रमाणे घणा विलक्षण रूपमां बुद्धना एक मतने आलेख्युं छे के जे असलमां आपणे जोईए तो, आ प्रमाणे जडी आवे छे, के वध कराएला प्राणीना वधनुं कारण पोते कोई पण रीते न होय तेवा मांस सिवाय बौद्ध भिक्षुए अन्य कोई जातनो मांसाहार करवो नहीं.

चुल्लवग्गमां (७,३-१५) अने अन्य पिटकोमां घणी सारी रीते एक खुलासो आपवामां आव्यो छे, के ज्यारे मतभेद उत्पन्न करवानी इच्छाथी (अर्थात् पोतानी मांगणी स्वीकारवामां नहीं आवे एम सारी रीते जाणतो होवो छतां) देवदत्त मत्स्य अने मांस आहारनी भिक्षुओने माटे मना कराववानी विनति करवा बुद्ध पासे जाय छे त्यारे बुद्ध तेनी विनतिनो अस्वीकार करे छे[१८] अने कहे छे के '......हे देवदत्त ! आठ मास सुधी वृक्षो नीचे शयन करवानी में रजा आपी छे.[१९] तेम ज अदृष्ट, अश्रुत अने अशंकित ए प्रमाणे त्रणे बाबतोमां जे तद्दन शुद्ध होय तेवा मत्स्य अने मांस [खावानी पण में रजा आपी छे.] '

अर्थात्, हत प्राणीतेने माटे हणवामां आव्युं छे तेम ते भिक्षुना दीठामां आवेलुं न होय (अदिट्ठम्), तेना माटे हणाएलुं छे एम तेना सांभळवामां पण आव्युं न होय (अश्रुतम्), अने आ मारा माटे हणवामां आव्यो हशे के केम ? एम तेने शंका पण न आवी होय (अपरिशंकितम्); तेवा मांसने पवत्तमंस ('पहेलांथी ज अस्तित्वमां आवेलुं मांस') कहेवामां आवे छे, अने ते उद्दिस्सकतमंस (' हेतुपूर्वक तैयार करेला मांस ') थी उलटा प्रकारनुं मनातुं हतुं.[२०]

Aho ! Shrutgyanam

वळी सरखावोः—' हे भिक्षुओ ! मांस खावाना हेतुथी हणाएला प्राणीनुं मांस जाणी जोईने कोईए खावुं नहीं. जे कोई ए प्रमाणे करशे ते "दुक्कत" अपराध करशे. हे भिक्षुओ ! अदृष्ट, अश्रुत, अने अशंकित एम त्रण प्रकारे जे मांस शुद्ध होय ते खावानी हुं रजा आपुं छुं." (महावग्ग ६, ३१ ना अंतमां) वळी. " हे मूर्ख ! (मांस क्यांथी आव्युं छे ते) तपास्या विना तुं शी रीते ते मांस खाई शके ?........हे भिक्षुओ ! तपास कर्या वगर कोईए पण मांस खावुं नहीं" (तेज ग्रंथ ६,२३)

बीजो नियम ए छे के—मांस काचुं न होवुं जोईए. (ब्रह्मजाल सुत्त १०, अंगुत्तरनिकाय १९३–१९९; मज्झिमनिकाय, ३८ विगेरे) संघमां दाखल थता नवा पुरुषो माटे वारंवार कहेवामां आव्युं छे के " तेओ काचुं (अन्न) स्वीकारता नथी [तेओ काचुं मांस स्वीकारता नथी.]"

छेवटे महावग्ग (५, २३) मां एक विचित्र आज्ञा करवामां आवी छे—अने हुं जाणुं छुं त्यां सुधी अन्यत्र ते जोवामां आवती नथी. ते स्थळे माणसनुं, हाथीनुं घोडानुं, कुतरानुं, सर्पनुं, सिंहनुं, वाघनुं, चित्तानुं, दीपडानुं, रींछनुं अने तरक्षुनुं मांस त्यजवा विषे कहेवामां आव्युं छे. आने आपणे व्यासनी यादीना (जुओ उपर) अवशिष्ट भाग तरीके गणी शकीए.

अहिंसोपदेशक धर्मना एक महान् प्रवर्तक मांसना उपभोगने धिक्कारे नहीं; मांसाहारनो सर्वदा त्याग कर्या सिवाय पोताना मनोविकारोने जीतवानी एक भिक्षु इच्छा राखे; आ बधुं, जेम अत्यारे पण बौद्धधर्मना परिचयमां, जे विचार शील पुरुषो आवे छे तेमने, एक न समजी शकाय एवी गुंचवण लागे छे, तेम ते समये पण घणा माणसोने आ विचार आश्चर्यजनक अने अतर्क्य लागतो हतो. परंतु ए एक सारी वात छे, के आ विचारनो बुद्ध पोते शी रीते निराकरण करता हता तेनो एक पुरावो आपणने मळी आवे छे.

सुत्त निपातना आमगंध सुत्तमां कोई एक पुरुष बुद्धने संबोधे छे; [२१]अने पछी पोताना वनस्पतिभोजीपणानुं वर्णन अने प्रशंसा करीने कहे छे के "स्वच्छताने (आमगंध एटले खराबगंधने) मारी साथे कांई संबंध नथी. आम तमे कहो छो (अने वळी) हे ब्रह्मबंधु ! [२२] सारी रीते तैयार करेल पक्षीना मांस साथे मेळवेला भात तमे खाओ छो; तेथी हे काश्यप ! हुं तमने पूछुं छुं के तमे अशुद्धतानो शो अर्थ करो छो ?" आनो बुद्ध उत्तर आपे छे के: " जीवता प्राणिओने दुभववां, मारवां,कापवां,बांधवां,चोरी करवी, असत्य भाषण करवुं, छळ अने कपट करवुं, सार वगरनुं वाचवुं तेनुं नाम अशुद्धता छे; पण मांसभक्षण नहीं." आनी पछी आ प्रकारना बीजा छ श्लोको आवे छे जे दरेकनी अंते; " आ ते अशुद्धता छे; पण मांसभक्षण नहीं" आ शब्दो होय छे. अने तेमां कहे छे के "मत्स्याहार के मांसाहारनो त्याग, नग्नभ्रमण, मस्तकमुंडन, जटाधारण, धूल—निर्माल्य—भस्मधारण, अग्निहोम, आ सर्व, मायामांथी जे पुरुष मुक्त नथी तेने पवित्र करी शकता नथी. वेदाध्ययन, गुरुदान, देवयजन, धर्म अथवा शीत सहनद्वारा आत्मदमन, अने एवा बीजां, अमृतत्वनी इच्छाथी करवामां आवेलां तपो, मायाथी बद्ध पुरुषने पवित्र करी शकता नथी." [२३]

अलबत्, ए वात तो स्पष्ट ज छे के ऊपर जे प्रकारो वर्णवेला छे तेमां मांसने भिक्षुना भोजनना एक आवश्यक भाग तरीके तो स्थान आपवामां आव्युं नथी ज, पण सहेलाईथी जेनो सर्वदा त्याग करी शकाय एवा अपवाद रूपे ज मांसने स्थान आपेलुं छे. तथापि बुद्ध तेनो सर्वथा निषेध करवा इच्छता न हता. अने तेम करवामां तेमने मुख्य कारण, पोताना उपदेशनुं ए एक स्पष्ट अने शाश्वत उदाहरण बताववानी तेमनी इच्छा हती के " आहारना प्रश्नने धार्मिक शुद्धि—विशुद्धि साथे बिलकुल संबंध छे नहीं."

मांसना आ नियत उपयोग सिवाय, आपणा प्रस्तुत विषयमां बौद्ध अने जैन साधुओमां विशेष भेद नहीं हतो. जैन साधुनी जेम बौद्ध साधुने पण काळजीपूर्वक कोई पण प्राणीनी हिंसाथी दूर ज रहेवानुं हतुं. सुत्तनिपातमां (धम्मिक सुत्त १९) पण कह्युं छे के:—

Aho ! Shrutgyanam

"चर तेम ज अचर (तस अने थावर) उभय प्रकारना प्राणीनी हिंसाथी दूर रहेवुं, तेणे (भिक्षुए) जीवने हानि करवी नहीं, करावी नहीं, बीजाने तेम करवामां सम्मति आपवी नहीं."

तेज प्रमाणे धम्मपद (२६,२३) मां:—

"जे चराचर प्राणीनी हिंसाथी दूर रहे छे तेने हुं ब्राह्मण कहुं छुं; जे पोते हिंसा करतो नथी, अने अन्यने हिंसा करवा प्रेरतो नथी (तेने हुं ब्राम्हण गणुं छुं.)"

"सारुप्यमत्तनो—आत्मानुं सारुप्य–अर्थात् ज्यां ज्यां जीव छे त्यां त्यां तेना आत्माना जेवुं ज कांई छे" ए वात भिक्षुए भूलवी जोईए नहीं.[२४]

"लीला रोपाओने पगनीचे चगदी नाखवाथी दूर रहेवाने, वनस्पति जीवनी हिंसाथी बचवाने, घणा नाना जीवोनी जिंदगीनो क्षय थतो अटकाववाने"[२५] माटे वर्षा ऋतुमां पर्यटन करवानी ना करी हती. जे फळोने अग्निथी, छरीथी, नखथी अचेतन करवामां आव्या होय अथवा जेमां एक पण बीज रह्युं न होय अथवा जेमां बीजनो (अर्थात् बीजमां रहेली बीजां फळो उत्पन्न करवानी शक्तिनो) क्षय थई गयो होय, तेवां ज फळो खावानी रजा आपवामां आवी हती.[२६] आ साथे—एटले वनस्पति जीवनी अहिंसा साथे "घास वगरनी" जगामां अन्नना अविशिष्ट भागने फेंकी देवानो आदेश पण घणे स्थले करवामां आव्यो छे.

आ बधुं तो बौद्ध भिक्षुने उद्देशीने विवेचन थयुं. हवे आपणे ए निर्णय करवानो छे के बौद्ध गृहस्थ माटे आ नियमो छे के नहीं ? अने जो होय तो ते केटली मर्यादा सुधी.

जैनोनी स्थूल अहिंसाना जेवुं एमां पण कांई होवुं जोईए ए विचार, दृष्टांत तरीके, संयुत्त निकाय ७, १, ५ ना उल्लेखथी दृढ थाय छे. ते स्थळे ज्यारे अहिंसक नामनो ब्राह्मण बुद्धपासे आवीने कहे छे के "अयुष्मान् गोतम, हूं अहिंसक छुं" त्यारे तेनो उत्तर बुद्ध श्लोकोमां आ प्रमाणे आपे छे:

"तूं जेम कहे छे तेम भले तारुं नाम अहिंसक हो: परंतु जे कायाथी, वचनथी, अने मनथी कोईनी हिंसा करतो नथी तेवो अहिंसक तू था. केम के ते ज खरो अहिंसक छे जे बीजानी हिंसा करतो नथी."

पुन: अंगुत्तरनिकाय (३, १५३ comp,१०, २१२ मां आपणे वांचीए छीए के:—

"हे भिक्षुओ ! त्रण कार्यवाळो माणस नरकगामी थाय छे. कया ते त्रण कार्यो ? जे पोते जीवनी हिंसा करतो होय, बीजाने हिंसा करवा प्रेरतो होय, अने बीजाने हिंसा करवामां सम्मति आपतो होय."

"हिंसा, हे भिक्षूओ ! हुं त्रण प्रकारनी गणुं छुं. लोभथी कराएली, दोष–धिक्कारथी कराएली, अने अज्ञान-मोहथी कराएली."

आ वचनो अंगुत्तर निकाय (१०—१७४) मांनां नियमनी जेम मात्र भिक्षूओ माटे ज कहेवामां नथी आव्यां.

आ विषयमां सौथी वधारे विचारवा लायक सुत्तनिपातनुं धम्मिक सुत्त छे. भिक्षुना नियमनुं वर्णन कर्या पछी, तेमां (श्लोक १८ विगेरे) कह्युं छे के "हवे हुं तमने गृहस्थना धर्मो कहीश, जेनुं पालन करवाथी मनुष्य (बीजा जन्ममां) श्रमण अने अर्हत् थाय छे. कारण के एक भिक्षु पासेथी जे नियमोना पालननी आशा राखी शकाय, तेवा नियामो पालवा गृहस्थ, कदाच समर्थ थाय नहीं." अने त्यार पछी "चर तेम ज अचर–तस थावर–उभय प्रकारना" विगेरे उपर उतारेला श्लोको बडे उपासक गृहस्थना धर्मोंनी ते गणना गणावे छे.

आथी ए विचार सूचवाय छे के, जो के "अचर-जीवो" ए पदनो बौद्ध मतमां अर्थ मात्र "वनस्पति-योनी" एटलो ज थाय छे, छतां चर अने अचर बन्ने प्रकारनो अहिं समावेश करवामां आवेलो होवाथी बौद्ध धर्मी गृहस्थ, जैन उपासक करतां वधारे व्यापक अर्थमां अहिंसानुं पालन करे छे. परंतु कदाच ए विचार बराबर पण नहीं होय. कारण के पिटकोमां एक ज शब्द घणी वार जुदा जुदा अर्थमां प्रयोजाएलो नजरे पडे छे; अने तेथी तस अने थावरनो जे अर्थ अहिं ए लोको करता

Aho ! Shrutgyanam

ते घणे भागे फुजबोले पोताना भाषांतरमां कर्यो छे तेवो ज हतोः एटले तस " जे ध्रुजे छे ते " अने थावर " जे बलवान् छे ते. "

गमे तेम हो, पण ए तो स्पष्ट छे के बौद्ध गृहस्थने मात्र जाते हिंसा करवामांथी ज नहीं, परन्तु मत्स्य अथवा मांस वेचातुं लेवामांथी, तेम ज अन्य रीते पण प्राणी वधने उत्तेजन आपवामांथी पण अलग रहेवानुं कहेवामां आव्युं हतुं. केम के जे माणस मत्स्य अथवा मांस खरीदे छे ते माछीमार अथवा कसाईना कार्यने अनुमति आपे छे ज. खरुं जोतां तो ते वधारे (पाप) करे छे. ते " बीजा पासे हिंसा करावे छे " " हिंसाने उत्तेजन आपे छे " अथवा (महाभारत १३, ११३, ४०) भीष्मना शब्दोमां कहीए तो ते " पोताना पैसा वडे हिंसा करे छे. "

हुं मानुं छुं के महावग्ग (६, ३१) ना उल्लेखमां रहेलो अर्थ आ ज छे. ए स्थळे राजा पवतमंस—एटले कोईए तैयार करेलुं मांस मंगावे छे, जेनुं परिणाम ए आवे छे के बलदना एक घातक तरीके तेनी निंदा करवामां आवे छे. वळी संयुत्त निकाय (१४; २५.३) जुओ. त्यां हिंसा करनाराओ साथेना संसर्गने पण निंदवामां आव्यो छे. महाभारत (१३, ११३, ४७) मां कह्युं छे के सात माणसो जीव—भक्षक छे, एटले हिंसानुं पाप करे छे. जेम के—जे माणस ते प्राणी ने लावे छे, जे अनुमति आपे छे, जे हणे छे, जे वेचे छे, अथवा खरीदे छे, जे मांस तैयार करे छे, अने जे तेने खाय छे. छेल्ला बेने अपवादरूप गणिए तो बुद्धे कहेला नियमोने अनुसरतो ज महाभारतनो—आ उल्लेख छे. जो के बुद्धना अनुयायीओना वर्तन साथे तो ते असंगत छे.

परंतु कोई शंका करे के, जो गृहस्थ मांस वेचातुं पण लई शके नहीं तो भिक्षुओने जे त्रण प्रकारे शुद्ध एवा मांसने लेवानी रजा आपवामां आवी छे, ते मांस क्यांथी आवे ? आनो तो उत्तर स्पष्ट छे के बौद्ध साधुओ गमे त्यांथी भिक्षा ग्रहण करता हता; मात्र बुद्धानुयायी पासेथी ज नहीं.[२७]

आपणा आ ऊहापोह उपरथी आपणे ए निश्चय उपर आवीशुं के पुराणा बौद्ध धर्ममां भिक्षु मांसाहार क्वचित् ज करतो, अने गृहस्थ तो तेना करतां पण ओछी वखत मांस खातो. केम के गृहस्थ कांई भिक्षा मांगतो नहीं. परंतु तेने प्रवास विगेरेना प्रसंग दार्मियान बौद्धेतर वर्ग पासेथी तेवो खोराक लेवानी रजा आपवामां आवी हती.

संपूर्ण अहिंसानुं पालन तो मोटामां मोटा ज्ञानी पुरुषने माटे पण अशक्य छे. अने जेम घणा माणसो धारे छे तेम आ कांई नवी पण शोध नथी. आ विषयमां महाभारतना वनपर्वमांनी धर्मव्याध—भक्तिमान शौनिकनी मनोरंजक वार्ता वांचवा जेवी छे. तेना अंते कहेलुं छे के ' चालवामां, बेसवामां, सुवामां, खावामां, विगेरे दरेक क्रियामां अने दरेक बाबतमां असंख्य प्राणीओनी हिंसा थाय छे. तेथी जगत्मां कोई अहिंसक नथी. (नास्ति कश्चिदहिंसकः)' आ निर्विवाद सत्य छे. आपणने जीववा माटे जीवनी हिंसा करवी पडे छे, ए आ जीवननी एक अत्यंत दुःखदायक बीना छे; "आ बधुं जीवता प्राणीओथी व्याप्त छे " अने " आ सर्व जीवता प्राणीओथी ग्रस्त छे. " (जीवैर्ग्रस्तमिदं सर्वं) ए उल्लेख सत्य छे. तेम छतां पण सर्व अनावश्यक हिंसाथी बचवानी आपणी फरज छे. ज्यां ज्यां आपणाथी बनी शके त्यां त्यां दुःख उत्पन्न थतुं अटकाववानी अने उत्पन्न थएल दुःखने घटाडवानी आपणी फरज छे. वृद्ध भीष्मना शब्दो (महाभारत—११३,११६,३४) ध्यानमां राखवा जोईए के. " जीवनदानथी अन्य महत्तर दान हतुं नहीं अने थशे नहीं. "

प्राणदानात्परं दानं न भूतो न भविष्यति

*
* *

[आ आखा लेखमां आवेली टीपो आ नीचे एक साथे ज आपी देवामां आवे छे.—**संपादक.**]

१ शॉपनहॉर, ग्रन्ड्लेज डर मॉरल, रेक्लम्, पु० ३, पान ६२३

२. जेकॉबी, जैनसूत्र, पु. २, पा० ३३, ३४.

३. जेकॉबी, जैनसूत्र, पु. १, पा. ५

४. चातुर्भौतिक देहवाळा असंख्य आत्माओ छे. एवा घणा देह एकस्थाने भेगा थवाथी ज तेओ दृष्टिगोचर थाय छे. जेकॉबी,

Aho ! Shrutgyanam

५. जीवविचार तथा अन्य ग्रन्थोने आधारे तेनो अर्थ 'वनस्पती अने चारभूतो सिवाय अन्य सर्व ' एम थाय छे.

६. अमितगतिनुं सुभाषितसंदोह, ३१; ४, ५, तथा २१; ८, ९,

७. अमितगतिनुं सुभाषितसंदोह, २२; २,

८. " " " २२, ३

९. सरखावो, डयूसेननुं Geschich teder Philosoh hie, I,१, पा० ३४०. 'भिक्षा ' ना अर्थ उपर तेनो आधार छे.

१० ल्युडर्स, Eine indische Speiseregel. जर्मन ओरिएन्टल सोसायटीनुं जर्नल १९०७ पा० ६४१

११. याज्ञ० १; १७७, वसि० १४; ३९, गौ० १७; ११, मनु ०५; १८, आप० १; ५, १७, ३७, विष्णु० ५१; ६.

१२ Schrader, Die Fragen des Koenigs Menandros परिशिष्ट, पा० २७

१३. पहेलां घणी वखत आ प्रमाणे करवामां आव्युं हतुं तेम; जुओ उपर.

१४. अल्पदोषमिह ज्ञेयम् (१३, ११५, ४५).

१५. आ रिवाजनी तरफेणमां तेम ज विरुद्धमां घणुं लखायुं छे, जुओ महामहोपाध्याय हरप्रसादशास्त्रीनुं Notices on San. Mss., 1907, p, .घणे भागे आ बाबतमां मध्व सुधारक हता. महाभारत १३, ११५, ५६ मा जणाव्युं छे के " पूर्वकल्पमां यज्ञपशु चोखाना लोटनो (व्रीहिमय) बनावता, अने ते वडे शुभ लोकनी इच्छावाळा पुरोहितो यज्ञ करावता एम कहेवाय छे. " ते ज स्थळे ६३ मा श्लोकमां जैनधर्मनी असर जणाय छे ज्यां भीष्म मधु मांसनो उपयोग करवानो निषेध करे छे.

१६ ' Die Dharmapariksha des Amitagati, Leipzig' 1905 मां एम्० मीरोनोए तेनुं पृथक्करण कर्युं छे., पा० ३८.

१७. प्रो० जेकोबीए तेनो अनुवाद कर्यो छे. सेक्रेड बु० ई०; पु० ४५, पा० २४३ तथा ४१५

१८ पूर्वपक्षीए शंका उठावी छे ते प्रमाणे शक्य नथी. विरुद्धपक्षमां बंधबेसता दृष्टान्तनुं विचित्र रूपांतर करवाने बदले लेखके एटलुं ज कहेवुं जोईतुं हतुं के भूलथी हणेला प्राणीने खावामां कांई पाप नथी.

१९. " मत्स्यमांस " ओल्डनबर्ग, परंतु सरखावो अङ्गुत्तर निकाय ३, १५१, ' न मच्छं न मंसं. '

२० Dनी अन्य सूचना विषे जणावे छे.

२१ ओल्डनबर्गनुं विनयपिटकम्, पु० २, पा. ८१ टीप.

२२. आ स्थळे मूळमां कस्सप छे.पण ते कांई खास नोंधवा जेवी बाबत नथी,कारण के सगळा बुद्धोनो लगभग सरखो ज उपदेश छे

२३. दुष्ट ब्राह्मण.

२४ Rhys Davids, Buddhism, 8 th ed. पा० १३१, तथा सॅक्रेड बु० ई०, पु०, १०. पा. ४०, ४१

२५. सुत्तनिपात १३, १० तथा अन्य स्थळे.

२६. महावग्ग, ३, १.

२७. चुल्लवग्ग, ५; ५, २ (सरखावो. ओल्डनबर्ग, पा. ७५)

२८. आ उपरथी एवुं अनुमान करवुं न जोईए के जे चुन्दनी पासेथी तेमने छेवटनी भिक्षा मळी हती ते बौद्धेतर तथा मांसाहारी हतो. केवी जातनो खोराक बनाववो ए निश्चय नहीं करी शकवाथी तेणे एक पाडोशीने मोकल्यो हतो. अहीं खास जाणवानुं ए छे के आ फकरामां (४. १३—२०) चुन्द शब्द ज वपराएलो छे, तथा तेने ' लुहारना पुत्र ' तरीके ओळखाव्यो छे; परंतु आगळ उपर तेने ' आवुसो ' (४२) तथा ' भिक्खु ' (४१) पण कहेलो छे.

Aho ! Shrutgyanam

डॉ० होर्नलना जैनधर्म विषेना विचारो.

[अनुवादक—श्रीयुत नानालाल नाथाभाई शाह. बी. ए.]

[स्वर्गस्थ डॉ० ए. एफ्. आर. होर्नलनुं नाम पुरातत्त्ववेत्ताओमां सुप्रसिद्ध छे. तेमणे चंडकृत प्राकृत लक्षण अने उवासगदसाओ सूत्र ए बे जैन ग्रंथो संशोधित—अनुवादित करीने प्रकट कर्या हता. ते सिवाय केटलीक जैन पट्टावलिओ पण तेमणे प्रसिद्धिमां मुकी हती. तेओ सन् १८९७ मां बंगालनी एसियाटिक सोसायटीना प्रमुख नेमाया हता. सन् १८९८ मां ज्यारे ए सोसायटीनी वार्षिक सभा मळी हती त्यारे तेमणे पोताना प्रमुख तरीकेना भाषणमां खास करीने ' जैनीजम् एण्ड बुद्धिजम्' तथा 'इन्डियन आर्किओलॉजी एन्ड एपिग्राफि ' ए विषयो चर्च्या हता. आ नीचे आपेला विचारो तेमना ए ज भाषणमांथी लीधेला छे. आ मूळ भाषण प्रोसीडिंग्रास् ऑफ धी एसियाटिक सोसायटी ऑफ बेंगालना १८९८ ना फेब्रुवारीना अंकमां (पृ० ३९ थी ५३) प्रसिद्ध थएलुं छे.

सम्पादक.]

जैनधर्मविषेना आपणा ज्ञानमां गया वर्षोमां घणो ज वधारो थयो छे. हिंदुस्तानमां जैन अने बौद्ध ए बन्ने प्रतिस्पर्धी धर्मो होई सरखी रीते ज पुराणा छे, तो पण मध्यकालीन युगमां जैनधर्मनुं अस्तित्व ज नहीं हतुं एम आजपर्यंत घणा विद्वानोनुं मत हतुं; अने हजी पण तेना विश्वविख्यात प्रतिस्पर्धी—बौद्धधर्म—साथे सरखावतां मात्र नाम सिवाय तेनी विशेष माहिती जनसमुदायने नथी. परंतु हवे प्रो. जेकोबीए करेली गवेषणाओ, के जेमां प्रो. बुल्हर, में अने अन्य विद्वानोए पण मदद करी छे,[1] तेने लईने हिन्दुस्ताननना अति प्राचीन अने सुस्थित संप्रदायोमांनो ए पण एक छे एवी जातनुं पोतानुं अस्सल स्थान ए धर्मे पुनः प्राप्त कर्युं छे. ए ज गवेषणाओनो सारांश संक्षेपमां हुं आज अहीं आपवा इच्छुं छुं.

जैन आगमो विगेरेमां महावीरना नामथी ओळखाता महापुरुषने साधारण रीते जैन धर्मना प्रवर्तक तरीके मानवामां आवे छे. तेमनुं मूळ नाम वर्धमान हतुं. बौद्ध ग्रंथोमां तेमने ' नातपुत्त ' एटले के नात क्षत्रियोना राजपुत्र तरीके ओळखाव्या छे. बुद्धनी माफक महावीर पण राजकुलोत्पन्न हता. तेमना पिता सिद्धार्थ ते नात अगर नाय नामनी क्षत्रिय जातना ठाकोर हता, जे वैशाली नामना आबादी भर्या शहेरना कोल्लाग नामना परामां रहेता हता. आ कारणथी महावीरने वैशालीय पण कहेवामां आवे छे. वैशालिनुं आधुनिक नाम बैसाढ छे, जे पटनाथी उत्तरे २७ मैल दूर आवेलुं छे. जुना वखतमां ते शहेरना त्रण भाग हता; वैशाली, कुंडग्राम अने वाणियगाम; जेमां अनुक्रमे ब्राह्मण, क्षत्रिय अने वाणीया रहेता हता. हालमां आ सर्व नाश पाम्युं छे. परंतु तेनी निशानीओ आधुनिक बेसाड, बसुकुंड अने बनिया नामना गामोना रुपमां हजीए हयाती धरावे छे ते वखते तेमां गणस्वामिक नामनी विचित्र प्रजासत्ताक राज्यव्यवस्था चालती हती; एटले के त्यांना रहेवासी क्षत्रिय जातीना उमरावोनी बनेली एक समितिना हाथमां राज्यसत्ता रहेती हती. ए समितिमां एक सभापति रहेतो जेने राजा कहेवामां आवतो, अने तेनी मददमां एक उपसभापति अने बीजो सेनापति रहेतो. ए प्रजासत्ताक राज्यना ते समयना प्रमुख राजा चेटकनी त्रिसला नामे कन्या साथे सिद्धार्थना लग्न थयां हतां, अने तेना

---

१ आ बाबतनी विशेष हकीकत माटे प्रो० जेकोबीना ' आचारांग अने ' कल्पसूत्र ' तथा ' उत्तराध्यन ' अने 'सूत्रकृतांग सूत्र ' ना अनुवादो; तथा प्रो० बुल्हरनुं 'ईंडियन सेक्ट ओफ जैनस् ' अने मारुं ' उपासक दशा'नुं भाषांतर जुओ. वळी, १८७९ मां प्रसिद्ध थयेलुं प्रो० जेकोबीनुं ' कल्पसूत्र ' तथा 'ओरीजिन ओफ धी श्वेताम्बर एन्ड दिगम्बर' न मना जर्मन ओरीएन्टल सोसायटीना Volo XXXVIII जर्नलमां प्रसिद्ध थएलो तेमनो लेख वांचो.

Aho ! Shrutgyanam

જ પેટે ઈ૦ સ૦ પૂર્વે ૫૯૯ માં અગર તે અરસામાં મહાવીરનો જન્મ થયો હતો. આ ઉપરથી તેઓ એક ઉચ્ચ કુલમાં જન્મ્યા હતા, એ સ્વતઃ સિદ્ધ થાય છે. અને તેને લીધે જ બુદ્ધની માફક મહાવીર પણ શરુઆતમાં પોતાની જાતના ક્ષત્રિયો અને ઉચ્ચ કુળના લોકોના સંસર્ગમાં જ વધારે આવ્યા હતા. મહાવીરનાં લગ્ન યશોદા નામે સ્ત્રી સાથે થયાં હતાં. તે યશોદાને અનોજ્જા નામની પુત્રી થઈ જેનાં લગ્ન પણ એક એવા જ ઉચ્ચ કુલના જમાલી નામના પુરુષ સાથે કરવામાં આવ્યાં. આ જમાલી પાછળથી મહાવીરનો શિષ્ય થયો હતો. પોતાના પિતાના મરણ સુધી મહાવીર ગૃહસ્થવાસમાં જ રહ્યા. પિતાની સંપત્તિનો વારસો તેમના મોટા ભાઈ નંદીવર્ધને લીધા પછી, ત્રીસ વરસની ઉમરે, પોતાના કુટુંબના વૃદ્ધ પુરુષોની આજ્ઞા લઈને તેમણે યતિજીવનમાં પ્રવેશ કર્યો, કે જે જીવનને યુરોપની માફક ભારતવર્ષમાં પણ કુલના જ્યેષ્ઠ પુત્ર શિવાયના અન્ય યુવાનો માટે મહત્ત્વાકાંક્ષાઓ પૂરી કરવાના ક્ષેત્ર તરીકે માનવામાં આવે છે. કોલ્લાગમાં નાય વંશના ક્ષત્રિયોએ એક ધાર્મિક સંસ્થા સ્થાપી હતી, કે જેવી સંસ્થાઓ હજીએ આ દેશમાં દૃષ્ટિગોચર થાય છે. અહીં કલકત્તામાં આપણી નજીક આવેલા માણિકતોલામાં જ આવી એક સંસ્થા વિદ્યમાન છે જેને આપણે બધા જાણીએ છીએ. આવી સંસ્થાઓમાં મંદિર અને મુનિઓને રહેવા સારું ઉપાશ્રય હોય છે અને તેની ફરતું ઉદ્યાન હોય છે; કેટલીક વખતે તેમાં સ્તૂપ પણ હોય છે. આ બધાને સાધારણ રીતે ચૈત્યના નામથી ઓળખવામાં આવે છે, જો કે ખરી રીતે ચૈત્ય નામ ફક્ત અંદરના મંદિર માટે જ વાપરી શકાય. નાય વંશના આ ચૈત્યને દુઈપલાસ કહેતા, અને તેમાં તે વંશમાં પૂજ્ય મનાતા પાર્શ્વનાથના સંપ્રદાયના સાધુઓ આવીને વસતા હતા.

પોતાના યતિજીવનના આરંભકાળમાં મહાવીર સ્વાભાવિક રીતે જ દુઈપલાસ ચૈત્યમાં વસતા પાર્શ્વનાથના સંપ્રદાય તળે રહેવા લાગ્યા; પરંતુ ત્યાગ વિષેના તેમના વિચારો, જેમાં દિગમ્બરત્વ મુખ્ય હતું, તેને લીધે, એ સંપ્રદાયના નિયમો તેમને રોચક ન લાગ્યા હોય એમ જણાય છે. તેથી એકાદ વર્ષ પછી તેઓ ત્યાંથી નીકળી ગયા, અને નિર્વસ્ત્ર (દિગંબર) થઈને બિહારના દક્ષિણ તથા ઉત્તર પ્રાંતમાં, તેમ જ કદાચિત્ હાલના રાજમહાલ સુધી તેઓ ખૂબ ફર્યા હતા. નગ્નવૃત્તિવાળી દીક્ષા લેવા તૈયાર થાય એવા અનુયાયીઓ મેળવતાં તેમને બાર વરસ લાગ્યા હોય તેમ જણાય છે. એ પછી તેમને 'મહાવીર'નું ઉપનામ મળ્યું અને 'જિન' તરીકે તેઓ ઓળખાવા લાગ્યા. આ 'જિન' પદ ઉપરથી જ જૈન અને જૈનધર્મ એવાં નામો પડાયાં છે. મહાવીર પ્રથમ પાર્શ્વનાથના પંથમાં દીક્ષિત થયા હતા, તેથી તેમનો ઉલ્લેખ જૈન તીર્થંકરોની પરંપરામાં પાર્શ્વનાથની પછીના તીર્થંકર તરીકે કરવામાં આવે છે. જૈન મંદિરોમાં પાર્શ્વનાથની પ્રતિમા સ્થાપવાનું પણ આ જ કારણ છે. જૈન મંદિરોવાળા પવિત્ર પર્વતનું પાર્શ્વનાથ પહાડ (પારસનાથ-હિલ) એવું નામ પણ આ ઉપરથી જ પડેલું છે. પોતાની જીંદગીના છેવટના ત્રીસ વરસોમાં મહાવીરે ધાર્મિક ઉપદેશ આપ્યો છે, તથા પોતાના સંપ્રદાયની વ્યવસ્થા કરી છે. એ કામમાં તેમને, તેમના માતૃપક્ષને લઈને સગપણનાં સંબંધમાં જોડાએલા ઉત્તર અને દક્ષિણ બિહારપ્રદેશમાંના વિદેહ,મગધ અને અંગ દેશના રાજાઓની ઘણી સહાયતા મળી હતી. આ દેશોમાં આવેલા શહેરો અને ગામડાંઓમાં જ ઘણે ભાગે તેમણે પોતાનું ધાર્મિક જીવન ગાળ્યું હતું. પરંતુ નેપાળની હદ ભણી આવેલી શ્રાવસ્તી નગરી તેમ જ પારસનાથની ટેકરી સુધી પણ તેમણે પોતાનું ભ્રમણ લંબાવેલું ખરું. આ ઉપરથી એમ કહી શકાય કે તેમની ધાર્મિક મુસાફરી તેમના સમકાલીન બુદ્ધના જેટલી જ લગભગ હતી. સાધારણ રીતે તેમના જીવનમાં એવા કોઈ ખાસ બનાવો બનેલા નથી. બુદ્ધ તેમના એક ભયંકર પ્રતિસ્પર્ધી હતા; તો પણ તેમની સાથે કોઈ જાણવા જેવો વાદ–વિવાદ થયો હોય એમ લાગતું નથી. જૈનોના ગ્રંથોમાં બુદ્ધનો ભાગ્યે જ ઉલ્લેખ આવે છે, પ્રત્યુત તે ગ્રંથોમાં તત્કાલીન એક બીજા જ મોટા ધર્મગુરુ સાથે મહાવીરને થએલા ભયંકર વૈરનો ઉલ્લેખ કરેલો છે. આ ધર્મગુરુ તે ગોસાલ છે. જે એક મંખલી (ભિક્ષુ) નો પુત્ર હોઈ આજીવિક

Aho ! Shrutgyanam

नामना साधुओनो आचार्य हतो. आ आजीविक साधु-संप्रदाय ते समय तेम ज तदनंतर पण एक घणो आगळ पडतो संप्रदाय हतो. तेनो उल्लेख अशोकना ई० स० पूर्वे २३४ ना स्तंभ-लेखमां पण आवे छे. परंतु त्यार बाद ते संप्रदाय नष्ट थयो लागे छे. ज्यारे महावीर प्रारंभमां नग्नावस्थामां फरवा लाग्या त्यारे आ गोसाल तेमनो पहेलो शिष्य थयो हतो एम लागे छे. पण छ वर्ष तेओ साथे रह्या पछी ते बेऊमां विखवाद उत्पन्न थयो. तेथी गोसाल तेमनाथी जुदो पड्यो अने एक नवा ज सम्प्रदायनो जाते गुरु बन्यो; अने ते पण महावीर करतां बे वर्ष पहेलां. पोतानो शिष्य पोतानी पहेलां गुरुपदने प्राप्त थयो, आथी स्वाभाविक रीते ज ते बेऊमां वैर थयुं.[२] गोसाल शिवाय महावीरने मुख्य ११ शिष्यो हता जे सघळा भक्तिपूर्ण रह्या हता, अने तेमणे उपदेश आपी एकंदर ४२०० श्रमणो बनाव्या हता. आ बधामांथी महावीरनी पाछळ जीवतो रहेनार सुधर्मन् नामनो शिष्य हतो जेना लीधे हाल सुधी जैनधर्म चाल्यो आवे छे. महावीरनुं निर्वाण तेमना ७२ मा वर्षे पटना प्रांतमांना पावा नामना गाममां थयुं हतुं के जे स्थान जैन लोकोमां हाल पण पवित्र मानवामां आवे छे. तेमना जन्म अने निर्वाणनी साधारण रीते मनाती तिथिओ ई० स० पूर्वे ५९९ अने ५२७ छे. अने हालनी शोधखोळो उपरथी पण ए बहु खोटी लागती नथी. आ प्रमाणे बुद्धनी मितिओ पण क्रमथी ई० स० पूर्वे ५५७ अने ४७७ छे. एटलुं तो निश्चित ज छे के आ बन्ने समकालीन हता, अने महावीर बुद्ध करतां पहेलां निर्वाण पाम्या हता. तेमनुं प्राबल्य पण बुद्ध जेटलुं ज हशे, कारण के तेओ पण पोतानो एक खास सम्प्रदाय चलावी शक्या छे. तेमणे खास करीने पार्श्वनाथना पंथने तो पोताना मतमां ज मेळवी लीधो हतो के जेथी पार्श्वनाथना पंथनुं निर्ग्रंथ नाम तेमना पंथने पण लगाडवामां आव्युं हतुं. ए बेऊना मतमां फक्त न्यूनाधिक वस्त्रो पहेरवा विषे ज मुख्य फेर पडतो हतो. पार्श्वनाथना पंथना साधुओ ते वखते तो आ बाबतमां एकमत थई गया हता. परंतु वस्त्र विषेनो आ मतभेद केटलाक समयसुधी गूढावस्थामां रहीने थोडा सैका बाद ए फरीथी जागी उठ्यो, अने आगळ उपर आपणे जोईशुं तेम, तेना लीधे श्वेताम्बर अने दिगम्बर एवा बे खास विभाग पडी गया. पहेलां जैन लोको निर्ग्रंथ अगर निगण्ठना नामथी ओळखाता हता. उपर कहेला ई० स० पूर्वे २३४ ना अशोकना स्तंभ-लेखमां पण आ ज नाम तेमने माटे वापरेलुं छे. त्यार पछीना घणा सैकापर्यंत पण आ ज नाम चाल्युं आव्युं हतुं. कारण के ई० स० पछीना सातमां सैकामां आवेलो चीनी मुसाफर हुएन्त्सांग पण तेमने ए ज नामथी ओळखे छे. आ नाम केवी रीते उडी गयुं अने तेने स्थाने "जैन" नाम केम प्रचलित थयुं ते हजीपर्यंत समजायुं नथी.

अहिंया क्राईस्ट अने महावीरना साम्य विषे थोडीक टीका करवानुं मने मन थाय छे. ते बेऊने बार शिष्यो हता के जेमांथी बेऊने एक शिष्याभास हतो. आवी जातना केटलाक समान बनावोने लीधे बौद्धधर्म अने ईसाईधर्म वच्चे जेम परस्परनी सापेक्षिता बताववामां आवे छे, तेम जैन अने ईसाई वच्चे बतावावानुं काम कोईए करेलुं नथी. आवा बनावोने घणी वार बहु महत्त्व आपवामां आवे छे. उपर्युक्त बनाव पण जरा विचारास्पद छे, जो के आवा छूटा छवाया बनावो बहु प्रमाणभूत तो न ज लेखाय.[३] जैन अने बौद्धधर्मनी तपास चलावतां मालुम पडे छे के महावीर अने बुद्धना जीवन तेम ज सिद्धांतोमां घणी नानी मोटी बाबतोमां साम्य रहेलुं छे. आ साम्य उपरथी ज महावीरना वृत्तान्तमां तथा तेमनी

---

२ गोसाल विषे प्रो० जेकोबीना विचारो सहेज जुदा छे. तेमना मत प्रमाणे गोसाल अने महावीर बन्ने स्वतन्त्र मतस्थापक हता के जेओ पात पोताना पंथोने भेगा करवाना हेतुथी ज ६ वर्ष साथे रह्या हता, परन्तु संघटित पंथनो कोण नेता थाय ते विषयमां तकरार पडतां तेओनी वच्चे विरोध उत्पन्न थयो हतो.

३ त्रण वेपारीनी वात विषेना साम्य वाळा आवा एक बीजा बनाव माटे जुओ प्रो० जेकोबीनो उत्तराध्ययनसूत्रनो अनुवाद, पान २९.

Aho ! Shrutgyanam

पहेलां जैन धर्मना अस्तित्वमां घणाओने अश्रद्धा रहेली हती. परंतु उपर आपेली महावीरना जीवननी रूपरेषा उपरथी जणाशे के तेमनुं जीवन बुद्धना जीवन करतां चोक्कस भिन्न ज छे.

सिद्धान्तो अने व्रत—नियमोना साम्यनी बाबतविषे बोलतां पहेलां मारे जणाववुं जोईए के बौद्ध अगर जैन ए खरी रीते धर्मो नथी;परंतु एक जातनी साधु-संस्थाओ छे. युरोपमां जेम डॉमिनिकन्स अने फ्रान्सीस्कन्स जेवा साधुसंप्रदायो छे तेवा आ पण भिक्षुसंप्रदायो छे. बंने ई. स. पूर्वे पांचमां सैकाना आरंभमां अने छट्ठा सैकाना अंतमां स्थपायेला छे. ए वखते उत्तर हिन्दमां धार्मिक चळवळ पूरजोशमां चालती हती. एवा घणा संप्रदायो ए वखते उद्भव्या हता. परंतु तेमां आ बे ज प्रचलित रही शक्या. त्रीजो संप्रदाय 'आजीविको' नो हतो, जेना विषे में उपर कहेलुं ज छे. आ उपरथी एम नहीं मानवानुं के आवा भिक्षु संप्रदायो ते वखतनी परिस्थितिमां खास सुधारारूप अगर नवा ज हता. आवी संस्थाओ मूळ चालता आवेला ब्राह्मण धर्ममां पण हती. ब्राह्मण धर्ममां चार आश्रमो विहित छे; जेम के विद्याभ्यासने माटे ब्रह्मचर्याश्रम, पछी गार्हस्थ्य, पछी एकांतवास माटे वानप्रस्थ, अने त्यार बाद छेल्लां वर्षो माटे संन्यस्त. आ संन्यासीओनी ढबे ज जैन अने बौद्धना संप्रदायो ई. स. पूर्वे छट्ठा सैकामां अस्तित्वमां आव्या हता. फेर मात्र एटलो ज के जैनो तथा बौद्धोनी माफक ब्राह्मणोए मोटी भिक्षुसंस्थाओ रची न हती. ए धर्मोए ब्राह्मण संन्यासीओना विधि-नियमोनुं ज अनुकरण कर्युं हतुं. अने तेथी ज बौद्ध अने जैनोमां साम्य होवानुं कारण मळे छे. अहिंसानो सिद्धान्त जे बौद्धो अने जैनोमां खास अगत्यनो गणाय छे ते मूळ ब्राह्मण धर्मना संन्यासीओमांए पळातो हतो. काळक्रमे ब्राह्मणधर्ममां एवी एक वृत्ति उद्भवी के संन्यस्त आश्रममां ब्राह्मण शिवाय बीजा लोको दाखल थई शके नहीं; अने प्राय: ए कारणने लीधे ज, ब्राह्मणेतर ज्ञातिओ माटे आ जैन अने बौद्ध संन्यासी आश्रमो स्थपाया हता. एमां पण प्रथम तो क्षत्रिओने ज अवकाश हतो. परंतु पाछळथी, बीजा लोकोने पण दाखल करवामां आव्या. ब्राह्मण संन्यासीओ आवा ब्राह्मणेतर संन्यासी वर्गो तरफ घृणानी नजरथी जुवे, ए स्वाभाविक छे, अने तेथी तेमनामां परस्पर भेदभाव अने विरोध उत्पन्न थाय ए पण तेटलुं ज स्वाभाविक छे. आ कारणथी ब्राह्मण संन्यासीओनी जेम जैन अने बौद्ध श्रमणोए एकला कर्मकांडने ज तिलांजली आपी अटकी नहीं रह्या, पण तेमणे एक पगलुं आगळ जई वेदाध्ययन पण बंध कर्युं, के जेने लीधे तेओ खरी रीते ब्राह्मणधर्मथी बिल्कुल छूटा पड्या. जैनधर्म अने बौद्धधर्म ए सुधारक पक्षनी चळवळो होई खास करीने तेओ वर्णाश्रम सामे बंड उठावनार छे, एवुं जे मत अद्यापि प्रचलित जणाय छे ते तद्दन खोटुं छे. तेओ तो फक्त ब्राह्मण संन्यासीओना स्वातंत्र्य सामे ज विरोध उठावे छे. वर्णाश्रम धर्म उपर तेओनो धसारो नथी. तेमना संप्रदायोमां पण, जो के उघाडी रीते बधाने अवकाश छे एम जणाववामां आवे छे, छतां घणा भागे मात्र उच्च वर्णोने ज दाखल करवामां आवे छे. एक वात खास जाणवा जेवी छे, के आ पन्थोने माननारा गृहस्थ लोको साधारण रीते धार्मिक बाबतोमां पोताना पंथना व्रतनियमोने ज अनुसरनारा हता, तेम छतां, गर्भाधान, लग्नविधि, उत्तरक्रिया विगेरे संस्कारोमां तेओ ब्राह्मण-धर्मना उपाध्यायोने निमंत्रता हता. बौद्ध अगर जैन भिक्षुओ ते लोकोना धर्माचार्य तरीकेनुं काम करता, परंतु तेमनुं गोरपदुं तो ब्राह्मणो ज करता रहेता हता.

आ उपरथी जणाशे के बौद्ध अने जैनधर्ममां घणुं साम्य होवानुं कारण तेमना वखतनी परिस्थिति ज हती. बाकी सिद्धांत अने प्रक्रिया विषयक तेओमां घणी भिन्नताओ छे, अने ते एटली बधी तथा एटली झीणवटवाळी अने पारिभाषिक छे के आवा नाना लेखमां हुं भाग्ये ज तेनुं विवेचन करी शकुं. तेम ज तेवुं विवेचन घणाने नीरस पण लागे. जेमने तेमां रस पडे एम होय तेमने प्रो. जेकोबीनां जैन सूत्रोना भाषांतरोनी प्रस्तावनाओ जोवा मारी भलामण छे. बे बाबतो के जेना विषेनो उल्लेख बीजे कोई ठेकाणे थयो नथी ते, मारा मत प्रमाणे,

Aho ! Shrutgyanam

आ बे धर्मोना सिद्धांत अने प्रक्रियामांनो खास तफावत जणावी शके छे. 'त्रिरत्न' नामनो प्रख्यात शब्द बौद्धो अने जैनोने सामान्य छे, जेनो अर्थ बौद्धो बुद्ध, धर्म अने संघ करे छे; अने जैन लोको सम्यक्दर्शन, सम्यक्ज्ञान, अने सम्यक्आचार करे छे. बेऊ धर्मना आ मुद्रालेखो खास विचारसूचक छे. बौद्ध लोकोनो मुद्रालेख आधिभौतिक अर्थवाळो छे अने जैनोनो आध्यात्मिक अर्थमां छे. पहेला अर्थ उपरथी जणाय छे के बुद्ध धर्ममां व्यावहारिक अने जीवंत उत्साह भरेलो छे, अने बीजा अर्थ उपरथी जणाय छे के जैन धर्म विचारोमां वहनारो अने असाहसिक छे. आ अनुमानने बेऊ धर्मना इतिहासथी समर्थन मळे छे. पोताना चपळ अने प्रवर्तक उत्साहथी बौद्धधर्म, हिंदुस्ताननी बहार प्रसर्यो, अने फक्त एक भिक्षु संप्रदायमांथी विकासित थईने सिलोन, बर्मा, तिबेट, तथा अन्य भागोमां वधीने एक महान् धर्म तरीके परिणत थयो; पण जैनधर्म शान्तवृत्तीथी मात्र हिन्दमां ज चालु रह्यो. बीजो शब्द जेनो जैनो अने बौद्धो बंने उपयोग करे छे ते 'संघ' शब्द छे. जैनोना संघमां चार प्रकारना माणसोनो समावेश थाय छे—जेम के भिक्षु, भिक्षुणी, श्रावक अने श्राविका. बौद्ध लोकाना संघमां फक्त भिक्षुओ अने भिक्षुणीओनो ज समावेश थाय छे. ते पंथमां इतर लोकोने कोई खास नामथी संप्रदायमां जोडवामां आव्या नथी. पोताना पंथना लोको साथे कोई प्रकारना व्यवस्थित संबंध विना कोई पण भिक्षुसंघ नभी शके नहीं, ए स्पष्ट ज छे. कारण के पोताना संप्रदायना अस्तित्वनी खातर पोताना पंथना लोको पासेथी द्रव्य विगेरे मेळववानी दरेक संघने खास करीने जरूर रहे छे ज. पण ए बेऊ पंथोनुं वर्तन पोताना उपासको तरफ तद्दन भिन्न भिन्न प्रकारनुं हतुं. बौद्धोमां भिक्षुओनी बाबतमां कांई कहेवा—करवानो बीजाओने कोई अधिकार न हतो. लोकोने संघमां कोई विधिपुरस्सर दाखल करवामां आवता न हता. तेमने कोई जातनी प्रतिज्ञाओ लेवानी न हती. तेमना आचारोने माटे कोई विधि—निषेधनो खास ग्रंथ न हतो. तेमने माटे कोई विशिष्ट धर्मक्रिया करवामां आवती नहीं; तथा कोई दुष्टने बहिष्कृत पण करवामां आवतो नहीं; टुंकाणमां ए ज के तेमना पंथना साधारण लोकोनी स्थिति एवी शिथिल तथा असंबद्ध हती के बौद्ध पंथनो अनुयायी साथे साथे बीजा पंथनो पण होई शके; कारण के ते माटे कोई जातना खास नियमो न हता. हुं बुद्धना महान् संघमांनो एक छुं तथा तेना धार्मिक फायदाओ हुं उठावुं छुं; आवी मगरुरीनी लागणी राखवानो अधिकार बौद्ध उपासकोने न हतो. जैनोना श्रावकादिनी स्थिति आथी जुदी ज छे. बौद्ध उपासक करतां तद्दन जुदी ज रीते तेओ पोताना संघना खास आवश्यक अंग तरीके गणाता; अने पोतानो गाढ संबंध भिक्षुओ साथे जोडाएलो छे एम तेओ मानता. आ बाबतमां बौद्धधर्मे हिमालय जेवडी मोटी भूल करी छे; अने आ भूलने लीधे ज ते हिंदुस्तान के ज्यां तेनो खास प्रादुर्भाव थयो हतो त्यांथी, जडमूळथी जतो रह्यो छे. आगळ वधतां ई. स. ना सातमा सैकाथी असरकारक बनता जता लोकोना धार्मिक वळणमां फेरफार थतो होवाने लीधे प्रख्यात चीनी मुसाफर हुएन्त्संगना समयमां बौद्ध धर्ममां ओट थतो गयो; अने तेमां पण काळक्रमे नवमा सैकामां शंकराचार्ये प्रकटावेली ब्राह्मण धर्मनी संस्थाओना सचोट विरोधने लीधे पड्या पर पाटु मारवा जेवुं थयुं. आखरे ज्यारे बारमा अने तेरमा सैकामां भारतवर्ष उपर, उच्छेदक मुसलमानोनी स्वारीओ थवा लागी त्यारे, तारानाथ अने मिन्हाजुद्दीनन्नी तवारीखोमां जणाव्या प्रमाणे थोडा घणां बाकी रहेला बौद्ध विहारो तथा चैत्योने सखत आघात पहोंच्यो, जेथी बौद्धधर्म केवळ छिन्नभिन्न दशामां आवी अंते नाश पाम्यो. तेणे मूळथी ज पोताना उपासकोने भिक्षुसंघसाथे गाढ संबंधमां राख्या नहीं, तेम ज पाछळथी पण ते संबंध योजाई शक्यो नहीं, तेथी करीने साधारण उपासको पाछा ब्राह्मण धर्ममां जोडाई गया अने तेथी ब्राह्मणो केवळ गोरपदुं करवाने बदले, पुनः बौद्ध धर्मना पहेलांना समय प्रमाणे गोरपदुं तेम ज आचार्यपदुं बंने करवा लाग्या. फक्त थोडाक लोको, अने खास करीने बंगाळना केटलाक लोको, ब्राम्हणधर्ममां न भळतां बुद्ध

तथा भिक्षुसंघ विना पण बौद्ध धर्मनी पतित अने विशीर्ण अवस्थामां पड्या रह्या के जेमने जोतां साधारण रीते पहेलांना जाहोजलालीवाळा बौद्धधर्मनुं भाग्ये ज कोईने भान थाय. बौद्धधर्मना आ अवशेष रहेला उपासकोनी शोध करवानुं मान आपणा जोईन्ट फिलोलोजिकल सेक्रेटरी पंडित हरप्रसाद शास्त्रीने घटे छे. तेमणे ज प्रख्यात बौद्ध त्रयीमांना 'धर्म' ना अनुयायी तरीके ते लोकोने शोधी कहाड्या छे, अने १८९५ ना आपणी संस्थाना जर्नलमां तेमनी हकीकत प्रसिद्ध करी छे. आ लोको उपरथी ज धर्मतोला स्ट्रीट आवुं नाम घडायुं छे, तथा हजी पण जाऊं बाजार स्ट्रीटमां तेमनुं धर्मचैत्य मोजूद छे.

बौद्ध धर्मना आ प्रकारना विनाशकाळ दरम्यान जैन धर्मनी स्थिति तद्दन जुदी ज हती. अने तेथी ते हजी पण निर्विघ्नपणे चाल्या करे छे, तथा तेना साधुसंघो अने श्रावकसंघो हजी पण पश्चिम तथा दक्षिण हिन्दमां अने बंगालमां दृष्टिगोचर थाय छे. तेमनी एवी एक संस्था आपणी नजीकमां आवेला माणिकतोला परामां ज मोजुद छे. जुना वखतनी धार्मिक भिक्षुसंस्थाओमांथी हाल जीवती जागती एवी फक्त ए एक जैनधर्मनी ज संस्था छे. अलबत् आवी ऐकांतिक संस्थाना इतिहासमांथी जनसमाजने रस पडे एवो खोराक तो भाग्ये ज मळी शके; तो पण जे एक बाबत आपणा ध्यान उपर खास धसारो करी शके छे ते ए छे, के आ धर्म पण श्वेताम्बर अने दिगंबर एवा बे पंथमां विभक्त थई गएलो छे. आ विभाग थवानुं कारण ए शब्दो उपरथी ज सूचित थाय छे. एटले के न्यूनाधिक वस्त्रो पहेरवाना विखवाद उपरथी आ भागो पडेला छे. आ उपरांत पाछळथी सिद्धांत अने प्रक्रियामां पण बेऊ संप्रदायोने केटलेक भेद थएलो छे, पण ते जनसमाज माटे विशेष रसोत्पादक नथी. जैनधर्मना आ बंने संप्रदायो विभक्त तेम ज विरोधी अवस्थामां रह्या करे छे. बेऊनुं साहित्य पण भिन्न छे; परंतु 'अंगो' अने 'पूर्वो' ना नामे जे जुनुं धार्मिक साहित्य छे ते मात्र श्वेताम्बरोनुं ज गणाय छे. वखत जतां आ बे विभागोमांथी संप्रदायो अने साधुओना अनेक फांटा निकळ्या छे. बौद्धोनो तथा जैनोनो ऐतिहासिक शोख एकसरखी रीते वृद्धिंगत थएलो छे. तेओए नियमित रीते पोताना धर्माचार्यो तथा गुरुओनी पट्टावलीओ जाळवी राखेली छे, जेमांनी घणी खरी प्रो. बुल्हरे, डॉ. क्लाटे, तथा मे इंडियन एन्टीक्वेरीमां अने एपिग्राफिआ इंडिकामां प्रसिद्ध करी छे. विशेषमां तेमना धार्मिक तथा अन्य पुस्तकोमां पण ऐतिहासिक बाबतोनी नोंधो वारंवार जोवामां आवे छे. आवी बाबतोने उपर्युक्त विद्वानो उपरांत प्रो. वेबर तथा प्रो. भाण्डारकरे पण जुदी जुदी कादीने संगृहीत करी छे.[४] ए साहित्यमांथी हजी पण एवी घणी बाबतो तारवी कढाय तेम छे, जेनी टूंक रुपरेषा हुं अहिं नीचे वर्णवुं छुं.

महावीरनुं निर्वाण थयां पछी बीजा सैकामां—ई०स० पूर्वे लगभग ३१० मां—मगध देशमां एटले हालना बिहार प्रांतमां द्वादश वार्षिक दुकाल पड्यो. ते वखते जैनधर्म बिहारप्रांत ओळंगी बहार नीकळयो हतो एम जणाय छे. ते समये त्यांनो राजा मौर्यवंशीय चंद्रगुप्त हतो. तथा अद्यापि अविभक्त जैनधर्मना आचार्यपदपर भद्रबाहु प्रतिष्ठित हता. दुकाळनी आफतमां केटलाक साधुओ साथे भद्रबाहु दक्षिण तरफ कर्णाटकमां नीकळी गया अने मगधमां तेमनी जग्या स्थूलभद्र भोगववा लाग्या. लगभग दुकाळना अंतमां, पण भद्रबाहुनी गेर हाजरीमां, पाटलीपुत्र (पटना) मां एक सभा थई जेणे अग्यार अंगो तथा चौद पूर्वो के जेनो समावेश बारमा अंगमां थाय छे ते भेगां कर्यां. दुर्भिक्षना आपत्ति-समयमां जे जे हरकतो पेदा थई तेनी असर जैन धर्मनी प्रक्रिया उपर पण थई. साधुओने माटे साधारण एवो नियम हतो के तेमणे नग्न ज रहेवुं जोईए; जो के अपवादरूपे केटलाक नबळा साधुओने अमुक वस्त्र पहेरवानी रजा पण आपवामां आवेली हती. मगधमां रहेला ते केटलाक साधुओने वखतनी जरुरीयात

४. जुओ प्रो. वेबरनुं 'केटलाग ऑफ जैन मेन्युस्क्रीप्टस्' १८८८ ने ९१; तथा प्रो. भांडारकरनी रीपोर्ट ऑफ धी सर्च फॉर मेन्युस्क्रीप्टस् १८८३-४. विशेष हकिकत माटे वळी जुओ. प्रो. जेकोबीनी जैनसूत्रोनी प्रस्तावना (भाग २).

Aho ! Shrutgyanam

प्रमाणे एम लाग्युं के नग्न दशा छोडी आपणे हवे श्वेत वस्त्र पहेरवां जोईए. एथी उलटुं केटलाक साधुओ धर्मांध-ताथी ए विचारने वश न थतां पोताना वर्गना साधुओने माटे निर्वस्त्र रहेवानो फरजीयात विधि बनाव्यो, अने तेमनाथी अलग थई दूर जता रह्या. दुर्भिक्ष पछी ज्यारे फरीथी देश आबाद थयो त्यारे ते पेला साधुओ पाछा आव्या परन्तु तेमनी गेरहाजरीमा श्वेतवस्त्र पेहरवानो नियम रूढ थई गएलो होवाथी तेओ त्यांना साधुओ साथे भेगा मळी शक्या नहीं. आ रीते दिगम्बरो अने श्वेतांबरोनी भिन्नताना पायो नंखायो. आना परिणामे पाटलीपुत्रमां संगृहीत थएला धार्मिक ग्रंथोने दिगम्बरोए मान्य राख्या नहीं अने तेथी तेओ कहेवा लाग्या के अमारा 'पूर्वो' अने 'अंगो' नष्ट थई गयां छे. शरुआतमां आ विभाग बहु महत्त्वनो न हतो परन्तु केटलाक सैका पछी एटले लगभग ई. स. ७९ अगर ८२ मां आ विभागोए चुस्त-रूप धारण कर्युं. विभक्त थवा विषे बेऊ पक्षनुं ऐकमत्य छे; परन्तु विभक्त थवाना वर्ष माटे ३ वर्षनी भिन्नता जोवामां आवे छे. आ समये विहार प्रांतमांथी नीकळीने जैनधर्मे घणी दूर सुधी पोतानो प्रसार कर्यो हतो तथा पोतानी केटलीक संस्थाओ अने पक्षो वधार्या हता; अने आपणे आगळ जोईशुं के आ वखते तेमणे मथुरामां पण एक सारी संस्था स्थापी हती. तवारीख उपरथी एम जणाय छे के, आ प्रमाणे विस्तृत थवानी प्रवृत्ति खास करीने, ई. स. पहेलानां त्रीजा सैकामां श्वेताम्बराचार्य सुहस्तिन्ना समयमां वधी हती. कारण के ते वखतनी पट्टावलीमां विभागो अने उपविभागोनी असाधारण भरती जोवामां आवे छे. अने एटलुं तो निश्चित ज छे के ई. स. पहेलांना बीजा सैकानी मध्यमां जैनधर्म ओरीसाना दक्षिण भाग सुधी पहोंची गयो हतो. केम के कटक आगळना खंडगिरि पर्वतना खारवेलना लेखमां जैनोनो खास उल्लेख थएलो छे.

काळक्रमे पाटलिपुत्रमां संगृहीत थएला जैन सिद्धान्तो फरी केटलीक अव्यवस्थामां पड्या, अने हस्तलिखित प्रतोना अभावने लीधे तेमना नाशनी पण तैयारी थवा लागी. तेथी तेमने व्यवस्थित करवानी जैन समाजने अत्यंत आवश्यकता लागी अने तेटलामाटे आखरे संप्रदायना एक मुख्य आचार्य देवर्धिनी देखरेख तळे गुजरातमां आवेला वल्लभी नगरमां एक सभा भरवामां आवी.

आ दंतकथा उपरथी एम जणाय छे के श्वेताम्बरोए सुरक्षित राखेला जैन सिद्धान्तग्रंथो ई. स. पहेलांना लगभग चोथा सैकाना अंत अथवा त्रीजा सैकाना प्रारंभ जेटला जुना छे, कारण के पाटली पुत्रनी सभा लगभग ई. स. पूर्वे ३०० मां थएली; अने ते वखते ज आ आगमो संगृहीत थया हता. आ हकीकत उपरथी सूचित थाय छे के ए ग्रंथो ते वखत पहेलां पण विद्यमान होवा जोईए अने जैन दंतकथा पण एम कहे छे के महावीरे पोताना मुख्य शिष्य गणधरोने प्रथम 'पूर्वो' शीखव्यां हतां अने ते पूर्वो उपरथी गणधरोए नवां ' अंगो ' बनाव्यां हतां. ' पूर्वो ' एटले 'पहेलां'ना ग्रंथो अर्थात् ' अंगो ' नी पहेलां थएला ग्रंथो. पाटलीपुत्रनी सभा वखते, जैनोना कहेवा प्रमाणे ते ग्रंथोमांनो केटलोक भाग नाश पाम्यो हतो, अने तेथी बाकी रहेला भागने बारमा ' अंग ' तरीके संगृहीत करवामां आव्यो. एक जैन दंतकथा एम जणावे छे के मूळमां जे सिद्धान्त ग्रंथो हता, तेमांथी बाकी रहेला ग्रंथोने पाटलीपुत्रनी सभामां पुनः संशोधित करी ते समयने अनुकूल आवे तेवा नवा रूपमां गोठववामां आव्या.

जैन धर्म अने तेना इतिहास विषे आ प्रमाणे दंतकथाओ छे. त्रीसेक वर्ष पहेलां आ दंतकथाओने बिलकुल बेवजूद गणवामां आवती हती, परन्तु हवे तेवी वृत्तिने, जैन साहित्यमां देखाई आवती ऐतिहासिक चोकसाई अने झीणवटने लीधे सखत फटको लाग्यो छे. गत वर्षोमां प्रो. जेकोबी, प्रो. ल्युमॅन अने में प्रसिद्ध करेलां जैन पुस्तको उपरथी आ दंतकथाओनी सत्यता विशेष मालुम पडती जाय छे. प्रो. जेकोबीए जैन सिद्धान्त ग्रंथोनी भाषा अने शैलीनी बारीक तपास करीने तेमना पुराणपणा विषेनुं पोतानुं प्रामाणिक मत प्रसिद्ध कर्युं छे; तो पण ज्यां सुधी आ दंतकथाओ विषे अचूक अने

स्वतंत्र पुरावा मळी शके नहीं त्यां सुधी तेमना उपर संपूर्ण विश्वास राखी शकाय नहीं, ए स्वाभाविक ज छे. परंतु हवे आवा स्वतंत्र पूरावानी शोधो पण गया वर्षोमां थएली छे, अने तेनुं मान वीएनानां प्रो. बुल्हरनी तीव्र बुद्धिने घटे छे. ई. स. १८७१ मां मेजर जनरल सर ए. कनींग्हामे[५] मथुराना कंकाली टीलाना खंडेरोमांथी शोधी काढेला लेखोनुं पुनर्निरीक्षण करीने प्रो. बुल्हरे तेमांना केटलाक लेखोमां जैनोना केटलाक आचार्यो अने विभागोनां खास नामो शोधी काढ्यां; अने तेथी ते वखतना आर्कीओलॉजीकल सर्व्हे खातान वडा डॉ० जे बर्गेस द्वारा ते टेकराने बराबर खोदाववानी व्यवस्था करवामां आवी, जे मुजब डॉ० फुहररना अध्यक्षपणा नीचे १८८९ थी १८९३ सुधी अने पुन: १८९६ मां तेनुं खोदाण काम करवामां आव्युं. आथी बीजा घणा नवा लेखो हाथ लाग्या अने तेनी नकलो डॉ० बुल्हर तरफ रवाना करवामां आवी. तेमणे ते लेखोनुं परीक्षण करी तेमांथी केटलाक खास खास लेखो चूंटी काढ्या अने वीएना ओरीएन्टल जर्नलमां तथा एपीग्राफीआ इंडीकाना प्रथम बे पुस्तकोमां प्रसिद्ध कर्या. आमांना केटलाक लेखो घणा उपयोगी छे. कारण के तेमां इंडो सिथीयन संवत् एटले के इंडो–सिथीयन राजा कनिष्क, हविष्क अने वसुदेव उपयोग करेला संवतनी मितिओ आपेली छे. आ राजाओ ई० स० ना प्रथम बे सैकाओमां थएला छे अने तेमनुं राज्य हिंदना उत्तर–पश्चिम किनाराथी ठेठ मथुरासुधी प्रसर्युं हतुं. आ लेखोनी मिति, ते संवत्‌ना ५ था ९८ मां वर्ष सुधीनी छे, जे ई० स० ना ८३ थी १७६ वर्षनी बराबर थाय छे. आमांना घणा लेखो तो जैन प्रतिमाओनी बेसणी ऊपर कोतरेला छे. तेमां ते मूर्ति बनवनार श्रावक अगर श्राविकाओनां, जे मंदिरमां ते मूर्ति स्थापित करवामां आवी तेनां, जे साधु अथवा साध्विओना उपदेशथी ए कार्य करवामां आव्युं तेनां अने जे गण अगर संघना तेओ अनुयायी हता तेनां नामो आपेलां छे. आ समर्पणना लेखोमांथी घणी उपयोगी बाबतोना विश्वसनीय पुरावाओ मळी आवे छे.

प्रथम तो आ लेखोमां उपदेशक तरीके उल्लिखित साधु अगर साध्विओना जे जे गण–संघ आदिनां नामो एमां आपेलां छे ते गणादि ई. स. ना पहेला अने बीजा सैकामां विद्यमान हता ए बाबतनो पुरावो कल्पसूत्र अने बीजा जैन ग्रंथोमांथी आपणने मळी आवे छे. जे कौटिक नामना गणनो एमां वारंवार उल्लेख थएलो छे ते गण सुस्थिताचार्ये स्थापेलो हतो. आ सुस्थित ई. स. पूर्वेना बीजा सैकाना पूर्वार्धमां संघना आचार्य तरीके विद्यमान हता. स्पष्ट रीते ज आ गण जैनोनी श्वेतांबर शाखानो हतो. आ रीते आपणने आ लेखो उपरथी ई. स. पूर्वेना बीजा सैकाना मध्यमां जैन श्वेतांबर संप्रदायनी विद्यमानतानो परोक्ष पुरावो मळे छे एटलुं ज नहीं पण ई. स. ना प्रारंभना वे सैकामां ए संप्रदायनो कौटिक नामे गण मथुरासुधी फेलाएलो हतो तेनो प्रत्यक्ष पुरावो पण मळे छे. तथा ए लेखोमां तेनो जे वारंवार उल्लेख आवे छे तेथी ते मथुरामां सारी पेठे जामेलो हशे एम पण स्पष्ट जणाय छे. ते समये बुलन्द शहेरमां पण एक एवी संस्था हती जेनो पुरावो ए लेखोमां आवता उच्चनगर अथवा वारण नामना समुदायना साधुओनां नामो उपरथी मळे छे. ए बन्ने नामो उक्त शहेरना जुनां नामो हतां.

बीजी बाबत ए छे के, संघना एक अंग तरीके साध्वी वर्गने जे गणवामां आवे छे तेनो हयातीनो पुरावो पण आ लेखो पूरो पाडे छे. अने ते उपरथी विशेष ए पण हकीकत मळी आवे छे के पोताना धर्मनो विकास करवामां आ साध्वीओ पण घणो भाग लेती हती, अने खास करीने श्राविकाओमां. कारण के एक अपवाद सिवाय बधी ज श्राविकाओए साध्वीओना उपदेशथी प्रतिमा समर्पण करवानुं जणाव्युं छे. आ वातने जैन सिद्धान्त ग्रंथोना लखाणथी समर्थन पण मळे छे. जैन

५ आ विषयनी शोध खोळना तेमना लेखो वीएना ओरिएन्टल जर्नल, १८८७ थी ९१, अने १८९६ मां प्रसिद्ध थया छे; तेम ज १८९७ ना इम्पिरीयल एकेडेमी ऑफ सायन्सना जर्नलमां पण तेमणे ते प्रकट कराव्या छे.

६ जुओ तेमना सर्वे रिपोर्ट्स, भाग २.

Aho ! Shrutgyanam

धर्ममां दिगंबर अने श्वेताम्बर ए बे विभागो घणा जुना वखतथीं पडेला छे तेनो पण एक अधिक पूरावो आमांथी मळी आवे छे. दिगम्बरो पोताना संघमां स्त्रीओने सामेल करता नथी. फक्त श्वेताम्बरो ज तेम करे छे. तेथी आ लेखो उपरथी एम सिद्ध थाय छे के मथुरामांनी आ संस्था श्वेताम्बरोनी ज हती तथा ई. स. ना प्रथम सैकामां आ विभक्त अवस्था बराबर निश्चित थएली हती.

आ लेखो उपरथी एक बीजी हकीकत ए मळे छे के जैन संघमां श्रावक–श्राविकाओनी व्यवस्थित रचना करेली छे. में उपर सूचना करेली ज छे के जैन संघमां आ पण एक अगत्यनो विभाग गणाय छे, के जे धर्मनी उन्नतिमां घणी महत्त्वनी बाबत छे. ए लेखोमां श्रावक अने श्राविका एवा शब्दो वपराएला छे जेने हाल सरासगी पण कहेवामां आवे छे. बौद्धोमां पण श्रावक शब्द वपराएलो छे पण त्यां तेनो अर्थ अर्हत् (अमुक कक्षानो साधु) एवो करवामां आवे छे. आ हकिकत श्रावकोनी चोक्कस स्थितिविषे उल्लेख करे छे एटलुंज नहीं, पण जैन अने बौद्ध ए बे महान् धर्मोनी विशिष्टतानुं पण स्पष्ट प्रतिपादन करे छे.

एक बीजी उपयोगी बाबत ए छे, के ते लेखोमां श्रावकोनी जातिविषे पण वारंवार उल्लेख आवेलो छे. जैन अगर बौद्धधर्म वर्णाश्रम दूर करवा मांगे छे, एवी जे मान्यता छे ते तद्दन खोटी छे एम में पहेलां जणावेलुं छे. एक माणस श्रावक बनवाथी वर्णभ्रष्ट थतो नथी. ते पोतानी जातिनो धंधो–रोजगार छोडी शके छे, परन्तु कन्यानी आप ले माटे तथा अन्य व्यवहार माटे तो तेने पोतानी जुनी जातिनो ज आश्रित रहवुं पडे छे. एक लेखमां एक लुहार दान आप्यानुं वर्णव्युं छे. जैन थया पछी ते लुहार बन्यो हशे एम मानवुं भूल भरेलुं छे, कारण के श्रावकोने माटे तो लुहारना धंधानो निषेध करेलो छे. तेथी आ उल्लेख तेना बापदादानी तथा तेनी जाति माटे ज हशे. तो पण एम जणाय छे के हालनी माफक ते वखते पण घणा खरा श्रावको वेपारी वर्गना ज हता.

जैन ग्रंथोमां आपेली घणी बाबतोनुं समर्थन आ लेखोमांथी थई शके एम छे, ए सिद्ध करवा माटे घणा विस्तृत पूरावा हुं आपी शकुं तेम छुं; परन्तु तेम करवा करतां आ विषयमां रस लेनार सज्जनोने प्रो. बुल्हरना लेखो ज स्वयं वांची लेवानी हुं भलामण करवी योग्य धारुं छु. हजी जे एक बाबत मारे खास जणाववी जोईए, ते ए छे के, सुप्रसिद्ध चक्र अने स्तूप तथा तेना अन्य अंगो ए बौद्ध धर्मना ज खास बाह्य चिन्हो मनाय छे; पण १८८३ मां लीडन मुकामे भराएली छठ्ठी ' इन्टरनेशनल कॉंग्रेस ऑफ ओरीएन्टालीस्टस् ' आगळ वांचेला लेखमां मर्हुम पंडित भगवानलाल इंद्रजीए बतावी आप्युं हतुं के जैन लोको पण स्तूपोने पूजे छे. अने हवे प्रो. बुल्हरे ऊंडी शोध खोळ कर्या पछी सप्रमाण सिद्ध कर्युं छे के चक्र अने स्तूप विषेनी अद्यापि चालती आवती विद्वानोनी मान्यता केवळ भूल भरेली छे. मथुरामांथी एक जैन स्तूपनां अवशेष सुधां प्रकट रीते मळी आव्या छे. पहेलांथी थती आवती भूलने लीधे शरुआतमां एम लाग्युं हतुं के आ स्तूप पण बौद्धोनो हशे; परन्तु तेनी बाजुएथी ज्यारे बे जैन मंदिरोना अवशेषो मळी आव्या तथा जैन लेखो अने प्रतिमाओ विगेरे पण त्यां मळी आव्यां त्यारे आ स्तूप पण जैनेनो ज होवो जोईए, ते विषयमां पछी कोई जातनी शंका रही नहीं. त्यारबाद केटलाक कोतरेला पत्थरो पण मळेला छे, जेना उपर तेना बीजा अवयवो साथे जैन स्तूपोनो आकार कोतरेलो छे. आपणे हाल सुधी जेने बौद्ध स्तूपो मानता आव्या छीए तेना जेवा ज आ स्तूपो छे. प्रो. बुल्हरे तो पोतानुं अनुमान आगळ दोडावीने एम पण कह्युं छे के स्तूप–पूजा ए जुना वखतमां फक्त जैन अने बौद्ध ज करता एम नहीं, परंतु चुस्त संन्यासीओ (ब्राह्मण धर्मना) पण करता हता. एक जैन प्रतिमानी बेसणी जेना उपर कोतरकाम तथा लेख छे तेनी शोध खास जाणवा जेवी छे. तेमां बौद्ध प्रतिमाओनी माफक ज एक त्रिशूल उपर चक्र काढेलुं छे. आ उपरथी एम सिद्ध थाय छे के चक्रनुं चिन्ह ए केवळ बौद्धोनुं ज नथी. ते लेखमां जणाव्या प्रमाणे, ते प्रतिमा, एक साधुना

Aho ! Shrutgyanam

उपदेशथी एक श्राविकाए प्रतिष्ठित करी हती. ए बेऊनी आकृतिओ पण, आ पवित्र चिन्हनी तेओ स्तुति करता होय तेम, कोतरवामां आवी छे. वळी लेखमां एम पण उल्लेख छे के, ई. स. १५७ ने मळती सालमां, आ देवनिर्मित स्तूपमां प्रतिमा बेसाडवामां आवी. 'देवनिर्मित' ए शब्दथी सूचित थाय छे के ए स्तूप बहु ज जुनो होवो जोईए. कारण के ई. स. ना बीजा सैकामां तेनो मूळ इतिहास भूली जवायो हतो अने तेनुं स्थान एक दंतकथाए लीधुं हतुं. तेथी आपणे तो ए ज निश्चय उपर आवी शकीए के घणा सैका पहेलां ए स्तूप निर्मित थयो हशे. प्रो. बुल्हरे शोधेली ए बाबतने एक जैन ग्रंथमांथी टेको पण मळे छे.[1] ते दंतकथा प्रमाणे ई० स० ना ९ मा सैकामां ते स्तूप हयाती धरावतो हतो अने ते वखते तेनी मरामत विगेरे करवामां आवी हती; तथा तेमां पत्थरो बेसाडवमां आव्या हता. मूळ ते स्तूप ईंटोनो बनेलो हतो अने पार्श्वनाथने समर्पित करेली सुवर्णथाल तेमां मुकेली हती. एम कहेवामां आवे छे के ए सुवर्ण थाळ मथुरामां देवोए आपी हती अने घणा वखत सुधी जैनोने पूजा करवा माटे ते बहार राखवामां आवी हती. परंतु पाछळथी ज्यारे मथुराना एक जुना राजाने ते थाळी पडावी लेवानी इच्छा थई त्यारे तेना उपर ईंटोनो आ स्तूप बनाववामां आव्यो. आ समय ते, घणा भागे ई. स. पहेलांना बीजा सैकानो हशे, ज्यारे प्रथम ज जैनो मथुरामां वास करवा लाग्या हता. ए थाळ तेओ कदाच बिहारमांथी लाव्या हशे, अने जे राजाए थाळ पडावी लेवानी इच्छा करी, ते कदाच ई. स. नी शरुआतमां अमल चलावतो इंडो-सीथियन कनिष्क राजा हशे.

1 ए ग्रंथ ते जितप्रभकृत तीर्थकल्प छे. ए विषयना विशेष वर्णन माटे 'वीएना एकेडेमी ऑफ सायन्सीज्'ना, कार्य विवरणमां जुओ.

महावीर निर्वाणनो समय-विचार

[* जेमनी ऐतिहासिक विषय तरफ रुची छे अने जेओ ए विषयना लेखोनुं मननपूर्वक अध्ययन-श्रवण करे छे तेओ सारी पेठे जाणे छे के, जैन इतिहास अने जैन काळगणानाना ॐ नमः रूपे जे श्रमण भगवान् श्री महावीर देवनो निर्वाण-समय छे तेना विषयमां पुरातत्त्ववेत्ताओमां आज घणां वर्षोथी परस्पर मतभेद अने वाद-विवाद चाली रह्यो छे. जैन धर्मना प्राचीन साहित्यमां पण खुद ए बाबतमां एकता जणाती नथी. महावीरदेवनो निर्वाण-समय, ए जैन इतिहासमां तो सौथी अग्र भाग भजवे छे; परन्तु अखिल भारतीय इतिहासमां पण तेनी तेटली ज महत्ता छे अने ए कारणने लईने पुरातत्त्वज्ञोना माटे ते एक घणो ज अगत्यनो सवाल थई रह्यो छे.

सामान्य रीते जैन ग्रंथोनी वळण उपरथी एम मानवामां आवे छे के, हिन्दुस्तानमां वर्तमानमां जे विक्रम संवत्‌ना नामे संवत् प्रवर्ते छे तेना प्रारंभ पहेलां ४७० वर्षे, अने ई० स० ५२७ पूर्वे, श्रमण भगवान् श्री-महावीरनुं निर्वाण थयुं हतुं. जैन धर्मना दिगंबर अने श्वेतांबर नामना बंने प्राचीन संप्रदायोना घणा ग्रंथो उपरथी ए निर्णय निकळे छे. परंतु प्रसिद्ध जैन साहित्यज्ञ जर्मन विद्वान् डॉ० हर्मन जेकोबीए, आचार्य श्री हेमचन्द्रना एक उल्लेखथी प्रेराई ए निर्णयमां शंका उपस्थित करी अने तेने मळतां बीजां केटलांक प्रमाणोनो आश्रय लई, ए जुनी मान्यताने असंबद्ध जणावी. त्यार पछी बीजा घणाक विद्वानोए ए संबंधमां, परस्पर खंडन-मंडन चालु कर्युं अने एक बीजाए पोत पोताना कथनने सत्य सिद्ध करवा अनेक जातनो ऊहापोह कर्यो. जार्ल चार पेंटियर नामना एक विद्वाने 'इंडियन एन्टीक्वेरी' नामना सुप्रसिद्ध मासिक पत्रना सन् १९१४ ना जून, जुलाई अने ओगष्ट मासना अंकोमां, ए विषयनो एक घणो ज विस्तृत लेख लख्यो[१] अने तेमां महावीर निर्वाण विक्रम संवत् पूर्वे ४७० वर्षे नहीं परंतु ४१० वर्षे (ई० स० ४६७ पूर्वे) थयुं हतुं, अने परंपराप्रमाणे जे गणना गणवामां आवे छ तेमां ६० वर्ष वधारे छे ते कमी करवा जोईए, एम सिद्ध करवा विशेष प्रयास कर्यो हतो.

पोताना ए विस्तृत लेखमां प्रथम तो ए विद्वाने एम सिद्ध कर्युं के, मेरुतुंगाचार्य विगेरेना विचारश्रेणी आदि ग्रंथोमां जैन काळगणना संबंधी जे प्राचीन गाथाओ आपेली छे, तेमां जणावेला राजाओनो कोई पण प्रकारनो परस्पर ऐतिहासिक संबंध छे ज नहीं. तेम ज महावीर निर्वाण पछी ४७० वर्षे जे विक्रम राजा थवानो उल्लेख छे तेनो इतिहासमां क्यांए अस्तित्व नथी. माटे ए पुराणी गाथाओमां जे प्रकारे काळगणना करवामां आवी छे अने जे राजाओना राज्यकाळ आप्या छे ते निर्मूळ छे. लेखना बीजा भागमां ए विद्वाने एम बताव्युं के सामण्णफलसुत्त विगेरे केटलाक बौद्ध ग्रंथो उपरथी जणाय छे के, महावीरदेव अने बुद्धदेव बंने समकालीन हता; अने बौद्ध ग्रंथो प्रमाणे बुद्धदेवनो निर्वाण ई० स० पूर्वे ४७७ वर्षे थयुं हतुं. जनरल कानिंग्हाम अने मोक्षमुल्लरे पण ए तारीख मान्य राखी छे. बुद्धदेवनी मृत्युसमये ८० वर्षनी अवस्था हती. तो हवे जोवानुं के, गाथाओमां जणाव्या प्रमाणे जो महावीर देवनो अंतकाळ ई० स० पूर्वे ५२७ वर्षे थयो होय तो ते वखते बुद्धदेवनी उमर फक्त ३० वर्षनी हशे. परंतु ए सौ कोई माने छे के छत्रीस वर्षनी उम्मर पहेलां तो गौतम बुद्धने बोधिज्ञान पण थयुं न होतुं, तो पछी तेमना

*आ लेख चारेक वर्ष उपर लखायो हतो. अने एक पत्रमां ते वखते प्रकट करायो हतो. हवे आपण विषयना बधा लेखो, आ पत्रमां क्रमथी प्रकट करवानो विचार राख्यो छे तेथी आ लेख अहीं प्रकट करवो आवश्यक मान्यो छे.—संपादक.

[१] ए लेखनो अनुवाद हवे पछीना अंकोमां आपवामां आवशे.—संपादक.

अनुयायिओ तो थाय ज क्यां थी. तेथी हवे सिद्ध छे के महावीर देवनुं निर्वाण जो उक्त कथन प्रमाणे थयुं होय, तो पछी तेमनी, बुद्धदेवनी साथे समकालीनता शी रीते मळी शके छे ? वळी एम पण कहेवामां आवे छे के महावीर अने बुद्धदेव बंने अजातशत्रु (श्रेणिकना पुत्र) ना राज्यकाळमां मौजुद हता. ऐतिहासिक उल्लेखो प्रमाणे अजातशत्रु बुद्धदेवना मृत्यु पूर्वे ८ वर्षे राजगादीए बेठो हतो अने तेणे एकंदर ३२ वर्ष सुधी राज्य कर्युं. आ रीते उक्त जैन गाथाओ प्रमाणे जो महावीर निर्वाण मानवामां आवे तो आ हकीकत पण बंध बेसती आवे तेम नथी. तेथी या तो महावीरनिर्वाणनो समय उक्त समयथी आ तरफ आणवो जोईए अने या तो बुद्धदेवनो निर्वाणसमय पाछळ हठाववो जोईए. परंतु बुद्धदेवनो निर्वाणसमय तो चोकस गणतरीए गणेलो छे अने महावीरनो समय मात्र अनुमानथी कल्पी लीधेलो छे, माटे तेने ६० वर्ष आ तरफ खसेडवानी जरुरत छे. आनी पुष्टिमां हेमचन्द्राचार्यना परिशिष्ट पर्व नुं कथन पण उपलब्ध छे आ विषयमां, आवी रीते, ए लेखमां ते विद्वाने घणा ज लंबाणथी चर्चा करी छे.

उपर ज जणाव्युं छे के, जैन इतिहासना माटे आ एक घणो ज अगत्यनो सवाल छे अने एना निराकरण उपर ज जैनधर्मना साहित्य अने इतिहासनी वास्तविक अने क्रमिक रचना रची शकाय छे; अने तेटला माटे, जैन विद्वानोए, ए बाबत खास प्रयत्न करवानी जरूरत हती; परंतु जोईए छीए के संख्याबंध जैन आचार्यमांथी कोई-ए पण, जेमनी गादीना पोते वारस थवा जाय छे तेमनी, खरी तारीख खोळी काढवा माटे जराए प्रयत्न कर्यो नथी. प्रयत्न करवानी वात तो दूर रही, परन्तु दुनियाना बीजा विद्वानो ए विषयमां शी वड-मथळ करी रह्या छे तेनी खबर सुधां मेळववानी दरकार करता नथी !

अस्तु. श्रीयुत काशीप्रसादजी जायसवाल एम्. ए. (आक्सफोर्ड युनिवर्सिटी) बारिस्टर-एट-लॉ करीने पटनामां एक विद्वान् गृहस्थ छे. हिंदुस्तानना नामी ऐतिहासिकोमांना तेओ एक छे. तेमणे भारतना प्राचीन इतिहाससम्बंधी घणो ऊहापोह कर्यो छे अने केटलाक पाश्चात्योना भ्रांत विचारोनो घणी ज उत्तमतापूर्वक संस्कार कर्यो छे; अने अनेक ऐतिहासिक गुंचवाडाओ उकेल्या छे. प्रसंगोपातथी महावीरना निर्वाण समयनो पण तेमणे केटलेक ठेकाणे उल्लेख करेलो छे, अने उपर जणाव्या प्रमाणे ए गुंचवायला कोकडाने पण खोलवानो प्रशंसनीय प्रयास करेलो छे. बिहार अने ओरीसा रीसर्च सोसायटीना सने १९१५ ना सप्टेंबर मासना जर्नलमां **शैशुनाक अने मौर्य कालगणना** (Saisunaka and Mauyra Chronology) विषये तेमणे एक घणो ज महत्त्वनो निबंध लख्यो छे. तेमां अंते बुद्ध देव अने महावीर देवना निर्वाण-समयनुं पण घणी ज विद्वत्तापूर्वक विवेचन कर्युं छे, अने जैनोनी प्राचीन गाथाओनी गणतरीने ज सप्रमाण सिद्ध करी, जे विद्वानो उपर जणाव्या प्रमाणे ६० वर्षनी न्यूनता आणता हता तेमनी दलीलो तोडी पाडवानुं प्रयत्न कर्युं छे; तथा जैन, बौद्ध अने हिंदुओना ग्रंथोना प्रामाणिक आधारोने लईने तेमणे पोतानां कथनने पुष्ट बनाव्युं छे.

हालमां ए विद्वाने एक अत्यंत महत्त्वना ऐतिहासिक लेखनुं संशोधन करी उक्त जर्नलनां छेल्ला अंकमां प्रकट कर्यो छे. ए लेख ते सुप्रसिद्ध सम्राट् खारवेलनो उदयगिरिनी हाथीगुहावाळो लेख छे, जे मे. डॉ. भगवानलालजीनी संशोधित करेली आवृत्ति प्रमाणे गये वर्षे गुजरातीमां बहार पाडयो छे. डॉ. भगवानलालना संशोधनमां थोडा वर्ष उपर डॉ. फ्लीट विगेरे पुरातत्त्वज्ञोए शंका करी हती, अने कोई अधिकारी विद्वानना हाथे ए लेखनुं पुनः अवलोकन थवानी जरूर जणावी हती. ते कार्य श्रीयुत जायसवाल महाशये पूर्ण कर्युं छे अने ए लेखनी घणी ज सूक्ष्म बुद्धिथी छानवीन करी तेनी उत्तम आवृत्ति प्रसिद्धिमां मूकी घणा नवा तत्त्वोनुं उद्घाटन कर्युं छे. ए लेखना एक बे भागा संबंधमां मारी साथे पण तेमणे केटलोक रसभर्यो पत्रव्यवहार चलाव्यो हतो. तेमना ए लेख-संशोधनथी जैनधर्मना तत्कालीन इतिहास उपर डॉ. भगवानलाल करतां पण वधारे प्रकाश पडयो छे अने समुचय भारतीय

Aho ! Shrutgyanam

इतिहासनी महात्तामां पण एक विशेष उमेरो थयो छे. ए निबंधमां पण तेमणे महावीर–निर्वाण संबंधी सूचन कर्युं छे अने पोताना उपर्युक्त काळनिर्णयवाळा लेखमां करेला कथनने वधारे पुष्ट बनाव्युं छे. तेमनी आ बधी दलीलो पुरातत्त्वज्ञो मान्य करता जाय छे अने अर्लि हिस्टरी ओफ इन्डिआना लेखक प्रसिद्ध इतिहासज्ञ मि. वीन्सेंट स्मीथे पण हवे तेमना कथनने सादर स्वीकार्युं छे, एम श्रीयुत जायसवाल मने पोताना तारीख ९|७|१८ ना पत्रमां, खास रीते नीचे प्रमाणे जणावे छे.

" आप को यह सुन कर प्रसन्नता होगी कि V. Smith ने यह अब मान लिया कि बुद्धदेव तथा महावीरस्वामी का निर्वाण–काल जैसा हम कहते हैं वही ठीक है। अर्थात् जैसा कि उन के अनुयायी मानते हैं। यह खारवेल के लेख से सिद्ध हो गया। मि. विंसेंट स्मीथने पत्रद्वारा यह मुझे लिखा है।"

आवी रीते भारतीय इतिहासना एक घणा ज महत्त्वना प्रश्ननो घणा युगोनी वडमथळ पछी एक भारतीय विद्वानना हाथे ज निर्णय थतो जोई दरेक भारतीयने प्रसन्न थवा जेवुं छे, अने खास करीने जैन समाजे तो पोतानी कृतज्ञता प्रकट करवा माटे श्रीयुत जायसवालने हार्दिक अभिनंदन आपवुं जोईए.

कालगणना विषयमां हमेशां कृपणता बतावनारा पाश्चात्य पुरातत्त्वज्ञोए महावीर–निर्वाणने ६० वर्ष आ तरफ खेंचीने पुराणा जैन ग्रंथोमां आपेली प्राचीन गाथाओने असत्य ठेरवा हती, परंतु श्रीयुत जायसवाल ए ग्रंथकारोना पक्षमां वगर फीए बेरीस्टरी करवा तैयार थया अने अनाथ अने मूक एवा ए जीर्ण ग्रंथोना कथनने पोताना प्रतिभाबळे सत्य ठरावी विचारक जगत् आगळ तेमनो प्रतिष्ठाने पूर्ववत् स्थिर करी आपी छे.

श्रीयुत जायसवालना मत प्रमाणे महावीर स्वामीनुं निर्वाण वि. सं. पूर्वे ४७० वर्षे नहीं परंतु ४८८ वर्षे थयुं हतुं. कारण के पट्टावलिओ विगेरेमां जे ४७० वर्ष लख्या छे ते विक्रमना राज्यारोहण सुधीनां नथी; परंतु जन्म सुधीनां छे. विक्रम पोतना जन्मथी १८ मे वर्षे गादिए बेठो हतो, अने त्यारथी तेनो संवत् चाल्यो छे, तेथी विक्रम सं. नी शरूआत पहेलां ४८८ वर्ष उपर महावीर–निर्वाण थयुं हतुं ए सिद्ध थाय छे. आ गणत्री प्रमाणे आजे जे आपणे महावीर–निर्वाण संवत् २४४८ मानीए छीए तेना बदले २४६६ (२४४८+१८) मानवुं जोईए. केटलीक जूनी पट्टावलिओमांथी पण आ कथनने पुरावो मळे छे

श्रीयुत जायसवाले आ संबंधमां छूटा छवाया घणा उल्लेखो कर्या छे, परंतु सघळा पुरावाओनो संक्षेपमां एकत्र संग्रह अने तेना उपरथी निकळतो सार; तेमणे उपर जणाव्या प्रमाणे बीहार अने ओरीसा रीसर्च सोसायटीना जर्नलना प्रथम भागना प्रथम अंकमां (The Journal of the Bihar and Orissa Research Society. Vol, 1. Part 1.) शैशुनाक अने मौर्यकालगणना तथा बुद्धनिर्वाणनी तारीख (Saisunaka and Maurya Chronology and the Date of the Buddha's Nirvana) नामना लेखनी अंते, खास महावीरनिर्वाण अने जैन कालगणना संबंधी एक स्वतंत्र प्रकरण उमेरीने तेमां आप्यो छे. जैन ग्रंथोमां वारंवार मळी आवता श्रेणिकादि शिशुनाकवंशीय अने चन्द्रगुप्तादि मौर्यवंशीय राजाओना वास्तविक राज्यकाल जाणवानी जिज्ञासावाला दरेक जैन विद्वाने ए समग्र निबंध खास मननपूर्वक वांचवो जोईए. जिज्ञासु वांचकोनी खातर तेम ज विद्वान् मनाता जैन मुनिवरोना ज्ञाननी खातर, ए लेखमांनो अंतिम भाग जे महावीर–निर्वाण संबंधी लखाएलो छे तेनो अनुवाद अत्र आपवामां आवे छे. जैन विद्वानो तरफथी आ विषयमां वधारे ऊहापोह थवानी आशा तो राखी शकाय तेम छे ज नहीं परंतु जो तेओ एकवार मननपूर्वक आ बधुं समग्र वांची जवा जेटली पण प्रवृत्ति करशे तो आ प्रयत्न माटे लेवायलो श्रम आशा आपनार निवडशे. तथास्तु.]

Aho ! Shrutgyanam

निर्वाण तिथिओ.

चंद्रगुप्त राजाना राज्यारोहण विषे जैनो तरफथी नीचे प्रमाणेनी हकीकत मळे छे.—जे वर्षमां नवमो नंद (शकटालनो स्वामी) मृत्यु पाम्यो अने चंद्रगुप्त गादीए बेठो ते ज वर्षमां स्थूलभद्राचार्ये* काल कर्यो हतो.[१] आ बनाव महावीरना निर्वाण पछी २१९ वर्षे बन्यो हतो.[२] हवे जो एम मानिए के महावीर चंद्रगुप्तना तख्तनशीन थया पहेलां २१९ वर्षे निर्वाण पाम्या, तो पछी महावीरना निर्वाण पछी ५३ के ६० वर्ष पछी बुद्ध निर्वाण पाम्या, एम मानवुं योग्य गणाय नहिं कारण के तेओ बंने समकालीन हता अने तेथी तेमनुं मृत्यु पण थोडा ज अंतरे थयुं होय एम मानवुं सकारण छे.

निर्ग्रन्थ ज्ञातपुत्र (महावीर) ज्यारे पावामां निर्वाण पाम्या त्यारे बुद्ध जीवता हता एवा भावार्थ वाळो उल्लेख जे अंगुत्तर निकायमांथी मळी आवे छे ते पूर्ण मानवा योग्य छे.[३] अने जे पुरावाओना विषयमां अत्रे ऊहापोह कर्यो छे, तेमांथी पण एज निकळी आवे छे, के महावीर चंद्रगुप्तना राज्यारोहण पूर्वे २१९ वर्षे निर्वाण पाम्या अने बुद्ध २१८ वर्षे. आ प्रमाणे चंद्रगुप्त ३२० A M. J. (महावीर जिन पछी) (चालु) अने २१९ A.B (= बुद्धदेव पछी) (चालु) गादिये बेठो; अने बुद्ध, महावीरना पछी एक वर्षे निर्वाण पाम्या.[४] जैनोनी कालगणन प्रमाणे चंद्रगुप्त ई. स. पूर्वे ३२६ या ३२५ ना नव्हेंबर मासमां गादिए बेठो.[५]

* जैन ग्रंथो प्रमाण आ कथन बिल्कुल बंधबेसतुं नथी. संपादक जै. सा. सं.

१ तपगच्छनी पटावली I. A. ११-२५१ (इन्डियन एन्टीक्वेरी, पुस्तक ११. पृष्ठ २५१).

२ खरतगच्छनी पटावली. I. A.-११. २४६.

३ ओलडेनबुर्ग, Z D M G. ३४,७४९.

४ बराबर चोकस बोलिए तो बुद्ध महावीर पछी एक वर्ष अने आठ दिवसे निर्वाण पाम्या कारण के महावीर कार्तिक वदी १५ ने दिवसे निर्वाण पाम्या (कल्पसूत्र, प्रकरण १२३) अने बुद्ध कार्तिक शुदी ८ ने दिवसे (फलीट, J R A S. 1909, 22)

५ अॅलेकझेन्डर ज्यारे पंजाबमांथी पाछो फर्यो (ई. स. पूर्वे ३२६ ऑक्टोबर) त्यारे नन्दराजा राज्य करतो हतो. आ तारीखमां अने चंद्रगुप्तनी राज्यारोहणनी तारीखमां परस्पर कांई विरोध नथी. नन्दना सैन्य सामेथी अॅलेकझेंडरनो पाछा फरवानो अने पंजाबमां मेसेडोनियन लष्करनी हयातीनो पण चंद्रगुप्ते लाभ लीधो. पंजाबना लोकोए चंद्रगुप्तने मगधनुं राज्य मेळववामां मदद करी हतो. अने ते एवा इरादाथी करी हशे के मगधनुं महान् सैन्य पछी तेमना स्वतंत्र थवानी आशाने पुरी करे; एटले के चंद्रगुप्त पोतानो विजय थया पछी ते सैन्यनो उपयोग तेमना माटे करे. अॅलेकझेन्डर कार्मेनियामां हतो एटलामां ज पंजाबना सुबा फिलिप्पोसनुं हिंदिओना हाथे खून थयुं; अने आ काम चंद्रगुप्तनी उश्केरणीथी थयुं होय तेम लागे छे. सरखावो, मुद्राराक्षसनी अंदर पर्वतकना मृत्युनी हकीकत. पर्वतक=परबओ=पिरबओ=फिलिप्पोस (मुद्राराक्षस विषयक म्हारो निबंध, I A. आक्टोबर, १९१३.)

६ J. R A S. (जर्नल ऑफ धी रॉयल अेशियाटिक सोसायटि) 1909, 2.

हवे चंद्रगुप्तना राज्यारोहण पहेलानुं २१८ मुं वर्ष ते (३२६+२१८) ई. स. पूर्वेनुं ५४४ मुं वर्ष थाय, एटले के बुद्ध निर्वाणनुं वर्ष पण उपर जणाव्या प्रमाणे, ई. स. पूर्वेनुं ५४४ मुं ज थयुं.[६] अने सीलोन, बर्मा अने सीआमनी दंतकथाओ प्रमाणे पण बुद्धनिर्वाणनुं ए ज वर्ष आवे छे, जे जाणी आपणने सानुकूळ आश्चर्य थशे.

जैन कालगणना(Jaina Chronology)

डॉ० होर्नल सरस्वती गच्छनी पट्टावलीनी १८ मी गाथाना आधारे विक्रम सवंतनी शरुआत माटे ४७० पछी बीजां १६ वर्ष वधारे ले छे. गाथानो अर्थ अथवा तो भावार्थ एवो छे के—विक्रम सोळ वर्षनी उमर सुधी

बुद्धदेवना निर्वाणनी तारीख उपर तक्षशीलानो इतिहास एक रीते अमुक प्रकारनो प्रकाश पाडे छे. ज्यारे बुद्ध उपदेश आपता हता त्यारे तक्षशिला ए एक स्वतंत्र संस्थाननी राजधानी हती, (BI, P. 28.) अने हिन्दी विद्यानुं एक महान् केन्द्र हतुं. अशोकना अभिषेकनुं वर्ष बु० नि० पछीनुं २१८ मुं गणी तेना उपरथी गणना करता बुद्धनो उपदेश समय (४४ वर्ष) ई. स. पूर्वे ५२८ थी ४८३ सुधीमां आवी जाय छे. परन्तु तक्षशिला लगभग ई. स. पूर्वे ५०५ वर्षना अरसामां हिन्दु राजधानी तरीके रही न हती. कारण के ते ज वर्षे अथवा तो तेनी आसपासमां ज ते डेरीअसना हाथमां चाली गई हती. बुद्धना छेल्ला वीस वर्षना अरसामां तक्षशिला जो पाशिअनोना ताबे रही होत तो भाग्ये ज कोई तेने एक स्वतंत्र राजधानी तरीके अथवा तो एक महत्त्वनुं स्थान तरीके गणी शकत.

गादिए बेठो हतो नहीं. एटले के १७ मा वर्षे तेनो अभिषेक थयो, एने एनो तात्पर्यार्थ एवो नीकळे छे के ते सत्तरमा वर्षना अंतमां अथवा तो ४८७ A. M. J. ना अंते गादिए बेठो. आनुं परिणाम ए आव्युं के जैनोए विक्रम संवत्‌ना प्रथम वर्ष (ई० स० पूर्वे ५८–५७) ना अंते अने ४७० A, M. J. पुरा थयानी वच्चे १८ वर्षनुं अंतर मुक्युं.[७]

"ब्राह्मण साम्राज्य" नामना म्हारा लेखमां, म्हें साबीत कर्युं छे के जैनो विक्रम नामथी सातकर्णि बीजाने ओळखे छे (जे नहपानने तावे करनार हतो अने जेना विषे नीचे जुओ–) के जे लगभग ई. स. पूर्वे ५७ वर्षे मृत्यु पाम्यो; अथवा तो तेनो पुत्र पुलुमायि के जे तेना पछी ते ज वर्षे गादिये बेठो. अने म्हारा पोताना मत प्रमाणे तो हवे पुलुमायि ए ज जैनोनो खरो विक्रम छे. (कारण के–लोकमां तेनुं बीजुं अने घणुं करीने वधारे प्रचलित नाम 'विलवय' हतुं (कुरु=राजा) [सरखावो, शिक्कानु नाम विविलक (A–) पिलव, (I–) पुराणोनो विलक, W. and H., 196; V. P. 452 n.] आज विलव (विडव) अथवा पिलव ने, क नो ल (ड) थई गएलो समजी जैनोए तेनो विक्रम करी न्हांख्यो छे.[८] मालवाना कार्तिकादि (कृतेषु) संवतना पहेला वर्षनो अने विलवना राज्यारोहणनो समय एक होवाथी, अथवा घणुं करीने तेओनो परस्पर समानकाल होवाथी, ते बन्ने एक ज होय, एम मानी लेवामां आव्युं छे.

प्रद्योतोना समयथी लई शकराज्य[९] अने विक्रम संवत् सुधीनी जैन कालगणना नीचे प्रमाणे छे.

(अ) पालक (जेनुं प्रद्योत पछी गादिये आववानुं वर्णन पुराणोमांथी पण मळी आवे छे.) जे रात्रिए महावीर निर्वाण पाम्या ते रात्रिए (अर्थात् दिवसे) अवंतीनी गादिये बेठो.

(ब) तेनां ६० वर्षो पछी नन्दोना राज्यने एक अगत्यनो समय गणवामां आव्यो छे. अने तेओना राज्यना एकंदर १५५ वर्ष गणेलां छे. पुराणोना हिसाबे, नंदवर्धनथी ते छेल्ला नन्द सुधी १२३ वर्ष थाय छे अने तेटला काल सुधी ए लोकोनुं राज्य चाल्युं. ३२ वर्षनो जे वधारो छे ते आपणने उदायीना राज्यना प्रथम अथवा बीजा वर्ष आगळ लावी मुके छे. एटले के पालकवंशनो लक्ष्य खेंचवा लायक बीजो एक अगत्यनो समय, उदायीना राज्यारोहणथी शरु थाय छे. पण पुराणो प्रमाणे अजातशत्रुना छठ्ठा वर्षनी (पालकना राज्यारोहण) अने उदायीना अभिषेकनी वच्चे आपणे ६४ वर्ष मूकी एछीए, ज्यारे जैन कालगणना प्रमाणे पालक (एटले पालकवंश) ना ६० ज वर्ष छे[१०] आ रीते चंद्रगुप्तना समयमां पुनः ४ वर्षनो फरक आवे छे, अने तेथी ते महावीर पछी २१५ अथवा २१९ वर्षे गादिये बेठो एम जुदी जुदी तारीखो आपवामां आवे छे. आपणे आगळ जोईशुं तेम, आ तफावत शुंग समयनी शरूआत सुधी बराबर करवामां आव्यो न हतो अने तेथी ते पाछळथी करवामां आव्यो हशे.

(क) मौर्योना राज्यकाळना वर्षसमूहना बे विभागो करवामां आव्या छे १०८ अने ३०. (एकंदर १३८ वर्ष अने पुराणो प्रमाणे १३७) तेमां १०८ वर्ष मौर्यवंशना छे अने ३० वर्ष पुष्यमित्रना छे. बीजा शब्दोमां बोलीए तो पुष्यमित्रनुं पहेलुं वर्ष ते ज तेना छेल्ला वर्ष

७. I. A. 20, Page 347, सरस्वती गच्छनी पटावली, डॉ० होर्नेलनी ३६० मा पृष्ठ उपरनी टीका. महावीरना निर्वाणथी ते शक सुधी ४७० वर्ष (सरखावो, I. A. 2. 363.) अने पछी विक्रम संवत्‌नी शरूआत सुधी १८ वर्ष "वीरात् ४९२ विक्रम जन्मान्त वर्ष २२—राज्यान्त वर्ष ४" एटले के ४९२ A. M. J = ४ विक्रम संवत्. (पुरा थयां)

८ सरखावो, चांडना (हिन्दी) चंक्रमण (संस्कृत)
सड (हिं०) सकृत् (सं०)
अड (हिं०) अक (सं)
अडाव (हिं०) अक्रम (सं)
विलम् (हिं. धीमे चालवुं) = विक्रम्.

९ I. A, II, 361; XX, 341.

१० अजातशत्रु २९
दरशक ३५
६४

तरीके जणाय छे. अने बलमित्र—भानुमित्र (बलमित्र वंशनो भानुमित्र ?) ना ६० गणी समय बराबर कर्यो छे. आ गणना आपणने महावीर पछी ४१३ वर्ष सुधी लई आवे छे. ४० वर्षनो बीजो आंकडो नहपाणना राज्यकाल माटे आप्यो छे.[11] छेल्ला अंकोमां १३ वर्ष गर्दभिल्लना राज्यना छे अने ४ शकराज्यना छे. आवी रीते एकंदर संख्या ४७० थाय छे. अहिंआ गाथाओनी गणना बंध थाय छे. ते प्रथम शकोना पराजयथी समाप्ति पामे छे.[12] विक्रमसंवत् अने आ गणनानो (४७० महावीर पछी) परस्पर संबंध मेळववा, जैनो उपर जणाव्या प्रमाणे वच्चे १८ वर्षनो आंतरो मुके छे.[13]

गाथा, महावीरना निर्वाणनुं वर्ष (१७+५८+४७०=) ई० स० पूर्वे ५४५ मुं आपे छे, के जेने जैनो, महावीर पछी ४७० वर्षे, विक्रम जन्म अने तेना १८ मां वर्षे विक्रमराज्य प्रारंभ; एम जणावे छे. महावीर कार्तिक वदी १५ ना दिवसे निर्वाण पाम्या अने विक्रमना कार्तिकादी संवतनी शुरुआत थई ते वच्चे ४७० अने १८ वर्ष पूरेपूरां पसार थई गया हतां. हवे आ प्रमाणे चंद्रगुप्तना राज्यारोहणनुं प्रथम वर्ष, के जे महावीर पछी २१९ वर्षे आवे छे, ते ई० स० पूर्वे ३२६ ना नवेंबरना कोईक दिवसनी अने ई० स० पूर्वे ३२५ ना आक्टोम्बर—नवेम्बरना अंतनी वच्चे आवे. जैनोना अहेवाल प्रमाणेनी आ तारीख, अशोकना शिलालेखो प्रमाणेनी तवारीख अने तेनी ग्रीसना राजाओनी समकालीनता साथे बराबर मळती आवे छे.[14]

हेमचंद्राचार्यनी भूल.

हेमचंद्राचार्ये प्रद्योतोना जे ६० वर्ष मुकी दीधा छे, ते तेमनी एक म्होटी भूल छे अने ते स्पष्ट ज छे. कारण के जो आपणे शुरुआतना ते ६० वर्ष मुकी दईए तो, चंद्रगुप्त, स्थुलभद्र, सुभद्र अने भद्रबाहुनी समकालीनतामां विरोध आवे छे. प्रो० जेकोबीए मध्यकालीन हेमचंद्रना आ भांग्यातुट्या अहेवालने पोतानी गणनामां पाया तरीके लीधो छे. अने आम करवामां, पाली—लेखोमां आपेला अशोकना अभिषेकना भूलभरेला समयनी अने तेना उपर बांधेली निर्वाणकाल—गणनानी तेमना उपर वधारे असर थई छे.

पाली लेखोमां आपेला समय उपर बांधेली गणतरीए, ए ज लेखोमां लखायली अशोकना अभिषेकनी तारीख अने पूर्वपरंपराथी चालती आवेली तवारीख वच्चे लगभग ६० वर्षनो तफावत मुक्यो छे. हेमचंद्राचार्यनी भूलथी जैन तवारीखमां पण ६० वर्ष छोडी देवामां आवेला होवाथी, आ गणना—एकताए, कालगणना विषे संकुचित दृष्टि राखनारा आधुनिक अभिप्रायने मजबुत बनाव्यो छे. परंतु प्रद्योतनो पुत्र पालक, के जे अजातशत्रुनो समकालीन हतो, ते महावीर निर्वाण पछीना दिवसे अथवा वर्षे गादिये बेठो, ए मानवुं स्वाभाविक अने सप्रमाण छे. हेमचंद्राचार्यना कथन प्रमाणे, महावीर—निर्वाण पछी तुरत ज नंदवंशनुं राज्य शरू थयुं ए मानवुं तद्दन भूलभरेलुं अने अप्रमाणिक छे.

उपसंहार.

उपर जे ऊहापोह करवामां आव्या छे तेनो सारार्थ ए निकळे छे के—पुराणोनी गणना प्रमाणे बुद्धना निर्वाणनुं संवत्सर ई. स. पूर्वे ५४४ मुं वर्ष आवे छे. आ तारीखने जैन कालगणना पण पुष्टि आपे छे, अने बौद्धग्रंथ दीपवंशनी अंदरथी पण एवी हकीकत मळी आवे छे के जे आ निर्णयने मजबुत करे छे. अने आ बधा उपरथी ए सिद्ध थाय छे के बौद्धधर्मिओनो, तेमना धर्मसंस्थापकना निर्वाण—समय माटे वर्तमानमां जे अभिप्राय छे, ते यथार्थ ठर छे. बीजो सारार्थ ए निकळे छे, के महावीरना निर्वाण

---

११ 'ब्राह्मण साम्राज्य' नामना में म्हारा लेखमां नहपाणनी तारीखनी चर्चा करी छे. [अने ते समय १३३-९३ B. C. छे]

१२ आ शकोनो पराजय सातकर्णि बीजाए कर्यो हतो...... ज्योतिषिओनो विक्रमादित्य ते बीजो शातकर्णि छे अने जैनोनो विक्रम ते पुलुमायी छे.

१३ जैन तवारीखने उज्जैननी तवारीख कही शकाय. ते पालकना राज्यथी शरू थई नहपाण सुधी आवे छे अने पछी मालव संवतथी प्रारंभ थाय छे.

१४ जुओ, अशोकना अभिषेक उपर म्हारो लेख. J.A.S.B. आगस्ट—सप्टेंबर १९१३.

समय विषे जैनग्रंथोमां आपेला अहेवालने पुराणोमांथी टेको मळे छे.[१५]

वास्तविक रीते सीलोनना पाली–लेखोने पुराणनी गणना साथे विरोध नथी. ते तेने पूर्ण करे छे अने पुष्टि आपे छे तथा पोते तेनाथी पूर्ण थाय छे अन पुष्टि मेळवे छे. नंदोना विषयनो घोटाळो, के जेना परिणामे, सैकाओ सुधी बीजा घोटाळाओ उद्‌भव्या हता ते दूर थवाथी जैन कालगणनानी खरी किंमत जणाई आवे छे.[१६]

१५ डॉ. होर्नलेए जैनकालगणनामांनो घणो घोटाळो दूर कर्यो छे. [जुओ, इंडिअन एंटीकवेरी, पु. २०, पृष्ठ १३०]

१६ संप्रति अने सुहस्ती विषे जे तारीख आपेली छे ते भूल भरेली छे. बधी प्रतोनो संप्रतिनी तारीख विषे एक मत नथी, [इ. ए. पु. ११ पृ. २४६] तेओ २०२ A.M.J. अने २३५ A.M.J. नी वच्चे हता. [तेज ठेकाणे जुओ.] ज्यारे चंद्रगुप्तनी तारीख तरीके २१९ थी २४३ A.M.J. नां वर्षो गणी लीधां छे. पुराणोना आधारे करेली गणना प्रमाणे २३५ A.M.J. ना बदले तेनी खरी तारीख [इ. स. पूर्वे २२०, ५४५+२२० =] ३२५ A.M.J छे. [जुओ, एपेंडीक्स, C] श्वेतांबर जैनो, सुहस्ती के, जे संप्रतिना समकालीन हता, तेमनी विद्यमनताना वर्ष तरीके २६५ A.M.J. वर्षने गणे छे. पण श्वेतांबर जैनो पालकना शरूआतना ५० अथवा वधारे–खरी रीते ५४–वर्षो [जुओ, विभाग ३४, ब.] मुकी दे छे. तेथी सुहस्तीनी खरी तारीख २६५+६०+४ =३२९ A.M.J. छे. आ तेमना स्वर्गवासनी तारीख छे. आ प्रमाणे सुहस्ती, संप्रतिना गादीनशीन थया पछी चार वर्षे देवलोक पाम्या.

चंद्रगुप्त अने सुहस्तीना निर्वाणनी वच्चे श्वेतांबर जैनो १०९ अथवा ११० वर्ष मुके छे. [डॉ. जेकोबीनी परिशिष्टपर्वनी प्रस्तावना पृ. ५] आ हकीगत पुराणोक्त कथन साथे मळती आवे छे. [जुओ एपेंडीक्स सी प्रकरण २४—२५] २४ वर्ष चंद्रगुप्त, २५ वर्ष बिंदुसार, ४० वर्ष अशोक, ८ वर्ष कुनाल, ८ दशरथ, ४ संप्रतीना राज्यना = एकंदर १०९ सरखावो एपेंडीक्स बी. ३.

हेमचंद्र अने बीजाओना लेखो प्रमाणे जैन राजपरंपरा नीचे प्रमाणे छे.

A. श्रेणिक [बिंबीसार].
B. कुणिक [अजातशत्रु] [अवंतीमां पालक].
C. उदायी.
D. नंद [नंद. वर्धन] अने, बीजा नंदो.
E. चंद्रगुप्त.
F. बिंदुसार. H. [कुनाल].
G. अशोकश्री. I. संप्रति.

आ त्रणे संप्रदायोना कथनोमां जो के केटलोक परस्पर विरोधाभास देखाय छे परन्तु भावार्थ एक ज छे. आ त्रणे आस्तिक–नास्तिक पंथो खरेखरा इतिहासने अनुसर्या छे, अने तेनुं रक्षण कर्युं छे. बे हजार वर्ष जेटला लांबा समयमां जे कांई भूलो पेसी गई छे ते आवी रीते थोडी मेहनते अने थोडुं ध्यान आपे दूर करी शकाय एवी छे.

*
* *

[आ लेखना सूक्ष्म अवलोकनथी समजाशे के श्रीयुत जायसवाले जैन दंतकथा अने तेनी पुराणी गाथाओनी बौद्ध अने हिंदुपुराण ग्रंथोनी साथे केवी उत्तम रीते संबद्ध ठरावी छे, अने आज लगभग बे हजार वर्ष जेटला दीर्घकाळ सूधी, भारतना इतिहास युगना आदिभूत उल्लेखोमां, जे परस्पर विरोध अने असंगतता पुरातत्वज्ञोने जणाती हती तेनो केवी उत्तम पद्धतिए निकाल आप्यो छे. अलबत्त श्रीयुत जायसवालना विचारोनो सर्वांशे स्वीकार हजी सुधी विद्वानो तरफथी थयो न होय, के तेमां कांई कांई अंशे मतभेद होय तो ते स्वाभाविक छे; परंतु तेमणे भारतना प्राचीन इतिहासना निरीक्षणनुं एक जुदूं ज दृष्टिबिन्दु विचारक जगत् आगळ उपस्थित करी, इतिहासना गुंचाएला कोकडानुं नवी ज पद्धतिए पृथक्करण करवानुं एक अत्युत्तम साधन देखाडी आप्युं छे, तेमां कोईने संशय नथी. अने जैन काळगणना तथा महावीर–निर्वाण समयना विषयना तेमना विचारो म्हने तो घणे अंशे ग्राह्य जणाय छे. तो पण जो कोई विद्वानना मनमां आ संबंधी मतभिन्नता जणाती होय, तो तेणे अवश्य आवी रीते जाहेर ऊहापोह करीने, आपणा श्रमण भगवान श्रीमहावीरदेवना निर्वाण समयनो सदाने माटे निर्णय करी नाखवो जोईए. ज्यांसुधी आ रीते, कोई प्रमाणिकपणे श्रीयुत जायसवालना निर्णयमां शंका उपस्थित न करी शके अने आ विचारमां सप्रमाण मतभेद न जणावी शके त्यां सुधी हवे

Aho ! Shrutgyanam

आपणे ए ज निर्णयने कबूल करवो जोईए अने वेह पछी वीर-निर्वाण संवत् ए ज गणतरीए लखवानो व्यवहार अने प्रचार करवो जोईए. आवता नवा वर्षना छपाता जैन पंचांगोमां वीर संवत् २४४५ ना बदले २४६३ लखवां जोईए. आशा छे के जैन पंचांग प्रकाशको अने जैन पत्र संपादको आ बाबत उपर लक्ष्य आपशे.

परिशिष्ट

[उपर जे लखवामां आव्युं छे, ते शरुआतमां जणाव्या प्रमाणे श्रीयुत जायसवालना एक इंग्रेजी विस्तृत निबंधना थोडाक भागना भाषांतररूपे छे. ए निबंधमां तेमणे जैन काळगणना संबंधी विस्तृत विवेचन करेलुं छे, अने ते आ लेख ध्यानपूर्वक वांची जवाथी तेनो कांईक ख्याल आवी जशे. आ इंग्रेजी निबंध लख्या पहेलां ४-५ वर्ष अगाउ ज्यारे श्रीयुत जायसवाल पाटलीपुत्र नामना हिन्दी पत्रना संपादक हता त्यारे ते पत्रमां पण तेमणे एक न्हानो सरखो लेख जैन निर्वाण संवत् उपर हिन्दीमां लख्यो हतो.ए लेख पण आ विषयने ज लगतो छे अने संक्षिप्तमां लखायेलो होई सहज समजवा जेवो छे तेथी ते पण, तेमनी ज भाषामां अत्र आपी देवमां आवे छे.]

जैन निर्वाण-संवत्

जैनों के यहां कोई २५०० वर्षकी संवत्-गणना का हिसाब हिन्दुओंभर में सब से अच्छा है। उस से विदित होता है कि पुराने समयमें ऐतिहासिक परिपाटी की वर्षगणना यहां थी। और जगह लुप्त और नष्ट हो गई, केवल जैनोमें बच रही। जैनों की गणना के आधार पर हमने पौराणिक और ऐतिहासिक बहुत सी घटनाओं को जो बुद्ध और महावीर के समय से इधर की है समयबद्ध किया और देखा कि उन का ठीक मिलान जानी हुई गणना से मिल जाता है। कई एक ऐतिहासिक बातों का पत्ता जैनों के ऐतिहासिक लेख पट्टावलियो में ही मिलता है। जैसे नहपान का गुजरात में राज्य करना उस के सिक्कों और शिला-लेखों से सिद्ध है। इस का जिक्र पुराणों में नहीं है। पर एक पट्टावली की गाथा में जिसमें महावीरस्वामी और विक्रमसंवत् के बीच का अन्तर दिया हुआ है नहपाण का नाम हमने पाया। वह 'नहवाण' के रूप में है। जैनों की पुरानी गणना में जो असंबद्धता योरपीय विद्वानों द्वारा समझी जाती थी वह हमने देखा कि वस्तुतः नहीं है।

महावीर के निर्वाण और गर्दभिल्ल तक ४७० वर्षका अन्तर पुरानी गाथा में कहा हुआ है जिसे दिगंबर और श्वेतांबर दोनों दलवाले मानते हैं। यह याद रखने की बात है कि बुद्ध और महावीर दोनों एक ही समय में हुए। बौद्धों के सूत्रों में तथागत का निर्ग्रन्थ नातपुत्र के पास जाना लिखा है। और यह भी लिखा है कि जब वे शाक्यभूमि की ओर जा रहे थे तब देखा कि पावा में नातपुत्र का शरीरान्त हो गया है। जैनों के 'सरस्वती गच्छ' की पट्टावली मे विक्रमसंवत् और विक्रमजन्म में १८ वर्ष का अन्तर माना है। यथा—"वीरात् ४९२ विक्रम जन्मान्तर वर्ष २२, राज्यान्त वर्ष ४" विक्रम विषय की गाथा की भी यही ध्वनि है कि वह १७ वें या १८ वें वर्ष में सिंहासन पर बैठे। इस से सिद्ध है कि ४७० वर्ष जो जैन-निर्वाण और गर्दभिल्ल राजा के राज्यान्त तक माने जाते हैं, वे विक्रम के जन्म तक हुए—(४९२=२२+४७०) अतः विक्रमजन्म (४७० म० नि०) में १८ और जोडने से निर्वाण का वर्ष विक्रमीय संवत् की गणना में निकलेगा अर्थात् (४७०+१८) ४८८ वर्ष विक्रम संवत् से पूर्व अर्हन्त महावीर का निर्वाण हुआ। और विक्रम संवत् के अब तक १९७१ वर्ष बीत गए हैं, अतः ४८८ वि० पू० १९७१=२४५९ वर्ष आजसे पहले जैन-निर्वाण हुआ। पर "दिगंबर जैन" तथा अन्य जैन पत्रों पर वि० सं० २४४१ देख पडता है। इस का समाधान यदि कोई जैन सज्जन करें तो अनुग्रह होगा। १८ वर्ष का फर्क गर्दभिल्ल और विक्रम संवत् के बीच गणना छोड देने से उत्पन्न हुआ मालूम देता है। बौद्ध लोग

Aho ! Shrutgyanam

लंका, श्याम, वर्मा आदि स्थानो मे बुद्ध निर्वाण के आज २४५८ वर्ष बीते मानते हैं। सो यहां मिलान खा गया कि महावीर, बुद्ध के पहले निर्वाण–प्राप्त हुए; नहीं तो बौद्ध गणना और 'दिगंबर जैन' गणना से अर्हन्त का अन्त बुद्ध–निर्वाणसे १६–१७ वर्ष पहेले सिद्ध होगा. जा पुराने सूत्रों की गवाही के विरुद्ध पडेगा।

विजयसेन सूरिने आगराना संघे मोकलेलो सचित्र सांवत्सरिक पत्र.

आ साथे जे एक चित्र आपेलुं छे, ते तपागच्छना सुप्रसिद्ध आचार्य विजयसेनसूरि उपर संवत् १६६७ मां आगराना जैन संघे मोकलेला एक सांवत्सरिक–क्षमापना पत्रनुं छे. सांवत्सरिक–क्षमापना पत्र एटले शुं ए जेमे जाणवानी इच्छा होय तेणे अमारुं विज्ञप्ति त्रिवेणी नामनुं हिन्दी पुस्तक वांचवुं. ए पुस्तकमां अमें एवी जातना पत्रो–के जेने विज्ञप्ति पत्र पण कहेवामां आवे छे नुं विस्तृत वर्णन करेलुं छे.

आ सचित्र पत्र मुनिराज श्रीहंसविजयजी महाराजना शास्त्र–संग्रहमांथी मळी आव्युं छे. मूळ पत्रना कोईए बे ककडा करी नांख्या छे अने तेमां पहेला ककडाना मथाळानो केटलोक भाग जतो रह्यो छे. आ बन्ने ककडानी भेगी लंबाई एकंदर लगभग १३ फूट जेटली छे अने पहोळाई १३ईंच छे. पहेला अने बीजा ककडानी वच्चेनो कोई चित्र–भाग जतो रह्यो छे के, छे ते बराबर छे, ते जाणवानुं कशुं साधन नथी. चित्रसमूहनी नीचे विज्ञप्ति–लेख छे अने तेणे एकंदर ३–७ जेटली जग्या रोकी छे.

आ सचित्र पत्रनी पूरेपूरी विगत समजवा माटे, एने लगतो थोडोक इतिहास अहिं आपवो आवश्यक छे.

जगद्गुरु श्रीहरिविजय सूरि अने तेमना पट्टधर आचार्य विजयसेनसूरि–बंने जैन इतिहासमां सुप्रसिद्ध छे. हीरविजयसूरिने मुगल सम्राट् अकबर बादशाहे केवी रीते पोतना दरबारमां बोलाव्या हता अने केवी रीते तेमनो आदर–सत्कार कर्यो हतो, ए विगेरेनो इतिहास अमारा कृपारसकोष नामना पुस्तकनी प्रस्तावनामां विस्तार साथे आप्यो छे. हीरविजयसूरि ज्यारे बादशाहनी अनुमति लई पाछा गुजरातमां आव्या त्यारे एक–बे वर्ष पछी बादशाहे विजयसेनसूरिने पण पोतानी पासे [illegible] अने तेमनुं पण तेणे सारुं सन्मान कर्युं हतुं. ए बाबतनो पण थोडोक उल्लेख उपर्युक्त पुस्तकमां कर्यो छे. संवत् १६५२ मां हीरविजयसूरि स्वर्गस्थ थया अने तेमनी पाटे विजयसेनसूरि अधिष्ठित थया. ते बनाव पछी १० वर्षे एटले संवत् १६६२ मां अकबर बादशाह गुजरी गयो अने तेनी गादिए जहांगीर आव्यो. अकबर बादशाहे हीरविजयसूरिना उपदेशथी पोताना साम्राज्यमां पर्युषणा विगेरेना दिवसोमां जे जीव हिंसा–निषेधना फरमान आदि बहार पाड्या हता ते जहांगीरे रद कर्या हता एटलुं ज नहीं पण जैनोना धर्म–गुरुओ उपर पोतानी खफगी जाहेर करी अनेक रीते तेमने कनडवानी पण तेणे शुरुआत करी हती.

विजयसेन सूरिना शिष्य समूहमां महोपाध्याय विवेकहर्ष गणी करीने एक महान् विद्वान् अने अनेक राजदरबारोमां घणुं मान सन्मान पामेला प्रभावशाली यतिवर हता. तेमणे संवत् १६६८ नी सालमां आगरामां चातुर्मास कर्यो अने राजा रामदासादि द्वारा जहांगीर बादशाहने मळीने पोतानी विद्वता अने शांतवृत्तिथी तेने संतुष्ट करी तेनी पासेथी, ते सालमां, तेना राज्यमां पर्युषणाना दिवसोमां जीवाहिंसा न थवा पामे तेवुं फरमान बहार पडाव्युं. महोपाध्यायना आवा सुकृत्यथी आगराना जैन संघने घणो आनंद थयो हतो. तेणे पोताना ए आनंदने गच्छपति आचार्य के, जे ते वखते देवपाटण (काठियावाड) मां चातुर्मास रहेला हता तेमनी अगळ प्रकट करवा माटे उत्तम चित्रकार पासे सुन्दर अने भावदर्शक चित्रपट्ट तैयार करावी सांवत्सरिक क्षमापनाना पत्ररूपे तेमनी उपर मोकल्युं. आ चित्रपट्टमां केवी रीते महोपाध्याय विवेकहर्ष गणी राजा रामदासने साथे लई जहांगीर बादशाह पासे फरमान मेळववानी प्रार्थना करे छे; ते मळ्या पछी केवी रीते उपा

ध्यायना बे शिष्यो बादशाही नोकरोने साथे लई आगरा शहेरमां जाते ते बाबतनो ढंढेरो पीटता फरे छे; इत्यादि दृश्यो बहु सुन्दररीते चित्रेलां छे. चित्रना एक भागमां विजयसेनसूरिनी व्याख्यानसभा पण चित्रेली छे अने तेमां विवेकहर्ष गणी जाते ए फरमान पत्र लई आचार्यनी सेवामां समर्पित करी रह्यानो देखाव पण काढेलो छे.

आ चित्रमां आलेखेली आकृतियो बहु स्पष्ट अने तादृश छे. दरेक प्रधान आकृति उपर तेनुं नाम पण काळी शाहीथी लखेलुं छे. चित्रनी महत्ता एटला उपरथी ज समजी शकाशे के ते खुद बादशाही चित्रकारनी पींछीथी आलेखायुं छे. ए बाबत ए पत्रमां नीचे प्रमाणे खास उल्लेख करवामां आव्यो छे के—'उस्ताद सालीवाहन बादशाही चित्रकार छे. तेणे ते समये जोयो तेवो ज आमां भाव राख्यो छे.' आथी आ सचित्र-पत्रनी ऐतिहासिक महत्ता केटली विशेष छे ते दरेक विद्वान् समजी शके तेम छे.

पत्रनी भाषा हिन्दी-मिश्रित गुजराती छे अने ते काना-मात्रना हिसाब वगर जेम व्यापारी लोको लखे छे तेवी रीते लखाएली छे. आ नीचे प्रथम पत्रनी मूळ नकल--असलनी भाषामां ज—आपी छे अने तेनी नीचे लाईनवार हालनी भाषा प्रमाणे शुद्ध-संस्कारी रूपान्तर आप्युं छे.

(मूळ नकल)

(१) स्वास्ताश्रीचंतामंणापारस्वजणाप्रणामो श्रीदेवकापाटणामाहानगरसूभथांने पूजआरंद्धा माहाओतंमो—
(२) अतंमचारीतरपालसूरामणा कूमतंअंद्धकारनभोमंणा कलकालगउतंमोअवतार सरस्वती कंठआमरंणा—
(३) चउदवदानद्धांन ऐकवद्ध असंमना टालणाहार दूवद्ध द्धरंम परूपक त्रगा ततवना जाणा चार कखाअना.
(४) जीपक पंचमाहावरतना पालणाहार छकाअना पीहर सातभअना टालणाहार आठ मद्ध सथांनकना जीपक.
(५) नववाडवसद्धब्रंरभचरजानापालणाहार दसवद्धसरमणाद्धरंभपत्रपालक अगरअंगबार ऊपांगना जाणा.
(६) तेर काठोआना जीपक चऊदभेद जीवना प्ररोपक पनर परमाधार्मना भेदना जाण सोलकलासं-
(७) पुरण चंद्रवदन सतरभेद संज्यमना प्रातिपालक अढार सहस सिलंग रथना
(८) धारकः उगणिस न्यतधरमना परूपक विस असमाधीथाने रहीतः ऐकविस सबल—
(९) ना वारकः बावीस परीस्हाना जीपकः तेवीस सुगडाअंग अधेनना जाण चैवि—
(१०) स तिथंकरनी आगन्यना प्रतिपालकः पंचविस भावनाना भायकः छाविस—
(११) दसाकलपविवहारना जाण सताविस साधगुणना उपदेसक अठाविस आया—
(१२) रकलपना जाण उगणातिस पपसुत्त प्रसंगना टालणहारः तिस मोहनी स्थानीक—
(१३) ना जीपक ईकतिस सिधगुणना जाणः बत्तिसजोग संग्रहना प्रतिपालक ते—
(१४) तिस गुरनी आस्यतनाना वारणहारः चात्तिस अतीसैना जाणः पत्तिस श्रीवित—
(१५) रागवर्णीना गुणना कथकः छात्तिस छात्तिसी सुरगुणे वीरजमानः वादीगुर—
(१६) ड गोवीद वादीगोधुमघरट मरिदतवादी मरट सरसतिलबधप्रसादः दली—
(१७) त अनेक दुरवादवाद समुद्रनी परि गंभीरः मेरपरबतनि परी थिरः प्रापत सं—
(१८) सार समुद्र तिरः मायमही विडारणसीरः श्रीजिनसासन सहकारकीर
(१९) करमसत्त विडारणवीरः वाणि मीठि ईम्रतखीरः धरमकरतै न कर धीरः नीर—
(२०) मलचित जीम गंगानीरः उजल जससागर डंडीरः भंजण भवभिरः सोभा—
(२१) गगुणे अभिनवै गुरहीर जीण प्रतीबोध्य अकबर साह वडवीर दी—
(२२) न करणीपर अधीक प्रताप तेज सुविहत जणसु धरे हेज वड वैरागी अती—

Aho ! Shrutgyanam

(२३) सोभागी करणनि परी त्यागी मुगतिना रागी श्रीपातिसाह प्रबोधक अबोह जी—
(२४) व प्रतिबोह कालिकाल गोतमा अवतार तपगछ सागार हार तपतेज दीवा—
(२५) कर गछाधीपति गछाधीराज सरबउपमाजोग: भटारिक पुरिंदर श्री श्री श्री श्री श्री—
(२६) श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री विजयसेन सुरसूरिस्वर स—
(२७) परिवार चरण कमलानं श्री आगराकोटातु सदा आदेसकारी चरणसेवक दासन—
(२८) दास पाइरज समान सदासेवक: सा: विमलदास सा: बंदीदास सा: लालचंद दुरगदा—
(२९) स: सं: चंदुभोपती सा: ननजी: सा: चंद्रसेन: सं: प्रतापसी: सां: नाथु भीषारीदास सा: पुनुमना
(३०) सा: समीदास दरगहमल: सा: पेमन सा: टोडर: सं: वीरदास सा: कवडू ननु सं: धरमदास गटका: सं: नेतसी: सा: खडा: सा: भोजु सा: सा—
(३१) गर सं: कवरजी वरधमान: सा: वैरा राई सीव सा: कवरा धरमसी सा: मोकल सा: मेघा
(३२) सा: कटारू पिरथीमल सा: बोहीथ सा: गोरा सा: वन्ना कुहाड सं: देवकरण सा: पदमसी: सा: मा—
(३३) नीकचंद सा तीलोकसी जैतसी: स: धरमदास: सा: ताराचंद सा: पतापीथाका सा: रासा: सा: षेत—
(३४) सी सा: नेतसी सा मुला: सा: डूंगर: सं: रीषभदास सा चाउ सा षेमन सा: लीषमीदास सा: भीरपाल सा: मीमा सा: भोजुराजु
(३५) सा: भारूतारण: सा: पतापसारि: सा: तारूपसारी सा: देवजी: सोनी: रीषभदास सोनी विमलदास:
(३६) सा: अमीचंद सा: देवकरण सा: देवजी भीमजी सा: जीवा सं: उदा कमा: सं: सीधु सं सवल
(३७) सं: समीदास सं: लीलापती सं: कलु सं: वीरजी: सं: कपुरा सादुल सा: कल्याण सुगंधी: दरगह सुगंधी:
(३८) सा: कचरा मुहणैत सा: पदा मुहणैत सा: जेसीघ मुहणैत सा: जादू सा: ईसर सा: भाउ सा: गोवल
(३९) सा: सोमसी: सा: पोमसी सा: वरधमान सा: राउ सा: धनराज सं: नीहालु सा: रूडा: सा: भोवाल सोनी
(४०) सकतन सा: रतना सा: संसारू सा: वाघु सा: जावड सा: डगर वैद सा: गग्ग सा: भू डूगर सा: सु—
(४१) रताणा: सा: जेकरण आदेसकारी दवस वंदणा: सीकाह सा काव: रावधनी अवधार जो: समस—
(४२) त संघनी द्वादस वंदणा अवधारजो: ईह श्री पुजीजीनै प्रसाद कुसल षेम छै पुजीजीना—
(४३) कुसल षेमना सदा समाचार लीषवाजी त सेवकनै परम संतोष उपजै: अपर ईह श्री—
(४४) पजुसण प्रब नीराबाद पणै हुआ छै अमारी दीन १२ पजुसणनी विसेष सावदेस: पुरबदेस:
(४५) तथा ढीलमंडल: मेवातमंडल रीणथंभैरगढ देसा: बीजा ही घणै देसी अमारी वरती छै ते: संतोष मानजो
(४६) श्री सतरभेद पुजा १५ श्री जहगीर पातीसाह तषत बेठ पुठै ये अपुरब करणी हुई छै भ—
(४७) गवनजीनै प्रसाद श्रीतपागच्छनी उनित वीसेष हुई छै श्री: पातिसाहजी फुरमान २ करी द—
(४८) ना: ते श्री पजुसण आव श्रीजीनु: रमदासजी आगै हुई गुदरण हुकम दीआ ढंढोरा दीवाय—
(४९) पारीउर वार सारै दीना १२ अमारी वरताई: जीण वेल श्रीजी हुकम दीना तीणवेला दरीषन—
(५०) जुडथा श्रीजी झरोषै बैठा था राजा रमदासजी आगै था तीण पाछै फुरमान लीय: पं: विवेकहर्ष [हर्ष]
(५१) तिण पाछै: पं: उदैहर्ष (हर्ष) था: पछे अमारी आसरी विनती की श्रीपातिसाहजी हुकम दीना
(५२) ततकाली: तीणवेला: जीसा दरीषना जुडसु तीण समना ये लेष माह सरब लीष छै

Aho ! Shrutgyanam

(५३) उसता सालीवहण पातिसाही चित्रकार छै तेण तीण समै देष छै ईसाही ईण चि–
(५४) त्र माहे भाव राष छै सु लेष देष प्रीछजोः उसता सालीवहण वंदणा विनवी छै प्रछ जो
(५५) ईह श्रीः पजुसण श्रीसतर भेद पुजा १५ सनाथदीन ६१ तप मासषमण १॥ मासषम–
(५६) ण १। पाषषमण तथा अठाई तथा दत्रदसम दसम अठम बीजाही तप घणा हुआ छै.
(५७) छमछरी पोसह त ९०१ सहमी वछल साः बंदीदासकैः चैमासा पाषी असटमी सदी सह–
(५८) मीवछल चाल छै पुजोजीका प्रसादथी अपरं ईह श्री जिन प्रासाद नवा संः चंदु करय छै
(५९) प्रतीमा पीण माहासुदर हुई छै घणितु पीणा प्रतीस्टाना घणाहे छै श्रीपुजीजी आवै तथा
(६०) श्रीआचारिजजी पधारतै जीणसेसणीना घणा उछाह होई सार संवना मनोरथ पैहचै
(६१) पुजीजी क्रिपाकर पधारजोः महो उपाध्याय श्रीसोमविजै पीण नेडा छै पुजी जलदथी लषी छै वि–
(६२) चारी भला जाण तम लीषजो जीम पुजी लीष तिम परमाण लेष प्रसाद वैगा मकुलजो
(६३) ईभरमावादः पंः श्रीः माहानंद ठण ३ छै दीलः री जेठठण २ छैः पारोःगणसरतनई ठण २ पहली चै–
(६४) मासः पेरोजाबाद गणी षीमानंद रहथा विजा मतका आचारिज रहमाटः हीवक तै ते षाली
(६५.) पडः हीवै चैमास पेरोजावादकी षेतनी चीता करजोः पहले कैतही सात परहथा तै सरब मडराष
(६६) हीवै भीपु षेत षाली न रह तीम करजोः सावीकानी वंदणा विनवि छै ते प्रीछजो सही षाणजो.
(६७) संः विमलादे बाः साहीजदे बाः मीरघ बाः जादव [पारमासहमनी वंदणा अवधारजो
(६८) बाई कपुर दे बाः लाछ बाः मोतांरा पयादी बाः जीवड दे १साः ताराचंद साः षेतावेद साः मोहील
(६९) मणीक दे बाः कवर बाः सीरदे बाः भगत १ साः छीतु साः कासी साःवेणीदास
(७०) बालादे वहुः मनोरथदे बाः गारबदे बाः राज १ साः सागर साः भैरू साः मणकचंद
(७१) वहु केसरदे बाः होली बाः गरादे १ साः भोवाल साः ढोला साः डगर
(७२) पुजीजी प्रतिस्टा उपरी वैग पधारजो ईहना संघना उतकंठा घणी छै ऐकवार तुमार चरण
(७३) देष समसत संव संतोष पामः नहीतर भहोउपाध्यनु आदेस देजो जीण सासणनी सो–
(७४) भा होई तीम करजो घण स्य लीषीअ पुजीजी ईहनी परचीता तुमने छे ते प्रीछजो
(७५) संवतु १६६७ मीती कातीसुदी २ सुभदीने सोमवारे सुभं भवतुः लीः सीकेहसा सुत.

[उपरना लखाणनुं हालनी भाषामां शुद्ध संस्कारी रूपांतर]

(१) स्वस्ति श्रीचिन्तामणिपार्श्वजिनं प्रणम्य श्री देवपाटण महानगरे शुभस्थाने, पूज्य आराध्य महात्मा,
(२) उत्तम चारित्र पात्रशिरोमणि, कुमतान्धकार नभोमणि, कलिकाल गौतमावतार, सरस्वतीकंठाभरण,
(३) चउदविद्यानिधान, एक विध असंयमना टाळणहार, द्विविध धर्मप्ररूपक, त्रण तत्त्वना जाण, चार कषायना–
(४) जीपक, पंचमहाव्रतना पाळणहार, छकायना पिता, सात भयना टाळणहार, आठ मदस्थानकना जीपक,
(५) नववाड विशुद्ध ब्रह्मचर्यना पाळणहार, दशविध श्रमणधर्म प्रतिपालक, अग्यार अंग बार उपांगना जांण,
(६) तेर काठियाना जीपक, चऊद भेद जीवना प्ररूपक, पंदर परमाधार्मिकना भेदना जांण, सोलकला–

Aho ! Shrutgyanam

(७) संपूर्ण चन्द्रवदन, सतरभेद संयमना प्रतिपालक अढार सहस्र शीलांगरथना–
(८) धारक, ओगणीस ज्ञाताधर्म (कथा) ना प्ररूपक, वीस असमाधि स्थानक रहित, एकवीस सबल–
(९) [दोष] निवारक, बावीस परीषहना जीपक, तेवीस सूयगडांगना अध्ययनना जाण, चौवी–
(१०) स तीर्थंकरनी आज्ञाना प्रतिपालक, पंचवीस भावनाना भावुक, छव्वीस–
(११) दशाकल्प–व्यवहार [अध्ययन] ना जांण, सतावीस साधुगुणना उपदेशक, अठावीस आचा–
(१२) रप्रकल्पना जांण, ओगणतीस पापसूत्रप्रसंगना टाळणहार, तीस मोहनीयस्थानक—
(१३) ना जीपक, एकत्रीस सिद्धगुणना जाण, बत्रीस योगसंग्रहना प्रतिपालक, ते—
(१४) त्रीस गुरुनी आशातनाना वारणहार, चउत्रीस अतिशयना जांण, पांत्रीस श्रीवीत—
(१५) रागवाणीना गुणना कथक, छत्रीस छत्रीसी सूरिगुणे विराजमान, वादीगरु—
(१६) डगोविन्द, वादीगोधुमघरट्ट, मृदितवादीमरट्ट, सरस्वती लब्ध प्रसाद, दलि—
(१७) त अनेक दुरवादी वाद, समुद्रनी परे गंभीर, मेरु पर्वतनी परे धीर, प्रांतसं—
(१८) सार समुद्रतीर, मायामही विदारणसीर श्रीजिनशासन सहकारकीर,
(१९) कर्मशत्रुविदारणवीर, वाणी मोठी अमृतक्षीर, धर्मकरतां न करे धीर, नि–
(२०) र्मल चित्त जिम गंगानीर, उज्ज्वल यश सागर डंडीर, भंजग भवभीर, शौभा–
(२१) ग्य गुणे अभिनवगुरुहीर, जेणे प्रतिबोध्यो अकबर शाह बडवीर, दि–
(२२) नकरनी परे अधिक प्रताप तेज, सुविहित जनथी धरे हेज, वड वैरागी, अति–
(२३) सौभागी, कर्णनी परे त्यागी, मुक्तिना रागी, श्रीबादशाह प्रबोधक, अबोधजी–
(२४) व प्रतिबोधक, कलिकाल गौतमावतार, तपागच्छ श्रृंगारहार, तपतेज दिवा–
(२५) कर, गच्छाधिपति, गच्छाधिराज, सर्वोपमायोग्य, भट्टारक पुरंदर (पांच श्री)
(२६) [१६ श्री] विजयसेनसूरि सूरीश्वर स–
(२७) परिवार चरणकमलान् श्री आगराकोटना सदा आदेशकारी, चरणसेवक, दासानु–
(२८) दास, पायरजसमान, सदा सेवक, सा. विमलदास, सा. बंदीदास, सा. लालचंद दुगड,
(२९ थी ४२ मी लाईन सूचीमां आगराना आगेवान श्रावकोनां नामो मात्र आपेलां छे.)
(४३)—समस्त संघनी द्वादशवंदना अवधारशो. अहिंया श्रीपूज्यजीना प्रसादे कुशल–क्षेम छ. पूज्यजीना
(४४) कुशल–क्षेमना सदा समाचार लखवा, जेथी सेवकोने परमसंतोष उपजे. अपरं अहिंया श्री–
(४५) पजुसण पर्व निराबाधपणे थया छे. अमारी दिन १२ पजुसणनी,—विशेष सावदेश, पूर्वदेश,
(४६) तथा दिल्लीमंडल, मेवातमंडल, रणथंभोर गढदेश, बीजाए घणा देशे अमारी वरती छे, ते संतोष मानजो.
(४७) श्रीसत्तरभेदी पूजा १५, श्रीजहांगीर बादशाह तखत बेठां पछी आ अपूर्व करणी थई छे.
(४८) भगवन्तजीना प्रसादे श्रीतपागच्छनी उन्नति विशेष थई छे. श्रीबादशाहजीए फरमान २ करी दी–
(४९) धा, ते श्रीपजुसण आव्ये श्रीजीना रामदासजी आगळ थई गुदरण (?) हुकम दीधो. ढंढेरो देवायो.
(५०) पारीउरवारसारे (?) दिन १२ अमारी वरतावी. जे वेळा श्रीजीए हुकुम दीधो ते वेळां दरीखानो
(५१) भराणो हतो. श्रीजी झरोके बेठा हता. राजा रामदासजी आगळ हता. तेमनी पाछळ फरमान लई
पं० विवेक हर्ष,

(५२) तेनी पाछळ पं. उदयहर्ष हता. पछी अमारी बाबत विनंती कीधी. श्रीबादशाहजीए हुकम दीधो
(५३) तत्काल, ते वेळाए जेवो दरीखानो भराणो हतो, ते समयनो [चितार] आ लेखमां सर्व लख्यो छे.
(५४) उस्ताद सालीवहण बादशाही चित्रकार छे. तेणे ते समय जोयो छे एवो ज आ चि–
(५५) त्रमां भाव राख्यो छे. ते लेख जोई जाणशो. उस्ताद सालीवहणे वंदना विनती छे. जाणशो.
(५६) अहिंया पजुसणमां श्री सत्तरभेदी पूजा १५, स्नात्र दिवस ६१, तप मासक्षमण, दोढ मासक्षमण,
(५७) पाक्षिक क्षमण, तथा अठाई, तथा द्वादशम, दशम, अठम बीजांए तप घणां थयां छे.
(५८) सांवत्सरिक पौषध ९०१, साधर्मिकवात्सल्य सा. बंदीदासनुं, चौमासी, पखी, अष्टमी सुदी साह–
(५९) मीवच्छल चाले छे, पूज्यजीना प्रसादथी. अपरं अहिंया श्रीजिनप्रासाद नवो सा. चंदुए कराव्यो छे.
(६०) प्रतिमा पण महासुंदर थई छे. धणीने पण प्रतिष्ठानो घणो हर्ष छे. श्रीपूज्यजी आव्याथी तथा
(६१) श्रीआचार्यजी पधारतां जिनशासननो घणो उत्साह थशे. सारा संघना मनोरथ पहोंचशे.
(६२) पूज्यजी ! कृपाकरीने पधारजो. महोपाध्याय श्रीसोमविजय पण नजीक छे. पूज्यजी ! [विनंती] जल्दीथी लखी छे.
(६३) विचारीने मळ्ठ जणाय तेम लखशो. जेम पूज्यजी लखशे तेम प्रमाण थशे. लेख–प्रसाद जल्दी मोकलावशो.
(६४) इब्राहीमाबादमां पं. श्रीमहानंद ठाणा ३ छे. दिल्लीमां ऋ. जेठा ठाणा २ छे. पारीमां (?) गणी श्रीरतनहर्ष ठाणा २. पहेलुं चौ—
(६५) मासुं पेरोजाबाद गणी श्रीमानंद रह्या हता. बीजा मतना आचार्य रह्या माटे. हमणा ते खाली
(६६) पडयुं. हवे चोमासा बाबत पेरोजाबादनी चिंता करशो. पहेलां केटलाए सातप (?) रहेता हता. ते सर्व मडराखी (?)
(६७) हवे भीपु (?) क्षेत्र खाली न रहे तेम करशो. श्राविकाओए वंदना विनती छे, जे जाणशो. सही जाणशो

(६८ थी ७२ मी लाईन सुधीमां श्राविकाओनां नामो छे.)

(७३) पूज्यजी ! प्रतिष्ठा उपर जल्दी पधारशो. अहिंना संघनी उत्कंठा घणी छे. एकवार तमारां चरण
(७४) जोई समस्त संघ संतोष पामशे. नहीं तर महोपाध्यायने आदेश आपशो. जिनशासननी शो—
(७५) भा थाय तेम करशो. घणुं शुं लखीए. पूज्यजी ! अहिंनी पण चिंता तमने ज छे. ते जाणशो.
(७६) संवत् १६६७ मिती कार्तिक सुदी २ शुभ दिने सोमवारे. शुभं भवतुः लीः खीकहसा सुत ।।

महावीर तीर्थंकरनी जन्मभूमि.

(ब्राह्मणकुण्ड, क्षत्रियकुण्ड अने वैशाली; ए त्रणे एक ज शहरना विभागो छे)

[जैन समाजनी मान्यता प्रमाणे भगवान महावीरनी जन्मभूमि जे क्षत्रियकुण्ड के कुण्डग्राम नामे प्रसिद्ध छे ते एक मोटुं शहर होई स्वतंत्र राजधानी हती अने तेना अधिपति सिद्धार्थ ते एक मोटा राजा हता. अने ए स्थळ हालमां गया जिलामां लछवाड नामे जे एक नानुं सरखुं गाम छे त्यां आवेलुं हतुं. परंतु पश्चिमना शोधक विद्वानोना मते महावीरनी जन्मभूमी तरीके ओळखातुं कुण्डग्राम ते वैशालीनामे लिच्छविओनी राजधानी पासे आवेलुं एक साधारण परुं हतुं अने सिद्धार्थ ते त्यांना एक ठाकोर हता. प्रो. जेकोबीए जैन सूत्रोपरनी प्रस्तावना (प्रथम भाग, जुओ जै. सा. सं. अंक २, पृष्ठ ७०) मां ए बाबत केटलीक चर्चा करी छे; अने डॉ. होर्नले पण पोताना जैनधर्म विषेना विचारोमां (जुओ, आ ज अंकना पृ. १९४ उपर) ए बाबतनुं सूचन कर्युं छे. घणा जिज्ञासुओ आ विचार जाणी विचारमां पडे छे अने शा आधारे आ विद्वानो वैशालीने महावीरनुं जन्मस्थान माने छे ते जाणवा उत्सुक रहे छे. तेथी आ नीचे डॉ. होर्नलनी लखेली आ संबंधी एक नोट आपवामां आवे छे जेथी ए बाबतनो घणोक खुलासो जिज्ञासुओने मळी आवशे. ए नोट, उक्त विद्वाने पोताना ' उवासगदसाओ ' ना इंग्रेजी भाषांतरना पृष्ठ ३ उपर आवेला ' वाणियगाम ' शब्द उपर लखेली छे. ए वाणिय गामनो उल्लेख कल्पसूत्रमां पण आवे छे. जैन विद्वानोए आ नोटनुं मनन करी आ संबंधमां विशेष ऊहापोह करवानी आवश्यकता छे. संपादक.]

वा णि य गा म (सं. वाणिज्यग्राम) ए वैशाली नामना सुप्रसिद्ध शहरनुं बीजुं नाम छे, जे लिच्छविओनी राजधानी मनाय छे. जूओ कनिंगहामकृत हिन्दुस्थाननी प्राचीन भुगोल, पृ० ४४३. कल्पसूत्र १२२ मां तेने एक जुदा शहर तरीके, पण साथे वैशाली जोडे निकट संबंध धरावतुं, लख्युं छे. खरी वात तो ए छे के जे नगरीने आपणे वैशालीना नामे ओळखीए छीए ते बहु ज विस्तार वाळी नगरी हती (हुएन्त्सांगना वखतमां ते १२ माईल जेटली विस्तृत हती, जूओ कनिंगहामनो आर्किओलॉजिकल सर्वे रिपोर्ट भाग १, पृ. ५६) अने तेनी सीमामां वैशाली के जेने हालमां बेसार कहेवामां आवे छे, ते सिवाय बीजा पण केटलांक स्थळोनो समावेश थतो हतो. ए स्थळोमां एक वाणियगाम अने बीजुं कुंडगाम के कुण्डपुर मुख्य हतां. ए स्थळोनां अवशेष रूपे हजी पण वाणिया अने बसुकुण्ड नामे गामडाओ अस्तित्व धरावे छे. (जुओ, आर्किओलॉजिकल सर्वे रिपोर्ट भाग १ मांनी २१ मी प्लेट, तथा भाग १६ मांनी बीजी प्लेट) आथी ए संयुक्त शहरने एना गमे ते प्रधान अंशभूत स्थळना अभिधानथी उल्लेखी शकाय ए स्पष्ट छे. वाणियगाम साथे लगाडेला नयर ए विशेषणथी ते मोटुं शहर होय एम जणाय छे; कारण के, चम्पा जे घणुं ज मोटुं शहर होवानुं प्रसिद्ध छे ते पण ' नयरी ' ना विशेषणथी उल्लिखित छे. (जूओ, रोखिलनुं बुद्ध चरित्र पृ. १३६) कुण्डगाम नाम पण वैशालीनुं ज हतुं अने तेथी वैशाली ए ज महावीरनी जन्मभूमि हती. आ ज कारणथी महावीरने वैशालीय पण कहेवामां आवे छे. (जुओ, आचारांग सूत्रना भाषांतरनी जेकोबीनी प्रस्तावना, पृ. ११, अने वेबरनी Indian Studies पु. १६, पृ. २५२) बुद्ध चरित्रना पृ. ६२ मां आपेली एक बौद्ध आख्यायिकामां वैशालीना त्रण भाग हता एम जणावेलुं छे, अने ते कदाचित् वैशाली खास, कुण्डपुर अने वाणियगाम ज हशे के जेणे अनुक्रमे समग्र शहरना आग्नेय, ऐशान्य अने पाश्चिमात्य भागो व्यास करेला हता.

ईशान कोनमां कुण्डपुरथी आगळ कोल्लाग नामनुं (जुओ सूत्र ७) सन्निवेश अथवा परुं आवेलुं हतुं जेमां ' ज्ञातृ ' अथवा ' नाय ' जातना क्षत्रियो वसता होय

एम लागे छे, के जे जातमां महावीर जन्म्या हता. सूत्र ६६ मां ते परानो नायकुलना नामे उल्लेख थएलो छे. आ कोल्लाग सन्निवेश साथे संबंध धरावतुं, पण तेनी बहार, दूइपलास नामे एक चैत्य हतुं (जुओ सूत्र ३). साधारण चैत्यनी माफक तेमां एक मन्दिर अने तेनी आसपास उद्यान हतुं; आ कारणथी विपाकसूत्र (१; २) मां तेने ' दूइपलास उज्जाण ' तरीके लखेलुं छे; अने ते नायकुलनुं ज हतुं ए तेना ' नायसण्डवणे उज्जाणे ' अगर ' नायसण्डे उज्जाणे ' इत्यादि (कल्पसूत्र ११५ अने आचारांगसूत्र २; १५ सू. २२ मांना) वर्णन उपरथी सिद्ध थाय छे.

आ उपरथी, जे ठेकाणे कुण्डपुरने नयर तरीके उल्लेखेलुं छे ते जैन कथन पण सत्य समजी शकाय छे. कारण के कुण्डपुर ए ज वैशाली एम आपणे मानवुं जोईए. कल्पसूत्र १०० मां कुण्डपुर साथे ' नयरं—सब्भिंतर बाहिरियं' एवुं विशेषण लगाडेलुं छे अने ते वैशालीनुं ज वर्णन छे एम स्पष्ट जणाय छे. जे सूत्रनां आधारे (जुओ सूत्र २.४, २२) कुण्डपुर के कुण्डगामने सन्निवेश मानवामां आवे छे (जेकोबीनी आचारांगनी प्रस्तावना पृ. १० जणाव्या प्रमाणे) ते बराबर नथी कारण के ए ठेकाणे वपराएला ' उत्तर-खत्तिय-कुण्डपुर सन्निवेस ' अथवा ' दाहिण-माहणकुण्डपुर-सन्निवेस ' विशेषणनो ' कुण्डपुरनो उत्तरनो क्षत्रियोनो भाग ' एम अर्थ थतो नथी परंतु 'कुण्डपुरनुं उत्तर बाजुनुं क्षत्रियकुलनुं परुं' अर्थात्' जेमां (नायकुलना) क्षत्रियो वसता हता एवुं कुंडपुरनुं उत्तर बाजूनुं परुं' एम अर्थ थाय छे. आथी तेनो, ते शहेरना दक्षिणना पराथी,के ज्यां आगळ ब्राह्मणो रहेता हता, भेद बताव्यो छे. आ अर्थने कल्पसूत्र २२ मां वपराएला ' खत्तियकुण्डगामे नयरे ' अने ' माहणकुण्डगामे नयरे ' जेवा विशेषणोथी प्रकट पुष्टि मळे छे. आ बधी बाबतोना विचार उपरथी जणाय छे के महावीरना पिता सिद्धार्थ ए कुण्डगाम के वैशाली नगरना कोल्लाग नामे परामां वसता नाय जातिना क्षत्रियोना मुख्य सरदार हता. जो के आपणे अपेक्षा राखीए ते प्रमाणे जैनोना धर्मग्रंथोमां तेनुं वधारे पडतुं वर्णन करेलुं छे, तो पण सिद्धार्थने ' कुण्डपुर के कुण्डगामना राजा ' तरीके सर्वत्र वर्णवेलो नथी. बल्के एथी उलटुं सामान्य रीते तेने एक साधारण क्षत्रिय (सिद्धत्थे खत्तिये) रूपे ज वर्णव्यो छे. जे एक बे ठेकाणे तेने राजा (सिद्धत्थे राया) तरीके लख्यो छे, ते कथनने अपवादरूप ज मानवुं जोईए. अगर कोल्लागना क्षत्रियोना अधिपति तरीके ए विशेषण पण संगत होई शके तेम छे.आ उपरथी स्पष्ट थाय छे, के महावीरनी जन्मभूमि ए कोल्लाग ज हती अने ते ज कारणथी तेओ ज्यारे संसारत्यागी थया त्यारे, स्वाभाविक रीते ज पोतानी जन्मभूमि पासे आवेला दूइपलास नामना पोताना ज कुलना चैत्यमां प्रथम जईने रह्या. (जुओ कल्प. ११५–११६) महावीरना माता–पिता अने तेमनी साथे तेमनी जातिना बीजा पण बधा नायवंशी क्षत्रियो पार्श्वनाथना सिद्धान्तो अने आदेशोने अनुसरता हता (जुओ आचारां. २, १५–१६) अने तेथी ज्यारे पार्श्वनाथनुं पोताना शिष्यो साथे कुण्डपुरमां अमुक वखते आगमन थतुं ते वखते तेमनी सगवड माटे तेमणे एक चेइयनी स्थापना करी होय ए घणुं संभवित छे. महावीर दीक्षा लईने प्रथम पार्श्वना संप्रदायमां जोडाया होवा जोईए, के ज्यां तेओ थोडा ज समयमां मुख्य अधिष्ठाता थई तेना तेओ सुधारक बन्या हता. अहिं वधारामां एटलुं ए पण कही शकाय के, सूत्र ७७ अने ७८ मां वाणियगामने आपेला ' उच्चनीचमज्झिमकुलाइं—' ऊंच, नीच अने मध्यम वर्गवाळुं ' ए विशेषण साथे दुल्व (रोखिलनुं बुद्ध चरित्र, पृ. ६२) मां आपेलुं नीचेनुं वर्णन मळतुं आवे छे; जेम के " वैशालीमां त्रण विभागो हता. जेमां पहेला विभागमां सुवर्ण कळसवाळा ७००० घरो हतां, वचला विभागमां रजतकळसवाळां १४००० घरो हतां अने छेल्ला विभागमां ताम्रकळसवाळां २१००० घरो हतां. ए विभागोमां अनुक्रमे ऊंच, मध्यम अने नीच वर्गना लोको वसता हता. "

Aho ! Shrutgyanam

Aho ! Shrutgyanam